

प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शितावराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय

चिदिशा ( म० प्र० )



मुद्रक —

पं० शिवनारायण उपाध्याय, वी० ए०

नया संसार प्रेस,

भदोनी, वाराणसी

THE

# ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. XVI

The Last Fourteen Anuyogadvaras, Moksha etc.

*Edited*

*with translation, notes and indexes*

BY

Dr. HIRALAL JAIN, M. A., LL. B., D. Litt.

Director, Prakrit Jain Institute, Vaishali

*Assisted by*

Pandit Phoolochandra,  
Siddhanta Shastri.



Pandit Balchandra,  
Siddhanta Shastri

*With the cooperation of*

Dr. A. N. Upadhye,

M. A., D. LITT.

*Published by*

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,  
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya  
Vidisha ( M. P. )

1958

Price rupees twelve only.

*Published by*

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra  
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya  
Vidisha ( M. P )

*Printed by*

Pl. SHIVA NARAYAN UPADHAYAYA, B. A.

Naya Sansar Press.

BHADAINI, VARANASI.

## सम्पादकीय

मुझे आज बड़ी प्रसन्नता है कि जिस पट्टखंडागम और उसकी टीका धवलाका सम्पादन प्रकाशन कार्य आजसे बीस वर्ष पूर्व सन् १९३८ में प्रारंभ हुआ था, वह आज प्रस्तुत भागके साथ संपूर्णताको प्राप्त हो रहा है। किन्तु ज्ञानकी दृष्टिसे यह कार्य केवल हमारे कर्तव्यकी प्रथम सीढ़ी मात्र है। इस प्रकाशनके द्वारा इस महान् शास्त्रीय रचनाका मूल पाठ, उसका मूलानुगामी अनुवाद, यत्र तत्र विशेष स्पष्टीकरण व तुलनात्मक टिप्पण तथा कुछ ऐतिहासिक विवेचन व पारिभाषिक शब्दोंकी सूचियाँ मात्र प्रस्तुत की जा सकी हैं। हमारे विचारके अनुसार अभी इसके सम्बन्धमें विशेष रूपसे निम्न कार्य अवशिष्ट हैं:—

१—इसके मूल पाठका एक बार सावधानीसे मूडविट्टीकी तीन उपलभ्य ताड़पत्रीय प्रतियोंसे मिलान व पाठभेदोंका अंकन। इस कार्यके लिये उक्त प्रतियोंके फोटोका भी उपयोग किया जा सकता है।

२—इसके विषयका समस्त जैन कर्मसिद्धान्तसम्बन्धी दिगम्बर और श्वेताम्बर तथा वैदिक व बौद्ध साहित्यके साथ तुलनात्मक अध्ययन व पाश्चात्य दर्शन प्रणालीसे उसका विवेचन।

३—सूत्रों और टीकाका प्राकृत भाषासम्बन्धी अध्ययन।

मुझे आशा है कि वर्तमान युगकी बढ़ती हुई ज्ञानपिपासा तथा विशेष अध्ययनकी ओर अभिरुचि व प्रोत्साहन को देखते हुए उक्त प्रवृत्तियोंको हाथ लगानेमें विलम्ब न होगा।

यद्यपि प्रत्येक भागके साथ भूमिकामें ग्रन्थसम्बन्धी ऐतिहासिक विवरण व विषय परिचय दिया गया है एवं परिशिष्टोंमें शब्द सूचियाँ, तथापि मेरा विचार था कि प्रस्तुत अन्तिम भागमें उक्त समस्त सामग्रीका पुनरावलोकन सहित संकलन दे दिया जाय। तदनुसार पारिभाषिक शब्दसूची संकलित करके इस भागके साथ प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तावनालाक सामग्रीका भी संकलन कार्य चालू किया गया था। किन्तु इसी बीच मेरा स्वास्थ्य गिरने लगा और मुझे डाक्टरोंका आदेश मिला कि कुछ कालके लिये कठोर मानसिक व शारीरिक परिश्रम त्यागकर विश्राम किया जाय, नहीं तो प्रकृति और अधिक विगड़नेका भय है। इस कारण उस सुविस्तृत भूमिकाका विचार छोड़कर एवं इस प्रकाशनमें अधिक विलम्ब उचित न समझकर इस भागको प्रकाशित किया जा रहा है। यदि विधि अनुकूल रहा तो उक्त कार्य भविष्यमें कभी पूर्ण करनेका प्रयत्न किया जायगा। आवश्यक ऐतिहासिक व विषय-परिचयसम्बन्धी जानकारी भिन्न भिन्न भागोंमें संगृहीत है ही।

इस समय स्वभावतः मेरी स्मृति इस सम्पादन प्रकाशनके गत बीस वर्षके इतिहास पर जा रही है। सफल और धन्य है वह श्रीमन्त सेठ सितावराय लक्ष्मीचन्द्र जी, भेलसा, की सम्पत्ति जिसके थोड़ेसे दानसे यह महान् शास्त्रोद्धारका कार्य हो सका। वे गजरथ महोत्सव कराने जा रहे थे कि मेरे परम सुहृत् वैरिश्टर जमुनाप्रसाद जैनने दारसी परिपट्टके अधिवेशनके समय उनकी सद्बुद्धिको यह मोड़ दिया। गजरथ आज भी चलाये जा रहे हैं और उनमें अपरिमित धन व्यय किया जा रहा है। पाठक विचार कर देखें कि आज दानकी प्रवृत्ति किस दिशामें सार्थक है। पश्चात् भेलसानिवासी श्रीमान् स्वर्गीय सेठ राजमल जी व श्रीमान् तखतमल जी (वर्तमान मध्य प्रदेशी मंत्रि-मण्डलके सदस्य) ने सेठ लक्ष्मीचन्द्र जी की उक्त

सद्बुद्धिको सुदृढ़ और व्यवस्थित करके दानकी रजिस्ट्री करा दी। सम्पादन कार्यके प्रारम्भमें अमरावती निवासी श्रीमान् स्वर्गीय सेठ पन्नालाल जीका साहाय्य व प्रोत्साहन कभी भूला नहीं जा सकता। उन्होंने मानो इसी कार्यके लिये अपने मन्दिर जीके शास्त्र भंडारमें इस आगमकी पूर्ण प्रतिलिपि कराकर मंगा रखी थी। उसे तुरन्त उन्होंने मेरे सुपुर्द कर दिया। उनका यह कार्य उस समय कम साहसका नहीं था, क्योंकि भ्रान्तिवश हमारी विद्वत्समाजका एक दल इन ग्रन्थोंके प्रकाशन ही नहीं किन्तु किसी गृहस्थके द्वारा इनके अध्ययनका भी कट्टर विरोधी था और उस विरोधने क्रियात्मक रूप धारण कर लिया था। सेठ पन्नालालजी व अमरावती जैन पंचायतके अनुसार कारंजा जैन आश्रम तथा सिद्धान्त भवन, आरा, के अधिकारियोंने भी हमें उनकी प्रतियोंका उपयोग करनेकी सुविधा प्रदान की। प्रकाशन सम्बन्धी कागज, छपाई आदि विषयक कठिनाइयोंके हल करनेमें पं० नाथूराम जी प्रेमीका वरद हस्त सदैव हमारे ऊपर रहा। यही नहीं, बीचमें आर्थिक कठिनाईको दूर करने, मुद्रण कार्य बन्वईमें कराने व अपने घर पर इसका दफ्तर रखनेमें भी वे नहीं हिचकिचाये।

मेरे सम्पादक सहयोगियोंमें से डा० ए० एन० उपाध्ये प्रारम्भसे अभी तक मेरे साथ हैं। पं० फूलचन्द्र जी शास्त्रीका सहयोग भी आदिसे, बीचमें कुछ वर्षोंके विच्छेदके पश्चात्, अभी भी मुझे मिल रहा है। पं० बालचन्द्र जी शास्त्रीका भी जबसे सहयोग प्राप्त हुआ तबसे अन्त तक निरन्तर निभता गया। स्वर्गीय पं० देवकीनन्दन जी शास्त्रीका भी आदिसे उनके देहावसान होने तक मुझे पूर्ण सहयोग मिलता रहा। पं० हीरालाल जी शास्त्रीका सहयोग इस कार्यके प्रारम्भमें बहुमूल्य रहा। किन्तु खेद है वह सहयोग अन्त तक न निभ सका। मैंने इन सब व्यक्तियों और घटनाओंका केवल संकेत मात्र किया है। तत्तत् सम्बन्धी आज सैकड़ों प्रिय-अप्रिय एवं साधक वाधक घटनाएँ मेरे स्मृति-पटल पर नाच रही हैं। किन्तु जिसका 'अन्त भला, वह सर्वांग भला' की उक्तिके अनुसार उस समस्त इतिहासमें मुझे माधुर्य ही माधुर्यका अनुभव हो रहा है।

जिन पुरुषोंका मैं ऊपर उल्लेख कर आया हूँ उन्हें किन शब्दोंमें धन्यवाद दूँ? वस यही एक भावना और प्रार्थना है कि जिन-वाणीकी सेवामें उन्होंने अपना जैसा तन, मन, धन लगाया है, वैसा ही वे आजन्म लगाते रहें जिससे उनके ज्ञानावर्णीय कर्मोंका क्षय हो और वे निर्मल ज्ञान प्राप्त कर पूर्ण आत्मकल्याण करनेमें सफल हों।

## विषय-परिचय

कर्मप्रकृतिप्राभृतके कृति आदि २४ अनुयोगद्वारोंमें से प्रथम १० अनुयोगद्वारोंका संक्षिप्त परिचय यथास्थान कराया जा चुका है। यहाँ मोक्ष अनुयोगद्वारसे लेकर शेष १४ अनुयोगद्वारोंका परिचय कराया जाता है।

**११ मोक्ष**—मोक्ष अनुयोगद्वारका विचार नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव इन चार निक्षेपों द्वारा करनेकी प्रतिज्ञा करके मात्र कर्मद्रव्यमोक्षका विशेष विचार प्रकृतमें किया गया है और शेष निक्षेपोंके व्याख्यानको सुगम बतलाकर छोड़ दिया गया है। कर्मप्रकृतियों मूल और उत्तरके भेदसे दो प्रकारकी हैं, इसलिए कर्मद्रव्यमोक्षके दो भेद हो जाते हैं—मूलप्रकृतिकर्मद्रव्यमोक्ष और उत्तरप्रकृतिकर्मद्रव्यमोक्ष। ये दोनों भी देशमोक्ष और सर्वमोक्षके भेदसे दो दो प्रकारके हैं। किसी मूल या उत्तर प्रकृतिके प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी अपेक्षा एकदेशका अभाव होना देशमोक्ष है और किसी मूल या उत्तर प्रकृतिका प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी अपेक्षा सर्वथा अभाव होना सर्वमोक्ष है, इसलिए देशमोक्ष और सर्वमोक्ष ये दोनों ही प्रकृतिमोक्ष, स्थितिमोक्ष, अनुभागमोक्ष और प्रदेशमोक्ष इन चार भागोंमें विभक्त हो जाते हैं। खुलासा इस प्रकार है—विवक्षित प्रकृतिकी निर्जरा होना या उसका अन्य प्रकृतिरूपसे संक्रमित होना प्रकृतिमोक्ष कहलाता है। प्रदेशमोक्षका विचार प्रकृतिमोक्षके ही समान है। किसी भी प्रकृतिकी विवक्षित स्थितिका अभाव चार प्रकारसे होता है—अपकर्षण द्वारा, उत्कर्षण द्वारा, संक्रमणद्वारा और अधःस्थितिगलन द्वारा; इसलिए इन चारोंमेंसे किसी एकके आश्रयसे विवक्षित स्थितिका अभाव होना स्थितिमोक्ष कहलाता है। स्थितिके जघन्यादि सब विकल्पोंमें स्थितिमोक्षका विचार इसी प्रकार कर लेना चाहिए। अनुभागमोक्ष भी स्थितिमोक्षके समान चार प्रकारसे होता है, इसलिए अनुभागके भी उत्कृष्टादि सब भेदोंमें उक्त प्रकारसे अनुभागमोक्षको घटित करके बतलाया गया है।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि कर्मद्रव्यमोक्ष अनुयोगद्वारमें सम्यग्दर्शन आदि गुणोंके द्वारा जीवके बन्धनसे मुक्त होने मात्रका विचार न करके प्रति समय बन्धको प्राप्त होनेवाले कर्मोंकी प्रकृति आदिका अभाव किस किस प्रकारसे होता रहता है इसका भी विचार किया गया है। जीवका कर्मोंसे छूटनेका क्रम एक प्रकारका ही है। यदि सम्यग्दर्शनादि गुणोंके द्वारा कर्मसे छूटकारा मिलता है तो नवीन बन्ध न होनेसे वह सर्वथा मुक्तिका कारण होता है इतना मात्र यहाँ विशेष है। इसी अभिप्रायको ध्यानमें रखकर नोआगमद्रव्यमोक्षके मोक्ष, मोक्षकारण और मुक्त ये तीन भेद किये गये हैं। जीव और कर्मोंका वियुक्त हो जाना मोक्ष है। सम्यग्दर्शन आदि मोक्षके कारण हैं और समस्त कर्मोंसे रहित अनन्त गुण युक्त शुद्ध बुद्ध आत्मा मुक्त है। मोक्ष अनुयोगद्वारमें इसका भी विस्तारके साथ विचार किया गया है।

**१२ संक्रम**—संक्रमका छह प्रकारका निक्षेप करके उसके आश्रयसे इस अनुयोगद्वारमें विचार किया गया है। क्षेत्र संक्रमका निर्देश करते हुए बतलाया है कि एक क्षेत्रका क्षेत्रान्तरका

प्राप्त होना क्षेत्रसंक्रम है। इस पर यह शंका की गई कि क्षेत्र निष्क्रिय होता है, इसलिए उसका अन्य क्षेत्रमें गमन कैसे हो सकता है। इसका समाधान वीरसेनस्वामीने इस प्रकार किया है कि जीव और पुद्गल सक्रिय पदार्थ हैं, इसलिए आधेयमें आधारका उपचार करनेसे क्षेत्रसंक्रम बन जाता है। कालसंक्रमका निर्देश करते हुए बतलाया है कि एक काल गत होकर नवीन कालका प्रादुर्भाव होना कालसंक्रम है। लोकमें हेमन्त ऋतु या ग्रीष्म ऋतु संक्रान्त हुई ऐसा व्यवहार भी देखा जाता है। यहाँ विवक्षित क्षेत्र और विवक्षित कालमें स्थित द्रव्यकी क्षेत्र और काल संज्ञा रख कर भी क्षेत्रसंक्रम और कालसंक्रम घटित कर लेना चाहिए, ऐसा वीरसेनस्वामीने सूचित किया है।

इस प्रकार संक्षेपसे छह निक्षेपोंका विचार करनेके पश्चात् विवक्षित अनुयोगद्वारमें कर्म-संक्रमको प्रकृत बतलाकर उसके चार भेद किये हैं—प्रकृतिसंक्रम, स्थितिसंक्रम, अनुभाग-संक्रम और प्रदेशसंक्रम। एक प्रकृतिका अन्य प्रकृतिरूपसे संक्रान्त होना यह प्रकृतिसंक्रम है। इस विषयमें विशेष नियम ये हैं। यथा—किसी भी मूलप्रकृतिका अन्य मूलप्रकृतिरूपसे संक्रमण नहीं होता। उदाहरणार्थ, ज्ञानावरणका दर्शनावरणरूपसे संक्रमण नहीं होता। इसीप्रकार अन्य मूल प्रकृतियोंके विषयमें भी जानना चाहिए। उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा जिस मूल कर्मकी जितनी उत्तर प्रकृतियाँ हैं उनमें परस्पर संक्रमण होता है। उदाहरणार्थ, ज्ञानावरणकी पाँच उत्तर प्रकृतियाँ हैं, इसलिए उनका परस्परमें संक्रमण होता है। इसी प्रकार अन्य मूल प्रकृतियोंमेंसे जिसकी जितनी उत्तर प्रकृतियाँ हों उनके परस्पर संक्रमणके विषयमें यह नियम जानना चाहिये। मात्र दर्शनमोहनीयका चारित्रमोहनीयमें और चारित्रमोहनीयका दर्शनमोहनीयमें संक्रमण नहीं होता तथा चार आयुओंका भी परस्पर संक्रमण नहीं होता इतना यहाँ विशेष जानना चाहिए।

भागहारकी दृष्टिसे संक्रमके पाँच भेद हैं—अधःप्रवृत्तसंक्रम, विध्यातसंक्रम, उद्वेलना-संक्रम, गुणसंक्रम और सर्वसंक्रम। इनमेंसे प्रकृतमें इन अचान्तर भेदोंकी दृष्टिसे संक्रमका विचार न करके वीरसेन स्वामीने बन्धके समय होनेवाले इस संक्रमका स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय, काल, अन्तर और अल्पबहुत्व इन अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर उत्तरप्रकृतिसंक्रमका विचार किया है।

स्वामित्वका निर्देश करते हुए बतलाया है कि पाँच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, बारह कपाय और पाँच अन्तरायका अन्यतर सकपाय जीव संक्रामक होता है। असाताका बन्ध करने-वाला जीव साताका संक्रामक होता है और साताका बन्ध करनेवाला सकपाय जीव असाताका संक्रामक होता है। दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीयका परस्पर संक्रम नहीं होता यह तो स्पष्ट ही है। दर्शनमोहनीयके संक्रमके विषयमें यह नियम है कि सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव दर्शनमोहनीयका संक्रामक नहीं होता। सम्यक्त्वका मिथ्यादृष्टि जीव संक्रामक होता है। मात्र सम्यक्त्वका एक आवलि प्रमाण सत्कर्म शेष रहने पर उसका संक्रम नहीं होता। मिथ्यात्वका सम्यग्दृष्टि जीव संक्रामक होता है। मात्र जिस सम्यग्दृष्टिके एक आवलिसे अधिक सत्कर्म विद्यमान है ऐसा जीव इसका संक्रामक होता है। यही नियम सम्यग्मिथ्यात्वके लिए भी लागू करना चाहिए। पर इसका संक्रामक मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि दोनों होते हैं। स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका उपशम और क्षय क्रियाका अन्तिम समय प्राप्त होने तक कोई भी जीव संक्रामक होता है। पुरुषवेद और तीन संज्वलनका उपशम और क्षयका प्रथम समय प्राप्त होने तक कोई भी जीव संक्रामक होता है। संज्वलन लोभका ऐसा जीव संक्रामक होता है जिस उपशामक और क्षपकने संज्वलन लोभके अन्तरका अन्तिम समय नहीं प्राप्त किया है। तथा जो अक्षपक और अनुपशामक है वह भी इसका

संक्रामक होता है। चारों आयुओंका संक्रम नहीं होता ऐसा स्वभाव है। यशःकीर्तिको छोड़कर सब नामकर्मकी प्रकृतियोंका सकपाय जीव संक्रामक होता है। मात्र जिसके एक आवलिसे अधिक सत्कर्म विद्यमान हैं ऐसा जीव इनका संक्रामक होता है। यशःकीर्तिका संक्रामक तब तक होता है जब तक पर भवसम्बन्धी नामकर्मकी प्रकृतियोंका बन्ध करता है। उच्चगोत्रका संक्रामक नीचगोत्रका बन्ध करनेवाला अन्यतर जीव होता है। मात्र एक आवलिसे अधिक सत्कर्मके रहते हुए उच्चगोत्रका संक्रामक होता है। नीचगोत्रका संक्रामक उच्चगोत्रका बन्ध करनेवाला अन्यतर जीव होता है। इस प्रकार सब प्रकृतियोंके स्वामित्वको जान कर काल आदि अनुयोगद्वारोंका विचार कर लेना चाहिए। मूलमें इनका विचार किया ही है, इसलिए विस्तार भयसे यहाँ उनका अलग अलग निर्देश नहीं करते हैं।

इस प्रकार प्रकृतिसंक्रमका विचार कर आगे प्रकृतिस्थानसंक्रमकी सूचना करते हुए बतलाया गया है कि ज्ञानावरणीय, वेदनीय, गोत्र और अन्तरायका एक एक ही संक्रमस्थान है। दर्शनावरणके नौ प्रकृतिक और ब्रह्म प्रकृतिक ये दो संक्रमस्थान हैं। मोहनीयके संक्रमस्थानोंका विचार कपायप्राभृतमें विस्तारके साथ किया है। नामकर्मकी पिण्डप्रकृतियोंके आश्रयसे स्थानसमुत्कीर्तना करनी चाहिए। इस प्रकार अलग अलग प्रकृतियोंके संक्रमस्थान जानकर उनके आश्रयसे स्वामित्व और काल आदि सब अनुयोगद्वारोंका विचार करनेकी सूचना करके यह प्रकरण समाप्त किया गया है।

आगे स्थितिसंक्रमका निर्देश करके उसकी प्ररूपणा इस प्रकार की है। स्थितिसंक्रम दो प्रकारका है—मूलप्रकृतिस्थितिसंक्रम और उत्तरप्रकृतिस्थितिसंक्रम। स्थितिसंक्रम तीन प्रकारसे होता है। यथा—स्थितिका अपकर्षण होने पर स्थितिसंक्रम होता है, स्थितिका उत्कर्षण होने पर स्थितिसंक्रम होता है और स्थितिके अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराने पर भी स्थितिसंक्रम होता है। अपकर्षण की अपेक्षा संक्षेपमें स्थितिसंक्रमका विचार इस प्रकार है—उदयावलिके भीतरकी सब स्थितियोंका अपकर्षण नहीं होता। उदयावलिके बाहर जो एक समय अधिक उदयावलिप्रमाण स्थिति है उसका अपकर्षण होता है। अपकर्षण होकर उसका एक समय कम आवलिके दो बटे तीन भागप्रमाण स्थितिको अस्थापनारूपसे रखकर एक अधिक तृतीय भागमें निक्षेप होता है। इससे आगेकी स्थितियोंका अपकर्षण होने पर एक आवलिप्रमाण अतिस्थापना प्राप्त होने तक उसकी वृद्धि होती है और निक्षेप उतना ही रहता है। इससे आगे अतिस्थापना अवस्थितरूपसे एक आवलिप्रमाण ही रहती है और निक्षेप उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। उत्कर्षणके विषयमें यह नियम है कि उदयावलिके भीतरकी सब स्थितियोंका उत्कर्षण नहीं होता। एक समय अधिक उदयावलिकी अन्तिम स्थितिका उत्कर्षण होता है। किन्तु उसका नहीं बँधनेवाली स्थितिमें निक्षेप न होकर बँधनेवाली जवन्य स्थितिसे लेकर ऊपरकी सब स्थितियोंमें निक्षेप होता है। यह विधि उत्कर्षणको प्राप्त होनेवाली नीचेकी स्थितियोंकी कही है। ऊपरकी स्थितियोंका उत्कर्षण किस प्रकार होता है इसका विचार करने पर यदि यह जीव सत्कर्मसे एक समय अधिक स्थितिका बन्ध करता है तो पूर्ववद्ध कर्मकी अन्तिम स्थितिका उत्कर्षण नहीं होता, क्योंकि यहाँ पर अतिस्थापना और निक्षेपका अभाव है। पूर्ववद्ध कर्मकी द्विचरम स्थितिका भी उत्कर्षण नहीं होता, क्योंकि यहाँ पर भी अतिस्थापना और निक्षेप सम्भव नहीं है। इस प्रकार पूर्ववद्ध कर्मकी एक आवलि और एक आवलिके अस्तंर्यातर्वे भागप्रमाण स्थितिके नीचे जाने तक जितने भी स्थितिबिकल्प हैं उनका उत्कर्षण सम्भव नहीं। कारण वही है। हाँ उससे नीचे एक स्थितिके जाने पर जो स्थितिबिकल्प स्थित है उसका उत्कर्षण हो सकता है और वैसी अवस्थामें एक आवलिप्रमाण अतिस्थापना होती है तथा



शेष आवलिका असंख्यातवाँ भाग निक्षेप होता है। इस प्रकार संक्षेपमें उत्कर्षणका निर्देश करके आगे निक्षेप और अतिस्थापनाका अल्पबहुत्व बतलाया गया है।

आगे उत्तरप्रकृतिसंक्रमके प्रमाणानुगमका निर्देश करते हुए वह उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्यके भेदसे चार प्रकारका बतलाया है। उदाहरणार्थ मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थिति-संक्रम दो आवलि कम तीस कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण होता है, क्योंकि किसी भी प्रकृतिका बन्ध होने पर एक आवलि काल तक उसका संक्रमण नहीं होता, इसलिए एक आवलि तो यह कम हो जाती है। इसके बाद उदयावलिको छोड़कर शेष स्थितिका अन्य बन्धको प्राप्त होनेवाली प्रकृतिमें संक्रमण होता है, इसलिए एक आवलि यह कम हो जाती है। इस प्रकार उक्त दो आवलियोंको छोड़कर शेष सब स्थिति संक्रमणसे प्राप्त हो सकती है, इसलिए मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट संक्रमस्थिति दो आवलि कम तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण कही है। पर उस समय उस कर्मकी स्थिति आवलि कम तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण होती है, इसलिए उसका यत्स्थितिसंक्रम एक आवलि कम तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण कहा है। इस प्रकार मूलमें मात्र मतिज्ञानावरणका उदाहरण देकर शेष कर्मोंके विषयमें उत्कृष्ट स्थितिउदीरणके समान उत्कृष्ट स्थितिसंक्रमके जाननेकी सूचना की है और जिन कर्मोंमें उत्कृष्ट स्थितिउदीरणसे भेद है उनका अलगसे निर्देश कर दिया है सो विचार कर उसे घटित कर लेना चाहिए। स्वतन्त्ररूपसे विचार किया जाय तो उसका तात्पर्य इतना ही है कि जो बन्धसे उत्कृष्ट स्थितिवाली प्रकृतियाँ हैं उनका उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम दो आवलिकम अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण प्राप्त होता है और उत्कृष्ट यत्स्थितिसंक्रम एक आवलि कम अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण प्राप्त होता है। परन्तु जो बन्धोत्कृष्ट स्थितिवाली प्रकृतियाँ न होकर संक्रमोत्कृष्ट स्थितिवाली प्रकृतियाँ हैं उनका उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम तीन आवलि कम उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण प्राप्त होता है और उत्कृष्ट यत्स्थितिसंक्रम दो आवलि कम उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण प्राप्त होता है। मात्र दर्शनमोहनीयकी तीन प्रकृतियोंमें तथा आहारकद्विक और तीर्थङ्कर प्रकृतिमें जो विशेषता है उसे अलगसे जान लेना चाहिए। चारों आयुओंका जो उत्कृष्ट स्थितिवन्ध है वही उनका उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम है, क्योंकि एक आयुका अन्य आयुमें संक्रम नहीं होता। मात्र इनकी यत्स्थिति एक आवलि कम उत्कृष्ट आवाधासहित अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण कही है। इनकी उत्कृष्ट यत्स्थिति इतनी कैसे कही है इस विषयको श्वेताम्बर कर्मप्रकृतिकी टीका में स्पष्ट किया है। उसका भाव यह है कि आयुबन्ध होते समय बन्धावलिप्रमाण काल जानेपर आयुबन्धके प्रथम समयमें बँधे हुए कर्मका उत्कर्षण होने पर उसकी आवाधा सहित उत्कृष्ट यत्स्थिति उक्त कालप्रमाण प्राप्त होती है। यह एक समाधान है। तथा 'अथवा' कहकर दूसरा समाधान इसप्रकार किया है कि बन्धावलिके बाद आयुकी निर्व्याधातरूप अपवर्तना (अपकर्षण) भी सर्वदा सम्भव है, इसलिए उसकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण यत्स्थिति जान लेनी चाहिए। अभिप्राय इतना ही है कि पूर्वकीटिकी आयुवाले मनुष्यके प्रथम त्रिभागमें परभवसम्बन्धी उत्कृष्ट आयुका बन्ध होने पर उसकी निपेक रचना तो नरकायु और देवायुकी तेतीस सागरप्रमाण तथा तिर्यञ्चायु और मनुष्यायुकी तीन पल्यप्रमाण ही रहती है। आवाधा-काल पूर्वकोटिका त्रिभाग इससे अलग है इसलिए इनका जो स्थितिवन्ध है वही स्थितिसंक्रम है। पर इनके बन्धके प्रथम समयसे लेकर एक आवलि काल जानेपर इन निपेकस्थितियोंमें बन्ध होते समय उत्कर्षण और बन्ध होते समय या बन्ध समयके बाद भी अपकर्षण होने लगता है। यतः इस उत्कर्षण और अपकर्षणमें एक स्थितिसे प्रदेश समूह उठकर दूसरी स्थितिमें निक्षिप्त होते समय स्थितिके परिमाणमें आवाधाकाल भी गभित है। पर यह उत्कर्षण और अपकर्षण बन्धके प्रथम समयसे लेकर एक आवलिकाल तक सम्भव नहीं है। यही कारण है कि आयुकर्मकी

यत्स्थिति कहते समय नरकायु आदिकी अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें एक आवलिकम उत्कृष्ट आवाधाकाल भी सम्मिलित कर लिया है।

इसप्रकार उत्कृष्ट स्थितिसंक्रमके प्रमाणका अनुगम करनेके बाद जघन्य स्थितिसंक्रमके प्रमाणका निर्देश किया है। खुलासा इसप्रकार है—पाँच ज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण आदि चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, संज्वलन लोभ, चार आयु और पाँच अन्तराय इनकी एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण स्थिति शेष रहने पर उद्यावलिसे उपरितन एक समयमात्र स्थितिका अपकर्षण होता है, इसलिए इनका जघन्य स्थितिसंक्रम एक स्थितिप्रमाण है और यत्स्थितिसंक्रम समयाधिक एक आवलिप्रमाण है। स्त्यानगुद्धित्रिक, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, वारह कपाय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, नरकगतिद्विक, तिर्यञ्चगतिद्विक, एकेन्द्रिय आदि चार जाति, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण इनकी क्षपणा होनेके अन्तिम समयमें जघन्य स्थिति पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण होती है, इसलिए इनका जघन्य स्थितिसंक्रम उक्त प्रमाण कहा है। परन्तु क्षपणाके अन्तिम समयमें इनके उद्यावलिमें स्थित निपेक्षोंका संक्रम नहीं होता, इसलिए उक्त कालमें उद्यावलिके मिला देनेपर इनकी यत्स्थिति उद्यावलि अधिक पत्यके असंख्यातवें भागप्रमाण होती है। यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी यत्स्थिति उद्यावलि अधिक न कहकर अन्तर्मुहूर्त अधिक कहनी चाहिए, क्योंकि इन दोनों प्रकृतियोंकी क्षपणाकी समाप्ति अन्तरकरणमें रहते हुए होती है और अन्तरकरणका काल उस समय अन्तर्मुहूर्त शेष रहता है। इसलिए यह स्पष्ट है कि अन्तरकरणमें इनके प्रदेशोंका अभाव होनेसे यत्स्थिति इतनी बढ़ जाती है। निद्रा और प्रचलाकी स्थिति दो आवलि और एक आवलिका असंख्यातवें भाग शेष रहनेपर इनकी मात्र उपरितन एक स्थितिका संक्रम होता है ऐसा स्वभाव है, इसलिए इनका जघन्य स्थितिसंक्रम एक स्थिति और यत्स्थितिसंक्रम आवलिका असंख्यातवें भाग अधिक दो आवलि होता है। हास्यादि छहकी क्षपणाके अन्तिम समयमें जघन्य स्थिति संख्यात वर्षप्रमाण होती है, इसलिए इनका जघन्य स्थितिसंक्रम संख्यात वर्षप्रमाण होता है। पर इनकी क्षपणाकी समाप्ति भी अन्तरकरणमें रहते हुए होती है और उस समय अन्तरकरणका काल अन्तर्मुहूर्त शेष रहता है। इसलिए इनकी यत्स्थिति अन्तर्मुहूर्त अधिक संख्यात वर्ष होती है। क्रोधसंज्वलनका जघन्य स्थितिवन्ध दो महीना प्रमाण होता है, मानसंज्वलनका जघन्य स्थितिवन्ध एक महीनाप्रमाण होता है, मायासंज्वलनका जघन्य स्थितिवन्ध अर्ध मासप्रमाण होता है और पुरुषवेदका जघन्य स्थितिवन्ध आठ वर्षप्रमाण होता है। इन प्रकृतियोंके उक्त स्थितिवन्धमेंसे अलग अलग अन्तर्मुहूर्तप्रमाण आवाधाकालके कम कर देनेपर उनके जघन्य स्थिति संक्रमका प्रमाण आ जाता है जो क्रमशः अन्तर्मुहूर्त कम दो माह, अन्तर्मुहूर्त कम एक माह, अन्तर्मुहूर्त कम अर्धमास और अन्तर्मुहूर्त कम आठ वर्षप्रमाण होता है। तथा इनका यत्स्थितिसंक्रम क्रमसे दो आवलि कम दो माह, दो आवलि कम एक माह, दो आवलि कम अर्धमास और दो आवलि कम आठ वर्षप्रमाण होता है, क्योंकि अपना अपना जघन्य स्थितिवन्ध होनेपर उसका एक आवलि काल तक संक्रम नहीं होता, इसलिए अपने अपने जघन्य स्थितिवन्धमेंसे एक आवलि तो यह कम हो गई और संक्रम प्रारम्भ होने पर वह एक आवलि काल तक होता रहता है, इसलिए एक आवलि यह कम हो गई। अतः इन प्रकृतियोंके जघन्य यत्स्थितिसंक्रमका प्रमाण अपने अपने जघन्य स्थितिवन्धमेंसे दो आवलि कम करने पर जो प्रमाण शेष रहे उतना प्राप्त होता है। अब रहीं शेष प्रकृतियों तो उनकी जघन्य स्थिति नयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है, इसलिए यहाँ पर उसमेंसे उद्यावलिप्रमाण स्थितिको छोड़कर शेष स्थितिका संक्रमण सम्भव होनेसे उनका जघन्य स्थितिसंक्रम उद्यावलि

कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण और यत्स्थितिसंक्रम उदयावलिसहित अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होता है। यहाँपर मूलमें इन प्रकृतियोंकी यत्स्थिति तथा स्त्यानगृद्धित्रिक आदि वत्तीस प्रकृतियोंकी यत्स्थिति नहीं बतलाई गई है। किन्तु वह सम्भव है, इसलिए हमने उसका अलगसे निर्देश कर दिया है। तथा मूलमें देवगति आदिका जघन्य स्थितिसंक्रम बतलाते समय जो प्रकृतियाँ परिगणित की गई हैं उनमें तीन आङ्गोपाङ्ग भी परिगणित किये जाने चाहिए, क्योंकि इनका जघन्य स्थितिसंक्रम भी सयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें होता है। आगे जो जघन्य स्थितिसंक्रमका स्वामित्व कहा है उससे भी यह बात स्पष्ट हो जाती है।

इस प्रकार प्रमाणानुगमका निर्देश करनेके बाद जघन्य और उत्कृष्ट भेदोंका आश्रयकर स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्ग-विचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर और अल्पबहुत्वका निर्देश करके भुजगार, पदनिक्षेप और वृद्धि इन अनुयोगद्वारोंका संक्षेपमें निरूपण किया है।

इस प्रकार स्थितिसंक्रमका विचार कर आगे अनुभागसंक्रमका प्रकरण प्रारम्भ होता है। इसमें सब कर्मोंको देशघाति, सर्वघाति और अधाति इन भेदोंमें विभक्तकर इनके आदि स्पर्धक परस्परमें किनके समान हैं और किनके किस क्रमसे प्राप्त होते हैं यह बतलाकर उत्कर्षणसे प्राप्त होनेवाला अनुभाग अनुभागसंक्रम है, अपकर्षणसे प्राप्त होनेवाला अनुभाग अनुभागसंक्रम है और अन्य प्रकृतियोंमें संक्रमण होकर प्राप्त होनेवाला अनुभाग अनुभागसंक्रम है इस अर्थपदका निर्देश किया गया है। यहाँ इतना विशेष जानना चाहिए कि मूल प्रकृतियोंमें उत्कर्षण और अपकर्षण इन दो प्रकारोंसे और उत्तर प्रकृतियोंमें यथासम्भव तीनों प्रकारोंसे अनुभागसंक्रम होता है।

आगे अपकर्षणसे प्राप्त होनेवाले अनुभागसंक्रमका निर्देश करते हुए बतलाया गया है कि आदि स्पर्धकका अपकर्षण नहीं होता, क्योंकि इसके नीचे जघन्य निक्षेप और जघन्य अतिस्थापनाका अभाव है। इसीप्रकार जघन्य निक्षेप और जघन्य अतिस्थापनाके अन्तर्गत जितने स्पर्धक हैं उनका अपकर्षण नहीं होता। मात्र इनके ऊपर जो स्पर्धक अवस्थित हैं उनका अपकर्षण होता है क्योंकि इनकी अतिस्थापना और निक्षेप पाये जाते हैं। इतना निर्देश करनेके बाद यहाँ प्रकृत विषयमें उपयोगी अल्पबहुत्व दिया गया है।

आगे उत्कर्षणके विषयमें यह नियम दिया है कि चरम स्पर्धक की स्थापना और निक्षेप का अभाव है, इसलिए जघन्य निक्षेप और जघन्य अतिस्थापनाप्रमाण स्पर्धक नीचे सरककर जो स्पर्धक अवस्थित है उसका उत्कर्षण होता है। इसके आगे अपकर्षण और उत्कर्षणकी अपेक्षा निक्षेप और अतिस्थापनाका अल्पबहुत्व देकर अर्थपद समाप्त किया गया है।

आगे प्रमाणानुगम, स्वामित्व, एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, सन्निकर्ष, स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्वका निर्देश करके कुछ अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर भुजगार, पदनिक्षेप और वृद्धिका विचारकर अनुभागसंक्रमप्रकरण समाप्त होता है।

आगे संक्रमस्थानोंको सत्कर्मस्थानोंके अनुसार जाननेकी सूचना कर प्रदेशसंक्रमके विषयमें कहा है कि एक उत्तर प्रकृतिके प्रदेशोंका अन्य सजातीय प्रकृतिमें संक्रमित होना प्रदेशसंक्रम कहलाता है। प्रदेशसंक्रम भी मूलप्रकृतियोंमें न होकर उत्तर प्रकृतियोंमें होता है। तदनुसार उत्तर प्रकृतिसंक्रमके पाँच भेद हैं—उद्वेलनसंक्रम, विध्यातसंक्रम, अधःप्रवृत्त संक्रम, गुणसंक्रम और सर्व-संक्रम। आगे ये संक्रम किस अवस्थामें और कहाँ होते हैं तथा किन प्रकृतियोंके कितने संक्रम होते हैं यह बतला कर इन संक्रमोंके अवहारकालके अल्पबहुत्वका निर्देश किया गया है। आगे

स्वामित्व आदि अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर भुजगार, पदनिक्षेप और वृद्धिसंक्रमका निर्देश करते हुए इस प्रकरणको समाप्त किया गया है ।

१३ लेश्या—लेश्याका निक्षेप चार प्रकारका है—नामलेश्या, स्थापनालेश्या, द्रव्यलेश्या और भावलेश्या । यहाँ इन नामलेश्या आदि निक्षेपोंका स्पष्टीकरण करते हुए तद्व्यतिरिक्त द्रव्यलेश्या के विषयमें लिखा है कि चक्षु इन्द्रियद्वारा ग्राह्य पुद्गलस्कन्धोंके कृष्ण आदि छह वर्णोंकी द्रव्यलेश्या संज्ञा है । यहाँ इनके उदाहरण भी दिये गये हैं । भावलेश्याके आगम और नोआगम ये भेद करके नोआगम भावलेश्याका वही लक्षण दिया है जो सर्वत्र प्रसिद्ध है । प्रकृतमें नैगमनयकी अपेक्षा नोआगमद्रव्यलेश्या और भावलेश्या प्रकृत है यह कहकर द्रव्यलेश्याके असंख्यात लोकप्रमाण भेद होने पर भी छह भेद ही क्यों किये गये हैं इसका स्पष्टीकरण किया गया है ।

आगे शरीरके आश्रयसे किन जीवोंके कौन लेश्या होती है यह बतला कर छह शरीरोंकी द्रव्य लेश्याओंका अलग अलग विचार किया गया है । यद्यपि कृष्णादि द्रव्यलेश्याओंमें एक एक गुणकी मुख्यतासे नामकरण किया जाता है पर इसका यह अभिप्राय नहीं है कि इनमेंसे प्रत्येकमें एक एक गुण ही होता है, इसलिए आगे किस लेश्यामें किस क्रमसे कौन कौन गुण होते हैं इसका स्पष्टीकरण तालिका द्वारा कराया जाता है —

लेश्या नाम	१	२	३	४	५
कृष्णले०	शुक्ल	पीत	लाल	नील	कृष्ण
नीलले०	शुक्ल	पीत	लाल	कृष्ण	नील
कापोतले०	शुक्ल	पीत	कृष्ण	लाल	नील
कापोतले०	शुक्ल	कृष्ण	पीत	नील	लाल
कापोतले०	कृष्ण	शुक्ल	नील	पीत	लाल
पीतले०	कृष्ण	नील	शुक्ल	पीत	लाल
पद्मले०	कृष्ण	नील	शुक्ल	लाल	पीत
पद्मले०	कृष्ण	नील	लाल	शुक्ल	पीत
पद्मले०	कृष्ण	नील	लाल	पीत	शुक्ल
शुक्लले०	कृष्ण	नील	लाल	पीत	शुक्ल

इन लेश्याओंमेंसे जिसमें सर्व प्रथम गुणका निर्देश किया है वह उसमें सव्यमे स्तोत्र है और आगेके गुण उस लेश्यामें उत्तरोत्तर अनन्तगुण हैं । कापोत और पद्मलेश्या नील नील प्रकारसे निष्पन्न होती हैं । शेष लेश्याएँ एक ही प्रकारसे निष्पन्न होती हैं । तथा कापोत लेश्यामें द्विस्थानिक अनुभाग होता है और शेष लेश्याओंमें द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक और चतुःस्थानिक अनुभाग होता है ।

मिथ्यात्व, असंयम, कपाय और योगसे उत्पन्न हुए जीवके संस्कारविशेषका नाम भाव-लेश्या है। द्रव्यलेश्याके समान ये भी छह प्रकारकी होती हैं। उनमेंसे कापोत लेश्या तीव्र होती है, नीललेश्या तीव्रतर होती है और कृष्णलेश्या तीव्रतम होती है। पीतलेश्या मन्द होती है, पद्मलेश्या मन्दतर होती है और शुक्ललेश्या मन्दतम होती है। ये छहों लेश्याएँ पटस्थानपतित हानि-वृद्धिको लिए हुए होती हैं। तथा इनमें भी कापोतलेश्या द्विस्थानिक अनुभागको लिए हुए होती है और शेष पाँच लेश्याएँ द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक और चतुःस्थानिक अनुभागको लिए हुए होती हैं। इस प्रकार इस अधिकारमें लेश्याओंका उक्त प्रकारसे वर्णन करके अन्तमें तीव्रता और मन्दताकी अपेक्षा अल्पबहुत्व बतला कर यह अधिकार समाप्त किया गया है।

**१४ लेश्याकर्म**—कृष्णादि लेश्याओंमेंसे जिसके आलम्बनसे मारण और विदारण आदि जिस प्रकारकी क्रिया होती है उसके अनुसार उसका वह लेश्याकर्म माना गया है। उदाहरणार्थ कृष्णलेश्यासे परिणत हुआ जीव निर्दय, कलहशील, रौद्र, अनुबद्धवैर, चोर, चपल, परस्त्रीमें आसक्त, मधु, मांस और सुगमों विशेष रुचि रखनेवाला, जिन शासनके सुननेमें अतत्पर और असंयमी होता है। इसी प्रकार अन्य लेश्याओंका अपने अपने नामानुरूप कर्म जानना चाहिए। इस प्रकार इस अधिकारमें लेश्याकर्मका विचार किया गया है।

**१५ लेश्यापरिणाम**—कौन लेश्या किस रू से अर्थात् किस वृद्धि या हानिरूपसे परिणत होती है इस बातका विचार इस अधिकारमें किया गया है। इसमें बतलाया है कि कृष्णलेश्यामें पटस्थानपतित संक्लेशकी वृद्धि होने पर उसका अन्य लेश्यामें संक्रमण न होकर स्वस्थानमें ही संक्रमण होता है। मात्र विशुद्धिकी वृद्धि होने पर उसका अन्य लेश्यामें भी संक्रमण होता है और स्वस्थानमें भी संक्रमण होता है। इतना अवश्य है कि कृष्णलेश्यामेंसे नीललेश्यामें आते समय नियमसे अनन्तगुणहानि होती है। नीललेश्यामें संक्लेशकी वृद्धि होने पर स्वस्थान-संक्रमण भी होता है और नीलसे कृष्णलेश्यामें भी संक्रमण होता है। तथा विशुद्धि हाने पर स्वस्थान संक्रमण भी होता है और नीललेश्यासे कापोतलेश्यामें भी संक्रमण होता है। मात्र नीललेश्यासे कृष्ण लेश्यामें जाते समय संक्लेशकी अनन्तगुणी वृद्धि होती है और नीलसे कापोत लेश्यामें आते समय संक्लेशकी अनन्तगुणी हानि होती है। इसी प्रकार शेष चार लेश्याओंमें भी परिणामका विचार कर लेना चाहिए। इस प्रकार इस अधिकारमें परिणामका विचार कर तीव्रता और मन्दताकी अपेक्षा संक्रम और प्रतिग्रहके अल्पबहुत्वका विचार करते हुए इस अधिकारको समाप्त किया गया है।

**१६ सातासात**—इस अनुयोगद्वाराका यहाँ पर पाँच अधिकारोंके द्वारा विचार किया गया है। वे पाँच अधिकार ये हैं—समुत्कीर्तना, अर्थपद, पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व। समुत्कीर्तनामें बतलाया गया है कि एकान्त सात और अनेकान्त सातके भेदसे सात दो प्रकारका है। तथा इसी प्रकार एकान्त असात और अनेकान्त असातके भेदसे असात भी दो प्रकारका है। अर्थपदका निर्देश करते हुए बतलाया है कि जो कर्म सातरूपसे बद्ध होकर यथावस्थित रहते हुए वेदा जाता है वह एकान्त सातकर्म है और इससे अन्य अनेकान्त सातकर्म है। इसी कर्म है और इससे अन्य अनेकान्त असातकर्म है। पदमीमांसामें इनके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य रूप एकान्त सात आदिके स्वामित्वका निर्देश किया गया है। तथा अन्तमें प्रमाणका विचार कर अल्पबहुत्वका निर्देश करते हुए इस अनुयोगद्वाराको समाप्त किया गया है।

**१७ दीर्घ-ह्रस्व**—इसमें दीर्घको प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे चार प्रकारका बन्ना कर उनका बन्ध, उदय और सत्त्वकी अपेक्षा विचार किया गया है। सर्व प्रथम न्यूनप्रकृतिदीर्घके प्रकृतिस्थानदीर्घ और मूलप्रकृतिस्थानदीर्घ ये दो भेद करके प्रकृतिस्थानका विचार करते हुए बतलाया है कि आठ प्रकृतियोंका बन्ध होने पर प्रकृतिदीर्घ और उनसे न्यून प्रकृतियोंका बन्ध होने पर नोप्रकृतिदीर्घ होता है। इसी प्रकार उदय और सत्त्वकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ और नोप्रकृतिदीर्घका घटित करके बतला कर उत्तर प्रकृतियोंमेंसे किस मूलकर्मकी उत्तर प्रकृतियोंमें सत्त्वादिकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ सम्भव नहीं है और किसकी उत्तर प्रकृतियोंमें प्रकृतिदीर्घ और नोप्रकृतिदीर्घ सम्भव है यह बतलाया गया है। अग्रे स्थितिदीर्घ, अनुभागदीर्घ और प्रदेशदीर्घको भी बतलाया गया है।

आगे दीर्घके समान ह्रस्वके भी चार भेद करके उनका विचार किया गया है। उदाहरणार्थ बन्धी अपेक्षा प्रकृतिह्रस्वका निर्देश करने हुए बतलाया है कि एक एक प्रकृतिका बन्ध करनेवालेके प्रकृतिह्रस्व होता है और इससे अधिकका बन्ध करनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व होता है। इस प्रकार न्यून और उत्तर प्रकृतियोंका आगन्धन लेकर बन्ध, उदय और सत्त्वकी अपेक्षा दीर्घ और ह्रस्वके विचार करनेमें इन अनुयोगद्वाराही प्रकृति हुई है।

**१८ भवधारणीय**—इस अनुयोगद्वारमें भवके आगभव, आदेशभव और भवग्रहणभव ने तीन भेद करके बतलाया है कि आठ कर्म और आठ कर्मोंके निमित्तसे उत्पन्न हुए जीवके परिणामको आगभव करते हैं। चार गति नामकर्म और उनसे उत्पन्न हुए जीवके परिणामको आदेशभव करते हैं। इनके अनुसार आदेशभव चार प्रकारका है—नारक भव, तिर्यञ्चभव, सगुण्यभव और देवता। तथा भुज्यमान आयु गलकर नई आयुका उदय होने पर प्रथम समयमें उत्पन्न हुए व्यक्तजन संशयादि जीवके परिणामको या पूर्वशरीरका त्याग होकर नूतन शरीरके प्रकृतमें भवग्रहणभवका प्रकरण है। यद्यपि जीव अमूर्त है फिर भी उनका कर्मके साथ अनादि सम्बन्ध होनेसे संसार अवस्थामें वह मूर्तभावको प्राप्त हो रहा है, इसलिए अमूर्त जीवका मूर्त कर्मके साथ बन्ध बन जाता है। ऐसा यह जीव शेष कर्मोंके द्वारा न धारण किया जाकर आयुकर्मके द्वारा धारण किया जाता है, अतएव भवधारणीय आयुकर्म कहलाता है। इसका पदमीमांसा, स्थायित्व और अल्पवृत्त्वको आज्ञम्वन लेकर विस्तारसे विचार देना अनुयोगद्वारमें किया है, इसलिए उस सब व्याख्यानको यहाँसे जान लेना चाहिए। इस प्रकार भवग्रहणभवके व्याख्यान करनेमें यह अनुयोगद्वारा चरितार्थ है।

**१९ पुद्गलात्त**—इसमें पुद्गलके चार निक्षेप करके प्रकृतमें नोआगमतद्वचतिरिक्त द्रव्यपुद्गलका विचार करते हुए बतलाया गया है कि पुद्गलात्त अर्थात् पुद्गलोंका आत्मसादकार द्वाद प्रकारसे होता है—ग्रहणसे, परिणामसे, उपभोगसे, आहारसे, मसत्त्वसे और परिग्रहसे। इनका नुनासा करते हुए बतलाया है कि द्वाथ और पैर आदिसे ग्रहण किये गये द्रव्य आदि पुद्गल ग्रहणसे आत्तपुद्गल हैं। मिथ्यात्व आदि परिणामोंसे अपने किये गये पुद्गल परिणामसे आत्तपुद्गल हैं। उपभोगसे अपने किये गये गन्ध और ताम्बूल आदि पुद्गल उपभोगसे आत्तपुद्गल हैं। ज्ञान-पानके द्वारा अपने किये गये पुद्गल आहारसे आत्तपुद्गल हैं। अनुगमसे ग्रहण किये गये पुद्गल गमत्त्वसे आत्तपुद्गल हैं और स्वाधीन पुद्गल परिग्रहसे आत्तपुद्गल हैं। इन सबका वर्णन इस अनुयोगद्वारमें किया गया है। अथवा पुद्गलात्तका अर्थ पुद्गलात्मा है। पुद्गलात्मासे रूपादि गुणवाला पुद्गल लिया गया है। अतः उसके गुणोंकी पदस्थानपत्तिन वृद्धि आदिका इस अनुयोगद्वारमें विचार किया गया है।

मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे उत्पन्न हुए जीवके संस्कारविशेषका नाम भाव-  
लेश्या है। द्रव्यलेश्याके समान ये भी छह प्रकारकी होती हैं। उनमेंसे कपोत लेश्या तीव्र होती  
है, नीललेश्या तीव्रतर होती है और कृष्णलेश्या तीव्रतम होती है। पीतलेश्या मन्द होती है,  
पद्मलेश्या मन्दतर होती है और शुक्ललेश्या मन्दतम होती है। ये छद्मों लेश्याएँ पटस्थानपतित  
हानि-वृद्धिको लिए हुए होती हैं। तथा इनमें भी कापोतलेश्या द्विस्थानिक अनुभागको लिए हुए  
होती है और शेष पाँच लेश्याएँ द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक और चतुःस्थानिक अनुभागको लिए  
हुए होती हैं। इस प्रकार इस अधिकारमें लेश्याओंका उक्त प्रकारसे वर्णन करके अन्तमें तीव्रता  
और मन्दताकी अपेक्षा अल्पबहुत्व बतला कर वह अधिकार समाप्त किया गया है।

१४ लेश्याकर्म—कृष्णादि लेश्याओंमेंसे जिसके आलम्बनसे सारण और विदारण  
आदि जिस प्रकारकी क्रिया होती है उसके अनुसार उसका वह लेश्याकर्म माना गया है।  
उदाहरणार्थ कृष्णलेश्यासे परिणत हुआ जीव निर्दय, कलहशील, रौद्र, अनुबद्धवैर, चोर, चपल,  
परबीमें आसक्त, मधु, मांस और सुगमें विशेष रुचि रखनेवाला, जिन शासनके मुननेमें  
अतत्पर और असंयमी होता है। इसी प्रकार अन्य लेश्याओंका अपने अपने नामानुरूप कर्म  
जानना चाहिए। इस प्रकार इस अधिकारमें लेश्याकर्मका विचार किया गया है।

१५ लेश्यापरिणाम—कौन लेश्या किस रूपसे अर्थात् किस वृद्धि या हानिरूपसे परिणत  
होती है इस बातका विचार इस अधिकारमें किया गया है। इसमें बतलाया है कि कृष्णलेश्यामें  
पटस्थानपतित संक्लेशकी वृद्ध होने पर उसका अन्य लेश्यामें संक्रमण न होकर स्वस्थानमें  
ही संक्रमण होता है। मात्र विशुद्धिकी वृद्धि होने पर उसका अन्य लेश्यामें भी संक्रमण होता  
है और स्वस्थानमें भी संक्रमण होता है। इतना अवश्य है कि कृष्णलेश्यामेंसे नीललेश्यामें आते  
समय नियमसे अनन्तगुणहानि होती है। नीललेश्यामें संक्लेशकी वृद्धि होने पर स्वस्थान-  
संक्रमण भी होता है और नीलसे कृष्णलेश्यामें भी संक्रमण होता है। तथा विशुद्धि होने पर  
स्वस्थान संक्रमण भी होता है और नीललेश्यासे कापोतलेश्यामें भी संक्रमण होता है। मात्र  
नीललेश्यासे कृष्ण लेश्यामें जाते समय संक्लेशकी अनन्तगुणी वृद्धि होती है और नीलसे कापोत  
लेश्यामें आते समय संक्लेशकी अनन्तगुणी हानि होती है। इसी प्रकार शेष चार लेश्याओंमें  
भी परिणामका विचार कर लेना चाहिए। इस प्रकार इस अधिकारमें परिणामका विचार कर  
तीव्रता और मन्दताकी अपेक्षा संक्रम और प्रतिग्रहके अल्पबहुत्वका विचार करते हुए इस  
अधिकारको समाप्त किया गया है।

१६ सातासात—इस अनुयोगद्वारका यहाँ पर पाँच अधिकारोंके द्वारा विचार किया  
गया है। वे पाँच अधिकार ये हैं—समुत्कीर्तना, अर्थपद, पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व।  
समुत्कीर्तनामें बतलाया गया है कि एकान्त सात और अनेकान्त सातके भेदसे सात दो प्रकारका  
है। तथा इसी प्रकार एकान्त असात और अनेकान्त असातके भेदसे असात भी दो प्रकारका  
है। अर्थपदका निर्देश करते हुए बतलाया है कि जो कर्म सातरूपसे बद्ध होकर यथावस्थित  
रहते हुए वेदा जाता है वह एकान्त सातकर्म है और इससे अन्य अनेकान्त सातकर्म है। इसी  
प्रकार जो कर्म असातरूपसे बद्ध होकर यथावस्थित रहते हुए वेदा जाता है वह एकान्त असात  
कर्म है और इससे अन्य अनेकान्त असातकर्म है। पदमीमांसामें इनके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, लघन्य  
और अजघन्य पदोंके अस्तित्वकी सूचना मात्र की गई है। स्वामित्वमें इन उत्कृष्ट आदि भेद  
रूप एकान्त सात आदिके स्वामित्वका निर्देश किया गया है। तथा अन्तमें प्रमाणका विचार  
कर अल्पबहुत्वका निर्देश करते हुए इस अनुयोगद्वारको समाप्त किया गया है।

१७ दीर्घ-ह्रस्व—इसमें दीर्घको प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे चार प्रकारका बतला कर उनका बन्ध, उदय और सत्त्वकी अपेक्षा विचार किया गया है। सर्व प्रथम मूलप्रकृतिदीर्घके प्रकृतिस्थानदीर्घ और एकैकप्रकृतिस्थानदीर्घ ये दो भेद करके प्रकृतिस्थानका विचार करते हुए बतलाया है कि आठ प्रकृतियोंका बन्ध होने पर प्रकृतिदीर्घ और उनसे न्यून प्रकृतियोंका बन्ध होने पर नोप्रकृतिदीर्घ होता है। इसी प्रकार उदय और सत्त्वकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ और नोप्रकृतिदीर्घको घटित करके बतला कर उत्तर प्रकृतियोंमेंसे किस मूलकर्मकी उत्तर प्रकृतियोंमें बन्धादिकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ सम्भव नहीं है और किसकी उत्तर प्रकृतियोंमें प्रकृतिदीर्घ और नोप्रकृतिदीर्घ सम्भव है यह बतलाया गया है। अगे स्थितिदीर्घ, अनुभागदीर्घ और प्रदेशदीर्घको भी बतलाया गया है।

आगे दीर्घके समान ह्रस्वके भी चार भेद करके उनका विचार किया गया है। उदाहरणार्थ बन्धकी अपेक्षा प्रकृतिह्रस्वका निर्देश करते हुए बतलाया है कि एक एक प्रकृतिका बन्ध करनेवालेके प्रकृतिह्रस्व होता है और इससे अधिकका बन्ध करनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व होता है। इस प्रकार मूल और उत्तर प्रकृतियोंका आलम्बन लेकर बन्ध, उदय और सत्त्वकी अपेक्षा दीर्घ और ह्रस्वके विचार करनेमें इस अनुयोगद्वारकी प्रवृत्ति हुई है।

१८ भवधारणीय—इस अनुयोगद्वारमें भवके ओघभव, आदेशभव और भवग्रहणभव ये तीन भेद करके बतलाया है कि आठ कर्म और आठ कर्मोंके निमित्तसे उत्पन्न हुए जीवके परिणामको ओघभव कहते हैं। चार गति नामकर्म और उनसे उत्पन्न हुए जीवके परिणामको आदेशभव कहते हैं। इसके अनुसार आदेशभव चार प्रकारका है—नारक भव, तिर्यञ्चभव, मनुष्यभव और देवभव। तथा भुज्यमान आयु गलकर नई आयुका उदय होने पर प्रथम समयमें उत्पन्न हुए व्यञ्जन संज्ञावाले जीवके परिणामको या पूर्वशरीरका त्याग होकर नूतन शरीरके ग्रहणको भवग्रहणभव कहते हैं। प्रकृतमें भवग्रहणभवका प्रकरण है। यद्यपि जीव अमूर्त है फिर भी उसका कर्मके साथ अनादि सम्बन्ध होनेसे संसार अवस्थामें वह मूर्तभावको प्राप्त हो रहा है, इसलिए अमूर्त जीवका मूर्त कर्मके साथ बन्ध बन जाता है। ऐसा यह जीव शेष कर्मोंके द्वारा न धारण किया जाकर आयुकर्मके द्वारा धारण किया जाता है, अतएव भवधारणीय आयुकर्म ठहरता है। इसका पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्वको आलम्बन लेकर विस्तारसे विचार वेदना अनुयोगद्वारमें किया है, इसलिए उस सब व्याख्यानको वहाँसे जान लेना चाहिए। इस प्रकार भवग्रहणभवके व्याख्यान करनेमें यह अनुयोगद्वार चरितार्थ है।

१९ पुद्गलात्—इसमें पुद्गलके चार निक्षेप करके प्रकृतमें नोआगमतद्वचतिरिक्त द्रव्यपुद्गलका विचार करते हुए बतलाया गया है कि पुद्गलात् अर्थात् पुद्गलोंका आत्मसात्कार छह प्रकारसे होता है—ग्रहणसे, परिणामसे, उपभोगसे, आहारसे, ममत्त्वसे और परिग्रहसे। इनका खुजासा करते हुए बतलाया है कि हाथ और पैर आदिसे ग्रहण किये गये दण्ड आदि पुद्गल ग्रहणसे आत्तपुद्गल हैं। मिथ्यात्व आदि परिणामोंसे अपने किये गये पुद्गल परिणामसे आत्तपुद्गल हैं। उपभोगसे अपने किये गये गन्ध और ताम्बूल आदि पुद्गल उपभोगसे आत्तपुद्गल हैं। खान-पानके द्वारा अपने किये गये पुद्गल आहारसे आत्तपुद्गल हैं। अनुरागसे ग्रहण किये गये पुद्गल ममत्त्वसे आत्तपुद्गल हैं और स्वाधीन पुद्गल परिग्रहसे आत्तपुद्गल हैं। इन सबका वर्णन इस अनुयोगद्वारमें किया गया है। अथवा पुद्गलात्तका अर्थ पुद्गलात्मा है। पुद्गलात्मासे रूपादि गुणवाला पुद्गल लिया गया है। अतः उसके गुणोंकी पटस्थानपतित वृद्धि आदिका इस अनुयोगद्वारमें विचार किया गया है।



२० निधत्त-अनिधत्त—इस अनुयोगद्वारमें बतलाया है कि जिस प्रदेशाग्रका उत्कर्षण और अपकर्षण तो होता है पर उदीरणा और अन्य प्रकृतिरूपसे संक्रमण नहीं होता उसकी निधत्त संज्ञा है। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे निधत्त भी चार प्रकारका है और अनिधत्त भी चार प्रकारका है। इस विषयमें यह नियम है कि दर्शनमोहनीयकी उपशामना या क्षपणा करते समय मात्र दर्शनमोहनीय कर्म अनिवृत्तिकरणमें अनिधत्त हो जाता है। अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करते समय मात्र अनन्तानुबन्धीचतुष्क अनिवृत्तिकरणमें अनिधत्त हो जाता है और चारित्रमोहनीयकी उपशामना और क्षपणा करते समय अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें सब कर्म अनिधत्त हो जाते हैं। तथा अपने अपने निर्दिष्ट स्थानके पूर्व दर्शनमोहनीय, अनन्तानुबन्धीचतुष्क और शेष सब कर्म निधत्त और अनिधत्त दोनों प्रकारके होते हैं। यह अर्थपद है, इसके अनुसार चौबीस अनुयोगद्वारों। आश्रय लेकर इस अनुयोगद्वारका कथन करना चाहिए।

२१ निकाचित-अनिकाचित—इस अनुयोगद्वारमें बतलाया है कि जिस प्रदेशाग्रका न तो अपकर्षण होता है, न उत्कर्षण होता है, न अन्य प्रकृतिरूपसे संक्रमण होता है और न उदीरणा होती है। जिसके ये चारों नहीं होते उसकी निकाचित संज्ञा है। यह प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे चार प्रकारका है। इसके विषयमें भी यह नियम है कि पूर्वोक्त प्रकार से अनिवृत्तिकरणमें प्रवेश करने पर सब कर्म अनिकाचित हो जाते हैं। किन्तु इसके पूर्व वे निकाचित और अनिकाचित दोनों प्रकारके होते हैं। इन निक.चित और अनिकाचित प्रदेशाग्रोंकी भी चौबीस अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे प्ररूपणा करनी चाहिए। यहाँ उपशान्त, निधत्त और निकाचितके सन्निकर्षका कथन करते हुए बतलाया है कि जो प्रदेशाग्र अप्रशस्त उपशामनारूपसे उपशान्त है वह न निधत्त है और न निकाचित है। जो निधत्त प्रदेशाग्र है वह न उपशान्त है और न निकाचित है। तथा जो निकाचित प्रदेशाग्र है वह न उपशान्त है और न निधत्त है। आगे अधःप्रवृत्तसंक्रमके साथ इन तीनोंके अल्पवहुत्वका निर्देश करके यह अनुयोगद्वार समाप्त किया गया है।

२२ कर्मस्थिति—इस अनुयोगद्वारके विषयमें दो उपदेशोंका निर्देश करके यह अनुयोगद्वार समाप्त किया गया है। पहला उपदेश नागहस्तिके मतके अनुसार निर्दिष्ट किया है और दूसरा उपदेश आर्यमंजुके मतका निर्देश करता है। नागहस्तिकमाश्रमणका कहना है कि कर्मस्थिति अनुयोगद्वारमें कर्मोंकी जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिके प्रमाणका कथन किया जाता है और आर्यमंजुका कहना है कि इसमें कर्मस्थितिके भीतर सञ्चित हुए सत्कर्मकी प्ररूपणा की जाती है।

२३ पश्चिमस्कन्ध—इस अनुयोगद्वारमें तीन भयोंमेंसे भवग्रहणभवको प्रकृत बतला कर चरम भवमें जीवके सब कर्मोंकी बन्धमार्गणा, उद्ग्रमार्गणा, उदीरणामार्गणा, संक्रममार्गणा और सत्कर्ममार्गणा इन पाँच मार्गणाओंका विचार किया जाता है यह बतलाया गया है। इसके आगे जो जीव सिद्ध होता है उसकी अन्तर्मुहूर्त आयु शेष रह जाने पर तेरहवें गुणस्थानमें कर्मोंकी और आत्मप्रदेशोंकी किस क्रमसे क्या क्या क्रिया होती है तथा चौदहवें गुणस्थानमें यह जीव किसरूपसे कितने कालतक अवस्थित रहकर कर्मोंसे मुक्त होकर सिद्ध होता है यह बतलाया गया है। इसप्रकार इन सब बातोंका विवेचन करनेके बाद यह अनुयोगद्वार समाप्त किया गया है।

२४ अल्पबहुत्व — इस अनुयोगद्वारेके प्रारम्भमें यह सूचना की है कि नागहस्ति भट्टारक इसमें सत्कर्मका विचार करते हैं। वीरसेन स्वामीने इस उपदेशको प्रवृत्तमाने बतला कर इसके अनुसार सत्कर्मके प्रकृतिसत्कर्म, स्थितिसत्कर्म, अनुभागसत्कर्म और प्रदेशसत्कर्म ये चार भेद करके सर्वप्रथम मूल और उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा सत्कर्मका विचार किया है। उसमें भी मूल प्रकृतियोंके स्वामित्वकी सूचनामात्र करके उत्तरप्रकृतियोंके स्वामित्वको विस्तारसे बतला कर एक जीवकी अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय, काल, अन्तर और स्वामित्वको स्वामित्वके बलसे जान लेनेकी सूचना करके स्वस्थान और परस्थान दोनों प्रकारके अल्पबहुत्वोंमें से परस्थान अल्पबहुत्वका ओषसे और चारों गतियोंके साथ असंज्ञी मार्गणमें विचार किया है। भुजगार, पदनिक्षेप और वृद्धि यहाँ पर नहीं हैं, अतः इनके विषयमें इतनी मात्र सूचना देकर प्रकृतिस्थानसत्कर्मके विषयमें लिखा है कि मोहनीयका कषायप्राभृतके अनुसार जानना चाहिए और शेष कर्मोंकी प्रकृतिस्थानप्ररूपणा सुगम है।

स्थितिसत्कर्मका विचार करते हुए मूलप्रकृतिस्थितिसत्कर्मका वर्णन सुगम कहकर उत्तर प्रकृतियोंके स्थितिसत्कर्मका जघन्य और उत्कृष्ट अद्धाच्छेद तथा जघन्य और उत्कृष्ट स्वामित्वका विस्तारसे विचार कर तथा एक जीवकी अपेक्षा काल आदि अनुयोगद्वारोंको स्वामित्वके बलसे जाननेकी सूचनामात्र करके अल्पबहुत्व दिया गया है।

यहाँ पर अद्धाच्छेदका विचार करते हुए 'जडिदि' और 'जाओ डिदीओ' ये शब्द आये हैं। प्रायः अनेक स्थानों पर 'जं डिदि' भी मुद्रित है। पर उससे 'जडिदि'का ही ग्रहण करना चाहिए। इन शब्दों द्वारा दो प्रकारकी स्थितियोंका निर्देश किया गया है। 'जडिदि' शब्द 'यत्स्थिति' का द्योतक है और 'जाओ डिदीओ'से स्थितिगत निषेकोंका परिमाण लिया गया है। उदाहरणस्वरूप पाँच निद्राओंकी उत्कृष्ट यत्स्थिति पूरी तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण बतलाई है और निषेकोंके अनुसार स्थितियाँ एक समय कम तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण बतलाई हैं। अभिप्राय इतना है कि पाँच निद्राओंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध होते समय उदय नहीं होता, इसलिए पूरी स्थिति तीस कोड़ाकोड़ी सागर होकर भी उस समय सब निषेक एक कम तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण होते हैं, क्योंकि अनुदयवाली प्रकृतियोंका एक निषेक उदय समयके पूर्व स्तिबुक संक्रमणके द्वारा अन्य प्रकृतिरूप परिणत होता रहता है, इसलिए इनकी यत्स्थिति तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण होकर भी निषेकोंके अनुसार स्थिति एक समय कम होती है। यहाँ बन्धके समय आवाधा कालके भीतर प्राक्तनबद्ध कर्मोंके निषेकका सत्त्व होनेसे एक समय कम तीस कोड़ाकोड़ी सागरप्रमाण निषेक बन जाते हैं इतना विशेष जानना चाहिए। यहाँ पर विशेष नियम इस प्रकार जानना चाहिए—

१—जिन कर्मोंका स्वोदयसे स्थितिबन्ध होता है उनकी यत्स्थिति और निषेकोंके परिमाणके अनुसार स्थिति समान होती है। बन्धोत्कृष्ट स्थितिके समान ही उनका दोनों प्रकारका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म होता है।

२—जिन कर्मोंका परोदयमें उत्कृष्ट स्थितिबन्ध होता है उनकी उत्कृष्ट यत्स्थिति तो बन्धोत्कृष्ट स्थितिके ही समान होती है। मात्र निषेकोंके परिमाणके अनुसार उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म बन्धोत्कृष्ट स्थितिसे एक समय कम होता है।

३—जिन कर्मोंका स्वोदयमें उत्कृष्ट स्थितिसंक्रमसे उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म प्राप्त होता है उनकी उत्कृष्ट यत्स्थितिसत्कर्म और निषेकोंके परिमाणके अनुसार उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म तज्जातीय कर्मके उत्कृष्ट स्थितिबन्धसे एक आवलि कम होता है। मात्र सम्यक्त्वका उक्त दोनों प्रकारका

उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म अन्तर्मुहूर्त कम जानना चाहिए, क्योंकि मिथ्यात्व गुणस्थानमें मिथ्यात्वका उत्कृष्ट स्थितिवन्ध होकर अन्तर्मुहूर्तमें सम्यक्त्व प्राप्त होनेपर मिथ्यात्वकी अन्तर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट स्थितिका सम्यक्त्वरूपसे संक्रमण होता है ।

४—जिन कर्मों का परोक्षमें उत्कृष्ट स्थितिसंक्रमसे उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म प्राप्त होता है उनकी उत्कृष्ट यत्स्थिति तज्जातीय कर्मके उत्कृष्ट स्थितिवन्धसे एक आवलि कम होती है और निषेकोंके परिमाणके अनुसार उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म तज्जातीय कर्मके उत्कृष्ट स्थितिवन्धसे एक समय अधिक एक आवलि कम होता है । मात्र सम्यग्मिथ्यात्वका उक्त दोनों प्रकारका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म मिथ्यात्वके उत्कृष्ट स्थितिवन्धसे अन्तर्मुहूर्त कम जानना चाहिए । कारणका कथन स्पष्ट है ।

५—चारों आयुओंका उत्कृष्ट अवाधा काल सहित उत्कृष्ट स्थितिवन्ध उत्कृष्ट यत्स्थिति-सत्कर्म होता है और अपने अपने निषेकोंके परिमाणके अनुसार निषेकगत उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म होता है ।

इसीप्रकार जघन्य स्थितिसत्कर्मके विषयमें भी अलग अलग प्रकृतियोंको ध्यानमें रखकर नियम घटित कर लेने चाहिए ।

अनुभागसत्कर्मका विचार करते हुए पहले क्रमसे स्पर्धकप्ररूपणा, घातिसंज्ञा और स्थान-संज्ञाका प्ररूपण करके जघन्य और उत्कृष्ट स्वामित्व और कुछ मार्गणाओंमें अल्पबहुत्वका विचार किया गया है ।

अनुभागसत्कर्मके पश्चात् प्रदेश उदीरणाके आश्रयसे अल्पबहुत्व वतलाते हुए मूल और उत्तर प्रकृतियोंका आलम्बन लेकर वह वतलाया गया है । आगे उत्तरप्रकृतिसंक्रम, मे हनीय सम्बन्धी प्रकृतिस्थानसंक्रम, जघन्य स्थितिसंक्रम, अनुभागसंक्रम, जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिके आश्रयसे प्रदेशसंक्रम और स्वतन्त्ररूपसे प्रदेशसंक्रमके अल्पबहुत्वका विचार करके प्रदेशसंक्रम अधिकारको पूर्ण किया गया है ।

इसके पश्चात् पहले कहे गये लेश्या, लेश्यापरिणाम, लेश्याकर्म, सात-असात, दीर्घ-ह्रस्व, भवधारण, पुद्गलात्त, निधत्त-अनिधत्त, निकाचित्त-अनिकाचित्त, कर्मस्थिति और पञ्चिमस्कन्ध इन अनुयोगद्वारोंका पुनः पृथक्-पृथक् उल्लेख करके अलग अलग सूचनाएँ दी गई हैं । अन्तमें महावाचक क्षमाश्रमणके अभिप्रायानुसार अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके आश्रयसे सत्कर्मका विचार करते हुए उत्तरप्रकृतिसत्कर्म अल्पबहुत्वदण्डक, मोहनीय प्रकृतिस्थानसत्कर्म अल्पबहुत्व, उत्तर-प्रकृतिस्थितिसत्कर्म अल्पबहुत्व, उत्तरप्रकृतिअनुभागसत्कर्म अल्पबहुत्व और उत्तरप्रकृतिप्रदेश-सत्कर्म अल्पबहुत्व देकर अल्पबहुत्वके साथ चौबीस अनुयोगद्वार समाप्त करनेके साथ धवला समाप्त होती है ।

## विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मोक्ष-अनुयोगद्वार	३३७-३३६	उस विषयमें अर्थपद	३४७
मह्विजिन की स्तुति	३३७	अपकर्षणका स्वरूपनिर्देश	३४७
मोक्ष अनुयोगद्वार कहनेकी प्रतिज्ञा	३३७	उत्कर्षणका स्वरूपनिर्देश	३४८
मोक्षका चार प्रकारका निक्षेप और		उत्तरप्रकृतिके आश्रयसे प्रमाणानुगम	३४६
उनकी व्याख्या	३३७	स्वामित्वविचार	३५२
कर्मद्रव्यमोक्षके चार भेद	३३७	एक जीवकी अपेक्षा काल	३५४
प्रकृतिद्रव्यमोक्षके दो भेद तथा		एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	३५६
प्रत्येक के दो दो उत्तर भेद	३३७	नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय	३६१
प्रकृतिमोक्षका अर्थपद	३३७	नाना जीवोंकी अपेक्षा काल	३६२
स्थितिमोक्षके दो भेद और अर्थपद	३३७	नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर	३६३
अनुभागमोक्षका अर्थपद	३३८	अल्पबहुत्व	३६४
प्रदेशमोक्षका अर्थपद	३३८	भुजगारसंक्रमविचार	३६९
नोकर्मद्रव्यमोक्षके तीन भेद और		एक जीवकी अपेक्षा काल	३७०
उनकी व्याख्या	३३८	एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	३७१
संक्रम-अनुयोगद्वार	३३६-४८३	अपबहुत्व	३७२
मुनिसुव्रत नाथकी स्तुति	३३६	पदनिक्षेप संक्रमकी सूचना	३७३
संक्रम अनुयोगद्वार कहनेकी प्रतिज्ञा	३३६	वृद्धिसंक्रम	३७३
संक्रमका छह प्रकारका निक्षेप		अनुभागसंक्रमविचार	३७४
और उनकी व्याख्या	३३६	आदिस्पर्धकनिर्देश	३७४
कर्मसंक्रमका प्रकरण है यह सूचित		अर्थपद	३७५
कर उसके चार भेदोंका निर्देश	३४०	प्रकृतोपयोगी अल्पबहुत्व	३७६
प्रकृतिसंक्रमका अर्थपद	३४०	प्रमाणानुगम	३७७
मूलप्रकृतिसंक्रमका निषेध	३४०	स्वामित्व	३७७
उत्तरप्रकृतिसंक्रमका स्वामित्व	३४०	एक जीवकी अपेक्षा काल	३८२
एक जीवकी अपेक्षा काल	३४२	एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	३८७
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	३४२	नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय	३८८
नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय	३४४	नाना जीवोंकी अपेक्षा काल	३८९
नाना जीवोंकी अपेक्षा काल	३४४	नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर	३९१
अल्पबहुत्व	३४४	सन्निकर्ष	३९२
प्रकृतिस्थानसंक्रमका विचार	३४६	अल्पबहुत्व	३९२
स्थितिसंक्रमके दो भेद	३४७	भुजगारसंक्रमका अर्थपद	३९८
		एक जीवकी अपेक्षा काल	३९६

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अल्पबहुत्व	४००	छह द्रव्यलेश्याओंका वर्णन	४८५
पदनिक्षेपमें स्वामित्व	४०१	किस लेश्यामें किस क्रमसे कितने	
अल्पबहुत्व	४०५	प्रमाणमें कौन कौन रंग होते हैं	
वृद्धिसंक्रममें स्वामित्व	४०६	इसका विचार	४८७
एक जीवकी अपेक्षा काल	४०६	भावलेश्याओंका विचार	४८८
एक जीवकी अपेक्षा अन्तर	४०६	लेश्याकर्म-अनुयोगद्वार	४६०-४६२
अल्पबहुत्व	४०७	कुंथुजिनकी स्तुति	४६०
प्रदेशसत्कर्ममें अर्थपद	४०८	किस लेश्याका क्या कर्म है इसका विचार	४६०
उत्तरप्रकृतिसंक्रमके पाँच भेद	४०८	लेश्यापरिणाम-अनुयोगद्वार	४६३-४६७
कितनी प्रकृतियोंके कितने संक्रम		अभिनन्दनजिनकी स्तुति	४६३
होते हैं इसका विचार	४०९	लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वारके	
उद्वेलनप्रकृतियोंके उद्वेलनक्रमका निर्देश	४१९	कथनकी सार्थकता	४६३
पाँच संक्रमभागहारोंका अल्पबहुत्व	४२१	छह लेश्याओंके परिणमनकी विधि	४६३
उत्तर प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका		जघन्य और उत्कृष्ट संक्रम और	
स्वामित्व	४२१	प्रतिग्रहोंका तीव्र-मन्दताकी अपेक्षा	
जघन्य प्रदेशसंक्रमस्वामित्व	४३२	अल्पबहुत्व	४९५
उत्तरप्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल	४४१	सातासात-अनुयोगद्वार	४६८-५०६
जघन्य प्रदेशसंक्रम तथा अन्य अनुयोग-		अजितजिनकी स्तुति	४६८
द्वारोंके जाननेकी सूचना	४४२	सातासातके पाँच अनुयोगद्वार	४९८
उत्तर प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका		समुत्कीर्तना	४६८
अल्पबहुत्व	४४२	अर्थपद	४६८
उत्तर प्रकृतियोंके जघन्य प्रदेशसंक्रमका		पदमीमांसा	४६८
अल्पबहुत्व	४४८	स्वामित्व	४६९
भुजगारसंक्रममें स्वामित्व	४५३	प्रमाणानुगम	५०१
एक जीवकी अपेक्षा काल	४५४	अल्पबहुत्व	५०२
अल्पबहुत्व	४५९	दीर्घ-ह्रस्व-अनुयोगद्वार	५०७-५११
पदनिक्षेपमें स्वामित्व	४६१	सम्भवजिनकी स्तुति	५०७
अल्पबहुत्व	४७९	दीर्घके चार भेद	५०७
वृद्धिसंक्रम	४८१	प्रकृतिदीर्घका विचार	५०७
लेश्या-अनुयोगद्वार	४८४-४८९	स्थितिदीर्घका विचार	५०८
अरजिनकी स्तुति	४८४	अनुभागदीर्घ और प्रदेशदीर्घका विचार	५०९
लेश्याका चार प्रकारका निक्षेप विचार	४८४	ह्रस्वके चार भेद	५०९
तद्व्यतिरिक्त द्रव्यलेश्याके छह		प्रकृतिह्रस्वका विचार	५०९
भेदोंका विचार	४८४	स्थितिह्रस्वका विचार	५१०
प्रकृतमें नैगमनयकी अपेक्षा नोआगम		अनुभागह्रस्वका विचार	५११
द्रव्यलेश्या और नोआगम भावलेश्या			
का प्रकरण है इसकी सूचना	४८५		

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्रदेशह्रस्वका विचार	५११	मार्गणात्रोंका विचार किया जाता है	
भवधारणीय-अनुयोगद्वार	५१२-५१३	इस बातका निर्देश	५१६
सुमतिजिनकी स्तुति	५१२	सिद्ध होनेवाले जीवकी अन्य प्ररूपणा	५१६
भवके तीन भेदोंका स्वरूपनिर्देश	५१२	आवर्जितकरणके बाद वेवलिसमुद्घातमें	
अमूर्त जीवका मूर्त पुद्गलके साथ कैसे		होनेवाले कार्यविशेषका निर्देश	५१९
सम्बन्ध होता है इसका विचार	५१३	योगनिरोध आदि कार्य विशेषोंका निर्देश	५२०
भवग्रहणभवका विशेष विचार	५१३	अपूर्वस्पर्धक करनेकी प्रक्रिया	५२०
पुद्गलात्त-अनुयोगद्वार	५१४-५१५	कृष्टिकरणकी प्रक्रिया और क्षपणका प्रकार	५२१
पद्मप्रभजिनकी स्तुति	५१४	अल्पबहुत्व-अनुयोगद्वार	५२२-५६३
पुद्गलात्तका चार प्रकारका निक्षेप और		नागहस्तिभट्टारकके अनुसार सत्कर्मका	
उनका विशेष विचार	५१४	विचार	५२२
पुद्गलात्तका स्पष्टीकरण और उसका पाँच		सत्कर्मके चार भेद	५२२
प्रकारसे विचार	५१४	प्रकृतिसत्कर्मके भेद करके उनमें स्वामित्वका	
पुद्गलात्तका दूसरा अर्थ पुद्गलात्मा		विचार	५२२
करके विचार	५१४	शेष अनुयोगद्वारोंकी सूचना करके	
निधत्त-अनिधत्त-अनुयोगद्वार	५१६	अल्पबहुत्वका विचार	५२४
सुपार्श्वजिनकी स्तुति	५१६	प्रकृतिसत्कर्मके भेद करके उत्तरप्रकृति-	
निधत्तके चार भेद	५१६	सत्कर्मके अद्धाच्छेदका विचार	५२८
अर्थपद	५१६	स्वामित्वविचार	५३१
निधत्त और अनिधत्तका विशेष विचार	५१६	अल्पबहुत्वविचार	५६६
निकाचित-अनिकाचित अनुयोगद्वार	५१७	अनुभागसत्कर्ममें आदिस्पर्धकका विचार	५३८
चन्द्रजिनकी स्तुति	५१७	घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञाका विचार	५३६
निकाचितके चार भेद	५१७	स्वामित्वविचार	५४०
अर्थपद	५१७	अल्पबहुत्व	५४४
निकाचित-अनिकाचितका विशेष विचार	५१७	प्रदेशउद्दीरणमें मूलप्रकृतिदण्डक व अन्य	
अल्पबहुत्व	५१७	प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व	५५२
कर्मस्थिति-अनुयोगद्वार	५१८	उत्तरप्रकृतिसंक्रममें अल्पबहुत्व	५५५
पुष्पदन्तजिनकी स्तुति	५१८	मोहनीय प्रकृतिस्थानसंक्रमका अल्पबहुत्व	५५६
दो उपदेशोंका निर्देश	५१८	जघन्य स्थितिसंक्रम अल्पबहुत्व	५५६
पश्चिमस्कन्ध-अनुयोगद्वार	५१९-५२०	जघन्य अनुभागसंक्रम अल्पबहुत्व	५५७
भवके तीन भेद करके भवग्रहणभव प्रकृत		जघन्य व उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम अल्पबहुत्व	५५६
है इसका निर्देश	५१९	लेख्या अनुयोगद्वारमें आठ अनुयोग-	
पश्चिमस्कन्धमें बन्धमार्मणा आदि पाँच		द्वारोंका निर्देश	५७१
		लेख्यापरिणाम अनुयोगद्वारमें दस	
		विस्तारपदोंका निर्देश	५७२
		लेख्याकर्म अनुयोगद्वारमें पञ्चविधिक	
		पदोंका निर्देश	५७२

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
सातासात अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७३	कर्मस्थिति अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७७
दीर्घ-ह्रस्व अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७५	पश्चिमस्कन्धमें विशेष विचार	५७७
भवधारण अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७५	महावाचक क्षमाश्रमणके मतानुसार	
पुद्गलात्त अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७५	सत्कर्मका अल्पबहुत्व	५७६
निधित्त-अनिधित्त अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७६	मोहनीयके प्रकृतिस्थानसत्कर्मका	
निकाचित-अनिकाचित अनुयोगद्वारमें विशेष विचार	५७६	अल्पबहुत्व	५८०
		उत्तरप्रकृतिस्थितिसत्कर्मका अल्पबहुत्व	५८१

मोक्खादि-सेस-अणियोगद्वाराणि





## मोक्खाणियोगद्वारं

महुवरमहुवरवाउलवियसियसियसुरहिगंधमल्लेहि ।

मल्लिजिणमच्चिपूण य मोक्खाणियोगो परूवेमो ॥१॥

मोक्खे त्ति अणियोगद्वारे मोक्खो णिक्खिवियन्वो— णाममोक्खो द्ढवणमोक्खो दव्वमोक्खो भावमोक्खो चेदि मोक्खो चउव्विहो । णाममोक्खो द्ढवणमोक्खो आगमदो दव्वमोक्खो आगम-णोआगमभावमोक्खो च सुगमो । जो सो णोआगमदो दव्व-मोक्खो' सो दुविहो कम्ममोक्खो णोकम्ममोक्खो चेदि । णोकम्ममोक्खो सुगमो । कम्मदव्वमोक्खो चउव्विहो पयडिमोक्खो ढ्ढिदिमोक्खो अणुभागमोक्खो पदेसमोक्खो चेदि । पयडिमोक्खो दुविहो मूलपयडिमोक्खो उत्तरपयडिमोक्खो चेदि । तत्थ एक्केको दुविहो देसमोक्खो सव्वमोक्खो चेदि । तत्थ अट्ठपदं— जा पयडी णिज्जरिज्जदि अण्णपयडिं वा संकामिज्जदि एसो पयडिमोक्खो णाम । एसो पयडिमोक्खो सुगमो, पयडिउदय-पयडिसंक्रमेसु अंतव्भावादो । ठिदिमोक्खो दुविहो उक्कस्सो जहण्णो चेदि । एत्थ अट्ठपदं । तं जहा— ओकड्ढिदा वि उक्कड्ढिदा वि अण्णपयडिं संकामिदा

मधुको करनेवाले भ्रमरोंसे व्याकुल ऐसे विकसित, धवल और सुगन्धित पुष्पोंके द्वारा मल्लि जिनेन्द्रकी पूजा करके मोक्ष-अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करते हैं ॥१॥

मोक्ष इस अनुयोगद्वारमें मोक्षका निक्षेप करना चाहिये— वह मोक्ष नाममोक्ष, स्थापना-मोक्ष, द्रव्यमोक्ष और भावमोक्षके भेदसे चार प्रकारका है । इनमें नाममोक्ष, स्थापनामोक्ष, आगमद्रव्यमोक्ष, आगमभावमोक्ष और नोआगमभावमोक्ष; ये सुगम हैं । जो नोआगमद्रव्यमोक्ष है वह दो प्रकारका है— कर्ममोक्ष और नोकर्ममोक्ष । इनमें नोकर्ममोक्ष सुगम है । कर्मद्रव्यमोक्ष चार प्रकारका है— प्रकृतिमोक्ष, स्थितिमोक्ष, अनुभागमोक्ष और प्रदेशमोक्ष । प्रकृतिमोक्ष दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिमोक्ष और उत्तरप्रकृतिमोक्ष । उनमें प्रत्येक देशमोक्ष और सबमोक्षके भेदसे दो प्रकारका है । उनमें अर्थपद बतलाते हैं— जो प्रकृति निर्जराको प्राप्त होती है अथवा अन्य प्रकृतिमें सक्रान्त होती है, यह प्रकृतिमोक्ष कहलाता है । यह प्रकृतिमोक्ष सुगम है, क्योंकि, उसका अन्तर्भाव प्रकृति-उदय और प्रकृतिसंक्रममें होता है । स्थितिमोक्ष उत्कृष्ट और जघन्यके भेदसे दो प्रकारका है । यहां अर्थपद बतलाते हैं । वह इस प्रकार है— अपकर्षणको प्राप्त हुई,

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'णोआगमदव्वमोक्खो' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रती 'णाम सो सुगमो पयडिं', काप्रती 'णाम पयडिं', ताप्रती 'णाम एसो सुगमो, पयडिं' इति पाठः ।

वि अधट्टिदीए<sup>१</sup> णिज्जरिदा वि ट्टिदी ट्टिदिमोक्खो<sup>२</sup> । एदेण अट्टपदेण उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णट्टिदिमोक्खो परूवेयव्वो । अणुभागमोक्खे<sup>३</sup> अट्टपदं । तं जहा— ओकट्टिदो उक्कट्टिदो अण्णपयडिं संकामिदो अधट्टिदिगलणाए णिज्जिण्णो वा अणुभागो अणुभाग-मोक्खो । एदेण अट्टपदेण उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णअणुभागमोक्खो परूवेयव्वो । पदेसमोक्खे<sup>४</sup> अट्टपदं । तं जहा— अधट्टिदिगलणाए पदेसाणं णिज्जरा पदेसाणमण्ण-पयडीसु संकमो वा पदेसमोक्खो णाम । एसो वि उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्ण-भेदेण णेयव्वो ।

णोकम्मगदच्चमोक्खो सुगमो । अधवा, णोआगमदो दच्चमोक्खो मोक्खो मोक्ख-कारणं मुत्तो चेदि तिविहो । जीव-कम्माणं त्रियोगो मोक्खो णाम । णाण-दंसण-चर-णाणि मोक्खकारणं । सयलकम्मवज्जियो अणंतणाण-दंसण-वीरिय-चरण-सुह-सम्मत्तादि-गुणगणाइण्णो णिरामओ णिरंजणो णिच्चो कयक्किच्चो मुत्तो णाम । एदेसिं तिण्णं पि णिक्खेव-णय-णिरुत्तिअणियोगदारेहि हेउगव्वेहि परूवणा कायच्चा । एवं कदे मोक्खणि-ओगहारं समत्तं होदि ।

उत्कर्षणको प्राप्त हुई, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त हुई, और अधःस्थितिके गलनेसे निर्जराको भी प्राप्त हुई स्थितिका नाम स्थितिमोक्ष है । इस अर्थपदके आश्रयसे उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य स्थितिमोक्षकी प्ररूपणा करना चाहिये । अनुभागमोक्षके सम्बन्धमें अर्थपदका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— अपकर्षणको प्राप्त हुआ, उत्कर्षणको प्राप्त हुआ, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त हुआ, और अधःस्थितिगलनके द्वारा निर्जराको भी प्राप्त हुए अनुभागको अनुभागमोक्ष कहा जाता है । इस अर्थपदके आश्रयसे उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य अनुभागमोक्षकी प्ररूपणा करना चाहिये । प्रदेशमोक्षके विषयमें अर्थपद कहते हैं । वह इस प्रकार है— अधःस्थितिगलनके द्वारा जो प्रदेशोंकी निर्जरा और प्रदेशोंका अन्य प्रकृतियोंमें संक्रमण होता है उसे प्रदेशमोक्ष कहा जाता है । इसको भी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्यके भेदसे ले जाना चाहिये ।

नोकर्मद्रव्यमोक्ष सुगम है । अथवा नोआगमद्रव्यमोक्ष मोक्ष, मोक्षकारण और मुक्तके भेदसे तीन प्रकारका है । जीव और कर्मका पृथक् होना मोक्ष कहलाता है । ज्ञान, दर्शन और चरित्र ये मोक्षकारण हैं । समस्त कर्मोंसे रहित; अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्तवीर्य, चारित्र, सुख और सम्यक्त्व आदि गुणगणोंसे परिपूर्ण; निरामय, निरंजन, नित्य और कृतकृत्य जीवको मुक्त कहा जाता है । इन तीनोंकी ही प्ररूपणा हेतुगर्भित निक्षेप, नय और निरुक्ति अनुयोगद्वारोंसे करना चाहिये । ऐसा करनेपर मोक्ष-अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

१ ताप्रतौ 'अवट्टिदा वि' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'वि ट्टिदी ए (ट्टि) दिमोक्खो' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'अणुभागमोक्खो', ताप्रतौ 'अणुभागमोक्खो (क्खे)' इति पाठः । ४ अ-ताप्रत्योः 'अवट्टिदि' इति पाठः । ५ काप्रतौ 'पदेसमोक्खो' इति पाठः । ६ अ-ताप्रत्योः 'अवट्टिदि' इति पाठः ।

## संक्रमाणियोगद्वारं

मुणिसुव्वयदेसयरं पणमिय मुणिसुव्वयं जिणं देवं ।

संक्रममणिओगमिणं जहासुअं वण्णइस्सामो ॥१॥

संक्रमे त्ति अणिओगद्वारे संक्रमो. णिक्खिवियव्वो । तं जहा— णामसंक्रमो  
द्ववणसंक्रमो दवियसंक्रमो खेत्तसंक्रमो कालसंक्रमो भावसंक्रमो चेदि छव्विहो संक्रमो ।  
तत्थ संक्रमसदो णामसंक्रमो णाम । सो एसो त्ति अण्णस्स सरूवं बुद्धीए णिधत्तो द्ववणसंक्रमो  
णाम । दवियसंक्रमो दुविहो आगम-णोआगमदवियसंक्रमो चेदि । आगमदवियसंक्रमो  
सुगमो । णोआगमदवियसंक्रमो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तदवियसंक्रमभेदेण तिविहो ।  
जाणुगसरीर-भवियदव्वसंक्रमा सुगमा । तव्वदिरित्तसंक्रमो दुविहो णोकम्मसंक्रमो  
कम्मसंक्रमो चेदि । णोकम्मसंक्रमो जहा मट्टियाए घडसरूवेण परिणामो । कम्म-  
संक्रमो थप्पो ।

एगक्खेत्तस्स खेत्तंतरगमणं खेत्तसंक्रमो णाम । किरियाविरहिदस्स. खेत्तस्स कधं  
संक्रमो ? ण, जीव-पोगगलाणं सक्किरियाणं आधेये आधारोवयारेण लद्धेखेत्तववएसाणं  
संक्रमुवलंभादो । ण च खेत्तस्स संक्रमववहारो अप्पजिद्धो, उइठलोगो संकंतो त्ति

मुनियोंके उत्तम चरित्रका उपदेश करनेवाले मुनिसुव्रत जिनेन्द्रको नमस्कार करके श्रुतके  
अनुसार संक्रम-अनुयोगद्वारका वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

संक्रम इस अनुयोगद्वारमें संक्रमका निक्षेप किया जाता है । वह इस प्रकारसे— नामसंक्रम,  
स्थापनासंक्रम, द्रव्यसंक्रम, क्षेत्रसंक्रम, कालसंक्रम और भावसंक्रमके भेदसे संक्रम छह प्रकारका  
है । उनमें 'संक्रम' यह शब्द नामसंक्रम कहलाता है । 'वह यह है' इस प्रकार अन्यके स्वरूपको  
बुद्धिमें स्थापित करना, यह स्थापनासंक्रम है । द्रव्यसंक्रम दो प्रकारका है— आगमद्रव्यसंक्रम और  
नोआगमद्रव्यसंक्रम । इनमें आगमद्रव्यसंक्रम सुगम है । नोआगमद्रव्यसंक्रम ज्ञायकशरीर, भव्य  
और तद्व्यतिरिक्त द्रव्यसंक्रमके भेदसे तीन प्रकार है । इनमें ज्ञायकशरीर और भव्य द्रव्यसंक्रम  
सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यसंक्रम दो प्रकारका है— नोकर्मसंक्रम और कर्मसंक्रम ।  
नोकर्मसंक्रम— जैसे मिट्टीका घट स्वरूपसे परिणमनं । कर्मसंक्रमको अभी स्थगित किया जाता है ।

एक क्षेत्रकं क्षेत्रान्तरको प्राप्त होनेका नाम क्षेत्रसंक्रम है ।

शंका— क्षेत्र तो क्रियासे रहित है, फिर उसका क्षेत्रान्तरमें गमन कैसे सम्भव है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि आधेयमें आधारका उपचार करनेसे सक्रिय जीव और पुद्गलोंकी  
'क्षेत्र' संज्ञा सम्भव है और उनका संक्रम पाया ही जाता है । दूसरे, क्षेत्रके संक्रमका व्यवहार  
अप्रसिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, ऊर्ध्वलोक संक्रान्त हुआ, ऐसा व्यवहार पाया जाता है ।

१ अ-काप्रत्योः 'वद्ध', ताप्रतौ 'व ( ल ) द्ध' इति पाठः ।

ववहारुवलभादो । कालस्सपुव्वस्स पादुभावो कालसंकमो णाम । ण च एसो असिद्धो, संकंतो हेमंतो त्ति ववहारुवलभादो । संपहि उप्पण्णस्स कथं संकमो ? ण, पोग्गलाणं उप्पाद-वय-धुवभावाणसुवयारेण पत्तकालववएसाणं एयंतेण उप्पादाभावादो । अधवा, एगक्खेत्तमिह द्विददव्वस्स खेत्तंतरगमणं खेत्तसंकमो । एगकालम्मि द्विददव्वस्स कालंतरगमणं कालसंकमो । कोधादिएगभावमिह द्विददव्वस्स भावंतरगमणं भावसंकमो ।

तत्थ कम्मसंकमे पयदं । सो चउव्विहो पयडिसंकमो द्विदिसंकमो अणुभागसंकमो पदेससंकमो चेदि । तत्थ पयडिसंकमे अट्टपदं— जा पयडी अण्णपयडिं णिज्जदि एसो पय-डिसंकमो । एदेण अट्टपदेण संकमे अण्णमाणे तत्थ मूलपयडिसंकमो णत्थि । कुदो ? साभा-वियादो । उत्तरपयडिसंकमे<sup>१</sup> सामित्तं— वंधे संकमो, अवंधे णत्थि । कुदो ? साभावियादो ।

पंचण्णं णाणावरणीयाणं संकामओ<sup>२</sup> को होदि ? अण्णदरो सकसाओ ? णवण्णं दंसणावरणीयाणं पंचण्णसंतराइयाणं च णाणावरणभंगो । सादस्स संकामओ<sup>३</sup> को होदि ? जो असादस्स वंधओ । असादस्स संकामओ को होदि ? जो सादस्स वंधओ

अपूर्व कालके प्रादुर्भावका नाम कालसंक्रम है । यह असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि हेमन्त ऋतु संक्रान्त हुई, ऐसा व्यवहार पाया जाता है ।

शंका— उत्पन्नका संक्रम कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि उपचारसे काल संज्ञाको प्राप्त हुए पुद्गलोंके उत्पाद, व्यव और प्रौढ्यके एकान्ततः उत्पादका अभाव है । अथवा एक क्षेत्रमें स्थित द्रव्यके क्षेत्रान्तर गमनको क्षेत्रसंक्रम, एक कालमें स्थित द्रव्यके कालान्तर गमनको कालसंक्रम, और क्रोधादिक एक किसी भावमें स्थित द्रव्यके भावान्तर गमनको भावसंक्रम समझना चाहिये ।

उनमें यहां कर्मसंक्रम प्रकृत है । वह चार प्रकारका है— प्रकृतिसंक्रम, स्थितिसंक्रम, अनुभागसंक्रम और प्रदेशसंक्रम । इनमेंसे प्रकृतिसंक्रमके विषयमें अर्थपदका कथन करते हैं— जो एक प्रकृति अन्य प्रकृतिस्वरूपताको प्राप्त करायी जाती है, यह प्रकृतिसंक्रम कहलाता है । इस अर्थपदके अनुसार संक्रमका कथन करनेपर मूलप्रकृतिसंक्रम सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । उत्तरप्रकृतिसंक्रममें स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है— वन्धके होनेपर संक्रम सम्भव है, वन्धके अभावमें वह सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंका संक्रामक कौन होता है ? उनका संक्रामक अन्यतर सकषाय जीव होता है । नौ दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायके संक्रमणकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । सातवेदनीयका संक्रामक कौन होता है ? जो असाताका वन्धक है वह साताका संक्रामक होता है । असाताका संक्रामक कौन होता है ? जो सकषाय जीव साताका वन्धक होता

१ काप्रतौ 'णाम एसो असिद्धो संकंतो होतो त्ति' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'संकमो', ताप्रतौ 'संकमो ( मे )' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'संकमओ', का-ताप्रत्योः 'संकमो' इति पाठः । ४ मप्रतौ 'संकमओ' इति पाठः ।

सकसाओ । दंसणमोहणीयं चरित्तमोहणीए ण संक्रमदि, चरित्तमोहणीयं पि दंसण-  
मोहणीए ण संक्रमदि' । कुदो ? साभावियादो । सम्मामिच्छाइड्डी दंसणमोहणीयस्स  
असंक्रामगो । एअं सासणो वि' । सम्मत्तस्स णियमा मिच्छाइड्डी संक्रामगो जस्स  
आवलिकावाहिरसंतकम्ममत्थि । मिच्छत्तस्स संक्रामओ को होदि ? सम्माइड्डी  
जस्स आवलियवाहिरं मिच्छत्तस्स संतकम्ममत्थि । सम्मामिच्छत्तस्स संक्रामगो को  
होदि ? सम्माइड्डी मिच्छाइड्डी वा जस्स आवलियवाहिरं संतकम्ममत्थि । वारसण्णं  
कसायाणं णाणावरणभंगो । इत्थिवेदस्स संक्रामओ को होदि ? जाव इत्थिवेदो चरिम-  
समयअणुवसंतो चरिमसमयअक्खीणो वा । णवुंसयवेदस्स इत्थिवेदभंगो । पुरिसवेदस्स  
संक्रामगो को होदि ? जाव पुरिसवेदो पढमसमयउवसंतो पढमसमयखीणो वा । तिण्णं  
संजलणाणं<sup>१</sup> पुरिसवेदभंगो । लोहसंजलणाए संक्रामओ को होदि ? उवसामया खवगा  
च, जाव अंतरं चरिमसयअकदं ति अक्खवय-अणुवसासओ च ।

चदुण्णमाउआणं संक्रमो णत्थि । कुदो ? साभावियादो । सव्वासिं पि णामपयडीणं

है । दर्शनमोहनीय चारित्रमोहनीयमें संक्रान्त नहीं होती और चारित्रमोहनीय भी दर्शनमोहनीयमें  
संक्रान्त नहीं होती, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । सम्यग्मिध्यादृष्टि जीव दर्शनमोहनीयका असंक्रामक  
होता है । इसी प्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि भी दर्शनमोहनीयका असंक्रामक होता है । सम्यक्त्व-  
प्रकृतिका संक्रामक नियमसे मिध्यादृष्टि जीव होता है, जिसके कि उसका सत्कर्म आवलीके बाहिर  
होता है । मिध्यात्वका संक्रामक कौन होता है ? उसका संक्रामक सम्यग्दृष्टि होता है, जिसके  
मिध्यात्वका सत्कर्म आवलीके बाहिर होता है । सम्यग्मिध्यात्वका संक्रामक कौन होता है ?  
उसका संक्रामक सम्यग्दृष्टि अथवा मिध्यादृष्टि होता है, जिसके उसका सत्कर्म आवलीके  
बाहिर होता है । वारह कपार्योंके संक्रमणकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । स्त्रीवेदका संक्रामक  
कौन होता है ? स्त्रीवेदके अनुपशान्त रहनेके अन्तिम समय तक अथवा उसके अक्षीण रहनेके  
अन्तिम समय तक जीव उसका संक्रामक होता है । नपुंसकवेदके संक्रमणकी प्ररूपणा स्त्रीवेदके  
समान है । पुरुषवेदका संक्रामक कौन होता है ? पुरुषवेदके उपशान्त होनेके प्रथम समय  
तक अथवा उसके क्षीण होनेके प्रथम समय तक जीव उसका संक्रामक होता है । तीन संज्वलनों-  
के संक्रमणकी प्ररूपणा पुरुषवेदके समान है । संज्वलन लोभका संक्रामक कौन होता है ? उसके  
संक्रामक उपशामक और क्षपक जीव होते हैं, अन्तर न किये जानेके अन्तिम समय तक अक्षपक  
व अनुपशामक जीव भी उसके संक्रामक होते हैं ।

चार आयु कर्मोंका संक्रम नहीं होता, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । यशकीर्तिको छोड़कर

१ मोहदुगाउग-मूलपयडीण न परोप्परमि संक्रमणं । संक्रम-बंधुदउव्वट्टणा (णव) लिगाईणकरणाईं ॥ क. प्र.  
२, ३. २ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'सामगो वि' इति पाठः । तथा सासादनाः सम्यग्मिध्यादृष्टयश्च  
न किमपि दर्शनमोहनीयं कापि संक्रमयन्ति, अविशुद्धदृष्टित्वात् । बन्धाभावे हि दर्शनमोहनीयस्स संक्रमो  
विशुद्धदृष्टेरेव भवति, नाविशुद्धदृष्टेः । क. प्र. (मलय.) २, ३. ३ ताप्रतौ 'तिसंजलणाणं' इति पाठः ।

जसकित्तिवज्जाणं ताव संक्रमो जाव सकसाओ जाव आवलियवाहिरं च संतकम्ममत्थि । जसकित्तीए ताव संकामगो जाव परभवियणामयपडीणं बंधदि । उच्चागोदस्स संकामओ को होदि ? जो नीचागोदस्स बंधओ जाव आवलियवाहिरं संतकम्ममत्थि । नीचागोदस्स संकामओ को होदि ? जो उच्चागोदस्स बंधओ सकसाओ । एवं सामित्तं समत्तं ।

एवजीवेण कालो—पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-पणुवीसमोहणीय-अणुव्वेच्छ-माणसव्वणामपयडीणं<sup>१</sup> पंचंतराइयाणं च संक्रमो केवचिरं कालादो होदि ? अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो सादिओ सपज्जवसिदो वा । जो सो सादिओ सपज्जवसिदो जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवद्धपोगलपरियड्डं । सादासादाणं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० वेछावड्डिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । णवरि मिच्छत्तस्स छावड्डिसागरो० सादिरेयाणि । सम्मत्तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पल्लिदो० असंखे० भागो ।

णिरयगइ-देवगइणामाणं तदाणुपुव्वीणामाणं वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं च जह० अट्ठवस्साणि सादिरेयाणि अंतोमुहुत्तं वा, उक्क० वेसागरोवम-सहस्साणि सादिरेयाणि । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं जह० अट्ठवस्साणि

शेष सभी नामप्रकृतियोंका तब तक संक्रम होता है जब तक कि जीव सकपाय है और जब तक उनका सत्कर्म आवलीके बाहिर रहता है । यशकीर्तिका संक्रामक तब तक होता है जब तक पर-भविक नामप्रकृतियोंको बांधता है । उच्चगोत्रका संक्रामक कौन होता है ? जो नीचगोत्रका बन्धक होता है वह उच्चगोत्रका तब तक संक्रामक होता है जब तक उसका आवलीके बाहिर सत्कर्म रहता है । नीचगोत्रका संक्रामक कौन होता है ? जो सकपाय जीव उच्चगोत्रका बन्धक होता है वह नीचगोत्रका संक्रामक होता है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है— पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, पच्चीस मोहनीय, उद्वेलित न की जानेवाली सब नाम प्रकृतियां और पांच अन्तराय; इनका संक्रमण कितने काल होता है ? उनके संक्रमणका काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है । इनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है । साता व असाता वेदनीयके संक्रमणका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र है । मिथ्यात्व और सम्यग्मिथ्यात्वके संक्रमणका काल जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ अधिक दो छथासठ सागरोपम मात्र है । विशेष इतना है कि मिथ्यात्वका वह काल साधिक छथासठ सागरोपम मात्र है । सम्यक्त्व प्रकृतिके संक्रमणका काल जघन्यसे अन्तमुहूर्त और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है ।

नरकगति, देवगति, नरकगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघात नामकर्मोंके संक्रमणका काल जघन्यसे साधिक आठ वर्ष या अन्तमुहूर्त, और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम मात्र है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके संक्रमणका काल जघन्यसे साधिक आठ वर्ष या अन्तमुहूर्त और

१ अ-काप्रत्योः 'पयडि' इति पाठः ।

सादिरेयाणि अंतोमुहुत्तं वा, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । उच्चागोदस्स जह० अंतो-  
मुहुत्तं, उक्क० तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि । आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण-  
संघादाणं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । तित्थयरणामाए जह०  
अंतोमुहुत्तं, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । णीचागोदस्स जह० अंतोमुहुत्तं,  
उक्क० वेछावट्ठिसागरोवमाणि तिहि पलिदोवमेहि अब्भहियाणि । एवं कालो समत्तो ।

अंतरं— जेसिं कम्माणं तिभंगीयो कालो तेसिं जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।  
एवं सादासादाणं । वेउव्वियल्लकस्स जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा पोग्गल-  
परियट्ठा । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चा-णीचागोदाणं जह० एगसमओ, उक्क०  
असंखेज्जा लोगा । आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधण- संघादाणं जह० एगसमओ,  
उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । तित्थयरणामाए सादभंगो । सम्मत्त-मिच्छत्ताणं जह०  
अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । एवं सम्मामिच्छत्तस्स । णवरि जह० एगसमओ ।  
अणंताणुवंधिचउक्क० जह० अंतोमु०, उक्क० वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ।  
एवं अंतरपरूवणा समत्ता ।

उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । उच्चगोत्रके संक्रमणका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त  
और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग,  
आहारकबन्धन और आहारकसंघातके संक्रमणका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे  
पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । तीर्थंकर नामकर्मके संक्रमणका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त  
और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । नीचगोत्रके संक्रमणका काल जघन्यसे अन्त-  
र्मुहूर्त और उत्कर्षसे तीन पत्योपम अधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है । इस प्रकार कालका  
कथन समाप्त हुआ ।

अन्तर— जिन कर्मोंके संक्रमका काल तीन भंग रूप है उनके संक्रमका अन्तरकाल  
जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इसी प्रकार साता व असाता वेदनीयके  
विषयमें कहना चाहिये । वैक्रियिकपट्टका प्रकृत अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे  
असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र और नीच-  
गोत्रका वह अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र है । आहारशरीर,  
आहारशरीरांगोपांग, आहारशरीरबन्धन और आहारशरीरसंघातका अन्तरकाल जघन्यसे एक  
समय और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । तीर्थंकर प्रकृतिका अन्तरकाल सातावेदनीयके  
समान है । सम्यक्त्व और मिथ्यात्वका वह अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध  
पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यात्वका भी अन्तरकाल जानना चाहिये । विशेष  
इतना है कि उसका वह अन्तरकाल जघन्यसे एक समय मात्र है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कका  
अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है । इस  
प्रकार अन्तरपरूवणा समाप्त हुई ।



णाणाजीवेहि भंगविचओ । अट्टपदं— जेसि संतकम्ममत्थि तेसु पयदं । एदेण अट्टपदेण पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सम्मामिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तेरसणामपयडि-पंचंतराइयाणं च सिया सव्वे जीवा संकामया, सिया संकामया च असंकामओ च, सिया संकामया च असंकामया च । सादासाद-सम्मत्त-मिच्छत्त-सेस-णामपयडि-उच्च-णीचागोदाणं संकामया च असंकामया च णियमा अत्थि । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि काली— सव्वकम्माणं संकामया सव्वद्धा । अंतरं णत्थि, णाणाजीवप्पणादो<sup>१</sup> । अप्पावहुअं । तं जहा— आहारसरिणामाए संकामया थोवा । सम्मत्तस्स असंखे० गुणा । मिच्छत्तस्स असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स विसेसा० । देवगइणामाए असंखे० गुणा । णिरयगइ० विसेसा० । वेउच्चिय० विसे० । णीचागोदस्स अणंतगुणा । असादस्स संखे० गुणा । सादस्स संखे० गुणा । उच्चागोदस्स विसे० । मणुसगइ० विसे० । अणंताणुवंधि० विसेसा० । जसक्कित्ति० विसे० । अट्टण्हं पि कसायाणं विसे० । णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धि-तेरसणामपयडीणं संकामया विसे० । लोहसं० विसे० ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयका कथन करते हैं । उसमें अर्थपद— जिन कर्मोंका सत्कर्म है वे यहाँ प्रकृत हैं । इस अर्थपदके अनुसार पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तेरह नामप्रकृतियां और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियोंके कदाचित् सब जीव संक्रामक होते हैं, कदाचित् बहुत संक्रामक व एक असंकामक, तथा कदाचित् बहुत संक्रामक व बहुत असंकामक भी होते हैं । साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, शेष नामप्रकृतियां, उच्चगोत्र और नीचगोत्र; इनके नियमसे बहुत संक्रामक व बहुत असंकामक भी होते हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है— सब कर्मोंके संक्रामकोंका काल नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वकाल है । सब कर्मोंके संक्रामकोंका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, नाना जीवोंकी विवक्षा है ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— आहारशरीर नामकर्मके संक्रामक स्तोक हैं । सम्यक्त्वके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । मिथ्यात्वके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके संक्रामक विशेष अधिक हैं । देवगति नामकर्मके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । नरकगतिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके संक्रामक विशेष अधिक हैं । नीचगोत्रके संक्रामक अनन्तगुणे हैं । असातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । उच्चगोत्रके संक्रामक विशेष अधिक हैं । मनुष्यगतिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुवन्धीके संक्रामक विशेष अधिक हैं । यशकीर्तिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । आठों भी कषायोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि और तेरह नामप्रकृतियोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । संवल्लनलोभके संक्रामक विशेष अधिक हैं ।

१ प्रतिष्ठुः 'णाणाजीवप्पमाणादो' इति पाठः ।

णउंसय० विसे० । इत्थि० विसे० । छण्णोकसायाणं विसे० । पुरिस० विसे० । क्रोध० विसे० । माण० विसे० । माया० विसे० । पंचणाणावरण-णवदंसणावरण-सेसणामपयडि-पंचंतराइयाणं संकामया तुल्ला विसेसाहिया । एवमोघसंकमदंडओ समत्तो ।

णिरयगईए आहारसरीरणामाए संकामया थोवा । सम्मत्तस्स संकामया असंखे० गुणा । मिच्छत्तस्स असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स विसेसा० । णीचागोदस्स असंखे० गुणा । असादस्स संखे० गुणा । सादस्स संखे० गुणा । उच्चागोदस्स विसे० । अणंताणुवंधि० विसेसा० । सेसाणं कम्माणं संकामया तुल्ला विसेसा० । एवं णिरयोघ-संकमदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगईए आहारसरीरणामाए संकामया थोवा । सम्मत्तस्स असंखे० गुणा । मिच्छत्तस्स असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स विसेसा० । देवगई० असंखे० गुणा । णिरयगई० विसेसा० । वेउच्चियसरीर० विसे० । णीचागोदस्स अणंतगुणा । असादस्स संखे० गुणा । सादस्स संखे० गुणा । उच्चागोदस्स विसेसा० । मणुसगई० विसे० । अणंताणुवंधि० विसे० । सेसाणं कम्माणं तुल्ला विसेसाहिया । एवं तिरिक्खगई-दंडओ समत्तो ।

नपुंसकवेदके संक्रामक विशेष अधिक हैं । स्त्रीवेदके संक्रामक विशेष अधिक हैं । छह नोकषायोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । पुरुषवेदके संक्रामक विशेष अधिक हैं । [ संज्वलन ] क्रोधके संक्रामक विशेष अधिक हैं । मानके संक्रामक विशेष अधिक हैं । मायाके संक्रामक विशेष अधिक हैं । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, शेष नामप्रकृतियों और पांच अन्तराय कर्मोंके संक्रामक तुल्य व विशेष अधिक हैं । इस प्रकार ओघसंकमदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें आहारशरीर नामकर्मके संक्रामक स्तोक हैं । सम्यक्त्वके संक्रामक असंख्यात-गुणे हैं । मिथ्यात्वके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके संक्रामक विशेष अधिक हैं । नोचगोत्रके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । असातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । उच्चगोत्रके संक्रामक विशेष अधिक हैं । अनन्तानु-बन्धिचतुष्कके संक्रामक विशेष अधिक हैं । शेष कर्मोंके संक्रामक तुल्य व विशेष अधिक हैं । इस प्रकार नरकगतिमें सामान्यसे संक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यचगतिमें आहारकशरीर नामकर्मके संक्रामक स्तोक हैं । सम्यक्त्वके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । मिथ्यात्वके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके संक्रामक विशेष अधिक हैं । देवगतिके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । नरकगतिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके संक्रामक विशेष अधिक हैं । नीचगोत्रके संक्रामक अनन्तगुणे हैं । असाता-वेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । उच्चगोत्रके संक्रामक विशेष अधिक हैं । मनुष्यगतिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्कके संक्रामक विशेष अधिक हैं । शेष कर्मोंके संक्रामक तुल्य व विशेष अधिक हैं । इस प्रकार तिर्यचगतिमें संक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

देवगईए गिरयगईभंगो । मणुस्सेसु आहारशरीरणामाए संक्रामया थोवा । मिच्छत्तस्स संक्रामया संखे० गुणा । सम्मत्तस्स संका० असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स विसेसा० । देवगई० असंखे० गुणा । गिरयगई० विसे० । वेउच्चिय० विसे० । णीचागोदस्स असंखे० गुणा । असाद० संखे० गुणा । साद० संखे० गुणा । उच्चागोद० विसे० । अणंताणुबंधि० विसे० । उवरि ओघं । एवं मणुसगइदंडओ समत्तो ।

वेइंदिएसु आहार० संक्रामया संखेज्जजीवा थोवा । सम्मत्तसंक्रामया असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्त० विसे० । देवगई० असंखे० गुणा । गिरयगई० विसे० । वेउच्चिय० विसे० । णीचागोद० असंखे० गुणा । असाद० संखे० गुणा । साद० संखे० गुणा । उच्चागोद० विसे० । सेसाणं कम्मणं तुल्ला विसेसा० । तेइंदियचउरिंदिय-असण्णिपंचिंदियाणं वेइंदियभंगो । भुजगारो पदणिक्खेवो वड्ढिसंक्रमो च एगेगपयडिसंक्रमे णत्थि ।

पयडिद्वाणसंक्रमे द्वाणसमुक्खित्थणा । तं जहा— णाणावरणपयडिसंक्रमस्स एकं चेव द्वाणं । एदेण एकेण द्वाणेण सव्वाणिओगद्वाराणि णेद्ववाणि । दंसणावरणस्स वे द्वाणाणि । तं जहा— णवणं छणं संक्रमो चेदि । एदेहि वेद्वाणेहि चदुवोसअणिओगद्वाराणि

देवगतिके संक्रमके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । मनुष्योंमें आहार-शरीर नामकर्मके संक्रामक स्तोक हैं । मिथ्यात्वके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्वके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके संक्रामक विशेष अधिक हैं । देवगतिके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । नरकगतिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके संक्रामक विशेष अधिक हैं । नीचगोत्रके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । असातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । उच्चगोत्रके संक्रामक विशेष अधिक हैं । अनन्तानु-बन्धिचतुष्कके संक्रामक विशेष अधिक हैं । आगेकी प्ररूपणा ओघके समान है । इस प्रकार मनुष्यगतिके संक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

द्वीन्द्रिय जीवोंमें आहारशरीरके संक्रामक जीव संख्यात हैं जो स्तोक हैं । सम्यक्त्वके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके संक्रामक विशेष अधिक हैं । देवगतिके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । नरकगतिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके संक्रामक विशेष अधिक हैं । नीचगोत्रके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । असातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सातावेदनीयके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । उच्चगोत्रके संक्रामक विशेष अधिक हैं । शेष कर्मके संक्रामक तुल्य व विशेष अधिक हैं । त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय-जीवोंमें संक्रमके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा द्वीन्द्रिय जीवोंके समान है । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि-संक्रम एक एक प्रकृतिके संक्रममें नहीं हैं ।

प्रकृतिस्थानसंक्रममें स्थानसमुत्कीर्तनाकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— ज्ञाना-वरणके प्रकृतिसंक्रमका एक ही स्थान है । इस एक स्थानके द्वारा सब अनुयोगद्वारोंको ले जाना चाहिये । दर्शनावरणके दो स्थान हैं । यथा— नौ प्रकृतियोंका संक्रम और छह प्रकृतियोंका

१ अप्रतो 'एदेण वेद्वाणाणि' इति पाठः ।

भुजगार-पदणिक्खेव-वडिडसंकमा च णेदच्चा । मोहणीयस्स जहा कसायपाहुडे<sup>१</sup> वित्थरेण  
ट्टाणसमुक्कित्तणा कदा तथा एत्थ वि कायच्चा । वेयणीय-गोदंतराइयाणं एक्केक्कं चैव  
ट्टाणं<sup>२</sup> । णामस्स पुध पुध पिंडणामट्टाणसमुक्कित्तणा कायच्चा । तं जहा— गदिणामाए  
एक्किस्से<sup>३</sup> दोणं तिणं चदुणं संकमो । उव्वेत्थणं पडुच्च जासु जासु पिंडपयडीसु संकम-  
ट्टाणाणि अत्थि तेहि सव्वअणियोगहाराणि णेयच्चाणि । एवं पयडिसंकमो समत्तो ।

ठिकिसंकमो दुविहो मूलपयडिडिदिसंकमो उत्तरपयडिडिदिसंकमो चेदि । एत्थ  
अट्टपदं । तं जहा— ओकडिदा वि ड्ढिदी ड्ढिदिसंकमो, उक्कडिदा वि ड्ढिदी ड्ढिदिसंकमो,  
अण्णपयडिं णीदा वि ड्ढिदी ड्ढिदिसंकमो होदि<sup>४</sup> । एत्थ ओकड्डणाए ताव किंचि सरूव-  
परूवणं कस्सामो । तं जहा— उदयावलियव्भंतरड्ढिदीयो ण सका ओकड्डेदुं<sup>५</sup>, उदया-  
वलियादो जा समउत्तरड्ढिदी सा सका ओकड्डेदुं<sup>६</sup> । सा ओकड्डिज्जमाणिया आवलियाए  
समउत्तराए वेत्तिभागे अधिच्छाविदूण रूवाहियतिभागे णिक्खिवदि । तदो समउत्तरियाए  
ड्ढिदीए तत्तियो चैव णिक्खेवो, अधिच्छावणा वड्ढदि । एवं ताव अधिच्छावणा वड्ढदि

संकम । इन दो स्थानोंके द्वारा चौबीस अनुयोगद्वारों, भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिसंकमको भी  
ले जाना चाहिये । मोहनीयकी स्थानसमुक्तीर्तना जैसे कसायपाहुडमें विस्तारसे की गयी है वैसे  
यहां भी उसे करना चाहिये । वेदनीय, गोत्र और अन्तरायका एक एक ही स्थान है । नामकर्मकी  
पृथक् पृथक् पिण्ड नामप्रकृतियोंकी स्थानसमुक्तीर्तना करना चाहिये । वह इस प्रकारसे—  
गति नामकर्म सम्बन्धी एक, दो, तीन और चारका संक्रम होता है । उद्वेलनाके आश्रयसे जिन  
जिन पिण्ड प्रकृतियोंमें संक्रमस्थान हैं उनके द्वारा सब अनुयोगद्वारोंको ले जाना चाहिये । इस  
प्रकार प्रकृतिसंक्रम समाप्त हुआ ।

स्थितिसंक्रम दो प्रकार है—मूलप्रकृतिस्थितिसंक्रम और उत्तरप्रकृतिस्थितिसंक्रम । यहां  
अर्थपद इस प्रकार है—अपकर्षणप्राप्त स्थितिको स्थितिसंक्रम कहा जाता है, तथा उत्कर्षणप्राप्त  
और अन्य प्रकृतिको प्राप्त करायी गयी भी स्थितिको स्थितिसंक्रम कहा जाता है । यहां पहिले  
अपकर्षणके स्वरूपकी कुछ प्ररूपणा की जाती है । यथा— उदयावलीके भीतरकी स्थितियां  
अपकर्षणको प्राप्त नहीं करायी जा सकतीं, किन्तु उदयावलीसे जो एक समय अधिक स्थिति है  
वह अपकर्षणको प्राप्त करायी जा सकती है । अपकर्षणको प्राप्त करायी जानेवाली उस स्थितिका  
निक्षेप एक समय कम ऐसी आवलीके दो त्रिभागोंको अतिस्थापना करके एक समय अधिक आवलीके  
त्रिभागमें किया जाता है । आगे उत्तरोत्तर एक एक समय अधिक स्थितिका निक्षेप तो उतना  
मात्र ही होता है, किन्तु अतिस्थापना बढ़ती जाती है । इस प्रकार अतिस्थापना आवली प्राप्त होने

१ क. पा. सु. पृ. २६०-२०९. २ ताप्रतौ 'ट्टा [णा] णं' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'एक्केक्किस्से'  
इति पाठः । ४ ड्ढिदिसंकमो दुविहो मूलपयडिडिदिसंकमो उत्तरपयडिडिदिसंकमो च । तत्थ अट्टपदं— जा  
ड्ढिदी ओकड्डिज्जदि वा उक्कड्डिज्जदि वा अण्णपयडिं संकामिज्ज वा सो ड्ढिदिसंकमो, सेसो ड्ढिदिअसंकमो । क. पा.  
सु. पृ. ३१०, १-२. ड्ढिदिसंकमो ति बुच्चइ मूलुत्तरपगईउ जा हि ठिई । उव्वट्टियाउ ओवट्टिया व पगई निया  
वाऽणं ॥ क. प्र. २, २८. ५ अप्रतौ 'संकामओकड्डेदुं', काप्रतौ 'संका ओकड्डेदुं' इति पाठः । ६ अ-काप्रत्योः  
'संकामओकड्डेदुं' इति पाठः ।

जाव आवलिया त्ति । तेण परं णिक्खेवो चेव वड्ढदि<sup>१</sup> । जहण्णओ णिक्खेवो थोवो । जहण्णिया अधिच्छावणा दोहि समएहि ऊणिया दुगुणा । उक्कस्सिया अधिच्छावणा असंखे० गुणा । उक्कस्सयं द्विदिखंडयं विसेसाहियं । उक्कस्सओ णिक्खेवो विसेसाहियो, जेण कम्मट्ठिदी दोहि आवलियाहि समउत्तराहि ऊणिया<sup>२</sup> ।

उक्कड्डणा णाम क्खं होदि ? बुच्चदे । तं जहा— उदयावलियम्भंतरट्ठिदी ण सक्का उक्कड्डेदुं । कुदो ? साभावियादो । समउत्तरउदयावलियादिट्ठिदी उक्कड्डिज्जदि<sup>३</sup> । सा उक्कड्डिज्जमाणिया<sup>४</sup> वि अवज्जमाणीसु ट्ठिदीसु ण णिक्खिखवदि, वज्जमाणियाणं जहण्ण-ट्ठिदिमादिं कादूण उवरिमासु सच्चासु ट्ठिदीसु णिक्खिखवदि । एस<sup>५</sup> विही हेट्ठिमाणं ट्ठिदीणं उक्कड्डिज्जमाणियाणं<sup>६</sup> ।

संपहि उवरिमाणं ट्ठिदीणं उक्कड्डणाविहाणं बुच्चदे । तं जहा— ट्ठिदिसंतकम्मादो

तक वड्ढती है । इसके पश्चात् निक्षेप ही बढ़ता है । जघन्य निक्षेप स्तोक है । जघन्य अतिस्थापना दो समयोंसे कम दुगुणी है । उत्कृष्ट अतिस्थापना असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट स्थितिकाण्डक विशेष अधिक है । उत्कृष्ट निक्षेप विशेष अधिक है, कारण कि वह एक समय अधिक दो आवलियोंसे हीन कर्मस्थितिके बराबर है ।

उत्कर्षण कैसे होता है ? इसका उत्तर देते हैं । यथा—उदयावलीके भीतरकी स्थिति उत्कर्षणको प्राप्त नहीं करायी जा सकती है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । एक समय अधिक उदयावली आदि रूप स्थितिका उत्कर्षण किया जा सकता है । उस उत्कर्षणको प्राप्त करायी जानेवाली स्थितिका भी निक्षेप अद्वयमान स्थितियोंमें नहीं किया जाता है, किन्तु वध्यमान स्थितियोंमें जघन्य स्थितिको आदि करके आगेकी सब स्थितियोंमें किया जाता है । यह विधान उत्कर्षणको प्राप्त करायी जानेवाली अधस्तन स्थितियोंके लिये है ।

अब उपरिम स्थितियोंके उत्कर्षणका विधान कहते हैं । यथा—स्थितिसत्कर्मसे समयाधिक

१ तिस्से उदयादि जाव आवलियतिभागो ताव णिक्खेवो, आवलियाए वेत्तिभागा अइच्छावणा । उदए वहुअं पदेसग्गं टिज्जइ, तेण परं विसेसहीणं जाव आवलियतिभागो त्ति । तदो जा त्तिदिया ट्ठिदी तिस्से वि तत्तिगो चेव णिक्खेवो, अइच्छावणा समयुत्तरा । एवमइच्छावणा समयुत्तरा, णिक्खेवो तत्तिगो चेव उदयावलिय-वाहिरादो आवलियतिभागमिदमट्ठिदि त्ति । तेण परं णिक्खेवो वड्ढइ, अइच्छावणा आवलिया चेव । क. पा. सु. पृ. ३११, ५-९, उक्कट्ठंती य ट्ठिइ उदयावलिवाहिरा ट्ठिइविसेसा । निक्खिखवइ तइयमाने समयहिए सेस-मइवईय ॥ वड्ढइ तत्तो अतिरथावणा उ जावालिगा इवइ पुन्ना । ता निक्खेवो समयाहिगालिगदुग्गणकम्मट्ठिई ॥ क. प्र. ३, ४-५. २ तदो सव्वथोवो जहण्णओ णिक्खेवो । जहण्णिया अइच्छावणा दुसमयूणा दुगुणा । णिच्चाघादेण उक्कस्सिया अइच्छावणा विसेसाहिया । वावादेण उक्कस्सिया अइच्छावणा असंखेज्जगुणा । उक्कस्सयं द्विदिखंडयं विसेसाहियं । उक्कस्सओ णिक्खेवो विसेसाहियो । उक्कत्सओ द्विदिंधो विसेसाहियो । क. पा. सु. पृ. ३१५, १८-२३. ३ अ-काप्रत्योः 'वलियादि उक्कड्डिज्जदि', ताप्रतौ 'वलियादि ( यट्ठिदि ) उक्कड्डिज्जदि' इति पाठः । ४ अ-ताप्रत्योः 'ओक्कड्डिज्जमाणिया' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'एसा' इति पाठः । ६ उक्कड्डणा ट्ठिईए उदयावलियाए वाहिरट्ठिईणं । होइ अवाहा अइत्थावणा उ जावालिया हस्सा ॥ क. प्र. ३, १.

समउत्तरद्विदिं वंधमाणम्स जा पुव्ववद्धस्स चरिमद्विदी सा ण उक्कड्डिज्जदि, दुचरिम-  
द्विदी वि ण उक्कड्डिज्जदि । एवं जाव एगा आवलिया अण्णो आवलियाए असंखे० भागो  
च ओदिण्णो' त्ति णेदव्वं । तदो जा हेद्विमा अणंतरद्विदी सा उक्कड्डिज्जदि । तिस्से उक्क-  
ड्डिज्जमाणियाए आवलिया अधिच्छावणा, आवलियाए असंखे० भागो णिक्खेवो ।  
उक्कड्डिज्जमाणीणं द्विदीणं जहण्णओ णिक्खेवो थोवो । जहण्णिया अधिच्छावणा एगा-  
वलिया, सा असंखे० गुणा । उक्क० अधिच्छावणा संखेज्जगुणा । उक्कस्सओ णिक्खेवो  
असंखे० गुणो, जेण कम्मद्विदी उक्कस्सियाए आवाहाए समत्तराए आवलियाए च  
उणिया' । एसा अट्टपदपरूवणा !

एत्तो पमाणानुगमो बुच्चदे— उत्तरपयडिसंकमे पयदं । सो चउव्विहो उक्कस्सओ  
अणुक्कस्सओ जहण्णओ अजहण्णओ चेदि । मदिआवरणस्स उक्कस्सओ द्विदिसंकमो तीमं

स्थितिको बांधनेवालेके जो पूर्ववद्ध कर्मकी चरम स्थिति है उसका उत्कर्षण नहीं किया जाता है, द्विचरम स्थितिका भी उत्कर्षण नहीं किया जाता है, इस प्रकार एक आवली और अन्य आवलीके असंख्यातवें भाग नीचे आने तक ले जाना चाहिये । उससे नीचेकी जो अधस्तन अनन्तर स्थिति है उसका उत्कर्षण किया जाता है । उत्कर्षणको प्राप्त करायी जानेवाली उक्त स्थितिकी अतिस्थापना आवली प्रमाण और निक्षेप आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र होता है । उत्कर्षणको प्राप्त करायी जानेवाली स्थितियोंका जघन्य निक्षेप स्तोक है । जघन्य अतिस्थापना एक आवली मात्र होकर उससे असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट अतिस्थापना संख्यातगुणी है । उत्कृष्ट निक्षेप असंख्यात-गुणा है, क्योंकि, वह उत्कृष्ट आवाधा और एक समय अधिक आवलीसे हीन कर्मस्थिति प्रमाण है । यह अर्थपदकी प्ररूपणा हुई ।

यहां प्रमाणानुगमका कथन करते हैं— उत्तरप्रकृतिसंकमका अधिकार है । वह चार प्रकारका है— उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य । मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थितिसंकम

१ प्रतिपु 'उदिणो' इति पाठः । २ वाघादेण कथं ? जइ संतकम्मादो वंधो समयुत्तरो तिस्से द्विदीए णत्थि उक्कड्डुणा । जइ संतकम्मादो वंधो दुसमयुत्तरो तिस्से वि संतकम्मअग्गद्विदीए णत्थि उक्कड्डुणा । एत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो जहण्णिया अइच्छावणा । जदि जत्तिया जहण्णिया अइच्छावणा तत्तिएण अन्नमहिओ संतकम्मादो वंधो तिस्से वि संतकम्मअग्गद्विदीए णत्थि उक्कड्डुणा । अण्णो आवलियाए असंखेज्जदिभागो जहण्णओ णिक्खेवो । जइ जहण्णियाए अइच्छावणाए जहण्णएण च णिक्खेवेण एत्तियमेत्तेण संतकम्मादो अदिरित्तो वंधो सा संतकम्मअग्गद्विदी उक्कड्डिज्जदि । तदो समयुत्तरो वंधे णिक्खेवो तत्तिओ चैव, अइच्छावणा वद्धदि । एवं ताव अइच्छावणा वद्धइ जाव अइच्छावणा आवलिया जादा त्ति । तेण परं णिक्खेवो वद्धइ जाव उक्कस्सओ णिक्खेवो त्ति । क. पा. सु. पृ. ३१६, २८-३७. णिव्वा-घाएणैवं वाघाए संतकम्महिगबंधो । आवलिअसंखभागादि होइ अइत्थावणां नवरं ॥ क. प्र. ३, ३. X X X संप्रत्यल्पवहुत्वमुच्यते— या जघन्याऽतीस्थापना यश्च जघन्यो निक्षेप एतौ द्वावपि सर्वस्तोकौ परस्परं च तुल्यौ । यतो द्वावप्येतौ आवलिकासत्कासंख्येयतमभागमात्रौ, ताभ्यामसंख्येयगुणोत्कृष्टाऽतीस्थापना, तस्या उत्कृष्टावाधारुपत्वात् । ततोऽप्युत्कृष्टो निक्षेपोऽसंख्येयगुणः, यतोऽसौ समयाधिकावलिक्कयाऽवाधया च हीना सर्वा कर्मस्थितिः । ततोऽपि सर्वा कर्मस्थितिर्विशेषाधिका । मलय.

सागरोवमकोडाकोलीयो दोहि आवलियाहि ऊणाओ, जट्टिदिसंकमो<sup>१</sup> आवलिऊणो । जहा उक्कस्सट्टिदिउदीरणा तथा उक्कस्सट्टिदिसंकमो सव्वकम्ममाणं पि कायव्वो । तत्तो णाणत्तं वत्तइस्सामो— देवगइ-देव-मणुस्साणुपुव्वी-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं उक्कस्समद्धच्छेदो वीसं सागरोवमकोडाकोलीओ वेहि तीहि आवलियाहि ऊणाओ । सामित्तं पि उक्कस्सट्टिदिं वंधिय पडिभग्गो होदूण एदाओ णामपयडीओ वंधिय तदो आवलियादीदस्स<sup>२</sup> । आदावस्स पुण वंधावलियादीदस्स उक्कस्सओ ट्टिदिसंकमो । एदं णाणत्तं उक्कस्सट्टिदिउदीरणादो ।

देव-णिरयाउआणं उक्कस्सट्टिदिसंकमो तेत्तीसं सागरोवमाणि, जट्टिदिसंकमो आवलियूणपुव्वकोडितिभागेणब्भहियतेत्तीसं सागरोवमाणि । मणुस्स-तिरिक्खाउआणमुक्कस्स-ट्टिदिसंकमो तिण्णि पलिदोवमाणि, जट्टिदिसंकमो आवलियूणपुव्वकोडितिभागेणब्भहिय-तिण्णिपलिदोवमाणि ।

जहण्णट्टिदिसंकमपमाणाणुगमो । तं जहा— पंचणाणावरण-चत्तारिदंसणावरण-पंच-तराइयाणं जहण्णट्टिदिसंकमो एगा ट्टिदी, जट्टिदिसंकमो समयाहियावलियाँ । णिद्दा-पय-लाणं जहण्णट्टिदिसंकमो एगा ट्टिदी, जट्टिदिसंकमो दो आवलियाओ आवलियाए असंखेज्जदि-

दो आवलियोंसे हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र होता है, जस्थितिसंकम एक आवलीसे हीन तीस काड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र होता है । पूर्वमें जैसे उत्कृष्ट स्थितिउदीरणा कथन किया गया है वैसे ही सभी कर्मोंके उत्कृष्ट स्थितिसंकमका भी कथन करना चाहिये । उससे जो यहां जो कुछ विशेषता है उसे बतलाते हैं— देवगात, देवानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरारिन्द्रिय जाति, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण; इनका उत्कृष्ट अद्धाच्छेद दो व तीन आवलियोंसे हीन बीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र है । उसका स्वामी भी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर और प्रतिभन्न होकर फिर इन नामकर्मकी प्रकृतियोंको बांधनेके पश्चात् आवली मात्र कालको वितानेवाला जीवहोता है । परन्तु आतपका उत्कृष्ट स्थितिसंकम जिसने वन्धावलीको बिताया है उसके होता है । यह उत्कृष्ट स्थितिउदीरणाकी अपेक्षा यहां विशेषता है ।

देवायु और नरकायुका उत्कृष्ट स्थितिसंकम तेतीस सागरोपम और जस्थितिसंकम आवली कम पूर्वकोटिके त्रिभागसे अधिक तेतीस सागरोपम मात्र होता है । मनुष्यायु और तिर्यगायुका उत्कृष्ट स्थितिसंकम तीन पल्योपम और जस्थितिसंकम आवली कम पूर्वकोटिके त्रिभागसे अधिक तीन पल्योपम मात्र होता है ।

जघन्य स्थितिसंकमके प्रमाणानुगमका कथन करते हैं । यथा— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायका जघन्य स्थितिसंकम एक स्थिति और जस्थितिसंकम एक समय अधिक आवली मात्र है । निद्रा और प्रचलाका जघन्य स्थितिसंकम एक स्थिति और

१ अप्रतौ 'जट्टिदिसंकमो', ताप्रतौ 'जं ट्टिदिसंकमो' पाठः । २ अप्रतौ 'आवलियादितस्स' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'संकमो', ताप्रतौ 'संकमो (म)' इति पाठः । ४ आवरण-विग्घ-दंसणचउक्क-लोभंत-वेयगाऊणं । एगा ठिई जहन्तो चट्टिई समयाहिगावलिगा ॥ क. प्र. २, ३२.

भागो च । णिद्वाणिद्वा-पयलापयला-थीणगिद्धि-मिच्छत्त-वारसकसाय-सम्मामिच्छत्त-इत्थि-णवुंसयवेदानं जहण्णद्विदिसंकमो पलिदो० असंखे० भागो<sup>३</sup> । सादासादानं जहण्णद्विदिसंकमो अंतोमुहुत्तं ।

सम्मत्त-लोहसंजलणं जहण्णद्विदिसंकमो एगा द्विदी<sup>३</sup> । जद्विदिसंकमो समयाहि-यावल्या । छणं णोकसायाणं जहण्णद्विदिसंकमो संखे० वस्साणि<sup>५</sup> । कोहसंजलणाए जह० द्विदिसंकमो वे मासा अंतोमुहुत्तूणो, जद्विदिसंकमो वे मासा वेहि आवल्याहि ऊणा । माणसंजलणस्स जहण्णद्विदिसंकमो मासो अंतोमुहुत्तूणो<sup>५</sup>, जद्विदिसंकमो मासो वेहि आवल्याहि ऊणो । मायासंजलणाए जहण्णद्विदिसंकमो अद्धमासो अंतोमुहुत्तूणो<sup>५</sup>, जद्विदिसंकमो अद्धमासो दोहि आवल्याहि ऊणो । पुरिसवेदस्स जहण्णद्विदिसंकमो अद्धवस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि<sup>५</sup>, जद्विदिसंकमो अद्धवस्साणि दोहि आवल्याहि ऊणाणि ।

आउआणं जहा जहण्णद्विदिउदीरणाए तहा कायव्वं । णिरयगइ-णिरयगइपाओ-ग्गाणुपुव्वी - तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय - चउरिं-दियजादि-आदायुज्जोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीरणं जहण्णगो द्विदिसंकमो पलिदो०

जस्थितिसंक्रम दो आवली और एक आवलीके असंख्यातवें भागसे अधिक है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व, वारह कपाय, सम्यग्मिथ्यात्व, स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका जघन्य स्थितिसंक्रम पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । साता और असाता वेदनोयका जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

सम्यक्तत्र और संज्वलन लोभका जघन्य स्थितिसंक्रम एक स्थिति मात्र है । इनका जस्थितिसंक्रम एक समय अधिक आवली मात्र है । छह नोकषायोंका जघन्य स्थितिसंक्रम संख्यात वर्ष मात्र है । संज्वलन क्रोधका जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर्मुहूर्त कम दो मास और जस्थितिसंक्रम दो आवलीसे कम दो मास प्रमाण है । संज्वलन मानका जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर्मुहूर्त कम एक मास और जस्थितिसंक्रम दो आवली कम एक मास प्रमाण है । संज्वलन मायाका जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर्मुहूर्त कम आधा मास और जस्थितिसंक्रम दो आवली कम आधा मास प्रमाण है । पुरुषवेदका जघन्य स्थितिसंक्रम अन्तर्मुहूर्त कम आठ वर्ष और जस्थितिसंक्रम दो आवली कम आठ वर्ष है ।

आयु कर्मोंकी जिस प्रकार जघन्य स्थितिकी उदीरणा कही गयी है उसी प्रकारसे उनके जघन्य संक्रमको भी कहना चाहिये । नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गति, तिर्यग्गति-प्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म

१ निद्वाणुगस्स एक्का आवलिदुगं असंखभागो य । जद्विइ X X X क. प्र. २, ३३. २ मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-वारसकसाय-इत्थि-णवुंसयवेदानं जहण्णद्विदिसंकमो पलिदोवमस्स असंखेजदिभागो । क. पा. सु. ३१९, ४४. ३ क. पा. सु. पृ. ३१९, ४५. ४ क. पा. सु. पृ. ३१९, ४९. ५ का-मप्रत्योः 'अंतोमुहुत्तूणो', अपत्तौ शुटितोऽत्र पाठः । क. पा. सु. पृ. ३१९, ४५. ६ क. पा. सु. पृ. ३१९, ४६. ७ क. पा. सु. पृ. ३१९, ४७. ८ का. पा. सु. पृ. ३१९, ४८. ९ ताप्रतौ 'आउआणं जहण्ण-' इति पाठः ।



असंखे० भासो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुच्ची-मणुसगइ-मणुसगइओग्गाणुपुच्ची-पंच-  
सरीर - पंचसरीरबंधण-पंचसरीरसंघाद - छसंठाण-छसंघडण- पसत्थापसत्थवणण- गंध-रस-  
फास-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास- पसत्थापसत्थविहायगइ- तस-वादर-पज्जत्ता-  
पज्जत्त-पत्तेयसरीर -थिराथिर - सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर- आदेज्ज-अणादेज्ज-जम-  
कित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-णीचुचागोदाणं जहण्णट्टिदिसंक्रमो अंतोमुहुत्तं । एवं  
जहण्णुक्कस्सअद्धाच्छेदो समत्तो ।

एत्तो सामित्तं । तं जहा— जहा उक्कस्सियाए ट्टिदीए उदीरणाए सव्वकम्ममाणं  
पि सामित्तं परूपिदं तथा उक्कस्सट्टिदिसंक्रमे वि सव्वकम्ममाणं पि सामित्तं परूवेयव्वं ।  
एवमुक्कस्सट्टिदिसंक्रमसामित्तं समत्तं ।

जहण्णट्टिदिसंक्रमसामित्तं वत्तइस्सामो । तं जहा— पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-  
पंचंतराइयाणं जहण्णट्टिदिसंक्रमो कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयछदुमत्थस्स ।  
णिदा-पयलाणं जहण्णट्टिदिसंक्रमो कस्स ? दोहि आवलियाहि आवलियाए असंखे०  
भागेण चरिमसमयछदुमत्थस्स । णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णट्टिदिसंक्रमो

और साधारणशरीर नामकर्मोंका जघन्य स्थितिसंक्रम पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है ।  
देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, पांच शरीर, पांच  
शरीरबन्धन, पांच शरीरसंघात, छह संस्थान, छह संहनन, प्रशस्त व अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस,  
स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर,  
पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अनुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय,  
अन्नादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, नीचगोत्र और उच्चगोत्र; इनका जघन्य  
स्थितिका संक्रम अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इस प्रकार जघन्य व उत्कृष्ट अद्धाच्छेद समाप्त हुआ ।

यहां स्वामित्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— जिस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिकी  
उदीरणामें सभी कर्मोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकारसे उत्कृष्ट स्थितिके संक्रममें  
भी सभी कर्मोंके स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिसंक्रमका स्वामित्व  
समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थितिसंक्रमके स्वामित्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण,  
चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी जघन्य स्थितिका संक्रम किसके होता है ? जिसके चरम  
समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है उसके उपर्युक्त प्रकृतियोंका जघन्य  
स्थितिसंक्रम होता है । निद्रा और प्रचलाका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? जिसके अन्तिम  
समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें दो आवली और आवलीका असंख्यातवां भाग शेष रहा है उसके  
निद्रा और प्रचलाका जघन्य स्थितिसंक्रम होता है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिका

१ सामित्तं । उक्कस्सट्टिदिसंक्रामयस्स सामित्तं जहा उक्कस्सियाए ट्टिदीए उदीरणा तथा णेदव्वं । क. पा.  
सु. पृ. ३१९, ५१-५२.

कस्स ? खवगस्स अपच्छिमद्विदिसंखंडयचरिमसमए वट्टमाणस्स । सादासादाणं जहण्णं-द्विदिसंकमो कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स ।

मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? दंसणमोहकखवगस्स अपच्छिमद्विदिसंखंडयचरिमसमए वट्टमाणस्स । अणंताणुबंधी [ णं जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? ] विसंजोएंतस्स अणंताणुबंधीणं अपच्छिमद्विदिसंखंडयचरिमसमए वट्टमाणस्स । अट्टण्णं कसायाणं जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? अट्टकसायकखवगस्स अपच्छिमद्विदिसंखंडयस्स चरिमफालिं पादेतस्स ।

णवुंसयवेदस्स जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? णवुंसयवेदेण खवगसेडिमुवट्टियस्स खवगस्स णवुंसयवेदचरिमद्विदिसंखंडयचरिमफालिं संछुहमाणस्स । इत्थिवेदस्स जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? इत्थिवेदोदएण अणुदएण वा खवगसेडिमारूढस्स खवगस्स इत्थिवेदचरिमद्विदिसंखंडयचरिमफालिं संक्रममाणस्स । छण्णोकसायाणं जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? छण्णोकसायखवगस्स तेसिं चरिमद्विदिसंखंडयचरिमफालिं संक्रममाणस्स । कोध-माण-मायासंजलणाणं जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? तेसिं खवयस्स अपच्छिमसमय-

जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह अन्तिम स्थितिकाण्डकके चरम समयमें वर्तमान क्षपकके होता है । साता और असाता वेदनीयका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके होता है ।

मिथ्यात्व और सन्न्यग्मिथ्यात्वका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह अन्तिम स्थितिकाण्डकके चरम समयमें वर्तमान दर्शनमोहक्षपकके होता है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह अनन्तानुबन्धी कषायोंके अन्तिम स्थितिकाण्डकके चरम समयमें वर्तमान ऐसे अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करनेवाले जीवके होता है । आठ कषायोंका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह अन्तिम स्थितिकाण्डककी चरम फालिको नष्ट करनेवाले ऐसे आठ कषायोंके क्षपकके होता है ।

नपुंसक वेदका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह नपुंसक वेदसे क्षपकश्रेणिपर उपस्थित हुए उस क्षपकके होता है जो नपुंसकवेदके चरम स्थितिकाण्डककी चरम फालिका क्षेपण कर रहा है । स्त्रीवेदका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? जो क्षपक स्त्रीवेदके उदय अथवा उसके अनुदयके साथ क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ होकर स्त्रीवेदके चरम स्थितिकाण्डककी चरम फालिका संक्रमण कर रहा है । छह नोकपायोंका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह उनके चरम स्थितिकाण्डककी चरम फालिका संक्रमण करनेवाले छह नोकपायोंके क्षपकके होता है । संज्वलन क्रोध, मान और मायाका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह उनके क्षपकके होता है

१ क. पा. सु. पृ. ३२०, ५४-५५; ५८-५९. २ अणंताणुबंधीणं जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? विसंजो-एंतस्स तेसिं चैव अपच्छिमद्विदिसंखंडयचरिमसमयसंकामयस्स । क. पा. सु. पृ. ३२०, ६०-६१. ३ अट्टण्णं कसायाणं जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? खवयस्स तेसिं चैव अपच्छिमद्विदिसंखंडयं चरिमसमयसंछुहमाणयस्स जहण्णं । क. पा. सु. पृ. ३२०, ६२-६३. ४ क. पा. सु. पृ. ३२१, ७१-७२. ५ इत्थिवेदस्स जहण्णद्विदिसंकमो कस्स ? खवयस्स इत्थिवेदोदयकखवयस्स तस्स अपच्छिमद्विदिसंखंडयं संछुहमाणयस्स तस्स जहण्णयं । क. पा. सु. पृ. ३२१, ६९-७०, ६ क. पा. सु. पृ. ३२२, ७३-७४.

पवद्धं चरिमसमयसंछुद्धस्स । लोहसंजलणस्स जहण्णट्टिदिसंकमो कस्स ? समयाहिय-  
आवलियचरिमसमयसुहुममांपराइयखवगस्स । पुरिसवेदस्स जहण्णट्टिदिसंकमो कस्स ?  
पुरिसवेदखवयस्स सगअपच्छिमट्टिदिवंधो संछुहमाणो संछुद्धो ताथे । सम्मत्तस्स जहण्णो  
ट्टिदिसंकमो कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स ।

आउआणं जहण्णट्टिदिसंकमो कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयतवभवत्थस्स ।  
णिरयगइ-णिरयगइपाआग्गाणुपुच्ची - तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्ची - एइंदिय-  
वीइंदिय-तीइंदिय - चउरिंदियजादि - आदावुज्जोव-थावर-सुहुम - साहारणसरीराणं जहण्ण-  
ट्टिदिसंकमो कस्स ? अणियट्टिखवयस्स एदासिं पयडीणमपच्छिमट्टिदिसंकमो कस्स ?  
चरिमफालिं संछुहमाणस्स । सेसाणं णामपयडीणं जहण्णट्टिदिसंकमो कस्स ? चरिमसमय-  
सजोगिस्स । णीचुच्चागोदाणं जहण्णट्टिदिसंकमो कस्स ? चरिमसमयसजोगिस्स ।  
एवं जहण्णट्टिदिसंकमसामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो-पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-  
णवुंसयवेद-अरदि-सोग-भय-दुगुंलाणं उक्खस्सट्टिदिसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जह०

जो अन्तिम समयप्रवद्धके क्षेपण करनेके अन्तिम समयमें वर्तमान हैं । संवलन लोभका जघन्य  
स्थितिसंक्रम किसके होता है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपक होनेमें एक  
समय अधिक आवली मात्र शेष है । पुरुषवेदका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह  
पुरुषवेदके क्षपकके उस समय होता है जब निक्षिप्त किया जानेवाला अपना अन्तिम स्थितिवन्ध  
पूर्णतया निक्षिप्त हो जाता है । सम्यक्त्व प्रकृतिका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? जिसके  
अन्तिम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है ।

आयु कर्मोंका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? जिसके अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ  
होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र शेष है । नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गति,  
तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आतप, उद्योत, स्थावर,  
सूक्ष्म और साधारणशरीर; इनका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह इन प्रकृतियोंके  
अन्तिम स्थितिकाण्डकक्री अन्तिम फालिका निक्षेप करनेवाले अनिवृत्तिकरण क्षपकके होता है ।  
शेष नामप्रकृतियोंका जघन्य स्थितिसंक्रम किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती सयोगीके  
होता है । नीच और ऊंच गौत्रका जघन्य स्थितिसंक्रमण किसके होता है । वह अन्तिम समयवर्ती  
सयोगीके होता है । इस प्रकार जघन्य स्थितिसंक्रमका स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है-पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, असाता-  
वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्साके उत्कृष्ट स्थिति-

१ क्रोहसंजलणस्स जहण्णट्टिदिसंकमो कस्स ? खवयस्स क्रोहसंजलणस्स अपच्छिमट्टिदिवंधचरिमसमयसंछुह-  
माणस्स तस्स जहण्णयं । एवं माण-मायासंजलण-पुरिसवेदाणं । लोभसंजलणस्स जहण्णट्टिदिसंकमो कस्स ?  
आवलियसमयाहियसकसायस्स खवयस्स । क. पा. सु. पृ. ३२१, ६४-६८.

एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । पंचणाणावरण-णवदंसणावरण-मिच्छत्त-सोलसकंसाय-असादावेदणीयाणं अणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमो जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखेज्जा पोग्गल-परियट्ठा । अथवा, मदि-सुदआवरणाणमणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो एगसमयमादिं काट्ठण जाव असंखे० पोग्गलपरियट्ठमेत्तो । कुदो ? मदि-सुदआवरणाणं संखेज्जपयडीसु अण्णदरपयडाए उक्कस्सट्ठिदिं वंधिदूण विदियसमए सत्त्वासिमणुक्कस्सट्ठिदिं वंधिय तदियसमए अवराए पयडीए उक्कस्सट्ठिदिं वंधिय आवलियादीदं संक्रममाणस्स अणुक्कस्सट्ठिदीए एगादि-समयकालुवलंभादो । अरदि-सोग-भय-दुग्गुल्ला-णवुंसयवेदाणं अणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जह० एयसमओ, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्ठा ।

इत्थि-पुरिसवेद-साद-हस्स-रदीणं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जह० एगसमओ, उक्क० आवलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जह० एयसमओ, उक्क० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । णवरि सादस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्ठा ।

देव-णिरयाउआणं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रमो णिसेयट्ठिदिगो<sup>१</sup> णियमा अंतोमुहुत्तो । अणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमो देव-णिरयाउआणं<sup>२</sup> जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि

संक्रमका काल कितना है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । पांच ज्ञाना-वरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय और असातावेदनीयके अनुत्कृष्ट स्थितिसंक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । अथवा मतिज्ञाना-वरण और श्रुतज्ञानावरणके अनुत्कृष्ट स्थितिसंक्रमका काल एक समयको आदि करके असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र तक है । इसका कारण यह है कि मतिज्ञानावरण और श्रुतज्ञानावरणकी संख्यात प्रकृतियोंमें किसी एक प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर, द्वितीय समयमें सब प्रकृतियोंकी अनुत्कृष्ट स्थितिको बांधकर, तृतीय समयमें अन्य प्रकृतिकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर आर्वाल्का-तीत उसका संक्रमण करनेवालेके अनुत्कृष्ट स्थितिका एक आदि समय रूप काल पाया जाता है ।

अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और नपुसकवेदकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल मात्र है ।

स्त्रीवेद, पुरुषवेद, सातावेदनाय, हास्य और रतिकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली मात्र है । इनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र अनन्त काल है । विशेष इतना है कि सातावेदनीयका उक्त काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गल-परिवर्तन मात्र है ।

देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमकाल निपेकस्थितिस्वरूप है जो नियमसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । देवायु और नारकायुकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त

१ अप्रतौ 'आवलियाए' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'णिसेयट्ठिदि जो', ताप्रतौ 'णिसेयट्ठिदिजो (गो)' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'णिरयाणुआणं' इति पाठः ।

सादिरेयाणि । मणुस-तिरिक्खाउथाणं णिसेयट्ठिदिगो<sup>१</sup> उक्कस्सट्ठिदिसंक्रमो जह० उक्कस्सेण च अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमो जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि पलि-  
दोवंमाणि सादिरेयाणि ।

उक्कस्सट्ठिदिं बंधमाणो जाओ णमपयडीओ बंधदि तासिं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जह० अंतोमु०, उक्क० अणुवेह्लिज्जमाणियाणं असंखे० पोग्गलपारियट्ठा, उव्वेह्लिज्जमाणियाणं वेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि । जासिं णामपयडीणमुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमो वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ तीहि आवलियाहि ऊणाओ तासिं पयडोणमुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जह० एगसमओ, उक्क० एगावलिया । अणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० अणुवेह्लिज्ज-  
माणियाणं असंखे० पोग्गलपरियट्ठा, उव्वेह्लिज्जमाणियाणं वेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि ।

आहारसरीर-तदंगोवंग-बंधन-संघादाणं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जहणुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । तित्थयरणामए उक्कस्सट्ठिदिसंक्रमकालो जहणुक्क० एगसमओ । अणुक्कस्स-  
ट्ठिदिसंक्रमकालो जह० संखेज्जवाससहस्साणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ।

और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । मनुष्यायु और तिर्यगायुकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल निपेकस्थिति स्वरूप है जो जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक तीन पत्योपम मात्र है ।

उत्कृष्ट स्थितिको वांघनेवाला जीव जिन नामप्रकृतियोंको वांघता है उनकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनुद्बेल्यमान प्रकृतियोंका असंख्यात पुद्गल-परिवर्तन तथा उद्बेल्यमान प्रकृतियोंका साधिक दो हजार सागरोपम है । जिन नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिका संक्रम तीन आवलियोंसे हीन वीस कोडाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है उन प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक आवली मात्र है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनुद्बेल्यमान प्रकृतियोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन तथा उद्बेल्यमान प्रकृतियोंका साधिक दो हजार सागरोपम है ।

आहारशरीर तथा उसके आंगोपांग, बन्धन और संघातकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उनकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । तीर्थकर नामकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उसकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे संख्यात हजार वर्ष और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरापम मात्र है ।

१ अ-काप्रत्योः 'णिसेयट्ठिदीजो', ताप्रतौ 'णिसेयट्ठिदिजो' इति पाठः ।

उच्चागोदस्स उक्कस्सट्ठिदिसंकमकालो जह० एगसमओ, उक्क० आवलिया । णीचागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । उच्च-णोचागोदाणं अणुक्कस्सट्ठिदिसंकमकालो जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्ठा । एवमुक्कस्सकालो समत्तो ।

जहण्णट्ठिदिसंकमकालो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादा-साद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-पंचंतराइयाणं जहण्णट्ठिदिसंकमकालो जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्णट्ठिदिसंकमकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा । णवरि सोलसकसाय-णवणोकसायाणं अजहण्णस्स तिण्णि भंगा । जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णट्ठिदिसंकमकालो जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्णट्ठिदिसंकमकालो दोण्णं पि जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० वेज्जावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ।

चदुण्णमाउआणं जहण्णट्ठिदिसंकमकालो जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्णट्ठिदिसंकमकालो देव-णिरयाउआणं जह० दसवस्ससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि साहियाणि । मणुस-तिरिक्खाउआणं अजहण्णट्ठिदिसंकमकालो जह०

उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली मात्र है । नीचगोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उच्चगोत्र और नीचगोत्रकी अनुत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । इस प्रकार उत्कृष्ट काल समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थितिके संक्रमकालकी प्ररूपणा करते हैं । यथा—पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । इनकी अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है । विशेष उतना है कि सोलह कषाय और नौ नोकषायोंकी अजघन्य स्थिति सम्यन्धी संक्रमकालके तीन भंग हैं । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल दोनोंका ही जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छषासठ सागरोपम मात्र है ।

चार आयु कर्मोंकी जघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल देवायु और नारकायुका जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । मनुष्यायु और तिर्यचआयुको अजघन्य स्थितिके

१ अट्ठावीसाए पयडीणं जहण्णट्ठिदिसंकमकालो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुकस्सेण एयसमओ । णवरि इत्थि-णधुंसयवेद-छणोकसायाणं जहण्णट्ठिदिसंकमकालो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं । क. पा. सु. पृ. ३२२, ७८-८१. २ अ-काप्रत्योः 'जहण्ण-' इति पाठः । ३ प्रतिषु 'जहण्ण' इति पाठः ।

एगसमओ, उक्कं० अंतोमुहुत्तं । कुदो मणुसाउअस्स एगसमओ ? आउए आवलियाए असंखे० भागेणाहियदोआवलियावसेसे आउअस्स विणट्ठोकड्डणसंकमे<sup>२</sup> अप्पमत्ते दुसमया-हियावलियावसेसपमत्तगुणं पडिवण्णे कयएगसमय<sup>३</sup>अजहण्णसंकमे विदियसमए जहण्ण-संकमुवलंभादो । उक्कं० तिण्णि पल्लिदोवमाणि सादिरेयाणि ।

णिरयगइ - णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-एइं-दिय-वेइंदिय-तेइंदिय - चउरिंदियजादि-आदावुज्जोव - थावर-सुहुम-साहारणसरीरणामाणं जहण्णट्ठिदिसंकमकालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अजहण्णट्ठिदिसंकमकालो अणुव्वे-ल्लिज्जमाणियाणं अणादियो अपज्जवसिदो अणादियो सपज्जवसिदो वा । उव्वेल्लिज्ज-माणियाणं अजहण्णट्ठिदिसंकमकालो जहण्णेण अट्ठवस्साणि सादिरेयाणि, उक्कं० वेसागरो-वमसहस्साणि साहियाणि ।

वुत्तसेमाणं णामपयडीणं जहण्णट्ठिदिसंकमकालो जहण्णुक्कं० एयसमओ । उव्वे-ल्लिज्जमाणियाणं अजहण्णट्ठिदिसंकमकालो जहं० अट्ठवस्साणि सादिरेयाणि । उक्कस्सेण मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं असंखेज्जपोगलपरियट्ठा, देवगइ-देवगइपाओग्गाणु-

संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तमुहूर्त मात्र है ।

शंका— मनुष्यायुका एक समय मात्र उक्त काल कैसे बनता है ?

समाधान— कारण यह कि आयुमें आवलीके असंख्यातवें भागसे अधिक दो आवली कालके शेष रहनेपर जिसके आयुका अपकर्षण व संक्रम नष्ट हो चुका है ऐसे अप्रमत्तसंयतके दो समय अधिक आवली मात्र शेष प्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त होकर एक समय अजघन्य संक्रमके करनेपर द्वितीय समयमें जघन्य संक्रम पाया जाता है ।

उनकी अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल उत्कर्षसे साधिक तीन पत्थोपम मात्र है ।

नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यगति, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीर नामकर्मोंकी जघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल अनुद्वेल्यमान प्रकृतियोंका अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है । उद्वेल्यमान प्रकृतियोंकी अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे साधिक आठ वर्ष और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम मात्र है ।

उपर्युक्त प्रकृतियोंके अतिरिक्त जो शेष नामप्रकृतियां हैं उनकी जघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उद्वेल्यमान प्रकृतियोंकी अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे साधिक आठ वर्ष मात्र है । उत्कर्षसे वह मनुष्यगति और मनुष्य-गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन तथा देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिक-

१ मप्रतौ 'उक्कं०' इति पदं नास्ति । २ अ-काप्रत्योः 'संकमो', ताप्रतौ 'संकमो (मे)' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'पडिवण्णे कयएगसमय', ताप्रतौ 'पडिवण्णे (णो) क (ए) यसमय' इति पाठः ।

पुत्रीणं वेउन्वियसरीर-वेउन्वियसरीरअंगोवंग-बंधन-संघादाणं च वेसागरोवमसहस्साणि साहियाणि । आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-बंधन-संघादाणं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदोवमस्स असंखे० भागो । तित्थयरणामाए जहण्णट्टिदिसंकमकालो जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्णट्टिदिसंकमकालो जह० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, उक्क० तेत्तासं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । सेसाणं कम्माणं अजहण्णट्टिदिसंकमकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा ।

उच्च-णीचगोदाणं जहण्णट्टिदिसंकमकालो जहण्णुक० एगसमओ । अजहण्णट्टिदिसंकमकालो अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा । णवरि उच्चागोदस्स अजहण्णट्टिदिसंकमकालो जह० अट्ठवस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । एवं कालो समत्तो ।

एगजीवेण उक्कस्संतरं— मदि-सुदआवरणाणं उक्कस्सट्टिदिसंकामयंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्ठा । तिण्णिणाणावरण-णवदंसणावरण-सादासादमिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोक्कसायाणमुक्कस्सट्टिदिसंकामयंतरं<sup>१</sup> जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्ठा । णवरि णवणोक्कसायाणं उक्कस्सट्टिदिसंकामयंतरं<sup>२</sup> जह० एग-

शरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघातका साधिक दो हजार सागरोपम मात्र है । आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग, आहारकबन्धन और आहारकसंघातका उक्त कालजघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । तीर्थकर नामकर्मकी जघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उसकी अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे संख्यात हजार वर्ष और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । शेष कर्मोंकी अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है ।

उच्च और नीच गोत्रकी जघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उनकी अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है । विशेष इतना है कि उच्चगोत्रकी अजघन्य स्थितिके संक्रमका काल जघन्यसे साधिक आठ वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । इस प्रकार कालप्ररूपणा समाप्त हुई ।

एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थिति सम्बन्धी संक्रमके अन्तरकालकी प्ररूपणा की जाती है— मतिज्ञानावरण और श्रुतज्ञानावरणकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । शेष तीन ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिध्यात्व, सोलह कपाय और नौ नोकपायोंकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । विशेष इतना है कि नौ नोकपायोंकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रमका अन्तरकाल

१ अप्रती 'समयंतरं', काप्रती 'सामयंतरं' इति पाठः । २ अप्रती 'समयंतरं', ताप्रती 'सं० अंतरं' इति पाठः ।



समंओ । सम्मत्त-सम्मासिच्छत्ताणं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रामयंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढ-  
पोग्गलपरियट्ठं । पंचंतराइयाणं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रामयंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे०  
पोग्गलपरियट्ठा ।

देव-णिरयाउआणं उक्क० ट्ठिदिसंक्रामयंतरं जह० अंतोमुहुत्तं । उक्क० देवाउअस्स  
उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं, णिरयाउअस्स असंखे० पोग्गलपरियट्ठा । जट्ठिदिं<sup>१</sup> पडुच्च देव-  
णिरयाउआणं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रामयंतरं जह० समऊणपुच्चकोडी दसवस्ससहस्साणि च,  
उक्क० तं चैव । मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रामयंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क०  
असंखे० पोग्गलपरियट्ठा । जट्ठिदिं<sup>१</sup> पडुच्च जह० पुव्वकोडी समऊणा । उक्कस्संतरं तं चैव ।

उक्कस्मट्ठिदिं वंधमाणो जाओ णामपयडीओ वंधदि तासिं णामपयडीणं उक्कस्स-  
ट्ठिदिसंक्रामयंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्ठा । सेसाणं णामपयडीणं  
उक्कस्सट्ठिदिसंक्रामयंतरं जह० एयसमओ, उक्क० असंखे० पोग्गलपरियट्ठा । आहार-  
सरोर-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणं उक्कस्सट्ठिदिसंक्रामयंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क०  
उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । तित्थयरणामाए उक्कस्सट्ठिदिसंक्रामयंतरं णत्थि ।

जघन्यसे एक समय मात्र है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका  
अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । पांच अन्तराय  
कर्माकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात  
पुद्गल परिवर्तन मात्र है ।

देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है ।  
उत्कर्षसे वह देवायुका उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन तथा नारकायुका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है ।  
जस्थितिकी अपेक्षा देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे एक  
समय कम एक पूर्वकोटि और दस हजार वर्ष तथा उत्कर्षसे भी उतना मात्र ही है । मनुष्यायु  
और तिर्यगायुकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे  
असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । जस्थितिकी अपेक्षा वह जघन्यसे एक समय कम पूर्वकोटि  
प्रमाण है । उत्कृष्ट अन्तरकाल भी उसका वही है ।

उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाला जीव जिन नामकर्मकी प्रकृतियोंको बांधता है उन नाम-  
प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात  
पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । शेष नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे  
एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । आहारशरीर, आहारशरीरंगोपांग,  
आहारकशरीरवन्धन और आहारकशरीरसंघातकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल  
जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । तीर्थकर नामकर्मकी उत्कृष्ट  
स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल सम्भव नहीं है ।

१ ताप्रतौ 'जं ट्ठिदिं' इति पाठः । २ अप्रतौ 'सुणाम' इति पाठः ।

उच-णीचागोदानं उक्क० द्विदिसंकामयंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । एवमेयजीवेण उक्कस्सद्विदिसंकामयंतरं समत्तं ।

जहण्णद्विदिसंकामयंतरं । तं जहा— आउअवज्जाणं कम्मणं जहण्णद्विदिसंकामयंतरं णत्थिं । देव-णिरयाउआणं जहण्णद्विदिसंकामयंतरं जह० दसवस्ससहस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० पयडिअंतरं । तिरिकख-मणुस्साउआणं जह० द्विदि० अंतरं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं समउणं, उक्क० पयडिअंतरं । अणंताणुवंधीणं जह० द्विदि० अंतरं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवद्वट्टपोग्गलपरियट्टं<sup>१</sup> । अवसेसाणं<sup>२</sup> पयडीणं अजहण्णद्विदिसंकामयंतरस्स पयडिअंतरभंगो । एवं जहण्णद्विदिसंकामयंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो उक्कस्सपदभंगविचओ जहण्णपदभंगविचओ<sup>३</sup> चेदि । तत्थ अट्टपदं । तं जहा— जो उक्कस्सियाए द्विदीए संकामओ सो अणुक्कस्सियाए द्विदीए असंकामओ । जो अणुक्कस्सियाए द्विदीए संकामओ सो उक्कस्सियाए द्विदीए असंकामओ । जेसिं पयडिसंतमत्थि तेसु पयदं<sup>४</sup>, जेसिं णत्थि तेहि अव्वचहारो । एदेण अट्टपदेण णाणावरणस्स उक्कस्सियाए द्विदीए सिया सव्वे जीवा असंकामया, सिया

उंच और नीच गोत्रकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अस्ख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकका अन्तर समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थितिके संक्रामकके अन्तरकालकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— आयु कर्मोंकी छोड़कर शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल सम्भव नहीं है । देवायु और नारकायुकी जघन्य स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे प्रकृतिसंक्रमके अन्तरके समान है । तिर्यगायु और मनुष्यायुकी जघन्य स्थितिके संक्रामकका अन्तर जघन्यसे एक समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे प्रकृतिसंक्रामकके अन्तर जैसा है । अनन्तानुचन्धी कपायोंकी जघन्य स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपाधं पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । शेष प्रकृतियोंकी अजघन्य स्थितिके संक्रामकका अन्तरकाल प्रकृतिसंक्रामकके अन्तर जैसा है । इस प्रकार जघन्य-स्थिति-संक्रामकके अन्तरकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार है— उत्कृष्ट पदविचयक भंगविचय और जघन्य पदविचयक भंगविचय । उनमें अर्थपद इस प्रकार है— जो उत्कृष्ट स्थितिका संक्रामक होता है वह अनुत्कृष्ट स्थितिका असंकामक होता है । जो अनुत्कृष्ट स्थितिका संक्रामक होता है वह उत्कृष्ट स्थितिका असंकामक होता है । जिन प्रकृतियोंका सत्त्व है वे यहां प्रकृत हैं जिनका सत्त्व नहीं है वे यहां अव्यवहार्य हैं । इस अर्थपदके अनुसार ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट,

१ एत्तो जहण्णयमंतरं । सव्वासिं पयडीणं णत्थि अंतरं । क. पा. सु. पृ. ३२२, ८४-८५. २ अप्रती 'द्विदिअंतरे' इति पाठः । ३ णवरि अणंताणुवंधीणं जहण्णद्विदिसंकामयंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण उवद्वट्टपोग्गलपरियट्टं । क. पा. सु. पृ. ३२२, ८६-८७. ४ अप्रती 'अवसेसाणं' इति पाठः । ५ प्रतिपु 'जहण्णद्विदिभंगविचओ' इति पाठः । ६ अ-काप्रत्योः 'पदं' इति पाठः ।

असंकामया च संकामओ च, सिया असंकामया च संकामया च, एवं तिण्णिभंगा ।  
अणुक्खस्सियाए ङ्खिदीए सिया सव्वे जीवा संकामया, सिया संकामया च असंकामओ च,  
सिया संकामया च असंकामया च । एवं सव्व्वासिं पयडीणं णाणाजीवेहि भंगविचओ  
णाणावरणस्सेव णेयव्वो ।

जहण्णपदभंगविचयस्स उक्खस्सपदभंगविचयभंगो<sup>१</sup> । णवरि तिरिक्खाउअस्स जहण्णा-  
जहण्णङ्खिदिसंकामया णियमा अत्थि ।

णाणाजीवेहि कालो । तं जहा— सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं णिरयाउअस्स च  
जङ्खिदिसंकामओ चि कादूण उक्खस्सङ्खिदिसंकमकालो जह० एगसमओ, उक्ख० आवलि०  
असंखे० भागो<sup>२</sup> । मणुस्स-तिरिक्ख-देवाउआणं आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-वंधण-  
संघाद-तित्थयराणं उक्खस्सङ्खिदिसंकमकालो जह० एगसमओ, उक्ख० संखेज्जा समय ।  
सेसाणं कम्मणं उक्खस्सङ्खिदिसंकमकालो जह० एगसमओ, उक्ख० पलिदोवमस्स असंखे०  
भागो । सव्वकम्मणं पि अणुक्खस्सङ्खिदिसंकमकालो सव्वद्वा ।

णाणाजीवेहि जहण्णङ्खिदिसंकमकालो । तं जहा— णिरय-मणुस-देवाउआणं अणंताणु-

स्थितिके कदाचित् सव जीव असंकामक होते हैं, कदाचित् बहुत असंकामक और एक संकामक  
होता है, कदाचित् बहुत असंकामक और बहुत संकामक होते हैं । इस प्रकारसे यहां तीन भंग  
हैं । ज्ञानावरणकी अनुत्कृष्ट स्थितिके कदाचित् सव जीव संकामक होते हैं, कदाचित् बहुत  
संकामक और एक असंकामक होता है, कदाचित् बहुत संकामक और बहुत असंकामक भी होते  
हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा सव प्रकृतियोंके भंगविचयको ज्ञानावरणके समान ही  
ले जाना चाहिये ।

जघन्य पदभंगविचयकी प्ररूपणा उत्कृष्ट पदभंगविचयके समान है । विशेष इतना  
है कि तिर्यगायुकी जघन्य व अजन्य स्थितिके संकामक नियमसे बहुत हैं ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— सम्यक्त्व, सम्यग्मिध्यात्व  
और नारकायुकी जस्थितिके संकामक हैं, इस कारण उनकी उत्कृष्ट स्थितिका संक्रमकाल जघन्यसे एक  
समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है । मनुष्यायु, तिर्यगायु, देवायु, आहारक-  
शरीर, आहारकशरीरांगोपांग, आहारकवन्धन, आहारकसंघात और तीर्थकर; इनकी उत्कृष्ट  
स्थितिका संक्रमकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । शेष कर्मोंकी  
उत्कृष्ट स्थितिका संक्रमकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्थोपमके असंख्यातवें भाग  
मात्र है । सभी कर्मोंकी अनुत्कृष्ट स्थितिका संक्रमकाल सर्वकाल है ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य स्थितिके संक्रमकालकी प्ररूपणा की जाती है । यथा—  
नारकायु, मनुष्यायु, देवायु और अनन्तानुवन्धी कषायोंकी जघन्य स्थितिका संक्रमकाल

१ ताप्रतौ 'असंकामओ च संकामया च' इति पाठः । २ प्रतिपु 'विचयपदभंगो' इति पाठः ।  
३ सव्व्वासिं पयडीणमुक्खस्सङ्खिदिसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्खस्सेण पलिदो-  
वमस्स असंखेज्जदिभागो । णवरि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्खस्सङ्खिदिसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण  
एयसमओ । उक्खस्सेण आवल्लियाए असंखेज्जदिभागो । क. पा. सु. पृ. ३२३, ९४-९९

बंधीणं च जहण्णद्विदिसंक्रमकालो जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । तिरिक्खाउअस्स जहण्णद्विदिसंक्रमया केवचिरं० ? सव्वद्धा । परभवियं पडुच्च आवलि० असंखे० भागो । सेसाणं कम्माणं जह० द्विदिसंक्रमया केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । सव्वकम्माणं पि अजहण्णद्विदिसंक्रमया केवचिरं० ? सव्वद्धा । एवं णाणाजीवेहि कालो समत्तो ।

णाणाजावेहि अंतरं । तं जहा— गिरयाउअस्स उक्कस्सद्विदिसंक्रमयंतरं जद्विदिसंक्रमया त्ति जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । पंचणाणावरण-णवदंसणावरण-सादामाद-सोलसकसाय-णवणोकसाय-मणुस-तिरिक्ख-देवाउआणं मिच्छत्त-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं सव्वासिं णामपयडीणं उच्च-णीचगोद-पंचंतराइयाणं च उक्कस्सद्विदिसंक्रमयंतरं जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो ।

णाणाजीवेहि जहण्णद्विदिसंक्रमयंतरं । तं जहा— पंचणाणावरण-णवदंसदणावरण-सादासाद - मिच्छत्त - सम्मत्त - सम्मामिच्छत्त - अट्टकसाय - छण्णोकसाय-लोहसंजलणाणं सव्वासिंणामपयडीणमुच्च-णीचागोद-पंचंतराइयाणं च जह० द्विदिसंक्रमयंतरं णाणाजीवे पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा । अणंताणुबंधीणं जह० द्विदिसंक्रमयंतरं जह०

जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है । तिर्यगायुकी जघन्य स्थितिके संक्रामकोंका कितना काल है ? सर्वकाल है । परभविककी अपेक्षा वह आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है । शेष कर्मोंकी जघन्य स्थितिके संक्रामकोंका कितना काल है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । सभी कर्मोंकी अजघन्य स्थितिके संक्रामकोंका काल कितना है ? सर्वकाल है । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— नारकायुकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकोंका अन्तर, जस्थितिके संक्रामक रहनेके कारण जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, मनुष्यायु, त्रियगायु, देवायु, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सब नामप्रकृतियां, उच्चगोत्र, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी उत्कृष्ट स्थितिके संक्रामकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र होता है ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य स्थितिके संक्रामकोंका अन्तर इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, आठ कपाय, छह नोकपाय, संज्वलनलोभ, सब नामप्रकृतियां, उच्चगोत्र, नीचगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थितिके संक्रामकोंका अन्तर नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास प्रमाण होता है । अनन्तानुबन्धी कपायोंकी जघन्य स्थितिके संक्रामकोंका अन्तर

१ णवरि अणंताणुबंधीणं जहण्णद्विदिसंक्रमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जादभागो । क. पा. सु. पृ. ३२४, १०४-६. २ मप्रतौ 'सव्वसव्वद्धा' इति पाठः ।

एगसमओ, उक्क० चदुवीसमहोरत्ताणि सादिरेयाणि । तिसंजलण-पुरिसवेदाणं जह०  
 एयसमओ, उक्क० वस्सं सादिरेयं । इत्थि-णवुंसयवेदाणं जह० एगसमओ, उक्क० त्रास-  
 पुघत्तं । तिरिक्खाउअस्स णत्थि अंतरं । तिण्णमाउआणं जह० एगसमओ, उक्क० वारस  
 सुहुत्ता । एवमंतरं समत्तं ।

अप्पाउहुअं<sup>१</sup>— उक्क० मणुस-तिरिक्खाउआणं जाओ ढ्ढिदीओ संकामिज्जंति ताओ  
 थोवाओ । जड्ढिदीयो विसेसौ० । देव-णिरयाउआणं जाओ ढ्ढिदीयो संकामिज्जंति<sup>२</sup> ताओ  
 संखेज्जगुणाओ । जड्ढिदीओ विसेसाहियाओ । आहारसरीर० संखेज्जगुणाओ । जड्ढिदीओ  
 विसे० । देव-मणुसगइ-जसक्कित्ति-उच्चागोदाणं जाओ ढ्ढिदीओ [ संकामिज्जंति ताओ ]  
 संखे० गुणाओ । जड्ढिदीयो विसे० । णिरय-तिरिक्खगइ-अजसक्कित्ति-चदुसरीर-णीचागोदाणं  
 जाओ ढ्ढिदीओ ताओ तत्तियाओ चैव । जड्ढिदीयो विसेसाहियाओ । सादस्स जाओ  
 ढ्ढिदीओ ताओ विसेसाहियाओ । जड्ढिदीयो विसे० ओ । पंचणाणावरण-णवदंसणावरण-  
 असाद-पंचंतराइयाणं जाओ ढ्ढिदीओ ताओ तत्तियाओ चैव । जड्ढिदीयो विसे० ओ ।  
 णवणोकसायाणं जाओ ढ्ढिदीयो ताओ विसे० ओ । जड्ढिदीयो विसे० ओ । सोलसण्णं

जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक चौबीस दिन-रात्रि प्रमाण होता है । तीन संज्वलन  
 कपाय और पुरुषवेदकी जघन्य स्थितिके संक्रामकोंका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे  
 साधिक एक वर्ष मात्र होता है । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका उक्त अन्तर जघन्यसे एक समय और  
 उत्कर्षसे वर्षपृथक्त्व मात्र होता है । तिर्यगायुका वह अन्तर सम्भव नहीं है । शेष तीन आयु  
 कर्मोंका उक्त अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे वारह मुहूर्त मात्र होता है । इस प्रकार  
 अन्तरका कथन समाप्त हुआ ।

अलम्बहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है— उत्कर्षसे मनुष्यायु और तिर्यगायुकी जो स्थितियां  
 संक्रमणको प्राप्त होती हैं वे स्तोका हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । देवायु और नारकायुकी जो  
 स्थितियां संक्रमणको प्राप्त होती हैं वे उनसे संख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं ।  
 आहारशरीरकी संक्रमणको प्राप्त होनेवाली स्थितियां संख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक  
 हैं । देवगति, मनुष्यगति, यशकीर्ति और उच्चगोत्रकी जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे संख्यात-  
 गुणी हैं । जस्थियां विशेष अधिक हैं । नरकगति, तिर्यग्गति, अयशकीर्ति व चार शरीर नामकर्मोंकी  
 तथा नीच गोत्रकी जो स्थितियां संक्रमणको प्राप्त होती हैं वे उतनी मात्र हो हैं । जस्थितियां विशेष  
 अधिक हैं । सातावेदनीयकी जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां  
 विशेष अधिक हैं । पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय और पांच अन्तराय; इनकी  
 जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे उतनी मात्र ही हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । नौ नोकपायों-  
 की जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशय अधिक हैं ।

१ अप्रतौ 'अप्पावहुअं' इति पाठः । २ अप्रतौ 'विसेसाहियो' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'संकामिज्जंति'  
 इति पाठः ।

कसायाणं जाओ द्विदीओ ताओ तुल्लाओ । जड्विदीओ विसे० ओ । सम्मत्त-सम्मा-  
मिच्छत्ताणं जाओ द्विदीओ ताओ विसे० ओ । जड्विदीओ विसे० ओ । मिच्छत्तस्स  
जाओ द्विदीओ ताओ विसे० ओ । जड्विदीयो विसेसाहियाओ ।

णिरयगईए णेरइएसु मणुस-तिरिक्खाउआणं जाओ द्विदीओ ताओ थोवाओ ।  
जड्विदीओ विसेसाहियाओ । णिरयाउअस्स जाओ द्विदीयो ताओ असंखे० गुणाओ ।  
जड्विदीओ<sup>१</sup> विसे० ओ । आहारसरीरस्स जाओ द्विदीओ ताओ संखे० गुणाओ । जड्विदीयो  
विसे० ओ । देवगईए जाओ द्विदीओ ताओ संखे० गुणाओ । जड्विदी० विसे० । मणुस-  
गइ-जसक्कित्ति-उच्चागोदाणं जाओ द्विदीओ ताओ विसे० । जड्विदीयो विसे० । णिरय-  
गई-वेउच्चियसरीर-णीचागोद-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-अजसक्कितीणं जाओ द्विदीओ  
ताओ तत्तियाओ चेव । जड्विदीयो विसे० ओ । सादस्स जाओ द्विदीओ ताओ विसे०  
ओ । जड्विदीयो विसे० । पंचणाणावरण-णवदंसणावरण-असाद-पंचंतराइयाणं जाओ  
द्विदीओ ताओ तत्तियाओ चेव । जड्विदीयो<sup>३</sup> विसे० ओ । णवणोऋसायाणं जाओ  
द्विदीओ ताओ विसे० ओ । जड्विदीयो विसे० ओ । सोलसकसायाणं जाओ द्विदीओ  
ताओ तत्तियाओ चेव । जड्विदीयो विसे० । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जाओ द्विदीओ

सोलह कपायोंकी जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे समान रूपसे तुल्य होकर उतनी मात्र ही हैं ।  
जस्थितियां विशेष अधिक हैं । सम्यक्त्व और सम्यग्मध्यात्वकी जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं  
वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । मिध्यात्वकी जो स्थितियां संक्रान्त होती  
हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं ।

नरकगतिमें नारकियोंमें मनुष्यायु और तिर्यगायुकी जो उक्त स्थितियां हैं वे स्तोक हैं ।  
जस्थितियां विशेष अधिक हैं । नारकायुकी जो उक्त स्थितियां हैं वे असंख्यातगुणो हैं । जस्थितियां  
विशेष अधिक हैं । आहारशरीरकी जो उक्त स्थितियां हैं वे संख्यातगुणो हैं । जस्थितियां विशेष  
अधिक हैं । देवगतिकी जो उक्त स्थितियां हैं वे संख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक  
हैं । मनुष्यगति, यशकीर्ति और उच्चगोत्रकी जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां  
विशेष अधिक हैं । नरकगति, वैक्रियकशरीर, नीचगोत्र, औदारिक, तैजस एवं कामेणशरीर  
तथा अयशकीर्तिकी जो उक्त स्थितियां हैं वे उतनी मात्र ही हैं । जस्थितियां विशेष अधिक  
हैं । सातावेदनीयकी जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं ।  
पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय और पांच अन्तरायकी जो उक्त स्थितियां हैं  
वे उतनी मात्र ही हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । नौ नोकपायोंकी जो उक्त स्थितियां हैं वे  
विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । सोलह कपायोंकी जो उक्त स्थितियां हैं वे  
उतनी मात्र ही हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । सम्यक्त्व और सम्यग्मध्यात्वकी जो उक्त

१ अप्रती 'जाओ द्विदीयो', काप्रती 'ज० द्विदीयो' इति पाठः । २ ताप्रती 'विसे० संखे० गुणाओ ।  
णिरयगइ' इति पाठः । ३ अप्रती 'जहणद्विदीयो', का-ताप्रत्योः 'ज० द्विदीयो' इति पाठः ।

ताओ विसे० ओ । जड्ढिदीयो विसे० ओ । मिच्छत्तस्स जाओ ढ्ढिदीओ ताओ विसे० ।  
जड्ढिदीयो विसेसा० ।

तिरिक्खगईए मणुस्साउअस्स जाओ ढ्ढिदीओ ताओ थोवाओ । तिरिक्खाउअस्स  
जाओ ढ्ढिदीओ [ ताओ ] विसे० ओ । दोण्णं जड्ढिदीओ विसे० ओ । देवाउअस्स जाओ  
ढ्ढिदीओ ताओ संखे० गुणाओ । जड्ढिदीयो विसे० । णिरयाउअस्स जाओ ढ्ढिदीओ  
ताओ विसे० । जड्ढिदी० विसे० । आहारसरीरस्स जाओ ढ्ढिदीओ ताओ संखेज्ज-  
गुणाओ । जड्ढिदीओ विसे० ओ । मणुसगइ-देवगइ-जसकित्ति-उच्चागोदाणं जाओ  
ढ्ढिदीओ ताओ संखे० गुणाओ । जड्ढिदीओ विसे० । णिरयगइ-तिरिक्खगइ-चदुसरीर-  
अजसकित्ति-णीच्चागोदाणं जाओ ढ्ढिदीओ ताओ तुल्लाओ । जड्ढिदीओ विसे० ओ ।  
सादस्स जाओ ढ्ढिदीओ ताओ विसे० । जड्ढिदीओ विसे० ओ । तीसियाणं जाओ ढ्ढिदीओ  
ताओ तत्तियाओ चैव, जड्ढिदीयो विसे० ओ । णवणोकसायाणं जाओ ढ्ढिदीओ ताओ  
विसे० ओ । जड्ढिदीयो विसे० ओ । सोलसण्णं कसायाणं जाओ ढ्ढिदीओ ताओ तत्तियाओ  
चैव । जड्ढिदीयो विसे० ओ । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जाओ ढ्ढिदीओ ताओ विसे० ओ ।  
जड्ढिदीयो विसे० ओ । मिच्छत्तस्स जाओ ढ्ढिदीओ विसे० ओ । जड्ढिदी विसे० ओ ।  
मणुस्सेसु देवेषु एइंदिएसु च एदेण वीजपदेण णेयव्वं ।

स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । मिथ्यात्वकी जो उक्त स्थितियां  
हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं ।

तिर्यग्गतिसें मनुष्यायुकी जो स्थितियां संक्रमणको प्राप्त होती हैं वे स्तोक हैं । तिर्यगायुकी  
जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । दोनोंकी जस्थितियां विशेष अधिक हैं । देवायुकी जो  
उक्त स्थितियां हैं वे संख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । नारकायुकी जो उक्त  
स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । आहारशरीरकी जो उक्त  
स्थितियां हैं वे संख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । मनुष्यगति, देवगति, यशकीर्ति  
और उच्चगोत्रकी जो उक्त स्थितियां हैं वे संख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं ।  
नरकगति, तिर्यग्गति, चार शरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी जो उक्त स्थितियां हैं वे तुल्य होकर  
उतनी मात्र ही हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । सातावेदनीयकी जो उक्त स्थितियां हैं वे  
विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिवाले  
कर्मोंकी जो उक्त स्थितियां हैं वे उतनी मात्र ही हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । नौ नोकपायोंकी  
जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । सोलह कपायोंकी जो  
उक्त स्थितियां हैं वे उतनी मात्र ही हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । सम्यक्त्व और सम्य-  
ग्मिथ्यात्वकी जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं ।  
मिथ्यात्वकी जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । मनुष्यों,  
देवों और एकेन्द्रियोंमें भी प्रकृतिअल्पवहुत्वको इस वीजपदसे ले जाना चाहिये ।

१ ताप्रतौ नास्तीदं वाक्यम् । २ अप्रतौ 'ढ्ढिदीओ तत्तियाओ' इति पाठः ।

जहणएण पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सम्मत्त-लोहसंजलण-चत्तारिआउ-पंचंतराइयाणं जह० द्विदिसंकमो एगा द्विदी । जड्विदीओ असंखेज्जगुणाओ । णिहा-पयलाणं जड्विदीओ संखे० गुणाओ । कुदो ? आवलि० असंखे० भाएणव्वहियदोआवलियं-पमाणत्तादो । देवगइ-वेउव्वियसरीर-आहारसरीर-अजसकित्ति-णीचागोदाणं जाओ द्विदीओ ताओ संखे० गुणाओ । सणुसगइ-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-जसकित्ति-उचागोदाणं जाओ द्विदीओ ताओ विसेसा० । सव्वासिं जड्विदीयो विसेसा० । सादासादाणं जाओ द्विदीओ ताओ विसेसा० । जड्विदिसंकमो विसे० । मायासंजलण० जाओ द्विदीओ ताओ संखे० गुणाओ । जड्विदी० विसे० । माणे विसे० । कोधे विसे० । पुरिस० संखे० गुणाओ । छण्णोकसाय० संखे० गुणाओ । इत्थि-णवुंमयवेद० असंखे० गुणाओ<sup>१</sup> । थ्रीणगिद्वितियस्स जहण्णद्विदी असंखे० गुणा । णिरय-तिरिक्खगईणं असं० गुणाओ । अट्ठकसायाणं जाओ द्विदीओ ताओ असंखे० गुणाओ । सम्मामिच्छत्तस्स असंखे० गुणाओ । मिच्छत्तस्स असंखे० गुणाओ । अणंताणुवंधीणं असंखेज्जगुणाओ । सव्वासिं जड्विदीयो विसे० ओ ।

णिरयगईए णिरयाउअस्स सम्मत्तस्स य जहण्णद्विदिसंकमो थोवो । जड्विदी असंखे०

जघन्य पदकी अपेक्षा पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, सम्यक्त्व, संज्वलन लोभ, चार आयु और पांच अन्तराय; इनका जघन्य स्थितिसंक्रम एक स्थितिस्वरूप है । जस्थितियां असंख्यातगुणी हैं । निद्रा और प्रचलाकी जस्थितियां संख्यातगुणी हैं, क्योंकि, वे आवलीके असंख्यातवे भागसे अधिक दो आवली प्रमाण हैं । देवगति, वैक्रियिकशरीर, आहारशरीर, यशकीर्ति और नीचगोत्र इनकी जो जघन्य स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे संख्यातगुणी हैं । मनुष्यगति, औदारिकशरीर, तेजसशरीर, कामणशरीर, यशकीर्ति और उच्चगोत्र; इनकी जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । सवकी जस्थितियां विशेष अधिक हैं । साता और असाता वेदनीयकी जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितिसंक्रम विशेष अधिक है, संज्वलन मायाकी जो उक्त स्थितियां हैं वे संख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । संज्वलन मानमें विशेष अधिक हैं । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक हैं । पुरुषवेदकी संख्यातगुणी हैं । छह नोकपायोंकी संख्यातगुणी हैं । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी उक्त स्थितियां असंख्यातगुणी हैं । स्त्यानगृद्धि आदि तीनकी जघन्य स्थिति असंख्यातगुणी है । नरकगति और तिर्यग्गतिकी उक्त स्थितियां असंख्यातगुणी हैं । आठ कपायोंकी जो उक्त स्थितियां हैं वे असंख्यातगुणी हैं । सम्यग्मिध्यात्वकी असंख्यातगुणी हैं । मिध्यात्वकी असंख्यातगुणी हैं । अनन्तानुबन्धी कपायोंकी संख्यातगुणी हैं । सवकी जस्थितियां विशेष अधिक हैं ।

नरकगतिमें नारकायु और सम्यक्त्वका जघन्य स्थितिसंक्रम स्तोक है । जस्थिति असंख्यात-

१ अप्रती 'भाएणव्वहियादोआवलिय', ताप्रती 'भाणेणव्वहियादो आवलिय' इति पाठः । २ अप्रती 'जा' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'गुणा' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः अष्टकपाय-सम्यग्मिध्यात्वसम्बन्धिसन्दर्भोऽयं श्रुतितोऽस्ति, मप्रतितः कृतसंशोधने च केवलमष्टकपायसम्बन्धिसन्दर्भो योजितो न तु सम्यग्मिध्यात्वसम्बन्धी ।



गुणा । मणुस-तिरिक्खाउआणं संखेज्जगुणाओ । जड्ढिदी विसे० । अणंताणुवंधीणं असं-  
खेज्जगुणाओ । जड्ढिदी विसे० । आहारसरीरं असंखे० गुणाओ । जड्ढिदीओ विसे० ओ ।  
सम्मामिच्छत्तस्स असंखे० गुणाओ । देवगइ-णिरयगइ-वेउच्चियसरीरं असंखे०  
गुणाओ । उच्चागोदस्स विसे० ओ । मणुसगइ० विसे० ओ । जसकित्ति० विसे० ।  
अजसकित्ति० विसे० ओ । तिरिक्खगई० विसे० ओ । ओरालिय-तेजा-कम्मइयं  
विसे० । सादस्स० विसे० । सेमाणं तीसियाणं विसे० । पुरिसवेद० विसेसा० । इत्थि-  
वेद० विसे० । हस्स-रदि० विसे० । णवुंसयवेद० विसे० । अरदि-सोग० विसे० ।  
भय-दुग्घाणं जाओ ड्ढिदीओ ताओ विसे० । वारसकसायाणं जाओ ड्ढिदीओ ताओ विसे० ।  
मिच्छत्तस्स विसे० । सव्वासिं पि जड्ढिदीयो विसेसाहियाओ ।

तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु तिरिक्खाउअस्स सम्मत्तस्स य जो जहण्णड्ढिसंक्रमो  
[सो] धोवो । जड्ढिसंक्रमो असंखेज्जगुणो । मणुस्ताउअस्स संखे० गुणाओ । देवाउअस्स  
णिरयाउअस्स य संखेज्जगुणाओ । अणंताणुवंधीणं असंखे० गुणाओ । णिरयगइ-देवगइ-  
मणुसगइ-वेउच्चिय-आहारसरीर-उच्चागोदाणं जाओ ड्ढिदीओ ताओ असंखे० गुणाओ ।  
सम्मामिच्छत्तस्स० संखे० गुणाओ । जसकित्तीए असंखे० गुणा० । अजसगित्तीए

गुणी हैं । मनुष्यायु और तिर्यगायुकी प्रकृत स्थितियां संख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक  
हैं । अनन्तानुबन्धी कपायोंकी असंख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । आहारशरीरकी  
असंख्यातगुणी हैं । जस्थितियां विशेष अधिक हैं । सम्यग्मिथ्यात्वकी असंख्यातगुणी हैं । देवगति,  
नरकगति और वैक्रियिकशरीरकी असंख्यातगुणी हैं । उच्चगोत्रकी विशेष अधिक हैं । मनुष्य-  
गतिकी विशेष अधिक हैं । यशकीर्तिकी विशेष अधिक हैं । अयशकीर्तिकी विशेष अधिक हैं ।  
तिर्यचगतिकी विशेष अधिक हैं । औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कर्मणशरीरकी विशेष  
अधिक हैं । सातावेदनीयकी विशेष अधिक हैं । ज्ञेय त्रिंशिक प्रकृतियोंकी विशेष अधिक हैं ।  
पुरुषवेदकी विशेष अधिक हैं । स्त्रीवेदकी विशेष अधिक हैं । हास्य व रतिकी विशेष अधिक हैं ।  
नपुंसकवेदकी विशेष अधिक हैं । अरति व शोककी विशेष अधिक हैं । भय और जुगुप्साकी  
जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । वारह कपायोंकी जो उक्त स्थितियां हैं वे विशेष  
अधिक हैं । मिथ्यात्वकी जो उक्त स्थितियां हैं विशेष अधिक हैं । सभीकी जस्थितियां विशेष  
अधिक हैं ।

तिर्यचगतिमें तिर्यचोंमें तिर्यचआयु और सम्यक्त्वका जो जवन्य स्थितिसंक्रम है वह स्तोत्र  
है । जस्थितिसंक्रम असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुकी उक्त स्थितियां संख्यातगुणी हैं । देवायु और  
नारकायुकी संख्यातगुणी हैं । अनन्तानुबन्धी कपायोंकी असंख्यातगुणी हैं । नरकगति, देवगति,  
मनुष्यगति, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर और उच्चगोत्रकी जो उक्त स्थितियां हैं वे असंख्यात-  
गुणी हैं । सम्यग्मिथ्यात्वकी संख्यातगुणी हैं । यशकीर्तिकी असंख्यातगुणी हैं । अयशकीर्तिकी

१ अप्रतौ 'सिमाणं', काप्रतौ 'तिचोणं', ताप्रतौ 'तस (तीसि) यणं', मप्रतौ 'तंसयाणं' इति पाठः ।

विसेसा० । तिरिक्खगई० विसे० । णीचागोदस्स विसे० । ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं  
विसे० । सादस्स० विसे० । सेसाणं तीसियाणं विसे० । पुरिसवेदस्स० विसे० ।  
इत्थिवेदस्स० विसे० । हस्स-रदीणं विसे० । अरदि-सोगाणं विसे० । णवुंमयवेदस्स०  
विसे० । भय-दुगुंछाणं० विसे० । वारसकसाय० विसेसा० । मिच्छत्तस्स विसे० ।

तिरिक्खजोणिणीणं' एकम्मिह पदे णाणत्तं— सम्मत्तस्स जहण्णाट्टिदि० पलिदो असंखे०  
भागो । उव्वेत्थिमाणियाणं णामपयडीणं उवरि संखेज्जगुणो सम्मामिच्छत्तादो विसेस-  
हीणो । एदं णाणत्तं । ओघभंगो मणुसगईए । णवरि तिसु आउएसु णाणत्तं । देवगईए  
णिरयगइभंगो ।

एत्तो भुजगारसंकमे अट्टपदं भणियूण घेत्तव्वं । पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-  
सादासाद-मोहणिज्जाणं अत्थि भुजगार-अप्पदर-अवट्टियसंकमो, अवत्तव्वं णत्थि । णवरि  
अणंताणुव्वं-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-वारसकसाय-णवणोक्कसायाणं अवत्तव्वसंकमो अत्थि ।  
चट्टुण्णमाउआणं अत्थि चत्तारि पदाणि । णामपयडीणं उव्वेत्थिमाणियाणं तित्थयर-  
उच्चागोदाणं च अत्थि अवत्तव्वसंकमो । सेसाणं णामपयडीणं णीचागोदंतराइयाणं च  
णत्थि अवत्तव्वसंकमो ।

विशेष अधिक हैं । तिर्यचगतिकी विशेष अधिक हैं । नीचगोत्रकी विशेष अधिक हैं । औदारिक-  
शरीर, तैजसशरीर और कर्मणशरीरकी विशेष अधिक हैं । सातावेदनीयकी विशेष अधिक हैं ।  
शेष त्रिंशिक प्रकृतियोंकी विशेष अधिक हैं । पुरुषवेदकी विशेष अधिक हैं । स्त्रीवेदकी विशेष  
अधिक हैं । हास्य व रतिकी विशेष अधिक हैं । अरति और शोककी विशेष अधिक हैं । नपुंसक-  
वेदकी विशेष अधिक हैं । भय और जुगुप्साकी विशेष अधिक हैं । वारह कपायोंकी विशेष  
अधिक हैं । मिथ्यात्वकी विशेष अधिक हैं ।

तिर्यच योनिमतियोंमें एक पदमें विशेषता है—उनमें सम्यक्त्वका जघन्य स्थितिसंकम  
पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । उद्वेल्यमान नामप्रकृतियोंका जघन्य स्थितिसंकम आगे  
संख्यातगुणा व सम्यग्मिथ्यात्वसे विशेष हीन है । यह यहां विशेषता है । मनुष्यगतिमें ओघके  
समान प्ररूपणा है । विशेष इतना है कि तीन आयुओंमें कुछ विशेषता है । देवगतिमें  
नरकगतिके समान प्ररूपणा है ।

यहां भुजाकारसंकममें अर्थपदको कह करके ग्रहण करना चाहिये । पांच ज्ञानावरण, नौ  
दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय और मोहनीय कर्मोंका भुजाकार, अल्पतर और  
अवस्थित संक्रम होता है; अवक्तव्य संक्रम नहीं होता, विशेष इतना है कि अनन्तानुबन्धी,  
सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, वारह कपाय और नौ नोकपाय; इनका अवक्तव्य संक्रम होता है ।  
चार आयु कर्मोंके चार पद हैं । उद्वेल्यमान नामप्रकृतियों, तीर्थकर और उच्चगोत्रका अवक्तव्य  
संक्रम होता है । शेष नामप्रकृतियों, नीचगोत्र और अन्तरायका अवक्तव्यसंक्रम नहीं होता ।

१ अ-ताप्रत्योः 'तिरिक्खजोणिणी' इति पाठः ।

एयजीवेण कालो—पंचणाणावरणाणं भुजगारस्स कालो जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि समयसहस्साणि । अप्पदरस्स जह० एगसमओ, उक्क० वेच्चावट्टिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अवट्टियस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । णवदंसणावरणाणं तिघिहो जह० एगसमओ । उक्क० भुजगारस्स एक्कारस समय, सेसाणं णाणावरणभंगो । सादासाद-मिच्छत्ताणं भुजगारसंकमस्स जह० एगसमओ, उक्क० वे समय; अट्टासंकिलेस-खयप्पणादो । अप्पदर-अवट्टियाणं णाणावरणभंगो । सोलसकसाय-णवणोकसायाणं भुजगारसंकमस्स जह० एगसमओ, उक्क० सत्तारस समय । सोलसकसाय-णवणो-कसायाणमप्पदर-अवट्टिदाणं णाणावरणभंगो । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं भुजगार-अवट्टिय- [अवत्तव्व] संक्रमाणं कालो जहण्णुक्क० एगसमओ । एदेसिमप्पदरस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० वेच्चावट्टिसागरोवमाणि सादिरेयाणि<sup>१</sup> ।

चदुण्णमाउआणमवट्टिद-भुजगारसंकमाणं कालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । पुव्व-

एक जीवकी अपेक्षा कालका कथन करते हैं— पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंके भुजाकार संक्रम-का काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात हजार समय है । अल्पतरका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है । अवस्थितका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । नौ दर्शनावरण प्रकृतियोंके तीन प्रकारके संक्रमका काल जघन्यसे एक समय मात्र है । उत्कर्षसे वह भुजाकारका ग्यारह समय और शेष दोका ज्ञानावरणके समान है । सातावेदनीय, असातावेदनीय और मिथ्यात्वके भुजाकार संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है; क्योंकि, अट्टाक्षय और संक्लेशक्षयकी प्रधानता है । इनके अल्पतर और अवस्थित संक्रमके कालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । सोलह कषाय और नौ नोकपायोंके भुजाकारसंक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे सत्रह समय मात्र है । सोलह कषाय और नौ नोकपायोंके अल्पतर और अवस्थित संक्रमके कालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार, अवस्थित और अवक्तव्य संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । इनके अल्पतरसंक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है ।

चार आयुक्रमोंके अवस्थित और भुजाकार संक्रमोंका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय

१ मिच्छत्तस्स भुजगारसंकामगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण चत्तारिसमया । अप्पदरसंकामगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेणयसमओ । उक्कस्सेण तेवट्टिसागरोवमसदं सादिरेयं । अवट्टिद-संकामओ केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेणयसमओ । उक्कस्सेणंतोमुहुत्तं । क. पा. सु. पृ. ३२९, १५६-६४.  
२ सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं भुजगार-अवट्टिद-अवत्तव्वसंकामया केवचिरं कालादो होति ? जहण्णेणुक्कस्सेणय-समओ । अप्पदरसंकामओ केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण वे च्चावट्टिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । सेसाणं कम्मणं भुजगारसंकामओ केवचिरं कालादो हांदि ? जहण्णेणयसमओ । उक्कस्सेण एगण्वीस समय । सेसपदाणि मिच्छत्तभंगो । णवरि अवत्तव्वसंकामया जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । क. पा. सु. पृ. ३३०, १६५-७४.

बंधादो समउत्तरं पवद्धस्स जड्ढिदिं पडुच्च जड्ढिदिसंक्रमो त्ति एत्थ घेत्तव्वं । देव-णिरयाउ-  
आणं अप्पदरसंक्रमस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि ।  
तिरिक्ख-मणुस्साउआणं जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि ।

सच्चासिं णामपयडीणं णाणावरणभंगो । आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-  
संघाद-तित्थयराणं भुजगार-अवड्ढियसंक्रमो णत्थि । तित्थयरअप्पदरसंक्रमस्स जह०  
संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । आहारचउक्कस्स  
जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । पंचणं [ अंतराइयाणं ] णाणावरण-  
भंगो । णवरि भुजगारस्स संखेज्जा समयो । एवं णीचुच्चागोदाणं । णवरि भुजगारस्स  
वे समया । एवं कालो समत्तो ।

एगजीवेण अंतरं कालादो<sup>१</sup> साधेदूण जेयव्वो । णाणाजीवेहि भंगविचओ । पंच-  
णाणावरणोय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोक्कसाय-तिरिक्खा-  
उअ-एइंदियबंधपाओग्गणामपयडीणं णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं च भुजगार-अप्पदर-  
अवड्ढिदसंक्रामया जीवा णियमा अत्थि । चारित्तमोहणीयस्स अवत्तव्व० भजियव्वा ।

मात्र है । पूर्व बन्धसे एक समय अधिक बांधे गये आयु कर्मका जस्थितिकी अपेक्षा यहां जस्थिति-  
संक्रम ग्रहण करना चाहिये । देवायु और नारकायुके अल्पतर संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त  
और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । तिर्यचआयु और मनुष्यायुके अल्पतर संक्रमका  
काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक तीन तीन पल्योपम मात्र है ।

सब नामप्रकृतियोंके संक्रमकालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । आहारकशरीर,  
आहारकशरीरंगोपांग, आहारकबन्धन, आहारकसंघात और तीर्थकर इनके भुजाकारसंक्रम और  
अवस्थितसंक्रम नहीं हाते । तीर्थकर प्रकृतिके अल्पतरसंक्रमका काल जघन्यसे संख्यात हजार  
वर्ष और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । आहारचतुष्कके अल्पतरसंक्रमका काल  
जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसं पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । पांच [ अन्तराय ]  
प्रकृतियोंके संक्रमकालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि उनके भुजाकार-  
संक्रमका काल संख्यात समय मात्र है । इसी प्रकार नाचगोत्र और ऊंचगोत्रके संक्रमकालकी  
प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि उनके भुजाकारसंक्रमका काल दो समय मात्र है ।  
इस प्रकार कालप्ररूपणा समाप्त हुई ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरको कालसे सिद्ध करके ले जाना चाहिये । नाना जीवोंकी  
अपेक्षा भंगाविचयका कथन किया जाता है— पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय,  
असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, तिर्यचआयु, एकेन्द्रियके बन्ध योग्य  
नामप्रकृतियां, नीचगोत्र, ऊंचगोत्र और पांच अन्तराय; इनके भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित  
संक्रामक बहुत जीव नियमसे हैं । चारित्रमोहनीयके अवक्तव्य संक्रामक भजनीय हैं । तीन

१ अ-ताप्रत्योः 'आहारसरीरस्स' इति पाठः । २ अप्रतौ 'संखेज्जमया' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'अंतरकाले',  
का-ताप्रत्योः 'अंतरं कालो' इति पाठः ।

तिण्णमाउआणं एइंदियवंधिदपाओग्गणामपयडीणं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं च भुजगारं-  
अवट्ठिद-अवत्तव्वसंक्रामया भयणिज्जा । अप्पदरसंक्रामया णियमा अत्थिं ।

णाणाजीवेहि कालो अंतरं च णाणाजीवभंगविचयादो साहेयव्वं । एत्तो अप्पावहुअं-  
पंचणाणावरण-णवदंसणावरण-सादासाद-वावीसमोहणीयाणं [भुजगार] संक्रामया थोवा ।  
अवट्ठिदसंक्रामया असंखेज्जगुणा । अप्पदरसंक्रामया संखे० गुणा । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं  
अवट्ठिदसंक्रामया थोवा । भुजगारसंक्रामया असंखे० गुणा । अवत्तव्वसंक्रामया असंखे०  
गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । अणंताणुवंधीणं अवत्तव्व० थोवा । भुजगार०  
अणंतगुणा । अवट्ठिद० असंखे० गुणा । अप्पदर० संखे० गुणा ।

णिरयाउअस्स अवट्ठियं थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवत्तव्वं० संखे०  
गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । एवं देव-मणुस्साउआणं । तिरिक्खाउअस्स अवत्तव्व-  
संक्रामया पदरस्स असंखे० भागो । अवट्ठियसंक्रामया सव्वजीवाणं पलिदो०

आयुक्रमं, एकेन्द्रियके वन्धयोग्य नामप्रकृतियों, सम्यक्त्व और सम्यग्मिध्यात्वके भुजाकार,  
अवास्थित और अवक्तव्य संक्रामक भजनीय हैं । इनके अल्पतर संक्रामक बहुत जीव नियमसे हैं ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरको नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयसे सिद्ध  
करना चाहिये । यहाँ अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है— पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण,  
सातावेदनीय, असातावेदनीय और चाईस मोहनीय प्रकृतियोंके भुजाकार संक्रामक स्तोक हैं ।  
इनके अवस्थित संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व और  
सम्यग्मिध्यात्वके अवस्थित संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्य  
संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धी कपायोंके  
अवक्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक अनन्तगुणे हैं । अवस्थित संक्रामक असंख्यात-  
गुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे हैं ।

नारकायुके अवस्थित संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्य  
संक्रामक संख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार देवायु और  
मनुष्यायुके कहना चाहिये । तिर्यंच आयुके अवक्तव्य संक्रामक प्रतरके असंख्यातवें भाग हैं ।  
अवास्थित संक्रामक सब जीवोंके पत्योपमके असंख्यातवें भाग प्रतिभाग रूप हैं । भुजाकार

१ णाणाजीवेहि भंगविचयो । मिच्छत्तस सव्वजीवा भुजगारसंक्रामगा च अप्पयरसंक्रामया च . अवट्ठिद-  
संक्रामया च । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं सत्तावीसमंगा । सेसाणं मिच्छत्तभंगो । णवरि अवत्तव्वसंक्रामया भवियव्वा ।  
क. पा. सु. पृ. ३३३, १९३-१७. २ अ-काप्रत्योः 'अवत्त० संखे० गुणा', ताप्रती 'अवत्तव्व० असंखे०  
गुणा' इति पाठः । ३ सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं सव्वत्थोवा अवट्ठिदसंक्रामया । भुजगारसंक्रामया असंखेज्जगुणा ।  
अवत्तव्वसंक्रामया असंखेज्जगुणा । अप्पयरसंक्रामया असंखेज्जगुणा । अणंताणुवंधीणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वसंक्रामया ।  
भुजगारसंक्रामया अणंतगुणा । अवट्ठिदसंक्रामया असंखेज्जगुणा । अप्पयरसंक्रामया संखेज्जगुणा । एवं सेसाणं  
कम्मणं । क. पा. सु. पृ. ३३६, २२९-३७. ४ अ-का-ताप्रतिपूपलभ्यमानोऽयं नारकायुःसम्बन्धी सन्दर्भो  
मप्रतितः कृतसंशोधने ब्रह्मिहृतः । ५ ताप्रती 'अप्पदर० (अवत्तव्व०) संखे' इति पाठः ।

असंखे० भागपडिभागो । भुजगारसंकामया सव्वजीवाणमंतोमुहुत्तपडिभागो । अप्पदर-  
संकामया सव्वजीवाणं असंखेज्जा भागा । एदेण अप्पावहुअं तिरिक्खाउअस्स साहेयव्वं ।

णिरयगईए अवत्तव्वसंकामया थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्ठिय०  
अप्पदर० असंखे० गुणा उव्वेएल्लणकालसंचिदे पडुच्च । एवं देवगइणामाए । मणुसगइ-  
णामाए अवत्तव्व० थोवा । भुजगार० अणंतगुणा । अवट्ठिय० असंखे० गुणा । अप्पदर०  
असंखे० गुणा । तिरिक्खगइणामाए भुजगार० थोवा । अवट्ठिय० असंखे० गुणा ।  
अप्पदर० संखे० गुणा । चटुण्णमाणुपुव्वीणं सग-सगगइभंगो । ओरालिय-तेजा-  
कम्मइयाणं भुजगार० थोवा । अवट्ठिय० असंखे० गुणा । अप्पदर० संखे० गुणा ।  
एवं अणादियसंतकम्मणामाणं । णीचागोद-पंचंतराइयाणं णाणावरणभंगो । उच्चागोदस्स  
मणुसगइभंगो । एवं भुजगारद्विदिसंकमो समत्तो ।

पदणिकखेवस्स द्विदिउदीरणपदणिकखेवभंगो । वडिढसंकमो— पंचणाणावरणीयाणं  
असंखेज्जगुणहाणीए संकमाया थोवा । संखेज्जगुणहाणीए असंखे० गुणा । संखेज्जभाग-  
हाणीए संखे० गुणा । संखेज्जगुणवइठीए असंखे० गुणा । संखे० भागवइठीए संखे०  
गुणा । असंखे० भागवइठीए अणंतगुणा । अवट्ठिद० असंखे० गुणा । असंखे० भाग-

संक्रामक सब जीवोंके अन्तर्मुहूर्त प्रतिभाग रूप हैं । अल्पतर संक्रामक सब जीवोंके असंख्यात  
बहुभाग मात्र हैं । इससे तिर्यगायुके अल्पवहुत्वको सिद्ध करना चाहिये ।

नरकगतिके अवक्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक असंख्यातगुणे हैं ।  
अवस्थित व अल्पतर संक्रामक उद्वेलनकालसंचितोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार  
देवगति नामकर्मके सम्वन्धमें अल्पवहुत्व कहना चाहिये । मनुष्यगति नामकर्मके अवक्तव्य  
संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक अनन्तगुणे हैं । अवस्थित संक्रामक असंख्यातगुणे हैं ।  
अल्पतर संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । तिर्यचगति नामकर्मके भुजाकार संक्रामक स्तोक हैं ।  
अवस्थित संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे हैं । चार आनुपूर्वी नाम-  
कर्मोंका अल्पवहुत्व अपनीअपनी गतिके समान है । औदारिक, तैजस और कार्मण शरीरके भुजाकार  
संक्रामक स्तोक हैं । अवस्थित संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे हैं ।  
इसी प्रकार अनादिसत्कर्मिक नामप्रकृतियोंका अल्पवहुत्व है । नीचगोत्र और पांच अन्तराय  
प्रकृतियोंका अल्पवहुत्व ज्ञानावरणके समान है । उच्चगोत्रका अल्पवहुत्व मनुष्यगतिके समान  
है । इस प्रकार भुजाकार स्थितिसंक्रम समाप्त हुआ ।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणा स्थितिउदीरणा सम्वन्धी पदनिक्षेपके समान है । वृद्धिसंक्रमकी  
प्ररूपणा की जाती है— पांच ज्ञानावरण सम्वन्धी असंख्यात गुणहानिके संक्रामक स्तोक हैं ।  
संख्यातगुणहानिके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिके संक्रामक संख्यातगुणे  
हैं । संख्यातगुणवृद्धिके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिके संक्रामक संख्यातगुणे  
हैं । असंख्यातभागवृद्धिके संक्रामक अनन्तगुणे हैं । अवस्थित संक्रामक असंख्यातगुणे हैं ।

१ ताप्रतौ 'असंखे० गुणवइठीए' इति पाठः ।

हाणीए संखे० गुणा । एवं णवदंसणावरणीय-सादासादाणं । एवं सेसाणं पि कम्माणं । णवरि सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-चत्तारिआउआणं च चत्तारिवड्ढि-चत्तारिहाणीयो वत्तव्वाओ । एवं द्विदिसंक्रमो समत्तो ।

अणुभागसंक्रमे पुवं भगणिज्जो<sup>१</sup> कम्माणमादिफ्हदयणिदेसो— चत्तारिणाणावरणीय-तिणिणदंसणावरणीय-चदुसंजलण-णवणोकसाय-पंचंतराइयाणि देसघादीणि । सादासाद-आउचउक-सयलणामपयडि-उच्च-णीचागोदाणि अघादिकम्माणि । एदेसिमघादिकम्माणं पुव्विल्लदेसघादिकम्माणं च आदिफ्हदयाणि सरिमाणि । केवलणाणावरणीय-छदंसणा-वरणीय-वारसकासाय० सव्वघाइकम्माणि । एदेसिं आदिफ्हदयाणि परोप्परं सरिसाणि । सव्वघादीणि दारुसमाणाणि देसघादीणमादिफ्हदएहितो अणंतगुणाणि । सम्मत्तस्स आदिफ्हदयं देसघादीणमादिफ्हदएण सरिसं । तदो प्पहुडि सम्मत्तफ्हदयाणि देसघादि-

असंख्यातभागहानिके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकारसे नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय और असातावेदनीयके सम्बन्धमें कथन करना चाहिये । इसी प्रकार शेष कर्मोंके भी सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व और चार आयु कर्मोंकी प्ररूपणामें चार वृद्धियों और चार हानियोंको कहना चाहिये । इस प्रकार स्थितिसंक्रम समाप्त हुआ ।

अनुभागसंक्रमकी प्ररूपणामें पहिले कर्मोंके आदि स्पर्धकोंका निर्दश ज्ञात कराने योग्य है— चार ज्ञानावरण, तीन दर्शनावरण, चार संज्वलन, नौ नोकपाय और पांच अन्तराय; ये देशघाती कर्म हैं । सातावेदनीय, असातावेदनीय, चार आयु, समस्त नामप्रकृतियां, उच्चगात्र और नीचगोत्र; ये कर्मप्रकृतियां अघाती हैं । इन अघातिया कर्मोंके तथा पूर्वोक्त देशघाती कर्मोंके आदि स्पर्धक सदृश होते हैं । केवलज्ञानावरण, छह दर्शनावरण और वारह कपाय ये सर्वघाती कर्म हैं । इनके आदि स्पर्धक परस्परमें सदृश हैं । सर्वघाति कर्मोंके दारु समान स्पर्धक देशघाति कर्मोंके आदि स्पर्धकोंकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिका आदि स्पर्धक देशघातियोंके आदि स्पर्धकके सदृश है । उससे लेकर सम्यक्त्वके स्पर्धक देशघाति और

१ काप्रतौ 'गमणिजे', ताप्रतौ 'गमणिज्ज-' इति पाठः । २ मति-श्रुतावधि-मनःपर्ययज्ञानावरण-चक्षुर-चक्षुरवधिदर्शनावरण-संज्वलनचतुष्टय-नवनोकषायान्तरायपंचकलक्षणानां पंचविंशतिसंख्यानां देशघातिप्रकृतीनां देशघातीनि रसस्पर्धकानि भवन्ति । स्वस्य ज्ञानादेर्गुणस्य देशमेकदेशं मतिज्ञानादिलक्षणं घातयन्तीत्येवंशीलानि देशघातीनि । क. प्र. ( मलय. ) २-१. ३ वेदनीयायुर्नाम-गोत्राणं सम्बन्धिधनः एकादशोत्तरप्रकृतिशतस्या-घातीनो रसस्पर्धकान्यघातीनि वेदितव्यानि । केवलं वेद्यमानसर्वघातिरसस्पर्धकसम्बन्धात्तान्यपि सर्वघातीनि भवन्ति । यथेह लोके स्वयमचौराणामपि चौरसम्बन्धाच्चौरता । उक्तं च— जाण न विसओ घाइत्तणमि ताणं पि सव्वघाइरसो । जायइ घाइसगासेण चौरया वेहउचोरणं ॥ क. प्र. ( मलय. ) २-४४. ३ केवलज्ञानावरण - केवलदर्शनावरणघाद्रादशकषाय-निद्रापंचक-मिथ्यात्वलक्षणानां विंशतिप्रकृतीनां रसस्पर्ध-कानि सर्वघातीनि— सर्वे स्वघात्ये केवलज्ञानादिलक्षणं गुणं घातयन्तीति सर्वघातीनि । तानि च ताम्रभाजनवत् निच्छिद्राणि, घृतवत् खिरधानि, द्राक्षावत्तनुप्रदेशोपचितानि, स्फटिकाभ्रहारवच्चातीव निर्मलानि । उक्तं च— जो घायइ सविसयं सयलं सो होइ सव्वघाइरसो । सो निच्छिद्धो निद्धो तणुओ फलिहव्वभरविमलो ॥ क. प्र. ( मलय. ) २-४४. ४ प्रतिपु 'घादि' इति पाठः ।

अघादिकम्मफद्दएहि सह णिरंतरं गंतूण दारुसमाणम्हि देसघादिम्हि णिद्धियाणि । सम्मत्तउक्कस्सफद्दयादो सम्मामिच्छत्तस्स पढमफद्दयमणंतगुणं । कुदो ? केवलणाणावरणादिफद्दयसमाणत्तादो । तदो णिरंतराणि अणंताणि सम्मामिच्छत्तफद्दयाणि गंतूण दारुसमाणफद्दयाणमणंतिमभागे चेव णिद्धिदाणि । तदो उवरिमाणंतरफद्दयं मिच्छत्तस्स जहण्णफद्दयं होदि<sup>१</sup> । तं च सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सदारुसमाणफद्दयादो अणंतगुणं घादिकम्माणमादिफद्दएहि असमाणं । एवं सच्चकम्माणं पि आदिफद्दयपरूवणा कदा ।

एत्तो अट्टपदं— ओकड्ढिदो वि अणुभागो अणुभागसंकमो, उक्कड्ढिदो वि अणुभागो अणुभागसंकमो, अण्णपयडिं णीदो वि अणुभागो अणुभागसंकमो<sup>२</sup> । आदिफद्दयं ण ओकड्ढिज्जदि<sup>३</sup> । आदिफद्दयादो जत्तियो जहण्णओ णिक्खेवो एत्तियमेत्ताणि फद्दयाणि ण ओकड्ढिज्जतिं<sup>४</sup> । तदो उवरिमफद्दयं पि ण ओकड्ढिज्जदि, अधिच्छावणाभावादो । तदो जत्तियाणि जहण्णणिक्खेवफद्दयाणि जत्तियाणि जहण्णअधिच्छावणाफद्दयाणि च एत्तियमेत्ताणि फद्दयाणि पढमफद्दयप्पहुडि उवरिं चडियूण ड्ढिदं जं फद्दयं तमोकड्ढिज्जदि,

अघाति कर्मों के स्पर्धकोंके साथ निरन्तर जाकर दारु समान देज्ञघातिमें समाप्त होते हैं । सम्यक्त्वके उत्कृष्ट स्पर्धककी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वका प्रथम स्पर्धक अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह केवलज्ञानावरणके आदि स्पर्धकके समान है । उसके आगे सम्यग्मिथ्यात्वके अनन्त स्पर्धक निरन्तर जाकर दारु समान स्पर्धकोंके अनन्तवें भागमें ही समाप्त हो जाते हैं । उसके आगेका अनन्तर स्पर्धक मिथ्यात्वका जघन्य स्पर्धक होता है । वह सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट दारु समान स्पर्धककी अपेक्षा अनन्तगुणा होकर घाती कर्मोंके आदि स्पर्धकोंके समान नहीं होता । इस प्रकार सब कर्मों के ही आदि स्पर्धकोंकी प्ररूपणा की गयी है ।

यहां अर्थपद— अपकर्षणको प्राप्त हुआ भी अनुभाग अनुभागसंक्रम है, उत्कर्षणको प्राप्त हुआ भी अनुभाग अनुभागसंक्रम है, और अन्य प्रकृतिको प्राप्त कराया गया भी अनुभाग अनुभागसंक्रम है । आदि स्पर्धकका अपकर्षण नहीं होता है । आदि स्पर्धकसे लेकर जितना जघन्य निक्षेप है, इतने मात्र स्पर्धकोंका भी अपकर्षण नहीं किया जाता है । उनसे ऊपरके स्पर्धकका भी अपकर्षण नहीं किया जाता है, क्योंकि, अतिस्थापनाका अभाव है । इसलिये जितने जघन्य निक्षेपस्पर्धक हैं और जितने जघन्य अतिस्थापनास्पर्धक हैं इतने मात्र स्पर्धक प्रथम स्पर्धकसे लेकर ऊपर चढ़कर जो स्पर्धक स्थित है उसका अपकर्षण किया जाता है, क्योंकि, उसके अतिस्थापनारूप व निक्षेपरूप स्पर्धकोंकी सम्भावना पायी जाती है ।

१ सव्वेसु देसघाईसु सम्मत्तं तदुवरिं तु वा मिसं । दारुसमाणस्साणंनिमोत्ति मिच्छत्तमुप्पिमओ ॥ क. प्र. २, ४५. २ अणुभागो आकड्ढिदो वि संकमो उक्कड्ढिदो वि संकमो अण्णपयडिं णीदो वि संकमो । क. पा. सु. पृ. ३४५, १. तत्थट्टपयं उव्वाट्टया व ओवट्टिया व अविभागा । अणुभागसंकमो एस अन्नपगई निया वावि ॥ क. प्र. २, ४६. ३ प्रतिपु 'आदिफद्दयाणं ओकड्ढिज्जदि' इति पाठः । ४ ताप्रतौ 'फद्दयाणि ओकड्ढिज्जति' इति पाठः ।



तस्स अधिच्छावणा-णिकखेवफहयाणं संभुवळंभादो' ।

एत्थ अप्पावहुअं— पदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं थोवो' । जहण्णओ णिकखेवो अणंतगुणो । जहणिया अधिच्छावणा अणंतगुणा । उक्क० अधिच्छावणा अणंतगुणा । उक्कस्सयमणुभागखंडयं विसे० । उक्कस्सओ णिकखेवो विसेसाहिओ, ओक्कड्डणादो' चरिमफहयस्स अधिच्छावणफहय-णिकखेवाणमभावादो । तदो जहणयं णिकखेवं जहणं च अधिच्छावणं ओसक्किरणं जं फहयं चरिमफहयादो ड्ढिदं तमोक्कड्डिज्जदि' ।

ओक्कड्डणादो उक्कड्डणादो च जहणओ णिकखेवो तुल्लो, सो थोवो । ओक्कड्डणादो जहणिया अधिच्छावणा, उक्कड्डणादो च अणुक्कस्स-जहणजहणअधिच्छावणाए चरिमफहयसलागा वि, उक्कड्डणादो च उक्कस्सओ णिकखेवो तुल्लो अणंतगुणो' ।

यहां अल्पवहुत्व—प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरं स्तोकं है । जघन्य निक्षेप अनन्तगुणा है । जघन्य अतिस्थापना अनन्तगुणी है । उक्कट्ट अतिस्थापना अनन्तगुणी है । उक्कट्ट अनुभागकाण्डक विशेष अधिक है । उक्कट्ट निक्षेप विशेष अधिक है, क्योंकि, अपकर्षणकी अपेक्षा अन्तिम स्पर्धकका जो अतिस्थापना रूप स्पर्धक है और जिसका निक्षेप हुआ है, मात्र इन दोनोंका अभाव है । इसीलिये अन्तिम स्पर्धकसे जघन्य निक्षेप और जघन्य अतिस्थापनाको छोड़कर जो स्पर्धक स्थित है उसका अपकर्षण किया जाता है ।

अपकर्षण और उक्कर्षण दोनोंकी अपेक्षा जघन्य निक्षेप तुल्य होकर स्तोक है । अपकर्षणकी अपेक्षा जघन्य अतिस्थापना व उक्कर्षणकी अपेक्षा अनुक्कट्ट, जघन्य और अजघन्य अतिस्थापनाकी अन्तिम स्पर्धकशालाका भी, तथा उक्कर्षणकी अपेक्षा उक्कट्ट निक्षेप तुल्य व अनन्तगुणा है ।

१ ओक्कड्डणाए परुवणा । पदमफहयं ण ओक्कड्डिज्जदि विट्ठियफहयं ण ओक्कड्डिज्जदि । एवमणंताणि फहयाणि जहणिया अइच्छावणा, तत्तियाणि फहयाणि ण ओक्कड्डिज्जंति । अण्णाणि अणंताणि फहयाणि जहणणिकखेवमेत्ताणि च ण ओक्कड्डिज्जंति । जहणओ णिकखेवो जहणिया अइच्छावणा च ततियमेत्ताणि फहयाणि आदीदो अधिच्छिदूण तदित्थफहयमोक्कड्डिज्जदि । तेण परं सव्वाणि फहयाणि ओक्कड्डिज्जंति । क. पा. सु. पृ. ३४६, ४-१०. २ प्रतिपु 'थोवा' इपि पाठः । ३ एत्थ अप्पावहुअं । सव्वथोवाणि पदेसगुणहाणिट्ठाणंतरफहयाणि । जहणओ णिकखेवो अणंतगुणो । जहणिया अइच्छावणा अणंतगुणा । उक्कस्सयमणुभागखंडयमणंतगुणं । उक्कस्सिया अइच्छावणा एगाए वग्गणाए ञणिया । उक्कस्सणिकखेवो विसेसाहिओ । उक्कस्सो वंधो विसेसाहिओ । क. पा. सु. ३४६, ११-१८. थोवं पएसगुणहाणिअंतरे दुसु जहणनिकखेवो । कयसो अणंतगुणिओ दुसु वि अइत्थावणा तुल्ला ॥ वाघाएणणुभागखंडगमेक्काए वग्गणाऊणं । उक्कोसो निकखेवो ससंतबंधो य सविसेसो ॥ क. प्र. ३, ८-९. ४ ताप्रती 'उक्कड्डणादो' इति पाठः । ५ अ-काप्रत्योः 'ओक्कड्डिज्जण' इति पाठः । ६ प्रतिपु 'तमुक्कड्डिज्जदि' इति पाठः । ७ उक्कड्डणाए परुवणा । चरिमफहयं ण उक्कड्डिज्जदि । दुचरिमफहयं पि ण उक्कड्डिज्जदि । एवमणंताणि फहयाणि ओसक्किरणं तं फहयमुक्कड्डिज्जदि । सव्वथोवो जहणओ णिकखेवो । जहणिया अइच्छावणा अणंतगुणा । उक्कस्सओ णिकखेवो अणंतगुणो । उक्कस्सओ वंधो विसेसाहिओ । ओक्कड्डणादो उक्कड्डणादो च जहणिया अइच्छावणा तुल्ला । जहणओ णिकखेवो तुल्लो । क. पा. सु. पृ. ३४७, १९-२८. चरिमं नोक्कड्डिज्जदि चान्वाणंताणि फहयाणि ततो । उस्सक्किय ओक्कड्डह ( उव्वट्टह ) एवं उव्वट्टणाईओ ॥ क. प्र. ३, ७.

एदेण अट्टपदेण पमाणानुगमो बुच्चदे । तं जहा— घादिसण्णा ठाणसण्णां च एत्थ वि परूवेयव्वा । सम्मत्तस्स उक्कस्सओ संकमो<sup>२</sup> देसघादी दुट्ठाणियो । एवं मणुस-तिरिक्खाउआणं । सम्मामिच्छत्तस्स आदावणामाए च सव्वघादी दुट्ठाणियो अणुभागसंकमो<sup>३</sup> । इत्थि-णवुंसयवेदाणमुक्कस्सओ सव्वघादी चदुट्ठाणियो अणुभागसंकमो । सम्मत्त-चदुसंजलण-पुरिसवेदाणं जहणसंकमो देसघादी एयट्ठाणियो । सेसाणं कम्मणं जहणओ संकमो सव्वघादी दुट्ठाणियो<sup>४</sup> । णवरि मणुव-तिरियाउआणं देसघादी ।

सामित्तं— मदिआवरणस्स उक्कस्साणुभागसंकमो कस्स होदि ? जो उक्कस्साणुभागं बांधियुण आवलियादिकंतो सो एइंदियो वा अणेइंदियो<sup>५</sup> वा वादरो वा सुहुमो वा पज्जत्तओ वा अपज्जत्तओ वा णियमा मिच्छाइट्ठी, असंखेज्जवस्साउअमणुस्से तिरिक्खे मणुस्सोववादियदेवे च मोत्तूण जो अण्णो, तस्स उक्कस्साणुभागसंकमो । एवं चदुणाणावरण - णवदंसणावरण-मिच्छत्त-सोलसकसाय - णवणोकसाय-असादावेदणीय-

इस अर्थपदके अनुसार प्रमाणानुगमकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— घाति संज्ञा और स्थान संज्ञाकी यहां भी प्ररूपणा करना चाहिये । सम्यक्तत्त्वा उक्कष्ट संक्रम देशघाती होता हुआ द्विस्थानिक है । इसी प्रकार मनुष्यायु और तिर्यगायुके सम्बन्धमें कहना चाहिये । सम्यग्मिथ्यात्व और आतप नामकर्मका अनुभागसंक्रम सर्वघाती होकर द्विस्थानिक है । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका उक्कष्ट अनुभागसंक्रम सर्वघाती चतुःस्थानिक है । सम्यक्तव, चार संव्वलन और पुरुषवेदका जघन्य संक्रम देशघाती एकस्थानिक है । शेष कर्मोंका जघन्य संक्रम सर्वघाती द्विस्थानिक है । विशेष इतना है कि वह मनुष्यायु और तिर्यगायुका देशघाती है ।

स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है— मतिज्ञानावरणका उक्कष्ट अनुभागसंक्रम किसके होता है ? जो उक्कष्ट अनुभागको बांधकर एक आवलीको घिता चुका है । वह एकेन्द्रिय हो चाहे अनेकेन्द्रिय हो, वादर हो अथवा सूक्ष्म हो, पर्याप्त हो अथवा अपर्याप्त हो, नियमसे मिथ्यादृष्टि हो; तथा असंख्यातवर्षायुष्क मनुष्यों, तिर्यचों और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले देवों ( आनतादिक ) को छोड़कर जो अन्य हो, उसके मतिज्ञानावरणका उक्कष्ट अनुभागसंक्रम होता है । इसी प्रकार शेष चार ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय,

१ प्रतिपु 'घादिसंठाणसण्णा' इति पाठः । २ अप्रतौ 'उक्कस्सओ वि संकमो इति पाठः । ३ दुविहपमाणे जेट्ठो सम्मत्तदेसघाइ दुट्ठाणा । नर-तिरियाऊ-आयव-मिस्से वि य सव्वघाइम्मि ॥ क. प्र. २, ४७, ४ तत्थ पुव्वं गमणिजा घादिसण्णा च ट्ठाणसण्णा च । सम्मत्त-चदुसंजलण-पुरिसवेदाणं मोत्तूण सेसाणं कम्मणमणुभागसंकमो णियमा सव्वघादी, वेट्ठाणियो वा तिट्ठाणियो वा चउट्ठाणियो वा । णवरि सम्मामिच्छत्तस्स वेट्ठाणियो चैव । अक्खवग-अणुवसामगस्स चदुसंजलण-पुरिसवेदाणमणुभागसंकमो मिच्छत्तभंगो । खवगुवसामंगाणमणुभागसंकमो सव्वघादी वा देसघादी वा, वेट्ठाणियो वा एयट्ठाणियो वा । सम्मत्तस्स अणुभागसंकमो णियमा देसघादी । एयट्ठाणियो वेट्ठाणियाओ वा । क. पा. सु. पृ. ३४९, ३३-३९. सेसासु चउट्ठाणे मंदो सम्मत्त-पुरिस-संजलणे । एगट्ठाणे सेसासु सव्वघाइम्मि दुट्ठाणे ॥ क. प्र. ३, ४८. ५ अ-काप्रत्यो: 'सोइंदियो वा अणेइंदियो'; ताप्रतौ 'सो इंदियो वा अण्णियो' इति पाठः ।

अप्पसत्थणामपयंडि-णीचागोद-पंचंतराइयाणं । सादस्स उक्कस्साणुभागसंकमो कस्स ? चरिमसमयसुहुमसांपराइएण खवएण जं वद्धमणुभागं आवलियादिकंतं संकममाणस्स खीणकसायस्स सलोगिकेवलस्स वा । जसकित्ति-उच्चागोदाणं सादभंगो ।

णिरयाउअस्स उक्कस्सओ अणुभागसंकमो कस्स ? जो उक्कस्साणुभागं वंधिदूण आवलियादिकंतो सो ताव पाओग्गो जाव समय । हियावलियचरिमसमयतवभवत्थो त्ति । एवं सैसाणमाउआणं ।

जाओ पसत्थाओ परभवियणामबंधज्झवसाणस्स चरिमसमये वज्झंति तासि बंधज्झवसाणवोच्छेदादो आवलियादिकंतमादिं कादूण जाव चरिमसमयसजोगादो<sup>१</sup> त्ति उक्कस्साणुभागसंकमो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालिय-सरीरअंगोवंग-बंधण-संधाद-वज्जरिसहसंधणणमुक्कस्सओ अणुभागसंकमो कस्स ? देवेण सव्वविसुद्धेण पवद्धाणुभागं आवलियादिकंतं संकममाणस्स । सो कत्थ होदि ? देवेषु णेरइएसु तिरिक्खेसु मणुस्सेसु एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिदिय-पंचिदिएसु सुहुमेसु<sup>३</sup>

असातावेदनीय, अप्रशस्त नामप्रकृतियों, नीचगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंके भी उत्कृष्ट अनुभागसंक्रमका कथन करना चाहिये । सातावेदनीयके उत्कृष्ट अनुभागका संक्रम किसके होता है ? अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके द्वारा जो अनुभाग बांधा गया है आवलिकातिक्रान्त उसका संक्रमण करनेवाले क्षीणकपाय अथवा सयोगकेवलीके उसका उत्कृष्ट अनुभागसंक्रम होता है । यशकीर्ति और उच्चगोत्रकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है ।

नारकायुके उत्कृष्ट अनुभागका संक्रम किसके होता है ? जो उत्कृष्ट अनुभागको बांधकर बन्धावलीको विता चुका है वह अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र कालके शेष रहने तक नारकायुके उत्कृष्ट अनुभागसंक्रमके योग्य होता है । इसी प्रकार शेष आयु कर्माकी प्ररूपणा है ।

जो प्रशस्त प्रकृतियां परभविक नामप्रकृतियोंके बन्धाध्यवसानके अन्तिम समयमें बंधती हैं उनका बन्धाध्यवसानव्युच्छित्तिसे आवलिकातिक्रान्त समयको आदि लेकर अन्तिम समयवर्ती सयोगी तक उत्कृष्ट अनुभागसंक्रम होता है । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिक-शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंधात और वज्रर्षभसंहननका उत्कृष्ट अनुभागसंक्रम किसके होता है ? वह सर्वविशुद्ध देवके द्वारा बांधे गये अनुभागका बन्धावलीके पश्चात् संक्रम करनेवाले जीवके होता है । वह कहाँपर होता है ? वह देवोंमें, नारकियोंमें, तिर्यचोंमें, मनुष्योंमें, एकेन्द्रियोंमें, द्वीन्द्रियोंमें, त्रीन्द्रियोंमें, चतुरिन्द्रियोंमें, पंचेन्द्रियोंमें,

१ सामित्तं । मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागसंकमो कस्स ? उक्कस्साणुभागं वंधिदूणावलियपडिभगस्स अण्णदरस्स । एवं सव्वकम्मणं । णवरि सम्मत्त-सम्मा मिच्छत्ताणमुक्कस्साणुभागसंकमो कस्स ? दंसणमोहणीयक्खवयं मोत्तूण कस्स संतकम्ममत्थि त्ति तस्स उक्कस्साणुभागसंकमो । क. पा. सु. पृ. ३५१, ४०-४५. उक्कोसगं पबंधिय आवलियमइच्छिऊण उक्कोसं । जाव ण घाणइ तगं संकमइ य आ मुहुत्तंतो ॥ असुमाणं अन्नयरो सुहुम-अपजत्तगाइ मिच्छो य । वज्जिय असंखवासाउए य मणुओववाए य ॥ क. प्र. २, ५२-५३. २ प्रतिपु 'संजोगादो' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'चउरिदिएसु सुहुमेसु' इति पाठः ।

वादरेसु पञ्जत्तएसु अपञ्जत्तएसु वा होदि ।

उज्जोवणामाए उक्कस्साणुभागसंकमो कस्स ? सत्तमाए पुढवीए दंसणमोहुवसामगंतेण अधापवत्तकरणचरिमसमए जं. वद्धमणुभागं आवलियादीदं संकममाणस्स । सो कत्थ होदि ? णेरइएसु तिरिक्खेसु मणुस्सेसु एइंदिएसु विगलिंदिएसु सुहुमेसु वादरेसु पञ्जत्तएसु अपञ्जत्तएसु वा होदि ।

णिरयगदीए सादस्स उक्कस्साणुभागसंकमो कस्स होदि ? चरिमसमयसुहुमसांपराइएण उवसामएण जो वद्धो अणुभागो तमघादेदूण अण्णदरिस्से पुढवीए उववज्जेज तस्स उक्कस्सअणुभागसंकमो । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं<sup>१</sup> । एव मुक्कस्ससामित्तं समत्तं ।

एत्तो जहण्णाणुभागसंकमस्स सामित्तं— कसाए<sup>२</sup> खवेंतस्स जाव अंतरं अकदं<sup>३</sup> ताव अप्पसत्थाणं कम्माणं अणुभागसंतकम्मं सुहुमसंतकम्मादो उवरिं होदि, अंतरं कदे सुहुमसंतकम्मादो हेडुदो होदि<sup>४</sup> । एदेण बीजपदेण जहण्णसामित्तं कायव्वं । पंचणाणावरण-छदंसणावरण-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागसंकामओ<sup>५</sup> को होदि ? जो जहण्णट्टिदिसंकामओ सो चैव जहण्णाणुभागस्स वि संकामओ । एवं सम्मत्त-लोहसंजलणाणं<sup>६</sup> ।

सूक्ष्मोंमें, वादरोंमें, पर्याप्तकोंमें और अपर्याप्तकोंमें होता है ।

उद्योत नामकर्मका उत्कृष्ट अनुभागसंकम किसके होता है ? सातवीं पृथिवीमें दर्शन-मोहका उपशम करनेवाले जीवके द्वारा अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें जो अनुभाग बांधा गया है, बन्धावलीके पश्चात् उसका संक्रम करनेवालेके उद्योतका उत्कृष्ट अनुभागसंकम होता है । वह कहांपर होता है ? वह नारकियोंमें, तिर्यचोंमें, मनुष्योंमें, एकेन्द्रियोंमें, विकलेन्द्रियोंमें, सूक्ष्मोंमें, वादरोंमें, पर्याप्तकोंमें और अपर्याप्तकोंमें होता है ।

नरकगतिमें सातावेदनीयका उत्कृष्ट अनुभागसंकम किसके होता है ? अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म साम्पराय उपशामकके द्वारा जो अनुभाग बांधा गया है उसका घात न करके जो अन्यतर पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाला है उसके सातावेदनीयका उत्कृष्ट अनुभागसंकम होता है । इसी प्रकारसे सर्वत्र प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य अनुभागसंकमके स्वामित्वका कथन किया जाता है— कषायोंका क्षपण करनेवाले जीवके, जब तक वह अन्तर नहीं करता है तब तक, अप्रशस्त कर्मोंका अनुभागसत्कर्म सूक्ष्म एकेन्द्रियके सत्कर्मसे अधिक होता है । किन्तु अन्तर करनेपर वही सूक्ष्म एकेन्द्रियके सत्कर्मसे नीचे होता है । इस बीज पदके अनुसार जघन्य स्वामित्वको करना चाहिये । पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण और पांच अन्तरायके जघन्य अनुभागका संक्रामक कौन होता है ? जो इनकी जघन्य स्थितिका संक्रामक है वही उनके जघन्य अनुभागका भी संक्रामक होता है । इसी प्रकार सम्यक्त्व और संज्वलन लोभके सम्बन्धमें कहना चाहिये ।

१ सव्वत्थायावुज्जोव-मणुसगइपंचगाण आऊणं । समयाहिगालिगा सेसग ति सेसण जोगंता ॥ क. प्र. २-५४. २ ताप्रतौ 'सामित्तं कस्स ? कसाए' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'अंतरं कथं', ताप्रतौ 'अंतरं कदं' इति पाठः । ४ खवगसंतरकरणे अकए घाईण सुहुमकम्मवुरिं । क. प्र. २-५५. ५ अप्रतौ 'संकमओ', का-ताप्रत्योः 'संकमो' इति पाठः । ६ ताप्रतौ 'लोहसंजणाणं' इति पाठः ।

णिद्वाणिद्वा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णाणुभागसंक्रामथो को होदि' ? सुहु-  
मेइंदियो कदहदसमुत्पत्तियकम्मो अण्णदरएइंदियो वेइंदियो तेइंदियो चउरिंदियो  
पंचिंदियो वा । कुदो ? जहण्णाणुभागेण सह सुहुमेइंदियस्स वीइंदियाएसु उत्पत्ति-  
संभवादो । सम्माइड्डी पसत्थकम्माणुभागं ण हणदि' । अप्पसत्थाणं भवोग्गाहियाणं  
कम्माणमणुभागसंतकम्मं जिणे वट्टमाणं पि असण्णिसंतकम्मादो अणंतगुणं । एदेण  
कारणेण सादासादाणं णामस्स पयडीणं अणादियसंतकम्मियाणं णीचागोदस्स च कद-  
हदसमुत्पत्तियसंतकम्मियस्स सुहुमेइंदियस्स जहण्णसंतकम्मादो हेट्ठा वंधमाणस्स जहण्णा-  
णुभागसंकमो । एइंदियादिपंचिदिएसु वि एदेसिं जहण्णाणुभागसंकमो होदि', जहण्णाणु-  
भागसंतकम्मियसुहुमेइंदियस्स जहण्णाणुभागेण सह वेइंदियादिसुत्पत्तिदंसणादो ।

मिच्छत्त-अट्टकसायाणं पि सुहुमेइंदियमिह चैव कयहदसमुत्पत्तियकम्ममिह  
जहण्णाणुभागसंकमो' । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागसंक्रामगो को होदि ? जो

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्थानगृद्धिके जघन्य अनुभागका संक्रामक कौन होता  
है ? जिसने हतसमुत्पत्तिक कर्मको किया है ऐसा सूक्ष्म एकेन्द्रिय, अन्यतर एकेन्द्रिय,  
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव उनके जघन्य अनुभागका संक्रामक होता है ।  
इसका कारण यह है कि जघन्य अनुभागके साथ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवकी उत्पत्ति द्वीन्द्रिय  
आदि जीवोंमें सम्भव है । सम्यग्दृष्टि जीव प्रशस्त कर्मोंके अनुभागका घात नहीं करता है ।  
भवोपगृहीत अप्रशस्त कर्मोंका अनुभागसत्कर्म जिन भगवान्में वर्तमान होकर भी असंज्ञीके  
सत्कर्मसे अनन्तगुणा होता है । इस कारण सातावेदनीय, असातावेदनीय, अनादिसत्कर्मिक  
नामप्रकृतियों और नीचगोत्रका जघन्य अनुभागसंकम हतसमुत्पत्तिकसत्कर्मिक होकर जघन्य  
सत्कर्मसे नीचे बांधनेवाले सूक्ष्म एकेन्द्रियके होता है । एकेन्द्रियको आदि लेकर पंचेन्द्रिय  
पर्यन्त जीवोंमें भी इनके जघन्य अनुभागका संक्रम होता है, क्योंकि, जघन्य अनुभाग-  
सत्कर्मिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवकी जघन्य अनुभागके साथ द्वीन्द्रियादि जीवोंमें उत्पत्ति  
देखी जाती है ।

मिध्यात्व और आठ कपायोंका भी जघन्य अनुभागसंकम हतसमुत्पत्तिककर्मको करने-  
वाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके ही होता है । सम्यग्मिध्यात्वके जघन्य अनुभागका संक्रामक

१ अ-काप्रत्योः 'संकमो होदि', ताप्रतौ 'संकमो [को-] होदि' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'सुहुमेइंदियकद-'  
इति पाठः । ३ सम्माइड्डी न हणइ सुभाणुमाने' । क. प्र. २-५६. ४ केवल्लिगो णंतगुणं असन्निधो सेस-  
असुमाणं ॥ क. प्र. २-५५. ५ सेसाण सुहुम ह्यसंतकम्मिगो तत्स हेट्ठो जाव । वंधइ तावं एगिंदियो व  
णेगिंदियो वावि ॥ क. प्र. २-५९. उक्तसेसाणं शुभानामशुभानां वा प्रकृतीनां सत्तनवति संख्यानां यः सूक्ष्मैकेन्द्रियो  
वायुकायिकोऽग्निकायिको वा हतकर्मा—हतं विनाशितं प्रभूतमनुभागसत्कर्म येन स हतकर्मा— स तस्यात्म-  
सत्कल्याणानुभागसत्कर्मणोऽवस्तात् ततः स्तोकरमिथ्यः । अनुभागं तावद् वप्नाति यावदेकेन्द्रियस्तस्मिन्नयस्मिन्  
वा एकेन्द्रियमवे वर्तमानोऽनेकेन्द्रियो वेति स एव हतसत्कर्मा एकेन्द्रियोऽन्यस्मिन् द्वीन्द्रियादिमवे वर्तमानो  
यावदन्यं वृहत्तरमनुभागं न वप्नाति तावत्तमेव जघन्यमनुभागं संक्रमयतीति । मलयः ६ मिच्छत्तस्स  
जहण्णाणुभागसंक्रामथो को होइ ? सुहुमस्स हदसमुत्पत्तिकम्मेण अण्णदरो । एइंदियो वा वेइंदियो वा

सम्मामिच्छत्तखवगो अपच्छिमे अणुभागखंडए वट्टमाणओ सो होदि<sup>१</sup> । पुरिमवेद-  
तिसंजलणणं जहण्णाणुभागसंक्रामगो को होदि ? एदेसि खवओ<sup>२</sup> एदेसि<sup>३</sup> चेव अपच्छिम-  
समयपवद्धानं चरिमफालीयो संछुहमाणओ । णवरि पुरिसवेदस्स पुल्लिगेण उवट्टिदो  
त्ति वत्तव्वं<sup>४</sup> । णवुंसयवेदस्स जहण्णाणुभागसंक्रामओ को होदि ? णवुंसयवेदकखवगो  
णवुंसयवेदोदएणेव खवगसेडिमारूढो णवुंसयवेदचरिमफालिं संछुहमाणगो । इत्थिवेदस्स  
जहण्णाणुभागसंक्रामओ को होदि ? इत्थिवेदखवगो अण्णदरवेदोदएण खवगसेडिमारूढो  
इत्थिवेदचरिमाणुभागखंडयचरिमफालिं संछुहमाणओ । छण्णोकसायाणमित्थिवेदभंगो<sup>५</sup> ।

चट्टणमाउआणं जहण्णाणुभागसंक्रामओ को होदि ? अप्पप्पणो जहण्णियाओ  
ट्टिदीओ णिव्वत्तेदूण आवलियमदिकंतो । अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभागसंक्रामओ को

कौन होता है ? जो सम्यग्मिथ्यात्वका क्षपक अन्तिम अनुभागकाण्डकमें वर्तमान है वह  
उसके जघन्य अनुभागका संक्रामक होता है। पुरुषवेद और तीन संज्वलन कषायोंके जघन्य  
अनुभागका संक्रामक कौन होता है ? जो इन प्रकृतियोंका क्षपक इन्हींके अन्तिम समय-  
प्रवर्द्धोंकी अन्तिम फालियोंका क्षेपण कर रहा हो वह उनके जघन्य अनुभागका संक्रामक  
होता है। विशेष इतना है कि पुरुषवेदका संक्रामक पुल्लिगसे उपस्थित हुआ जीव होता है, ऐसा  
कहना चाहिये। नपुंसकवेदके जघन्य अनुभागका संक्रामक कौन होता है ? नपुंसकवेदका  
क्षपक जो जीव नपुंसकवेदके उदयके साथ ही क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ होकर नपुंसकवेदकी  
अन्तिम फालिका क्षेपण कर रहा हो वह उसके जघन्य अनुभागका संक्रामक होता है।  
स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागका संक्रामक कौन होता है ? जो स्त्रीवेदका क्षपक जीव अन्यतर  
वेदोदयके साथ क्षपकश्रेणिपर आरूढ़ होकर स्त्रीवेदके अन्तिम अनुभागकाण्डककी अन्तिम  
फालिका क्षेपण कर रहा हो वह स्त्रीवेदके जघन्य अनुभागका संक्रामक होता है। छह  
नोकषायोंके जघन्य अनुभागसंक्रामककी प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है।

चार आयु कर्मोंके जघन्य अनुभागका संक्रामक कौन होता है ? अपनी अपनी जघन्य  
स्थितियोंको रचकर बन्धावलीको वितानेवाला जीव उनके जघन्य अनुभागका संक्रामक होता है।  
अनन्तानुबन्धी कषायोंके जघन्य अनुभागका संक्रामक कौन होता है ? विसंयोजना करके जो

तेइंदियो वा चउरिंदियो वा पंचिंदियो वा । एवमट्टणं कसायाणं । क. पा. सु. पृ. ३५२, ४७-५०.  
१ सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागसंक्रामओ को होइ ? चरिमाणुभागखंडयं संछुहमाणओ । क. पा.  
सु. पृ. ३५२, ५३-५४. × × × नियगचरमसखंडे दिट्ठिमोहदुगे ॥ क. प्र. २, ५७. २ अ-काप्रत्योः  
'खवदि', ताप्रतौ 'खवदि (ओ)' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'एदासि' इति पाठः । ४ कोहसंजलणस्स जहण्णाणु-  
भागसंक्रामओ को होइ ? चरिमाणुभागबंधस्स चरिमसमयअणिल्लेवगो । एवं माण-मायासंजलण-पुरिसवेदाणं ।  
क. पा. सु. पृ. ३५३, ५७-५९. ५ इत्थिवेदस्स जहण्णाणुभागसंक्रामओ को होइ ? इत्थिवेदकखवगो तस्सेव  
चरिमाणुभागखंडए वट्टमाणओ । णवुंसयवेदस्स जहण्णाणुभागसंक्रामओ को होइ ? णवुंसयवेदकखवओ तस्सेव चरिमे  
अणुभागखंडए वट्टमाणओ । छण्णोकसायाणं जहण्णाणुभागसंक्रामओ को होइ ? खवगो तेसिं चेव छण्णोकसाय-  
वेदणीयाणं चरिमे अणुभागखंडए वट्टमाणओ । क. पा. सु. पृ. ३५३, ६३-६७.

होदि ? विसंजोएदृण जहण्णपरिणामेण पढमसमयसंजुत्तो । णिरयगइणामाए जहण्णाणु-  
भागसंकामओ को होदि ? पढमदाए संजोएमाणओ । जहा णिरयगइणामाए तहा  
सव्वासिमुच्चेल्लमाणणामपयडीणं । उच्चागोदस्स जहण्णाणुभागसंकामगो को होदि ?  
संजोजेमाणओ । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो । तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-  
मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसायाणं उक्कस्साणुभागसंकामगो जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क-  
स्सेण वि अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्साणुभागसंकामओ केवचिरं० ? जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क०  
असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्साणुभागसंकामओ जह०,  
अंतोमु०, उक्क० वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अणुक्कस्साणुभागसंकामओ  
जहण्णुक० अंतोमु० ।

जघन्य परिणामसे संयुक्त होनेके प्रथम समय वर्तमान है वह उनके जघन्य अनुभागका संक्रामक  
होता है । नरकगति नामकर्मके जघन्य अनुभागका संक्रामक कौन होता है ? सर्वप्रथम संयोजन  
करनेवाला जीव उसके जघन्य अनुभागका संक्रामक होता है । जैसे नरकगतिके जघन्य अनुभाग-  
संक्रामकका कथन किया है वैसे ही उद्वेल्यमान सभी नामप्रकृतियोंके जघन्य अनुभागसंक्रामकोंका  
कथन करना चाहिये । उच्चगोत्रके जघन्य अनुभागका संक्रामक कौन होता है ? सर्वप्रथम  
संयोजन करनेवाला जीव उसका संक्रामक होता है । इस प्रकार स्वामित्वकी प्ररूपणा  
समाप्त हुई ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शना-  
वरण, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय और नौ नोकपाय; इनके उत्कृष्ट अनुभाग-  
संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे भी अन्तर्मुहूर्त मात्र ही है । इनके अनुत्कृष्ट  
अनुभागसंक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गल-  
परिवर्तन मात्र है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल  
जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है । उनके अनुत्कृष्ट  
अनुभागके संक्रामकका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

१ आऊण जहण्णठिई वैधिय जावत्थि संकमो ताव । उव्वलण-तित्थ-संजोयणा य पढमावलियं गंतुं ॥  
क. प्र. २-५८ तथा नरकद्विक-मनुजद्विक-वैक्रियसत्तकाहारसत्तकोच्चैर्गोत्रलक्षणामेकविंशत्युद्बलनप्रकृतीनां  
तीर्थकरस्थानन्तानुबन्धिनां च जघन्यमनुभागं वद्ध्वा प्रथमावलिकां वन्धावलिकालक्षणां गत्वातिक्रम्य,  
वन्धावलिकायाः परतः इत्थं । जघन्यमनुभागं संक्रमयति । कः संक्रमयतीति चेदुच्यते— वैक्रियिकसत्तक-  
देवद्विक-नरकद्विकानामसंज्ञिपंचेन्द्रियः, मनुष्यद्विकोच्चैर्गोत्रयोः सूक्ष्मनिगोदः, आहारसत्तकस्याप्रमत्तः,  
तीर्थकरस्याविरतसम्यग्दृष्टिः, अनन्तानुबन्धिनां पश्चात्कृतसम्यक्तवो मिथ्यादृष्टिः संक्रमयतीति । मलय.  
२ मिच्छत्तस्स उक्कस्साणुभागसंकामओ केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्साणु-  
भागसंकामओ केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा ।  
एवं सोलसकसाय-णवणोकसायाणं । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमुक्कस्साणुभागसंकामओ केवचिरं कालादो होदि ?  
जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण वे; छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अणुक्कस्साणुभागसंकामओ केवचिरं  
कालादो होदि ? जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं । क. पा. सु. पृ. ३५४, ६९-७९.

साद-जसकित्ति-उच्चागोदानं मणुमगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-बंधण-संधाद-पढमसंधडण आदावुज्जोवणामाओ मोत्तण सेसाणं पसत्थणामपयडीणं च उक्कस्साणुभागसंकामओ केवचिरं०? जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पुव्व-कोडी देसूणा । अणुक्कस्साणुभागसंकामओ केवचिरं० ? उव्वेळमाणपयडीओ मोत्तण सेसाण अणादिओ अपज्जवसिदो अणादिओ सपज्जवसिदो वा । उव्वेळमाणणं पयडीणमणुक्कस्साणु-भागसंकामओ केवचिरं० ? जह० पलिदो० असंखे० भागो, अधवा अडुवस्साणि सादिरेयाणि । उक्कस्सेण जो जस्स पयडिसंतकालो तच्चिरं कालं<sup>१</sup> ।

आउआणं<sup>२</sup> जड्ढिदिवंधमाणगो जमणुभागं णिव्वत्तेदि जाव तड्ढिदि ण ओवट्टेदि ताव तत्तियं कालं सो अणुभागं होदि । एदेण वीजेण देव-णिरयाउआणं उक्कस्साणु-क्कस्सअणुभागसंकामओ जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्साणुक्कस्सअणुभागसंकमो केवचिरं० ? जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि । णवरि तिरिक्खाउअणुक्कस्सअणुभाग-संकमस्स उक्कस्सेण असंखेज्जा योग्गलपरियट्टा ।

अप्पसत्थाणं णामपयडीणं णीचागोद-पंचंतराइयाणं च उक्कस्साणुभागसंकमो जह०

सातावेदनीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र तथा मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिक-शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिकसंधात, प्रथम संहनन, तथा आतप व उद्योतको छोड़कर शेष प्रशस्त नामप्रकृतियोंके भी उत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि मात्र है । इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? उक्त काल उद्वेल्यमान प्रकृतियोंको ( आहारकद्विक, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, देवद्विक, नारकचतुष्क, उच्चगोत्र और मनुष्यद्विक) को छोड़कर शेष प्रकृतियोंका अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है । उद्वेल्यमान प्रकृतियोंके अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग अथवा साधिक आठ वषं मात्र है । उत्कर्षसे जो जिसके प्रकृतिसत्वका काल है उतना काल उनके अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका है ।

आयु कर्मोंकी जिस स्थितिको बांधनेवाला जिस अनुभागकी रचना करता है व जब तक उस स्थितिका अपवर्तन नहीं करता है तब तक उतने मात्र काल उसके वह अनुभाग होता है । इस वीजपदके अनुसार देवायु व नारकायुके उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । मनुष्यायु और तिर्य-गायुके उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्योपम मात्र है । विशेष इतना है कि तिर्यच आयुके अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है ।

अप्रशस्त नाम प्रकृतियों, नीचगोत्र और पांच अन्तरायके उत्कृष्ट अनुभागके संक्रामका

१ अ-काप्रत्योः 'काल' इति पाठः । २ ताप्रतौ '-कर्मकालो । तच्चिरं कालं आउआणं ।' इति पाठः ।



उक्क० अंतोमुहुत्तं । अणुक्कस्सअणुभाग० केवचिरं० ? जह० अंतोमु०, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुच्ची-ओरालियसरीर-ओरालियसरीर-अंगोवंग-बंधण-संघाद-पढमसंघडण-आदावुज्जोवाणं उक्कस्साणुभागसंकामगो केवचिरं० ? जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० वेछावट्टिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । एदेसिं चैव अणुक्कस्स-संकामगो केवचिरं० ? जह० अंतोमुहुत्तं । उक्क० आदावणामाए असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा, मणुसगइणामाए सपरिवाराए असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा, ओरालियसरीरस्स सपरिवारस्स पढमसंघडणस्स उज्जोवणामाए च अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो वा । [तत्थ जो सादिओ सपज्जवसिदो] तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । एवमुक्कस्साणुभागसंकमकालो समत्तो ।

जहण्णाणुभागसंकमकालो । तं जहा— पंचणाणावरण-छदंसणावरण-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागसंकमो केवचिरं० ? जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अजहण्णाणुभागसंकामओ केवचिरं० ? अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो वा । णिदाणिदा-पयला-पयला-थीणगिद्धि-सादासाद-मिच्छत्त-अट्टकसायाणं जहण्णाणुभागसंकामओ जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अजहण्णाणुभागसंकामओ जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखेज्जा लोगा । सम्मत्त-चदुसंजलण-पुरिसवेदाणं जहण्णाणुभागसंकामओ केव० ? जहण्णुक्क० एगसमओ ।

काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्तं मात्र है । इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रमका काल कितना है ? जघन्यसे वह अन्तर्मुहूर्तं और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन, औदारिक-संघात, प्रथम संहनन, आतप और उद्योतके उत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्तं और उत्कर्षसे साधिक दो छद्यासठ सागरोपम मात्र है । इन्हींके अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्तं मात्र है । उत्कर्षसे वह आतप नामकर्मका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, सपरिवार मनुष्यगति नामकर्मका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, तथा सपरिवार औदारिकशरीर, प्रथम संहनन और उद्योत नामकर्मका अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित व सादि-सपर्यवसित भी है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित काल है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्तं व उत्कर्षसे उपार्धं पुद्गलपरिवर्तन है । इस प्रकार उत्कृष्ट अनुभाग संक्रमका काल समाप्त हुआ ।

जघन्य अनुभागके संक्रमकालकी प्ररूपणा इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, छह दर्शना-वरण और पांच अन्तरायके जघन्य अनुभागके संक्रमका काल कितना है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । उनके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित भी है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, साता-वेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व और आठ कषायोंके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्तं मात्र है । उनके अजघन्य अनुभागके संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्तं और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र है । सम्यक्त्व, चार संज्वलन और पुरुषवेदके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्य और उत्कर्षसे एक समय

अजहण्णाणुभागसंक्रामओ चदुमंजलण-पुरिसवेदानं अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो [वा] । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । सम्मत्तस्स जह० अंतोमु०, उक्क० वेछावट्ठिसागरो० सादिरेयाणि ।

अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभागसंक्रामओ जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि समया । अजहण्णाणुभागसंक्रामओ अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो च । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमु०, उक्कस्स-मुवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । अट्ठणं णोकसायाणं जहण्णाणुभागसंक्रामओ जहण्णुक० अंतो-मुहुत्तं । अजहण्ण० अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्ज-वसिदो च । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उवड्ढ-पोग्गलपरियट्ठं । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णाणुभागसंक्रामओ केव० ? जहण्णुक० अंतोमु० । अजहण्णस्स जह० अंतोमु०, उक्क० वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ।

आउआणं जहण्णाणुभागसंक्रामओ जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि समया । अजहण्ण० जह० अंतोमुहुत्तं । देव-णिरयाउआणं अजहण्णाणुभागसंक्रमकालस्स कुदो

मात्र है । चार संज्वलन और पुरुषवेदके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है । सम्यक्त्वके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है ।

अनन्तानुवन्धी कपायोंके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय मात्र है । उनके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है । पुरुषवेदको छोड़कर शेष आठ नोकपायोंके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है । सम्यग्मिथ्यात्वके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उसके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है ।

आयु कर्षोंके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय मात्र है । उनके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

१ ताप्रतावतोऽग्रे 'उक्क० वेछावट्ठिसागरो० ।' इत्यधिकः पाठः ।

अंतोमु० ? तण्ण, अजहण्णाणुभागसंक्रमस्स आदिं करिय पुणो अजहण्णाणुभागसंक्रमे अंतोमुहुत्तमच्छिय पुणो जहण्णाणुभागं मोत्तूण सेसाणुभागस्स घादं करिय एगसमय-जहण्णाणुभागं संकामिय विदियादिसमएसु आवलियादीदं पुव्ववद्धाणुभागं संक्रममाणस्स तदुवलंभादो । उक्कस्सेण देव-णिरयाउआणं तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि, तिरि-कवाउअस्स असंखेजा लोगा ।

णामपयडीणं अणुच्चेम्माणियाणं मुहाणमसुहाणं वा जहण्णाणुभागसंक्रामओ केव० ? जह० उक्क० च-अंतोमुहुत्तं । अजहण्णाणुभागसंक्रामओ केव० ? जह० अंतोमु०, उक्क० अमखेजा लोगा । एवं णीचागोदस्स । आहारसरीर-आहारसरीरअंगोअंग-वंधण-संघादाणं जहण्णाणुभागसंक्रामओ केव० ? जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि समयया । अजहण्णाणुभागसंक्रामओ केवचिरं० ? जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदोवमस्स असंखे० भागो । तित्थयरणामए जहण्णाणुभागसंक्रामओ केव० ? जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि समयया । अजहण्णाणुभागसंक्रामओ केवचिरं० ? जचिरं-पयडिसंतकम्मं । सेसाणमुव्वेच्छ-माणणामपयडीणमुचागोदस्स जहण्णाणुभागसंक्रामओ केव० ? जह० एगसमओ, उक्क०

शंका— देवायु और नारकायुके अजघन्य अनुभागके संक्रमका काल अन्तर्मुहूर्त कैसे है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि अजघन्य अनुभागसंक्रमको आदि करके, फिर अजघन्य अनुभागसंक्रममें अन्तर्मुहूर्त रहकर, पुनः जघन्य अनुभागको छोड़कर शेष अनुभागका घात करके एक समयमें जघन्य अनुभागका संक्रम करके द्वितीयादि समयोंमें आवलिकातीत पूर्ववद्ध अनुभागका संक्रम करनेवालेके उक्त काल पाया जाता है ।

उक्त काल उत्कर्षसे देवायु और नारकायुका साधिक तेतीस सागरोपम, तथा तिर्यगायुका असंख्यात लोक मात्र है ।

अनुद्वैत्यमान शुभ और अशुभ नामप्रकृतियोंके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र है । इसी प्रकार नीचगोत्रके भी अनुभागसंक्रमकालका कथन करना चाहिये । आहारशरीर, अहारशरीरांगोपांग, आहारबन्धन और आहारसंघातके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय मात्र है । इनके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पत्योपसके असंख्यातवै भाग मात्र है । तीर्थकर नामकर्मके जघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय मात्र है । इसके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है ? कितना काल प्रकृतिसत्कर्मका है उतना ही काल इसके अजघन्य अनुभागके संक्रमका भी है । शेष उद्वैत्यमान नामप्रकृतियों और उच्चगोत्रके जघन्य अनुभागके

१ अग्रतौ 'अणुच्चेम्माणियाणं' इति पाठः ।

चत्वारि समया । अज्ञहणाणुभागसंक्रामणो केव० ? जह० पल्लिदो० असंखे० भागोः  
अद्वयस्साणि सादिरेयाणि, उक्क० अप्पप्पणोः पयडिसंतस्स कालो । एवं जहणुक्कस्स-  
अणुभागसंक्रमकालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं । [तं] जहा—पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असातावेदणीय-  
मिच्छत्त-सोलसकपाय-णवणोकसाय-णिरय-तिरिक्ख-मणुस्साउआणं अप्पसत्थणामपयडीणं  
च णोचागोद-पंचंतराइयाणं च उक्कस्साणुभागसंक्रामयंतरं केव० ? जह० अंतोमुत्तं, उक्क०  
असंखेजा पोग्गलपरियट्ठा । साद-जसकिति-उच्चागोदाणं जासिं च णामपयडीणं खवरो  
परमवियणामबंधज्जवसाणस्स चरिमसमए उक्कस्साणुभागो वज्झदि तासिं च उक्कस्साणु-  
भागसंक्रामयंतरं णत्थि । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्समणुभागसंक्रामयंतरं जहणं  
जहणपयडिअंतरं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । देवाउअस्स जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क०  
उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुच्ची-वज्जरिसहसंधण-उज्जोव-  
ओरालियच्चउक्काणं देवाउअभंगो । आदावणामाए अप्पसत्थणामपयडिभंगो । एवमुक्क-  
स्संतरं समत्तं ।

जहणाणुभागसंक्रामयंतरं— पंचणाणावरणीय - छदंसणावरणीय - सम्मत्त-सम्मा-  
मिच्छत्त-चटुसंजलण-णवणोकसायाणं पंचंतराइयाणं जहणाणुभागसंक्रामयंतरं णत्थि ।

संक्रामकका काल कितना है? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चार समय मात्र है ।  
उनके अजघन्य अनुभागके संक्रामकका काल कितना है? वह जघन्यसे पत्योपमके असं-  
ख्यातवें भाग और साधिक आठ वर्ष तथा उत्कर्षसे अपने अपने प्रकृतिसत्त्वके कालके  
समान है । इस प्रकार जघन्य व उत्कृष्ट अनुभागसंक्रमकका काल समान हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है । यथा—पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शना-  
वरण, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु,  
अप्रशस्त नामप्रकृतियों, नीचगोत्र और पांच अन्तरायके उत्कृष्ट अनुभाग संक्रामकका अन्तरकाल  
कितना है? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । साता-  
वेदनीय, यशकीर्ति और उच्चगोत्रका तथा जिन नामप्रकृतियोंका क्षपकके द्वारा परभविक नाम-  
कर्मके वन्धाध्यवसानके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट अनुभाग बांधा जाता है उनके भी उत्कृष्ट अनुभागके  
संक्रामकका अन्तर नहीं होता । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट अनुभागके संक्रामकका  
जघन्य अन्तरकाल जघन्य प्रकृतिअन्तरके समान तथा उत्कृष्ट उपाधे पुद्गलपरिवर्तन मात्र है ।  
उक्त अन्तरकाल देवायुका जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपाधे पुद्गलपरिवर्तन मात्र है ।  
मनुष्यगति, मनुष्यगातप्रायोग्यानुपूर्वी, वज्रपंभसंहनन, उद्योत और औदारिकचतुष्कका उक्त  
अन्तरकाल देवायुके समान है । आतप नामकर्मके इस अन्तरकालकी प्ररूपणा अप्रशस्त नाम-  
प्रकृतियोंके समान है । इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर समान हुआ ।

जघन्य अनुभाग संक्रामकके अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है— पांच ज्ञानावरण, छह  
दर्शनावरण, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, चार संज्वलन, नौ नोकपाय और पांच अन्तराय; इनके

णिदाणिदा - पयलापयला - थीणगिद्धि - सादासाद - मिच्छत्त - अट्टकसाय- तिरिक्खाउआणं  
अणुव्वेच्छमाणपसत्थापसत्थणामपयडीणं णीचागोदस्स च जहण्णाणुभागसंक्रामयंतरं  
जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखेज्जा लोगा । अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभागसंक्रामयंतरं  
जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० उव्वड्ढपोग्गलपरियट्ठं । णिरय-देव-मणुस्साउआणं जहण्णाणु०  
जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा । उव्वेच्छणपाओग्गाणं णामपयडीणं  
उच्चागोदस्स च जहण्णाणुभागसंक्रामयंतरं जह० पलिदो० असंखे० भागो, उक्क० मोत्तण  
संजदपाओग्गाओ अवसेसाणं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा, संजदपाओग्गाणं उव्वड्ढपोग्गल-  
परियट्ठं । तित्थयरणामाए जहण्णाणुभागसंक्रामयंतरं णत्थि । एवं अंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ दुविहो उक्कस्सपदभंगविचओ जहण्णपदभंगविचओ  
चेदि । तत्थ अट्टपदं— जे' उक्कस्सअणुभागस्स संक्रामया ते अणुक्कस्स० असंक्रामया ।  
जे अणुक्कस्सअणुभागस्स संक्रामया ते उक्कस्सस्स असंक्रामया । एदेण अट्टपदेण सव्व-  
क्कम्माणं पि उक्कस्साणुभागस्स सिया सव्वे जीवा असंक्रामया, सिया असंक्रामया च  
संक्रामओ च, सिया असंक्रामया च संक्रामया च । अणुक्कस्सस्स वि विवरीएण तिणिण-

जघन्य अनुभाग संक्रामकका अन्तरकाल सम्भव नहीं है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, आठ कपाय और तिर्यंच आयु तथा अनुद्वैल्यमान प्रशस्त व अप्रशस्त नामप्रकृतियों एवं नीचगोत्रके जघन्य अनुभागके संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र है । अनन्तानुबन्धी कपायोंके जघन्य अनुभाग संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपाधं पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । नारकायु, देवायु और मनुष्यायुके जघन्य अनुभाग संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । रद्वेलन योग्य नामप्रकृतियों और उच्चगोत्रके जघन्य अनुभाग संक्रामकका अन्तरकाल जघन्यसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग है । उत्कर्षसे संयत योग्य प्रकृतियोंको छोड़कर शेष प्रकृतियोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन तथा संयत योग्य प्रकृतियोंका उपाधं पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । तीर्थंकर नामकर्मके जघन्य अनुभाग संक्रामकका अन्तरकाल नहीं है । इस प्रकार अन्तरकालकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय दो प्रकार है— उत्कृष्ट-पद-भंगविचय और जघन्य-पद-भंगविचय । उनमें अर्थपद कहते हैं— जो उत्कृष्ट अनुभागके संक्रामक हैं वे अनुत्कृष्ट अनुभागके असंक्रामक होते हैं । जो अनुत्कृष्ट अनुभागके संक्रामक हैं वे उत्कृष्ट अनुभागके असंक्रामक होते हैं । इस अर्थपदके अनुसार सभी कर्मोंके उत्कृष्ट अनुभागके कदाचित् सब जीव असंक्रामक होते हैं, कदाचित् असंक्रामक बहुत और संक्रामक एक होता है, तथा कदाचित् असंक्रामक भी बहुत व संक्रामक भा बहुत होते हैं । अनुत्कृष्ट अनुभागके सम्बन्धमें भी विपरीत क्रमसे तीन भंग ( कदाचित् सब जीव संक्रामक, कदाचित् संक्रामक बहुत और असंक्रामक एक,

१ अप्रतौ 'वे' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'उ (अणु) क्साणुभागस्स' इति पाठः ।

भंगा वत्तव्या । साद-जसकित्ति-उच्चागोदाणं उक्कस्साणुभागस्स णियमा अत्थि संकामया च असंकामया च । एदासिमणुक्कस्साणुभागस्स वि संकामया च असंकामया च णियमा अत्थि । सेसाणं कम्माणं छ भंगा । अपुव्वकरणे परभवियणामाणं वंधवोच्छेदम्मि जेसिं कम्माणं उक्कस्सवंधो भणिदो तेसिमुक्कस्सो वा अणुक्कस्सो वा वंधो तत्थ होदि, असंखेज्ज-लोगमेत्तअणुभागवंधज्जवसाणट्ठाणणं तत्थ संभवादो । तेणेदेसिं छ भंगा । एवमुक्कस्सपद-भंगविचओ समत्तो ।

जहण्णयस्स वि एदं चेव अट्टपदं । एदेण अट्टपदेण पंचणाणावरणीय-छदंसणा-वरणीय-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-अणंताणुवंधीणं चदुक्क-चदुसंजलण-णवणोकसाय - आउत्ति-उव्वेह्लमाणणामपयडि-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागसंकामयाणं छ भंगा । थीणगिद्धितिय - सादासाद-मिच्छत्त - अट्टकसाय-तिरिक्खाउअ-अणुव्वेह्लमाणणामपयडीणं णीचागोदस्स च जहण्णाणुभागस्स णियमा संकामया च असंकामया च । एवं णाणा-जावेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो । तं जहा— साद-जसकित्ति-उच्चागोदाणं उक्कस्साणुभाग-संकामया केवचिरं० ? सव्वद्धो । सेसाणं कम्माणं उक्कस्साणुभागसंकामया जह० अंतो-मुहुत्तं, उक्क० अप्पसत्थाणं कम्माणं पलिदो० असंखे० भागो । आउआणमुक्कस्साणुभाग-

तथा कदाचित् संक्रामक भी बहुत और असंकामक भी बहुत होते हैं । ) कहना चाहिये । सातावेदनीय, यशकोर्ति और उच्चगोत्रके उत्कृष्ट अनुभागके नियमसे बहुत संक्रामक और बहुत असंकामक होते हैं । इनके अनुत्कृष्ट अनुभागके भी बहुत संक्रामक और बहुत असंकामक होते हैं । शेष कर्मोंके छह भंग हैं । अपूर्वकरण गुणस्थानमें परभविक नामकर्मोंकी बन्धव्यु-च्छित्तिके हो जानेपर जिन कर्मोंका उत्कृष्ट बन्ध कहा गया है उनका वहां उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट बन्ध होता है, क्योंकि, वहां असंख्यात लोक मात्र अनुभागबन्धाध्यवसानस्थानोंकी सम्भावना है । इस कारण इनके छह भंग होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट-पद-भंगविचय समाप्त हुआ ।

जघन्य अनुभाग संक्रमके भी विषयमें यही अर्थपद है । इस अर्थपदके अनुसार पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धचतुष्क, चार संज्वलन, नौ नोकपाय, तीन आयु, उद्वेल्यमान नामप्रकृतियों, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंके छह भंग होते हैं । स्त्यानगृद्धि आदि तीन, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, आठ कपाय, तिर्यगायु, अनुद्वेल्यमान नामप्रकृतियों और नीचगोत्रके जघन्य अनुभागके नियमसे संक्रामक बहुत और असंकामक भी बहुत होते हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा इस प्रकार है— सातावेदनीय, यशकोर्ति और उच्चगोत्रके उत्कृष्ट अनुभाग संक्रामकोंका काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा उनका सर्वकाल है । शेष कर्मोंके उत्कृष्ट अनुभाग संक्रामकोंका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अप्रशस्त कर्मोंका पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । आयु कर्मोंके उत्कृष्ट अनुभाग

संक्रामयाणं कालो जह० अंतोमु०, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो । जासिं परमविय-  
णामाणं बंधज्झवसाणस्स चरिमसमए खवओ उक्कस्साणुभागं णिव्वत्तेदिः तामिं णाम-  
पयडीणं उक्कस्साणुभागसंक्रामयकालो जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । पसत्थाणं  
णामपयडीणं अक्खवयपाओग्गाणं उक्कस्साणुभागसंक्रमकालो जह० अंतोमु०, उक्क०  
पलिदो० असंखेभागो । एवमुक्कस्सकालो समत्तो ।

एत्तो णाणाजीवेहि जहण्णाणुभागसंक्रामयकालो । तं जहा— पंचणाणावरण-छ-  
दंसणावरण-सम्मत्त-पुरिसवेद-चदुसंजलण-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागसंक्रामयाणं कालो  
जह० एगसंमओ, उक्क० संखेज्जा समया । अणंताणुबंधीणं जहण्णाणुभागसंक्रामया  
जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । सम्मामिच्छत्त-अट्टणोकसायाणं  
जहण्णाणुभागसंक्रामया जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । तिण्णमाउआणं जहण्णाणुभागसंक्राम-  
याणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । तिरिक्खाउस्स जहण्णा-  
जहण्णस्स सच्चद्धा । गिरय-देव-मणुसगइणामाणं तप्पाओग्गआणुपुव्वीणामाणं वेउव्विय-  
सरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-बंधण-संघादणामाणं जहण्णाणुभागसंक्रामयाणं० जह० एग-  
समओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । एवमुच्चागोदस्स । आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंग-

संक्रामकोंका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र हैं।  
जिन परभविक नामकर्मोंके बन्धाध्यवसानके अन्तिम समयमें क्षपक जीव उत्कृष्ट अनुभागकी  
रचना करता हैं उन नामप्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभाग संक्रामकोंका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और  
उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण हैं। अक्षपक योग्य प्रशस्त नामप्रकृतियोंके उत्कृष्ट अनुभाग  
संक्रामकोंका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं। इस  
प्रकार उत्कृष्ट कालकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहां नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अनुभाग संक्रामकोंके कालकी प्ररूपणा की जाती है।  
यथा— पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, सत्यक्त्व पुरुषवेद, चार संज्वलन और पांच  
अन्तरायके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात-  
समय मात्र हैं। अनन्तानुबन्धी कपायोंके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका काल जघन्यसे एक  
समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग मात्र है। सत्यग्मिध्यात्व और आठ-  
नोकपायोंके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका काल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। तीन-  
आयु कर्मोंके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके  
असंख्यातवें भाग मात्र है। तिर्यगायुके जघन्य व अजघन्य अनुभाग संक्रामकोंका काल-  
सर्वकाल है। नरकगति, देवगति और मनुष्यगति नामकर्मों, तत्प्रायोग्य आनुपूर्वी नामकर्मों,  
वैक्रियिकशरीर वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघात नामकर्मोंके जघन्य  
अनुभाग संक्रामकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग  
मात्र है। इसी प्रकार उच्चगोत्रके सम्बन्धमें कहना चाहिये— आहारशरीर, आहारशरीरांगोपांग,

१ अप्रती 'आहारशरीरसाहार', काप्रती 'आहारशरीरस्स आहार' इति प्राठः।

बंधन-संघाद-तित्थयराणं जहण्णाणुभागसंक्रामया जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समयया । सेमाणमणुव्वेळ्ळमाणणामपयडीणं णीचागोदस्स जहण्णाणुभागसंक्रामयाणं सव्वद्धा । एवं कालो समत्तो ।

णाणाजीवेहि अंतरं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादा-वेदणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-आउचउक्काणं जसकित्ति-मोत्तूण सव्वणाम-पयडीणं णीचागोद-पंचंतराइयाणं च उक्कस्साणुभागसंक्रामयंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । साद-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-जसकित्ति-उच्चागोदाणं उक्कस्साणु-भागसंक्रामयंतरं णत्थि । एवमुक्कस्साणुभागसंक्रामयंतरं समत्तं ।

जहण्णाणुभागसंक्रामयंतरं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-लोहसंजलण-इत्थिवेद-छण्णोकसाय-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागसंक्राम-यंतरं जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा । तिण्णिसंजलण-पुरिसवेदाणमंतरं एवं चैव । णवरि उक्क० वस्सं सादिरेयं । एवं णवुंसयवेदस्स । णवरि उक्कस्समंतरं संखेज्जाणि वस्साणि । अणंताणुबंधीणं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । तिण्णमाउआण-मंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असंखेज्जा लोगा । जाओ णामपयडीओ सादियसंत-कम्माओ तासि णामपयडीणं जहण्णाणुभागसंक्रामयंतरं जह० एगसमओ, उक्क० असं०

आहारबन्धन, आहारसंघात और तीर्थकरके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । शेष अनुद्वेल्यमान नामप्रकृतियों और नीचगोत्रके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका काल सर्वकाल है । इस प्रकार कालप्ररूपणा समाप्त हुई ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— पांच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नौ नोकपाय और चार आयु कर्मोंके तथा यशकीर्तिको छोड़कर सब नामप्रकृतियों, नीचगोत्र और पांच अन्तरायके उत्कृष्ट अनुभाग संक्रामकोंका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र है । सातावेदनीय सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, यशकीर्ति और उच्चगोत्रके उत्कृष्ट अनुभाग संक्रामकोंका अन्तर नहीं होता । इस प्रकार उत्कृष्ट अनुभाग संक्रामकोंका अन्तरकाल समाप्त हुआ ।

जघन्य अनुभाग संक्रामकोंके अन्तरकालकी प्ररूपणा इस प्रकार है— पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्वलन लोभ, स्त्रीवेद, छह नोकषाय और पांच अन्तरायके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास मात्र है । तीन संज्वलन और पुरुषवेदका भी अन्तरकाल इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि इनका उक्त अन्तरकाल उत्कर्षसे साधिक एक वर्ष मात्र है । इसी प्रकार नपुंसक-वेदके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उत्कृष्ट अन्तरकाल संख्यात वर्ष मात्र है । अनन्तानुबन्धी कपायोंका वह अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र है । तीन आयु कर्मोंका वह अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र है । जो नामप्रकृतियां सादि सत्कर्मवाली हैं उन नामप्रकृतियोंके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र



लोगा । एवमुच्चागोदस्स वि । सेसाणं णामपयडीणं णीचागोद-तिरिक्खाउअ-मिच्छत्त-  
अट्ठकसाय-सादामाद-णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जहण्णाणुभागसंक्रामयाणं  
णत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

सण्णियासो । तं जहा—मदिआवरणस्स उक्कस्साणुभागसंक्रामगो सुदावरणस्स । तं  
तु छट्ठाणपदिदां । एवं जाणिदूण णेयव्वं ।

जहण्णसण्णियासो । तं जहा— मदिआवरणस्स जो जहण्णाणुभागसंक्रामगो  
सेसाणं चट्ठुणं णाणावरणीयाणं णियमा जहण्णाणुभागस्स संक्रामओ, दसणावरणस्स  
चउव्विहस्स णियमा जहण्णाणुभागसंक्रामगो, णिदा-पयलाणं णियमा असंक्रामओ,  
पंचणमंतराइयाणं णियमा जहण्णा, सेसाणं जेसिं संतकम्ममत्थि तेसिं णियमा अज-  
हण्णसंक्रामओ । एवं सण्णियासो समत्तो ।

एत्तो अप्पावहुगं दुविहं सत्थाणे परत्थाणे चेदि । चउसट्ठिवदियो जो दंडओ  
तेण पयदं । सो दुविहो उक्कस्सपदे जहण्णपदे चेदि । उक्कस्सेण जहा अणुभागवंधे  
भणिदो तहा उक्कस्सए अणुभागसंक्रमे<sup>१</sup> कायव्वो । णवरि सम्भामिच्छत्तादो सम्मत्ते

है । इसी प्रकार उच्चगोत्रकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । श्लेष नामप्रकृतियों, नीचगोत्र,  
तिर्यगायु, मिथ्यात्व, आठ कपाय, सातावेदनीय, असातावेदनीय, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला  
और स्त्यानगृद्धिके जघन्य अनुभाग संक्रामकोंका अन्तरकाल नहीं है । इस प्रकार अन्तरकालकी  
प्ररूपणा समाप्त हुई ।

संनिकर्षकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— मतिज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागका संक्रामक  
श्रुतज्ञानावरणके उत्कृष्ट अनुभागका संक्रामक होता है । वह पट्स्थानपतित होता है । इस  
प्रकार जानकर आगे भी ले जाना चाहिये ।

जघन्य अनुभाग संक्रमके संनिकर्षकी प्ररूपणा इस प्रकार है— जो मतिज्ञानावरणके  
जघन्य अनुभागका संक्रामक है वह नियमसे श्लेष चार ज्ञानावरण प्रकृतियोंके जघन्य अनु-  
भागका संक्रामक होता है, वह चार प्रकार दर्शनावरणके नियमसे जघन्य अनुभागका संक्रामक  
होता है, निद्रा और प्रचलाका नियमसे असंक्रामक होता है, पांच अन्तराय प्रकृतियोंके  
नियमसे जघन्य अनुभागका संक्रामक होता है, श्लेष प्रकृतियोंमें जिनका सत्त्व है उनके  
नियमसे अजघन्य अनुभागका संक्रामक होता है । इस प्रकार संनिकर्षकी प्ररूपणा  
समाप्त हुई ।

यहां स्वस्थान और परस्थानके भेदसे अल्पवहुत्व दो प्रकारका है । चौंसठ पदवाला  
जो अल्पवहुत्वदण्डक है वह यहां प्रकृत है । वह दो प्रकार है— उत्कृष्ट पद विषयक और  
जघन्य पद विषयक । उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा जैसे अनुभागवन्धके विषयमें उक्त अल्पवहुत्व-  
दण्डकका कथन किया गया है वैसे ही उत्कृष्ट अनुभागसंक्रमके विषयमें भी उसका कथन  
करना चाहिये । विशेष इतना है कि सम्यग्मिथ्यात्वकी अपेक्षा सम्यक्त्वमें 'अनन्तगुणहीन'

१ ताप्रतौ 'छट्ठाणं पदिदा' इति पाठः । २ प्रतिपु 'अणुभागसंक्रमो' इति पाठः ।

अणंतगुणहीणमिदि णिद्धावयाणि पदिदाणि कादव्वाणि । एदं वदिरित्तं उक्कस्सबंधादो संकमे उक्कस्से ।

जहण्णेण सच्चमंदाणुभागो<sup>१</sup> लोहसंजलणो । माया० अणंतगुणो । माणो अणंतगुणो । कोधो अणंतगुणो । पुरिस० अणंतगुणो । सम्मत्ते० अणंतगुणो । सम्मामिच्छत्ते अणंतगुणो । मणपञ्जव० दाणंतराइय० अणंतगुणो । ओहिणाणावरण० लाहंतराइय० अणंतगुणो । सुद० अचक्षुदं० भोगंतराइय० अणंतगुणो । चक्खु० अणंतगुणो । मदि० परिभोगंतराइय० अणंतगुणो । केवलणाण-केवलदंसणावरण-वीरियंतराइय० अणंतगुणो । पयला० अणंतगुणो । णिद्धा० अणंतगुणो । हस्स० अणंतगुणो । रदि० अणंतगुणो । दुगुंछा० अणंतगुणो । भय० अणंतगुणो । सोग० अणंतगुणो । अरदि० अणंतगुणो । इत्थि० अणंतगुणो । णसुंस० अणंतगुणो । अणंताणुदंधिमाणे० अणंतगुणो । कोथे० विसेसाहियो । माया० विसे० । लोहे विसे० । वेउव्वियसरीर० अणंतगुणो । तिरिक्खाउअ० अणंतगुणो । मणुस्साउ० अणंतगुणो । णिरयगई० अणंतगुणो । मणुसगई० अणंतगुणो । देवगई० अणंतगुणो । उच्चागोद० अणंतगुणो । णिरयाउ० अणंतगुणो । देवाउ० अणंतगुणो । ओरालिय० अणंतगुणो । तेजा० अणंतगुणो । कम्मइय० अणंत-

इस प्रकार निष्ठापक पतितोंको करना चाहिये, अर्थात् सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्त्व इन दो अवन्ध प्रकृतियोंके भी अल्पबहुत्वको यहां अनन्तगुणहीनक्रमसे कहना चाहिये । यह उत्कृष्ट बन्धकी अपेक्षा उत्कृष्ट संक्रममें भेद है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा संज्वलन लोभ सर्वमन्द अनुभागवाला है । संज्वलन माया अनन्तगुणी है । संज्वलन मान अनन्तगुणा है । संज्वलन क्रोध अनन्तगुणा है । पुरुषवेदमें वह अनन्तगुणा है । सम्यक्त्वमें अनन्तगुणा है । सम्यग्मिथ्यात्वमें अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरण और दानान्तरायमें अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण और लाभान्तरायमें अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण, अचक्षुदर्शनावरण और भोगान्तरायमें अनन्तगुणा है । चक्षुदर्शनावरणमें अनन्तगुणा है । मतिज्ञानावरण और परिभोगान्तरायमें अनन्तगुणा है । केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण और वीर्यान्तरायमें अनन्तगुणा है । प्रचलामें अनन्तगुणा है । निद्रामें अनन्तगुणा है । हास्यमें अनन्तगुणा है । रतिमें अनन्तगुणा है । जुगुप्सामें अनन्तगुणा है । भयमें अनन्तगुणा है । शोकमें अनन्तगुणा है । अरतिमें अनन्तगुणा है । स्त्रीवेदमें अनन्तगुणा है । नपुंसकवेदमें अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभमें विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरमें अनन्तगुणा है । तिर्यचआयुमें अनन्तगुणा है । मनुष्यायुमें अनन्तगुणा है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । मनुष्यगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें अनन्तगुणा है । उच्चगोत्रमें अनन्तगुणा है । नारकायुमें अनन्तगुणा है । देवायुमें अनन्तगुणा है । औदारिकशरीरमें अनन्तगुणा है । तैजसशरीरमें अनन्तगुणा है । कर्मण-

१ ताप्रतौ 'उक्कस्से० जहण्णेण । सच्चमंदाणुभागो' इति पाठः ।

गुणो । तिरिक्खगई० अणंतगुणो । णीचागोद० अणंतगुणो । अजसकित्ति० अणंतगुणो । पयलापयला० अणंतगुणो । णिदाणिदा० अणंतगुणो । थीणगिद्धि० अणंतगुणो । अपच्चक्खाणमाणे० अणंतगुणो । कोधे० विसेसाहिओ । माया० विसेसा० । लोभे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे अणंतगुणो । कोधे विसेसा० । मायाए० विसे० । लोभे० विसे० । असाद० अणंतगुणो । जसकित्ति० अणंतगुणो । साद० अणंतगुणो । मिच्छत्त० अणंतगुणो । आहार० अणंतगुणो । एवमोघो समत्तो ।

णिरयगईए सच्चमंदाणुभागं सम्मत्तं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणो । अणंताणुबंधिमाणे० अणंतगुणो । कोधे० विसे० । माया० विसे० । लोभे० विसे० । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । मणुस्साउ० अणंतगुणो । णिरयाउ० अणंतगुणो । ओरालिय० अणंतगुणो । वेउ० अणंतगुणो । तेजा० अणंतगुणो । कम्मइय० अणंतगुणो । हस्स० अणंतगुणो । रदि० अणंतगुणो । णिरयगई० अणंतगुणो । तिरिक्खगई० अणंतगुणो । मणुमगई० अणंतगुणो । देवगई० अणंतगुणो । णीचागोद० अणंतगुणो । अजसगित्ति० अणंतगुणो । पयला० अणंतगुणो । णिदा० अणंतगुणो । पयलापयला० अणंतगुणो । णिदाणिदा० अणंतगुणो । दुगुंछा० अणंतगुणो । भय० अणंतगुणो । सोग० अणंतगुणो । अरदि० अणंतगुणो । पुरिसवेद०

शरीरमें अनन्तगुणा है । तिर्यगतिमें अनन्तगुणा है । नीचगोत्रमें अनन्तगुणा है । अयशकीर्तिमें अनन्तगुणा है । प्रचलाप्रचलामें अनन्तगुणा है । निद्रानिद्रामें अनन्तगुणा है । स्त्यानगृद्धिमें अनन्तगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें अनन्तगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें अनन्तगुणा है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें अनन्तगुणा है । यशकीर्तिमें अनन्तगुणा है । सातावेदनीयमें अनन्तगुणा है । मिथ्यात्वमें अनन्तगुणा है । आहारशरीरमें अनन्तगुणा है । इस प्रकार ओघ अल्पवहुत्व समाप्त हुआ है ।

नरकगतिमें सबसे मन्द अनुभागवाली सम्यक्त्व प्रकृति है । उससे सम्यग्मिध्यात्वमें वह अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभमें विशेष अधिक है । तिर्यगायुमें अनन्तगुणा है । मनुष्यायुमें अनन्तगुणा है । नारकायुमें अनन्तगुणा है । औदारिकशरीरमें अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें अनन्तगुणा है । तैजसशरीरमें अनन्तगुणा है । कर्मणशरीरमें अनन्तगुणा है । हास्यमें अनन्तगुणा है । रतिमें अनन्तगुणा है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । तिर्यगतिमें अनन्तगुणा है । मनुष्यगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें अनन्तगुणा है । नीचगोत्रमें अनन्तगुणा है । अयशकीर्तिमें अनन्तगुणा है । प्रचलामें अनन्तगुणा है । निद्रामें अनन्तगुणा है । प्रचलाप्रचलामें अनन्तगुणा है । निद्रानिद्रामें अनन्तगुणा है । जुगुप्सामें अनन्तगुणा है । भयमें अनन्तगुणा है । शोकमें अनन्तगुणा है । अरतिमें

अणंतगुणो । इत्थिवेद० अणंतगुणो । णवुंसय० अणंतगुणो । मणपञ्ज० अणंतगुणो ।  
धीणगिद्धि० अणंतगुणो । दाणंतराइय० अणंतगुणो । ओहिणाण० ओहिदंसण०  
लाहंतराइय० अणंतगुणो । सुदणाण० अचक्खुदंसण० भोगंतराइय० अणंतगुणो ।  
चक्खु० अणंतगुणो । आभिणिवोहिय० परिभोगंतराइय० अणंतगुणो । अपच्चक्खाणमाणे०  
अणंतगुणो । कोहे० विसेसाहियो । माया० विसे० । लोभे० विसे० । पच्चक्खाण-  
माणे० अणंतगुणो । कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोभे० विसे० । संजलणमाणे०  
अणंतगुणो । कोहे० विसे० । माया० विसे० । लोभे० विसे० । केवलणाण० केवलदंसण०  
असाद० वीरियं० अणंतगुणो । उच्चागोद० अणंतगुणो । अजसकित्ति० अणंतगुणो ।  
साद० अणंतगुणो । मिच्छत्त० अणंतगुणो । आहारसरीर० अणंतगुणो । एवं गिरयगईए  
जहण्णओ अणुभागसंकमदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगईए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणो । अणंताणु-  
वंधिमाणे अणंतगुणो । कोधे० विसे० । माया० विसे० । लोभे० विसे० । वेउन्विय-  
सरीर० अणंतगुणो । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । मणुस्साउ० अणंतगुणो । गिरयगई०  
अणंतगुणो । मणुसगई० अणंतगुणो । देवगई० अणंतगुणो । उच्चागोद० अणंतगुणो ।

अनन्तगुणा है । पुरुषवेदमें अनन्तगुणा । स्त्रीवेदमें अनन्तगुणा है । नपुंसकवेदमें अनन्तगुणा  
है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें अनन्तगुणा है । स्त्यानगृद्धिमें अनन्तगुणा है । दानान्तरायमें  
अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण और लाभान्तरायमें अनन्तगुणा है ।  
श्रुतज्ञानावरण, अचक्षुदर्शनावरण और भांगान्तरायमें अनन्तगुणा है । चक्षुदर्शनावरणमें  
अनन्तगुणा है । आभिनिशोधिकज्ञानावरण और परिभोगान्तरायमें अनन्तगुणा है । अप्रत्या-  
ख्यानावरण मानमें अनन्तगुणा है । अप्रत्याख्यानावरणं क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्या-  
ख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है ।  
प्रत्याख्यानावरण मानमें अनन्तगुणा है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है ।  
प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है ।  
संज्वलन मानमें अनन्तगुणा है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष  
अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, असाता-  
वेदनीय और वीर्यान्तरायमें अनन्तगुणा है । उच्चगोत्रमें अनन्तगुणा है । अयशकीर्तिमें अनन्त-  
गुणा है । सातावेदनीयमें अनन्तगुणा है । मिथ्यात्वमें अनन्तगुणा है । आहारशरीरमें अनन्त-  
गुणा है । इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य अनुभागसंकमदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यचगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे मन्द अनुभागवाली है । उससे सम्यग्मिथ्यात्वमें  
वह अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष  
अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभमें विशेष अधिक  
है । वैक्रियिकशरीरमें अनन्तगुणा है । त्रियगायुमें अनन्तगुणा है । मनुष्यायुमें अनन्तगुणा  
है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । मनुष्यगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें अनन्तगुणा है ।

१ अ-क्काप्रत्योः 'धीणगिद्धि० दाणंतराइय०' इति पाठः ।

गिरयाउ० अणंतगुणो । देवाउ० अणंतगुणो । ओरालिय० अणंतगुणो । तेजा० अणंतगुणो । कम्मइय० अणंतगुणो । हस्स० अणंतगुणो । रदि० अणंतगुणो । तिरिक्खगई० अणंतगुणो । णीचागोद० अणंतगुणो । अजसगित्ति० अणंतगुणो । पयला० अणंतगुणो । णिद्दा० अणंतगुणो । पयलापयला० अणंतगुणो । णिद्दा-  
णिद्दा अणंतगुणो । दुगुंछा० अणंतगुणो । भय० अणंतगुणो । सोग० अणंतगुणो । अरदि० अणंतगुणो । पुरिसवेद० अणंतगुणो । इत्थिवेद० अणंतगुणो । णवुंस० अणंत-  
गुणो । मणपञ्जणाण० अणंतगुणो । थीणगिद्धि० अणंतगुणो । दाणंतराइयं० अणंतगुणो । ओहिणाण० ओहिदंसण० लाहंतराइय० अणंतगुणो । सुदणाण० भोगंतराइय० अणंत-  
गुणो । चक्खु० अणंतगुणो । मदिणाण० परिभोगंतराइय० अणंतगुणो । अपच्चक्खाण-  
माणे० अणंतगुणो । क्रोधे० विसे० । माया० विसे० । लोभे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे०  
अणंतगुणो । क्रोधे० विसे० । माया० विसे० । लोभे० विसे० । संजलणमाणे० अणंत-  
गुणो । क्रोधे० विसे० । माया० विसे० । लोभे० विसे० । केवलणाण० केवलदंसण०  
असाद० विरियंतराइय० अणंतगुणो । जसगित्ति० अणंतगुणो । साद० अणंतगुणो ।

उचगोत्रमें अनन्तगुणा है । नारकायुमें अनन्तगुणा है । देवायुमें अनन्तगुणा है । औदा-  
रिकशरीरमें अनन्तगुणा है । तैजसशरीरमें अनन्तगुणा है । कर्मणशरीरमें अनन्तगुणा है ।  
हास्यमें अनन्तगुणा है । रतिमें अनन्तगुणा है । तिर्यचगतिमें अनन्तगुणा है । नीचगोत्रमें  
अनन्तगुणा है । अयशकीर्तिमें अनन्तगुणा है । प्रचलामें अनन्तगुणा है । निद्रामें अनन्तगुणा  
है । प्रचलाप्रचलामें अनन्तगुणा है । निद्रानिद्रामें अनन्तगुणा है । जुगुप्सामें अनन्तगुणा है ।  
भयमें अनन्तगुणा है । शोकमें अनन्तगुणा है । अरतिमें अनन्तगुणा है । पुरुषवेदमें अनन्त-  
गुणा है । स्त्रीवेदमें अनन्तगुणा है । नपुंसकवेदमें अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें  
अनन्तगुणा है । स्त्यानगृद्धिमें अनन्तगुणा है । दानान्तरायमें अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण,  
अवधिदर्शनावरण और लाभान्तरायमें अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण और भोगन्तरायमें  
अनन्तगुणा है । चक्षुदर्शनावरणमें अनन्तगुणा है । मतिज्ञानावरण और परिभोगान्तरायमें  
अनन्तगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें अनन्तगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष  
अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष  
अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें अनन्तगुणा है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक  
है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है ।  
संज्वलन मानमें अनन्तगुणा है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष  
अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, असाता-  
वेदनीय और वीर्यान्तरायमें अनन्तगुणा है । यशकीर्तिमें अनन्तगुणा है । सातावेदनीयमें

१ अ-काप्रत्योः 'णीचागोद० अजसगित्ति०' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'मणपञ्जणाण० थीणगिद्धि०  
दाणंतराइय०' इति पाठः ।

मिच्छत्त० अणंतगुणो । एवं तिरिक्खगईए जहण्णाणुभागसंकमदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खजोणिणीसु सच्चाणि पदाणि जहा तिरिक्खगदीए कदाणि तहा कायच्चाणि । मणुसेसु ओघे अजहण्णाणुभागसंकमदंडयादो ताव णाणत्तं णत्थि जाव णिरयभइ त्ति । तदो णिरियगइणामादो देवगदि० अणंतगुणो । णिरयाउ० अणंतगुणो । देवाउ० अणंतगुणो । मणुसगई० अणंतगुणो । उच्चागोद० अणंतगुणो । ओरालिय० अणंतगुणो । एत्तो अवसेसाणि पदाणि जहा ओघजहण्णदंडए कदाणि तहा कायच्चाणि । एवं मणुस्सेसु जहण्णाणुभागसंकमदंडओ समत्तो ।

जहा मणुस्सेसु तहा मणुसिणीसु । जहा णेरइएसु तहा देवेषु देवीसु च । जहा तिरिक्खगईए तहा वेइंदिय-तेइंदिय-चतुरिंदिएसु । केण कारणेण जहा तिरिक्खगईए तहा विगलिंदिएसु त्ति भणिदं ? देवगइ-मणुसगइ-णिरयगइ-वेउव्वियसरीरचउक्क-उच्चागोदाणं संजुत्तपढमसमयजहण्णाणुभागसंतकम्मस्स विगलिंदिएसुवलंभादो, अणंताणु-वंधिणो पुव्वं विसंजोइदसासणसम्माइड्डिस्स दुसमयसंजुत्तस्स तस्स जहण्णाणुभागस्स विगलिंदिएसुवलंभादो च । तेण जहा तिरिक्खगदीए तहा विगलिंदिएसु त्ति सुहासियं ।

अनन्तगुणा है । मिथ्यात्वमें अनन्तगुणा है । इस प्रकार तिर्यचगतिमें जघन्य अनुभागसंकम-दण्डक समाप्त हुआ ।

जिस प्रकारसे तिर्यचगतिमें सब पदोंकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकारसे तिर्यच योनि-मतियोंमें भी उक्त सब पदोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । मनुष्योंमें ओघनिरूपित अजघन्य-अनुभागसंकमदण्डककी अपेक्षा नरकगति नामकर्म तक कोई विशेषता नहीं है । तत्पश्चात् नरकगति नामकर्मकी अपेक्षा देवगति नामकर्ममें वह अनन्तगुणा । उससे नारकायुमें अनन्तगुणा है । देवायुमें अनन्तगुणा है । मनुष्यगति नामकर्ममें अनन्तगुणा है । उच्चगोत्रमें अनन्तगुणा है । औदारिकशरीरमें अनन्तगुणा है । यहां शेष पदोंकी प्ररूपणा जैसे ओघ जघन्य दण्डकमें की गयी है वैसे करना चाहिये । इस प्रकार मनुष्योंमें जघन्य अनुभागसंकम-दण्डक समाप्त हुआ ।

उक्त प्ररूपणा जिस प्रकार मनुष्योंमें की गयी है उसी प्रकार मनुष्यनियोंमें भी करना चाहिये । उक्त दण्डककी प्ररूपणा जिस प्रकार नारकियोंमें की गयी है उसी प्रकार देवोंमें और देवियोंमें भी करना चाहिये । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंमें तिर्यचगतिके समान प्ररूपणा करना चाहिये ।

शंका— विकलेन्द्रिय जीवोंकी वह प्ररूपणा तिर्यचगतिके समान किस कारणसे बतलायी है ?  
समाधान— इसका कारण यह है कि देवगति, मनुष्यगति, नरकगति, वैक्रियिकशरीर-चतुष्क और उच्चगोत्रका संयुक्त होनेके प्रथम समयवर्ती जघन्य अनुभागसत्कर्म विकलेन्द्रिय जीवोंमें पाया जाता है, तथा सासादनसम्यग्दृष्टिमें पूर्व विसंयोजित अनन्तानुबन्धीका संयुक्त होनेके द्वितीय समयवर्ती वह जघन्य अनुभागसत्कर्म विकलेन्द्रिय जीवोंमें पाया जाता है । इस कारण विकलेन्द्रियोंकी जो वह प्ररूपणा तिर्यचगतिके समान कही है, यह ठीक ही कहा गया है ।

एत्तो भुजगारसंकमे अट्टपदं । तं जहा—जे एण्हि अणुभागस्स फट्ठया संकामिज्जंति तै जइ अणंतरविदिकंते समए संकामिदफट्ठएहिंतो बहुआ होंति तो एसो भुजगारसंकमो । अह जइ तत्तो थोवो होंति तो एसो अप्पदरसंकमो । जदि तत्तियो तत्तियो चैव दोसु वि भसएसु फट्ठयाणं संकमो होदि तो एसो अवट्ठियसंकमो । एदेण अट्टपदेण सामित्तं— मदि-आवरणस्स भुजगारसंकमो कस्स ? जो संतकम्मस्स हेट्ठदो तेण समं वा वंधतो अच्छिदो सो तदो उवरिमाणुभागं वंधिय वंधावलियादिकंतं संकममाणस्स भुजगारसंकमो । अप्पदरसंकमो अणुभागखंडयघादेण विणा णत्थि । जेण अणुभागखंडयं उक्कीरिज्जमाण-सुक्किणं सो से काले अप्पदरसंकामओ । अवट्ठिदसंकामओ को होदि ? भुजगार-अप्पदर-अवत्तव्वदिरित्तो । चत्तारिणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्ताणं मदि-आवरणभंगो । एवं सोलसकसाय-णवणोकसायाणं । णवरि एत्थ अवत्तव्वसंकामओ वि अत्थि । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं अत्थि अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वसंकमो, भुजगार-संकमो णत्थि । चट्ठणमाउआणं सादिय-संतकम्मियाणं णामपयडीणं उच्चागोदाणं च णाणावरणभंगो । णवरि अवत्तव्वसंकमो वि अत्थि । तित्थयरणामाए अत्थि भुजगार-

यहां भुजाकार संक्रममें अर्थपदकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— अनुभागके जो स्पर्धक इस समय संक्रमणको प्राप्त कराये जाते हैं वे यदि अनन्तर वीते हुए समयमें संक्रामित अनुभाग-स्पर्धकोंकी अपेक्षा बहुत हैं तो यह भुजाकार संक्रम कहलाता है । परन्तु यदि इस समयमें संक्रमणको प्राप्त कराये जानेवाले वे ही अनुभागस्पर्धक अनन्तर वीते हुए समयमें संक्रामित स्पर्धकोंकी अपेक्षा स्तोक हैं तो यह अल्पतर संक्रम कहा जाता है । यदि दोनों ही समयोंमें उतना उतना मात्र ही अनुभागस्पर्धकोंका संक्रम होता है तो यह अवस्थित संक्रम कहलाता है । [ पूर्वमें असंक्रामक होकर संक्रम करना, इसे अवक्तव्य संक्रम कहा जाता है । ] इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्वका कथन करते हैं— मतिज्ञानावरणका भुजाकार संक्रम किसके होता है ? जो जीव सत्कर्मसे कम अथवा उसके वरावर ही अनुभागको बांधता हुआ स्थित है वह उससे अधिक अनुभागको बांधकर व वन्धावलीको विताकर जब उसको संक्रान्त कर रहा हो तब उसके मति-ज्ञानावरणका भुजाकार संक्रम होता है । अल्पतर संक्रम अनुभागकाण्डकघातके बिना नहीं होता । जो उत्कीर्ण किये जानेवाले अनुभागकाण्डकको उत्कीर्ण कर चुका है वह अनन्तर समयमें उसका अल्पतरसंक्रामक होता है । अस्थितसंक्रामक कौन होता है ? भुजाकार, अल्पतर और अवक्तव्य संक्रामकसे भिन्न जीव अवस्थितसंक्रामक होता है । शेष चार ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, और मिथ्यात्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । इसी प्रकार सोलह कपाय और नौ नोकषायोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि यहां अवक्तव्य संक्रामक भी होता है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्य संक्रम होता है; उनका भुजाकार संक्रम नहीं होता । चार आयु कर्मों, सादिसत्कर्मिक नामप्रकृतियों और उच्चगोत्रकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि इनका

१ अप्रतौ 'तेजइय अणंतर' इति पाठः । २ अप्रतौ 'थोवो' इति पाठः ।

अवद्विय-अवत्तव्वसंकमो, अप्पदरसंकामगो णत्थि । अणादिसंतकम्मियाणं णामपयडीणं णीचागोद-पंचंतराइयाणं णाणावरणभंगो ।

एयजीवेण कालो— णाणावरणस्स भुजगारसंकामओ जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अप्पदरसंकामयाणं कालो जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अवद्वियसंकामयाणं जह० एयसमओ, उक्क० वेद्धावद्विसागरोवमाणि सादिरेयाणि । णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय- णवणोकसाय - सव्वणामपयडीणं उच्च-णीचागोद-पंच-तराइयाणं च णाणावरणभंगो । णवरि आहारचउक्क० अवद्वियस्स पलिदो० असंखे० भागो । एवं सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं । णवरि अवद्विदस्स जह० अंतोमुहुत्तं । तित्थयर-णामाए भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवद्विय० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । चटुण्णमाउआणं भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अप्पदर० जहण्णुक्कस्सेण एगसमओ । अवद्विय० जह० एगसमओ । उक्क० देव-णिरयाउआणं तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि, मणुस-तिरिक्खाउआणं तिण्णिपलिदो० सादिरेयाणि ।

कालादो अंतरं शेयव्वं । णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च साहेदूण णेयव्वं ।

अवक्तव्यसंक्रम भी होता है । तीर्थकर नामकर्मका भुजाकार, अवस्थित और अवक्तव्य संक्रम होता है; किन्तु उसका अल्पतर संक्रामक नहीं होता । अनादिसकर्मिक नामप्रकृतियों, नीचगोत्र और पांच अन्तरायकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है— ज्ञानावरणके भुजाकारसंक्रामकका काल जघन्यसे एक समय व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्तं मात्र है । अल्पतरसंक्रामकोंका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । अवस्थितसंक्रामकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है । नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, सब नामप्रकृतियों, उच्चगोत्र, नीचगोत्र और पांच अन्तरायकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि आहारचतुष्कके अवस्थितसंक्रामकका काल पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । इसी प्रकार सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके भी सम्बन्धमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनके अवस्थितसंक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्तं मात्र है । तीर्थकर नामकर्मके भुजाकारसंक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्तं मात्र है । उसके अवस्थितसंक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । चार आयु कर्मोंके भुजाकारसंक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्तं मात्र है । इनके अल्पतरसंक्रामकका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । अवस्थितसंक्रामकका काल जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह देवायु और नारकायुका साधिक तेतीस सागरोपम तथा मनुष्य व तिर्यच आयुका साधिक तीन पल्योपम मात्र है ।

कालके आश्रयसे अन्तरको भी ले जाना चाहिये । नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरको भी सिद्ध करके ले जाना चाहिये ।

१ अत्रतौ 'देवणेरइयाणं आउअं' इति पाठः ।



एत्तो अप्पावहुअं— णाणावरणस्स अप्पदर० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्टिय० असंखे० गुणा । एवं णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसायाणं । णवरि सोलसक० - णवणोकसायाणं अवत्तव्व० थोवा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्टिय० संखे० गुणा । सम्मत्त-सम्मा मिच्छत्ताणं अप्पदर० थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अवट्टिय० असंखे० गुणा ।

णिरयाउअस्स अप्पदर० थोवा । अवत्तव्व० संखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्टिय० असंखे० गुणा । देवाउअस्स णिरयाउअभंगो । मणुसाउअस्स अप्पदर० थोवा । अवत्तव्व० विसेसा० । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्टिय० संखे० गुणा । तिरिक्खाउअस्स अवत्तव्व० थोवा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्टिय० संखे० गुणा ।

णिरयगईए अवत्तव्व० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । अवट्टिय० असंखे० गुणा । देवगइ-वेउच्चियसरीराणं णिरयगइभंगो । मणुगगइ० अवत्तव्व० थोवा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवट्टिद० संखे० गुणा ।

अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है—ज्ञानावरणके अल्पतर अनुभाग संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थित अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय और नौ नोकषायोंके भी प्रकृत अल्पवहुत्वका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि सोलह कषाय और नौ नोकषायके अवक्तव्य अनुभाग संक्रामक स्तोक हैं । अल्पतर अनुभाग संक्रामक अतन्तगुणे हैं । भुजाकार अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थित अनुभाग संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके अल्पतर अनुभाग संक्रामक स्तोक हैं । अवक्तव्य अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थित अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं ।

नारकायुके अल्पतर अनुभाग संक्रामक स्तोक हैं । अवक्तव्य अनुभाग संक्रामक संख्यात-गुणे हैं । भुजाकार अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थित अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके इस अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा नारकायुके समान है । मनुष्यायुके अल्पतर अनुभाग संक्रामक स्तोक हैं । अवक्तव्य अनुभाग संक्रामक विशेष अधिक हैं । भुजाकार अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थित अनुभाग संक्रामक संख्यातगुणे हैं । तिर्यगायुके अवक्तव्य अनुभाग संक्रामक स्तोक हैं । अल्पतर अनुभाग संक्रामक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थित अनुभाग संक्रामक संख्यातगुणे हैं ।

नरकगतिके अवक्तव्य अनुभाग संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार अनुभाग संक्रामक असंख्यात-गुणे हैं । अल्पतर अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थित अनुभाग संक्रामक असं-ख्यातगुणे हैं । देवगति और वैक्रियिकसरीरकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । मनुष्यगतिके अवक्तव्य अनुभाग संक्रामक स्तोक हैं । अल्पतर अनुभाग संक्रामक अनंतगुणे हैं । भुजाकार अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थित अनुभाग संक्रामक संख्यातगुणे हैं । उच्चगोत्रकी

उच्चागोदस्स मणुमगइभंगो । अणादियसंतकम्मियाणं णामपयडीणं णीचागोद-पंच-  
तराइयाणं च णाणावरणभंगो । आहारशरीरस्स अवत्तव्व० थोवा । भुजगार० संखे०  
गुणा । अप्पदर० संखे० गुणा । अवट्ठिय० असंखे० गुणा । तित्थयरस्स आहारभंगो ।  
एवमणुभागभुजगारसंक्रमो समत्तो ।

एत्तो पदणिक्खेवो— णाणावरणस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो तप्पाओग्गेण  
जहण्णाणुभागसंतकम्म्येण उक्कस्ससंक्किलेसं गदो<sup>१</sup> तदो उक्कस्सओ अणुभागो पवद्धो  
आवलियादिकंतस्स<sup>२</sup> उक्कस्सिया अणुभागसंक्रमवड्ढी अवट्ठायं च । उक्कस्सिया हाणी  
कस्स ? जो उक्कस्सादो अणुभागसंतकम्मादो उक्कस्समणुभागघादं करेदि तस्स अणु-  
भागखंडए घादिदे<sup>३</sup> सेसाणुभागसंतकम्मं से काले संकामंतस्स उक्कस्सिया हाणी अणु-  
भागसंक्रमस्स । एवं सव्वेसिमप्पसत्थाणं कम्ममाणं । सादस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ?  
समयाहियावलियअकसायस्स खवयस्स । उक्क० हाणी कस्स ? जो उवसामयचरिम-  
समयसुहुमसांपराइएण वद्धमादाणुभागं मिच्छत्तं गंतूण उक्कस्सएण अणुभागखंडएण  
घादिय-सेसं संकामेमाणओ<sup>४</sup> तस्स उक्कस्सिया हाणी । उक्कस्समवट्ठायं वड्ढीए ।  
जसक्कित्ति-उच्चागोदाणं सादभंगो ।

प्ररूपणा, मनुष्यगतिके समान है । अनादिसत्कर्मिक नामप्रकृतियों, नीच गोत्र और पांच अन्त-  
रायोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । आहारशरीरके अवक्तव्य अनुभाग संक्रामक स्तोक  
हैं । भुजाकार अनुभाग संक्रामक संख्यातगुणे हैं । अल्पतर अनुभाग संक्रामक संख्यातगुणे हैं ।  
अवस्थित अनुभाग संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । तीर्थंकर नामकर्मकी प्ररूपणा आहारशरीरके  
समान है । इस प्रकार अनुभागभुजाकारसंक्रम समान हुआ ।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणा करते हैं— ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागसंक्रमवृद्धि किसके होती  
है ? जो तत्प्रायोग्य जघन्य अनुभागसत्कर्मके साथ उत्कृष्ट संकलेशको प्राप्त हुआ है और तत्पश्चात्  
जिसने उत्कृष्ट अनुभागका बन्ध किया है उसके आवली मात्र कालके वीतनेपर उसकी उत्कृष्ट  
अनुभागसंक्रमवृद्धि और अवस्थान भी होता है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट  
अनुभागसत्कर्मसे उत्कृष्ट अनुभागका घात करता है उसके अनुभागकाण्डकका घात कर चुकने-  
पर अनन्तर कालमें शेष अनुभागसत्कर्मका संक्रम करते समय उत्कृष्ट अनुभागसंक्रमकी हानि  
होती है । इस प्रकार सब अप्रशस्त कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । सातावेदनीयकी उत्कृष्ट  
अनुभागसंक्रमवृद्धि किसके होती है ? वह एक समय अधिक आवली मात्र कालवर्ती अकपाय  
क्षपकके होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो चरम समयवर्ती सूक्ष्म-  
साम्परायिक उपशामकके द्वारा बांधे गये सातावेदनीयके अनुभागको मिथ्यात्वको प्राप्त हो उत्कृष्ट  
अनुभागकाण्डक द्वारा घातकर शेष अनुभागका संक्रम कर रहा है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि  
होती है । उसका उत्कृष्ट अवस्थान वृद्धिमें होता है । यशकीर्ति और उच्चगोत्रकी प्ररूपणा साता-  
वेदनीयके समान है ।

१ अप्रती 'संक्किलेसादो' इति पाठः । २ ताप्रती 'पवद्धो [ तस्स- ] आवलियादिकंतस्स' इति पाठः ।

३ अप्रती 'घादे', ताप्रती 'घादेदि' इति पाठः । ४ अप्रती 'से संकामेमाणओ' इति पाठः ।

एतथ अदृपदं— सादस्स उक्कस्सेण अणुभागघादं मिच्छाइट्ठी मज्झिमपरिणामो चेव कुणदि— सुविसुद्धो ण हणदि, अइसंकिलिद्धो वि ण हणदि । कुदो ? साभावियादो । एवं सव्वेसिं पसत्थकम्ममाणं । अभवसिद्धियपाओग्गउक्कस्ससादाणुभागस्स अणंते भागे मज्झिमपरिणामेहि मिच्छाइट्ठी हणदि । जेत्तियमेत्तफद्दयाणि अभवसिद्धियपाओग्ग-उक्कस्साणुभागादो मज्झिमपरिणामेहि घादेदि सुहुमसांपराइएण णिव्वत्तिदउक्कस्साणु-भागं पि घादेमाणो तत्तियमेत्ताणि चेव फद्दयाणि घादेदि । एदेण कारणेण भव-सिद्धिएण वा अभवमिद्धिएण वा णिव्वत्तिदउक्कस्साणुभागे अणुभागखंडएण मिच्छा-इट्ठिणा मज्झिमपरिणामेण घादिदे<sup>१</sup> अणुभागसंक्रमस्स उक्क० हाणी होदि । एवं सव्वेसिं पसत्थकम्ममाणं । एवमुक्कस्ससामित्तं समत्तं ।

सदिआवरणस्स जहणिया अणुभागसंक्रमवड्ढी कस्स ? जो सुहुमेइंदियो हद-समुत्पत्तियक्रमेण कदजहणणाणुभागसंक्रमो अप्पणो जहणसंतकम्मादो पन्नखेवुत्तरं वंधिय आवलियादिकंतं संकामेदि तस्स जहणिया वड्ढी । जह० हाणी कस्स ? समयाहियावलियचरिससमयल्लुदुमत्थस्स । जहणमवट्ठाणं जहणवड्ढीए दाद्वं । एवं चउणाणावरण-चउदंसणावरणाणं पि वत्तव्वं । णिहा-पयलाणं पि मदिणाणावरणभंगो ।

यहां अर्थपद— उत्कर्षसे सातावेदनीयके अनुभागघातको मध्यम परिणामवाला मिथ्या-दृष्टि ही करता है, उसका घात न अतिशय विशुद्ध जीव ही करता है और न अतिशय संक्लिष्ट भी । इसका कारण स्वभाव ही है । इस प्रकार सब प्रशस्त कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । अभव्य योग्य सातावेदनीयके उत्कृष्ट अनुभागके अनन्त बहुभागको मिथ्यादृष्टि जीव मध्यम परिणामोंके द्वारा घातता है । अभव्य योग्य उत्कृष्ट अनुभागमेंसे जितने मात्र स्पर्धकोंको वह मध्यम परिणामोंके द्वारा घातता है, सूक्ष्मसाम्परायिक द्वारा रचे गये उत्कृष्ट अनुभागका भी घात करनेवाला जीव उतने मात्र ही स्पर्धकोंको घातता है । इस कारण भव्य अथवा अभव्यके द्वारा रचित उत्कृष्ट अनुभागका मध्यम परिणाम युक्त मिथ्यादृष्टिके द्वारा अनुभागकाण्डक स्वरूपसे घात कर चुकनेपर अनुभागसंक्रमकी उत्कृष्ट हानि होती है । इसी प्रकार सब प्रशस्त कर्मोंके सम्बन्धमें कथन करना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

मतिज्ञानावरणकी जघन्य अनुभागसंक्रमवृद्धि किसके होती है ? हतसमुत्पत्तिक्रमसे जघन्य अनुभागसत्कर्मको कर चुकनेवाला जो सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव अपने जघन्य सत्कर्मकी अपेक्षा प्रक्षेप अधिक बांधकर आवली अतिक्रान्त उसका संक्रम करता है उसके मतिज्ञानावरणकी जघन्य अनुभागसंक्रमवृद्धि होती है । उसकी जघन्य हानि किसके होती है ? वह जिसके चरम समयवर्ती छद्मस्थ होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष रहा है उसके होती है । जघन्य अवस्थान जघन्य वृद्धिमें देना चाहिये । इसी प्रकार चार ज्ञानावरण और चार दर्शनावरणके भी कहना चाहिये । निद्रा और प्रचलाकी भी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके

१ ताप्रतौ 'कम्मणं अभव-' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'घादेदि' इति पाठः ।

णवरि जहणिया हाणी जत्थ जहणवृद्धिसंकमो तत्थ वत्तव्वो ।

पंचणमंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं जह० अणुभागवृद्धी कस्स ? सुहुमेइंदियस्स हदममुत्पत्तिक्रमेण कदजहणणाणुभागसंत-कम्मस्स पक्खेवुत्तरं वंधिय आवलियादीदं संकामंतस्स । तं चेव वड्ढिददाणुभागं अंतो-मुहुत्तेण घादिय संकामंतस्स जह० हाणी । एगदरत्थावट्टाणं । सम्मत्त० जहणिया हाणी कस्स ? समयाहियावलियचरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स । जहणवृद्धी णत्थि । जहणमवट्टाणं कस्स ? चरिमाणुभागखंडयविदियफालीए वट्टमाणस्स । सम्मामिच्छत्तस्स जहणिया हाणी कस्स ? चरिमसमयअणुभागखंडयस्स पढमसमए वट्टमाणस्स जह० हाणी । तस्सेव से काले जहणमवट्टाणं । जहणवृद्धी णत्थि ।

अणंताणुबंधि० जहणिया वृद्धी कस्स ? अणंताणुबंधिचउक्कं विसंजोजिय दुसम-याहियावलियसंजुत्तस्स । हाणी अवट्टाणं च कस्स ? अंतोमुहुत्तसंजुत्तस्स । तं जहा— अणंताणुबंधिणो विसंजोजिय संजुत्तो जदि वि उक्कस्सियाए वृद्धीए वड्ढिदि तो वि जाव अंतोमुहुत्तं कालं ताव सुहुमेइंदियजहणणाणुभागसंतकम्मादो हेड्ढदो चेव अणंताणुबंधीण-मणुभागो होदि । सो तत्तो हेड्ढदो अच्छमाणो घादं पि गच्छदि । तदो तेण

ही समान है । विशेष इतना है कि जहांपर जघन्य स्थितिसंकम है वहांपर उसकी जघन्य हानि कहना चाहिये ।

पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी जघन्य अनुभागसंकमवृद्धि किसके होती है ? वह हतसमुत्पत्तिक्रमसे जघन्य अनुभागसत्कर्मको कर चुकनेवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके प्रक्षेप अधिक बांधकर आवली अतिक्रान्त उसका संक्रम करते समय होती है । उसी वृद्धिगत अनुभागको अन्तर्मुहूर्तमें घातकर संक्रम करनेवालेके उसकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी भी एकमें जघन्य अवस्थान होता है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य अनुभागसंकमहानि किसके होती है ? वह जिसके चरम समयवर्ती अक्षीणदर्शनमोह होनेमें एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष है उसके होती है । उसकी जघन्य अनुभागसंकमवृद्धि नहीं है । उसका जघन्य अवस्थान किसके होता है ? वह अन्तिम अनुभागकाण्डकी द्वितीय फालिमें वर्तमान जीवके होता है । सम्यगिन्ध्यात्वकी जघन्य हानि किसके होती है ? चरम अनुभागकाण्डके प्रथम समयमें वर्तमान जीवके उसकी जघन्य हानि होती है । उसीके अनन्तर समयमें उसका जघन्य अवस्थान होता है । उसकी जघन्य वृद्धि नहीं है ।

अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी विसंयोजना करके दो समय अधिक आवली संयुक्त जीवके अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी जघन्य अनुभागसंकमवृद्धि होती है । उनकी जघन्य हानि और अवस्थान किसके होते हैं ? वे उनकी विसंयोजना करके अन्तर्मुहूर्त संयुक्त जीवके होते हैं । यथा— अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करके उससे संयुक्त जीव यद्यपि उत्कृष्ट वृद्धिके द्वारा वृद्धिगत होता है, तो भी उसके अन्तर्मुहूर्त काल तक सूक्ष्म एकेन्द्रियके जघन्य अनुभागसत्कर्मकी अपेक्षा हीन ही अनन्तानुबन्धी कषायोंका

अंतोमुहुत्तसंजुत्तेण तस्स अणंतभागे घादिदे जह० हाणी होदि त्ति सिद्धं । जहणमवट्ठाणं जहणहाणीए दादव्वं ।

तिष्णं संजलणाणं जह० हाणी कस्स ? खवयस्स चरिमसमयजहणाणुभागबंधं संकामंतस्स जहणिया हाणी । वड्ढी अवट्ठाणं च कस्स ? सुहुमेइंदियस्स जहणाणु-भागसंतकम्मियस्सिह वत्तव्वं । पुरिसवेदस्स तिसंजलणभंगो । लोहसंजलणस्स जह० हाणी कस्स ? समयाहियावलयचरिमसमयसुहमसांपराइयस्स । वड्ढी अवट्ठाणं च कस्स ? सुहुमेइंदियस्स जहणसंतकम्मादो पक्खेवुत्तरं वंधमाणस्स । अट्ठणं णो-कसायाणं जह० हाणी कस्स ? अपच्छिसअणुभागखंडयस्स पढमसमए वट्ठमाणस्स जह० हाणी । वड्ढी अवट्ठाणं च कस्स ? सुहुमेइंदियस्स सगजहणाणुभागसंतकम्मादो पक्खेवुत्तरं वंधमाणस्स ।

णामाणं सादिसंताणं वड्ढी कस्स ? संजोजिदविदियसमए जं वद्धं तमावलिया-दिकंतं संकामंतस्स जह० वड्ढी । हाणि-अवट्ठाणाणं अणंताणुबंधिभंगो । अणादियणाम-पयडीणं वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? सुहुमेइंदियस्स सगजहणाणुभागसंतकम्मादो

अनुभाग होता है । वह उससे हीन रहकर घातको भी प्राप्त होता है । इसीलिये अन्तर्मुहूर्त संयुक्त उक्त जीवके द्वारा उसके अनन्त बहुभागका घात कर चुकनेपर उनकी जघन्य अनुभाग-संक्रमहानि होती है, यह सिद्ध है । जघन्य अवस्थान जघन्य हानिमें देना चाहिये ।

तीन संज्वलन कपायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? उनकी जघन्य हानि जघन्य अनुभागवन्धका संक्रमण करते हुए उसके अन्तिम समयमें वर्तमान क्षपकके होती है । उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होता है ? उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थानका कथन सूक्ष्म एकेन्द्रियके जघन्य अनुभागसत्कर्ममें करना चाहिये । पुरुषवेदकी प्ररूपणा उपर्युक्त तीन संज्वलन कपायोंके समान है । संज्वलन लोभकी जघन्य अनुभागसंक्रमहानि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होनेमें जिसके एक समय अधिक आवली मात्र काल शेष है उसके होती है । उसकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होता है ? जघन्य सत्कर्मकी अपेक्षा प्रक्षेप अधिक बांधनेवाले सूक्ष्म एकेन्द्रियके उसकी जघन्य वृद्धि व अवस्थान होता है । आठ नोकपायोंकी जघन्य हानि किसके होती है । अन्तिम अनुभाग-काण्डकके प्रथम समयमें वर्तमान जीवके उनकी जघन्य हानि होती है । उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान किसके होता है ? अपने जघन्य अनुभागसत्कर्मसे प्रक्षेप अधिक अनुभाग-को बांधनेवाले सूक्ष्म एकेन्द्रियके उनकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान होता है ।

सादि सत्त्ववाली नामप्रकृतियोंकी जघन्य अनुभागसंक्रमवृद्धि किसके होती है ? संयोजन-के द्वितीय समयमें जो अनुभाग बांधा गया है आवली अतिक्रान्त उसका संक्रम करनेवालेके उनकी जघन्य अनुभागसंक्रमवृद्धि होती है । उनकी हानि और अवस्थानको प्ररूपणा अनन्तानु-धन्धी कपायके समान है । अनादि सत्त्ववाली नामप्रकृतियोंकी जघन्य अनुभागसंक्रमवृद्धि, हानि और अवस्थान किसके होते हैं ? अपने जघन्य अनुभागसत्कर्मसे प्रक्षेप अधिक

पक्खेवुत्तरं वंधिय आवलियादिकंतं संक्रमंतस्स जह० वड्ढी । तं पक्खेवमंतोमुहुत्तेण घादिय संक्रमंतस्स जह० हाणी । एगदरत्थ अवट्ठाणं । णीचागोदस्स अणादियणाम-पयडीणं भंगो । उच्चागोदस्स अणंताणुबंधिभंगो । एवं सामित्तं समत्तं ।

अप्पावहुअं । तं जहा— णाणावरणस्स उक्क० हाणी थोवा । वड्ढी अवट्ठाणं च विसेसाहियं । णवदंसणावरणीय-असाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-अप्पसत्थ-णामपयडीणं णीचागोद-पंचंतराइयाणं च णाणावरणभंगो । सादस्स उक्कस्सिया हाणी थोवा । वड्ढी अवट्ठाणं च अणंतगुणं । सन्वासिं णामपयडीणं पसत्थाणं उच्चागोदस्स च सादभंगो । आदावणामाए णाणावरणभंगो । आउआणं उक्कस्सिया हाणी थोवा । वड्ढी अवट्ठाणं च विसेसाहियं । एवमुक्कस्सप्पावहुअं समत्तं ।

जहणपदणिक्खेवप्पावहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स जह० हाणी थोवा । वड्ढी अवट्ठाणं च अणंतगुणं । चदुणाणावरण-छदंसणावरण-चदुसंजलण-णवणोकसाय-पंचंतराइयाणं मदिआवरणभंगो । थीणगिद्धितिय-सादासाद-मिच्छत्त-अडुक्कसायाणं वाड्ढ-हाणि-अवट्ठाणाणि तिण्णि वि तुल्लाणि । अणंताणुबंधाणं वड्ढी थोवा । हाणि-अवट्ठाणाणि अणंतगुणाणि । सम्मत्तस्स हाणी थोवा । अवट्ठाणमणंतगुणं । सम्मामिच्छत्तस्स

अनुभागको बांधकर आवली अतिक्रान्त उसका संक्रम करनेवाले सूक्ष्म एकेन्द्रियके उक्त प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि होती है । उस प्रक्षेपको अन्तर्मुहूर्तमें घातकर संक्रम करनेवालेके उनकी जघन्य हानि होती है । दोनोंमेंसे किसी भी एकमें उनका जघन्य अवस्थान होता है । नीचगोत्रकी प्ररूपणा अनादिक नामप्रकृतियोंके समान है । उच्चगोत्रकी प्ररूपणा अनन्तानुबन्धीके समान है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागसंक्रमहानि स्तोक है । वृद्धि और अवस्थान विशेष अधिक हैं । नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, अप्रशस्त नामप्रकृतियों, नीचगोत्र और पांच अन्तरायके प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । सातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि और अवस्थान अनन्तगुणे हैं । सब प्रशस्त नामप्रकृतियां और उच्चगोत्रकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है । आतप नामकर्मकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । आयु कर्मोंकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि व अवस्थान विशेष अधिक हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जघन्य पदनिक्षेप विपचक अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— भतिज्ञानावरणकी जघन्य हानि स्तोक है । वृद्धि और अवस्थान अनन्तगुणे हैं । चार ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, चार संज्वलन, नौ नोकषाय और पांच अन्तरायकी प्ररूपणा भतिज्ञानावरणके समान है । स्त्यानगृद्धित्रय, सातावेदनीय, असातावेदनीय, मिथ्यात्व और आठ कषायोंकी वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं । अनन्तानुबन्धी कषायोंकी वृद्धि स्तोक है । हानि व अवस्थान अनन्तगुणे हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिकी हानि स्तोक है । अवस्थान अनन्तगुणा है । सम्यग्मिथ्यात्वकी

हाणि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि । चट्ठुण्णमाउआणं वड्ढि-अवट्ठाणाणि दो वि तुल्लाणि थोवाणि । हाणी अणंतगुणा । सादियणामपयडीणं उच्चागोदस्स च आउचउकभंगो । अणादियणामपयडीणं णीचागोदस्स च सादभंगो । तित्थयरस्स हाणी णत्थि । वड्ढी अवट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि । एवं पदणिक्खेवो समत्तो ।

वड्ढिसंकमे सामित्तं— छव्विहाए वड्ढीए को सामी ? अण्णदरो संकामो । छव्विहाए हाणीए को सामी ? अण्णदरो घादेतवो । आउअवज्जाणं कम्माणं ठिदिघादेण विणा वि अणुभागा हम्मंति, चट्ठुण्णमाउआणं पुण ड्ढिदिघादेण विणा णत्थि अणुभाग-घादो' । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो— सन्वकम्माणं छव्विहाए हाणीए संकमस्स जहण्णुक्खस्सेण एगसमओ । णवरि जासिं कम्माणं अणुसमओवट्ठणा अत्थि, तेमिमणंतगुणहाणिसंकमस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । पंचणं वड्ढिसंकमाणं जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो । अणंतगुणवड्ढिसंकमस्स जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्ठियसंकमस्स भुजगारअवट्ठियसंकमभंगो' । एवं वड्ढिकालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं— पंचवड्ढि-पंचहाणीणमंतरं केवचिरं० ? जह० एगसमओ

हानि और अवस्थान दोनों ही तुल्य हैं । चार आयु कर्मों की वृद्धि और अवस्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । हानि अनन्तगुणी है । सादिक नामप्रकृतियों और उच्चगोत्रकी प्ररूपणा आयुचतुष्क-के समान है । अनादिक नामप्रकृतियों और नीचगोत्रकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है । तीर्थंकर प्रकृतिकी हानि नहीं है । वृद्धि और अवस्थान दोनों ही तुल्य हैं । इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ ।

वृद्धिसंक्रममें स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है— छह प्रकारकी वृद्धिका स्वामी कौन है ? उसका स्वामी अन्यतर संक्रामक है । छह प्रकारकी हानिका स्वामी कौन है ? घात करनेवालोंमें अन्यतर जीव उसका स्वामी है । आयुको छोड़कर शेष कर्मोंके अनुभाग स्थितिघातके विना भी घाते जाते हैं । परन्तु चार आयु कर्मोंके अनुभागोंका घात स्थितिघातके विना नहीं होता । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है— सब कर्मोंकी छह प्रकारकी हानिके संक्रमका काल जघन्य व उत्कर्षसे एक समय मात्र है । विशेष इतना है कि जिन कर्मोंकी प्रति-समय अपवर्तना होती है उनकी अनन्तगुणहानिसंक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनके पांच वृद्धिसंक्रमोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली-के असंख्यातवें भाग मात्र है । अनन्तगुणवृद्धिसंक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । अवस्थितसंक्रमका काल भुजाकार अवस्थित संक्रमके समान है । इस प्रकार वृद्धिकाल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर— पांच वृद्धियों और पांच हानियोंका अन्तरकाल कितना

१ ताप्रतौ 'अणुभागादो' इति पाठः । २ प्रतिष्ठा 'संकमभागो' इति पाठः ।

अंतोमुहुत्तं, उक्तं असंखेज्जा लोगा । अणंतगुणवड्ढिह-हाणि-अवड्ढाणाणं भुजगारसंक्रम-भंगो । एवं वड्ढिहअंतरं समत्तं ।

णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च भाणिदव्वाणि ।

एत्थ अप्पावहुअं । एदस्स साहणड्ढं इमा परूवणा । तं जहा— एयम्मि वंधड्ढाणे अमंखेज्जा लोगा घादड्ढाणाणि । एत्तो पंचविहहाणीयो साहेयूण समाणिय अणंतभाग-वड्ढिसंक्रामयाणं गुणगारो असंखेज्जा लोगा त्ति वत्तव्वो । मदिआवरणस्स अणंतभाग-हाणिसंक्रामया थोवा । असंखेज्जभागहाणिसंक्रामया असंखे० गुणा । संखे० भागहाणि० संखे० गुणा । संखे० गुणहाणि० संखे० गुणा । असंखे० गुणहाणि० असंखे० गुणा । अणंतभागवड्ढि० असंखे० गुणा । असंखे० भगवड्ढि० असंखे० गुणा । संखेज्जभाग-वड्ढिसंक्रामया संखेज्जगुणा । संखे० गुणवड्ढि० संखे० गुणा । असंखे० गुणवड्ढि० असंखे० गुणा । अणंतगुणहाणि० असंखे० गुणा । अणंतगुणवड्ढि० असंखे० गुणा । अवड्ढिद० संखे० गुणा । एवं चट्ठणाणावरण-णवदंसणावरण-सादासाद-अणादिय-णामकम्माणं णीचागोद-पंचंतराइय-मिच्छत्ताणं च ।

सोलसकसाय-णवणोकसायाणं अवत्तव्वसंक्रामया थोवा । अणंतभागहाणिसं० अणंत-

है ? जघन्यसे वह एक समय और अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कर्षसे असंख्यात लोक मात्र है । अनन्त-गुणवृद्धि, हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा भुजाकार संक्रमके समान है । इस प्रकार वृद्धिअन्तर समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरका भी यहां कथन करना चाहिये ।

यहां अल्पवहुत्वका प्रकरण है । इसकी सिद्धिके लिये यह प्ररूपणा है । यथा— एक वंधस्थानमें असंख्यात लोक प्रमाण घातस्थान होते हैं । यहां पांच प्रकारकी हानियोंको सिद्ध करके समाप्त कर अनन्तभागवृद्धि संक्रामकोंका गुणकार असंख्यात लोक मात्र है, ऐसा कहना चाहिये । मतिज्ञानावरणके अनन्तभागहानिसंक्रामक स्तोक हैं । असंख्यातभागहानिसंक्रामक असंख्यात-गुणे हैं । संख्यातभागहानिसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणहानिसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणहानिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तभागवृद्धिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणवृद्धिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तगुणहानिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तगुणवृद्धिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थितसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार शेष चार ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, सातावेदनीय, असातावेदनीय, अनादिक नामकर्मों, नीचगोत्र, पांच अन्तराय और मिथ्यात्वके भी विषयमें प्रकृत अल्पवहुत्वका कथन करना चाहिये ।

सोलह कपाय और नौ नोकपायोंके अवत्तव्वसंक्रामक स्तोक हैं । अनन्तभागहानिसंक्रामक

१ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'जह० अंतोमुहुत्तं' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'अवड्ढाणाणि' इति पाठः ।



गुणा । सेसाणं णाणावरणभंगो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोदाणं णोक्कसायभंगो । देवगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वी - णिरयगइ - णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी - वेउन्वियसरीर - वेउन्वियसरीर-अंगोवंगं-वंधण-संघादाणं असंखे० भागहाणिसंक्रामया थोवा । संखे० भागहाणि० संखे० गुणा । संखे० गुणहाणि० संखे० गुणा । असंखे० गुणहाणि० असंखे० गुणा । अणंत-भागवड्ढि० असंखे० गुणा । असंखे० भागवड्ढि० असंखे० गुणा । संखेज्जभागवड्ढि० संखे० गुणा । संखे० गुणवड्ढिसं० संखे० गुणा । असंखे० गुणवड्ढि० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अणंतगुणहाणि० असंखे० गुणा । अणंतगुणवड्ढि० असंखे० गुणा । अणंतभागहाणि० असंखे० गुणा । अवट्ठिय० असंखे० गुणा । एवं वड्ढिसंक्रमो समत्तो ।

जहा संतकम्महाणाणि तथा संक्रमहाणाणि । पदेससंक्रमे अट्ठपदं— जं पदेसगं अण्णपयडिं संक्रामिज्जदि एसो पदेससंक्रमो । एदेण अट्ठपदेण मूलपयडिसंक्रमो णत्थिं । उत्तरपयडिसंक्रमे पयदं । उत्तरपयडिसंक्रमो पंचविहो— उव्वेलणसंक्रमो विज्झादसंक्रमो अधापसत्तसंक्रमो गुणसंक्रमो सव्वसंक्रमो चेदि<sup>१</sup> । वुत्तं च—

उव्वेल्लण विज्झादो अधापसत्तो गुणो<sup>२</sup> य सव्वो य ।

अनन्तगुणे हैं । शेष पदोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रयोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रकी प्ररूपणा नोक्कपायोंके समान है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकवन्धन और वैक्रियिकसंघातके असंख्यातभागहानिसंक्रामक स्तोक हैं । संख्यातभागहानिसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणहानिसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणहानिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तभागवृद्धिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिसंक्रामक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातगुणवृद्धिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवत्तव्यसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तगुणहानिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तगुणवृद्धिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तभागहानिसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अवस्थितसंक्रामक असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार वृद्धिसंक्रम समाप्त हुआ ।

संक्रमस्थानोंकी प्ररूपणा सत्कर्मस्थानोंके समान है । प्रदेशसंक्रममें अर्थपद— जो प्रदेशअ अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त किया जाता है इसका नाम प्रदेशसंक्रम है । इस अर्थपदके अनुसार मूलप्रकृतिसंक्रम नहीं है । उत्तरप्रकृतिसंक्रम प्रकरणप्राप्त है । उत्तरप्रकृतिसंक्रम पांच प्रकारका है— उव्वेलनसंक्रम, विध्यातसंक्रम, अधःप्रवृत्तसंक्रम, गुणसंक्रम और सव्वसंक्रम । कहा भी है— परिणाम वश जिनके द्वारा जीवोंका कर्म संक्रमणको प्राप्त होता है वे संक्रम पांच हैं—

१ ताप्रतौ 'पाओग्गाणुपुव्वि-वेउन्वियसरीरंगोवंगं' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'अत्थि', ताप्रतौ 'अ (ण) त्थि' इति पाठः । वंधे संक्रामिज्जदि णोवंधे णत्थि मूलपयडिणं । गो. क. ४१०. ३ जं दलियमन्नपगई निज्जइ सो संक्रमो पप्सत्स । उव्वेल्लणो विज्झादो अंहांपवत्तो गुणो सव्वो ॥ क. प्र. २-६०. ४ प्रतिपु 'गुणे' इति पाठः ।

संकमइ<sup>१</sup> जेहि कम्मं परिणामवसेण जीवाणं<sup>२</sup> ॥ १ ॥

काओ पयडीओ केत्तिएहि संकमंति त्ति जाणवणहुं परूवणाए कीरमाणाए<sup>३</sup> एसा गाहा होदि—

बंधे अधापमत्तो विज्झाद अवंध अप्पमत्ततो ।

गुणसंकमो दु एत्तो पयडीणं अप्पसत्थाणं<sup>४</sup> ॥ २ ॥

‘बंधे अधापवत्तो’ जत्थ जासिं पयडीणं बंधो संभवदि तत्थ तासिं पयडीणं बंधे संते असंते वि अधापमत्तसंकमो होदि । एसो नियमो बंधपयडीणं, अवंधपयडीणं गत्थि । कुदो ? सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तेसु वि अधापमत्तसंकमुवलंभादो<sup>५</sup> । ‘विज्झाद अवंधे’ जासिं पयडीणं जत्थ बंधसंभवो नियमेण गत्थि तत्थ तासिं विज्झादसंकमो<sup>६</sup> । एसो वि नियमो मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति तावदेव धुव चैव<sup>७</sup> होदि । ‘गुणसंकमो दु एत्तो’ अप्पमत्तादो उवरिमगुणङ्गाणेसु बंधविरहिदपयडीणं गुणसंकमो सव्वसंकमो च होदि । सव्वसंकमो होदि त्ति कथं णच्चदं ? तु-सदादो । ‘अप्पसत्थाणं’

उद्वेलनसंकम, विध्यातसंकम, अधापवृत्तसंकम, गुणसंकम और सर्वसंकम ॥ १ ॥

कौन प्रकृतियां कितने संक्रमणोंके द्वारा संक्रमणको प्राप्त होती हैं, यह जतलानेके लिये की जानेवाली प्ररूपणामें यह गाथा है—

बन्धके होनेपर अधःप्रवृत्तसंकम होता है । विध्यातसंकम अवन्ध अवस्थामें अप्रमत्त गुणस्थान पर्यन्त होता है । यहांसे अर्थात् अप्रमत्त गुणस्थानसे लेकर आगेके गुणस्थानोंमें बन्धरहित अप्रशस्त प्रकृतियोंका गुणसंकम और सर्वसंकम भी होता है ॥ २ ॥

‘बंधे अधापवत्तो’ का स्पष्टीकरण करते हुए बतलाते हैं कि जहां जिन प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है वहां उन प्रकृतियोंके बन्धके होनेपर और उसके न होनेपर भी अधःप्रवृत्तसंकम होता है । यह नियम बन्धप्रकृतियोंके लिये है, अवन्धप्रकृतियोंके लिये नहीं है; क्योंकि, सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व इन दो अवन्ध प्रकृतियोंमें भी अधःप्रवृत्तसंकम पाया जाता है । ‘विज्झाद अवंधे’ का अर्थ करते हुए कहते हैं कि जिन प्रकृतियोंका जहां नियमसे बन्ध सम्भव नहीं है वहां उन प्रकृतियोंका विध्यातसंकम होता है । यह भी नियम मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक ही ध्रुव स्वरूपसे है । ‘गुणसंकमो दु एत्तो’ अर्थात् अप्रमत्त गुणस्थानसे आगेके गुणस्थानोंमें बन्धरहित प्रकृतियोंका गुणसंकम और सर्वसंकम भी होता है ।

शंका— सर्वसंकम भी होना है, यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान— यह उपर्युक्त गाथामें प्रयुक्त ‘तु’ शब्दसे जाना जाता है ।

१ अप्रती ‘संकमिद’, चाप्रती ‘संकमय’ इति पाठः । २ गो. क. ४०९. ३ अ-काप्रत्योः ‘परूवणा कीरमाणा’, ताप्रती ‘परूवणाए कीरमाणा’ इति पाठः । ४ बंधे अधापवत्तो विज्झादं सत्तमां त्ति तु, अवंधे । एत्तो गुणो अवंधे पयडीणं अप्पसत्थाणं ॥ गो. क. ४१६. ५ मिच्छे भूमिस्साणं अधापवत्तो मुहुवर्जतो त्ति ॥ गो. क. ४१२. ६ जासिं न बंधो गुण-भवपच्चयओ तासिं द्दोइ विज्झाओ । क. प्र. २, ६८, ७ ताप्रती ‘ताव देवधुव चैव’ इति पाठः ।

एसा परूत्रणा अप्पसत्थपयडीणं कदा, ण पसत्थाणं; उवसम-खवगसेडीसु वि वंध-  
विरहियपसत्थपयडीणमधापवत्तसंकमदंसणादो । एदाओ पयडीओ एत्तिएहि भाग-  
हारेहि संकमंति त्ति जाणावणट्टं एसा गाहा—

उगुदाल तीस सत्त य वीसं एगेग वार तियचउक्कं ।

एवं चट्टु दुग तिय तिय चट्टु पण दुग तिग दुगं च वोद्धव्वं ॥ ३ ॥

एदीए गाहाए वुत्तपयडीणं भागहाराणं च एसा संदिट्ठी—

३५	३०	७	२०	१	१
१	४	२	३	३	४

१२	४	४	४
५	२	३	२

। एवं ठविय एदिस्से गाहाए अत्थो वुच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरण-  
चत्तारिदंसणावरण-सादावेयणीय - लोहसंजलण- पंचिदियजादि - तेजा-कम्मइयसरीर-सम-  
चउरससंठाण-पसत्थवण-रस-गंध-फास-अगुरुअलहुअ - परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-  
तस-वादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज-जसक्ति - णिमिण- पंचंतराइ-  
याणं अधापवत्तसंकमो एक्को चेवं । कुदो ? पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं<sup>३</sup>  
मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति वंधो चेव । तेणेव एदासि-

यह प्ररूपणा 'अप्पसत्थाणं' अर्थात् अप्रशस्त प्रकृतियोंकी गयी है, न कि प्रशस्त प्रकृतियोंकी; क्योंकि, उपशम श्रेणि और क्षयक श्रेणिमें भी बन्धरहित प्रशस्त प्रकृतियोंका अधःप्रवृत्तसंक्रम देखा जाता है । ये प्रकृतियां इतने भागहारोंसे संक्रमणको प्राप्त होती हैं, यह बतलानेके लिये यह गाथा है—

उनतालीस, तीस, सात, बीस, एक, एक बारह और तीन चतुष्क (४, ४, ४); इन प्रकृतियोंके क्रमसे एक, चार, दो, तीन, तीन, चार, पांच, दो, तीन और दो; ये भागहार जानने चाहिये ॥ ३ ॥

इस गाथामें कही गयी प्रकृतियों और भागहारोंकी यह संदृष्टि है—

प्रकृति	३५	३०	७	२०	१	१	१२	४	४	४
भागहार	१	४	२	३	३	४	५	२	३	२

। इसे इस प्रकारसे स्थापित करके इस

गाथाका अर्थ कहते हैं । यथा— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सातावेदनीय, संज्वलन लोभ, पंचेन्द्रिय जाति, तैजसशरीर, कामणशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्त वर्ण रस गन्ध व स्पर्श, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यज्ञकीर्ति, निर्माण और पांच अन्तराय; इन उनतालीस प्रकृतियोंका एक अधःप्रवृत्तसंक्रम ही होता है, क्योंकि, पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानके अन्तिम समय तक

१ उगुदाल-तीस-सत्त-वीसे एकके-वार तिचउक्के । इगि-चट्टु-दुगु-तिग-तिग-चट्टु-पण-दुग-दुग-तिगिग-संकमणा ॥ गो. क. ४१८. २ सुहुमस्स वंधघादी सादं संजलणलोह-पंचिदी । तेजदु-सम-वणचऊ अगुवग-परघाद-उस्सासं ॥ सत्थगदी तसदसवं णिमिणुगदाले अधापवत्तो दु । गो. क. ४१९-२०.३ ताप्रतौ 'णाणावरण-पंचंतराइयाणं' इति पाठः । ४ अप्रतौ 'इत्थि' इति पाठः ।

मधापवत्संक्रमं मोत्तूण णत्थि अणुसंक्रमो । वंधवोच्छेदे जादे वि संक्रमो णत्थि, पडिग्गहा-  
भावादो । पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-  
अगुरुअलहुअ-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस- वादर-पज्जत्त - पत्तेयसरीर - थिरादिछक्क-  
णिमिणाणं वंधवोच्छेदे संते विज्झादो गुणसंक्रमो वा किण्ण जायदे ? ण एस दोसो,  
पसत्थत्तादो । लोहसंजलणस्स अधापवत्संक्रमो चेव, वंधे संते चेव आणुपुण्विसंक्रमेण  
ओसारिदसंक्रमत्तादो<sup>१</sup> । एदासिं पयड्डीणं सव्वसंक्रमो किण्ण होदि ? ण, परपयडिसंछोह-  
णेण विणासाभावादो ।

थीणगिद्धितिय-वारसकसाय-इत्थि-णवुंसयवेद-अरदि-सोग - तिरिक्खगदि - एइंदिय-  
वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी - आदावुज्जोव - थावर-सुहुम-  
साहारणाणं तीसण्णं पयड्डीणं उव्वेळ्ळणेण विणा चत्तारि संक्रमा होति<sup>१</sup> । तं जहा— थीणगिद्धि-

बन्ध ही है । इसीलिये इन प्रकृतियोंके अधःप्रवृत्तसंक्रमको छोड़कर अन्य संक्रम नहीं होते ।  
बन्धव्युच्छित्तिके हो जानेपर उनका संक्रम नहीं होता, क्योंकि, प्रतिग्रह ( जिनमें विवक्षित  
प्रकृतियां संक्रान्त होती हैं ) प्रकृतियोंका यहां अभाव है ।

शंका— पंचेन्द्रिय जाति, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, प्रशस्त वर्ण  
गन्ध रस व स्पर्श, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त चिहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त,  
प्रत्येकशरीर, स्थिर आदि छह और निर्माण; इनकी बन्धव्युच्छित्ति हो जानेपर विध्यात अथवा  
गुणसंक्रम क्यों नहीं होता ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वे प्रशस्त प्रकृतियां हैं ।

संज्वलन लोभका एक अधःप्रवृत्तसंक्रम ही होता है, क्योंकि, बन्धके होनेपर ही आनु-  
पूर्वीसंक्रम ( संज्वलन क्रोधका संज्वलन मान आदिमें, संज्वलन मानका संज्वलन माया आदिमें,  
इत्यादि ) द्वारा उनका संक्रम होता है ।

शंका— इन प्रकृतियोंका सर्वसंक्रम क्यों नहीं होता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि अन्य प्रकृतियोंमें क्षेपण करके इनका विनाश नहीं होता ।

स्त्यानगृद्धि आदि तीन, वारह कपाय, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, अरति, शोक, तिर्यग्गति,  
एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर,  
सूक्ष्म और साधारणशरीर; इन तीस प्रकृतियोंके उद्वेलनके बिना चार संक्रम होते हैं ।

१ प्रतिपु 'थिरादिओजोछक्क' इति पाठः । २ अंतरकरणम्मि कए चरित्तमोहे णुपुण्विसंक्रमणं । अन्नत्थ  
सेसिगाणं च सव्वहिं सव्वहा वंधे ॥ क. प्र. २, ४: X X X चरित्रमोहे .पुण्वेद-संज्वलनचतुष्टयलक्षणे ।  
अत्र हि चरित्रमोहनीयग्रहणेनैता एव पंच प्रकृतयो गृह्यन्ते, न शेषाः; बन्धाभावात् । तत्रानुपूर्वी ( व्य्या )  
परिपाठ्या संक्रमणं भवति, न त्वनानुपूर्व्या । तथा हि— पुरुषवेदं संज्वलनक्रोधादावेव संक्रमयति, नान्यत्र ।  
संज्वलनक्रोधमपि संज्वलनमानादावेव, न तु पुरुषवेदे । संज्वलनमानमपि संज्वलनमायादावेव, न तु संज्वलन-  
क्रोधादौ । संज्वलनमायामपि संज्वलनलोभ एव, न तु संज्वलनमानादाविति । मलय. ३ थीणति-वारकसाया  
संद्धित्थी अरइ सोगो य ॥ तिरियेयारं तीसे उव्वेळ्ळणहीणचत्तारिसंक्रमणा । गो. क. ४२०-२१.

तिय - इत्थिवेद - तिरिक्खगइ - तिरिक्खगइयाओग्गाणुपुच्ची-उज्जीव-अणंताणुबंधिचउक्काणं  
मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सासणसम्माइट्ठि त्ति अधापवत्तसंक्रमो, तत्थ बंधुवलंभादो । सम्मा-  
मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति ताव विज्झादसंक्रमो, तत्थ बंधाभावादो । सग-  
सगअपुव्वखवगपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति ताव गुण-  
संक्रमो । चरिमफालीए सव्वसंक्रमो ।

णउंसयवेद-एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहार-  
णाणं मिच्छाइट्ठिम्हि अधापवत्तसंक्रमो, तत्थ एदासिं बंधुवलंभादो । सासणसम्माइट्ठि-  
प्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति ताव विज्झादसंक्रमो, अप्पसत्थत्ते संते बंधाभावादो ।  
एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं देव-णेरइयमिच्छा-  
इट्ठीसु विज्झादसंक्रमो, तत्थ एदासिं बंधाभावादो । णवरि एइंदिय-आदाव-थावराणं  
ईसाणंता देवा अधापवत्तेण संकामया, तत्थ एदासिं बंधदंसणादो । अपुव्वकरगपढम-  
समयप्पहुडि जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति ताव एदासिं पयडीणं गुणसंक्रमो,  
अप्पसत्थत्ते तेसिं<sup>१</sup> बंधाभावादो । चरिमफालीए सव्वसंक्रमो, संछोहणेण णट्ठत्तादो ।

अपच्चक्खाणचउकस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ताव अधा-

यथा— स्यानगुद्धिन्नय, स्त्रीवेद, तिर्यंगति, तिर्यंगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत और अनन्तानु-  
बन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि,  
वहां इनका बन्ध पाया जाता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक उनका विध्यातसंक्रम  
होता है, क्योंकि, वहां उनके बन्धका अभाव है। अपूर्वकरण क्षपकके प्रथम समयसे लेकर  
अपने अपने अन्तिम स्थितिकाण्डककी द्विचरम फालि तक उनका गुणसंक्रम होता है। अन्तिम  
फालिका सर्वसंक्रम होता है।

नपुंसकवेद, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आतप, स्थावर, सूक्ष्म और  
साधारणशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहांपर इनका  
बन्ध पाया जाता है। सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक उनका विध्यातसंक्रम होता  
है, क्योंकि अप्रशस्तताके होनेपर वहां बन्धका अभाव है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,  
चतुरिन्द्रिय, आतप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण; इनका देव व नारक मिथ्यादृष्टियोंमें  
विध्यातसंक्रम होता है; क्योंकि, उनके इनका बन्ध नहीं होता। विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय,  
आतप और स्थावर इनके ईशान कल्प तकके देव अधःप्रवृत्तसंक्रमके द्वारा संक्रामक हैं; क्योंकि,  
उनमें इनका बन्ध देखा जाता है। अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम स्थितिकाण्डककी  
द्विचरम फालि तक इन प्रकृतियोंका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, अप्रशस्तताके होनेपर उनके  
बन्धका अभाव है, इनकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है, क्योंकि, उसका विनाश  
निक्षेपपूर्वक होता है।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम

१ अ-काप्रत्योः 'अप्पसत्थत्ते संते इति पाठः ।

पवत्तसंकमो, तत्थ बंधदंसणादो । उवरि जाव अप्पमत्तसंजदचरिमसमओ ताव विज्झाद-  
संकमो । उवरिमपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमट्टिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति ताव  
गुणसंकमो । कारणं सुगमं । चरिमफालीए सव्वसंकमो, परपयडिसंलोहणेण विणट्टत्तादो ।

पच्चक्खाणचटुक्कस्स अप्पक्खाणचटुक्कभंगो । णवरि संजदासंजदो त्ति एदेसि-  
मधापवत्तसंकमो ।

अरदि-मोग्गाणं मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति ताव अधापमत्तसंकमो,  
तत्थ एदासिं बंधुवलंभादो । अप्पमत्तसंजदम्हिं विज्झादसंकमो, तत्थ बंधाभावादो ।  
अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव अप्पणो चरिमट्टिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति ताव  
गुणसंकमो, अप्पसत्था त्ति बंधाभावादो । चरिमफालीए सव्वसंकमो । कारणं सुगमं ।

णिद्दा-पयला-अप्पसत्थैवण्ण-गंध-रस-फास-उवधादाणं अधापवत्तसंकमो गुणसंकमो  
चेदि दो चेव संकमा<sup>१</sup> । तं जहा— णिद्दा-पयलाणं मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपुव्व-  
करणस्स पढम-सत्तमभागो त्ति ताव अधापवत्तसंकमो, एत्थ एदासिं बंधुवलंभादो ।  
उवरिं जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमओ त्ति ताव गुणसंकमो, बंधाभावादो । अप्पसत्थ-  
वण्णचटुक्कस्स मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणस्स छ-सत्तमभागा त्ति अधापवत्तसंकमो ।

होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध देखा जाता है । आगे अप्रमत्तसंयतके अन्तिम समय तक  
उनका विध्यातसंक्रम होता है । ऊपर अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम स्थितिकाण्डकको  
द्विचरम फालि तक उनका गुणसंक्रम होता है । इसका कारण सुगम है । अन्तिम फालिका  
सर्वसंक्रम होता है, क्योंकि, वह अन्य प्रकृतिमें प्रक्षिप्त होकर नष्ट होती है ।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्ककी प्ररूपणा अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कके समान है । विशेष इतना  
है कि संयतासंयत-गुणस्थान तक इनका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है ।

अरति और शोकका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है,  
क्योंकि, उनमें इनका बन्ध पाया जाता है । अप्रमत्तसंयतमें इनका विध्यातसंक्रम होता है,  
क्योंकि, वहां इनका बन्ध नहीं है । अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अपने अन्तिम  
स्थितिकाण्डकको द्विचरम फालि तक उनका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, वहां अप्रशस्तता होनेपर  
उनका बन्ध नहीं है । उनकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है । इसका कारण सुगम है ।

निद्रा, प्रचला तथा अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व, स्पर्श और उपघातके अधःप्रवृत्तसंक्रम  
और गुणसंक्रम ये दो ही संक्रम होते हैं । यथा— निद्रा और प्रचलाका मिथ्यादृष्टिसे लेकर  
अपूर्वकरणके प्रथम सप्तम भाग तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, यहां इनका बन्ध पाया  
जाता है । आगे सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, यहां  
उनका बन्ध नहीं है ।

अप्रशस्त वर्णादि चारका मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणके सात भागोंमेंसे छठे भाग

१ अ-काप्रत्योः 'अप्पमत्तसंजदेहि' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'पयलायअप्पसत्थ' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'संकमो' इति पाठः । णिद्दा पयला असुहं वण्णचउक्कं च उवधादे ॥ सत्तण्हं गुणसंकम-  
मधापवत्तो य X X X । गो. क. ४२१-२२.

उवरि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमओ त्ति ताव गुणसंकमो । तत्तो' उवरि संकमो णत्थि, बंधाभावेण पडिग्गहाभावादो ।

उपघादस्स वण्णचदुक्कभंगो । एदासिं सत्तण्णं पयडीणं विज्झादसंकमो णत्थि, खवग-उवसाभियसेडीसु वोच्छिण्णबंधत्तादो । उव्वेच्छणसंकमो णत्थि, अणुव्वेच्छणपयडि-त्तादो । सव्वसंकमो णत्थि, परपयडिसंछोहणेण अधिणडुत्तादो ।

असादावेदणीय-पंचसंठाण - पंचसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-अपजत्त-अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्ति-णीचागोदाणं वीसण्णं पयडीणं अधापवत्तसंकमो, विज्झादसंकमो गुणसंकमो चेदि तिण्णिंसंकमो । तं जहा— असादावेदणीय-अथिर-असुहाणं मिच्छाइड्ढिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति ताव अधापमत्तसंकमो, एत्थ एदासिं बंधुवलंभादो । अप्पमत्तसंजदस्मि विज्झादसंकमो, बंधाभावादो । उवरि गुणसंकमो जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति, अप्पसत्थत्तादो । उवरि संकमो णत्थि, पडिग्गहा-भावादो । हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं मिच्छाइड्ढिम्हि अधापवत्तसंकमो, तत्थ एदासिं बंधुवलंभादो । उवरि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति विज्झादसंकमो, बंधाभावादो ।

तक इनका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है । आगे सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंक्रम होता है । इसके आगे उनका संक्रम नहीं है, क्योंकि, बन्धके न होनेसे उनकी प्रतिग्रह प्रकृतियोंका वहां अभाव है ।

उपघातकी प्ररूपणा वर्णचतुष्कके समान है । इन निद्रा आदि सात प्रकृतियोंका विध्यात-संक्रम नहीं होता, क्योंकि, क्षपक और उपशामक श्रेणियोंमें इनकी बन्धव्युच्छित्ति होती है । इनका उद्वेलनसंक्रम भी नहीं होता, क्योंकि, वे उद्वेलन प्रकृतियोंसे भिन्न हैं । सर्वसंक्रम भी उनका सम्भव नहीं है, क्योंकि, अन्य प्रकृतियोंमें प्रक्षिप्त होकर उनका विनाश नहीं होता ।

असातावेदनीय, पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, अपर्याप्त, अस्थिर, अशुभ, दुर्भंग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीचगोत्र ; इन बीस प्रकृतियोंके अधःप्रवृत्त-संक्रम, विध्यातसंक्रम और गुणसंक्रम ये तीन संक्रम होते हैं । यथा— असातावेदनीय, अस्थिर और अशुभ इनका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है; क्योंकि, यहां इनका बन्ध पाया जाता है । अप्रमत्तसंयतमें उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध नहीं होता । आगे सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंक्रम होता है, क्योंकि, वे अप्रशस्त प्रकृतियां हैं । इससे आगे उनका संक्रम नहीं होता, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतियोंका अभाव है ।

हुण्डकसंस्थान और असंप्राप्तासृपाटिकासंहननका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहांपर इनका बन्ध पाया जाता है । आगे अप्रमत्तसंयत तक इनका विध्यात-

१ अ-काप्रत्योरेतस्य स्थाने 'तत्थ' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'तिण्णिंसंकमो' इति पाठः । दुक्ख-मसुहगदी । संहदि-संठाणदसं णीचापुण्णथिरड्ढकं च ॥ वीसण्हं विज्झादं अधापवत्तो गुणो य × × × । गो. क. ४२२-२३.

असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठीसु वि विज्झादसंकमो चेव, वंधाभावादो । अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति ताव गुणसंकमो, वंधाभावादो । उवरि असंकमो, पडिग्गहाभावादो ।

चदुसंठाण-चदुसंघडण - दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज - णीचागोद- अप्पसत्थविहायगदीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सासणमम्माइट्ठि त्ति ताव अधापवत्तसंकमो । उवरिं जाव अप्पमत्तसंजदचरिमसमयो त्ति ताव विज्झादसंकमो, वंधाभावादो । अपुव्व-करणपढमसमयप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयचरिमसमयो त्ति ताव गुणसंकमो, अप्प-सत्थत्तादो । उवरि असंकमो, पडिग्गहाभावादो । एवमपज्जत्तस्स वि । णवरि मिच्छा-इट्ठिम्हि चेव एदस्स अधापवत्तसंकमो । अजसक्कितीए अपज्जत्तभंगो । णवरि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति एदिस्से अधापवत्तसंकमो, एदेसु गुण-ट्ठाणेसु वंधुवलंभादो ।

मिच्छत्तस्स विज्झादसंकमो गुणसंकमो सव्वसंकमो चेदि तिण्णि संकमा' । तं जहा-पढमसमयप्पहुडि जाव अंतोसुहुत्तकालं उवसमसम्मइट्ठिम्हि मिच्छत्तस्स गुणसंकमो । खवणाए वि अपुव्वकरणपढमसमयप्पहुडि जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि त्ति गुण-

संकम होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध नहीं होता । असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यंच व मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंमें भी उनका विध्यातसंकम ही होता है, क्योंकि, उनके इनका बन्ध नहीं होता । अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंकम होता है, क्योंकि, वहांपर इनके बन्धका अभाव है । आगे उनका संक्रम नहीं होता, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतियोंका अभाव है ।

चार संस्थान, चार संहनन, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, नीचगोत्र और अप्रशस्त विहायोगति; इनका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंकम होता है । आगे अप्रमत्त-संयतके अन्तिम समय तक उनका विध्यातसंकम होता है, क्योंकि, आगे उनका बन्ध नहीं होता । अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समय तक उनका गुणसंकम होता है, क्योंकि, वे अप्रशस्त प्रकृतियां हैं । आगे उनका संक्रम नहीं है, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतियोंका अभाव है । इसी प्रकार अपर्याप्त नामकर्मके भी विषयमें कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इसका अधःप्रवृत्तसंकम केवल मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही होता है ।

अयशकीर्तिक्री प्ररूपणा अपर्याप्तके समान है । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक इसका अधःप्रवृत्तसंकम होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उसका बन्ध पाया जाता है ।

मिथ्यात्व प्रकृतिके विध्यातसंकम, गुणसंकम और सर्वसंकम ये तीन संक्रम होते हैं । यथा— प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त काल तक उपशमसम्यग्दृष्टि जीवके मिथ्यात्वका गुण-संकम होता है । क्षणामें भी अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम स्थितिकाण्डककी



संकमो । चरिमफालीए सव्वसंकमो । उवसमसम्माइड्ढिम्हि य मिच्छत्तस्स विज्झादसंकमो ।

वेदगसम्मत्तस्स चत्तारि संकमो अथापवत्तसंकमो उव्वेच्छणसंकमो गुणसंकमो सव्व-  
संकमो चेदि । तं जहा— मिच्छत्तं गदसम्माइड्ढिम्हि जाव अंतोमुहुत्तकालं ताव अथा-  
पवत्तसंकमो । तदो प्पहुडि जाव पलिदो० असंखे० भागमेत्तकालं ताव उव्वेच्छणसंकमो  
अंगुलस्स असंखे० भागपडिभागिगो । उव्वेच्छणं चरिमखंडयपढमसमयप्पहुडि ताव  
गुणसंकमो जाव तस्सेव दुचरिमफालि त्ति । चरिमफालीए सव्वसंकमो ।

सम्मामिच्छत्तं-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-णिरयगइ - णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-  
वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग- मणुसगइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-आहारसरीर-  
आहारसरीरंगोवंग-उच्चागोदाणं चारसणं पयडीणं पंच संकमो । तं जहा— मिच्छत्तं  
गदसम्माइड्ढिम्हि अंतोमुहुत्तकालं सम्मामिच्छत्तं० अथापवत्तसंकमो । तदो उवरि पलिदो०  
असंखे० भागमेत्तकालं सम्मामिच्छत्तं० उव्वेच्छणसंकमो । चरिमखंडए गुणसंकमो जाव  
तस्सेव दुचरिमफालि त्ति । चरिमफालीए सव्वसंकमो । दंसणमोहक्खवगअपुव्वकरणपढम-  
समयप्पहुडि ताव सम्मामिच्छत्तस्स गुणसंकमो जाव चरिमड्ढिदिखंडयस्स  
दुचरिमफालि त्ति । चरिमफालीए सव्वसंकमो । उवसम-वेदगसम्माइड्ढीसु विज्झादसंकमो

द्विचरम फालि तक उसका गुणसंकम होता है । अन्तिम फालिका सर्वसंकम होता है । उप-  
शमसम्यग्दृष्टिके ही मिथ्यात्वका विध्यातसंकम भी होता है ।

वेदकसम्यक्त्वके अधप्रवृत्तसंकम, उद्वेलनसंकम, गुणसंकम और सर्वसंकम ये चार संकम  
होते हैं । यथा— मिथ्यात्वको प्राप्त हुए सम्यग्दृष्टिके सम्यक्त्वप्रकृतिका अन्तर्मुहूर्त काल तक  
अधःप्रवृत्तसंकम होता है । उसके आगे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक अंगुलके  
असंख्यातवें भाग प्रतिभागवाला उसका उद्वेलनसंकम होता है । उद्वेलनके अन्तिम काण्डके  
प्रथम समयसे लेकर उसकी ही द्विचरम फालि तक उसका गुणसंकम होता है । उसकी अन्तिम  
फालिका सर्वसंकम होता है ।

सम्यग्मिथ्यात्व, देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी,  
वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरंगोपांग, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आहारकशरीर,  
आहारकशरीरंगोपांग नामकर्म और उच्चगोत्र इन चारह प्रकृतियोंके पांच संकम होते हैं । यथा—  
मिथ्यात्वको प्राप्त सम्यग्दृष्टिके अन्तर्मुहूर्त काल सम्यग्मिथ्यात्वका अधःप्रवृत्तसंकम होता है । उसके  
आगे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र काल तक सम्यग्मिथ्यात्वका उद्वेलनसंकम होता है । अन्तिम  
काण्डकमें उसकी ही द्विचरम फालि तक गुणसंकम होता है । चरम फालिका सर्वसंकम होता है ।  
दर्शनमोहक्षपक अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम स्थितिकाण्डकी द्विचरम फालि तक सम्य-  
ग्मिथ्यात्वका गुणसंकम होता है । उसकी अन्तिम फालिका सर्वसंकम होता है । उपशमसम्यग्दृष्टि

१ अ-काप्रत्योः 'चत्तारिसंकमो' इति पाठः । सम्मे विज्झादपरिहीणा ॥ गो. क. ४२३. २ ताप्रतौ 'उव्वे-  
च्छणसंकमो । अंगुलस्स असंखे० भागपडिभागिगो उव्वेच्छण-' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'मिच्छत्त', ताप्रतौ  
['सम्मा ] मिच्छत्त' इति पाठः । ४ सम्मविहीणुव्वेत्ते पंचेव य तस्य होति संकमगा । गो. क. ४२४.

अंगुलस्स असंखे० भागपडिभागियो ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणल्लसत्तभागे<sup>१</sup> ति अधापवत्तसंकमो, तत्थ एदासि वंधुवलंभादो । तत्तो उवरिं पि वंधाभावे वि अधापमत्तसंकमो चेव, पसत्थत्तादो । देव-णेरइएसु विज्झादसंकमो, वंधाभावादो । एइंदिय-विगलिंदिएसु उव्वेल्लणसंकमो जाव उव्वेल्लणचरिमखंडयमपत्तो ति । चरिमखंडए गुणसंकमो जाव तस्सेव दुचरिमफालि ति । चरिमफालीए सव्वसंकमो ।

वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंगणं देवगइभंगो । णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणु-पुव्वीणं पि देवगइभंगो । णवरि मिच्छाइट्ठिम्हि चेव अधापवत्तसंकमो । सासणसम्मा-इट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो ति विज्झादसंकमो । देव-णेरइएसु वि विज्झादसंकमो, वंधाभावादो । अपुव्वकरणप्पुहुडि जाव सगचरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि ति गुणसंकमो । चरिमफालीए सव्वसंकमो । एइंदिय-विगलिंदिएसु उव्वेल्लणसंकमो । उव्वेल्लणचरिम-खंडए गुणसंकमो । तस्सेव चरिमफालीए सव्वसंकमो । एवं पंच संकमा होंति ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि

और वेदकसम्यग्दृष्टिके उसका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रतिभागवाला विध्यातसंक्रम होता है ।

देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणके सात भागोंमें-से छठे भाग तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध पाया जाता है । उसके आगे भी बन्धका अभाव होनेपर भी अधःप्रवृत्तसंक्रम ही होता है, क्योंकि, वे प्रशस्त प्रकृतियां हैं । देवों व नारकियोंमें उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, उनके इनका बन्ध नहीं होता । एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंमें उद्वेलनके अन्तिम काण्डकके प्राप्त न होने तक उनका उद्वेलनसंक्रम होता है । अन्तिम काण्डकमें उसीकी द्विचरम फालि तक गुणसंक्रम होता है । अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है ।

वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगकी प्ररूपणा देवगतिके समान है । नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी भी प्ररूपणा देवगतिके समान है । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही इनका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है । सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक उनका विध्यातसंक्रम होता है । देवों और नारकियोंमें भी उनका विध्यात-संक्रम होता है, क्योंकि, उनके इनका बन्ध नहीं होता । अपूर्वकरणसे लेकर अपने अन्तिम स्थिति-काण्डककी द्विचरम फालि तक उनका गुणसंक्रम और अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है । एकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंमें उनका उद्वेलनसंक्रम होता है । उद्वेलनके अन्तिम काण्डकमें [ द्विचरम फालि तक ] उनका गुणसंक्रम और उसीकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है । इस प्रकार उक्त दो प्रकृतियोंके पांच संक्रम होते हैं ।

मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक

१ ताप्रती 'भागो' इति पाठः ।

त्ति अधापवत्तसंकमो, तत्थ वंधुवलंभादो । संजदासंजदप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदो त्ति विज्झादसंकमो । असंखेज्जवासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु विज्झादसंकमो, वंधाभावादो । तेउ-त्राउकाइएसु उव्वेळ्ळणसंकमो जाव दुचरिमुव्वेळ्ळणकंडयो' त्ति । चरिमुव्वेळ्ळणखंडए गुणसंकमो । तस्सेव चरिमफालीए सच्चसंकमो ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग्गाणं अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अपुच्चकरणो त्ति ताव अधापवत्तसंकमो, तत्थ वंधुवलंभादो । हेड्डिमगुणट्टाणेसु विज्झादसंकमो, वंधाभावादो । असंजमं गदो आहारसरीरसंतकम्मियो संजदो अंतोमुहुत्तेण उव्वेळ्ळणमाटवेदि जाव असंजदो जाव असंतकम्मं च अत्थि ताव उव्वेल्लेदि ।

संपहि सच्चुव्वेळ्ळणपयडीणमुव्वेळ्ळणकमो बुचदे । तं जहा— अधापवत्तट्टिदिखंडयं पलिदो० असंखे० भागो । तासिं ट्टिदीणं पढमसमए जमुक्कीरिज्जदि पदेसग्गं तं थोवं । विदियसमए जमुक्कीरिज्जदि पदेसग्गं तमसंखेज्जगुणं । तदियसमए जमुक्कीरिज्जदि पदेसग्गं तमसंखेज्जगुणं । एवमसंखेज्जगुणवड्डीए णेयव्वं जाव अंतोमुहुत्तं त्ति । एत्थ गुणगारपमाणं पलिदो० असंखे० भागो ।

परपयडीसु जं पदेसग्गं दिज्जदि तं थोवं । जं सत्थाणे दिज्जदि तमसंखेज्जगुणं ।

अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध पाया जाता है । संयतासंयतसे लेकर अप्रमत्तसंयत तक उनका विध्यातसंक्रम होता है । असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यचों और मनुष्योंमें उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, उनमें इनका बन्ध नहीं होता । तेजकायिकों और वायुकायिकोंमें द्विचरम उद्वेलन काण्डक तक उनका उद्वेलनसंक्रम होता है । अन्तिम उद्वेलनकाण्डकमें [ द्विचरम फालि तक ] गुणसंक्रम और उसीकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांग नामकर्मोंका अप्रमत्तसंयतसे लेकर अपूर्वकरण तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध पाया जाता है । अधस्तन गुणस्थानोंमें उनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध नहीं होता । आहारशरीरसत्कर्मिक संयत असंयमको प्राप्त होकर अन्तर्मुहूर्तमें उद्वेलना प्रारम्भ करता है, जब तक वह असंयत है और जब तक सत्कर्मसे रहित है तब तक वह उद्वेलना करता है ।

अब सब उद्वेलनप्रकृतियोंकी उद्वेलनाके क्रमकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— अधःप्रवृत्तस्थितिकाण्डक पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । उन स्थितियोंका जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें उत्कीर्ण किया जाता है वह स्तोक है । द्वितीय समयमें जो प्रदेशाग्र उत्कीर्ण किया जाता है वह असंख्यातगुणा है । तृतीय समयमें जो प्रदेशाग्र उत्कीर्ण किया जाता है वह असंख्यातगुणा है । इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त काल तक असंख्यातगुणी वृद्धिके क्रमसे ले जाना चाहिये । यहाँ गुणकारका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

अन्य प्रकृतियोंमें जो प्रदेशाग्र दिया जाता है वह स्तोक है । स्वस्थानमें जो प्रदेशाग्र दिया जाता है वह असंख्यातगुणा है । जो प्रदेशाग्र स्वस्थानमें दिया जाता है वह गुणश्रेणिक्रमसे

जं सत्थाणे तं गुणसेडीए दिज्जदि, जं परत्थाणे तं पदेसग्गं विसेसहाणीए दिज्जदि । एस विही पढमस्स ट्टिदिखंडयस्स । जो विहो पढमस्स ट्टिदिखंडयस्स परूविदो सो चेव विही विदियखंडयप्पहुडि जाव दुचरिमखंडओ त्ति ताव सव्वखंडयाणं परूवेयव्वो । चरिमट्टिदिखंडयपमाणं पलिदो० असंखे० भागो । तस्स पदेसग्गं सव्वं परत्थाणे चेव दिज्जदि असंखेज्जगुणाए सेटीए । पढमट्टिदिखंडयस्स ट्टिदीओ बहुगाओ । विदियस्स विसेसहीणाओ । तदियस्स ट्टिदिखंडयस्स ट्टिदीओ विसेसहीणाओ । एवमणंतरोवणिधाए गेयव्वं जाव दुचरिमट्टिदिखंडओ त्ति । दुचरिमट्टिदिखंडयट्टिदीहिंतो चरिमट्टिदिखंडयस्सं ट्टिदीओ असंखे० गुणाओ ।

परंपरोवणिधाए पढमट्टिदिखंडयमुवणिहाय अत्थि काणिचि<sup>१</sup> ट्टिदिखंडयाणि संखेज्जगुणहीणाणि काणिचि असंखे० गुणहीणाणि । तत्थ जं दुचरिमट्टिदिखंडयमाहारदुगस्स तस्स जं चरिमसमए संकमदि पसेसग्गं परत्थाणे सो जहण्णओ उव्वेळ्णसंकमो । तेण संकममाणेण तिस्से पयडीए ताथे जं सेसयं कम्मं तं पलिदोवमस्स असंखे० भागेण अवहिरिज्जदि । सव्वकम्मं पुण अंगुलस्स असंखे० भागेण अवहिरिज्जदि ।

संपहि पयदं परूवेसो— आहारदुगस्स उव्वेळ्णकालब्भंतरे उव्वेळ्णसंकमो । चरिमट्टिदिखंडए गुणसंकमो । तत्थेव चरिमफालीए सव्वसंकमो ।

द्विया जाता है और जो प्रदेशाग्र परस्थानमें दिया जाता है वह विशेषहानिके क्रमसे दिया जाता है । यह विधि प्रथम स्थितिकाण्डककी है । जो विधि प्रथम स्थितिकाण्डककी कही गयी है वही विधि द्वितीय काण्डकसे लेकर द्विचरम काण्डक तक सब काण्डकोंकी कहना चाहिये । अन्तिम स्थितिकाण्डकका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवर्ग भाग है । उसका सब प्रदेशाग्र असंख्यातगुणित श्रेणिसे परस्थानमें ही दिया जाता है । प्रथम स्थितिकाण्डककी स्थितियां बहुत हैं । द्वितीय स्थितिकाण्डककी स्थितियां विशेष हीन हैं । तृतीय स्थितिकाण्डककी स्थितियां विशेष हीन हैं । इस प्रकार अनन्तरोपनिधासे द्विचरम स्थितिकाण्डक तक ले जाना चाहिये । द्विचरम स्थितिकाण्डककी स्थितियोंसे चरम स्थितिकाण्डककी स्थितियां असंख्यातगुणी हैं ।

परंपरोपनिधाकी अपेक्षा प्रथम स्थितिकाण्डक उपनिधामें कितने ही स्थितिकाण्डक संख्यातगुणे हीन हैं और कितने ही असंख्यातगुणे हीन हैं । उनमें जो आहारद्विकका द्विचरम स्थितिकाण्डक है उसका जो प्रदेशाग्र अन्तिम समयमें परस्थानमें संक्रान्त होता है वह जघन्य उद्वेलनासंक्रम है । उसके द्वारा संक्रान्त होता हुआ उक्त प्रकृतिका जो उस समय शेष कर्म है वह पल्योपमके असंख्यातवर्ग भागसे अपहृत होता है । परन्तु सब कर्म अंगुलके असंख्यातवर्ग भागसे अपहृत होता है ।

अब प्रकृतकी प्ररूपणा करते हैं— आहारद्विकका उद्वेलनकालके भीतर उद्वेलनसंक्रम होता है । अन्तिम स्थितिकाण्डकमें गुणसंक्रम होता है । उसमें ही अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है ।

१ अ-काप्रत्योः 'सहं', ताप्रती 'सहं ( व्वं )' इति पाठः । २ प्रतिपु 'चट्टिदिखंडयस्स' इति पाठः ।

३ ताप्रती 'खंडयमुवणिहा य अत्थि । काणिचि' इति पाठः ।

उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सासणसम्माइट्ठि ति अधापवत्तसंक्रमो । उवरि असंक्रमो, पडिग्गहाभावादो । सत्तमपुढविणोरइएसु विज्झादसंक्रमो । तेउ-वाउ-काइएसु उव्वेच्छणसंक्रमो, तत्थ उव्वेच्छणपाओग्गपरिणामाणमुवलंभादो । चरिमुव्वेच्छणखंडए गुणसंक्रमो । तस्सेव चरिमफालीए सव्वसंक्रमो ।

तिण्णिसंजलण-पुरिसवेदाणमधापवत्तसंक्रमो सव्वसंक्रमो चेदि दोण्णि संक्रमो होंति । तं जहा— तिण्णं संजलणाणं पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठि ति अधापवत्तसंक्रमो । चरिमखंडयचरिमफालीए एदासिं सव्वसंक्रमो ।

हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं अधापवत्तसंक्रमो गुणसंक्रमो सव्वसंक्रमो चेदि तिण्णिसंक्रमा होंति । तं जहा— मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणचरिमसमयो ति एदासिमधापवत्तसंक्रमो । उवरि गुणसंक्रमो जाव चरिमट्ठिदिखंडयदुचरिमफालि ति । चरिमफालीए सव्वसंक्रमो ।

ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसह-तित्थयराणमधापवत्तसंक्रमो विज्झादसंक्रमो चेदि दोण्णि संक्रमा । तं जहा— ओरालियदुग-पढमसंघडणाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि ति अधापवत्तसंक्रमो, तत्थ वंधदंसणादो । असंखेज्ज-वासाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु विज्झादसंक्रमो, तत्थ एदासिं वंधाभावादो । तित्थयरस्स

उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है । आगे उसका संक्रम नहीं होता है, क्योंकि, प्रतिग्रह प्रकृतिका अभाव है । सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उसका विध्यातसंक्रम होता है । तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें उसका उद्वेलनसंक्रम होता है, क्योंकि, वहां उद्वेलनके योग्य परिणाम पाये जाते हैं । अन्तिम उद्वेलनकाण्डकमें गुणसंक्रम होता है । उसीकी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है ।

तीन संज्वलन और पुरुषवेदके अधःप्रवृत्तसंक्रम और सर्वसंक्रम ये दो संक्रम होते हैं । यथा— तीन संज्वलन कषायों और पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है । इनके अन्तिम काण्डककी अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है ।

हास्य, रति, भय और जुगुप्साके अधःप्रवृत्तसंक्रम, गुणसंक्रम और सर्वसंक्रम ये तीन संक्रम होते हैं । यथा— मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूवकरणके अन्तिम समय तक इनका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है । आगे अन्तिम स्थितिकाण्डकको द्विचरम फालि तक गुणसंक्रम होता है । अन्तिम फालिका सर्वसंक्रम होता है ।

औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्पभनाराचसंहनन और तीर्थकर प्रकृतिके अधःप्रवृत्तसंक्रम और विध्यातसंक्रम ये दो संक्रम होते हैं । यथा— औदारिकद्विक और प्रथम संहननका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, क्योंकि, वहांपर उनका बन्ध देखा जाता है । असंख्यातवर्षायुष्क तिर्यचों और मनुष्योंमें इनका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, उनमें इनका बन्ध नहीं होता । तीर्थकर प्रकृतिका असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अपुच्चकरणो त्ति ताव अधापवत्तसंकमो । मिच्छाडिट्ठिम्हि विज्झादसंकमो, तत्थ वंधाभावादो<sup>१</sup> ।

गुणसंकमेण संकममाणस्स अवहारकालो थोवो । अधापवत्तसंकमेण संकामयंतस्स अवहारकालो असंखेज्जगुणो । विज्झादसंकमेण संकामयंतस्स अवहारकालो असंखे० गुणो । एदमप्पावहुअं उक्कस्सपदेससंकमभागहाराणं, ण सव्वेसिं; विज्झादसंकमभाग-हारादो अधापवत्तभागहारस्स विसेसहोणत्तुवलंभादो । एदं कुदो णव्वदे ? पच्चक्खण-लोभजहणसंकमदव्वादो केवलणाणावरणजहणसंकमदव्वं विसेसाहियं ति उवरिम-अप्पावहुगादो । उव्वेळणसंकमेण संकामयंतस्स अवहारकालो असंखे० गुणो । एदमप्पा-वहुअं एत्थ अवहारेयव्वं । एवं परुवणा समत्ता ।

एत्तो सामित्तं । तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सओ<sup>२</sup> पदेससंकमो कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो सत्तमादो पुढवीदो मदो तिरिक्खो जादो तदो तस्स आवलियतव्वभव-त्यस्स उक्कस्सगो मदिआवरणस्स पदेससंकमो । चटुणाणावरण-चटुदंसणावरण पंचंत-राइयाणं मदिणाणावरणभंगो<sup>३</sup> । णिद्दा-पयलाणं उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? गुणिद-

अपूर्वकरण तक अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है । मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में उसका विध्यातसंक्रम होता है, क्योंकि, वहाँ उसका वन्ध नहीं होता ।

गुणसंक्रमके द्वारा संक्रान्त होनेवाले प्रदेशाप्रका अवहारकाल स्तोक है । अधःप्रवृत्त-संक्रमके द्वारा संक्रान्त होनेवाले प्रदेशाप्रका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । विध्यातसंक्रमके द्वारा संक्रान्त होनेवाले प्रदेशाप्रका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । यह अल्पबहुत्व उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमभागहारोंका है, न कि सब भागहारोंका; क्योंकि, विध्यातसंक्रमभागहारसे अधः-प्रवृत्तसंक्रमभागहार विशेष हीन पाया जाता है ।

शंका— यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान— वह प्रत्याख्यानावरणलोभके जघन्य संक्रमद्रव्यसे केवलज्ञानावरणका जघन्य संक्रमद्रव्य विशेष अधिक है, इस आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे जाना जाता है ।

उसकी अपेक्षा उद्वेलनसंक्रमसे संक्रान्त होनेवाले द्रव्यका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इस अल्पबहुत्वका यहाँ अवधारण करना चाहिये । इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहाँ स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीसे मरकर तिर्यंच हुआ है उसके आवली कालवर्ती तद्भवस्थ होनेपर मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । शेष चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमके स्वामित्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । निद्रा और प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम

१ ताप्रतौ 'तत्थ वंधाभावादो' इत्येतावानयं पाठो नास्ति । २ अप्रतौ 'आवरणउक्कस्सओ' इति पाठः ।

३ तत्तो उव्वट्ठिआ आवलिगासमयतव्वभवत्यस्स । आवरण-विग्गचोद्दसगोरावलिअसत्त उक्कोसो ॥ क. प्र. २-७९.

कम्मंसियस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स खवगस्स । थीणगिद्धितियस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स अणियद्धिखवयस्स सव्वसंक्रमेण थीणगिद्धि-  
तियचरिमफालिं संकामेतस्स । सादस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? जो गुणिद-  
कम्मंसियो सत्तमादो पुढवीदो मदो तिरिक्खो जादो, ताधे चैव सादं पवद्धं, तप्पाओग्ग-  
उक्कस्सियाए सादबंधगद्धाए गदो, पुणो असादं पवद्धं, तस्स आवलियादिकंतस्स  
उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । असादस्स णिदाभंगो ।

मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स  
सव्वलहुं दंसणमोहणीयं खवेतस्स अणियद्धिकरणे सव्वसंक्रमेण मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं  
चरिमफालीयो संकामेतस्स । सम्मत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? जो सत्तमाए

किसके होता है ? वह गुणितकर्मांशिक चरम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके होता है ।  
स्त्यानगृद्धित्रयका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? वह सर्वसंक्रम द्वारा स्त्यानगृद्धित्रयकी  
अन्तिम फालिको संक्रान्त करनेवाले गुणितकर्मांशिक अनिवृत्तिकरण क्षपकके होता है । साता-  
वेदनीयका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीसे भरकर  
तिर्यंच हुआ है, जिसने उसी समयमें सातावेदनीयका वन्ध किया है, तथा जिसने तत्प्रायोग्य  
उत्कृष्ट सातावन्धककालको विताकर फिर असातावेदनीयका वन्ध किया है, उसके वन्धावलीके  
बीतनेपर उसका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । असातावेदनीयके प्रकृत स्वामित्वकी प्ररूपणा  
निद्राके समान है ।

मिध्यात्व और सम्यग्मिध्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? वह सर्वलघु-  
कालमें दर्शनमोहनीयकी क्षपणा करते हुए अनिवृत्तिकरणमें सर्वसंक्रम द्वारा मिध्यात्व और  
सम्यग्मिध्यात्वकी अन्तिम फालियोंको संक्रान्त करनेवाले गुणितकर्मांशिकके होता है । सम्यक्त्त्र  
प्रकृतिका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो सातवीं पृथिवीका नारकी गुणितकर्मांशिक

१ अप्रतौ 'चरिमफाली संकामेतस्स', काप्रतौ 'चरिमफालिसंक्रमोत्तस्स', ताप्रतौ 'चरिमफालि ( लि )  
संक्रामेतस्स' इति पाठः । कम्मचउक्के असुभाण ब्रह्ममाणेण सुहुम (खवग) रागंते । संछोभणम्मि नियगे चउवीसाए  
नियद्धिस्स ॥ क. प्र. २-८०. कर्मचतुप्के दर्शनावरण-वेदनीय-नाम-गोत्रलक्षणे या अश्रुभाः सूक्ष्मसंपरायावत्याया-  
मवध्यमानाः प्रकृतयो निद्राद्विकासातावेदनीय-प्रथमवर्जसंस्थान-प्रथमवर्जसंहननाश्रुभवर्णादिनक्कोपघाताप्रशस्त-  
विहायोगल्पपर्याप्तास्थिराश्रुम-दुर्भग-दुःस्वरानादेयायशःकार्ति-नीचैर्गोत्रलक्षणा द्वात्रिंशत् प्रकृतयस्तासां  
गुणितकर्मांशस्य क्षपकस्य सूक्ष्मसंपरायस्यान्ते चरमसमये उत्कृष्टः प्रदेशसंक्रमो भवति । तथाऽनिवृत्तिनादरस्य  
गुणितकर्मांशस्य क्षपकस्य मध्यमकपायाष्टक-स्त्यानगृद्धित्रिक-तिर्यग्द्विक-द्वि-त्रि-चतुरिन्द्रियजाति-सूक्ष्म-साधारण-  
नोक्कपावपट्करूपाणां चतुर्विंशतिप्रकृतीनां (२४) आत्मीय आत्मीये चरमसंछोभे चरमसंक्रमे उत्कृष्टप्रदेशसंक्रमो  
भवति । ( मलय ) .

२ तत्तो अणंतरागवसमयादुक्कत्त सायबंधं । वंधिय असायबंधालिगतसमयम्मि सायस्स ॥ क. प्र. २-८१.  
ततो नरकमवादनन्तरमन्ने समागतः ..... । मलय .

३ मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेससंक्रमो कस्स ? गुणिदकम्मंसिओ सत्तमादो पुढवीदो उव्वद्धिदो दो तिणि

पृथ्वीए णेरइयो गुणितकम्मंसियो अंतोमुहुत्तसेसे सम्मत्तं पडिवण्णो, उक्कस्सेण गुणसंक्रमकालेण सम्मत्तमावूरिय मिच्छत्तं गदो, तस्स पढमसमयमिच्छाइट्टिस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो ।

अणंताणुवंधीणं उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? सत्तमपुढविणेरइयस्स गुणितकम्मंसियस्स सच्चजहण्णमंतोमुहुत्तमेत्तमाउअं अत्थि त्ति अणंताणुवंधिचउक्कविसंजोजणमाढविय सच्चसंक्रमेण अणंताणुवंधिचउक्कचरिमफालिं संकामंतस्स । अट्टकसायाणमुक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? गुणितकम्मंसियस्स सच्चलहुं खवणाए अब्भुट्टियस्स अणियट्टि-

आयुमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त हो उत्कृष्ट गुणसंक्रमकालमें सम्यक्त्वको पूर्ण करके मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके सम्यक्त्व प्रकृतिका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

अनन्तानुबन्धी कपार्योका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो सातवीं पृथिवीमें स्थित गुणितकर्मांशिक नारकी जीव सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त मात्र आयुके शेष रहनेपर अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी विसंयोजनाको प्रारम्भ करके सर्वसंक्रमण द्वारा अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी अन्तिम फालिको संक्रान्त कर रहा है उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । आठ कपार्योका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक अनिवृत्तिकरण क्षपक सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होकर आठ कपार्योकी अन्तिम फालिको सर्वसंक्रम द्वारा संक्रान्त कर रहा है उसके

मग्गहनामि पंचिदियतिरिक्खवज्जत्तएणु उव्वण्णो अंतोमुहुत्तेण मणुस्सेसु आगदो । सच्चलहुं दंसणमोहणीयं खवेहुमादत्तो, जाधे मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्ते संद्युभमाणं संद्युद्धं ताधे तस्स मिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । क. पा. सु. पृ. ४०१, १९-२३. सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? जेण मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेससंक्रमं सम्मामिच्छत्ते पक्खत्तं, तेगेव जाधे सम्मामिच्छत्तं सम्मत्ते संपक्खत्तं ताधे तस्स सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । पृ. ४०२, २७-२८. संद्योभगाए दोण्हं मोहाणं वेयगस्स खणसेसे । उप्पाइय सम्मत्तं मिच्छत्तगए तमतमाए ॥ क. प्र. २-८२. क्षरकस्य द्वयोर्माहनीययोर्मिथ्यात्व-सम्यग्मिथ्यात्वरूपयोरारम्भीयात्मीयचरमसंश्लोभे सर्वसंक्रमेणोरुत्कृष्टः प्रदेशसंक्रमो भवति ।

१ सम्मत्तस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? गुणितकम्मंसिएण सत्तमाए पृथ्वीए णेरइएण मिच्छत्तस्स उक्कस्सपदेससंक्रममंतोमुहुत्तेण होइदि त्ति सम्मत्तमुप्पाइदं, सच्चुक्कस्सियाए पूरणाए सम्मत्तं पूरिदं । तदो उवसंतद्धाए पुण्णाए मिच्छत्तमुदीरयमाणस्स पढमसमयमिच्छाइट्टिस्स तस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । सो वुण अधापवत्तसंक्रमो । क. पा. सु. पृ. ४०२, २४-२६. X X X वेयगस्स खणसेसे । उप्पाइय सम्मत्तं मिच्छत्तगए तमतमाए ॥ क. प्र. २, ८२. तथा क्षणशेषेऽन्तर्मुहूर्तावसेसे आयुपि तमतमाभिधानायां सप्तमपृथिव्यां वर्तमान औपशमिकं सम्यक्त्वमुत्पाद्य दीर्घेण च गुणसंक्रमकालेन वेदकसम्यक्त्वपुञ्जं समापूर्य सम्यक्त्वात्प्रतिपतितो मिथ्यात्वं च प्रतिपद्य तत्प्रथमसमय एव वेदकसम्यक्त्वस्य मिथ्यात्वे उत्कृष्टं प्रदेशसंक्रमं करोति । (मलय)।

२ क. पा. सु. पृ. ४०३, २९-३०. भिन्नमुहुत्ते सेसे तच्चरमावसगाणि किञ्चेत्थ । संजोयणा विसंजोयगस्स संद्योभगा एवि ॥ क. प्र. २-८३.



ख्वंगंस्स अङ्कसायचरिमफालीए सव्वसंक्रमेण संकामैतस्स ।

णवुंसयवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? ईसाणे गुणिदकम्मंसियस्स इत्थिय-  
वेदेण पुरिसवेदेण वा सव्वलहुं खवणाए अब्भुद्धियस्स णवुंसयवेदचरिमफालिं सव्वसंक्रमेण  
संकामैतस्स । इत्थिवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो असं-  
खेज्जासाउएसु उववण्णो, सव्वरहस्सेण कालेण पलिदो० असंखे० भाएण पूरिदइत्थिवेदो  
तदो मदो जहणियाए देवद्धिदीए उववण्णो, तदो चुदो सव्वरहस्सेण कालेण  
खवणाए अब्भुद्धिदो, तदो तस्स जा इत्थिवेदचरिमफाली सव्वसंक्रमेण पुरिसवेदे संक्रमदि  
ताओ इत्थिवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । पुरिसवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो

उक्त आठ कपायोंका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

नपुंसकवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक देव ईशान  
कल्पमें [ संकलेश परिणामसे एकेन्द्रिय प्रायोग्य बन्ध करता हुआ नपुंसकवेदको चार चार  
वांधकर वहांसे च्युत हो स्त्री अथवा पुरुष उत्पन्न होता है और तत्पश्चात् मासपृथक्त्व अधिक  
आठ वर्षोंके वीतनेपर ] स्त्री या पुरुषवेदके साथ सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत हो सर्वसंक्रम द्वारा  
नपुंसकवेदकी अन्तिम फालिको संक्रान्त करता है उसके नपुंसकवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।  
स्त्रीवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक असंख्यातवर्षायुष्क जीवोंमें  
उत्पन्न होकर सर्वलघु कालस्वरूप पल्योपमके असंख्यातवर्ष भागमें स्त्रीवेदको पूर्ण करके मृत्युको प्राप्त  
होता हुआ जघन्य देवस्थिति ( दस हजार वर्ष ) के साथ देव उत्पन्न हुआ है, तत्पश्चात् वहांसे  
च्युत होकर सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होकर जब वह स्त्रीवेदकी अन्तिम फालिको सर्वसंक्रम  
द्वारा पुरुषवेदमें संक्रान्त करता है तब उसके स्त्रीवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ?

विशेषार्थ— यद्यपि तत्त्वार्थसूत्र आदि अधिकांश ग्रन्थोंमें भोगभूमियोंमें अकालमृत्यु  
(कदलीघातमरण) का प्रतिषेध किया गया है, तथापि कुछ आचार्य वहां अकालमरणको भी स्वीकार

१ अट्टण्हं कसायाणमुक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? गुणिदकम्मंसिओ सव्वलहुं मणुमगइमागदो अट्टवस्सिओ  
खवणाए अब्भुद्धिदो । तदो अट्टण्हं कसायाणमपच्छिमद्धिदिल्लंढयं चरिमसमयसंछुहमाणयस्स तस्स अट्टण्हं  
कसायाणमुक्कस्सओ पदेससंक्रमो । क. पा. सु. पृ. ४०३, ३१-३२.

२ अ-काप्रत्योः 'ईसाणे गुणियस्स', ताप्रतौ 'ईसाणे गुणि [ दकम्मंसि ] यस्स' इति पाठः ।

३ णवुंसयवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? गुणिदकम्मंसिओ ईसाणादो आगदो सव्वलहुं खवेदुमादत्तो ।  
तदो णवुंसयवेदस्स अपच्छिमद्धिदिल्लंढयं चरिमसमयसंछुहमाणयस्स तस्स णवुंसयवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो ।  
क. पा. सु. पृ. ४०४, ३८-३९. ईसाणागयपुरिसस्स इत्थियाए य अट्टवासाए । मासपुषत्तवमहिए नपुंसगे  
सव्वसंक्रमेण ॥ क. प्र. २-८४. ४ अ-काप्रत्योः 'तदो बुच्चदे सव्वरहस्सेण, ताप्रतौ 'तदो बुच्चदे ( चुदो )  
सव्वरहस्सेण' इति पाठः । ५ इत्थिवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? गुणिदकम्मंसिओ असंखेज्जावत्सा-  
उएसु इत्थिवेदं पूरेदूण तदो क्रमेण पूरिदकम्मंसिओ खवणाए अब्भुद्धिदो तदो चरिमद्धिदिल्लंढयं चरिमसमयसंछुह-  
माणयस्स तस्स इत्थिवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । क. पा. सु. पृ. ४०४, ३४-३५. इत्थिए भोगभूमिसु  
जीविय वासाणसंखियाणि तवो । हस्सटिई देवत्ता सव्वलहुं सव्वसंछोमे ॥ क. प्र. २-८५.

६ अ-काप्रत्योः 'पुरिसवेदयस्स' इति पाठः ।

कस्स ? जेण ईसाणदेवेसु णसुंसयवेदो पूरिदो, तदो असंखेज्जवासाउएसु इत्थिवेदो पूरिदो, तदो मदो जहण्णाए देवमुद्धिदो उववण्णो, तदो मदो मणुस्सो जादो, सव्वलहुं अण्णदरेण लिंगेण खवणाए अब्भुद्धिदो, तेण जाव सव्वसंकमेण पुरिसवेदो संकामिदो ताव तस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो<sup>१</sup> ।

छण्णोकसायाणमुक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? जो गुदिणकम्मंसियो सव्वलहुं खवणाए अब्भुद्धिदो, तेण जाधे सव्वसंकमेण छण्णोकसायाणं चरिमफाली संकामिदा ताधे तेसिमुक्कस्सओ पदेससंकमो ।

क्रोधसंजलणाए उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? जो ईसाणदेवेसु णसुंसयवेदं

करते हैं । इसी मतभेदके अनुसार यहां भोगभूमियोंमें अपमृत्युको स्वीकार कर उपर्युक्त स्त्रीवेदके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमको घटित किया गया है । यहां चूर्णिसूत्रकार यतिवृषभाचार्यका क्या अभिमत रहा है, यह ज्ञात नहीं होता; कारण कि उन्होंने 'असंखेज्जवसाउएसु इत्थिवेदं पूरेदूण' इतना मात्र निर्देश किया है— पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र सर्वलघु कालका निर्देश नहीं किया । कर्मप्रकृति आदि श्वेतास्वर ग्रन्थोंमें यह अभिमत अवश्य पाया जाता है । वहां प्रसिद्ध टीकाकार आचार्य मलर्यागिरिने बतलाया है कि स्त्रीवेदका यह उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम इसी युक्तिसे बन सकता है, अतः इसी युक्तिका अनुसरण करना चाहिये; क्योंकि, इसके अतिरिक्त अन्य युक्तियां चिरन्तन ग्रन्थोंमें देखी नहीं जातीं । यथा— इहैवमेव स्त्रीवेदस्योत्कृष्टमापूरणमुत्कृष्टश्च प्रदेशसंक्रमः केवलज्ञानेनोपलब्धो नान्यथेत्येवैव युक्तिरत्रानुसर्तव्या, न युक्त्यन्तराणि; युक्त्यन्तराणां चिरन्तनग्रन्थेष्वदर्शनतो निर्मूलतयाऽन्यथापि कर्तुमशक्यत्वात् । क. प्र. २, ८५.

पुरुषवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जिसने ईशान कल्पके देवोंमें नपुंसक वेदको पूर्ण किया है, तत्पश्चात् असंख्यातवर्षायुष्कोंमें स्त्रीवेदको पूर्ण किया है, तत्पश्चात् मरणको प्राप्त होकर जो जघन्य देवस्थितिसे उत्पन्न हुआ है, और तत्पश्चात् मरणको प्राप्त होकर मनुष्य होता हुआ सर्वलघु कालमें अन्यन्तर लिंगके साथ क्षपणामें उद्यत होता है उसके जब तक सर्वसंक्रम द्वारा पुरुषवेद संक्रान्त होता है तब तक पुरुषवेदका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

छह नोकपायोंका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणिकर्मांशिक सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होकर जब सर्वसंक्रम द्वारा छह नोकपायोंकी अन्तिम फालिको संक्रान्त करता है तब उसके उनका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

संज्वलन क्रोधका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो ईशान कल्पके देवोंमें नपुंसक

१ अ-काप्रत्योः 'वासाउएसो' इति पाठः ।

२ पुरिसवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? गुणिदकम्मंसिओ इत्थि-पुरिस-णसुंसयवेदे पूरेदूण तदो सव्वलहुं खवणाए अब्भुद्धिदो, पुरिसवेदस्स अपच्छिपट्ठिदिखंडथं चरिमसमयसंखुहमाणयस्स तस्स पुरिसवेदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो । क. पा. सु. पृ. ४०४, ३६-३७. वरिसवरित्थि पूरिय सम्मत्तमसंखवासियं लहियं । गंता मिच्छत्तमओ जहन्नदेवठिई भोच्चा ॥ आगंतु लहुं पुरिसं संखुममाणस्स पुरिसवेयस्स । क. प्र. २, ८६-८७.

\*\*\*वर्षवरो नपुंसकवेदः । मलय,

पूरिय, असंखेज्जवासाउएसु इत्थिवेदं पूरिय, पुणो इत्थिवेदे पडिबुण्णे सम्मत्तं लहिय तदो पुरिसवेदो पूरिदो, पुणो पुरिसवेदे पडिबुण्णे' मिच्छत्तं गदो, तदो मदो जहण्णियाए देवड्ढिदीए उववण्णो, तदो बुदो' मणुस्सेसु अट्ठवस्सिएसु उववण्णो, अट्ठवस्सिएण जादेण संजमो पडिबुण्णो, अंतोमुहुत्तेण खवणाए अब्भुट्ठिदो, तदो तेण जावै' क्रोधो सच्चसंक्रमेण संकामिदो तावै' तस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । एदेणेव जीवेण सच्चसंक्रमेण माणे संकामिदे माणसंजलणाए उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । [ एदेणेव जीवेण सच्चसंक्रमेण मायाए संकामिदाए मायासंजलणाए उक्कस्सओ पदेससंक्रमो' । ] लोहसंजलणाए उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? जेण गुणितकम्मसिएण सच्चरहस्सेण कालेण चत्तारिवारं कसाओ' उवसामिदो, तेण सच्चलहुएण कालेण खवणाए अब्भुट्ठिदेण चरिमसमयअकद'अंतरेण

वेदको पूर्ण करके असंख्यातवर्षायुष्कोंमें स्त्री वेदको पूर्ण करता है, फिर स्त्रीवेदके पूर्ण हो जानेपर जो सम्यक्त्वको प्राप्त करके तत्पश्चात् पुरुषवेदको पूर्ण करता है, फिर पुरुषवेदके पूर्ण हो जानेपर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर तत्पश्चात् मृत्युको प्राप्त होता हुआ जघन्य देवस्थितिसे उत्पन्न होता है, वहांसे च्युत होकर जो अष्टवर्षीय मनुष्योंमें उत्पन्न हो आठ वर्षका होता हुआ संयमको प्राप्त होकर अन्तर्मुहूर्त कालमें क्षपणामें उद्यत होता है, उसके जब संज्वलन क्रोध सर्वसंक्रम द्वारा संक्रमको प्राप्त होता है तब उसका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । यही जीव जब सर्वसंक्रम द्वारा संज्वलन ज्ञानको संक्रान्त करता है तब उसके संज्वलन मानका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । [ यही जीव जब सर्वसंक्रम द्वारा संज्वलन मायाको संक्रान्त करता है तब उसके संज्वलन मायाका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । ] संज्वलन लोभका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक सर्वह्रस्व कालमें चार बार कपाओंका उपशम करके सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होता हुआ जब अकृतान्तरकरण रहनेके अन्तिम समयमें संज्वलन लोभको संक्रान्त

१ प्रतिपु 'पडिबुण्णे' इति पाठः । २ अप्रती 'तदो बुद्धो' इति पाठः ।

३ काप्रती 'तेणेव जाव', ताप्रती 'तेण जावे' इति पाठः । ४ का-ताप्रत्योः 'तावे' इति पाठः ।

५ क्रोधसंजलणस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? जेण पुरिसवेदो उक्कस्सओ संछुद्धो क्रोधे तेणेव जावे माणे क्रोधो सच्चसंक्रमेण संछुद्धि तावे तस्स क्रोधस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो । एदस्स चैव माण-संजलणस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कायव्वो, णवरि जावे माणसंजलणो मायासंजलणे संछुमइ तावे । एदस्स चैव मायासंजलणस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो कायव्वो, णवरि जावे मायासंजलणो लोभसंजलणे संछुमइ तावे । क. पा. सु. पृ. ४०४, ४०-४३. तस्सेव सगे क्रोहस्स माण-मायाणमवि कसिणो ॥ क. प्र. २-८७. तथा तस्यैव पुरुषवेदोत्कृष्टप्रदेशसंक्रमस्वामिन्नः संज्वलनक्रोधस्य संसारं परिभ्रमता उपचितस्य क्षपणकाले प्रकृत्यन्तरदलिकानां गुणसंक्रमेण प्रचुरीकृतस्य त्वके अत्मीये चरमसंछोमे उत्कृष्टः प्रदेशसंक्रमो भवति । अत्रापि बन्धव्यवच्छेदादावाक् आवलिकाद्विकेन कालेन यद् वदं तन्मुक्त्वा शेषस्य चरमसंछोमे उत्कृष्टः प्रदेशसंक्रमो दृष्टव्यः । एवं मान-मायोरपि वाच्यम् । मलय.

६ अकाप्रत्योः 'कसाय', ताप्रती 'कसायं' इति पाठः । ७ अ-काप्रत्योः 'अकइ-' इति पाठः ।

जावे लोभो संक्रामिदो तावे तस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो<sup>१</sup> ।

आउआणं चटुणं पि णत्थि पदेससंकमो । गिरयगइ-गिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो पुव्वकोटिपुधत्तं मणुस्स-तिरिक्खे<sup>२</sup> वंधंतो अच्छिदो, पच्छा खवणाए अब्भुद्धिदो, तदो तेण जाधे सव्वसंकमेण गिरय-गइ-गिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं चरिमफालीयो संक्रामिदाओ ताधे तेसिमुक्कस्सओ पदेससंकमो<sup>३</sup> ।

तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीणं उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो सत्तमादो पुढवीदो उव्वद्धिदो<sup>४</sup>, समयाविरोहेण मणुस्सेसु उववणो,

करता है तब उसके संज्वलन लोभका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

चारों ही आयुकर्मांका प्रदेशसंक्रम नहीं होता । नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक पूर्वकोटिपृथक्त्व काल तक बन्ध करता हुआ मनुष्य व तिर्यचोमें स्थित रहता है, पश्चात् क्षणामें उद्यत होकर जब वह सर्वसंक्रम द्वारा नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी अन्तिम फालियोंको संक्रान्त करता है तब उसके उन दोनों प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

तिर्यग्गति और तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीसे निकलकर और समयाविरोधसे मनुष्योंमें उत्पन्न होकर

१ का-ताप्रत्योः 'जावे' इति पाठः । २ काप्रती 'तावे' इति पाठः ।

३ लोभसंज्वलणस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? गुणिदकम्मंसियो सव्वलहुं खवणाए अब्भुद्धिदो अंतरं से काले कादूण लोहस्स असंक्रामगो होहिदि ति तस्स लोहस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो । क. पा. सु. पृ. ४०५, ४४-४५. चउक्खसमित्तु खिप्पं लोभ-जसाणं ससंकमस्संते । क. प्र. २, ८८. अनेकभवभ्रमणेण चतुगो वागान् यावन्मोहनीयमुपशमय्य, चतुर्थोपशमनानन्तरं शीघ्रमेव क्षपकश्रेणिं प्रतिपन्नस्य तस्यैव गुणित-कर्मांशस्य स्वसंक्रमस्यान्ते चरमसंक्षोभे इत्यर्थः, संज्वलनलोभ-यशःकीर्त्योक्तकृष्टः प्रदेशसंकमो भवति । इहोप-शमश्रेणिं प्रतिपन्नेन सता प्रकृत्यन्तरदलिकानां प्रभूतानां गुणसंक्रमेण तत्र प्रक्षेपात् द्वे अपि संज्वलनलोभ-यशः-कीर्तिप्रकृती निरन्तरमापूयंते, तत उपशमश्रेणिग्रहणम् । आसंसारं च परिभ्रमता जन्तुना मोहनीयस्य चतुर एव वारान् यावदुपशमः क्रियते, न पंचममपि वारम्, ततश्चतुरूपशमय्येत्युक्तम् । तथा संज्वलनलोभस्य चरमसंक्षोभोऽन्तरकरणचरमसमये दृष्टव्यः, न परतः; परतस्तस्य संक्रामाभावात्, "अंतरकरणमि कए चरित्तमोहे णु ( णं )-पुव्विसंकमणं" इति वचनात् । मलय.

४ अ-काप्रत्योः 'मणुस्समणुस्सतिरिक्खे',-ताप्रती [ मणुस ] मणुस-तिरिक्खे इति पाठः ।

५ पूरित्तु पुव्वकोट्टीपुहुत्त संछोभगस्स निरयदुगं । क. प्र. २-९०. पूरित्तुत्ति— नरकद्विकं नरकगति-नरकानुपूर्वीलक्षणं पूर्वकोटिपृथक्त्वं यावत्पूरयित्वा, सससु पूर्वकोट्यायुष्केषु तिर्यग्भवेषु भूयो भूयो बध्धेत्यर्थः । ततोऽष्टममवे मनुष्यो भूत्वा क्षपकश्रेणिं प्रतिपन्नोऽन्यत्र तन्नरकद्विकं संक्रमयन् चरमसंक्षोभे सर्वसंक्रमेण तस्योत्कृष्टं प्रदेशसंक्रमं करोति । मलय.

६ अ-काप्रत्योः 'उवद्धिदो', ताप्रती 'उवद्धिदो' इति पाठः ।

सव्वलहुं खवणाए अब्भुद्धिदो, जाधे तेण एदासिं चरिमफाली सव्वसंक्रमेण संकामिदा ताधे तस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो ।

मणुसगइ-मणुसगइ-पाओग्गाणुपुव्वीणमुक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? जो गुणिद-कम्मंसिओ सत्तमाए पुढवीए अंतोमुहुत्तेण सम्मत्तं पडिवण्णे सव्वणिरुद्धे सेसे मिच्छत्तं गदो, उव्वद्धिदो<sup>१</sup>, तिरिक्खेसुव्वण्णो, तस्स पढमसमयतिरिक्खस्स उक्कस्सओ पदेससंक्रमो<sup>३</sup> ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाण-मुक्कस्सओ पदेससंक्रमो कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो मणुस्स-तिरिक्खेसु एदाओ पयडीओ पुव्वकोडिपुधत्तं बंधिय खवणाए अब्भुद्धिदो, तस्स जाधे परभवियणामाणं बंधवोच्छेदो जादो, तदो उवरि बंधावलियाए अदिकंताए एदासिं पयडीणं उक्कस्सओ पदेससंक्रमो<sup>५</sup> ।

सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होता है, वह जब इनकी अन्तिम फालिको सर्वसंक्रम द्वारा संक्रान्त करता है तब इसके उनका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीमें प्रारम्भिक अन्तर्मुहूर्तमें सम्यक्त्वको प्राप्त होकर सर्वनिरुद्ध अर्थात् आयुमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, फिर वहांसे निकलकर जो तिर्यचोमें उत्पन्न हुआ है उसके तिर्यच होनेके प्रथम समयमें मनुष्यगति और मनुष्यगति-प्रायोग्यानुपूर्विका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्विका, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघातका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक जीव मनुष्यों व तिर्यचोमें इन प्रकृतियोंको पूर्वकोटिपृथक्त्व तक बांधकर क्षपणामें उद्यत होता है, उसके जब परभविक नाभकर्मांकी बन्धव्युच्छिन्ति हो जाती है तब उसके पश्चात् बन्धावलीके व्यतीत होनेपर इन प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

१ अ-काप्रत्योः 'उव्वद्धिदो' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योर्नोपलभ्यते पदमिदम् ।

३ सव्वचिरं सम्मत्तं अणुपालिय पूरइत्तु मणुयदुगं । सत्तमखिइनिग्गइए पढमे समए नरहुगस्स ॥ क. प्र. २-९१. सव्वचिर ति— सव्वचिरं सर्वोत्कृष्टं कालं अन्तर्मुहूर्तो नानि त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणीत्यर्थः । सम्यक्त्वमनुपाल्य नारकः सप्तमक्षितौ वर्तमानः सम्यक्त्वप्रत्ययं तावन्तं कालं मनुजद्विकं मनुजगति-मनुजानु-पूर्वोलक्षणमापूर्य बद्ध्वा चरमेऽन्तर्मुहूर्ते मिथ्यात्वं गतः । ततस्तन्निमित्तं तिर्यग्द्विकं तस्य बध्नतो गुणितकर्मांशस्य सप्तमपृथिव्याः सकाशाद् विनिर्गतस्य प्रथमसमये एव मनुजद्विकं यथाप्रवृत्तसंक्रमेण तस्मिन् तिर्यग्द्विके बध्यमाने संक्रमयतस्तस्य मनुजद्विकस्योत्कृष्टः प्रदेशसंक्रमो भवति । मलय.

४ देवगईनवगस्स य सगबंधंतालिगं गंतुं ॥ २ क. प्र. २-९०. तथा देवगतिनवकं देवगति-देवानुपूर्विका वैक्रियिकसप्तकलक्षणं यदा पूर्वकोटिपृथक्त्वं यावदापूर्वाष्टमभवे क्षपकश्रेणिं प्रतिपन्नः सन् स्वकबन्धान्तात् स्वबन्ध-व्यवच्छेदादनन्तरमावलिकामात्रं कालमतिक्रम्य यशःकीर्तौ प्रक्षिपति तदा तस्योत्कृष्टप्रदेशसंक्रमो भवति । तदानीं हि प्रकृत्यन्तरदलिकानामपि गुणसंक्रमेण लब्धानां संक्रमावलिकातिक्रान्तत्वेन संक्रमः प्राप्यत इति कृत्वा । मलय.

आहारशरीर-आहारशरीरंगोवंग-बंधन-संघादाणं उक्त्सओ पदेससंकमो कस्स ? जेण गुणितकम्मसिण्ण एदाहि चट्ठहि पयडीहि चिरसंचिदाहि चत्तरिवारं कसायां उवसामिदा, तदो तस्स खवणाए अब्भुट्ठियस्स परभवियणामाणं वंधे वोच्छिण्णे आवलिया-दिकंतस्स उक्त्सओ पदेससंकमो<sup>१</sup> ।

ओरालिय-तेजा-कम्मइयशरीर-तदंगोवंग-बंधन-संघादाणं मदिआवरणभंगो । पसत्थ-संठाण-संघडण-सुभगादेज-सुस्सराणमुक्त्सओ पदेससंकमो कस्स ? जो गुणितकम्मसिओ वेद्धावट्ठियो सम्मत्तमणुपालेयूण चट्ठुक्खुत्तं कसाए उवसामिय खवणाए अब्भुट्ठियो, तस्स परभवियणामाणं वंधवोच्छेदादो आवलियादिकंतस्स उक्त्सओ पदेससंकमो । णवरि वज्जरिहसंघडणस्स चरिमदेवभवचरिमसमए उक्त्सओ पदेससंकमो<sup>२</sup> ।

आहारशरीर, आहारशरीरंगोपांग, आहारशरीरबन्धन और आहारशरीरसंघातका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जिस गुणितकर्मांशिक जीवने चिरसंचित इन चार प्रकृतियोंके साथ चार बार कपायोंका उपशम किया है और तत्पश्चात् जो क्षपणामें उद्यत हुआ है उसके परभविक नामकर्मांकी बन्धव्युच्छित्ति हो जानेके पश्चात् आवली मात्र कालके बीतनेपर उक्त चार प्रकृतियोंका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है ।

औद्यारिक, तैजस व कामेण शरीर तथा उनके आंगोपांग, बन्धन और संघातकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । प्रशस्त संस्थान, प्रशस्त संहनन, सुभग, आदेय और सुस्वरका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक दो छयासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन करके और चार बार कपायोंको उपशमा करके क्षपणामें उद्यत हुआ है, उसके परभविक नामकर्मांकी बन्धव्युच्छित्ति हो जानेके पश्चात् आवली मात्र कालके बीतनेपर उनका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । विशेष इतना है कि वज्रर्षभनाराचसंहननका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम अन्तिम देवभवके अन्तिम समयमें होता है ।

१ अ-काप्रत्योः 'कसाय', ताप्रतौ 'कसायया' इति पाठः । २ आहारग-तित्थयरं थिरसममुक्त्सओ सम(ग) कालं ॥ क. प्र. २-९२. इयमत्र भावना— आहारससकं तीर्थकरनाम चोत्कृष्टं स्वबन्धकालं यावदापूर्वं तत्राहारसप्तकस्य स्वबन्धकाल उत्कृष्टो देशोनां पूर्वकोटी यावत्संयममनुपालयतो यावानप्रमत्तताकालस्तावान् सर्वो वेदितव्यः । मलय.

३ सम्मदिट्ठिस्स सुभधुवाओ वि । सुभसंधयणजुयाओ वत्तीससयोदहिचियाओ ॥ क. प्र. २-८९. सम्यग्दृष्टेर्यां शुभध्रुवबन्धिन्यः पंचेन्द्रियजाति-समचतुरस्रसंस्थान-पराघातोच्छ्वास-प्रशस्तविहायोगति-त्रस-वादर-पर्याप्त-प्रत्येक-सुभग-सुस्वरादेयलक्षणा द्वादशप्रकृतयः शुभसंहननयुता वज्रर्षभनाराचसंहननसहिताः । × × × तथाहि— षट्षष्टिसागरोपमाणि यावत्सम्यक्त्वमनुपालयन् एता बध्नाति । ततोऽन्तर्मुहूर्तं कालं यावत् सम्यग्मिथ्यात्वमनुभूय पुनरपि सम्यक्त्वं प्रतिपद्यते । ततो भूयोऽपि सम्यक्त्वमनुभवन् षट्षष्टिसागरोपमाणि यावदेताः प्रकृतीः बध्नाति । तदेवं द्वात्रिंशदभ्यधिकं सागरोपमशतं यावत् सम्यग्दृष्टिर्भूवा आपूर्य, वज्रर्षभनाराचसंहननं तु मनुष्यभवहीनं यथासंभवमुत्कृष्टं कालमापूर्वं, ततः सम्यग्दृष्टिर्भूवा अपूर्वकरणगुणस्थानके बन्धव्यवच्छेदानन्तर-मावलिकामात्रं कालमातकम्य यशःकीर्ती संक्रमयतस्तासामुत्कृष्टः प्रदेशसंक्रमः । मलय.

पसत्थाणं धुवबंधिणामाणं<sup>१</sup> सम्मत्तद्धा सन्वरहस्सा कायव्वा, अण्णहा गुणितत्ता-  
णुववत्तीदो । चटुक्खुत्तं कसाए उवसामेदूण खवणाए अब्भुद्धिदो तस्स परभविय-  
णामबंधवोच्छेदादो आवलियादिकंतस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो । एवं थिर-सुभाणं ।  
परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं सुहणामभंगो । जसक्किचीए  
सुहणामभंगो । णवरि परभवियणामाणं बंधवोच्छेदस्स चरिमसमए उक्कस्सओ पदेस-  
संकमो कायव्वो ।

एइंदिय-आदाव-थावरणामाणं उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? जो गुणितकम्मंसिओ  
ईसाणदेवे पच्छायदो साइं पि अणुवसामिदकसाओ सव्वलहुं खवणाए अब्भुद्धिदो, तस्स  
चरिमसमयसंलुहमाणयस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो<sup>३</sup> । उज्जीवणामाए वि ईसाणदेव-  
पच्छायदे खवणे सव्वसंकमेण संकामेंतए उक्कस्ससामित्तं दादव्वं । किं कारणं ? तसजादि-  
णामाओ बहुआओ पयडीओ बंधदि, एइंदियजादिणामाओ थोवाओ बंधदि । तदो  
णेरइयो तसजादिणामपडिभागं<sup>४</sup> बंधदि उज्जीवणामं, ईसाणदेवा पुणं तं चैव एइंदिय-

प्रशस्त ध्रुवबन्धी नामकर्मोका सम्यक्त्वकाल सवसे ह्रस्व करना चाहिये, क्योंकि, इसके  
बिना गुणितत्व बन नहीं सकता । चार वार कपायोंको उपशमा कर जो क्षपणामें उद्यत होता है  
उसके परभविक नामकर्मोकी बन्धव्युच्छित्तिके पश्चात् आवली मात्र कालके वीतनेपर उत्कृष्ट  
प्रदेशसंक्रम होता है । इसी प्रकार स्थिर और शुभ प्रकृतियोंके विषयमें कहना चाहिये ।

परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीकी प्ररूपणा  
शुभ नामकर्मके समान है । यशकीर्तिकी भी प्ररूपणा शुभ नामकर्मके समान है । विशेषता इतनी  
है कि उसका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम परभविक नामोकी बन्धव्युच्छित्तिके अन्तिम समयमें  
करना चाहिये ।

एकेन्द्रिय, आतप और स्थावर नामकर्मोका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो  
गुणितकर्माशिक ईशान देव देवपर्यायसे पीछे आकर एक वार भी कपायोंको न उपशमा कर  
सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत होता है उसके निक्षेपण करते हुए अन्तिम समयमें उनका  
उत्कृष्ट-प्रदेशसंक्रम होता है । ईशानकल्पगत देवपर्यायसे पीछे आकर सवसंक्रमके द्वारा उद्योत  
नामकर्मका संक्रमण करनेवाले क्षपकके उसके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका स्वामित्व देना चाहिये ।

शंका—इसका करण क्या है ?

समाधान—त्रसजाति नामकर्मोको बहुत बांधता है और एकेन्द्रियजाति नामकर्मोको  
स्तोक बांधता है । इसलिये नारक जीव उद्योत नामकर्मको त्रसजाति नामकर्मके प्रतिभाग रूप  
बांधता है, परन्तु ईशान देव उसको ही एकेन्द्रियजाति नामकर्मके प्रतिभाग रूप बांधते हैं ।

१ प्रतिपु 'ध्रुवबंधिणामाणं' इति पाठः । २. अत्रतौ 'गुणितत्ता-', ताप्रतौ 'गुण (णि) दत्ता-', इति पाठः ।  
३ थावर-तजा-आयाजुजोयाओ नपुंसगसमाओ । क. प्र. २, ९२. ४ ताप्रतौ 'पयडिभागं' इति पाठः ।  
५ ताप्रतौ 'बंधदि, उज्जीवणामं ईसाणदेवा, पुणं' इति पाठः ।

जादिणामपडिभागं बंधदि । एदेण कारणेण ईसाणदेवपच्छायदे उक्कस्ससामित्तं दादव्वं ।

अप्पसत्थसंठाण - अप्पसत्थसंघडण - अप्पसत्थवण्ण- गंध-रस-फास - उवघाद-अप्प-सत्थविहायगइ-णीचागोद-अथिर - असुह - दूमग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसगित्तीणं उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? जो णेरइयो गुणिदकम्मंसियो सत्तमादो पुठवीदो उव्वड्ढिदो, सच्चरहस्सेण कालेण खवणाए अब्भुड्ढिदो, तस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो' । वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं उक्कं० कस्स ? तिरिक्ख-मणुस्सेसु पुव्वकोट्टिपुधत्तं विचड्ढिदूण कसाए अप्पुवसामिय सव्वलहुं जो खवेदि, तस्म चरिमसमयसंछोहयस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो । णवरि अपज्जत्तयस्स सुहुमसांपराइय-चरिमसमए ।

उच्चागोदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो कस्स ? जो गुणिदकम्मंसिओ चदुक्खुत्तं<sup>३</sup> कसाए उवसामेऊण मिच्छत्तं गदो, तदो चरिमस्स णीचागोदबंधयस्स पहमसमए रहरसेण कालेण सिज्झिहिदि त्ति उच्चागोदस्स उक्कस्सओ पदेससंकमो' । एवमुक्कस्स-सामित्तं समत्तं

इस कारण ईशानगत देवपर्यायसे पीछे आये हुए जीवके उद्योत नामकर्मके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका स्वामित्व देना चाहिये ।

अप्रशस्त संस्थान, अप्रशस्त संहनन, अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, नीचगोत्र, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्ति; इनका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक नारकी जीव सातवीं पृथिवीसे निकलकर सर्वलघु कालमें क्षयणामें उद्यत होता है उस अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके उक्त प्रकृतिर्योका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो तिर्यचों और मनुष्योंमें पूर्वकोटिपृथक्त्व तक विचरण करके कपायोंको न उपशमा कर सर्वलघु कालमें क्षयणा करता है उसके संक्रम करते हुए अन्तिम समयमें उनका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । विशेष इतना है कि अपर्याप्त नामकर्मका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयमें होता है ।

उच्चगोत्रका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक चार वार कपायोंको उपशमा कर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, तत्पश्चात् [ नीचगोत्रको बांधता हुआ जो नीचगोत्रकी बन्धुच्युच्छित्तिके पश्चात् ] थोड़े ही कालमें सिद्धिको प्राप्त होनेवाला है उस अन्तिम समयवर्ती नीचगोत्रबन्धके उक्त अल्प सिद्धिकालके प्रथम समयमें उच्चगोत्रका उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम होता है । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम स्वामित्व समाप्त हुआ ।

१ कामचउक्के असुमाण वज्झमाणीण सुहुम (खवग) रागते । क. प्र. २, ८०. २ काप्रतौ 'साहारणाणं कुदो उक्कं०' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'चदुक्खेत्ते', ताप्रतौ 'चदुक्खे (क्खु)' त्तं इति पाठः ।

४ चउक्खसमित्तु मोहं मिच्छत्तगयस्स नीयद्धंतो । उच्चागोदककोसो तत्तो लहु सिज्झओ होइ ॥ क. प्र. २, ९३. चतुष्कृत्वश्च मोहोपशमः किल भवद्वयेन भवति । ततस्तृतीये भवे मिथ्यात्वं गतः सन् नीचगोत्रं व्रधाति । तच्च बध्नन् तत्रोच्चैर्गोत्रं संक्रमयति । ततः पुनरपि सम्यक्त्वमाद्योच्चैर्गोत्रं बध्नन् तत्र



एतो जहणयं पदेससंकमस्स सामित्तं । तं जहा— मदिआवरणस्स जहणपदेस-  
संक्रामओ को होदि ? जो अभवसिद्धियपाओग्गेण सच्चजहणसंतकर्मणेण चहुक्खुत्तो  
कसाए उवसामेदूण संजमासंजमं संजमं च बहुसो लद्धूण उपपणोहिणाणो यंतो खवेदि,  
तस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स जहणओ पदेससंकमो । सुद-मणपञ्जव-केवल-  
णाणावरणाणं मदिआवरणभंगो । एवं ओहिणाणावरणस्स वि । णवरि खवंतस्स ओहि-  
णाणं णत्थि त्तिवत्त व्वं ।

चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं मदिआवरणभंगो । ओहिदंसणावरणस्स ओहि-  
णाणावरणभंगो । णिद्दा-पयलाणं सुदावरणभंगो । णवरि णिद्दा-पयलाणं जहणसंकमो  
ओहिणाणस्स चैव होदि त्ति णियमो णत्थि । णिद्दा-पयलाणं वंधवोच्छेदस्स चरिमसमए  
चैव जहणसंकमो दायव्वो । थीणगिद्धितियस्स जहणपदेससंकमो कस्स ? जो खविद-

अब यहाँ जघन्य प्रदेशसंक्रमके स्वानित्वकी ग्रहणना की जाती है । यथा— सतिज्ञाना-  
वरणका जघन्य प्रदेश संक्रामक कौन होता है ? जो अभव्यसिद्धि प्रायोग्य सर्वजघन्य सत्कर्मके  
साथ चार बार कपायोंको उपशमा कर और बहुत बार संयमासंयम एवं संयमको प्राप्त करके  
उत्पन्न हुए अवधिज्ञानसे संयुक्त होता हुआ क्षपणा करता है उस अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म-  
सान्परायिकके सतिज्ञानावरणका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण  
और केवलज्ञानावरणकी ग्रहणना सतिज्ञानावरणके समान है । अवधिज्ञानावरणकी भी ग्रहणना  
इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि क्षपणा करते हुए उसके अवधिज्ञान नहीं होता, यह  
कहना चाहिये ।

चक्षु, अचक्षु और केवलदर्शनावरणकी ग्रहणना सतिज्ञानावरणके समान है ।  
अवधिदर्शनावरणकी ग्रहणना अवधिज्ञानावरणके समान है । निद्रा और प्रचलाकी ग्रहणना  
श्रुतज्ञानावरणके समान है । विशेष इतना है कि निद्रा और प्रचलाका जघन्य संक्रम अवधि-  
ज्ञानोंके ही होता है, ऐसा नियम नहीं है । निद्रा और प्रचलाके जघन्य संक्रमको बन्धव्युच्छेदके  
अन्तिम समयमें ही देना चाहिये । स्थानगृह्णत्रयका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता

नीचैर्गोत्रे संक्रमवति । एवं भूयो भूय उच्चैर्गोत्रे नीचैर्गोत्रे च व्रजतो नीचैर्गोत्रे बन्धव्युच्छेदानन्तरं शीघ्रमेव  
सिद्धिं गन्तुकान्तस्य नीचैर्गोत्रे चरमसमये उच्चैर्गोत्रस्य गुणसंक्रमणेन कथेन चोपचितीकृतस्योच्छ्रयः प्रदेश-  
संकमो भवति । मलयगिरि.

१ आवरणसत्तगमि उ सहाहिणा तं विणोहिज्जुबलमि । क. प्र. २, ९७. २ अ-काप्रत्योः 'ओहिदंसणावरण-  
भंगो' इति पाठः । ३ मप्रतिपाटोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'बोच्छेदो हत्स', ताप्रती 'बोच्छेदे हत्स' इति पाठः ।

४ निद्रादुगंताराइय-हासचलके य दधते ॥ क. प्र. २, ९७. निद्रादिकं निद्रा-प्रचलारूपं, अन्तरायचक्रं  
हास्यचतुष्कं हास्य-रति-मय-जुगुप्सालक्षणं, एतासामेकादशप्रकृतीनां (११) स्वन्वान्तसमये यथाप्रवृत्तसंक्रमेण  
जघन्यः प्रदेशसंक्रमो भवति । निद्रादिक-हास्यचतुष्टयबन्धव्युच्छेदानन्तरं गुणसंक्रमेण संक्रमो जायते । ततः  
प्रभूतं दलिकं लभ्यते । अन्तरायपञ्चकस्य (तु) बन्धव्युच्छेदानन्तरं संक्रम एव न भवति, पतद्ग्रहाप्राप्तेः,  
ततो बन्वान्तसमयग्रहणम् । मलय.

कम्मसंखिलकखणोणागंतूण संजमं<sup>१</sup> पड्विण्णो, सञ्जहणमंतोमुहुत्तावसेसे संसारे चरिम-  
समयअधापवत्तकरणो जादो, ताधे तस्स जहणगो पदेससंकमो<sup>२</sup> ।

सादस्स जहणपदेससंकमो कस्स ? जो अभवसिद्धियपाओग्गेण जहणोण संत-  
कम्मेण कसाए अणुवसामेदूण खवेदि, तस्स जाधे चरिमो असादवंधो तस्स वंधस्स  
चरिमसमए सादस्स जहणओ पदेससंकमो<sup>३</sup> । असादस्स जहणओ पदेससंकमो कस्स ?  
जो जहणोण संतकम्मेण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेयूण खवेदि, तस्स अधापवत्तकरण-  
चरिमसमयमिह जहणगो पदेससंकमो<sup>४</sup> ।

मिच्छत्तस्स जहणओ पदेससंकमो कस्स ? जो जहणोण संतकम्मेण वेछावट्ठीओ  
सम्मत्तमणुपालेयूण, चदुक्खुत्तो कसाए उवसामिय, संजमं संजमासंजमं च बहुसो लद्धूण,  
सञ्जमहंतिं सम्मत्तद्धमणुपालेदूण अंतोमुहुत्तेण सिञ्जिहिदि त्ति दंसणमोहणीयं खवेदि,  
तदो दंसणमोहक्खवगअधापवत्तकरणस्स चरिमसमए जहणओ पदेससंकमो<sup>५</sup> । सम्मत्त-

है ? जो क्षणितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर संयमको प्राप्त हो सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त मात्र संसारके  
शेष रहनेपर अन्तिम समयवर्ती अधःप्रवृत्तकरण हुआ है उसके उस समय स्थानगृह्णित्रयका  
जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

सातावेदनीयका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य  
जघन्य सत्कर्मके साथ कर्पायोंको न उपशमा कर क्षय करता है, उसके जब असातावेदनीयका  
अन्तिम बन्ध होता है तब उस बन्धके अन्तिम समयमें सातावेदनीयका जघन्य प्रदेशसंक्रम  
होता है । असातावेदनीयका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ  
चार बार कर्पायोंको उपशमा कर क्षय करता है उसके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें  
असातावेदनीयका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

मिध्यात्वका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ दो  
छथासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वका पालन कर, चार बार कर्पायोंको उपशमा कर, संयम और  
संयमासंयमको बहुत बार प्राप्त कर, तथा सचसे महान् सम्यक्त्वकालका पालन करके अन्तर्मुहूर्त  
कालमें सिद्ध होनेवाला है, इसीलिये जो दर्शनमोहनीयकी क्षपणा करता है, उस दर्शनमोहक्षपकके  
अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें मिध्यात्वका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है । सम्यक्त्व और

१ अ-काप्रत्योः 'गंतूण णा संजमं', ताप्रतौ 'गंतूण [णा] संजमं' इति पाठः ।

२ अयरछावट्टिदुगं गालिय थीवेय-थीणगिद्धित्तिगे । सगखवणहापवत्तस्संत (ते) × × × ॥ २, ९९.

३ सायस्स णुवसमित्ता असायवंघ्राण चरिमवंधंते । क. प्र. २, ९८.

४ अट्टकसायासाए य असुभधुवबंधि अत्थिरत्तिगे य । सव्वलहुं खवणाए अहापवत्तस्स चरिममि ॥  
क. प्र. २, १०२.

५ मिच्छत्तस्स जहणओ पदेससंकमो कस्स ? खविदकम्ममिओ एहंदियकम्मेण जहणएण मणुसेसु आगदो  
सव्वलहुं चेव सम्मत्तं पड्विण्णो संजमं संजमासंजमं च बहुसो लमिदाउगो चत्तारिवारे कसाए उवसामित्ता वे  
छावट्टि-सागरोवमाणि सादिरैयाणि सम्मत्तमणुपालिदं । तदो मिच्छत्तं गदो अंतोमुहुत्तेण पुणो तेण सम्मत्तं लद्धं ।  
पुणो सागरोवमपुधत्तं सम्मत्तमणुपालिदं । तदो दंसणमोहणीयक्खवणाए अब्भुद्धिदो । तस्स चरिमसमयअधापवत्त-  
करणस्स मिच्छत्तस्स जहणओ पदेससंकमो । क. पां. सु. पृ. ४०५, ४८-४९. 'एमेव मिच्छत्त इति' एवमेव

सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स ? जेण जहण्णेण मिच्छत्तसंतकम्भेण सम्मत्तमुप्पाइदं, जहण्णेण गुणसंकमेण जहण्णपूरणकालेण च सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि पूरिदाणि, तदो वे-छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालेदूण मिच्छत्तं गदो, सव्वमहंतेण उव्वेह्ण-कालेण उव्वेह्णेदि, तदो दुचरिमस्स उव्वेह्णखंडयस्स चरिमसमए सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णओ पदेससंकमो<sup>१</sup> ।

अणंताणुबंधीणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स ? अभवसिद्धियपाओग्गेण जहण्णेण संतकम्भेण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण तदो अणंताणुबंधिविसंजोइदं संजोइदं कादूण<sup>२</sup> सव्वमहंति सम्मत्तद्धमणुपालेदूण तदो विसंजोयणं गदो, विसंजोयणाए अधापवत्तकरणस्स चरिमसमए अणंताणुबंधीणं जहण्णओ पदेससंकमो<sup>३</sup> । अट्टणं कसायाणं जहण्णओ

सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जिसने मिथ्यात्वके जघन्य सत्कर्मके साथ सम्यक्त्वको उत्पन्न कर लिया है तथा जघन्य गुणसंक्रम और जघन्य पूरणकालके द्वारा सम्यक्त्व एवं सम्यग्मिथ्यात्वको [ मिथ्यात्वके प्रदेशाप्रसे ] पूर्ण किया है, तत्पश्चात् जो दो छ्दासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका परिपालन करके मिथ्यात्वको प्राप्त होता हुआ सबसे महान् उद्वेलनकालके द्वारा उद्वेलना करता है उसके द्विचरम उद्वेलनकाण्डकके अन्तिम समयमें सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य सत्कर्मके साथ चार वार कषायोंको उपशमा कर तत्पश्चात् [ मिथ्यात्वको प्राप्त होकर अल्प काल तक विसंयोजित ] अनन्तानुबन्धीको संयोजित करके जो सबसे महान् सम्यक्त्वकालका पालन करते हुए विसंयोजनको प्राप्त हुआ है, उसके विसंयोजन करते हुए अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है । आठ कषायोंका जघन्य

पूर्वोक्तप्रकारेण मिथ्यात्वस्य जघन्यप्रदेशसंक्रमोऽवगन्तव्यः । तद्यथा— द्वे षट्षष्टी सागरोवमाणां यावत्सम्यक्त्व-मनुपाल्य तावन्तं कालं मिथ्यात्वं गालयित्वा किञ्चिच्छेषस्य मिथ्यात्वस्य क्षणाय समुद्यतस्य स्वकीययथाप्रवृत्त-करणान्तसमये वर्तमानस्य विध्यातसंक्रमेण मिथ्यात्वस्य जघन्यः प्रदेशसंक्रमो भवति, परतो गुणसंक्रमः प्रवर्तते, तेन स न प्राप्यते । क. प्र. ( मलय. ) २, ९९.

१ सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स ? एसो चेव जीयो मिच्छत्तं गदो । तदो पल्लिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण अप्पणो दुचरिमट्ठिदिखंडय चरिमसमयउव्वेह्णमाणयस्स जहण्णओ पदेससंकमो । क. पा. सु. पृ. ४०७, ४९-५०हस्सगुणसंकमद्धाए पूरयित्ता समीस-सम्मत्तं । चिरसंमत्ता मिच्छत्तगयस्सुव्वल्लण-थोगो सिं ॥ क. प्र. २, १००.

२ ताप्रतौ 'अणंताणुबंधिविसंजोइदं कादूण' इति पाठः ।

३ अणंताणुबंधीणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स ? एइंदिक्कम्भेण जहण्णएण तसेसु आगदो । संजमं संजमा-संजमं च बहुसो लद्धूण चत्तारि वारे कसाए उवसामित्ता तदो एइंदिएसु पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमच्छिद्-ज्जाव उवसामयसमयपद्धा णिगल्लिदा त्ति । तदो पुणो तसेसु आगदो सव्वलहुं सम्मत्तं लद्धं अणंताणुबंधीणो च

पदेससंकमो कस्स ? जो जहणसंतकम्मेण चदुक्खुत्ते कत्ताए उवसामेयूण खवेदि, तदो खवणाए अधापवत्तकरणस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स तेषिं जहणओ पदेससंकमो ।

एवमरदि-सोगाणं । हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं पि एवं चेव । णवरि आवलियअपुव्व-करणस्स । तिण्णिसंजलण-पुरिसवेदाणं जहणओ पदेससंकमो कस्स ? उवसामयस्स अपच्छिमसमयपवद्धं घोळमाणजहणजोगेण वद्धं अपच्छिमसंकामयंतस्स जहणओ पदेससंकमो । [लोहसंजलणाएँ जहणओ पदेससंकमो] कस्स ? जो जहणएण संतकम्मेण कत्ताए अणुवसामेयूण खवेदि तस्स अपुव्वकरणस्स आवलियपविट्ठस्स लोभसंजलणाए

प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार चार कषायोंको उपशमा कर क्षपणा करता है और तत्पश्चात् क्षपणा करते हुए जो अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें वर्तमान है उसके उनका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

इसी प्रकार अरति और शोकके जघन्य प्रदेशसंक्रमका कथन करना चाहिये । हास्य, रति, भय और जुगुप्साके भी जघन्य प्रदेशसंक्रमकी प्ररूपणा इसी प्रकार करना चाहिये । विशेष इतना है कि इनका जघन्य प्रदेशसंक्रम आवली कालवर्ती अपूर्वकरणके होता है । तीन संज्वलन और पुरुषवेदका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो घोळमान जघन्य योगके द्वारा बांधे गये अन्तिम समयप्रवद्धका संक्रम कर रहा है ऐसे उपशामक जीवके संक्रमके अन्तिम समयमें उन चार प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है । [ संज्वलन लोभका जघन्य प्रदेशसंक्रम ] किसके होता है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ कषायांका उपशम न करके क्षय करता है उस आवली

विसंजोइदा । पुणो मिच्छत्तं गंतूण अंतोमुहुत्तं संजोएदूण पुणो तेण सम्मत्तं लद्धं । तदो सागरोवमवेत्तावट्ठीओ अणुगालिदं । तदो विसंजोएदुमादत्तो । तस्स अधापवत्तकरणचरिमसमए अणंताणुबंधीणं जहणओ पदेससंकमो । क. पा. सु. पृ. ४०७, ५१-५२. संजोयणाण चतुस्वसमित्तु संजोइत्तु अप्पद्धं । अयरच्छावट्ठिदुगं पालिय सकहप्पवत्तंते ॥ क. प्र. २, १०१.

१ अट्टण्हं कसायाणं जहणओ पदेससंकमो कस्स ? एइंदियकम्मेण जहणएण तसेसु आगदो संजमा-संजमं संजमं च बहुसो गदो । चत्तारि वारे कत्ताए उवसामित्ता तदो एइंदिएसु गदो । असंखेज्जाणि वस्साणि अच्छिदो जाव उवसामयसमयपवद्धा णिगलंति । तदो तसेसु आगदो संजमं संज्वलहुं लद्धो । पुणो कसाय-वखवणाए उवट्ठिदो । तस्स अधापवत्तकरणस्स चरिमसमए अट्टण्हं कसायाणं जहणओ पदेससंकमो । क. पा. सु. पृ. ४०८, ५३-५४. अट्टकसायासाए य असुमधुवबंधि अधिरतिगे य । संज्वलहुं खवणाए अधापवत्तस्स चरिममि ॥ क. प्र. २, १०२.

२ असाएण समा अरई य सोगो य ॥ क. प्र. २, १०३.

३ हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं पि एवं चेव, णवरि अपुव्वकरणस्तावलियपविट्ठस्स । क. पा. सु. पृ. ४०७, ५६.

४ कोहसंजलणस्स जहणओ पदेससंकमो कस्स ? उवसामयस्स चरिमसमयपवद्धो जाधे उवसामिजमाणो उवसंतो ताधे तस्स कोहसंजलणस्स जहणओ पदेससंकमो । एवं माण-मायासंजलण-पुरिसवेदाणं । क. पा. सु. पृ. ४०८, ५७-५९. पुरिसे संजलणतिगे य घोळमाणेण चरमवद्धस्स । सगअंतिमे X X X ॥ क. प्र. २, १०३.

५ ताप्रती 'वद्धं अपच्छिमसंकामयंतस्स । [ लोभसंजलणाए' इति पाठः ।

जहणओ पदेससंकमो<sup>१</sup> ।

इत्थिवेदस्स जहणओ पदेससंकमो कस्स ? जो जहणसंतकम्मेण वे-छावट्टीओ सम्मत्तमणुपालिय चटुक्खुत्तो कसाए उवसामिय तदो खवेंतस्स अधापवत्तकरणस्स चरिमसमए इत्थिवेदस्स जहणओ पदेससंकमो<sup>१</sup> । णवुंसयवेदस्स इत्थिवेदभंगो । णवरि पुवं चैव तिपल्लिदोवमिएसु उप्पाइय अवसाणे सम्मत्तं घेत्तूण वे-छावट्टीयो<sup>३</sup> हिंढावेयव्वो<sup>४</sup> ।

आउआणं णत्थि संकमो । णिरयगइणामाए जहणओ पदेससंकमो कस्स ? जो उव्वेह्लिदेण कम्मेण अंतोसुहुत्तं संजोएदूण सत्तमपुढविं गदो, तदो उव्वट्टिदो<sup>५</sup> संतो अणंताणुवंधीणं एत्तदो (?) तदो एइंदिएसु जीवेषु महंतेण<sup>६</sup> उव्वेह्लणकालेण उव्वेह्लमाणस्स जं टुचरिमट्टिदिखंडयं तस्स चरिमसमए णिरयगइणामाए जहणओ पदेससंकमो<sup>१</sup> । देवगईए णिरयगइभंगो ।

कालवर्ती अपूर्वकरणके संञ्चलन लोभका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

स्त्रीवेदका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ दो छयासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वको पालकर और चार वार कषार्योंको उपशमा कर फिर क्षय करनेमें प्रवृत्त होता है उसके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें स्त्रीवेदका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है । नपुंसकवेदकी प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है । विशेष इतना है कि पहिले ही तीन पत्योपम आयुवालोंमें उत्पन्न कराकर अन्तमें सम्यक्त्वको ग्रहण करके दो छयासठ सागरोपम तक घुमाना चाहिये ।

आयु कर्मोंका संक्रम नहीं होता । नरकगति नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो उद्वेलित कर्मके साथ अन्तर्मुहूर्त काल संयुक्त होकर सातवीं पृथिवीको प्राप्त हुआ है, तत्पश्चात् वहांसे निकलकर [ पंचेन्द्रिय तिर्यचोंमें उत्पन्न हो अल्प काल उसका बन्ध करके ] फिर एकेन्द्रिय जीवोंमें महान् उद्वेलनकाल द्वारा उद्वेलना कर रहा है उसका जो द्विचरम स्थितिकाण्डक है उसके अन्तिम समयमें नरकगति नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है । देवगति नामकर्मकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है ।

१ लोहसंजणस्स जहणओ पदेससंकमो कस्स ? एइंदियकम्मेण जहणएण तसेसु आगदो संजमासंजमं संजमं च बहुसो लद्धूण कसाएसु किं पि णो उवसामेदि । दीहं संजमद्धमणुपालिदूण खवणाए अब्भुट्टिदो तस्स अपुव्वकरणस्स आवल्लियपविट्ठस्स लोहसंजलणस्स जहणओ पदेससंकमो । क. पा. सु. पृ. ४०९, ६०-६१. खवणाए लोभस्स वि अपुव्वकरणालिगाअंते ॥ क. प्र. २, ९८. २ क. पा. सु. पृ. ४१०, ६४.

३ अप्रतौ 'वेछावट्टि', काप्रतौ 'वेछावट्टि' इति पाठः । ४ क. पा. सु. पृ. ४०९, ६२-६३.

५ अप्रतौ 'उव्वट्टिदो', काप्रतौ 'उव्वेह्लिदो' इति पाठः । ६ अप्रतौ 'जीवेषु हत्तेण', काप्रतौ 'जीवेषु सुहत्तेण', ताप्रतौ 'जीवेषु हत्तेण ( महंतेण )' इति पाठः ।

७ वेउव्वि(व्वे)क्कारसगं उव्वल्लियं बंधिऊण अप्पद्धं । जिट्ठट्टिई निरयाओ उव्वट्टिता अबंधित्तु ॥ थावरगयस्स चिरउव्वल्लणो(णे) X X X क. प्र. २, १०४-५. वेउव्वित्ति- देवट्टिक-नरकट्टिक-वैक्रियिकसप्तकलक्षणं वैक्रियैका-दशकं एकेन्द्रियभवे उद्वर्तमानेनोद्वलितं पुनरपि पंचेन्द्रियस्वमुपागतेन सतात्पाद्धमत्पकालं अन्तर्मुहूर्तकालं

मणुसगइणामाए जहण्णओ पदेससंकमो कस्स ? जो तेउकाइओ वाउकाइओ वा उव्वेह्मिदमणुसगइणामकम्मो जहण्णेण कम्मेण तेउ-वाउवज्जेसु सुहुमेसु खुदाभव-ग्गहणमच्छिउण संजुत्तो, पुणो तेउजीवे वा वाउजीवे वा गदो तस्स सव्वमहंतेण उव्वेलण-कालेण मणुसगइं उव्वेह्ममाणस्स जं दुचरिमुव्वेह्मणखंडयं तस्स चरिमसमए जहण्णओ पदेससंकमो ।

तिरिक्खगइ-उज्जोवणामाणं जहण्णओ पदेससंकमो कस्स ? जो जहण्णएण संत-कम्मेण मणुसगइं गदो, तिपलिदोवमिएसु उववण्णो, अंतोमुहुत्ते सेसे सम्मत्तं लद्धूण पलिदोवमिओ देवो जादो, तदो अपरिवडिदेण सम्मत्तेण मणुसगदिं गदो, पुणो वि अपरिवडिदेण एकत्तीससागरोवमिओ देवो जादो, अंतोमुहुत्तुववण्णो मिच्छत्तं गदो, तदो तस्स देवभवस्स अंतोमुहुत्तसेसे सम्मत्तं लद्धं, तदो वे-छावडिसेसा सम्मत्तमणुपालिय,

मनुष्यगति नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? मनुष्यगति नामकर्मकी उद्वेलना करनेवाला जो तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीव जघन्य कर्मके साथ तेजकायिक और वायुकायिकको छोड़कर शेष सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें क्षुद्रभवग्रहण काल रहकर उसको बांधता है, फिर तेजकायिक अथवा वायुकायिक जीवोंमें जाकर सबसे महान् उद्वेलनकालके द्वारा मनुष्य-गतिकी उद्वेलना कर रहा है, उसका जो द्विचरम उद्वेलनकाण्डक है उसके अन्तिम समयमें उसका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

तिर्यचगति और उद्योत नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ मनुष्यगतिको प्राप्त होकर तीन पत्योपम प्रमाण आयुवालोंमें उत्पन्न हुआ है, वहां अन्तर्मुहूर्त आयुके शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त कर पत्योपम प्रमाण आयुवाला देव हुआ, तत्पश्चात् अप्रतिपतित सम्यक्त्वके साथ मनुष्यगतिको प्राप्त हुआ, फिरसे भी अप्रतिपतित सम्यक्त्वके साथ इकतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाला देव हुआ, वहां उत्पन्न होनेके पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ, पश्चात् उस देवभवके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ, पश्चात् जो शेष दो छयासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वका परिपालन करके चार

यावदित्यर्थः । वध्वा, ततो ज्येष्ठस्थितिस्तृकृष्टस्थितिलयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिक इत्यर्थः । सप्तमनरकपृथिव्यां नारको जातः । ततस्तावन्तं कालं यावत् यथायोगं तद्वैक्रियैकादशकमनुभूय ततो नरकाद्दुद्घृत्य पंचेन्द्रिय-तिर्यक्षु मध्ये समुत्पन्नः । तत्र च तद्वैक्रियकदशकमवध्वा स्थावरेष्वेकेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पन्नः । तस्य चिरोद्वलनया पत्योपमामंख्येयभागमात्रेण कालेनोद्वलनया तदुद्वलयतो यत् द्विचरमखण्डस्य चरमसमये प्रकृत्यन्तरे दलिकं संक्रामति, स तस्य वैक्रियैकादशकस्य जघन्यः प्रदेशसंक्रमः । मलय.

१ × × × एयस्स एव उच्चस्स । मणुयदुगस्स य तेउसु वाउसु वा सुहुमवद्धाणं ॥ क. प्र. २, १०५. × × × इयमन्न भावना— मनुजद्विकमुच्चैर्गोत्रं च प्रथमतस्तेजोवायुभवे वर्तमानेननोद्वलितम्, पुनरपि युष्मैकेन्द्रियभवंमुपागतेनान्तर्मुहूर्तं यावद् वद्धम्, ततः पंचेन्द्रियभवं गत्वा सप्तमनरकपृथिव्यामुत्कृष्टस्थितिको नारको जातः । तत उद्घृत्य पंचेन्द्रियतिर्यक्षु मध्ये समुत्पन्नः । एतावन्तं च कालमवध्वा प्रदेशसंक्रमेण चानुभूय तेजोवायुपु मध्ये समागतः । तस्य मनुजद्विकोच्चैर्गोत्रे चिरोद्वलनयोद्वलयतो द्विचरमखण्डस्य चरमसमये परप्रकृतौ यद्दलं संक्रामति स तयार्जघन्यः प्रदेशसंक्रमः । मलय.

चदुक्खुत्तो कसाए उवसामिय, तिस्से उक्खसियाए सम्मत्तद्वाए अंतोमुहुत्ते सेसे खवणाए अब्भुद्धिदो, तदो अधापवत्तकरणस्स चरिमसमए तिरिक्खगइ-उज्जोवणामाणं जहण्णओ पदेससंक्रमो<sup>१</sup> ।

जहा गर्इणं तहा तासिमाणुपुच्चीणं पि वत्तव्वं । वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीर-अंगोवंग-बंधण-संघादाणं णिरयगइभंगो । आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणं जहण्णपदेससंक्रमो कस्स ? जो अभवसिद्धियपाओग्गाणं जहण्णेण कम्मेण पढमदाए जहण्णियं संजमद्धमणुपालेयूण मिच्छत्तं गदो, तदो तस्स उक्खस्सउव्वेलणकालस्स जं दुचरिमसुव्वेह्लणखंडयं तस्स चरिमसमए तेसिं<sup>२</sup> जहण्णओ पदेससंक्रमो<sup>३</sup> ।

ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-बंधण-संघादाणं जहण्णओ पदेससंक्रमो कस्स ? जो जहण्णएण कम्मेण तिपलिदोवमिएसु मणुस-तिरिक्खेसु उववणो तस्स चरिम-

वार कपायोंको उपशमा कर उस उत्कृष्ट सम्यक्त्वकालमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर क्षपणामें उद्यत हुआ है, उसके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें तिर्यग्गति और उद्योत नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

जैसे गतियोंके जघन्य प्रदेशसंक्रमकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही उनकी आनुपूर्वियोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघातकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग, आहारकबन्धन और आहारकसंघातका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य उक्त प्रकृतियोंके जघन्य सत्कर्मके साथ प्रथमतः जघन्य संयमकालका पालन कर फिर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, उसके उत्कृष्ट उद्वेलनकालका जो द्विचरम उद्वेलनकाण्डक है उसके चरम समयमें उक्त प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकबन्धन और औदारिकसंघातका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ तीन पल्योपम आयुवाले

१ तेवद्विसयं उदहीणं स चउपल्लाहियं अवंधित्ता । अंते अहप्पवत्तकरणस्स उज्जोव-तिरियदुगे ॥ क. प्र. २, १०७. X X X कथं त्रिपञ्च्यधिकं सागरोपमाणं शतं चतुःपल्याधिकं च यावद् ब्रध्वेति चेदुच्यते- स क्षपितकर्मोशस्त्रिपल्योपमायुष्केपु मनुजेपु मध्ये समुत्पन्नस्तत्र देवद्विकमेव बध्नाति, न तिर्यद्विकं नाप्युद्योतम् । तत्र चान्तर्मुहूर्ते शेषे सत्यायुषि सम्यक्त्वमवाप्य ततोऽप्रतिपतितसम्यक्त्व एव पल्योपमस्थितिको देवो जातः । ततोऽप्यप्रतिपतितसम्यक्त्वो देवभवाच्च्युत्वा मनुष्येषु मध्ये समुत्पन्नः । ततस्तेनैवाप्रतिपतितेन सम्यक्त्वेन सहित एकत्रिंशत्सागरोपमस्थितिको त्रैवेयकेषु मध्ये देवो जातः । तत्र चोत्पत्त्यनन्तरमन्तर्मुहूर्तादूर्ध्वं मिथ्यात्वं गतः । ततोऽन्तर्मुहूर्तावशेषे आयुषि पुनरपि सम्यक्त्वं लभते । ततो द्वे षट्षष्ठी सागरोपमाणां यावन्मनुष्यानुत्तरसुरादिषु सम्यक्त्वमनुपाल्य तस्याः सम्यक्त्वाद्वाया अन्तर्मुहूर्ते शेषे शीघ्रमेव क्षपणाय समुद्यतः । ततोऽनेन विधना त्रिषष्ट्यधिकं सागरोपमाणां शतं चतुष्टयल्याधिकं च यावत्तिर्यग्द्विकमुद्योतं च बन्धरहितं भवतीति । मध्य. २ काप्रती 'जेसि' इति पाठः । ३ हस्सं कालं बंधिय विरओ आहारसत्तर्गं गतुं । अविरइ महुव्वलंतस्स जा योव उव्वलणा ॥ क. प्र. २, १०६.

समयतन्भवत्यस्स एदासिं पयडीणं जहण्णओ पदेससंक्रमो ।

तैजा-कम्मइयसरीर-तन्वंधणं-संघाद-पसत्थवण्ण - गंध-रस - फास-अगुरुअलहुअ- पर-घाद-उवघाद पसत्थविहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसक्कित्ति-णिमिणणामाणं जहण्णओ पदेससंक्रमो कस्सै ? जो कसाए अणुवसामेदूणं सेसेहि पयारेहि जहण्णयं संतकम्मं कादूण तदो खवणाए अब्भुट्ठिदो तस्स आवलिय-अपुव्वकरणस्स एदासिं पयडीणं जहण्णओ पदेससंक्रमो ।

पसत्थसंठाण-संघडणाणं कम्मइयभंगो । अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-उवघाद-अथिर-असुह-अजसक्कित्तीणं जहण्णओ पदेससंक्रमो कस्स ? जो जहण्णेण कम्मेण चदु-वखुत्ते कसाए उवसामेयूण गुणसेडीहि गालिय सव्वलहुं खवणाए अब्भुट्ठिदो तस्स चरिमसमयअधापवत्तकरणे वट्टमाणस्स जहण्णओ पदेससंक्रमो । अप्पसत्थसव्वसंठाण-संघडणाणं अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं णवुंसयवेदभंगो । आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणं तिरिक्खगइभंगो । णवरि छट्ठीए पुढवीए

मनुष्यों या तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुआ है उसके तद्भवस्थ होनेके अन्तिम समयमें इन प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

तैजस व कार्मण शरीर तथा उनके बन्धन व संघात, प्रशस्त वर्ण गन्ध रस व स्पर्श, अगुरुलघु, परघात, उपघात, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति और निर्माण नामकर्मोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो कषायोंका उपशम न करके शेष प्रकारों द्वारा जघन्य सत्कर्म करके तत्पश्चात् क्षपणामें उद्यत हुआ है; उस आवली कालवर्ती अपूर्वकरणके इन प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है ।

प्रशस्त संस्थान और प्रशस्त संहननकी प्ररूपणा कार्मणशरीरके समान है । अप्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, उपघात, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्तिका जघन्य प्रदेशसंक्रम किसके होता है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार चार कषायोंको उपशमा करके गुणश्रेणियोंके द्वारा गलाकर सर्वलघु कालमें क्षपणामें उद्यत हुआ है, उसके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें वर्तमान होनेपर उक्त प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता है । अप्रशस्त सब संस्थानों और संहननोंका तथा अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रकी प्ररूपणा नपुंसक-वेदके समान है । आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरकी प्ररूपणा तिर्यंचगतिके

१ नर-तिरियाण तिपल्लस्संते ओरालियस्स पाउग्गा । क. प्र. २, १११. २ काप्रतौ 'सरीर-बंधण', ताप्रतौ 'सरीर २-बंधण' इति पाठः । ३ 'अ-काप्रत्वोर्नोपलभ्यते पदमिदम् । ४ अप्रतौ उवसामेदूण' इति पाठः । ५ छत्तीसाए सुभाणं सेट्ठिमणाक्कहिय सेसगविहीहिं । कट्टु जहणं खवणं अपुव्वकरणालिया अंते ॥ क. प्र. २, १०९. ६ अ-काप्रत्योः 'जे' इति पाठः । ७ सम्महिट्ठिअजोगाण सोलसण्हं पि असुमपगईणं । श्रीवेएण सरिसगं नवरं पदमं तिपल्लेसु ॥ क. प्र. २, ११०,



अंते सम्मत्तं घेत्तण सम्मत्तेण सह णिग्गदो, पुणो सव्वं पि पंचासीदिसागरोपमसदं पुरेदच्चं ।  
एसो तिरिक्खगदीदो एदासिं विसैसो' । विगलिंदियजादिणामाणं साहारणसरीरभंगो ।

उच्चागोदस्स मणुसगइभंगो । तित्थयरणामाए जहण्णओ पदेससंकमो कस्स ? जहण्ण-  
एण कस्मेण पढमदाए जहण्णजोगेण जो वद्धो समयपवद्धो तमावलियादीदं संकामेतस्स  
जहण्णओ पदेससंकमो, चरिमसमयमिच्छाइडिस्स वा विज्झादेण जहण्णसंकमो' । एवं  
सामित्तं समत्तं ।

समान है । विशेषता इतनी है कि छठी पृथिवीमें अन्तमें सम्यक्त्वको ग्रहण करके और सम्यक्त्वके  
साथ निकलकर फिर सभीको एक सौ पचासी सागरोपम तक पूरा करना चाहिये । यह इन  
प्रकृतियोंके तिर्यचगतिसे विशेषता है ।

विशेषार्थ— तिर्यचगतिके जघन्य प्रदेशसंक्रमकी प्ररूपणामें १६३ सागरोपम और ४  
पल्योपम तक उसके बन्धका अभाव निर्दिष्ट किया गया है । परन्तु इन आतप आदि प्रकृतियोंके  
बन्धका अभाव १८५ सागरोपम और ४ पल्य तक रहता है । वह इस प्रकारसे— कोई क्षपित-  
कर्माज्ञिक जीव छठी पृथिवीमें २२ सागरोपम आयुवाला नारकी उत्पन्न हुआ । वहां वह आयुमें  
अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त होकर उस अविनष्ट सम्यक्त्वके साथ मनुष्य होता है  
और वहांपर सम्यक्त्वके साथ संयमासंयमको पालकर फिर सौधर्म स्वर्गमें चार पल्योपम आयुवाला  
देव उत्पन्न होता है । वहां भी अविनष्ट सम्यक्त्वके साथ देवभवसे च्युत होकर मनुष्य भवको प्राप्त  
होता हुआ यहां संयमको पालता है और तब मृत्युको प्राप्त हो त्रैवेयकोंमें ३१ सागरोपम प्रमाण  
आयुवाला देव उत्पन्न होता है । यहां उत्पन्न होनेके अन्तर्मुहूर्त पश्चात् वह मिथ्यात्वको प्राप्त होकर  
आयुमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर पुनः सम्यक्त्वको प्राप्त कर लेता है । तत्पश्चात् दो छ्यासठ  
( १३२ ) सागरोपम काल तक सम्यक्त्वको पालकर और चार बार कपार्योंको उपशमा कर इस  
उत्कृष्ट सम्यक्त्वकालमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर क्षपणामें उद्यत होता है । उस समय अधः-  
प्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें उसके उपर्युक्त आतप आदि प्रकृतियोंका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता  
है । इस प्रकार सौधर्म देवकी आयुके ४ पल्योपमोंके साथ १८५ ( २२ + ३१ + १३२ ) सागरोपम  
काल तक इन प्रकृतियोंके बन्धका अभाव रहता है जब कि तिर्यचगतिके बन्धका अभाव ४  
पल्योपमोंसे अधिक १६३ सागरोपम काल तक ही रहता है । यही उससे इन प्रकृतियोंके जघन्य  
प्रदेशसंक्रममें विशेषता है ।

विकलेन्द्रिय जाति नामकर्मोंकी प्ररूपणा साधारणशरीर नामकर्मके समान है ।

उच्चगोत्रकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । तीर्थकर नामकर्मका जघन्य प्रदेशसंक्रम  
किसके होता है ? जघन्य सत्कर्मके साथ प्रथमतया जघन्य योगके द्वारा जो समयप्रवद्ध बांधा  
गया है बन्धावलीके पश्चात् उसका संक्रम करनेवालेके तीर्थकर प्रकृतिका जघन्य प्रदेशसंक्रम होता  
है । अथवा, अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके विभ्यातसंक्रमके द्वारा उसका जघन्य प्रदेशसंक्रम  
होता है । इस प्रकार स्वामित्वकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

१ इग-विगलिंदियजोगा अट्ट पज्जणेण सह ते(ता)सिं । तिरियगइसमं नवरं पंचासीउदहिसयं तु ॥ क.  
प्र. २, १०८. २ तित्थयरस्स च वंधा जहन्नओ आलिगं गंतु ॥ क. प्र. २, १११.

मदिआवरणस्स उक्कस्सपदेससंकामओ केवचिरं कालादो होदि ? जहणुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्सपदेससंकमो केवचिरं ? जहं अंतोमुहुत्तं, उक्कं अणंतकालं । चटुणाणावरण-चटुदंसणावरण-पंचंतराइयाणं मदिआवरणभंगो ।

सच्चकम्माणं पि उक्कस्सपदेससंकमस्स जहणुक्कस्सेण एगसमओ । अणुक्कस्सपदेस-संकमस्स कालो पंचणं दंसणावरणीयाणं अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्ज-वसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो वा । जो सो सादिओ सपज्जवसिदो सो जहं अंतोमुहुत्तं, उक्कं उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सादासादाणमणुक्कस्सपदेससंकमो केवचिरं ? जहणोण एगसमओ, उक्कं अंतोमुहुत्तं । मिच्छत्तस्स जहं अंतोमुहुत्तं, उक्कं छावड्डिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । सम्मामिच्छत्तस्स जहं अंतोमुहुत्तं, उक्कं वे-छावड्डिसागरोवमाणि पलिदोवमस्स असंखे० भागेण सादिरेयाणि । सम्मत्तस्स जहणोण अंतोमुहुत्तं, उक्कं पलिदो० असंखे० भागो । अणंताणुवंधीणं अणादियो अपज्जवसिदो, अणादियो सपज्ज-वसिदो, सादियो सपज्जवसिदो वा । जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहणोण अंतोमुहुत्तं, उक्कं उवड्ढपोग्गलपरियट्टं । सेसाणं चरित्तमोहणीयपयडीणमणंताणुवंधिभंगो ।

सादियसंतकम्माणं णामपयडीणं जहं उक्कं जच्चिरं पयडिसंकमकालो तच्चिरं अणुक्कस्सपदेससंकमकालो । अणादियसंतकम्मियासु पयडीसु जासिं पयडीणं भवसिद्धिओ

मतिज्ञानावरणके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रामकका काल कितना है ? जघन्य और उत्कर्षसे वह एक समय मात्र है । उसके अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमकका काल कितना है ? वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है । शेष चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय; इनके प्रकृत कालकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है ।

सब कर्मोंके ही उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमकका काल जघन्य और उत्कर्षसे एक समय मात्र है । अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमकका काल पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है । इनमें जो सादि-सपर्यवसित है वह जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । साता और असाता वेदनीयके अनुत्कृष्ट प्रदेश-संक्रमकका काल कितना है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । मिथ्यात्व प्रकृतिका वह काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक छयासठ सागरोपम मात्र है । प्रकृत काल सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है । सम्यक्त्व प्रकृतिका यह काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । अनन्तानुवन्धी प्रकृतियोंका यह काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है । जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन मात्र है । शेष चारित्र-मोहनीय प्रकृतियोंके उपर्युक्त कालकी प्ररूपणा अनन्तानुवन्धीके समान है ।

सादि सत्कर्मवाली नामप्रकृतियोंका जघन्य व उत्कर्षसे जितना प्रकृतिसंक्रमकाल है उतना ही उनका अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमकाल भी है । अनादि सत्कर्मवाली प्रकृतियोंमें भव्यसिद्धिक जिन

उक्कस्सं करेदि तासिमणुक्कस्सपदेससंकमकालो अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो, सादिओ सपज्जवसिदो वा । तत्थ जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जह० अंतोसुहुत्तं, उक्क० उवड्ढपोग्गलपरियट्ठं । इदरासिं पयडीणं गाणावरणभंगो ।

उच्चागोदस्स अणुक्कस्सपदेससंकमो जह० अंतोसुहुत्तं एगसमओ वा, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । णीचागोदस्स जह० एगसमओ, उक्क० वेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । एवमुक्कस्सपदेससंकमकालो समत्तो ।

जहण्णपदेससंकमकालो सामित्तादो साहेयूण वत्तव्वो । एयजीवेण अंतरं पि सामित्तादो साहेयव्वो । णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वं । पुणो एत्थ सणियासो वत्तव्वो ।

एत्तो अप्पावहुअं । तं जहा— उक्कस्सपदेससंकमो सम्मत्ते थोवो । केवलणाणावरणे असंखेज्जगुणो । केवलदंसणावरणे विसेसाहिओ । पयलाए असंखेज्जगुणो । णिहाए विसेसाहिओ । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो । कोहे विसेसाहिओ । माया० विसे० । लोभे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । अणंताणुवंधिमाणे विसे० । कोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । मिच्छत्ते

प्रकृतियोंके उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमको करता है उनके अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल अनादि-अपर्यवसित, अनादि-सपर्यवसित और सादि-सपर्यवसित भी है । उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका प्रमाण जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्थ पुद्गलपरिवर्तन है । अन्य प्रकृतियोंके प्रकृत कालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है ।

उच्चगोत्रके अनुत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त व एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । उक्त काल नीचगोत्रका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छथासठ सागरोपम मात्र है । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमकाल समाप्त हुआ ।

जघन्य प्रदेशसंक्रमकालका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी भी प्ररूपणा स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये । नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरको भी स्वामित्वसे सिद्ध करके कहना चाहिये । फिर यहां संनिकर्षका कथन करना चाहिये ।

अब यहां अल्पवहुत्वका कथन करते हैं । यथा— उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें स्तोक है । केवलज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष आधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अनन्तानुवन्धी मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें

विसे० । सम्मामिच्छते विसे० । पचलापचलाए असंखे० गुणो । णिदाणिदाए विसे० ।  
 थीणगिद्धीए विसे० । आहारसरीरणामाए अणंतगुणो । जसक्कितीए अणंतगुणो ।  
 वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो । ओरालिय० विसे० । तेजइय० विसे० । कम्मइय०  
 विसे० । देवगइणामाए असंखेज्जगुणो । मणुसगइणामाए विसे० । साद० संखे० गुणो ।  
 लोहसंजलणाए संखे० गुणो । दाणंतराए विसे० । लाहंतराए विसे० । भोगंतराए  
 विसे० । परिभोगंतराए विसे० । वीरियंतराए विसे० । मणपज्जवणाणावरणे विसे० । ओहि-  
 णाणावरणे विसे० । सुदणाणावरणे विसे० । मदिणाणावरणे विसे० । ओहिदंसणावरणे  
 विसे० । अचक्खुदंसणावरणे विसे० । चक्खुदं विसे० । उच्चागोदे संखे० गुणो ।  
 णिरयगइणामाए असंखे० गुणो । अजसक्किती० असंखे० गुणो । असादे संखे० गुणो ।  
 णीचागोदे विसे० । तिरिक्खगइणामाए असंखे० गुणो । हस्से संखे० गुणो ।  
 रदीए विसे० । इत्थिवेदे संखे० गुणो । सोगे विसे० । अरदीए विसे० । णवंसयवेदे  
 विसे० । दुगुंछाए विसे० । भय० विसे० । पुरिसवेदे संखे० गुणो । कोहसंजलणाए संखे०  
 गुणो । माणसंजलणाए विसेसा० । मायासंजलणाए विसेसाहियो । एवमोघुक्कस्सपदेस-  
 संकमदंडओ समत्तो ।

विशेष अधिक है । सम्यग्मिध्यात्वमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है ।  
 निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । आहारशरीर नामकर्ममें  
 अनन्तगुणा है । यशकीर्तिमें अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर नामकर्ममें असंख्यातगुणा है ।  
 औदारिकशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कामणशरीरमें  
 विशेष अधिक है । देवगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगति नामकर्ममें विशेष  
 अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । संज्वलन लोभ में संख्यातगुणा है । दानान्तरायमें  
 विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है ।  
 परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपययज्ञानावरणमें  
 विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक  
 है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षु-  
 दर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । उच्चगोत्रमें संख्यात-  
 गुणा है । नरकगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है । अयशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । असाता-  
 वेदनीयमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । तिर्यगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा  
 है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । शोकमें  
 विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें  
 विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । संज्वलन क्राधमें  
 संख्यातगुणा है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । इस  
 प्रकार ओष उक्कष्ट प्रदेससंकमदण्डक समाप्त हुआ ।

णिरयगईए सव्वत्थोवो सम्मत्ते उक्कस्ससंकमो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । केवलणाणावरणे विसे० । पयलाए विसे० । णिदाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिदाणिदाए विसे० । शीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसणावरणे विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधिमाणे असंखे० गुणो । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । णिरयगइणामाए अणंतगुणो । वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो । देवगइ० संखे० गुणो । आहारसरीर० असंखे० गुणो । जसकित्ति० असंखे गुणो । ओरालिय० संखे० गुणो । तेजइय० विसे० । कम्मइय० विसे । अजसकित्ति० असंखे० गुणो । तिरिक्खगइ० विसे० । मणुसगइ० विसे० । हस्से संखे० गुणो । रदि० विसे० । सादे संखे० गुणो । इत्थिवेदे संखे० गुणो । सोगे विसे० । अरदि० विसे० । णवुंस० विसे० । दुगुंछा० विसे० । भय० विसे० । पुरिसवे० विसे० । संजलणमाणे विसे० । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । दाणंतराइए विसे० । लाहंतराइए विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतराइए विसे० । मणपज्जवणाणावरणे

नरकगतिमें सम्यक्त्व प्रकृतिमें उत्कृष्ट प्रदेशसंकम सवसे स्तोक है । सम्यग्मिध्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । मिध्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धो मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । नरकगति नामकर्ममें अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर नामकर्ममें असंख्यातगुणा है । देवगति नामकर्ममें संख्यातगुणा है । आहारकशरीर नामकर्ममें असंख्यातगुणा है । यशक्रीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीर नामकर्ममें संख्यातगुणा है । तैजसशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । कार्मणशरीर नामकर्ममें विशेष अधिक है । अयशक्रीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तिर्यचगति नामकर्ममें विशेष अधिक है । मनुष्यगति नामकर्ममें विशेष अधिक है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । शोकमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संवलन मान में विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपयंयज्ञानावरणमें विशेष अधिक है ।

विसे० । ओहिणाणवरणे विसे० । सुदणाणा० विसेसा० । मदिणाणावरणे विसे० ।  
अचक्खुदंसणावरणे विसे० । चक्खुदंस० विसे० । असादे<sup>१</sup> संखे० गुणो । उच्चागोदे  
विसे० । नीचागोदे विसे० । एवं<sup>२</sup> णिरयगईए उक्कस्सओ पदेससंकमदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगईए उक्कस्सओ पदेससंकमो सम्मत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे०  
गुणो । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो । क्रोधे विसे० । माया० विसे० । लोभे विसे० ।  
पच्चक्खाणमाणे विसे० । क्रोधे विसे० । माया० विसे० । लोभे विसे० । केवलणाणावरणे  
विसे० । पयलाए विसे० । णिदाए विसे० । पयलापयला० विसे० । णिदाणिदाए  
विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसणावरणे विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो ।  
अणंतानुबंधिमाणे असंखे० गुणो । क्रोहे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० ।  
णिरयगइणामाए अणंतगुणो । आहारसरीर० असंखे० गुणो । जसक्कित्ति० असंखे०  
गुणो । वेउन्विय० संखे० गुणो । ओरालिय० विसे० । तेजा० विसे० । कम्मइय०  
विसे० । अजसक्कित्ति० संखे० गुणो । देवगदीए विसे० । तिरिक्खगईए विसे० । मणुस-  
गई० विसे० । हस्से० संखे० गुणो । रदीए विसे० । सादे संखे० गुणो । इत्थिवेदे

अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें  
विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक  
है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष  
अधिक है । इस प्रकार नरकगति में उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यंचगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है । सम्वग्मिथ्यात्वमें  
असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है ।  
मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक  
है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवल-  
ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है ।  
प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगुद्धिमें विशेष  
अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानु-  
बन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है ।  
लोभमें विशेष अधिक है । नरकगति नामकर्ममें अनन्तगुणा है । आहारकशरीर नामकर्ममें  
असंख्यातगुणा है । यज्ञकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है ।  
औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कार्मणशरीरमें विशेष  
अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । देवगतिमें विशेष अधिक है । तिर्यंचगतिमें विशेष  
अधिक है । मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक  
है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । शोकमें विशेष अधिक है ।

१ अ-काप्रत्योः 'असादयो', ताप्रतौ 'असादाए' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योर्नौपलभ्यते पदमिदम् ।

संखे० गुणो । सोगे विसे० । अरदि० विसे० । णवुंस० विसे० । दुगुंछा० विसे० । भय० विसे० । पुरिस० विसे० । संजलणमाणे विसे० । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । दाणंतराइए विसे० । लाहंतराइए विसे० । भोगंतराइए विसे० । परि-भोगंतराइए विसे० । विरियंतराइए विसे० । मणपज्जवणाणावरणे विसे० । ओहिणाणावरणे विसे० । सुदणा० विसे० । मदिणा० विसे० । ओहिदंसणावरणे विसे० । अचक्खुदंस० विसे० । चक्खुदंस० विसे० । असादे संखे० गुणो । उच्चागोदे विसे० । णीचागोदे विसेसाहिओ । एवं तिरिक्खगदीए उक्कस्सओ पदेससंकमदंडओ समत्तो ।

जहा तिरिक्खगदीए तहा तिरिक्खजोणिणीसु । मणुस्सेसु मणुसिणीसु च मूलोधं । देवाणं देवीणं च णेरइयमंगो ।

असण्णीसु सम्मत्ते उक्कस्सपदेससंकमो थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । अणंताणु-बंधिमाणे विसे० । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । केवलणाणावरणे विसेसा० । पयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दाए

अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तराय में विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपर्यग्रज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षु-दर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । इस प्रकार तिर्यचगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशसंकमदण्डक समाप्त हुआ ।

जैसे तिर्यचगतिमें प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन किया गया है वैसे ही तिर्यच योनिमतियोंमें भी समझना चाहिये । मनुष्यों और मनुष्यणियोंमें इस अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मूलोधके समान है । देवों और देवियोंका यह प्ररूपणा नारकियोंके समान है ।

असंज्ञी जीवोंमें उत्कृष्ट प्रदेशसंकम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रात्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धा मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक

विसे० । शीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसणावरणे विसे० । गिरयगई० अणंतगुणो ।  
 आहारसरीरे असंखे० गुणो । जसकित्ति० असंखे० गुणो । वेउव्वियसरीरे संखे०  
 गुणो । ओरालिय० विसे० । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति०  
 संखे० गुणो । देवगदिणामा० विसे० । तिरिक्खगई० विसे० । मणुस्सगई०  
 विसे० । हस्से संखे० गुणो । रदी० विसे० । सादे संखे० गुणो । इत्थिवेदे संखे०  
 गुणो । सोगे विसे० । अरदि० विसे० । णवुंसयवेदे विसे० । दुगुंछा० विसे० । भय०  
 विसे० । पुरिसवेदे० विसे० । संजलणमाणे विसे० । कोधे विसे० । मायाए विसे० ।  
 लोभे विसे० । दाणंतराइए विसे० । लाहंतराइए विसे० । भोगंतराइए विसे० । परि-  
 भोगंतराइए विसे० । विरियंतराइए विसे० । मणपज्जवणाणावरणे विसे० । ओहिणाणा०  
 विसे० । सुदणाणा० विसे० । मदिणा० विसे० । ओहिदंसणाव० विसे० । अचक्खु-  
 दंस० विसे० । चक्खुदंस० विसे० । असादे संखे० गुणो । उच्चागोदे विसे० । णीचा-  
 गोदे विसे० । एवं असण्णीसु उक्कस्सओ पदेससंकमदंडओ समत्तो ।

जहासण्णीसु तहा एइंदिय-विगलिंदिएसु ।

है । स्त्यानगुद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें  
 अनन्तगुणा है । आहारशरीरमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिक-  
 शरीरमें संख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है । तैजसशरीरमें विशेष  
 अधिक है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । देवगति  
 नामकर्ममें विशेष अधिक है । तिर्यचगति नामकर्ममें विशेष अधिक है । मनुष्यगति नामकर्ममें  
 विशेष अधिक है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें  
 संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । शोकमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष अधिक  
 है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है ।  
 पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है ।  
 मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है ।  
 लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगन्तरायमें विशेष अधिक है । परिभोगन्तरायमें विशेष  
 अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधि-  
 ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष  
 अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुर्शनावरणमें विशेष अधिक है ।  
 चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें विशेष  
 अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । इस प्रकार असंज्ञी जीवोंमें उत्कृष्ट प्रदेशसंकमदण्डक  
 समाप्त हुआ ।

जैसे असंज्ञी जीवोंमें यह प्ररूपणा की गयी है वैसे ही एकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंके  
 विषयमें भी जानना चाहिये ।

१ अ-काप्रत्योः 'मणुस्सिणीसु', ताप्रतौ 'मणुस्सिणीसु ( असण्णीसु )' इति पाठः ।



एत्तो ओघजहण्णपदेससंकमदंडओ कायव्वो । तं जहा— सव्वत्थोवो सम्मत्ते जहण्णओ पदेससंकमो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुवंधिमाणे असंखे० गुणो । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । पयला-पयला० असंखे० गुणो । णिदाणिदाए विसे० । शीणगिद्वीए विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । केवलणाणावरणे विसे० ।

कुदो विसेसाहियत्तं ? विज्झादभागहारादो चरिमसमयसुहुमसांपराइयअधापवत्त-भागहारस्स विसेसहीणत्तादो । ण च अधापवत्तभागहारो अवट्ठिदो, एदम्हारो चेव तदणवट्ठिदत्तावगमादो । ण च पुव्विच्छभागहारप्पावहुएण सह विरोहो, सव्वजहण्ण-भागहारे पडुच्च तदुप्पत्तीदो ।

पयलाए विसे० पयडिविसेसेण । णिदाए विसे० । केवलदंस० विसे० । णिरयगइ-णामाए अणंतगुणो । देवगइणामाए असंखे० गुणो । वेउव्वियसरीर० संखे गुणो । आहारसरीर० असंखे० गुणो । मणुसगइ० संखे० गुणो । उचागोदे संखे० गुणो । तिरिक्खगइ० असंखे० गुणो । कुदो ? उव्वेच्छणभागहारादो तेवट्ठिसागरोवमसदण्णोण-

अब यहां ओघ जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक करते हैं । वह इस प्रकार है— जघन्य प्रदेश-संक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अपत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है ।

शंका— उसमें विशेष अधिक क्यों है ?

समाधान— इसका कारण यह है कि विध्यातभागहारकी अपेक्षा अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकका अधःप्रवृत्तभागहार विशेष हीन है । और यह अधःप्रवृत्तभागहार कुछ अवस्थित नहीं है, क्योंकि, इसीसे उसकी अनवस्थितता जानी जाती है । पूर्वोक्त भागहारके अल्पबहुत्वके साथ इसका विरोध होगा, यह भी कहना ठीक नहीं है; क्योंकि, उसकी उत्पत्ति सबसे जघन्य भागहारके आश्रित है ।

केवलज्ञानावरणकी अपेक्षा वह प्रचलामें प्रकृतिविशेषसे विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगति नामकर्ममें अनन्तगुणा है । देवगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगति नामकर्ममें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । तिर्यचगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है, क्योंकि, उद्वेलनभागहारकी अपेक्षा एक सौ तिरेसठ

अमत्थरासिगुणिविज्ञादभागहारस्त असंखे० गुणहीणत्तादो । णवुंसयवेद० असंखे० गुणो । णीचागोद० संखेज्जगुणो । इत्थिवेद० असंखे० गुणो । ओरालिय० असंखे० गुणो । कोधसंजलण० असंखे० गुणो । माणसंजल० विसे० । पुरिस० विसे० । मायासं० विसे० । जसकित्ति० असंखे० गुणो । तेजइय० संखे० गुणो, धुवबंधित्तादो । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणो । हस्से संखे० गुणो । रदी० विसेसा० । सादे संखे० गुणो । सोगे संखे० गुणो । कुदो अधापवत्तभागहारादो विज्ञादभागहारस्त संखेज्जगुणहीणत्तं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । अरदी० विसे० । दुगुंछा० विसे० । भय० विसे० । लोहसंजल० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतरा० विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतरा० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिणा० विसे० । सुदणाणावरणे विसे० । आभिणिबोहियणाणाव० विसे० । ओहिदंसणाव० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे संखेज्जगुणो । एवमोघेण जहण्णओ पदेससंकमदंडओ समत्तो ।

णिरयगईए सच्चत्थोवो सम्मत्ते जहण्णओ पदेससंकमो । सम्मामिच्छत्ते असंखे०

सागरोपमोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित विध्यातभागहार असंख्यातगुणा हीन है । तिर्यचगतिसे नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है ।

शंका— अधःप्रवृत्तभागहारकी अपेक्षा विध्यातभागहार संख्यातगुणा हीन है, यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान— वह इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

उससे अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । आभिनिबोधिकज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार ओघसे जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें जघन्य प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है ।

गुणो । मिच्छत्ते असंखे० गुणो<sup>१</sup> । अणंताणुवंधिमाणे असंखे० गुणो । क्रोधे विसे० ।  
 मायाए विसे० । लोभे विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणो । णिद्दाणिद्दा० विसे० ।  
 थीणगिद्धीए विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो । क्रोधे विसे० । मायाए  
 विसे० । लोभे विसे० । पच्चखाणमाणे विसे० । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे  
 विसे० । केवलणाणावरणे विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० ।  
 केवलदंसणावरणे विसे० । आहार० अणंतगुणो । देवगइ० असंखे० गुणो ।  
 मणुसगइ० संखे० गुणो । वेउच्चिय० संखे० गुणो । णिरयगइ० संखे० गुणो ।  
 उच्चागोदे संखे० गुणो । तिरिकखगइ० असंखे० गुणो । इत्थिवेद० संखेज्जगुणो । णीचा-  
 गोदे संखे० गुणो । जसकित्ति० असंखे० गुणो । ओरालिय० संखे० गुणो । तेजइय०  
 विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणो । पुरिसवेदे संखे० गुणो ।  
 हस्से संखे० गुणो । रदि० विसे० । सादे संखे० गुणो । सोगे संखे० गुणो ।  
 अरदि० विसे० । दुगुंछा० विसे० । भय० विसे० । संजलणमाणे विसे० । क्रोधे  
 विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसेसाहिओ । दाणंतराए विसे० । लाहंतराए विसे० ।  
 भोगंतराए विसे० । परिभोगंतराए विसे० । वीरियंतराए विसे० । मणपज्जवणाणावरणे  
 विसे० । ओहिणा० विसे० । सुदणा० विसे० । मदिणा० विसे० । ओहिदंस० विसे० ।

क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें  
 असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अपत्याख्याना-  
 वरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें  
 विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । माया-  
 में विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचला-  
 प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक  
 है । आहारशरीरमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यात-  
 गुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । नरकगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें  
 संख्यातगुणा है । तिर्यचगतिमें असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें  
 संख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजस-  
 शरीरमें विशेष अधिक है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा  
 है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है ।  
 सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है ।  
 जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है ।  
 क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें  
 विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है ।  
 परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें  
 विशेष अधिक है । अविधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक

१ अप्रती 'मिच्छत्तअणंतगुणो' इति पाठः ।

अचक्षु० विसे० । चक्षु० विसे० । असादे संखे० गुणो । एवं गिरयगदीए संक्रमदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु जावुच्चागोदं ति मूलोघं । तदो उच्चागोदादो ओरालिय० असंखे० गुणो । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । इत्थि० संखे० गुणो । णवुंस० संखे० गुणो । णीचागोद० संखे० गुणो । जसकित्ति० असंखे० गुणो । तेजा० संखे० गुणो । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणो । पुरिस० संखे० गुणो । हस्से संखे० गुणो । रदि० विसे० । सादे संखे० गुणो । सोगे संखे० गुणो । अरदि० विसे० । दुगुंछा० विसे० । भय० विसे० । एत्तो उवरि णेरइयभंगो जाव असादं ति । एवं तिरिक्खगदीए जहण्णसंक्रमदंडओ समत्तो ।

एवं तिरिक्खजोणिणीसु । मणुसगदीए मणुस्सेसु जाव आहारसरीरं ति मूलोघो । तदो तिरिक्खगदीए असंखे० गुणो । णवुंस० असंखे० गुणो । णीचागोदे संखे० गुणो । इत्थिवेदे असंखे० गुणो । मणुसगई० असंखे० गुणो । ओरालिय० असंखे० गुणो । क्रोधसंजलण० असंखे० गुणो । माणे विसे० । पुरिस० विसे० । माया० विसे० । उच्चागोद० असंखे० गुणो । जसकित्ति० असंखे० गुणो । सेसाणि

है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षु-दर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यचगतिमें तिर्यचोंमें प्रकृत अरूपबहुत्वकी प्ररूपणा उच्चगोत्र तक मूल-ओघके समान है । तत्पश्चात् उक्त जघन्य प्रदेशसंक्रम उच्चगोत्रकी अपेक्षा औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । तिर्यचगतिमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है । कामर्णशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । इसके आगे असातावेदनीय तक उक्त प्ररूपणा नारकियोंके समान है । इस प्रकार तिर्यचगतिमें जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

इसी प्रकार तिर्यच योनिमतियोंमें भी प्रकृत संक्रमदण्डककी प्ररूपणा है । मनुष्यगतिमें मनुष्योंमें यह प्ररूपणा आहारकशरीर तक मूल-ओघके समान है । तत्पश्चात् वह जघन्य प्रदेशसंक्रम आहारकशरीरकी अपेक्षा तिर्यचगतिमें असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है । मानमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । उच्चगोत्रमें

१. अप्रतौ 'क्रोधसंखे०', काप्रतौ 'क्रोधसं० असंखे०' इति पाठः ।

पदाणि ओधियाणि । एवं मणुसिणीसु ।

देवेषु जाव केवलदंसणावरणं ति मूलोघो । तत्तो आहार० अणंतगुणो । गिरयगई० असंखे० गुणो । तिरिक्कगई० असंखे० गुणो । णवुंस० असंखे० गुणो । णीचागोद० संखे० गुणो । इत्थि० असंखे० गुणो । देवगई० असंखे० गुणो । वेउच्चि० संखे० गुणो । मणुसगइ० असंखे० गुणो । ओरालि० असंखे० गुणो । उच्चागोदे असंखे० गुणो । जसक्कित्ति० असंखे० गुणो । तेजइय० संखेज्जगुणो । एत्तो उवरि णेरइयभंगो । एवं देवेषु जहण्णसंकमदंडओ समत्तो ।

असण्णीसु सच्चत्थोवो सम्मत्ते जहण्णसंक्रमो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुवंधिमाणे असंखे० गुणो । क्रोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणो । क्रोधे विसे० । माया० विसे० । लोभे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । क्रोधे विसे० । माया० विसे० । लोभे विसे० । केवलणाणावरणे विसे० । पयलाए विसे० । णिहाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिहाणिहाए विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंस० विसे० । गिरयगई० अणंतगुणो । देवगई० असंखे० गुणो । वेउच्चि० संखे० गुणो । आहार० असंखे० गुणो । मणुसगइ० संखे० गुणो ।

असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । शेष पद ओघके समान हैं । इसी प्रकार मनुष्यनियोंमें भी प्रकृत प्ररूपणा करना चाहिये ।

देवोंमें केवलदर्शनावरण तक मूल-ओघके समान प्ररूपणा है । उससे उक्त जघन्य प्रदेश-संक्रम आहारशरीरमें अनन्तगुणा है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । तिर्यचगतिमें असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है । इसके आगे यह प्ररूपणा नारकियोंके समान है । इस प्रकार देवोंमें जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

असंज्ञी जीवोंमें जघन्य प्रदेशसंक्रम सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिध्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुवन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अपत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्थानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारक-शरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है ।

उच्चागोदे संखे० गुणो । जसकित्ति० असंखे० गुणो । ओरालिय० संखे० गुणो । तेजां०  
 विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगदीए संखे० गुणो । अजसकित्ति० विसे० ।  
 पुरिसवेदे संखे० गुणो । इत्थिवेदे संखे० गुणो । हस्से संखे० गुणो । रदी० विसे० ।  
 सादे० संखे० गुणो । सोगे संखे० गुणो । अरदी० विसे० । णवुंस० विसे० । दुगुंछ०  
 विसे० । भय० विसे० संजलणमाणे विसे० । कोधे विसे० । मायाए विसे० । लोभे  
 विसे० । दाणंतराइए विसे० । लाहंतराइए विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा०  
 विसे० । वीरियंतरा० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाणावरण० विसे० । सुदणा०  
 विसे० । मदिणाणाव० विसे० । ओहिदंसणाव० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु०  
 विसे० । असादे असंखे० गुणो । णीचागोदे विसेसाहो । एवमसणीसु जहण्णओ  
 पदेससंक्रमदंदओ समत्तो ।

जहा असणीसु तहा एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु वि वत्तव्वं ।

एत्तो भुजगारसंक्रमो उच्चदे— भुजगारे अट्टपदं कादूण सामित्तं कायव्वं । तं  
 जहा— मदिआवरणस्स भुजगार-अप्पदर-अवड्ढिसंक्रामगो को होदि ? अण्णदरो ।  
 अवत्तव्व० को होइ ? अण्णदरो उवसंतकसाओ परिवदमाणओ । चट्टुणाणावरणीय-

यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है ।  
 कामेणशरीरमें विशेष अधिक है । तिर्यंचगतिमें संख्यातगुणा है । अयशकीर्तिमें विशेष अधिक  
 है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें  
 विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष  
 अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष  
 अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष  
 अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें  
 विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है ।  
 वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें  
 विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है ।  
 अर्वाधदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शना-  
 वरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक  
 है । इस प्रकार असंज्ञी जीवोंमें जघन्य प्रदेशसंक्रमदण्डक समाप्त हुआ ।

जिस प्रकार असंज्ञियोंमें यह प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार एकेन्द्रियों, द्वीन्द्रियों,  
 त्रीन्द्रियों और चतुरिन्द्रियोंमें भी उसे करना चाहिये ।

अब यहां भुजाकारसंक्रमका कथन करते हैं— भुजाकारके विषयमें अर्थपद करके  
 स्वामित्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— मतिज्ञानावरणका भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित  
 संक्रामक कौन होता है ? उसका संक्रामक अन्यतर जीव होता है । अवक्तव्य संक्रामक कौन  
 होता है ? उसका संक्रामक परिपतमान अर्थात् उपशमश्रेणिसे गिरनेवाला अन्यतर उपशान्तकषाय

णवदंसणावरणीय- मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-पुरिसवेद-पंचंतराइयाणं सम्मा-इट्ठीसु वा मिच्छाइट्ठीसु वा धुववंधिणामपयडीणं च मदिआवरणभंगो । सादासाद-सम्मत्त-सम्मामि०-हस्स-रदि-अरदि-सोग-इत्थि-णवुंसयवेद-उच्च-णीचागोद-परियत्तमाण-णामपयडीणं पि एवं चेव । णवरि अवट्ठिदसंक्रमो णत्थि । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो । तं जहा— मदिआवरणस्स भुज० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अप्पदरकालो जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अवट्ठियस्स जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । एवं चउणागा-वरण-णवदंसणावरण-पंचंतराइयाणं । सादस्स भुजगारसंकामओ केव० ? जह० एग-समओ, उक्क० आवलिया समयूणा । अप्पदरसंकामओ केव० ? जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । [ असादस्स भुजगार-अप्पदरसंक० केव० ? जह० एगस०, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।

मिच्छत्तस्स भुज० जह० एगस० । उक्क० अंतोमुहुत्तं, ] आवलिया समऊणा ।

होता है । शेष चार ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, पुरुष-वेद और पांच अन्तराय इनकी सम्यग्दृष्टियों एवं मिथ्यादृष्टियोंमें तथा ध्रुववन्धी नामप्रकृतियोंकी भी यह प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, हास्य, रति, अरति, शोक, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, उच्चगोत्र, नीचगोत्र और परिवर्तमान नाम-प्रकृतियोंकी भी प्रकृत प्ररूपणा इसी प्रकार ही है । विशेषता इतनी है कि इनका अवस्थित संक्रम नहीं है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— मतिज्ञानावरणके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । इसके अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । इसी प्रकार शेष चार ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण और पांच-अन्तराय प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । सातावेदनीयके भुजाकार संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम आवली प्रमाण है । उसके अल्पतर संक्रामकका काल कितना है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । असातावेदनीयके भुजाकार और अल्पतर संक्रामकोंका काल कितना है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है ।

मिथ्यात्वके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त

१ मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-अवत्तव्वसंकामया अत्थि । एवं सोलसकसाय-पुरिसवेद-भय-दुगुंछाणं । एवं चेव सम्मत्त-सम्मामिच्छत्त-इत्थि-णवुंसयवेद-हस्स-रइ-अरइ-सोगाणं । णवरि अवट्ठिदसंकामगा णत्थि । क. पा. सु. पृ. ४२३, २६४-६७.

२ कोष्ठकस्थोऽयं पाठ अ-का-ताप्रतिष्वनुपलभ्यमानो मप्रतितोऽत्र योजितः ।

अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० छावड्डिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अवड्डिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समयो । सम्मत्तस्स भुजगार० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अप्पदर० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अवड्डिद-संकमो णत्थिं । सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अप्पदर० जह० अंतोमु०, उक्क० वे-छावड्डिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ।

अणंताणुवंधीणं भुजगारकालो जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० वे-छावड्डिसागरो० सादिरेयाणि । अवड्डिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समयो । वारसकसाय-भय-दुगुंछाणं मदिआवरणभंगो ।

अथवा एक समय कम आवली मात्र है । अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक छयासठ सागरोपम मात्र है । अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । सम्यक्त्व प्रकृतिके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । उसका अवस्थित संक्रम नहीं होता । सम्यग्मिथ्यात्वके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है ।

अनन्तानुबन्धिचतुष्टयके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक दो छयासठ सागरोपम मात्र है । अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । बारह कषाय, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा

१ मिच्छत्तस्स भुजगारसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ उक्कस्सेण आवलिया समयूणा, अधवा अंतोमुहुत्तं । अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? एक्को वा समयो जाव आवलिया दुसमयूणा, अधवा अंतोमुहुत्तं । तदो समयुत्तरो जाव छावड्डिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अवड्डिदसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण संखेज्जा समयो । अवत्तव्वसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । क. पा. सु. पृ. ४२७, २९९-३११.

२ सम्मत्तस्स भुजगारसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जिभागो । अवत्तव्वसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमयो । क. पा. सु. पृ. ४२९, ३१२-१७.

३ सम्मामिच्छत्तस्स भुजगारसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? एक्को वा दो वा समयो । एवं समयुत्तरो उक्कस्सेण जाव चरिमुव्वेहणकंडयुक्कीरणा ति । अधवा सम्मत्तमुप्पादेमागयस्स वा तदो खवेमाणयस्स वा जो गुणसंकमकालो सो वि भुजगारसंकामयस्स कायव्वो । अप्पदरसंकामगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । एयसमओ वा । उक्कस्सेण छावड्डिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अवत्तव्वसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । क. पा. सु. पृ. ४२९, ३२१-२८.

४ अणंताणुवंधीणं भुजगारसंकामगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमयो । उक्कस्सेण पलिदोवमस्स



हस्स-रदि-अरदि-सोग-इत्थि - णवुंसयवेदानं भुजगार-अप्पदरसंकमणकालो जह० एग-समओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं<sup>१</sup> । अवट्ठिय० णत्थि । णवरि इत्थिवेद० अप्पदर० उक्क० वे-छा-वट्ठिसागरो० सादिरेयाणि<sup>२</sup> । णवुंस० अप्पदर० सतिपलिदोवमाणि वे-छावट्ठिसागरो-वमाणि<sup>३</sup> । पुरिसवेदस्स मदिआवरणभंगो ।

णिरयगइणामाए भुजगार० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं । अप्पदर० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० वे-छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अवट्ठिदसंकमो णत्थि । तिरिक्खगइणामाए भुजगारसंकमो हेदुणा उवएसेण च जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं । अप्पदर० तिरिक्खगइणामाए जह० अंतोमुत्तं, उक्क० तेवट्ठिसागरोवमसदं सादिरेयं । अवट्ठिय० णत्थि । मणुसगइ-

मतिज्ञानावरणके समान है । हास्य, रति, अरति, शोक, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद; इनके भुजाकार व अल्पतर संक्रामकोंका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । इनका अवस्थित संक्रम नहीं होता । विशेष इतना है कि स्त्रीवेदके अल्पतर संक्रामकका काल उत्पर्षसे साधिक दो छथासठ सागरोपम मात्र है, तथा नपुंसकवेदके अल्पतर संक्रामका उत्कृष्ट काल तीन पल्योपमोंसे सहित दो छथासठ सागरोपम मात्र है । पुरुषवेदकी प्ररूपणा मतिज्ञाना-वरणके समान है ।

नरकगति नामकर्मके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्य और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो छथासठ सागरोपम मात्र है । अवस्थित संक्रम उसका नहीं होता । तिर्यचगति नामकर्मके भुजाकार संक्रमका जघन्य व उत्कृष्ट काल हेतु और उपदेशसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । तिर्यचगति नामकर्मके अल्पतर संक्रमका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम मात्र है । अवस्थित संक्रम उसका नहीं होता । मनुष्यगति नामकर्मके भुजाकार संक्रमका काल

असंखेज्जदिभागो । अप्पदरसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण वेछावट्ठिसागरो-वमाणि सादिरेयाणि । अवट्ठिदसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण संखेज्जा समया । अवत्तव्वसंकामगो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । क. पा. सु. पृ. ४३०, ३२९-३९.

५ ताप्रतौ 'वारसकसाय-दुगुंछाणं' इति पाठः ।

६ वारसकसाय-पुरिसवेद-मय-दुगुंछाणं भुजगार-अप्पदरसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेयसमओ । उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । अवट्ठिदसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण संखेज्जा समया । अवत्तव्वसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णुक्कस्सेण एयसमओ । क. पा. सु. पृ. ४३१, ३४०-४७.

१ हस्स-रइ-अरइ-सोगाणं, भुजगार-अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । क. पा. सु. पृ. ४३२, ३६०-६२.

२ अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण वे छावट्ठिसागरोवमाणि संखेज्जवस्सव्वमहियाणि । क. पा. सु. पृ. ४३१, ३५१-५३.

३ णवुंसयवेदस्स अप्पयरसंकमो केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण एयसमओ । उक्कस्सेण वे छावट्ठि-सागरोवमाणि तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयाणि । सेसाणि इत्थिवेदभंगो । क. पा. सु. पृ. ४३२, ३५६-५९.

गामाए भुजगार० जह० एगसमओ । उक्क० पलिदो० असंखे० भागो, हेदुणा तेत्तीस-  
सागरोवमाणि समयूणाणि । अप्पदर० जह० एगसमओ । उक्क० पलिदो० असंखे०  
भागो, हेदुणा तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि । अवट्टिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा  
समया । देवगइणामाए भुजगार० जह० एगसमओ । उक्क० पलिदो० असंखे० भागो,  
हेदुणा तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि । अप्पदर० जह० एगसमओ । उक्क० पलिदो०  
असंखे० भागो, हेदुणा तेत्तीसं सागरोवमाणि सादि० । अवट्टिय० जहण्णेण एगसमओ,  
उक्क० संखेज्जा समया ।

ओरालियसरीर० भुजगार० जह० एगसमओ । उक्क० पलिदो० असंखे० भागो,  
हेदुणा तेत्तीसं सागरोवमाणि समयूणाणि । अप्पदर० जह० एगस० । उक्क० पलिदो०  
असं० भागो, हेदुणा तिण्णि पलिदो० सादिरेयाणि । अवट्टिय० जह० एगसमओ, उक्क०  
संखेज्जा समया । वेउव्वियसरीरस्स देवगइभंगो ।

धुववंधीणं सव्वणामपयडीणं मदिणाणावरणभंगो । समचउरससंठाणस्स भुजगार-  
अप्पदरकालो जह० एगसमओ । उक्क० उवदेसेण पलिदो० असंखे० भागो, हेदुणा  
भुजगारकालो अप्पदरकालो च तेत्तीसं सागरो० सादिरेयाणि । अवट्टिद० जह०  
एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । वज्जरिसहणारायणसंघडणस्स मणुसगइभंगो ।

जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है, युक्तिसे वह एक समय  
कम तेतीस सागरोपम मात्र है । उसके अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है ।  
उत्कर्षसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा हेतुसे साधिक तीन पल्य प्रमाण है । अवस्थि  
संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । देवगति नामकर्मके  
भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है । उत्कर्षसे वह पल्योपमके असंख्यातवें  
भाग तथा हेतुसे साधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक  
समय मात्र है । उत्कर्षसे वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा हेतुसे साधिक तेतीस सागरोपम  
मात्र है । अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है ।

औदारिकशरीरके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है । उत्कर्षसे वह  
पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा हेतुसे एक समय कम तेतीस सागरोपम मात्र है । अल्पतर  
संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है । उत्कर्षसे वह पल्योपमके भाग असंख्यातवें तथा  
हेतुसे साधिक तीन पल्योपम मात्र है । अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और  
उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र है । वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ।

सव ध्रुववन्धी नामप्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । समचतुरस्र-  
संस्थानके भुजाकार और अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय मात्र है । उत्कर्षतः वह  
उपदेशसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तथा हेतुसे भुजाकार संक्रामक व अल्पतर संक्रामक दोनों  
ही काल साधिक तेतीस सागरोपम मात्र हैं । अवस्थित संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय  
और उत्कर्षसे संख्यात समय है । वज्रर्षभवज्रनाराचसंहननकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है ।

चदुण्णमाणुपुव्वीणं सग-सगगइभंगो । पंचसंठाण-पंचसंघडण-आदावुज्जीव-अप्प-सत्थविहायगइ-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-अजसकित्ति-दूभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमु० । अप्पदर० जह० एगसमओ । उक्क० थिराथिर-सुहासुह-अजसकित्ति० अंतोमुहुत्तं, उज्जीवस्स तिपल्लाहियं तेवड्डिसागरोवमसदं, आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं पंचासीदिसागरोवमसदं, पंचसंठाण-पंचसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्जाणं तिपलिदोवमाहिय-वे-छावड्डिसागरोवमाणि । अवड्डिय० णत्थि ।

परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-आदेज्ज-सुस्स-राणं समचउरससंठाणभंगो । उच्चागोदस्स भुजगारसंकमो जह० एगसमओ, उक्क० आवलिया । अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । उच्चागोदस्स उव्वेळ्ळणाएँ अपच्छिमे ढ्ढिदिखंडए भुजगारो अंतोमुहुत्तं । अवड्डिय० णत्थि । णीचागोदस्स भुजगार० खवण-उवसामणाहि विणा आवलिया, खवण-उवसामणाहि अंतोमुहुत्तं । अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० वे-छावड्डिसागरो० सादिरेयाणि । अवड्डिय० णत्थि । एवमेयजीवेण कालो समत्तो ।

चार आनुपूर्वीं प्रकृतियोंकी यह प्ररूपणा अपनी अपनी गतिके समान है । शेष पांच संस्थान, पांच संहनन, आतप, उद्योत, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अयशकीर्ति, दुर्भंग, दुस्वर और अनादेय; इनके भुजाकार संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है । उनके अल्पतर संक्रामकका काल जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और अयशकीर्तिका अन्तर्मुहूर्त; उद्योतका तीन पल्योंसे अधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम; आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरका एक सौ पचासी सागरोपम; तथा पांच संस्थान, पांच संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भंग, दुस्वर और अनादेयका तीन पल्योपमोंसे अधिक दो छ्यासठ सागरोपम मात्र है । उनका अवस्थित संक्रम नहीं होता ।

परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, आदेय और सुस्वरकी प्ररूपणा समचतुरस्रसंस्थानके समान है । उच्चगोत्रके भुजाकार संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली मात्र है । उसके अल्पतरसंक्रामकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । उच्चगोत्रकी उद्वेलनाके अन्तिम स्थितिकाण्डकमें भुजाकार संक्रमका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है । इसका अवस्थित संक्रम नहीं है । नीचगोत्रके भुजाकार संक्रमका काल क्षपणा व उपशामनाके विना एक आवली तथा क्षपणा व उपशामनाके साथ अन्तर्मुहूर्त मात्र है । अल्पतर संक्रमका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक छ्यासठ सागरोपम मात्र है । अवस्थित संक्रम नहीं है । इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

१ अप्रतौ 'उच्चागोदउव्वेळ्ळणाए' इति पाठः ।

एगजीवेण अंतरं गाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च सामित्तादो एयजीवेण कालादो च साधेदूण भाणियव्वं ।

अप्पावहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स अवत्तव्वसंकामया थोवा । अवट्टिय० अणंतगुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे० गुणा । सेसचदुणाणावरण-णवदंसणावरण-पंचंतराइयाणं मदिआवरणभंगो । सादासादाणं अवत्तव्वं० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० संखे० गुणा, एगावलियसंचिदभुजगारसंकामय-जीवेहितो अंतोमुहुत्तसंचिदअप्पदरसंकामयजीवाणं संखेज्जगुणत्तसिद्धीए णिब्बाहमुवलंभादो । सोलसकसाय-भय-दुगुंछाणं मदिआवरणभंगो । हस्स-रदीणमवत्त० थोवा । भुज० अणंतगुणा । अप्पदर० संखे० गुणा । एवमित्थिवेदस्स । अरदि-सोगाणमवत्त० थोवा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । एवं णवुंसयवेदस्स । पुरिसवेदस्स

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर एवं नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल और अन्तरका कथन स्वामित्वसे तथा एक जीवकी अपेक्षा कालसे भी सिद्ध करके करना चाहिये ।

अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा—मतिज्ञानावरणके अवक्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । अवस्थित संक्रामक अनन्तगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार संक्रामक संख्यातगुणे हैं । शेष चार ज्ञानावरण नौ, दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंका यह अल्पवहुत्व मतिज्ञानावरणके समान है ।

साता और असाता वेदनीयके अवक्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, एक आवलीमें संचित भुजाकार संक्रामक जीवोंकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त संचित अल्पतर संक्रामक जीवोंके संख्यातगुणत्वकी सिद्धि-निर्वाध पायी जाती है ।

सोलह कपाय, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । हास्य और रतिके अवक्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक अनन्तगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार स्त्रीवेदके सम्बन्धमें कहना चाहिये । अरति और शोकके अवक्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । अल्पतर संक्रामक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार संक्रामक संख्यातगुणे हैं । इसी प्रकार नपुंसकवेदके सम्बन्धमें कहना चाहिये । पुरुषवेदके अवक्तव्य संक्रामक स्तोक हैं ।

१ प्रतिपु 'संकामिय' इति पाठः ।

२ सोलसकसाय-भय-दुगुंछाणं सव्वथोवा अवत्तव्वसंकामया । अवट्टिदसंकामया अणंतगुणा । अप्पयर-संकामया असंखेज्जगुणा । भुजगारसंकामया संखेज्जगुणा । क. पा. सु. पृ. ४४३, ५०४-७.

३ इत्थिवेद-हस्स-रदीणं सव्वथोवा अवत्तव्वसंकामया । भुजगारसंकामया अणंतगुणा । अप्पयरसंकामया संखेज्जगुणा । क. पा. सु. पृ. ४४३, ५०८-१०.

४ णवुंसयवेद-अरइ-सोगाणं सव्वथोवा अवत्तव्वसंकामया । अप्पदरसंकामया अणंतगुणा । भुजगारसंकामया संखेज्जगुणा । क. पा. सु. पृ. ४४४, ५१५-१७.

अवत्तव्व० थोवा । अवट्ठिय० असंखे० गुणा । भुजगार० अणंतगुणा । अप्पदर० संखे० गुणा । मिच्छत्तस्स अवट्ठिदसंक्रामया थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । सम्मत्तस्स अवत्तव्व० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्तभंगो<sup>१</sup> ।

णिरयगइ० अवत्तव्वया थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । तिरिक्खगइणामाए अवत्त० थोवा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । मणुसगइणामाए अवट्ठिद० थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । भुजगार० अणंतगुणा । अप्पदर० संखे० गुणा । देवगइणामाए अवट्ठिद० थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा ।

ओरालिय-तैजा-कम्मइयसरीरणं मदिआवरणभंगो । सव्वासिं धुववंधिणामपयडीणं णाणावरणभंगो । पढमसंठाण-पढमसंघडणाणं मणुसगइभंगो । चदुसंठाण-चदुसंघडणाणं अवत्तव्व० थोवा । भुजगार० अणंतगुणा । अप्पदर० संखे० गुणा । हुंडसंठाण-असंपत्त-

अवस्थित संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार संक्रामक अनन्तगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे हैं । मिध्यात्वके अवस्थित संक्रामक स्तोक हैं । अवत्तव्य संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके अवत्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिध्यात्वकी प्ररूपणा सम्यक्त्व प्रकृतिके समान है ।

नरकगति नामकर्मके अवत्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । तिर्यचगति नामकर्मके अवत्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । अल्पतर संक्रामक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार संक्रामक संख्यातगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके अवस्थित संक्रामक स्तोक हैं । अवत्तव्य संक्रामक असंख्यातगुणे । भुजाकार संक्रामक अनन्तगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे हैं । देवगति नामकर्मके अवस्थित संक्रामक स्तोक हैं । अवत्तव्य संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकार संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक असंख्यातगुणे हैं ।

औदारिक, तैजस और कर्मण शरीरोंके प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । सब ध्रुववन्धी नामप्रकृतियोंकी यह प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । प्रथम संस्थान और प्रथम संहननकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । चार संस्थानों और चार संहननोंके अवत्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । भुजाकार संक्रामक अनन्तगुणे हैं । अल्पतर संक्रामक संख्यातगुणे

१ पुरिसवेदस्स. सव्वत्थोवा अवत्तव्वसंक्रामया । अवट्ठिदसंक्रामया असंखेज्जगुणा । भुजगारसंक्रामया अणंतगुणा । अप्पयरसंक्रामया संखेज्जगुणा । क. पा. सु. पृ. ४४३, ५११-१४.

२ सव्वत्थोवा मिच्छत्तस्स अवट्ठिदसंक्रामया । अवत्तव्वसंक्रामया असंखेज्जगुणा । भुजगारसंक्रामया असंखेज्जगुणा । अप्पयरसंक्रामया असंखेज्जगुणा । क. पा. सु. पृ. ४४२, ४९७-५००.

३ सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं. सव्वत्थोवा अवत्तव्वसंक्रामया । भुजगारसंक्रामया असंखेज्जगुणा । अप्पयरसंक्रामया असंखेज्जगुणा । क. पा. सु. पृ. ४४३, ५०१-५०३.

सेवद्वसंघडणानं अवत्तव्व० थोवा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजागार० संखे० गुणा ।  
णीचुचागोदानं सादासादभंगो । एवं भुजगारसंकमो । समत्तो ।

एत्तो पदणिक्खेवो । सामित्तं । तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्सिया वड्ढी  
कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो तप्पाओग्गउक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो तदो तं वड्ढि  
वड्ढिदूणं आवलियादिकंतं पुव्वकम्मं च संकामेतस्स सत्तमाए पुढवीए णेरइयस्स उक्क०  
वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स सव्वुक्कस्सेण कम्मेण खवयस्स चरिम-  
समयसुहुमसांपरइयस्स तस्स उक्कस्सिया हाणी । उक्कस्समवट्ठाणं कत्थ ? वड्ढीए ।  
चट्टुणाणावरण-चट्टुदंसणावरण-पंचंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो ।

णिद्दा-पयलाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स चरिमसुहुमसांपराइयस्स  
खवगस्स । उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो पढमदाए उवसमसेट्ठिं चट्ठिय  
चरिमसमयसुहुमसांपराइयो होदूण मदो, तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । उक्कस्स-  
मवट्ठाणं मदिआवरणअवट्ठाणतुल्लं । थीणगिद्धितियस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? गुणिद-  
कम्मंसियस्स सव्वसंकमेण संकामेतस्स । उक्क० हाणी अवट्ठाणं च जहा णिद्दाए

हैं । हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तासृपाटिकासंहननके अवक्तव्य संक्रामक स्तोक हैं । अल्पतर  
संक्रामक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार संक्रामक संख्यातगुणे हैं । नीच और उच्च गोत्रकी प्ररूपणा  
साता व असाता वेदनीयके समान है । इस प्रकार भुजाकार संक्रम समाप्त हुआ ।

यहां पदनिक्षेपमें स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणकी  
उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक जीव तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट वृद्धिके द्वारा वृद्धिको  
प्राप्त हुआ है, पश्चात् उस वृद्धिसे वृद्धिगत होकर आवली अतिक्रान्त उसका तथा पूर्व कर्मका भी  
संक्रम कर रहा है उस सातवीं पृथिवीके नारकीके मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है ।  
उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक सर्वोत्कृष्ट कर्मके साथ क्षपणा करता  
हुआ सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयमें वर्तमान है उसके मतिज्ञानावरणकी उत्कृष्ट हानि होती  
है । उसका उत्कृष्ट अवस्थान कहांपर होता है ? उसका उत्कृष्ट अवस्थान वृद्धिमें होता है ।  
शेष चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके  
समान है ।

निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह गुणितकर्मांशिक अन्तिम-  
समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो  
गुणितकर्मांशिक जीव प्रथमतः उपशमश्रेणिपर आरूढ होता हुआ अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म-  
साम्परायिक होकर मरणको प्राप्त हुआ है उसके प्रथमसमयवर्ती देव होनेपर उनकी उत्कृष्ट  
हानि होती है । उनके उत्कृष्ट अवस्थानकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके अवस्थानके समान है ।  
स्त्यानगृद्धिन्निककी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह सर्वसंक्रम द्वारा संक्रान्त करनेवाले  
गुणितकर्मांशिकके होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा निद्राके समान

तदा वृत्तवर्ष ।

सादस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो गुणितकर्मसियो कसाए तिखुत्तमुवसामे-  
दूण चउत्थवारमुवसामेतो चरिमसमयसुहुमसांपराइयो जादो, तदो मदो देवो जादो,  
तस्स आवलियतवभवत्थस्स देवस्स उक्क० वड्ढी । एदिस्सेव से काले उक्क० हाणी ।  
अवट्ठाणं गत्थि । असादस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणितकर्मसियो खवग-  
सेडिमारुहिय चरिमसमयसुहुमसांपराइयो जादो तस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी  
कस्स ? जो गुणितकर्मसियो उवसमसेडिमारुहिय सुहुमसांपराइयो जादो से काले मदो  
तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । अवट्ठाणं गत्थि ।

मिच्छत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणितकर्मसियो मिच्छत्तस्स चरिमफालिं  
सव्वसंकमेण सम्मत्त-सम्मामिच्छत्तेसु संकामेतथो तस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी  
कस्स ? जो गुणितकर्मसियो गहिदपढमसम्मत्तो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणि उक्कस्स-  
गुणसंकमेण पूरिय से काले विज्झादसंकमं गदो तस्स उक्क० हाणी । उक्कस्समवट्ठाणं  
कस्स ? जो पुव्वाइदेण सम्मत्तेण गुणितकर्मसियो उक्कस्साए जोगवड्ढीए वड्ढिदूण  
से काले जो समयपवद्धो तदो विसेसुत्तरे जोगट्ठाणे पडिवदिदो, तदो से काले सम्मत्तं

करना चाहिये ।

सातावेदनीयकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक कपायोंको तीन वार  
उपशमा कर चौथे वार उपशमाता हुआ अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होकर मरणको  
प्राप्त हो देव हुआ है, उस आवली कालवर्ती तद्भवस्थ देवके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है ।  
इसीके अनन्तर कालमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान नहीं होता । असातावेदनीयकी  
उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक क्षपकश्रेणिपर आरूढ होकर अन्तिम  
समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि  
किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक उपशमश्रेणिपर आरूढ होकर सूक्ष्मसाम्परायिक होता  
हुआ अनन्तर समयमें मृत्युको प्राप्त हुआ है उसके प्रथम समयवर्ती देव हानेपर असाता-  
वेदनीयकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान उसका नहीं होता ।

मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक मिथ्यात्वकी अन्तिम  
फालिकी सर्वसंक्रम द्वारा सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वमें संक्रान्त रहा है उसके मिथ्यात्वकी  
उत्कृष्ट वृद्धि होती है । मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक प्रथम  
सम्यक्त्वको ग्रहण कर सम्यक्त्व प्रकृति और सम्यग्मिथ्यात्वको उत्कृष्ट गुणसंक्रमके द्वारा पूर्ण  
करके अनन्तर कालमें मिथ्यातसंक्रमको प्राप्त हुआ है उसके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है ।  
उसका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो गुणितकर्मांशिक पूर्व आगत सम्यक्त्वके  
साथ उत्कृष्ट योगवृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त होकर अनन्तर कालमें जो समयप्रबद्ध है उससे  
विशेषाधिक योगस्थानमें गिरता है, पश्चात् जो अनन्तर कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है,

पडिवण्णो, तस्स जाधे उक्कस्सिया वड्ढी आवलियमइकंता ताधे उक्कस्सिया मिच्छत्तस्स पदेससंकमवड्ढी । तिस्सेव से काले उक्कस्समवट्ठाणं<sup>१</sup> ।

सम्मत्तस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो उक्क० कम्मणेण मिच्छत्तं गदो, तदो सच्चरहस्सेण उव्वेत्थणकालेणं सम्मत्तमुव्वेत्थेदि, तस्स अपच्छिमट्ठिदिखंडयस्स चरिमसमए उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो उक्कस्सएण कम्मणेण मिच्छत्तं गदो तस्स दुसमयमिच्छाइट्ठिस्स उक्क० हाणी । अवट्ठाणं णत्थि त्ति ।

सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सवट्ठि-हाणीणं मिच्छत्तस्स वट्ठि-हाणिभंगो । अवट्ठाणं णत्थि ।

अणंताणुवंधीणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स सच्चरसंकमेण चरिमफालिं संकामंतस्स । उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो सम्मत्तं पडिवण्णो

उसके जब उत्कृष्ट वृद्धि आवली अतिक्रान्त होती है तब मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमवृद्धि होती है । उसीमें उसका अनन्तर कालमें अवस्थान होता है ।

सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट सत्कर्मके साथ मिथ्यात्वको प्राप्त होकर पश्चात् सबसे थोड़े उद्वेलनकालमें सम्यक्त्वकी उद्वेलना करता है उसके अन्तिम स्थितिकाण्डकके अन्तिम समयमें उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो उत्कृष्ट सत्कर्मके साथ मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस द्वितीय समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान उसका नहीं है ।

सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट वृद्धि और हानिकी प्ररूपणा मिथ्यात्वकी वृद्धि और हानिके समान है । अवस्थान उसका नहीं है ।

अनन्तानुबन्धी कपायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? उसकी उत्कृष्ट वृद्धि सर्वसंक्रम द्वारा अन्तिम फालिको संक्रान्त करनेवाले गुणितकर्मांशिकके होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि

१ मिच्छत्तस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स मिच्छत्तक्खवयस्स सच्चरसंकामयस्स । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स सम्मत्तमुप्पाएदूण गुणसंकमेण संकामिदूण पदमसमयविज्झादसंकामयस्स । उक्कस्सयमवट्ठाणं कस्स ? गुणिदकम्मंसिओ पुव्वुप्पण्णेण सम्मत्तेण मिच्छत्तादो सम्मत्तं गदो तं दुसमयसम्माइट्ठिमादिं कादूण नाव आवलियसम्माइट्ठि त्ति एत्थ अण्णदरम्मि समये तप्पाओग्गउक्कस्सेण वट्ठिं कादूण से काले तत्तियं संकामयमाणस्स तस्स उक्कस्सयमवट्ठाणं । क. पा. सु. पृ. ४४५, ५२६-३१.

२ ताप्रती 'उव्वेत्थणकाले [ण]' इति पाठः ।

३ सम्मत्तस्स उक्कस्सिया वड्ढो कस्स ? उव्वेत्थमाणयस्स चरिमसमए । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? गुणिदकम्मंसियो सम्मत्तमुप्पाएदूण लहुं मिच्छत्तं गओ । तस्स मिच्छाइट्ठिस्स पदमसमए अवत्तव्वसंकमो, विदियसमए उक्कस्सिया हाणी । क. पा. सु. पृ. ४४६, ५३२-३५.

४ सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स सच्चरसंकामयस्स । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? उप्यादिदे सम्मत्ते सम्मामिच्छत्तादो सम्मत्ते ञं संकामेदि तं पदेसग्गमंगुलस्सासंखेज्जभागपडिभागं । गुणिदकम्मंसिओ सम्मत्तमुप्पाएदूण लहुं चेव मिच्छत्तं गदो जहण्णिणयाए मिच्छत्तद्धाए पुण्णाए सम्मत्तं पडिवण्णो । तस्स पदमसमयसम्माइट्ठिस्स उक्कस्सिया हाणी । क. पा. सु. पृ. ४४६, ५३६-४०.



तस्स पढमसमयसम्माइड्डिस्स उक्क० हाणी । उक्कस्समवट्ठाणं मदिआवरणउक्कस्सावट्ठाणतुल्लं ।

अट्टुणं कसायाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो सव्वसंक्रमेण चरिमफालिं संकामेंतओ तस्स उक्क० वड्ढी । दुविहस्स कोहस्स उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो उवसमसेट्ठिमारुहिय दुविहे कोहे चरिमसमयअणुवसंते तदो से काले मदो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । दुविहमाण-माया-लोहाणं हाणीए दुविह-कोहभंगो । अट्टुणं कसायाणमुक्कस्समवट्ठाणं मदिआवरणअवट्ठाणतुल्लं ।

कोहसंजलणाए उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो सव्वसंक्रमेण चरिमफालिं संकामेंतओ तस्स उक्क० वड्ढी । तस्सेव से काले उक्क० हाणी । उक्कस्समवट्ठाणं हाणीए

किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उनके उत्कृष्ट अवस्थानका कथन मतिज्ञानावरणके उत्कृष्ट अवस्थानके समान है ।

आठ कपायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक सर्वसंक्रम द्वारा अन्तिम फालिको संक्रान्त कर रहा है उसके आठ कपायोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । दो प्रकार ( अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण ) क्रोधकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक उपशमश्रेणिपर आरूढ होकर दो प्रकारके क्रोधके अनुपशान्त रहनेके अन्तिम समय पश्चात् अनन्तर कालमें मरणको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । दो प्रकारके मान, माया और लोभकी हानिकी प्ररूपणा दो प्रकारके क्रोधके समान है । आठ कपायोंके उत्कृष्ट अवस्थानकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके अवस्थानके समान है ।

संज्वलन क्रोधकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक सर्वसंक्रम द्वारा अन्तिम फालिको संक्रान्त कर रहा है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उत्कृष्ट अवस्थान हानिमें करना चाहिये । जैसे संज्वलन क्रोधकी

१ अणंताणुबंधीणमुक्कस्सियावट्ठी कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स सव्वसंक्रामयस्स । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? गुणिदकम्मंसिओ तप्पाओग्गउक्कस्सयादो अधापवत्तसंक्रामादो सम्मत्तं पडिबज्जिऊण विज्जादसंक्रामगो जादो । तस्स पढमसमयसम्माइड्डिस्स उक्कस्सिया हाणी । उक्कस्सयमवट्ठाणं कस्स ? जो अधापवत्तसंक्रमेण तप्पाओग्गुक्कस्सएण वड्ढियूण अवट्ठिदो तस्स उक्कस्सयमवट्ठाणं । क. पा. सु. पृ. ४४७, ५४१-४६.

२ अट्टुकसायाणमुक्कस्सिया वट्ठी कस्स ? गुणिदकम्मंसियस्स सव्वसंक्रामयस्स । उक्कस्सिया हाणी कस्स ? गुणिदकम्मंसियो पढमदाए कसायउवसामणद्धाए जाधे दुविहस्स कोहस्स चरिमसमयसंक्रामगो जादो । तदो से काले मदो देवो जादो । तस्स पढमसमयदेवस्स उक्कस्सिया हाणी । एवं दुविहमाण-दुविहमाया-दुविहलोहाणं । णवरि अप्पणो चरिमसमयसंक्रामगो होदूण से काले मदो देवो जादो । तस्स पढमसमयदेवस्स उक्कस्सिया हाणी । अट्टुणं कसायाणमुक्कस्सयमवट्ठाणं कस्स ? अधापवत्तसंक्रमेण तप्पाओग्गउक्कस्सएण वड्ढियूण से काले अवट्ठिदसंक्रामगो जादो । तस्स उक्कस्सयमवट्ठाणं । क. पा. सु. पृ. ४४७, ५४७-५४.

कायव्वं<sup>१</sup> । जहा कोहसंजलणाए तहा माण-माया-पुरिसवेदं-छण्णोकसायाणं कायव्वं<sup>२</sup> ।  
णवरि छण्णोकसायाणं उक्कस्सिया हाणी चरिमसमयअणुवसंते से काले मदो देवो जादो  
तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । चदुण्णोकसायाणमवट्ठाणं णत्थि । भय-दुगुंछाण-  
मवट्ठाणं<sup>३</sup> मदिआवरणभंगो ।

इत्थि-णवुंसयवेदाणमुक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो सव्वसंकमेण चरिम-  
फालिं संकामेतथो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो

प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार संज्वलन मान, माया, पुरुषवेद और छह नोकपायोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेषता इतनी है कि छह नोकपायोंकी उत्कृष्ट हानि उनके अनुपशान्त रहनेके अन्तिम समयके पश्चात् अनन्तर कालमें (जहां वे उपशान्त होनेवाले थे) जो मरणको प्राप्त होकर देव हुआ है, उस प्रथम समयवर्ती देवके होती है । चार नोकपायोंका (हास्य, रति, अरति और शोक) का अवस्थान नहीं है । भय और जुगुप्साके अवस्थानकी प्ररूपणा मति-ज्ञानावरणके समान है ।

विशेषार्थ— यहाँ संज्वलन लोभके स्वामित्वकी प्ररूपणा नहीं की गयी है (सम्भव है प्रतिलिपिकारकी असावधानीसे वह लिखनेसे रह गयी हो) । उसकी प्ररूपणा कसायपाहुड (चूर्णिसूत्र) में इस प्रकार की गयी है— संज्वलन लोभकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जिस गुणितकर्मांशिक जीवने अल्प कालमें चार वार कपायोंको उपशान्त किया है, तथा जो अन्तिम भवमें दो वार कपायोंको उपशान्त कर क्षपणामें उद्यत हुआ है, उसके जब अकृतअन्तरकरण अवस्थाका अन्तिम समय प्राप्त होता है तब उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक तीन वार कपायोंको उपशान्त कर चौथी वार उनके उपशान्त करनेमें प्रवर्तमान है वह जब अन्तिम समयवर्ती अकृतअन्तरकरण रहनेके अनन्तर समयमें मरणको प्राप्त होकर देव होता है तब उसके देव होनेके पश्चात् एक समय अधिक आवली मात्र कालके बीतनेपर उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । उसके उत्कृष्ट अवस्थानकी प्ररूपणा अप्रत्याख्यानावरणके समान है । (देखिये क. पा. सु. पृ. ४४९, ५६३-६७)

स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक सर्व-संक्रमण द्वारा अन्तिम फालिको संक्रान्त कर रहा है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती उपशामक होकर

१ कोहसंजलणस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जस्स उक्कस्सथो सव्वसंकमो तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । तस्सेव से काले उक्कस्सिया हाणी । णवरि से काले संकमपाओग्गा समयपवद्धा बहण्णा कायव्वा । तं जहा— जेसिं से काले आवलियमेत्ताणं समयपवद्धाणं पदेसग्गं संकामिज्जहिदि ते समयपवद्धा तप्पाओग्गजहण्णा । एदीए परुवणाए सव्वसंकमं संलुद्धिट्ठूण जस्स से काले पुव्वपरुविदो संकमो तस्स उक्कस्सिया हाणी कोहसंजलणस्स । तस्सेव से काले उक्कस्सयमवट्ठाणं । क. पा. सु. पृ. ४४८, ५५५-६१.

२ ताप्रतौ 'माण-माय.....पुरिसवेद-' इति पाठः ।

३ जहा कोहसंजलणस्स तहा माण-मायासंजलण-पुरिसवेदाणं । क. पा. सु. पृ. ४४९, ५६२.

४ अ-काप्रत्योः 'दुगुंछावट्ठाणं' इति पाठः ।

छ. से. ५९

चरिमसमयउवसामओ संतो मदो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । अवट्ठाणं णत्थि ।

किमट्ठं छण्णोक्कसायाणं णावट्ठाणं ? बुच्चदे— वंधाभावकाले ण ताव अवट्ठाणसंक्रमो अत्थि, अद्धट्ठिदिगलणाए परपयडिसंकमेण चं पडिसमयं झिज्जमाणकम्मपदेसाए पयडीए बंधाभावेण अपडिग्गहेण अण्णपयडीहितो आगच्छमाणकम्मपोग्गलविरहियाए हाणिसंकमं मोत्तुणं अवट्ठाणाणुववत्तीदो । वंधकाले वि णत्थि, वयादो असंखेज्जगुणायदंसणादो । तं जहा— छण्णोक्कसाएसु अप्पिदपयडीए गलमाणदच्चमेगसमयपवद्धस्स संखेज्जदिभागमेत्तं संखेज्जा भागा वा होदि, आगच्छमाणदच्चं पुण कम्मइयवग्गणादो एगसमयपवद्धमेत्तं वंधविरहिदमोहपयडीहितो अधापवत्तसंकमेण असंखेज्जसमयपवद्धमेत्तं च दच्चमागच्छदि<sup>१</sup> । तेण वंधकाले वट्ठिसंकमो चैव, णावट्ठियसंकमो<sup>२</sup> ।

सगदच्चमधापवत्तसंकमेण च्छज्जमाणपयडीसु गच्छंतमत्थि त्ति वओ वि असंखेज्जसमयपवद्धमेत्तो<sup>३</sup> अत्थि त्ति किण्ण बुच्चदे ? ण, वंधपयडीदो वंधपयडीसु गच्छंतदच्च-

मरणको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । उनका अवस्थान नहीं है ।

शंका छह नोकपायोंका अवस्थान किसलिये नहीं होता ?

समाधान— इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि [ यदि उनका अवस्थान सम्भव है तो क्या वह बन्धके अभावकालमें होता है या बन्धकालमें ? ] बन्धके अभावकालमें तो उनका अवस्थानसंक्रम सम्भव नहीं है, क्योंकि, अद्धस्थितिगलनसे और परप्रकृतिसंक्रमणसे भी प्रतिसमयमें क्षीण होनेवाले कर्मप्रदेशसे संयुक्त तथा बन्धाभावके कारण प्रतिग्रह ( अन्य प्रकृतिके द्रव्यका ग्रहण ) रहित होनेसे अन्य प्रकृतियोंसे आनेवाले कर्म-पुद्गलोंसे विरहित विवक्षित प्रकृतिके हानिसंक्रमको छोड़कर अवस्थानसंक्रम वनता नहीं है । बन्धकालमें भी वह सम्भव नहीं है, क्योंकि, उस समय व्ययकी अपेक्षा आय असंख्यातगुणी देखी जाती है । वह इस प्रकारसे— उक्त छह नोकपायोंमें विवक्षित प्रकृतिका गलनेवाला द्रव्य एक समयप्रवद्धके संख्यातवें भाग मात्र अथवा संख्यात बहुभाग मात्र होता है, परन्तु उसका आनेवाला द्रव्य कर्मण वर्गणासे एक समयप्रवद्ध मात्र तथा बन्धरहित मोहप्रकृतियोंसे अधःप्रवृत्तसंक्रम द्वारा असंख्यात समय-प्रवद्ध मात्र द्रव्य आता है । इस कारण बन्धकालमें वृद्धिसंक्रम ही होता है, अवस्थान-संक्रम नहीं होता ।

शंका— चूंकि अपना द्रव्य अधःप्रवृत्तसंक्रम द्वारा वध्यमान प्रकृतियोंमें जा रहा है, अतएव व्यय भी उनका असंख्यात समयप्रवद्ध मात्र है; ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि बन्धप्रकृतियोंसे बन्धप्रकृतियोंमें जानेवाले द्रव्यके समान ही

१ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ता प्रतिपु 'अधट्ठिदि' इति पाठः । २ अप्रतावस्य स्थाने 'वि' इति पाठः ।

३ अप्रतौ 'छिज्जमाण' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'चेत्तुण' इति पाठः ।

५ प्रतिपु 'असंखेज्जगुणपदंसणादो' इति पाठः । ६ ताप्रतौ 'मेत्तं च [ दच्चं ] आगच्छदि' इति पाठः ।

७ मप्रतौ 'णोवट्ठियसंकमो' इति पाठः । ८ अ-काप्रत्योः 'मेत्ता' इति पाठः ।

समाणद्वस्स तेहितो आगच्छमाणस्स उवलंभेण वयाभावादो । पदेससंतभुजगाराभावे वि परिणामवसेण संकमभुजगारस्सेव तव्वसेण अवट्ठाणसंकमो अत्थि त्ति किण्ण वुच्चदे ? ण, पडिसेहस्स दव्वणिवंधणावट्ठिदसंकमापडिसेहफलत्तादो ।

पुरिसवेदस्स कधमवट्ठिदसंकमो ? ण, सम्माइट्ठीसु इत्थि-णवंसयवेदेसु बंधाभावेण विज्झादसंकमेण पुरिसवेदे संकामेंतेसु अधट्ठिदिगलणाए गलमाणदव्वेण समाणं इत्थि-णवंसयवेदेहितो आगच्छमाणदव्वादो असंखेज्जगुणं वंधंतेसु तदुवलंभादो । अवज्झमाणमोहपयडिदव्वं पुरिसवेदस्स किण्णागच्छदे ? ण, तस्स सदो णिग्गददव्वाणुसारेणेव आगमुवलंभादो ।

एवं णामस्स सव्वधुवंधिपयडीणं पि अवट्ठाणपरूवणा कायव्वा । अण्णेण उवएसेण पुण सव्वणामपयडीणं णत्थि अवट्ठिदसंकमो । कुदो ? जसकित्ति-अजसकित्तीण-मागम-णिग्गमविसमदाए । तं जहा— जसकित्तीए तुल्लसंतकम्मे णिग्गमादो णिग्गमो तुल्लो वा विसेसुत्तरो वा । आगमो पुण णिग्गमादो संखे० गुणो । अजसकित्तीए वि तुल्लसंतकम्मे णिग्गमादो णिग्गमो तुल्लो वा असंखेज्जदिभागुत्तरो वा । आगमो पुण णिग्गमादो

द्रव्य चूंकि उनसे आनेवाला भी पाया जाता है, अतएव व्ययकी वहां सम्भावना नहीं है ।

शंका— प्रदेशसत्त्वभुजाकारके अभावमें भी परिणामोंके वशसे जैसे भुजाकारसंक्रम होता है, वैसे ही परिणामोंके वशसे अवस्थानसंक्रम होता है, ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि इस प्रतिषेधका फल द्रव्यनिबन्धन अवस्थितसंक्रमका प्रतिषेध नहीं है ।

शंका— पुरुषवेदका अवस्थितसंक्रम कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीवोंमें बन्धकी सम्भावना न होनेसे स्त्री और नपुंसक वेदोंके विध्यातसंक्रम द्वारा पुरुषवेदमें संक्रान्त होनेपर चूंकि वे अधस्थितिगलनसे गलनेवाले द्रव्यके समान स्त्री और नपुंसक वेदोंसे आनेवाले द्रव्यकी अपेक्षा असंख्यातगुणे द्रव्यको बांधनेवाले होते हैं, अतएव उक्त सम्यग्दृष्टि जीवोंमें पुरुषवेदका अवस्थित संक्रम पाया जाता है ।

शंका— अवध्यमान मोहप्रकृतियोंका द्रव्य पुरुषवेदमें क्यों नहीं आता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि उसके अपनेमेंसे जानेवाले द्रव्यके अनुसार ही उनसे आनेवाला द्रव्य पाया जाता है ।

इसी प्रकार नामकर्मकी सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंके भी अवस्थानकी प्ररूपणा करना चाहिये । परन्तु अन्य उपदेशके अनुसार सब नामप्रकृतियोंका अवस्थितसंक्रम नहीं होता । इसका कारण यशकीर्ति और अयशकीर्तिके आने व जानेवाले द्रव्यकी विषमता है । वह इस प्रकारसे— यशकीर्तिके समान सत्कर्ममें निर्गमकी अपेक्षा निर्गम तुल्य अथवा विशेष अधिक होता है । परन्तु आगमन निर्गमनकी अपेक्षा संख्यातगुणा होता है । अयशकीर्तिके भी समान सत्कर्ममें निर्गमसे निर्गम समान अथवा असंख्यातवें भागसे अधिक होता है । परन्तु

१ अ-काप्रत्योः 'अवट्ठिदि', ताप्रतौ 'अवट्ठिद' इति पाठः ।

असंखे० भागुत्तरो । तदो ध्रुवबंधीणं णामपयडीणं जदा जसकित्ती वज्झदि तदा आगमो थोवो, णिग्गमो बहुओ । जदा जसकित्ती ण वज्झदि तदा णिग्गमो थोवो, आगमो बहुओ । एदेण कारणेण णामस्स पयडीणं णत्थि अवट्टाणं । एदेणेव हेदुणा पुरिसवेद-भय-दुगुंछाणं पि अवट्टाणाभावो परूवेयव्वो । एदेहि दोहि उवदेसेहि भुजगार-पद-णिकखेव-वड्ढिसंक्रमेसु सामित्तमप्पावहुगं कायव्वं ।

णिरयगइणामाए उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो सव्वसंक्रमेण चरिमफालिं संकामेतओ तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणिद-कम्मंसियो पढमवारं चैव उवसमसेडिमारूढो चरिमसमयसुहुमसांपराइयो संतो मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । अवट्टाणं णत्थि । तिरिक्खगदिणामाए णिरयगइभंगो । मणुसगइणामाए उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो सत्तमाए पुढवीए णेरइयो गुणिदकम्मंसियो तेत्तीसं सागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेदूण सव्वणिरुद्धकाले सेसे मिच्छत्तं गदो, तदो उव्वट्टियस्स पढमसमयतिरिक्खस्स उक्कस्सिया पदेससंक्रम-वड्ढी । मणुसगइणामाए उक्कस्सिया हाणी कस्स ? जो णेरइयो गुणिदकम्मंसियो तेत्तीसं सागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेयूण सव्वणिरुद्धकाले सेसे मिच्छत्तं गदो तस्स पढमसमयमिच्छाइड्डिस्स उक्क० हाणी । अवट्टाणं णत्थि ।

आगम निर्गमकी अपेक्षा असंख्यातवें भागसे अधिक होता है । इस कारण ध्रुववन्धी नाम-प्रकृतियोंका जब यशकीर्ति बंधती है तब आगम स्तोक और निर्गम बहुत होता है । तथा जब यशकीर्ति नहीं बंधती है तब निर्गम स्तोक और आगम बहुत होता है । इस कारण नामप्रकृतियोंका अवस्थान नहीं है । इसी हेतुसे पुरुषवेद, भय और जुगुप्साके भी अवस्थानके अभावकी प्ररूपणा करना चाहिये । इन दो उपदेशोंके अनुसार भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धिसंक्रममें स्वामित्व व अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक सर्वसंक्रम द्वारा अन्तिम फालिको संक्रान्त कर रहा है उसके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक प्रथम वार ही उपशम श्रेणिपर आरूढ होकर अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होता हुआ मरणको प्राप्त होकर देव हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके उसका उत्कृष्ट हानि हातो ह । अवस्थान उसका नहीं है । तिर्यंगति नामकर्मकी प्ररूपणा नरकगतिक समान ह । मनुष्यगांत नामकर्मको उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो सातवीं पृथिवीका गुणितकर्मांशिक नारको तेतोस सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर सर्वानरुद्ध कालके शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, तत्पश्चात् वहांसे निकलकर जो तिर्यंच हुआ है, उस प्रथम समयवर्ती तिर्यंचक उसको उत्कृष्ट प्रदशसंक्रमवृद्धि हातो है । मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट हानि किसके हातो है ? जो नारका गुणितकर्मांशिक तेतीस सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर सर्वानरुद्ध कालके शेष रहनेपर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान उसका नहीं है ।

१ अ-काप्रत्योः 'उवट्टियस्स', ताप्रतौ 'उवट्टियस्स' इति पाठः ।

मणुमगइणामाए सत्तमपुढविणेरइयसम्माइड्डीहि तेत्तीसं सागरोवमाणि णिरंतरं वद्धाए किमिदि णावट्ठाणं ? जेसिमाइरियाणं णिग्गमाणुसारी आगमो तेसिमहिप्पाएण अत्थि अवट्ठिदसंकमो । जेसिं पुण आइरियाणं णिग्गमाणुसारी आगमो ण होदि, किंतु संकामिज्जमाणपयडिपदेसाणुसारी, तेसिमहिप्पाएण सच्चणामपयडीणं णत्थि अवट्ठाणं ।

देवगइणामाए [ उक्कस्सिया ] वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो असंखेज्जवस्साउएसु पूरेदूण दसवस्ससहस्सिएसु देवेषु उववण्णो, तदो चुदो<sup>१</sup> तिरिक्खेषु मणुस्सेसु उववण्णो, तस्स तेसिं पढमसमए वट्ठमाणस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो असंखेज्जवस्साउएसु पूरेदूण मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स देवगदिणामाए उक्क० हाणी । जेण उवदेसेण अवट्ठाणं तेण उवदेसेण तिपलिदोवमियस्स तप्पाओग्गउक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदूण अवट्ठिदस्स उक्कस्समवट्ठाणं । मणुसगइणामाए वि णिरयगदीए तेत्तीसं सागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेयूण तत्थ तप्पाओग्गउक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदूण अवट्ठिदस्स उक्कस्समवट्ठाणं । एवं तिरिक्खगदीए सत्तमपुढविणेरइएसु तिरिक्खगदिं चेव णिरंतरं वंधमाणेषु अवट्ठाणं वत्तव्वं ।

शंक— सातवीं पृथिवीके नारकी सम्यग्दृष्टियोंके द्वारा तेतीस सागरोपम काल तक निरन्तर मनुष्यगतिके बांधे जानेपर उसका अवस्थान क्यों नहीं होता ?

समाधान— जिन आचार्योंके मतमें निर्गमके समान आगम होता है उनके अभिप्रायके अनुसार उसका अवस्थितसंक्रम होता है । परन्तु जिन आचार्योंके मतमें निर्गमके अनुसार आगम नहीं होता, किन्तु संक्रान्त की जानेवाली प्रकृतियोंके प्रदेशके अनुसार आगम होता है; उनके अभिप्रायके अनुसार सब नामप्रकृतियोंका अवस्थानसंक्रम नहीं होता ।

देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक असंख्यात-वर्षायुष्कोंमें उसको परिपूर्ण करके दस हजार वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है और फिर वहांसे च्युत होकर तिर्यचों व मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ है उसके उक्त भवोंके प्रथम समयमें वर्तमान होनेपर उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक असंख्यातवर्षायुष्कोंमें उसे पूर्णकर ( बांधकर ) मरणको प्राप्त हो देव उत्पन्न हुआ है उस प्रथम समयवर्ती देवके देवगति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि होती है । जिस उपदेशके अनुसार अवस्थान होता है उस उपदेशके अनुसार तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट वृद्धिके द्वारा वृद्धिगत होकर अवस्थानको प्राप्त हुए तीन पत्त्योपम आयुवाले जीवके उसका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । नरकगतिमें तेतीस सागरोपम काल तक सम्यक्त्वको पालकर और वहां तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट वृद्धिके द्वारा वृद्धिगत होकर अवस्थानको प्राप्त हुए जीवके मनुष्यगति नामकर्मका भी उत्कृष्ट अवस्थान होता है । इसी प्रकार तिर्यचगतिको ही निरन्तर बांधनेवाले सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें तिर्यचगति नामकर्मके उत्कृष्ट अवस्थानका कथन करना चाहिये ।

१ ताप्रतौ 'तदो [ उ ] चुदो' इति पाठः ।

ओरालियसरीरणामाए उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणितकम्मंसियो सत्तमादो पुढवीदो उव्वड्ढिदो<sup>१</sup> सण्णिमिच्छाइड्ढीसु उववण्णो, सव्वलहुं सम्मत्ते लद्धे विज्झादसंकमो जादो, तस्स पढमसमयसम्माइड्ढिस्स उक्कस्सिया हाणी । सो चेव जहणियाए सम्मत्त-द्धाए अंतो देवलोगं गच्छेज्ज, देवलोगं गदस्स ओरालियसरीरस्स अधापवत्तसंकमो जादो, तस्स सव्वरहस्सेण कालेण देवलोगं गदस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० वड्ढी । अवट्ठाणं जहा मणुसगदीए कदं तहा कायव्वं । वेउव्वियसरीरस्स देवगइभंगो । आहारसरीर-णामाए उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणितकम्मंसियो आहारसरीरं सव्वचिरं पूरेदूणं चट्ठुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण खवेमाणस्स<sup>२</sup> परभवियबंधवोच्छेदेण आवलियं गंतूण उक्कस्सिया वड्ढी । तस्स चेव से काले उक्क० हाणी । अवट्ठाणं षोव अत्थि । एवसहेण उवदेसा वि पडिसिद्धा । तेजा-कम्मइयाणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो गुणितकम्मं-सियो चट्ठुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण खवेमाणओ, तस्स परभवियणामाणं बंधवोच्छेदादो<sup>३</sup> आवलियं गदस्स उक्क० वड्ढी । तस्सेव से काले उक्क० हाणी । अवट्ठाणं<sup>४</sup> उवदेसेण जहा मणुसगइणामाए कदं<sup>५</sup> तहा कायव्वं ।

पढमसंठाण-पढमसंघडणाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणितकम्मंसियो वे-छा-

औदारिकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक सातवीं पृथिवीसे निकल कर संज्ञी मिथ्यादृष्टियोंमें उत्पन्न हुआ है तथा जिसके सर्वलघु कालमें सम्यक्त्वको प्राप्त कर लेनेपर विध्यातसंक्रम हुआ है उस प्रथम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । वही जघन्य सम्यक्त्वकालके भीतर देवलोकको प्राप्त होता है, देव-लोकको प्राप्त होनेपर उसके औदारिकशरीरका अधःप्रवृत्तसंक्रम होता है, सर्वलघु कालमें देवलोकको प्राप्त हुए उस प्रथम समयवर्ती देवके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । अवस्थानका कथन जैसे मनुष्यगतिके सम्वन्धमें किया है वैसे यहां भी करना चाहिए । वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा देवगतिके समान है । आहारशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणित-कर्मांशिक सबसे दीर्घ कालमें अहारकशरीरको पूर्ण कर चार वार कषायोंको उपशमा कर क्षपणामें उद्यत है उसके परभविक नामप्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्तिसे आवली मात्र काल जाकर आहारक-शरीरकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान नहीं है । 'एव' शब्दसे यहां उपदेशोंका भी प्रतिषेध किया गया है । तैजस और कर्मण शरीरोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक चार वार कषायोंको उपशमा कर क्षपणामें उद्यत है उसके परभविक नामप्रकृतियोंकी बन्धव्युच्छित्तिके पश्चात् आवली मात्र कालके वीतने-पर उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थानकी प्ररूपणा उपदेशके आश्रयसे मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिये ।

प्रथम संस्थान और प्रथम संहननकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक

१ अ-काप्रत्योः 'उव्वड्ढिदो', ताप्रतौ 'अव्वड्ढिदो' इति पाठः । २ अप्रतौ 'पूरेदूण' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'खवेमाणस्स ( खवेमाणओ तस्स )' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'बंधवोच्छेदो', ताप्रतौ 'बंधवोच्छे [दा-] दो' इति पाठः । ५ ताप्रतौ नोपलभ्यते पदमिदम् । ६ ताप्रतौ 'कथं (दं)' इति पाठः ।

वद्वीयो सम्मत्तमणुपालेयूण कसाए चदुबखुत्तो उवसामेदूण तदो खवेतस्स वंधवोच्छादादो आवलियं गदस्स उक्क० वड्ढी । तस्सेव से काले उक्कस्सिया हाणी । अवट्ठाणं जहा मणुसगइणामाए तहा कायच्चं । पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो कसाए अणुवसामेदूण सव्वलहुं खवेतओ तस्स चरिमसमयसुहुम-सांपराइयस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो उवसमसेडिमारुहिय चरिमसमयसुहुमसांपराइयो होदूण मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्कस्सिया हाणी । अवट्ठाणं णेव अत्थि । जहा तेजा-कम्मइयसरीराणं उक्कस्सवड्ढि-हाणीयो कदाओ तहा सव्वासि सत्थाणं धुवबंधीणं कायच्चं । अप्पसत्थाणं धुवबंधीणं णामपयडीणं उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसियो कसाए अणुवसामेदूण सव्वलहुं खवेदि तस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स उक्क० वड्ढी । उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणिद-कम्मंसियो पढमवारं चेव कसाए उवसामेदि सो चरिमसमयसुहुमसांपराइयो होदूण मदो देवो जादो तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । अवट्ठाणं जहा मणुसगइणामाए तहा कायच्चं ।

चदुण्णमाणुपुञ्जीणामाणं वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं सग-सगगइभंगो । अप्पसत्थाण-

दो छयासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर व चार चार कपायोंको उपशमा कर क्षपणामें तत्पर है उसके वन्धव्युच्छित्तसे आवली मात्र कालके वीतनेपर उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थानकी प्ररूपणा मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिये । शेष पांच संस्थानों और पांच संहननोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक कपायोंको न उपशमा कर सर्वलघु कालमें क्षपणा करता हुआ अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक उपसमश्रेणिपर आरूढ होता हुआ अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होकर मरणको प्राप्त हो देव हो जाता है उस प्रथम समयवर्ती देवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान नहीं है । जिस प्रकारसे तैजस और कार्मण शरीरोंकी उत्कृष्ट वृद्धि और हानिको किया है उसी प्रकारसे सब प्रशस्त ध्रुववन्धी नामप्रकृतियोंकी भी वृद्धि और हानिको करना चाहिये । अप्रशस्त ध्रुववन्धी नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक कपायोंको न उपशमा कर सर्वलघु कालमें उनका क्षय करता है उस अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उनकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक प्रथम चार ही कपायोंको उपशमाता है वह अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होकर मरणको प्राप्त हो जब देव होता है तब उस प्रथम समयवर्ती देवके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थानका कथन मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिये ।

चार आनुपूर्वी नामप्रकृतियोंकी वृद्धि, हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा अपनी अपनी

१ ताप्रती खवेतस्स '(खवेतओ तस्स)' इति पाठः । २ ताप्रती 'तहा' इत्येतत्पदं नास्ति ।

३ अ-काप्रत्याः 'सांपराइयो जादो तस्स', ताप्रती 'सांपराइयो जादो [मदो-] तस्स' इति पाठः ।



मद्भुवंधिणामपयडीणं अप्पसत्थधुवंधिणामपयडिभंगो । णवरि अवट्ठाणं णत्थि । परघाद-  
 उरसास-पसत्थविहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर - सुभगादेज्ज - सुस्सराणमुक्कस्सिया  
 वड्ढी कस्स ? जो गुणितकम्मंसियो वे-छावट्ठीओ सम्मत्तमणुपालेदूण चदुक्खुत्तो कसाए  
 उवसामेदूण तदो ख्वेतस्स परभवियणामाणं वंधवोच्छेदादो आवलियं गदस्स उक्कस्सिया  
 वड्ढी । तस्सेव से काले उक्क० हाणी । अवट्ठाणं जहा मणुसगइणामाए तहा कायव्वं ।  
 आदाबुज्जोवणामाणं उक्क० वड्ढी सव्वसंक्रमे दादव्वा । उक्क० हाणी कस्स ? जो गुणित-  
 कम्मंसियो पढमदाए [ कसाए ] उवसामेदूण चरिमसमयसुहुमसांपराइयो संतो मदो  
 तस्स पढमसमयदेवस्स उक्क० हाणी । अवट्ठाणं णेव अत्थि । अप्पसत्थविहायगइ-  
 अथिर-असुभ-अजसकित्तीणं उक्क० वड्ढी हाणी वा जहा अप्पसत्थाणं संठाणाणं कदा  
 तहा कायव्वा । थिर-जसकित्ति-सुभाणं एदासिं तिण्णं णामपयडीणं उक्क० वड्ढी कस्स ?  
 जो गुणितकम्मंसियो चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण तदो खवेदि तस्स खवेमाणस्स  
 परभवियणामाणं वंधादो<sup>१</sup> आवलियमदिकंतस्स उक्क० वड्ढी । तस्सेव से काले उक्क०  
 हाणी । णवरि जसकित्तीए परभविवंधवोच्छेदचरिमसमए उक्क० वड्ढी । चउत्थीए

गतिके समान है । अप्रशस्त अध्रुववन्धी नामप्रकृतियोंकी प्ररूपणा अप्रशस्त ध्रुववन्धी नाम-  
 प्रकृतियोंके समान है । विशेषता इतनी है कि उनका अवस्थान नहीं है । परघात, उच्छ्वास,  
 प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, आदेय और सुम्बर; इनकी उत्कृष्ट वृद्धि  
 किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक दो छयासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर व  
 चारवार कषायोंको उपशमा कर पश्चात् क्षपणामें प्रवृत्त होता है तब उसके परभविक नामकर्मोंकी वन्ध-  
 व्युच्छित्तिसे आवली मात्र काल जाकर उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । उसके ही अनन्तर  
 कालमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थानकी प्ररूपणा मनुष्यगति नामकर्मके समान करना  
 चाहिये । आतप और उद्योत नामकर्मोंकी उत्कृष्ट वृद्धिको सर्वसंक्रममें देना चाहिये । इनकी उत्कृष्ट  
 हानि किसके होती है ? जो गुणितकर्मांशिक प्रथमतः कषायोंको उपशमा कर अन्तिम समयवर्ती  
 सूक्ष्मसाम्परायिक होता हुआ मरणको प्राप्त हो [ देव होता है ] उस प्रथम समयवर्ती देवके उनकी  
 उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान है ही नहीं । अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ और अयश-  
 कीर्ति इनकी उत्कृष्ट वृद्धि और हानिकी प्ररूपणा जैसे अप्रशस्त संस्थानोंकी की गयी है वैसे करना  
 चाहिये । स्थिर, यशकीर्ति और शुभ इन तीन नामप्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ?  
 जो गुणितकर्मांशिक चार वार कषायोंको उपशमा कर तत्पश्चात् क्षपणा करता है उस क्षपणा  
 करनेवालेके परभविक नामकर्मोंके वन्धसे आवली मात्र काल जाकर उनकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है ।  
 उसीके अनन्तर कालमें उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । विशेष इतना है कि यशकीर्तिकी उत्कृष्ट वृद्धि  
 परभविक नामप्रकृतियोंके वन्धव्युच्छेदके अन्तिम समयमें होती है । चतुर्थ उपशामनामें

१ ताप्रतो 'ख्वेतस्स (ख्वेतओ तस्स)' इति पाठः ।

२ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'बंधवोच्छेदाभावादो' इति पाठः ।

उवसामणाए मदचरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स देवेषुप्पज्जिय समयाहियावलियादिकस्स उक्कस्सिया हाणी । अवट्ठाणं णेव अत्थि ।

णीचागोदस्स उक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स खवयस्स । उक्क० हाणी कस्स ? उवसामओ चरिमसमयसुहुमसांपराइयो मदो संतो जो देवो जादो तस्स पढमसमए उक्क० हाणी । अवट्ठाणं णेव अत्थि । उच्चागोदस्स वड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणं मणुमगइभंगो । एवमुक्कस्ससामित्तं समत्तं ।

मदिआवरणस्स जहणिया वड्ढी कस्स ? जो जहणएण संतकम्मएण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेदूण एइंदिएसु गदो तत्थ जाधे वंधो च णिज्जरा चव हुसमो तस्स ताधे जहणिया वड्ढी अवट्ठाणं वा होदि । सेसचटुणाणावरण-णवदंसणावरण-पंचंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो । सादस्स जह० वड्ढी कस्स ? जो जहणेण संतकम्मएण कसाए अणुवसामेदूणं संजमासंजम-संजमगुणसेदीहि बहुक्खुत्तो<sup>१</sup> कम्मं खवेदूण एइंदिएसु गदो, तत्थ सच्चिरं कालं जोगजवमज्झस्स हेट्ठा वंधिदूण सव्वमहंतीयो असादबंध-गद्दाओ कादूण तदो जं तं सच्चिरं कालं जोगजवमज्झस्स हेट्ठा वंधिदाओ तस्स कालस्स पज्जवसाणबंधगद्दाए तिस्से अपच्छिमाए सादबंधगद्दाए समरूणाए आवलिया-सेसाए णिज्जरादो किंचि विसेसुत्तरो वंधो जादो, तदो जाधे असादबंधो तदो विदियसमए

मरणको प्राप्त हुए अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके देवोंमें उत्पन्न होकर एक समय अधिक आवली मात्र कालके वीतनेपर उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान है ही नहीं ।

नीचगोत्रकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? वह अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके होती है । उसकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक मरणको प्राप्त होकर देव हो जाता है उसके प्रथम समयमें उसकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवस्थान है ही नहीं । उच्चगोत्रकी वृद्धि, हानि और अवस्थानकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

मतिज्ञानावरणकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार वार कपायोंको उपशमा कर एकेन्द्रियोंमें गया है उसके वहां जब बन्ध और निर्जरा दोनों समान होते हैं तब उसकी जघन्य वृद्धि और अवस्थान होता है । शेष चार ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । सातावेदनीयकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ कपायोंको न उपशमा कर संयमासंयम और संयम गुणश्रेणियों द्वारा बहुत वार कर्मका क्षयकर एकेन्द्रियोंमें गया है और वहांपर सबसे दीर्घ काल तक योगयवमध्यके नीचे बांधकर सबसे बड़े असातबन्धककालोंको करके पश्चात् जिस सर्वचिर कालके द्वारा योगयवमध्यके नीचे बन्ध किया है उस कालके अन्तिम बन्धककालमें उस अन्तिम सातबन्धककालमें एक समय कम आवलीके शेष रहनेपर निर्जराकी अपेक्षा बन्ध कुल

१ अ-काप्रत्यो: 'समयाहियावलियादिकस्सउक्कस्सिया', ताप्रती 'समयाहियावलियाहि [ उक्कस्स ] उक्कस्सिया' इति पाठः ।

२ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिपु 'उवसामेदूण' इति पाठः । ३ काप्रती 'चदुक्खुत्तो' इति पाठः ।

जहणिया वड्ढी सादस्स । जिस्से असादबंधाए जह० वड्ढी णिप्फण्णा तं चेव असादस्स बंधद्धं दीहं बंधिऊण तिस्से चरिमसमए जह० हाणी सादस्स । अवट्ठाणं णेव अत्थि । जहा सादस्स तहा असादस्स । णवरि चदुक्खुत्तो कसाया उवसामेयच्चा । जाओ च सादं जहणं कुणमाणेण असादबंधगद्धाओ कदाओ, ताओ चेव असादस्स जहणं कुणमाणेण सादबंधगद्धाओ कायच्चाओ ।

मिच्छत्तस्स जहणिया वड्ढी कस्स ? जस्स तप्पाओग्गजहणमिच्छत्तसंतकम्मस्स अवट्ठाणं होज्ज तस्स मिच्छत्तस्स जह० वड्ढी हाणी वा अवट्ठाणं वा होज्ज । सम्मत्तस्स जह० वड्ढी कस्स ? जो जहणएण कम्मेण सम्मत्तं लहिदूण वे-छावट्ठीयो अणुपालिदूण पडिदिदो, सच्चमहंतेण उव्वेहणकालेण उव्वेहमाणस्स अपच्छिमस्स ट्टिदिखंडयस्स पढमसमए जहणिया वड्ढी । दुचरिमट्टिदिखंडयस्स चरिमसमए जहणिया हाणी । अवट्ठाणं णेव अत्थि । सम्मामिच्छत्तस्स सम्मत्तभंगो ।

अणंताणुबंधीणं जहणिया वड्ढी कस्स ? अभवसिद्धियपाओग्गेण जहणणेण कम्मेण जो आगदो संजमासंजम-संजमगुणसेठीहि कम्मं खवेदूण कसाए अणुवसामेदूण एइंदिएसु गदो, तस्स जम्हिह योगासेसकम्मस्स (?) अवट्ठाणं होदि तम्हिह जहणिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं [वा] होज्ज । एसो ताव एको उवदेसो । अणणेण उवएसेण अणंताणुबंधीणं

विशेष अधिक हो जाता है, तत्पश्चात् जब असाताका बन्ध होता है तब उसके द्वितीय समयमें सातावेदनीयकी जघन्यवृद्धि होती है । जिस असातबन्धककालमें जघन्य वृद्धि उत्पन्न हुई है उसी दोष असातबन्धककालमें बांधकर उसके अन्तिम समयमें सातावेदनीयकी जघन्य हानि होती है । सातावेदनीयका अवस्थान नहीं है । जैसे सातावेदनीयकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही असातावेदनीयकी भी प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि चार बार कषायोंको उपशमाना चाहिये । इसके अतिरिक्त सातावेदनीयको जघन्य करनेवाले जीवके द्वारा जो असाताबन्धककाल किये गये हैं वे ही असातावेदनीयको जघन्य करनेवालेके द्वारा साताबन्धककाल कराने चाहिये ।

मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? तत्प्रायोग्य जघन्य मिथ्यात्वसत्कर्म युक्त जिस जीवके अवस्थानसंक्रम होता है उसके मिथ्यात्वकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ सम्यक्त्वको प्राप्त कर व उसका दो लघासठ सागरोपम काल तक पालन करके च्युत होता हुआ सबसे महान् उद्वेलन-कालके द्वारा उद्वेलना कर रहा है उसके अन्तिम स्थितिकाण्डकके प्रथम समयमें उसकी जघन्य वृद्धि होती है । द्विचरम स्थितिकाण्डकके अन्तिम समयमें उसकी जघन्य हानि होती है । अवस्थान नहीं है । सम्यग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा सम्यक्त्वके समान है ।

अनन्तानुबन्धी कषायोंकी जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो अभव्यसिद्धिक प्रायोग्य जघन्य कर्मके साथ आकर संयमासंयम व संयम गुणश्रेणियोंके द्वारा कर्मका क्षय कर तथा कषायोंको न उपशमा कर एकेन्द्रियोंमें गया है उसके जिस जघन्य योगमें सत्कर्मका अवस्थान होता है उसमें उनकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है । यह एक उपदेश है । दूसरे उपदेशके

जह० हाणी कस्स ? जो जहण्णएण कम्मएण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेऊण तदो संजोएदूण वे-छावट्टीयो सम्मत्तमणुपालिय अणंताणुबंधीणं विसंजोयणाए उवट्ठिदो तस्स अघापवत्तकरणस्स चरिमसमए जहणिया हाणी । एरिसो चैव वे-छावट्टीयो अणुपालेदूण मिच्छत्तं गदो तस्स पढमसमयमिच्छाइट्ठिस्स जह० वड्ढी । अवट्ठाणं णत्थि । एसो विदियो उवदेसो ।

वारसण्णं कसायाणं जेण उवएसेण अवट्ठाणमत्थि तेण उवदेसेण उच्चदे—जहणियाणि संतकम्माणि काऊण एइंदियं गदस्स जम्हि जहणयस्स संतकम्मस्स अवट्ठाणं होदि तम्हि जहणिया वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा होज्ज । एवं भय-दुगुंजा-पुरिस-वेदाणं । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं जहणवड्ढि-हाणीयो जहा सादासादाणं कदाओ तहा कायन्वाओ ।

इत्थिवेदस्स जहणिया हाणी कस्स ? जो जहण्णएण कम्मएण चदुक्खुत्तो कसाए उवसामेयूण वे-छावट्टीयो सम्मत्तमणुपालेदूण से काले मिच्छत्तं गाहदि त्ति तस्स जहणिया हाणी । तस्स चैव से काले पढमसमयमिच्छाइट्ठिस्स जहणिया वड्ढी । अवट्ठाणं णेव अत्थि । णवुंसयवेदस्स इत्थिवेदभंगो । णवरि पुव्वमेव तिण्णि पलिदोवमाणि तिपलिदो-वमेसु अच्छिय तदो पच्छा वे-छावट्टीओ सम्मत्तमणुपालेदव्वो ।

अनुसार अनन्तानुबन्धी कषायोंकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार वार कषायोंको उपशमाकर फिर संयोजन कर दो छथासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन करके अनन्तानुबन्धी कषायोंकी विसंयोजनामें उद्यत होता है उसके अधःप्रवृत्तकरणके अन्तिम समयमें उनकी जघन्य हानि होती है । ऐसा ही जो जीव दो छथासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है उस प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उनकी जघन्य वृद्धि होती है । अवस्थान उनका नहीं है । यह दूसरा उपदेश है ।

जिस उपदेशके अनुसार अवस्थान है उस उपदेशके अनुसार वारह कषायोंकी प्ररूपणा करते हैं—जघन्य सत्कर्मोंको करके एकेन्द्रिय भवको प्राप्त हुए जीवके जहांपर जघन्य सत्कर्मका अवस्थान होता है वहां उनकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है । इसी प्रकार भय, जुगुप्सा और पुरुषवेदकी प्ररूपणा करना चाहिये । हास्य, रति, अरति और शोककी जघन्य वृद्धि और हानि जैसे साता व असाता वेदनीयकी की गयी हैं वैसे करनी चाहिये ।

स्त्रीवेदकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ चार वार कषायोंको उपशमा कर व दो छथासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाला है उसके उसकी जघन्य हानि होती है । अनन्तर कालमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुए उसी प्रथम समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके उसकी जघन्य वृद्धि होती है । अवस्थान नहीं है । नपुंसकवेदकी प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है । विशेष इतना है कि पहिले ही तीन पल्योपमकाल तक तीन पल्योपम प्रमाण आयुवाले जीवोंमें रहकर पीछे दो छथासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वका पालन कराना चाहिये ।

णिरयगइणामाए जह० हाणी कस्स ? एइंदियकम्मणेण जहण्णएण णिरयगइणाम-  
मंतोमुहुत्तं संजोएदूण तदो वावीससागरोवड्ढिदिणिरयं गदो, वावीससागरोवमाणं अंतो-  
मुहुत्ते सेसे सम्मत्तं पडिवण्णो, मदो मणुसो जादो, एकत्तीससागरोवमड्ढिदिं देवगदिं  
गदो, अंतोमुहुत्तं उववण्णो मिच्छत्तं गदो, एकत्तीससागरोवमेसु अंतोमुहुत्ते सेसेसु सम्मत्तं  
पडिवण्णो, वे-छावड्ढीयो अणुपालेदूण सोधम्मकप्पमिह मिच्छत्तं गदो संतो एइंदिए गदो,  
तदो सव्वमहंतेण उव्वेहणकालेण उव्वेहमाणस्स दुचरिसउव्वेहणखंडयस्स चरिससमए  
जहण्णिया हाणी । तस्सेव से काले जह० वड्ढी ।

मणुसगइणामाए जह० वड्ढी कस्स ? जो एइंदियकम्मणेण वस्सपुधत्तेण अणुत्तर-  
वेमाणिएसु देवेसु उववण्णो, तस्स तप्पाओग्गजहण्णसंतकम्मस्स जमिह अवड्ढाणं होदि तमिह  
जह० वड्ढी हाणी अवड्ढाणं वा होदि । देवगइणामाए जहण्णवड्ढिदं-हाणि- अवड्ढाणाणि  
कस्स ? [ जो ] एइंदियकम्मणेण तिपलिदोवमिएसु उववण्णो तस्स जाधे तप्पाओग्ग-  
जहण्णएण कम्मणेण अवड्ढाणं होज्ज तमिह जह० वड्ढी हाणी अवड्ढाणं वा । तिरिक्खगइ-  
णामाए जहण्णिया हाणी कस्स ? जो जहण्णएण कम्मणेण तिपलिदोवमिएसु उववण्णो,  
अंतोमुहुत्ते सेसे सम्मत्तं पडिवण्णो, तदो देवेसु पलिदोवमपुधत्ताउड्ढिदिएसु उववण्णो,

नरकगति नामकर्मकी जघन्य हानि किसके होती है ? जो जघन्य एकेन्द्रिय योग्य कर्मके साथ अन्तर्मुहूर्त काल तक नरकगति नामकर्मका संयाजन करके पश्चात् वाईस सागरोम आयुवाले नरकको प्राप्त हुआ है, वाईस सागरोपमोंमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त होकर मरा व मनुष्य हुआ है, पश्चात् इकतीस सागरोपम स्थितिवाली देवगतिको प्राप्त होकर उत्पन्न होनेके पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, फिर इकतीस सागरोपमोंमें अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है, दो लयासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर सौधर्म कल्पमें मिथ्यात्वको प्राप्त होता हुआ एकेन्द्रियमें गया है, और तत्पश्चात् जो सबसे महान् उद्वेलनकाल द्वारा उद्वेलना कर रहा है; उसके द्विचरम उद्वेलनकाण्डकके अन्तिम समयमें नरकगति नामकर्मकी जघन्य हानि होती है । उसीके अनन्तर कालमें उसकी जघन्य वृद्धि होती है ।

मनुष्यगति नामकर्मको जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जो एकेन्द्रिय योग्य कर्मके साथ वर्षपृथक्त्वमें अनुत्तर विमानवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ है उसके तत्प्रायोग्य जघन्य सत्कर्मका जहां अवस्थान होता है वहां उसकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होता है । देवगति नामकर्मकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान किसके होते हैं ? जो एकेन्द्रिय योग्य सत्कर्मके साथ तीन पल्योपम आयुवालोंमें उत्पन्न हुआ है उसके जब तत्प्रायोग्य जघन्य सत्कर्मके साथ अवस्थान होता है तब उसकी जघन्य वृद्धि हानि और अवस्थान होता है । तिर्यगति नामकर्मकी जघन्य हानि किसके हाती है ? जो जघन्य सत्कर्मके साथ तीन पल्योपम आयुवालोंमें उत्पन्न होकर अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है, तत्पश्चात् पल्योपमपृथक्त्व आयुस्थिति-

१ काप्रतौ 'अंतोमुहुत्तेसु सेसेसु', ताप्रतौ 'अंतोमुहुत्तसेसेसु' इति पाठः ।

२ अ-काप्रत्योः 'णामाए दीहणवड्ढी', ताप्रतौ 'णामाए वड्ढि' इति पाठः ।

अपडिवदिदेण सम्मत्तेण मणुस्सेसु गदो, तदो अपडिवदिदेण एकत्तीससागरोवमिएसु देवेसु उववण्णो, अंतोमुहुत्तमुववण्णो मिच्छत्तं गदो, अंतोमुहुत्तावसेसे सम्मत्तं पडिवण्णो, वे-छावट्ठीयो' अणुपालेदूण जाधे चरिमसमयसम्माइट्ठी ताधे जहणिया हाणी । तस्सेव से काले जहणिया वड्ढी । तिरिक्खगइणामाए अवट्ठाणं णेव अत्थि । वे-छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालिय तदो खवणाए अहिमुहचरिमसमयअधापवत्तकरणं मोत्तण जहणिया हाणी केण कारणेण चरिमसमयसम्माइट्ठिस्स कीरदि ति बुत्ते बुच्चदे— वे-छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालेदूण जो तत्तो खवेदि तस्स उक्कसिया सम्मत्तद्धा थोवा, वे छावट्ठीयो सम्मत्तमणुपालेदूण जो मिच्छत्तं गच्छदि तस्स सम्मत्तद्धा विसेसाहिया । एदेण कारणेण चरिमसमयसम्माइट्ठिस्स जहणिया तिरिक्खगइणामाए हाणी कदा, चरिमसमयअधा-पवत्तकरणे णं कदा ।

सञ्चेसिं धुववंधियाणं णामाणं जहणवड्ढि-हाणि-अवट्ठाणाणि कस्स ? तप्पाओग्ग-जहणणाणि कम्माणि कादूण जम्हि अवट्ठाणं कम्मस्स होज्ज तम्हि वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा जहणयं होदि । वेउन्वियसरीर-पढमसंठाण-पढमसंघडण-परघाद-उस्सास-पसत्थ-विहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-आदेज-सुस्सरणामाणं जहणिया वड्ढी

वाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, पुनः अप्रतिपतित सम्यक्त्वके साथ मनुष्योंमें गया है, तत्पश्चात् अप्रतिपतित सम्यक्त्वके साथ इकतीस सागरोपम प्रमाण आयुवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ है, वहां उत्पन्न होनेके पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ है, अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर पुनः सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ है, तथा जो दो छथासठ सागरोपम काल तक उसका पालन कर जब अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टि होता है तब उसके तिर्यग्गति नामकर्मकी जघन्य हानि होती है। उसीके अनन्तर कालमें उसकी जघन्य वृद्धि होती है। तिर्यग्गति नामकर्मका अवस्थान नहीं है।

शंका— दो छथासठ सागरोपम काल तक सम्यक्त्वका पालन कर तत्पश्चात् क्षपणाके अभिमुख अन्तिम समयवर्ती अधःप्रवृत्तकरणको छोड़कर अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके किस कारणसे उसकी जघन्य हानि की जाती है ?

समाधान— दो छथासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वका पालन कर पश्चात् जो क्षपणा करता है उसका उत्कृष्ट सम्यक्त्वकाल स्तोक होता है, परन्तु दो छथासठ सागरोपम तक सम्यक्त्वका पालन कर पश्चात् जो मिथ्यात्वको प्राप्त होता है उसका सम्यक्त्वकाल विशेष अधिक होता है। इस कारण अन्तिम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके तिर्यग्गति नामकर्मकी जघन्य हानि की गयी है और अन्तिम समयवर्ती अधःप्रवृत्तकरणके वह नहीं की गयी है।

सब ध्रुववन्धी नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान किसके होते हैं ? तत्प्रायोग्य जघन्य कर्मोंको करके जहांपर कर्मका अवस्थान होता है वहां पर उनकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान होते हैं। वैक्रियिकशरीर, प्रथम संस्थान, प्रथम संहनन, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, आदेय और सुस्वर नामकर्मोंकी

१ ताप्रती 'पडिवण्णो, [ मि ] वे छावट्ठीयो' इति पाठः ।

२ ताप्रती 'हाणी । केण' इति पाठः । ३ ताप्रती 'करणेण' इति पाठः ।

कस्स ? जत्थ एदेसिं कम्माणं तप्पाओग्गजहण्णाणं जहण्णमवट्ठाणं होज्ज तत्थ जहण्णिणा वड्ढी हाणी अवट्ठाणं वा होज्ज । अप्पसत्थविहायगइ-धावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारण-सरीर-दूभग-अणादेज्ज-दुस्सराणं णवुंसयवेदभंगो । णीचागोदस्स वि णवुंसयवेदभंगो । उच्चागोदस्स मणुसगइभंगो । एवं जहण्णसामित्तं समत्तं ।

अप्पावहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । वड्ढी विसेसाहिया, भिण्णसामित्तादो । हाणी असंखेज्जगुणा । सेसचदुणाणावरण-चदुदंसणावरण-पंचंत-राइयाणं मदिणाणावरणभंगो । णिद्दा-पयलाणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । हाणी असंखेज्ज-गुणा । वड्ढी असंखेज्जगुणा । थीणगिद्धितियस्स णिद्दाभंगो । सादस्स उक्कस्सिया हाणी थोवा । वड्ढी विसेसाहिया । असादस्स उक्कस्सिया हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा ।

मिच्छत्तस्स उक्कस्समवट्ठाणं [थोवं] । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखे० गुणा । सम्मत्तस्स उक्क० वड्ढी थोवा, उव्वेलणकंडयचरिमसमए जादत्तादो । उक्क० हाणी असंखे० गुणा, दुसमयमिच्छाइद्धिस्स जादत्तादो । अवट्ठाणं णत्थि । सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । अणंताणुवंधीणं उक्कस्समवट्ठाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखे० गुणा । अट्ठणं कसायाणमुक्कस्समवट्ठाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखे० गुणा । तिण्णं संजलणाणं पुरिसवेदस्स य उक्क०

जघन्य वृद्धि किसके होती है ? जहांपर इन तत्प्रायोग्य जघन्य कर्मोंका जघन्य अवस्थान होता है वहांपर उनकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान हाता है । अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, दुर्भग, अनादेय और दुस्वर प्रकृतियोंकी प्ररूपणा नपुंसकवेदके समान है । नोचगोत्रकी भी प्ररूपणा नपुंसकवेदके समान है । उच्चगोत्रकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि विशेष अधिक है, क्योंकि, उसका स्वामी भिन्न है । हानि असंख्यातगुणी है । शेष चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । निद्रा और प्रचलाका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । स्त्यानगृद्धि आदि तीनकी प्ररूपणा निद्राके समान है । सातावेदनीयकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि विशेष अधिक है । असाताकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है ।

मिथ्यात्वका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है, क्योंकि, वह उव्वेलनकाण्डकके अन्तिम समयमें होती है । उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है, क्योंकि, वह द्वितीय समयवर्ती मिथ्यादृष्टिके होती है । अवस्थान नहीं है । सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । अनन्तानु-वन्धी कषायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । आठ कषायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि असंख्यातगुणी

वड्ढी थोवा । उक्क० हाणी अवट्टाणं च विसेसाहियं । लोभसंजलणाए उक्कस्समवट्टाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी विसेसा० । छण्णं णोकसायाणमुक्क० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा० । अवट्टाणं णत्थि । इत्थि-णवुंसयवेदाणं हस्स-रदिभंगो ।

णिरयगइणामाए उक्क० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । एवं तिरिक्खगइणामाए । दोण्णमवट्टाणं णत्थि । मणुसगइणामाए उक्कस्समवट्टाणं थोवं । वड्ढी असंखे० गुणा । हाणी विसेसा० । देवगइणामाए उक्कस्समवट्टाणं थोवं । वड्ढी असंखे० गुणा । हाणी विसेसा० । जहा देवगइणामाए तहा जादिणाम-आणुपुव्वीणामाणं च । ओरालियसरीर-णामाए उक्कस्समवट्टाणं थोवं । वड्ढी असंखे० गुणा । हाणी विसेसा० । वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वंधण-संघादाणं देवगइभंगो । आहारसरीरणामाए उक्क० हाणी थोवा । वड्ढी विसेसा० । तेजा-कम्मइयसरीराणं सव्वासिं चैव ध्रुवबंधिणामाणं उक्कस्समवट्टाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी विसेसा० । वज्जरिसहणारायणसंघडणणामाए उक्कस्समवट्टाणं थोवं । वड्ढी असंखेज्जगुणा । हाणी विसेसा० । समचउरससंठाण-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभगादेज्ज-सुस्सराणमुक्कस्समवट्टाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी विसेसा० । पंचसंठाण-पंचसंघडण-अथिर-अजस-कित्ति-असुभ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अप्पसत्थविहायगदीणं उक्क० हाणी थोवा । वड्ढी

है । तीन संज्वलन कषायों और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट वृद्धि स्तोक है । उत्कृष्ट हानि और अवस्थान विशेष अधिक हैं । संज्वलन लोभका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि विशेष अधिक है । छह नोकपायोंकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । अवस्थान नहीं है । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा हास्य और रतिके समान है ।

नरकगति नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । इसी प्रकार तिर्यचगति नामकर्मकी प्ररूपणा है । अवस्थान दोनोंका नहीं है । मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है । देवगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है । जैसे देवगति नामकर्मकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही जाति नामकर्माँ और आनुपूर्वी नामकर्माँकी भी करना चाहिये । औदारिकशरीर नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीर व उसके आंगोपांग, बन्धन एवं संघात नामकर्माँकी प्ररूपणा देवगतिके समान है । आहारकशरीर नामकर्मकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि विशेष अधिक है । तैजस व कर्मण शरीरों तथा सब ही ध्रुवबन्धी नामप्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि विशेष अधिक है । वज्रर्षभनाराचसंहनन नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है । समचतुरस्र-संस्थान, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, आदेय और सुस्वर इनका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि विशेष अधिक है । पांच संस्थान, पांच संहनन, अस्थिर, अयंशकीर्ति, अशुभ, दुर्भंग, दुःस्वर, अनादेय और अप्रशस्त विहायोगति; इनकी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । अवस्थान नहीं



असंखे० गुणा । अवट्टाणं णत्थि । अप्पसत्थाणं धुववंधीणमुक्कस्समवट्टाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखे० गुणा । णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओग्गणामाणं आदा-बुज्जोवाणं च उक्क० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । णीचागोदस्स गुणसंक्रमेण उक्क० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । उच्चागोदस्स उक्क० हाणी सत्तमाए पुढवीए पढमसमयणेरइयस्स हाणी<sup>१</sup> थोवा । तस्स चैव उव्वट्ठियस्स पढमसमयतिरिक्खस्स णीचागोदस्स बंधमाणयस्स उक्क० वड्ढी विसे०, णेरइयस्स सम्माइट्ठीसु संचिदत्तादो । उच्च-णीचाणमवट्टाणं णत्थि । एवमुक्कस्सप्पावहुअं समत्तं ।

गाणावरणपंचयस्स जहण्णवड्ढी हाणी अवट्टाणं सरिसं । णवदंसणावरण-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-पुरिसवेद-पंचंतराइयाणं जह० वड्ढी हाणी अवट्टाणं च तिण्णि वि तुल्लाणि । सादस्स जह० हाणी थोवा । वड्ढी विसेसाहिया । अवट्टाणं णत्थि । असादस्स सादभंगो । सम्मत्तस्स जह० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । सम्मा-मिच्छ० सम्मत्तभंगो । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं जह० हाणी थोवा । वड्ढी विसेसा० । अवट्टाणं णत्थि । इत्थि-णवुंसयवेदाणं जह० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । अवट्टाणं णत्थि ।

णिरयगइणामाए जह० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । तिरिक्खगइणामाए

है । अप्रशस्त ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । नरकगति और तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मों तथा आतप और उद्योत नामकर्मोंकी भी उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है ।

नीचगोत्रकी गुणसंक्रमके द्वारा उत्कृष्ट हानि स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । उच्चगोत्रकी उत्कृष्ट हानि सातवीं पृथिवीके प्रथम समयवर्ती नारकीके होती है, जो स्तोक है । वहांसे निकलकर नीचगोत्रकी बांधनेवाले उसी प्रथम समयवर्ती तिर्यचके उसकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है, जो हानिसे विशेष अधिक है; क्योंकि, वह नारक सम्यग्दृष्टियोंमें संचित है । उच्च और नीच गोत्रोंका अवस्थान नहीं है । इस प्रकार उत्कृष्ट अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

पांच ज्ञानावरण प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान सदृश हैं । नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों ही तुल्य हैं । सातावेदनीयकी जघन्य हानि स्तोक है । वृद्धि विशेष अधिक है । अवस्थान नहीं है । असातावेदनीयके प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान है । सम्यक्त्व प्रकृतिकी जघन्य हानि स्तोक है और वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा सम्यक्त्व प्रकृतिके समान है । हास्य, रति, अरति और शोक इनकी जघन्य हानि स्तोक व वृद्धि उससे विशेष अधिक है । अवस्थान नहीं है । स्त्री और नपुंसक वेदोंकी जघन्य हानि स्तोक व वृद्धि असंख्यातगुणी है । अवस्थान नहीं है ।

नरकगति नामकर्मकी जघन्य हानि स्तोक व वृद्धि असंख्यातगुणी है । तिर्यचगति

१ ताप्रतौ 'हाणी' इति पाठः । २ प्रतिषु 'उव्वट्ठियस्स' इति पाठः ।

जह० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । मणुसगइणामाए जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च तुल्लं । एवं देवगदीए । ओगालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-तप्पाओग्ग-बंधण-संघाद-अंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास - अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्मास-पसत्थ-विहायगइ-तम वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभंग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाणं जह० वड्ढी हाणी अवट्ठाणं च तुल्लं ।

णीचागोदस्स जह० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । अवट्ठाणं णत्थि । उच्चागोदस्स जह० हाणी थोवा । वड्ढी असंखे० गुणा । अवट्ठाणं णत्थि । एवं पदेससंकमे' पदणिक्खेवो समत्तो ।

पदेससंकमो वड्ढिसंकमो कायव्वो । तं जहा— मदिणाणावरणस्स अत्थि असंखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जभागहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंकमा । सेसपदाणि णत्थि । सेसचट्ठुणागावरणीय-चट्ठुदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं मदिणाणावरणभंगो । णिदा-पलयाणं अत्थि असंखेज्जभागवड्ढि-हाणि-असंखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्व-संकमा । थोणगिद्वितियस्स अत्थि असंखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जभागहाणी । संखेज्ज-भागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढीयो वि अत्थि, मिच्छत्तं गदसम्माइड्ढिमि थोणगिद्वितिय-संतादो अण्णपयडीहिंतो' आगयदव्वस्स संखेज्जभाग-गुणव्वहियस्स वि उवलंभादो । अत्थि

नामकर्मकी जघन्य हानि स्तोत्र और वृद्धि उससे असंख्यातगुणी है । मनुष्यगति नामकर्मकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों समान हैं । इसी प्रकार देवगतिके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये । औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कामेण शरीर, उनके योग्य बन्धन, संघात व आंगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उवघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभंग, सुस्वर, आदेय और निर्माण; इन नामप्रकृतियोंकी जघन्य वृद्धि, हानि और अवस्थान तीनों तुल्य हैं ।

नीचगोत्रकी जघन्य हानि स्तोत्र व वृद्धि असंख्यातगुणी है । अवस्थान नहीं है । उच्चगोत्रकी जघन्य हानि स्तोत्र व वृद्धि असंख्यातगुणी है । अवस्थान नहीं है । इस प्रकार प्रदेशसंकममें पदनिक्षेप समाप्त हुआ ।

प्रदेशसंकममें वृद्धिसंकमका कथन करते हैं । यथा— मतिज्ञानावरणके असंख्यात-भागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, अवस्थान और अवक्तव्य ये चार संक्रमपद हैं । शेष पद नहीं हैं । शेष चार ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय कर्मोंकी प्ररूपणा मतिज्ञाना-वरणके समान है । निद्रा और प्रचलाके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यात-गुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य ये संक्रमपद हैं । स्त्यानगृद्धित्रिकके असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातभागहानि संक्रम हैं । संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धि पद भी हैं, क्योंकि, मिथ्यात्वको प्राप्त हुए सम्यग्दृष्टिमें स्त्यानगृद्धि आदि तीनोंके सत्त्वकी अपेक्षा अन्य प्रकृतियोंसे आया हुआ द्रव्य संख्यातभाग अधिक व संख्यातगुणा अधिक भी पाया

१ अ-काप्रलोः 'पदेससंकमो' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'संतादो । अण्णपयडीहिंतो' इति पाठः ।

असंखे० गुणवड्ढि-हाणि-अवट्टाण-अवत्तव्वसंक्रमा । सादस्स अत्थि असंखे० भागवड्ढि-  
 असंखे० भागहाणि-अवत्तव्वसंक्रमा । सेसाणि पदाणि णत्थि । असादस्स असंखे० भागवड्ढि-  
 असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणवड्ढी- असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंक्रमा अत्थि । सेस-  
 पदाणि<sup>१</sup> णत्थि । मिच्छत्तस्स असंखे० भागवड्ढि-हाणि-असंखेज्जगुणवड्ढि-असंखे०  
 गुणहाणि-अवट्टाण-अवत्तव्वसंक्रमा अत्थि । सेसाणि पदाणि णत्थि । सम्मामिच्छत्तस्स  
 अत्थि असंखे० भागवड्ढि-हाणि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंक्रमा ।  
 सेसाणि पदाणि णत्थि । सम्मत्तस्स असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणवड्ढि-हाणि-  
 अवत्तव्वसंक्रमा अत्थि । सेसपदाणि णत्थि । अणंताणुबंधीणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-  
 असंखे० भागहाणि-संखे० भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे०  
 गुणहाणि-अवट्टाण-अवत्तव्वसंक्रमा<sup>२</sup> । सेसाणि पदाणि णत्थि । अट्टणं कसायाणं अत्थि  
 असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवट्टाण-  
 अवत्तव्वसंक्रमा । सेसपदाणि णत्थि । तिण्णं संजलणाणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-  
 असंखे० भागहाणि-संखे० भागवड्ढि-संखे० भागहाणि-संखे० गुणवड्ढि-संखे० गुणहाणि-  
 असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवट्टाण-अवत्तव्वसंक्रमा । लोभसंजलणाए अत्थि  
 असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-अवट्टाण-अवत्तव्वसंक्रमा । सेसाणि पदाणि णत्थि ।

जाता है । उनके असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रम हैं ।  
 सातावेदनीयके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि और अवक्तव्य संक्रम हैं । शेष  
 पद नहीं हैं । असातावेदनीयके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि,  
 असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रम हैं । उसके शेष पद नहीं हैं । मिध्यात्वके असंख्यात-  
 भागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और  
 अवक्तव्य संक्रम हैं । शेष पद नहीं हैं । सम्यग्मिध्यात्वके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यात-  
 भागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रम हैं । शेष पद नहीं  
 हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और  
 अवक्तव्य संक्रम हैं । शेष पद नहीं हैं ।

अनन्तानुबन्धी क्रोधादिकोंके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागवृद्धि,  
 संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रम हैं ।  
 शेष पद नहीं हैं । आठ कपायोंके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि,  
 असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रम हैं । शेष पद नहीं हैं । तीन संज्वलन  
 कपायोंके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागहानि, संख्यात-  
 गुणवृद्धि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य  
 संक्रमपद हैं । संज्वलन लोभके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यातभागहानि, अवस्थान और

१ अप्रती 'विसेसपदाणि', काप्रती नुटितोऽत्र पाठः, ताप्रती [ वि ] सेसपदाणि' इति पाठः ।

२ ताप्रती 'अवत्तव्व-अवट्टाणसंक्रमा' इति पाठः ।

हस्म-रदि-अरदि-सोगाणं असादभंगो । पुरिसवेदस्म क्रोधसंजलणभंगो । इत्थि-  
णवुंमयवेदाणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-संखे० भागवड्ढि-संखे०  
गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंक्रमा । सेसपदाणि णत्थि ।  
भय-दुगुंञ्जाणं अत्थि असंखे० भागवड्ढि-असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे०  
गुणहाणि-अवट्ठाण-अवत्तव्वसंक्रमा । सेसपदाणि णत्थि ।

णिरयगइणामाए अत्थि असंखे० भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-  
असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंक्रमा । तिरिक्खगइणामाए अत्थि असंखे०  
भागवड्ढि-संखे० भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० भागहाणि-  
असंखे० गुणहाणि-अवत्तव्वसंक्रमा । मणुस्सगइणामाए अत्थि असंखे० भागवड्ढि-संखे०  
भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० भागहाणि-असंखे० गुणहाणि-  
अवत्तव्वसंक्रमा । सेसपदाणि णत्थि । देवगइणामाए अत्थि असंखे० भागवड्ढि-संखे०  
भागवड्ढि-संखे० गुणवड्ढि-असंखे० गुणवड्ढि-असंखे० भागहाणि-संखे० गुणहाणि-  
अवट्ठाण-अवत्तव्वसंक्रमा । सेसं जाणिदूण वत्तव्वं । एवं संक्रमे त्ति समत्तमणियोगहारं ।

अवक्तव्य संक्रम पद हैं । शेष पद नहीं हैं ।

हास्य, रति, अरति और शोककी प्ररूपणा असातावेदनीयके समान है । पुरुषवेदकी प्ररूपणा संव्वलन क्रोधके समान है । स्त्री और नपुंसक वेदोंके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यात-भागहानि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रमपद हैं । शेष पद नहीं हैं । भय और जुगुप्साके असंख्यातभागवृद्धि, असंख्यात-भागहानि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रमपद हैं । शेष पद नहीं हैं ।

नरकगति नामकर्मके असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यात-भागहानि, असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रमपद हैं । तियंगति नामकर्मके असंख्यातभाग-वृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, असंख्यातगुण-हानि और अवक्तव्य संक्रमपद हैं । मनुष्यगति नामकर्मके असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि असंख्यातगुणहानि और अवक्तव्य संक्रमपद हैं । शेष पद नहीं हैं । देवगति नामकर्मके असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि, अवस्थान और अवक्तव्य संक्रमपद हैं । शेष कथन जानकर करना चाहिये । इस प्रकार संक्रम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

## लेस्साणियोगद्वारं

असुर-सुर-णरवरोरग-सुणिद्विदेहि वंदिए चलणे ।

णमिगुण अरस्स तदो लेस्सणियोगं परूवेमो ॥ १ ॥

एह्य लेस्सा णिक्खिद्विद्वत्ता, अण्णहा पयदलेस्सावगमाणुववत्तीदो । तं जहा—  
णामलेस्सा डुवणलेस्सा दव्वलेस्सा भावलेस्सा चेदि लेस्सा चउव्विहा । लेस्सा-सदो  
णामलेस्सा । सव्भावासव्भावडुवणाए डुविदव्वं डुवणलेस्सा । दव्वलेस्सा डुविहा आगम-  
दव्वलेस्सा णोआगमदव्वलेस्सा चेदि । आगमदव्वलेस्सा सुगमा । णोआगमदव्वलेस्सा  
तिविहा जाणुगसरीर-भविय [ -तव्वदिरित्तणोआगमदव्वलेस्साभेएण । जाणुगसरीर-  
भविय ] नोआगमदव्वलेस्साओ सुगमाओ । तव्वदिरित्तदव्वलेस्सा पोगगलक्खंधाणं  
चक्खिदियगेज्झो वण्णो । सो छव्विहो किण्णलेस्सा णीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा  
पम्मलेस्सा सुक्कलेस्सा चेदि । तत्थ भमरंगार-कज्जलादीणं किण्णलेस्सा । णिव-कदली-  
दावपत्तादीणं णीललेस्सा । छार-खर-कवोदादीणं काउलेस्सा । कुंकुम-जवाकुसुम-कुसुंभा-  
दीणं तेउलेस्सा । तडवड-पउमकुसुमादीणं पम्मलेस्सा । हंस-वलायादीणं सुक्कलेस्सा ।  
उत्तं च—

असुरेन्द्र, सुरेन्द्र, नरेन्द्र, नागेन्द्र और सुनीन्द्र इनके समूहोंके द्वारा वन्दित ऐसे अर  
जिनेन्द्रके चरणोंको नमस्कार करके लेइया अनुयोगद्वारकी प्रहृषणा करते हैं ॥ १ ॥

यहां लेइयाका निक्षेप करना चाहिये, क्योंकि, उसके बिना प्रकृत लेइयाका अवगम नहीं  
हो सकता । उसका निक्षेप इस प्रकार है— नामलेइया, स्थापनालेइया, द्रव्यलेइया और  
भावलेइया इस प्रकार लेइया चार प्रकारकी है । उनमें 'लेइया' यह शब्द नामलेइया कहा जाता  
है । सद्व्भावस्थापना और असद्व्भावस्थापना रूपसे जो लेइयाकी स्थापना की जाती है वह  
स्थापनालेइया है । द्रव्यलेइया दो प्रकारकी है— आगमद्रव्यलेइया और नोआगमद्रव्यलेइया ।  
इनमें आगमद्रव्यलेइया सुगम है । नोआगमद्रव्यलेइया ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त  
नोआगमद्रव्यलेइयाके भेदसे तीन प्रकारकी है । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगम-  
द्रव्यलेइयायें सुगम हैं । चक्षु इन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पुद्गलस्कन्धोंके वर्णको  
तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यलेइया कहते हैं । वह छह प्रकारकी है— कृष्णलेइया, नीललेइया,  
क्रापोतलेइया, तेजलेइया, पद्मलेइया और शुक्ललेइया । उनमें कृष्णलेइया भ्रमर, अंगार और  
कज्जल आदिके होती है । नील, कदली और दावके पत्तों आदिके नीललेइया होती है । छार,  
खर और कवूतर आदिके क्रापोतलेइया जानना चाहिये । कुंकुम, जवाकुसुम और कुसुम कुसुम  
आदिकी लेइया तेजलेइया कहलाती है । तडवडा और पद्म पुष्पादिकांक पद्मलेइया हाता है ।  
हंस और वलाका आदिकी शुक्ललेइया अनुभूत है । कहा भी है—

१ ताप्रती 'चले' इति पाठः । २ अ-काप्रत्यां: 'भावसव्भाव' इति पाठः ।

क्रिणं भमरसवण्णा णील पुण णील्लिगुणियसंकासा ।  
 काऊ कवोदवण्णा तेऊ तवणिञ्जवण्णाभा ॥ १ ॥  
 पम्मा पउमसवण्णा सुक्का पुण कासकुसुमसंकासा ।  
 क्रिण्णादिद्वलेस्सावण्णविसेसा सुणेयव्वा ॥ २ ॥

भावलेस्सा दुविहा आगम-नोआगमभेएण । आगमभावलेस्सा सुगमा । नोआगम-  
 भावलेस्सा मिच्छत्तासंजम-कमायाणुरंजियजोगपवुत्ती कम्मपोग्गलादाणिमित्ता,  
 मिच्छत्तासंजम-कसायजणिदसंस्कारो त्ति वुत्तं होदि । एत्थ पोगमणयवत्तवएण नो-  
 आगमद्व-भावलेस्साए पयदं । तत्थ ताव द्वलेस्सावण्णं कस्सामो— जीवेहि अपडि-  
 गहिदपोग्गलक्खंधाणं क्रिण्ण-णील-काऊ-तेऊ-पम्म-सुकसाण्णदाओ छलेस्साओ होंति ।  
 अणंतभागवड्ढि-असंखे०भागवड्ढि-संखे०भागवड्ढि -संखे०गुणवड्ढि-असंखे०गुणवड्ढि-  
 अणंतगुणवड्ढिकमेण असंखे० लोगमेत्तवण्णभेदेण पोग्गलेसु द्विदेसु किमहं छच्चेव  
 लेस्साओ त्ति एत्थ णियमो कीरदे ? ण एस दोसो, पञ्जवणयप्पणाए लेस्साओ असंखे०-  
 लोगमेत्ताओ, द्वद्वियणयप्पणाए पुण लेस्साओ छच्चेव होंति ।

संपहि एदासिं छण्णं लेस्साणं सरीरमस्सिदूण परूवणं कस्सामो । तं जहा—  
 तिरिक्खजोणियाणं सरीराणि छलेस्साणि— काणिचि क्रिण्णलेस्सियाणि काणिचि णील-

कृष्णलेश्या भ्रगरके सदृश, नीललेश्या नील गुणवालेके सदृश, कापोतलेश्या कबूतर जैसे  
 वर्णवाली, तेजलेश्या सुवर्ण जैभी प्रभावाली, पद्मलेश्या पद्मके वर्ण समान, और शुक्ललेश्या  
 कांसके फूलके समान होती है । इन कृष्ण आदि द्रव्यलेश्याओंको क्रमसे उक्त वर्णविशेषों  
 रूप जानना चाहिये ॥ १-२ ॥

आगम और नोआगमके भेदसे भावलेश्या दो प्रकारकी है । इनमें आगम-  
 भावलेश्या सुगम है । कर्म-पुद्गलोंके ग्रहणमें कारणभूत जो मिथ्यात्व, असंयम और  
 कपायसे अनुरंजित योगप्रवृत्ति होती है उसे नोआगमभावलेश्या कहते हैं । अभिप्राय यह  
 है कि मिथ्यात्व, असंयम और कपायसे उत्पन्न संस्कारका नाम नोआगमभावलेश्या है । यहाँ  
 नैगम नयके कथनकी अपेक्षा नोआगम द्रव्यलेश्या और भावलेश्या प्रकृत हैं । उनमें पहिले  
 द्रव्यलेश्याका वर्णन करते हैं—जीवोंके द्वारा अप्रतिगृहीत पुद्गलस्कन्धोंकी कृष्ण, नील, कापात,  
 तेज, पद्म और शुक्ल संज्ञावाली छह लेश्यायें होती हैं ।

शंका— अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि,  
 असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्तगुणवृद्धिके क्रमसे असंख्यात लोक प्रमाण वर्णोंके भेदसे पुद्गलोंके  
 स्थित रहनेपर 'छह ही लेश्यायें हैं' ऐसा नियम किसलिये किया जाता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि यद्यपि पर्यायार्थिक नयकी विवक्षासे लेश्यायें  
 असंख्यात लोक मात्र हैं, परन्तु द्रव्यार्थिक नयकी विवक्षासे वे लेश्यायें छह ही होती हैं ।

अब शरीरका आश्रय करके इन छह लेश्याओंको प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—  
 तिर्यंच योनिवाले जीवोंके शरीर छहों लेश्यावाले होते हैं— कितने ही शरीर कृष्णलेश्यावाले,

लेस्सियाणि काणिचि काउ० काणिचि तेउ० काणिचि पम्म० काणिचि सुक्कलेस्सियाणि त्ति । तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुसिणीणं च छच्चेव लेस्साओ । देवाणं मूलणिव्वत्तणादो तेउ-पम्म-सुक्काणि त्ति तिलेस्साणि सरीराणि, उत्तरणिव्वत्तणादो छलेस्साणि सरीराणि । देवीणं मूलणिव्वत्तणादो तेउलेस्साणि सरीराणि, उत्तरणिव्वत्तणादो छलेस्साणि । षेरइयाणं क्रिण्णलेस्साणि । पुढविकाइयाणं छलेस्साणि । आउकाइयाणं सुक्कलेस्साणि । अगणिकाइयाणं तेउलेस्साणि । वाउकाइयाणं काउलेस्साणि । वण्णरुदिकाइयाणं छलेस्साणि । सव्वेसिं सुहुमाणं सरीराणि काउलेस्साणि । जहा बादरपज्जत्तणं तहा बादर-अपज्जत्तणं<sup>१</sup> । ओरालियसरीराणि छलेस्साणि । वेउव्वियं मूलणिव्वत्तणादो क्रिण्णलेस्सियं तेउले० पम्मले० सुक्कले० वा । तेजइयं तेउले०<sup>२</sup> । कम्मइयं सुक्कलेस्सियं । सरीरेसु सव्ववण्णपोग्गलेसु संतेसु कधमेदस्म सरीरस्स एसा चेव लेस्सा होदि त्ति णियमो ? ण एस दोसो, उक्कडुवण्णं पडुच्च तण्णिहेसादो । तं जहा— कालयवण्णुकडुं जं सरीरं तं

कितने ही नीललेइयावाले, कितने ही कापोतलेइयावाले, कितने ही तेजलेइयावाले, कितने ही पद्मलेइयावाले, और कितने ही शुक्ललेइयावाले होते हैं । त्रियं च योनिमतियों, मनुष्यों और मनुष्यनियोंके भी छहों लेइयायें होती हैं । देवोंके शरीर मूल निर्वर्तनाकी अपेक्षा तेज, पद्म और शुक्ल इन तीन लेइयाओंसे युक्त होते हैं । परन्तु उत्तर निर्वर्तनाकी अपेक्षा उनके शरीर छहों लेइयाओंसे संयुक्त होते हैं । देवियोंके शरीर मूल निर्वर्तनाकी अपेक्षा तेजलेइयासे संयुक्त होते हैं, परन्तु उत्तर निर्वर्तनाकी अपेक्षा वे छहों लेइयाओंमेंसे किसी भी लेइयासे संयुक्त होते हैं । नारकियोंके शरीर कृष्णलेइयासे युक्त होते हैं । पृथिवीकायिकोंके शरीर छहों लेइयाओंमें किसी भी लेइयासे संयुक्त होते हैं । अष्कायिक जावोंके शरीर शुक्ललेइयावाले होते हैं । अग्निकायिक जीवोंके शरीर तेजलेइयासे युक्त होते हैं । वायुकायिकोंके शरीर कापोत-लेइयावाले तथा वनस्पतिकायिकोंके शरीर छहों लेइयावाले होते हैं । सब सूक्ष्म जीवोंके शरीर कापोतलेइयासे संयुक्त होते हैं । बादर अपर्याप्तोंके शरीर बादर पर्याप्तोंके समान लेइयावाले होते हैं । औदारिकशरीर छह लेइया युक्त होते हैं । वैक्रियिकशरीर मूलनिर्वर्तनाकी अपेक्षा कृष्णलेइया, तेजलेइया, पद्मलेइया अथवा शुक्ललेइयासे संयुक्त होता है । तेजसशरीर तेजलेइयावाला तथा कामर्णशरीर शुक्ललेइयावाला होता है ।

शंका—शरीर तो सब वर्णवाले पुद्गलोंसे संयुक्त होते हैं; फिर इस शरीरकी यही लेइया होती है, ऐसा नियम कैसे हो सकता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि उत्कृष्ट वर्णकी अपेक्षा वैसा निर्देश किया

१ अप्रती 'सुक्कलेस्सिया त्ति' इति पाठः ।

२ णियमो क्रिण्णहा कप्पा भावाणुगया हु तिसुर-णर-तिरिये । उत्तरदेहे छक्कं भोगे रवि-चंद-हरिदंगा ॥ बादर-आउ तेऊ सुक्का तेऊ य वाउकायाणं । गोमुत्त-मुग्गवण्णा कमसो अव्वत्तवण्णो य ॥ सव्वेसिं सुहुमाणं कावोदा सव्वविग्गहे सुक्का । सव्वो मिससो देहो कवोदवण्णो हवे णियमा ॥ गो. जी. ४९५-९७.

३ ताप्रती 'तेउलेस्सियं तेजइयं' इति पाठः ।

किण्णलेस्सियं । नीलवण्णुकुट्टं जं तं नीललेस्सियं । लोहियवण्णुकुट्टं जं सरीरं तं तेउलेस्सियं ।  
हालिद्वण्णुकुट्टं पम्मलेस्सियं । सुक्किलवण्णुकुट्टं सुकलेस्सियं । एदेहि वण्णेहि वज्जिय  
वण्णंतरावण्णं काउलेस्सियं ।

संघहि य लेस्सावंतचक्खुप्पामदव्वस्स गुणाणमप्पावहुअं कीरदे । तं जहा—  
किण्णलेस्सदव्वस्स सुक्किलगुणा थोवा, हालिदया अणंतगुणा, लोहिदया अणंतगुणा, नीलया  
अणंतगुणा, कालया अणंतगुणा । नीललेस्सदव्वस्स सुक्किलगुणा थोवा, हालिदया अणंत-  
गुणा, लोहिदया अणंतगुणा, कालया अणंतगुणा, नीलया अणंतगुणा । काउलेस्सिए  
तिण्णिवियप्पा । तं जहा— सुक्किला थोवा, हालिदया अणंतगुणा, कालया अणंतगुणा,  
लोहिदया अणंतगुणा, नीलया अणंतगुणा । विदियवियप्पो उच्चदे— सुक्किला थोवा,  
कालया अणंतगुणा, हालिदया अणंतगुणा, नीलया अणंतगुणा, लोहिदया अणंतगुणा ।  
तदियवियप्पो उच्चदे— कालया थोवा, सुक्किला अणंतगुणा, नीलया अणंतगुणा,  
हालिदया अणंतगुणा, लोहिदया अणंतगुणा । तेउलेस्सिएसु कालगुणा थोवा, नीलया  
अणंतगुणा, सुक्किला अणंतगुणा, हालिदया अणंतगुणा, लोहिदया अणंतगुणा । पम्माए  
तिण्णिवियप्पा । त जहा— कालया थोवा, नीलया अणंतगुणा, सुक्किलया अणंतगुणा,

गया है । यथा— जिस शरीरमें श्याम वर्णकी उत्कृष्टता है वह कृष्णलेइया युक्त कहा जाता  
है । जिसमें नील वर्णकी प्रधानता है वह नीललेइयावाला, लोहित-वर्णकी प्रधानता युक्त जो शरीर  
है वह तेजलेइयावाला, हरिद्रा वर्णकी उत्कर्षता युक्त शरीर पद्मलेइयावाला, तथा शुक्ल वर्णकी  
प्रधानता युक्त शरीर शुक्ललेइयावाला कहा जाता है । इन वर्णोंको छोड़कर वर्णान्तरको प्राप्त हुए  
शरीरको कापोतलेइयावाला समझना चाहिये ।

अव चक्षुसे ग्रहण किये जानेवाले लेइयायुक्त द्रव्यके गुणोंके अल्पबहुत्वको बतलाते हैं ।  
यथा— कृष्णलेइयायुक्त द्रव्यके शुक्ल गुण स्तोक, हरिद्र गुण अनन्तगुणे, लोहित गुण  
अनन्तगुणे, नील गुण अनन्तगुणे, और श्याम गुण अनन्तगुणे होते हैं । नीललेइयायुक्त  
द्रव्यके शुक्ल गुण स्तोक, हरिद्र गुण अनन्तगुणे, लोहित गुण अनन्तगुणे, श्याम गुण अनन्त-  
गुणे, और नील गुण अनन्तगुणे होते हैं ।

कापोतलेइयावालेके विषयमें तीन विकल्प हैं । यथा—उसके शुक्ल गुण स्तोक हैं, हरिद्र  
गुण अनन्तगुणे हैं, श्याम गुण अनन्तगुणे हैं, लोहित गुण अनन्तगुणे हैं, और नील गुण  
अनन्तगुणे हैं । द्वितीय विकल्पका कथन करते हैं— शुक्ल गुण स्तोक हैं, श्याम गुण अनन्तगुणे  
हैं, हरिद्र गुण अनन्तगुणे हैं, नील गुण अनन्तगुणे हैं, और लोहित गुण अनन्तगुणे हैं । तृतीय  
विकल्पका कथन करते हैं— श्याम गुण स्तोक हैं, शुक्ल गुण अनन्तगुणे हैं, नील गुण अनन्तगुणे  
हैं, हरिद्र गुण अनन्तगुणे हैं, और लोहितगुण अनन्तगुणे हैं ।

तेजलेइयावालोंमें श्याम गुण स्तोक, नील गुण अनन्तगुणे, शुक्ल गुण अनन्तगुणे,  
हरिद्र गुण अनन्तगुणे, और लोहित गुण अनन्तगुणे होते हैं । पद्मलेइयावालेके विषयमें तीन  
विकल्प हैं । यथा— प्रथम विकल्पके अनुसार श्याम गुण स्तोक, नील गुण अनन्तगुणे, शुक्ल



लोहिदया अणंतगुणा, हालिदया अणंतगुणा, विदियवियप्पो उच्चदे— कालया थोवा, णीलया अणंतगुणा, लोहिदया अणंतगुणा, सुक्किलया अणंतगुणा, हालिदया अणंतगुणा । तदियवियप्पो वुच्चदे । तं जहा— कालया थोवा, णीलया अणंतगुणा, लोहिदया अणंतगुणा, हालिदया अणंतगुणा, सुक्किला अणंतगुणा । णादिविकत्थेण गारेण एसा सुक्कुककदा पम्मा (?) । सुक्काए एक्को वियप्पो, तं जहा— कालया थोवा, णीलया अणंतगुणा, लोहिदया अणंतगुणा, हालिदया अणंतगुणा । सुक्किला वियट्ठेण अणंतगुणा । एवं क्किण्णाए एक्को वियप्पो, णीलाए एक्को, काऊए तिण्णि, तेऊए एक्को, पम्माए तिण्णि, सुक्काए एक्को । काउलेस्सा णियमा दुट्ठाणिया, सेसाओ लेस्साओ दुट्ठाण-तिट्ठाण-चदुट्ठाणियाओ । एवं दव्वलेस्सा परूविदा ।

संपहि भावलेस्सा वुच्चदे । तं जहा— मिच्छत्तासंजम-कसाय - जोगजणिदो जीवसंसकारो भावलेस्सा णाम । तत्थ जो तिच्चो सा काउलेस्सा । जो तिच्चयो सा णीललेसा । जो तिच्चतमो सा क्किण्णलेस्सा । जो मंदो सा तेउलेस्सा । जो मंदयो सा पम्मलेस्सा । जो मंदतमो सा सुक्कलेस्सा । एदाओ छप्पि लेस्साओ अणंतभागवड्ढि - असंखे० भागवड्ढि - संखे० भागवड्ढि - संखे० गुणवड्ढि - असंखेजगुणवड्ढि -

गुण अनन्तगुणे, लोहित गुण अनन्तगुणे, और हारिद्र गुण अनन्तगुणे होते हैं । द्वितीय विकल्पके अनुसार श्याम गुण स्तोक, नील गुण अनन्तगुणे, लोहित गुण अनन्तगुणे, शुक्ल गुण अनन्तगुणे, और हारिद्र गुण अनन्तगुणे होते हैं । तृतीय विकल्पके अनुसार श्याम गुण स्तोक, नील गुण अनन्तगुणे, लोहित गुण अनन्तगुणे, हारिद्र गुण अनन्तगुणे, और शुक्ल गुण अनन्तगुणे होते हैं । अन्तमें गौर वर्णकी विशेषता होनेसे तीसरे विकल्पमें इसे शुक्लोत्कृष्ट कहते हैं ।

शुक्ललेश्याके विषयमें एक विकल्प है । यथा— श्याम गुण स्तोक हैं, नील गुण अनन्तगुणे हैं, लोहित गुण अनन्तगुणे हैं, हारिद्र गुण अनन्तगुणे हैं, और शुक्ल उत्कटगुण अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार कृष्णलेश्याके एक, नीललेश्याके एक, कापोतके तीन, तेजके एक, पद्मके तीन और शुक्लके एक; इतने इन द्रव्यलेश्याओंके विषयमें अल्पबहुत्वके विकल्प हैं ।

कापोतलेश्या नियमसे द्विस्थानिक तथा शेष लेश्यायें द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक व चतुःस्थानिक हैं । इस प्रकार द्रव्य लेश्याकी प्ररूपणा की गयी है ।

अब भावलेश्याका कथन करते हैं । यथा— मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे उत्पन्न हुए जीवके संस्कारको भावलेश्या कहते हैं । उसमें जो तीव्र संस्कार है उसे कापोतलेश्या, उससे जो तीव्रतर संस्कार है उसे नीललेश्या, और जो तीव्रतम संस्कार है उसे कृष्णलेश्या कहा जाता है । जो मन्द संस्कार है उसे तेजलेश्या, जो मन्दतर संस्कार है उसे पद्मलेश्या, और जो मन्दतम संस्कार है उसे शुक्ललेश्या कहते हैं । इन छहों लेश्याओंमेंसे प्रत्येक अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्त-

१ काप्रतौ 'सुक्किला वियट्ठेण अणंतगुणा' इति पाठः । २ मप्रतौ 'सुक्कुककदा' इति पाठः ।

३ ताप्रतौ 'सुक्कुककदा । ः पम्मा-सुक्काए' इति पाठः ।

अणंतगुणवद्धिकमेण पादेकं<sup>१</sup> छट्ठाणपदिदाओ ।

काउलेस्सा णियमा दुट्ठाणिया, सेसाओ लेस्साओ दुट्ठाण-तिट्ठाण-चदुट्ठाणियायो ।  
एत्थ तिव्व-मंददाए अप्पावहुअं । तं जहा— सव्वमंदाणुभागं जहण्णयं  
काउट्ठाणं । णीलाए जहण्णयमणंतगुणं । किण्णाए जहण्णयमणंतगुणं । तेऊए जहण्णय-  
मणंतगुणं । पम्माए जहण्णयमणंतगुणं । सुक्काए जहण्णयमणंतगुणं । काऊए उक्कस्सय-  
मणंतगुणं । णीलाए उक्कस्सयमणंतगुणं । किण्णाए उक्कस्सयमणंतगुणं । तेऊए उक्कस्सय-  
मणंतगुणं । पम्माए उक्कस्सयमणंतगुणं । सुक्काए उक्कस्सयमणंतगुणं । एवं लेस्से त्ति  
समत्तमणियोगदारं ।

गुणवृद्धिके क्रमसे छह स्थानोंमें पतित हैं ।

कापोतलेइया नियमसे द्विस्थानिक तथा श्लेष लेइयायें द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक व  
चतुस्थानिक हैं ।

यहां तीव्रता और मन्दताका अल्पवहुत्व इस प्रकार है— कापोतका जघन्य स्थान सबसे  
मन्द अनुभागसे संयुक्त है । नीललेइयाका जघन्य स्थान उससे अनन्तगुणा है । कृष्णलेइयाका  
जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । तेजलेइयाका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । पद्मलेइयाका  
जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । शुक्ललेइयाका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । कापोतका उत्कृष्ट  
स्थान अनन्तगुणा है । नीलका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा  
है । तेजका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । पद्मका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । शुक्लका उत्कृष्ट  
स्थान अनन्तगुणा है । इस प्रकार लेइया-अनुयोद्वार समाप्त हुआ ।

१ प्रतिपु 'पादेक' इति पाठः ।



## लेस्साकम्माणियोगद्वारं

कुंथुमहंतं संथुवमणंतणाणं<sup>१</sup> अणाइ-मज्झंतं ।

णमिळण लेस्सयम्मं अणियोगं वण्णइसामो ॥ १ ॥

[ लेस्साओ ] किण्णादियाओ<sup>२</sup>, तासिं कम्मं<sup>३</sup> मारण-विदारण-चूरणादि<sup>४</sup>किरिया-विसेसो, तं लेस्सायम्मं वत्तइस्सामो । तं जहा— किण्णलेस्साए परिणदजीवो णिदयो कलहसीलो रउदो अणुवद्धवेरो चोरो चप्पलओ पारदारियो<sup>५</sup> महु-मांस-सुरापसत्तो जिणसासणे अदिण्णकण्णो असंजमे मेरु व्व अविचलियसरूवो होदि । वुत्तं च—

चंडो ण सुवइ वेरं भंडणसीलो य धम्मदयरहिओ ।

दुट्ठो ण य एइ वसं किण्णाए संजुओ जीवो<sup>६</sup> ॥ १ ॥

दावण्णादिसु पादवविज्जियं णिव्विण्णाणं<sup>७</sup> णिव्वुद्धिं<sup>८</sup> माण-मायवहुलं णिदालुअं सलोहं हिंसादिसु मज्झिमज्झवसायं कुणइ णीललेस्सा । वुत्तं च—

मंदो बुद्धीहीणो णिव्विण्णाणी य विसयलोलो य ।

माणी मायी य तहा आलस्सो चेव भेज्जो<sup>९</sup> य ॥ २ ॥

इन्द्रादिकोंसे संस्तुत, अनन्तज्ञानी, महान् और आदि मध्य व अन्तसे रहित ऐसे कुंथु जिनेन्द्रको नमस्कार करके लेश्याकर्म अनुयोगद्वारका कथन करते हैं ॥ १ ॥

लेश्यायें कृष्णादिक हैं; उनका कर्म जो मारण, विदारण और चोरी आदि क्रियाविशेष रूप है वह लेश्याकर्म कहलाता है; उस लेश्याकर्मका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है— कृष्ण-लेश्यासे परिणत जीव निर्दय, झगड़ालु, रौद्र, वैरकी परम्परासे संयुक्त, चोर, असत्यभाषी, पर-दाराका अभिलाषी, मधु मांस व मद्यमें आसक्त, जिनशासनके श्रवणमें कानको न देनेवाला, और असंयममें मेरुके समान स्थिर स्वभाववाला होता है। कहा भी है—

कृष्णलेश्यासे संयुक्त जीव तीव्रक्रोधी, वैरको न छोड़नेवाला, गाली देने रूप स्वभावसे सहित, दयाधर्मसे रहित, दुष्ट, और दूसरोंके वशमें न आनेवाला होता है ॥ १ ॥

नीललेश्या जीवको दावण्ण आदिकोंमें पादवसे रहित (?), विवेक रहित, बुद्धिविहीन, मान व मायाकी अधिकतासे सहित, निद्रालु, लोभसंयुक्त, और हिंसादि कर्मोंमें मध्यम अध्यवसायसे युक्त करती है। कहा भी है—

जीव नीललेश्याके वशमें होकर मन्द, बुद्धिविहीन, विवेकसे रहित, विषयलोलुप,

१ प्रतिषु 'संथुवमणंतणाणं' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'किण्णदियाओ' इति पाठः ।

३ प्रतिषु 'कम्माणं' इति पाठः । ४ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'चोरणादि' इति पाठः ।

५ प्रतिषु 'पारारियो' इति पाठः । ६ गो. जी. ५०८.

७ अ-काप्रत्योः 'णिव्विण्णाणं', ताप्रतौ 'णिव्विण्णाणी' इति पाठः । ८ अ-काप्रत्योः 'णिव्वुद्धिं', ताप्रतौ 'णिव्वुद्धी' इति पाठः । ९ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'चेव भुज्जो' इति पाठः ।

णिहावंचणवहुलो धणधण्णे<sup>१</sup> होइ तिब्बसण्णाओ  
णीलाए लेस्साए वसेण जीवो हु पारंभो<sup>२</sup> ॥ ३ ॥

किण्णलेस्साए वुत्तसन्वकज्जेसु जहण्णुज्जमं<sup>३</sup> काउलेस्सा कुणइ । वुत्तं च—

रूसइ णिंदइ अण्णे दूसइ बहुसो य सोय-भयबहुलो ।  
असुअइ परिहवइ परं पसंसइ य अप्पयं बहुसो ॥ ४ ॥

ण य पत्तियइ परं सो अप्पाणं पि व परे वि मण्णंतो ।  
तूसइ<sup>४</sup> अहित्थुवंतो ण य जाणइ हाणि-वड्ढीयो ॥ ५ ॥

मरणं पत्थेइ रणे देइ सुवहुअं पि शुब्बमाणो<sup>५</sup> दु ।  
ण गणइ कज्जमकज्जं काऊए पेरियो जीवो<sup>६</sup> ॥ ६ ॥

अहिंसयं महु-मांस-सुरासेवावज्जियं सच्चमइं चत्तचोरियं-परयारं एदेसु कज्जेसु  
जहण्णुज्जमं जीवं तेउलेस्सा कुणइ । वुत्तं च—

जाणइ कज्जमकज्जं सेयमसेयं च सन्वसमपासी ।  
दय-दाणरओ मउओ तेऊए कीरए जीवो<sup>७</sup> ॥ ७ ॥

अभिमानी, मायाचारी, आलसी, अभेद्य, निद्रा (या निन्दा) व धोखेवाजीमें अधिक, धन-धान्यमें तीव्र अभिलाषा रखनेवाला, तथा अधिक आरम्भको करनेवाला होता है ॥ २-३ ॥

कापोतलेश्या जीवको कृष्णलेश्याके सम्बन्धमें ऊपर कहे गये समस्त कार्योंमें जघन्य उद्यमशील करती है । कहा भी है—

यह जीव कापोतलेश्यासे प्रेरित होकर रुष्ट होता है; दूसरोंकी निन्दा करता है, उन्हें बहुत प्रकारसे दोष लगाता है, प्रचुर शोक व भयसे संयुक्त होता है, दूसरोंसे असूया (ईर्ष्या) करता है, परका तिरस्कार करता है, अपनी अनेक प्रकारसे प्रशंसा करता है, वह अपने ही समान दूसरोंको भी समझता हुआ अन्यका कभी विश्वास नहीं करता है, अपनी प्रशंसा करने-वालोंसे संतुष्ट होता है, हानि-लाभको नहीं जानता है, युद्धमें मरणकी प्रार्थना करता है, दूसरोंके द्वारा प्रशंसित होकर उन्हें बहुतसा पारितोषिक देता है, तथा कर्तव्य और अकर्तव्यके विवेकसे रहित होता है ॥ ४-६ ॥

तेजलेश्या अहिंसक, मधु मांस व मद्यके सेवनसे रहित, सत्यबुद्धि तथा चोरी व परद्वाराका त्यागी; इन कार्योंमें जीवको जघन्य उद्यमवाला करती है । कहा भी है—

तेजलेश्या जीवको कर्तव्य-अकर्तव्य तथा सेव्य-असेव्यका जानकार, समस्त जीवोंको समान समझनेवाला, दया-दानमें लवलीन, और सरल करती है ॥ ७ ॥

१ प्रतिषु 'वणधण्णे' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'जहण्णुज्जमं' इति पाठः ।

५ अ-काप्रत्योः 'धुब्बमाणो' इति पाठः ।

७ ताप्रती 'मांससेवासुरावज्जियं' इति पाठः ।

९ गो, जी, ५१४.

२ गो. जी. ५०९-१०.

४ अप्रती 'तूसहि' इति पाठः ।

६ गो. जी. ५११-१३.

८ प्रतिषु 'सच्चमइच्चत्तंचोरियं' इति पाठः ।

अहिंसादिसु कज्जेसु जीवस्स मज्झिमुज्जमं<sup>१</sup> पम्मलेस्सा कुणइ । वुत्तं च—

चाई भदो चोक्खो उज्जुवकम्मो य खमइ बहुअं पि ।

साहु-गुरुपूजणरओ पम्माए परिणओ जीवो<sup>२</sup> ॥ ८ ॥

अहिंसाइसु कज्जेसु तिव्वुज्जमं सुक्कलेस्सा कुणइ । वुत्तं च—

ण य कुणइ पक्खवायं ण वि ये णिदाणं समो य सव्वेसु ।

णत्थि य राग-दोसो<sup>३</sup> णेहो वि य सुक्कलेस्साए<sup>४</sup> ॥ ९ ॥

एवं दव्वलेस्साए वि कज्जाणं परूवणा जाणिदूण कायव्वा । एवं लेस्सायम्मि त्ति समत्तमणियोगदारं ।

पद्मलेश्या जीवको उपर्युक्त अहिंसादि कार्योंमें मध्यम उद्यम करनेवाला करती है। कहा भी है—

पद्मलेश्यामें परिणत जीव त्यागी, भद्र, चोखा ( पवित्र ), ऋजुकर्मा ( निष्कपट ), भारी अपराधको भी क्षमा करनेवाला तथा साधुपूजा व गुरुपूजामें तत्पर रहता है ॥ ८ ॥

शुक्ललेश्या उक्त अहिंसादि कार्योंमें तीव्र उद्यमशाल करती है। कहा भी है—

शुक्ललेश्याके होनेपर जीव न पक्षपात करता है और न निदान भी करता है, वह सब जीवोंमें समान रहकर राग, द्वेष व स्नेहसे रहित होता है ॥ ९ ॥

इसी प्रकार द्रव्यलेश्याके कार्योंकी भी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये। इस प्रकार लेश्या-कर्म अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

१ अ-काप्रत्योः 'मज्झिमुज्जुमं' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'भंडो' इति पाठः । ३ गो. जी. ५१५. तत्थ 'खवइ' इत्येतस्य स्थाने 'खमदि' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'ण रिं य' इति पाठः । ५ अ-काप्रत्योः 'रागं दोसा', ताप्रतौ 'रागं दोसो' इति पाठः । ६ गो. जी. ५१६.



## लेस्सापरिणामाणियोगद्वारं

अहिणंदणमहिंवंदिय अहिणंदियतिहुवणं सुहत्तीए ।

लेस्सपरिणामसण्णियमणियोगं वण्णइस्सामो ॥१॥

लेस्सापरिणामे त्ति अणियोगद्वारं काओ लेस्साओ' केण सरूवेण काए वड्ढीए हाणीए वा परिणमंति त्ति जाणात्रणट्टुमागयं । किण्णलेस्साए ताव परिणमणविहाणं बुच्चदे । तं जहा— किण्णलेस्सियो संकिलिस्समाणो ण अण्णं संकमदि, सट्टाणे चैव छट्टाणपदिदेण ठाणसंकमणेण वड्ढदि' । किं छट्टाणपदिदत्तं ? जत्तो ठाणादो संकिलिट्ठो तत्तो ट्टाणादो अणंतभागव्भहिया असंखेज्जभागव्भहिया संखेज्जभागव्भहिया संखेज्जगुणव्भहिया असंखेज्जगुणव्भहिया अणंतगुणव्भहिया वा लेस्सा होज्ज, एदं छट्टाणपदिदत्तं । विसुज्झमाणो सट्टाणे अणंतभागहाणि-असंखे०भागहाणि-संखे० भागहाणि-संखे० गुणहाणि-असंखे० गुणहाणि-अणंतगुणहाणि त्ति छट्टाणपदिदेण हायदि, णीललेस्साए अणंतगुणहीणेण संकमदि । एवं किण्णलेस्सस्स संकिलेसमाणस्स एक्को वियप्पो किण्णलेस्सवड्ढीए ।

तीनों लोकोंको आनन्दित करनेवाले अभिनन्दन जिनेन्द्रकी अतिशय भक्तिपूर्वक वन्दना करके 'लेइयापरिणाम' संज्ञावाले अनुयोगद्वारका वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

कौन लेइयायें किस स्वरूपसे और किस वृद्धि अथवा हानिके द्वारा परिणमन करती हैं, इस बातके ज्ञापनार्थ 'लेइयापरिणाम' अनुयोगद्वारा प्राप्त हुआ है । उनमें पहिले कृष्णलेइयाके परिणमनविधानका कथन करते हैं । यथा— कृष्णलेइयावाला जीव संकलेशको प्राप्त होता हुआ अन्य लेइयामें परिणत नहीं होता है, किन्तु पदस्थानपतित स्थानसंक्रमण द्वारा स्वस्थानमें ही वृद्धिको प्राप्त होता है ।

शंका—पदस्थानपतितका क्या स्वरूप है ?

समाधान—जिस स्थानसे संकलेशको प्राप्त हुआ है उस स्थानसे अनन्तभाग अधिक, असंख्यातभाग अधिक, संख्यातभाग अधिक, संख्यातगुणी अधिक, असंख्यातगुणी अधिक और अनन्तगुणी अधिक लेइयाका होना; इसका नाम पदस्थानपतित है ।

उक्त कृष्णलेइयावाला जीव विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ अनन्तभागहानि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अनन्तगुणहानि; इस प्रकार पदस्थानपतित स्वरूपसे स्वस्थानमें हानिको प्राप्त होता है । वही अनन्तगुणहानिके द्वारा नीललेइयारूपसे परिणत होता है । इस प्रकार संकलेशको प्राप्त होनेवाले कृष्णलेइया युक्त

१ ताप्रती 'काठलेस्साओ' इति पाठः । २ संकमणं सट्टाण-परट्टाणं होदि किण्ण-सुक्काणं । वड्ढीसु हि सट्टाणं उभयं हाणिम्मि सेस उभये वि ॥ लेस्साणुक्कसादो वरहाणी अवरगादवरवड्ढी । सट्टाणे अवरसादो हाणी गियमा परट्टाणे ॥ संकमणे छट्टाणा हाणिषु वड्ढीसु होति तण्णामा । परिमाणं च य पुब्बं उत्तकमं होदि सुदणाणे ॥ गो. जी. ५०३५०५ ॥

विसुज्जमाणस्स दो वियप्पा— किण्णलेस्सहाणीए एको, णीललेस्ससंकमे विदियो<sup>१</sup> चेष । एवं किण्णलेस्सस्स परिणमणविहाणं समत्तं ।

संपहि णीललेस्सस्स बुच्चदे— णीललेस्सादो संकिलिस्संतो णीललेस्सं छट्ठाणपदिदेण वड्ढिसंकमट्ठाणेण संकमेइं, अधवा किण्णलेस्सं अणंतगुणवड्ढिकमेण परिणमदि । एवं संकिलेसंतस्स दो वियप्पा । णीललेस्सादो<sup>२</sup> विसुज्जंतो णीललेस्साए छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, काउलेस्साए अणंतगुणहीणहाणीए<sup>३</sup> वि हायमाणो परिणमदि । एवं णीललेस्सादो विसुज्जमाणस्स दो वियप्पा । एवं णीललेस्सस्स परिणमणविहाणं समत्तं ।

काउलेस्सस्स बुच्चदे । तं जहा— काउलेस्सियो संकिलिस्संतो सट्ठाणे अणियमेण<sup>४</sup> छट्ठाणपदिदाए वड्ढीए वड्ढदि, णीललेस्साए अणंतगुणवड्ढीए णियमेण परिणमदि । एवं संकिलिस्संतस्स दो वियप्पा । काउलेस्सियो विसुज्जमाणो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, तेउलेस्सिए अणंतगुणहीणहाणीए परिणमदि । एवं विसुज्जमाणस्स दो वियप्पा । काउलेस्सस्स संकमणविहाणं समत्तं ।

तेउलेस्सियो<sup>५</sup> संकिलिस्संतो सत्थाणे छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, काउलेस्साए

जीवका कृष्णलेश्याकी वृद्धि द्वारा एक विकल्प होता है । उसीके विशुद्धिको प्राप्त होनेपर दो विकल्प होते हैं— कृष्णलेश्याकी हानिसे एक, और नीललेश्याके संक्रममें दूसरा विकल्प होता है । इस प्रकार कृष्णलेश्यावाले जीवका परिणमनविधान समाप्त हुआ ।

अब नीललेश्यावाले जीवके परिणमनविधानका कथन करते हैं— नीललेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित वृद्धिसंक्रमस्थानके द्वारा नीललेश्यामें ही संक्रमण करता है । अथवा वह अनन्तगुणवृद्धिके क्रमसे कृष्णलेश्यामें परिणत होता है । इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त होनेपर दो विकल्प होते हैं । नीललेश्यासे विशुद्धिको प्राप्त होनेवाला षट्स्थानपतित हानिके द्वारा नीललेश्याकी हानिको प्राप्त होता है । वही अनन्तगुणहीन हानिके द्वारा हानिको प्राप्त होता हुआ कापोतलेश्या रूपसे परिणत होता है । इस प्रकार नीललेश्यासे विशुद्धिको प्राप्त होनेवालेके दो विकल्प हैं । इस प्रकार नीललेश्यावालेका परिणमनविधान समाप्त हुआ ।

कापोतलेश्यावालेके परिणमनका विधान कहते हैं । यथा— कापोतलेश्यावाला संक्लेशको प्राप्त होता हुआ अनियमसे षट्स्थानपतित वृद्धिके द्वारा वृद्धिगत होता है । वही अनन्तगुणवृद्धिके द्वारा नियमसे नीललेश्यामें परिणत होता है । इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त हुए कापोतलेश्यायुक्त जीवके दो विकल्प हैं । कापोतलेश्यावाला विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित हानिके द्वारा स्वस्थानमें हानिको प्राप्त होता है । वही अनन्तगुणहीन हानि द्वारा तेजलेश्यामें परिणत होता है । इस प्रकार विशुद्धिको प्राप्त होते हुए कापोतलेश्यावालेके दो विकल्प हैं । कापोतलेश्यावालेके संक्रमणका विधान समाप्त हुआ ।

तेजलेश्यावाला जीव संक्लेशको प्राप्त होकर षट्स्थानपतित हानिके द्वारा स्वस्थानमें

१ अ-काप्रत्योः 'विदिया' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'संकमे' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'णील-लेस्सा' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'हीणाहाणीए' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'अ णियमेण' इति पाठः । ६ अ-काप्रत्योः 'तेउलेस्सिए' इति पाठः ।

अणंतगुणहीणहाणीए परिणमइ । एवं तेउलेस्सस्स संकिलिस्संतस्स दो वियप्पा । तेउ-  
लेस्सिओ विसुज्झमाणो सत्थाणे छट्ठाणपदिदाए वड्ढीए वड्ढदि, पम्मलेस्साए अणंत-  
गुणवड्ढीए परिणमइ । एवं तेउलेस्सस्स परिणमणविहाणं समत्तं ।

संपहि पम्मलेस्साए बुच्चदे । तं जहा— पम्मलेस्सियो विसुज्झमाणो सत्थाणे  
छट्ठाणपदिदाए वड्ढीए वड्ढदि, सुक्कलेस्साए अणंतगुणवड्ढीए परिणमदि ।  
संकिलिस्समाणओ पम्मलेस्सिओ सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाए हाणीए हायदि, तेउलेस्साए  
अणंतगुणहाणीए हायदि । एवं पम्मलेस्सस्स परिणमणविहाणं समत्तं ।

सुक्कलेस्साए उच्चदे । तं जहा— सुक्कलेस्सियो संकिलिस्समाणो सत्थाणे छट्ठाण-  
पदिदाए हाणीए हायदि, पम्मलेस्साए अणंतगुणहीणहाणीए परिणमइ । एवं  
संकिलिस्संतस्स दो वियप्पा । सुक्कलेस्सियो विसुज्झमाणो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाए वड्ढीए  
वड्ढदि, अणलेस्ससंकमो णत्थि । सुक्कलेस्सस्स विसुज्झमाणस्स एको चैव वियप्पो ।  
एवं सुक्कलेस्साए परिणमणविहाणं समत्तं ।

संकम-पडिग्गहाणं जहण्णुक्कस्सयाणं तिव्व-मंददाए एत्थ अप्पावहुअं कायव्वं ।

हीनताको प्राप्त होता है, वही अनन्तगुणहीन हानिके द्वारा कापोतलेश्यासे परिणत होता है ।  
इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त होनेवाले तेजलेश्या युक्त जीवके दो विकल्प हैं । तेजलेश्यायुक्त  
जीव विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित वृद्धिके द्वारा स्वस्थानमें वृद्धिको प्राप्त होता है,  
वही अनन्तगुणवृद्धिके द्वारा पद्मलेश्यासे परिणत होता है । [ इस प्रकार विशुद्धिको प्राप्त  
होनेवाले तेजलेश्यायुक्त जीवके दो विकल्प हैं । ] इस प्रकार तेजलेश्यायुक्त जीवके परिणमनका  
विधान समाप्त हुआ ।

अब पद्मलेश्याके परिणमनविधानका कथन करते हैं । यथा— पद्मलेश्यायुक्त जीव  
विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित वृद्धिके द्वारा स्वस्थानमें वृद्धिको प्राप्त होता है, वही  
अनन्तगुणवृद्धिके द्वारा शुक्ललेश्यासे परिणत होता है । संक्लेशको प्राप्त होनेवाला पद्मलेश्या  
संयुक्त जीव षट्स्थानपतित हानिके द्वारा स्वास्थानमें हीनताको प्राप्त होता है, वही अनन्तगुणी  
हानिके द्वारा तेजलेश्यामें जाकर हीनताको प्राप्त होता है । इस प्रकार पद्मलेश्यावालेके परिणमन-  
का विधान समाप्त हुआ ।

शुक्ललेश्याके परिणमनविधानका कथन करते हैं । यथा— शुक्ललेश्यावाला संक्लेशको  
प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित हानिके द्वारा स्वास्थानमें हानिको प्राप्त होता है, वही अनन्तगुणहीन  
हानिके द्वारा पद्मलेश्यासे परिणत होता है । इस प्रकार संक्लेशको प्राप्त होते हुए शुक्ललेश्यायुक्त  
जीवके दो विकल्प हैं । शुक्ललेश्यायुक्त जीव विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ षट्स्थानपतित वृद्धिके  
द्वारा स्वास्थानमें वृद्धिको प्राप्त होता है, उसका अन्य लेश्यामें संक्रम नहीं होता । विशुद्धिको  
प्राप्त होते हुए शुक्ललेश्यावालेका एक ही विकल्प है । इस प्रकार शुक्ललेश्याका परिणमनविधान  
समाप्त हुआ ।

यहां तीव्र-मंदताकी अपेक्षा जघन्य ष उक्कष्ट संकम और प्रतिग्रहके अल्पबहुत्वका कथन करते



तं जहा— ताणि किण्ण-णीललेस्साओ पडुच्च वुच्चदे । णीलाए जहण्णयं लेस्सट्ठाणं थोवं । किण्णादो जम्हि णीलाए पडिघेप्पदि तं णीलाए जहण्णयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । किण्णाए जहण्णयं संकमट्ठाणं जहण्णयं च किण्णट्ठाणं दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि । णीलाए जहण्णयं संकमट्ठाणमणंतगुणं । किण्णाए जहण्णयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । णीलाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । किण्णाए उक्कस्सयं संकमट्ठाणमणंतगुणं । णीलाए उक्कस्सयं संकमट्ठाणं उक्कस्सयं णीलट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि । किण्णाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । उक्कस्सयं किण्णलेस्सट्ठाणमणंतगुणं । एवं किण्ण-णीलाणं संकम-पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं समत्तं ।

एत्तो णील-काऊणं संकम-पडिग्गहाणमण्णावहुअं वुच्चदे । तं जहा— जहा किण्ण-णीलाणं तथा काऊ-णीलाणं वत्तव्वं । णवरि काउलेस्समादिं कादूण वत्तव्वं । एवं णील-काऊसंकम-पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं समत्तं ।

संपहि काऊ-तेउलेस्साओ पडुच्च अप्पावहुअं वुच्चदे । तं जहा— काऊए जहण्णओ संकमो जहण्णट्ठाणं च दो वि तुल्लाणि थोवाणि । तेऊए जहण्णयं ठाणं जहण्णो च संकमो तुल्लो अणंतगुणो । काऊए जहण्णयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । तेऊए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो । काऊए उक्कस्सयं संकमट्ठाणमणंतगुणं । तेऊए उक्कस्सयं संकम-

हैं । वह इस प्रकार है— उनका कथन कृष्ण व नील लेश्याओंके आश्रयसे करते हैं । नीललेश्याका जघन्य लेश्यास्थान स्तोक है । नीललेश्याके जिस स्थानमें कृष्णलेश्यासे प्रतिग्रहण होता है वह नीललेश्याका जघन्य प्रतिग्रहस्थान उससे अनन्तगुणा है । कृष्णका जघन्य संक्रमस्थान और जघन्य कृष्णस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं । नीलका जघन्य संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका जघन्य प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । नीलका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका उत्कृष्ट संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । नीलका उत्कृष्ट संक्रमस्थान और उत्कृष्ट नीलस्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं । कृष्णका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । उत्कृष्ट कृष्णलेश्यास्थान अनन्तगुणा है । इस प्रकार कृष्ण और नील लेश्याओंके संक्रम और प्रतिग्रहका अल्पवहुत्व समाप्त हुआ ।

यहां नील और कापोत लेश्याओंके संक्रम और प्रतिग्रहके अल्पवहुत्व कथन करते हैं । यथा— जैसे कृष्ण और नील लेश्याओंके सम्बन्धमें कथन किया है वैसे ही कापोत और नील लेश्याओंके सम्बन्धमें भी कथन करना चाहिये । विशेषता इतनी है कि कापोतलेश्याको आदि करके यह कथन करना चाहिये । इस प्रकार नील और कापोत लेश्याओंके संक्रम-प्रतिग्रहका अल्पवहुत्व समाप्त हुआ ।

अब कापोत और तेज लेश्याओंके आश्रयसे उक्त अल्पवहुत्वका कथन करते हैं । यथा— कापोतलेश्याका जघन्य संक्रम और जघन्य स्थान दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । तेजलेश्याका जघन्य स्थान और जघन्य संक्रम दोनों तुल्य व उनसे अनन्तगुणे हैं । कापोतका जघन्य प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । तेजका जघन्य प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । कापोतका उत्कृष्ट संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । तेजका उत्कृष्ट संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । कापोतका उत्कृष्ट प्रति-

१ अ-काप्रत्योः 'संकमदिपडिग्गह' ताप्रतौ संकम [ दि ] पडिग्गह' इति पाठः ।

ट्टाणमणंतगुणं । काऊए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो । तेऊए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो । काऊए उक्कस्सयं ट्टाणमणंतगुणं । तेऊए उक्कस्सयं ट्टाणमणंतगुणं । एवं तेउ-काऊणं संक्रम-पडिग्गहप्पावहुअं समत्तं ।

तेउ-पम्माणं संक्रम-पडिग्गहप्पावहुअं बुच्चदे । तं जहा— तेऊए जहण्णयं ट्टाणं थोवं । तेऊए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो । पम्माए जहण्णयं ट्टाणं संक्रमो च दोण्णि वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि । तेऊए जहण्णयं संक्रमट्टाणमणंतगुणं । पम्माए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो । तेऊए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो । पम्माए उक्कस्सओ संक्रमो अणंतगुणो । तेऊए उक्कस्सओ संक्रमो उक्कस्सयं च ट्टाणमणंतगुणं । पम्माए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो । पम्माए उक्कस्सयं ट्टाणमणंतगुणं । एवं तेउ-पम्माणं संक्रम-पडिग्गहप्पावहुअं समत्तं ।

संपहि पम्म-सुक्काणं बुच्चदे । तं जहा— पम्माए जहण्णयं ट्टाणं थोवं । पम्माए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो । सुक्काए जहण्णओ संक्रमो जहण्णयं ट्टाणं च दोण्णि वि तुल्लाणि अणंतगुणाणि । पम्माए जहण्णओ संक्रमो अणंतगुणो । सुक्काए जहण्णओ पडिग्गहो अणंतगुणो । पम्माए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो । सुक्काए उक्कस्सओ संक्रमो अणंतगुणो । पम्माए उक्कस्सयं ट्टाणं संक्रमो च अणंतगुणो । सुक्काए उक्कस्सओ पडिग्गहो अणंतगुणो । उक्कस्सयं सुक्कलेस्मट्टाणमणंतगुणं । एवं ति-चदु-पंच-छसंजोगाणं पि जाणिदूण अप्पावहुअं कायव्वं । एवं लेखापरिणामे त्ति समत्तमणियोगदारं ।

ग्रहस्थान अनन्तगुणा है । तेजका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । कापोतका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । तेजका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । इस प्रकार तेज और कापोत लेख्याओंके संक्रम और प्रतिग्रहका अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

तेज और पद्म लेख्याओंके संक्रम व प्रतिग्रहके अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा— तेजका जघन्य स्थान स्तोक है । तेजका जघन्य प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । पद्मका जघन्य स्थान और संक्रम दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं । तेजका जघन्य संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । पद्मका जघन्य प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । तेजका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । पद्मका उत्कृष्ट संक्रम अनन्तगुणा है । तेजका उत्कृष्ट संक्रम और उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । पद्मका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । पद्मका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । इस प्रकार तेज और पद्म लेख्याओंके संक्रम-प्रतिग्रहका अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब पद्म और शुक्ल लेख्याओंके प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । यथा— पद्मका जघन्य स्थान स्तोक है । पद्मका जघन्य प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । शुक्लका जघन्य संक्रम और जघन्य स्थान दोनों ही तुल्य व अनन्तगुणे हैं । पद्मका जघन्य संक्रम अनन्तगुणा है । शुक्लका जघन्य प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । पद्मका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । शुक्लका उत्कृष्ट संक्रम अनन्तगुणा है । पद्मका उत्कृष्ट स्थान और संक्रम अनन्तगुणा है । शुक्लका उत्कृष्ट प्रतिग्रह अनन्तगुणा है । उत्कृष्ट शुक्ललेख्यास्थान अनन्तगुणा है । इस प्रकार तीन, चार, पांच और छह संयोगोंके भा अल्पबहुत्वका कथन जानकर करना चाहिये । इस प्रकार लेख्यापरिणाम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

## सादासादाणियोगद्वारं

अजियं जियसयलविभुं परमं जय-जीयबंधवं णमिउं ।

सादासादणियोगं समासदो वण्णइस्सामो ॥१॥

सादासादे त्ति अणियोगद्वारस्स पंच अणियोगद्वाराणि । तं जहा— समुक्कित्तणा अट्टपदं पदमीमांसा सामित्तं अप्पावहुअं चेदि । समुक्कित्तणा त्ति जं पदं तस्स विहासा । तं जहा— एयंतसादं अणेयंतसादं एयंतअसादं अणेयंतअसादं च अत्थि । समुक्कित्तणा गदा ।

अट्टपदं । तं जहा— जं कम्मं सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिच्छुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तमेयंतसादं । तव्वदिरित्तं अणेयंतसादं । जं कम्मं असादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिच्छुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमेयंतअसादं । तव्वदिरित्तमणेयंतअसादं । एवं अट्टपदं गदं ।

पदमीमांसा । तं जहा— एयंतसादमत्थि उक्कस्सयमणुक्कसयं जहणमजहणयं च । एवं सेसाणं पि वत्तव्वं । पदमीमांसा' गदा ।

जिन्होंने समस्त विमुओंपर विजय प्राप्त कर ली है और जो जगत्के जीवोंके हितैषी हैं उन उत्कृष्ट अजित जिनेन्द्रको नमस्कार करके संक्षेपमें सातासातअनुयोगद्वारका वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

‘सातासात’ इस अनुयोगद्वारके पांच अवान्तर अनुयोगद्वार हैं । यथा— समुत्कीर्तना, अर्थपद, पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पवहुत्व । समुत्कीर्तना यह जो पद है उसकी विभाषा वतलाते हैं । यथा— एकान्तसात, अनेकान्तसात, एकान्तअसात और अनेकान्तअसात है । समुत्कीर्तना समाप्त हुई ।

अर्थपदका कथन इस प्रकार है— सातास्वरूपसे बांधा गया जो कर्म संक्षेप व प्रतिक्षेपसे रहित होकर सातास्वरूपसे वेदा जाता है उसका नाम एकान्तसात है । इससे विपरीत अनेकान्तसात है । जो कर्म असातास्वरूपसे बांधा जाकर संक्षेप व प्रतिक्षेपसे रहित होकर असातास्वरूपसे वेदा जाता है उसका नाम एकान्तअसात है । इससे विपरीत अनेकान्तअसात कहा जाता है । इस प्रकार अर्थपद समाप्त हुआ ।

पदमीमांसाका कथन इस प्रकार है— एकान्तसात उत्कृष्ट है, अनुत्कृष्ट है, जघन्य है और अजघन्य भी है । इसी प्रकार शेष अनेकान्तसात आदिके सम्बन्धमें भी कहना चाहिये । इस प्रकार पदमीमांसा समाप्त हुई ।

१ ताप्रतौ ‘एवं मोमांसा’ इति पाठः ।

सामित्तं । तं जहा— उक्कस्सयमेयंतसादं कस्स होदि ? अभवसिद्धियपाओग्गे पयदं । जो सत्तमाए पुढवीए णेरइयो गुणितकम्मंसियो तत्तो उव्वट्टिदो<sup>१</sup> संतो सव्वलहुं एक्कत्तीसंसागरोवमट्टिदियं देवलोगं गच्छिहिदि । किं कारणं ? तस्स सादवेदयद्वाओ सव्वमहंतीयो बहुआओ च भविस्संति । तदो जो एवं देवलोगे भविस्सो सत्तमाए पुढवीए णेरइयो तस्स चरिमसमयणेरइयस्स उक्कस्सयमेयंतसादं । अपेयंतसादमुक्कस्सयं कस्स ? जो सत्तमाए पुढवीए णेरइयो वादरपुढविकाइएसु तसकाइएसु च कम्मं गुणेण आगदो, तस्स पुण जो अधापवत्तसंक्रमेण असंक्रमस्स अवहारकालो तत्तियमेत्तं जीविदव्वस्स सेसं, सो च तं जीविदव्वसेसं सव्वममादो भविस्सदि, तस्स पालिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागसेसाउअस्स णेरइयस्स उक्कस्सयमेयंतसादं । उक्कस्सयमेयंत-असादं<sup>२</sup> कस्स ? जारिसस्स<sup>३</sup> णेरइयस्स उक्कस्सयमेयंतं सादं कदं तारिसस्सेव णेरइयस्स उक्कस्सयमेयंतअसादं । णवरि णाणत्तं वादरकाइएसु अच्छिदो वा ण वा । उक्कस्सयमेयंतअसादं कस्स ? जस्स उक्कस्सयमेयंतअसादं तस्सेव उक्कस्सयमेयंत-असादं । णवरि वादरकाइएसु तसकाइएसु च कम्मं गुणेण णिरयगइं पवेसेदव्वो । तस्स देवलोगभाविस्स चरिमसमयणेरइयस्स उक्कस्सयमेयंतं असादं ।

स्वामित्तिका कथन किया जाता है । यथा— उत्कृष्ट एकान्तसात किसके होता है ? यहां अभव्यासिद्धिकप्रायोग्य प्रकृत है । जो सातवीं पृथिवीका नारकी गुणितकर्मांशिक वहांसे निकल कर सर्वलघु कालमें इकतीस सागरोपम आयुस्थितिवाले देवलोकको प्राप्त होगा उसके होता है ।

शंका— इसका कारण क्या है ?

समाधान— इसका कारण यह है कि उसके सातावेदककाल सबसे महान् और बहुत होंगे ।

इसलिये जो इस प्रकारके देवलोकमें होनेवाला सातवीं पृथिवीका नारकी है उस अन्तिम समयवर्ती नारकीके उत्कृष्ट एकान्तसात होता है । उत्कृष्ट अनेकान्तसात किसके होता है ? जो सातवीं पृथिवीका नारकी वादर पृथिवीकायिकों और त्रसकायिकोंमें कर्मको गुणित करके ( गुणितकर्मांशिक होकर ) आया है, उसका जो अधः प्रवृत्तसंक्रमसे असंक्रमका अवहारकाल है उतना मात्र जीवन शेष है, वह उस शेष सब जीवन पर्यन्त सातासे रहित होगा, उस परलोकके असंख्यातवें भाग मात्र शेष आयुवाले नारकीके उत्कृष्ट अनेकान्तसात होता है । उत्कृष्ट एकान्त-असात किसके होता है ? जिस प्रकारके नारकीके उत्कृष्ट अनेकान्तसात किया गया है उसी प्रकारके ही नारकीके उत्कृष्ट एकान्तअसात होता है । विशेष इतना है वह वादरकायिकोंमें रह भी सकता और नहीं भी । उत्कृष्ट अनेकान्तअसात किसके होता है ? जिसके उत्कृष्ट एकान्तअसात होता है उसीके उत्कृष्ट अनेकान्तअसात होता है । विशेष इतना है कि वादरकायिकोंमें और त्रसकायिकोंमें कर्मको गुणित करके उसे नरकगतिमें प्रविष्ट कराना चाहिये । देवलोकमें उत्पन्न होनेवाले उसी अन्तिम समयवर्ती नारकीके उत्कृष्ट अनेकान्तअसात होता है ।

१ प्रतिपु 'उव्वट्टिदो' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'मेयंतसादं' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'जाविसस्स', ताप्रतौ 'जावि ( रि ) सस्स' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'णाणत्तवादरं' इति पाठः ।

जहण्णयमेयंतं सादं<sup>१</sup> कस्स ? जो पढमसमयो णेरइयो सव्वजहण्णएण जोमेण सादं बंधदि, जत्तियमेत्तो अधापवत्तसंक्रमेण असंक्रमस्स अवहारकालो उक्कस्सओ तत्तो समऊणं कालं<sup>२</sup> असादो होहिदि त्ति तदो जं तस्स तइया पढमसमयसादस्स अधाट्ठि-दियंमुदयमेहिदि तप्पढमसमयणेरइयस्स जहण्णयमेयंतंसादं । जहण्णयमणेयंतंसादं कस्स ? जो सुहुमसंतक्रमेण जहण्णएण तसेसु उववण्णो, तत्थ पढमसमयतवभवत्थमादिं कादूण सव्वचिरमसादं बंधिदूण तस्स चरिमसमयअसादबंधयस्स जहण्णयमणेयंत-सादं । सो च पुण तं चरिमसमयअसादबंधमादिं कादूण सव्वरहस्सेण कालेण एकत्तीसं-सागरोवमाउट्ठिदिदेवगदिं गाहिदि । तत्थ सव्वमहंतीओ सव्ववहुगीओ च साद-वेदगद्धाओ भविस्संति । जहण्णयं एयंतं असादं कस्स ? जस्स जहण्णयं अणेयंतंसादं तस्स चैव जहण्णयमेयंतंअसादं भाणिदव्वं । णवरि असादेण जहण्णएण तसेसु उववण्णो, तत्थ च सादबंधयद्धमुक्कस्सयं बंधिदूण चरिमसमयसादबंधगो जादो, तस्स जहण्णय-मेयंतंअसादं । जहण्णयमणेयंतंअसादं कस्स ? एदस्स चैव, सुहुमेहि जहण्णएण असाद-क्रमेण आगदो तसेसु उववण्णो, उक्कस्सयं सादबंधयद्धं बंधिदूण जो चरिमसमयसाद-बंधओ जादो, तस्स जहण्णयमणेयंतंअसादं । सो च पुण सव्वलहुं णिरयं गाहिदि, तत्थ पलिदोवमपुधत्तं वा चिरयरयं<sup>३</sup> वा असादो होहिदि, तदो तारिसस्स तिससे पढम-

जघन्य एकान्तसात किसके होता है ? जो प्रथम समयवर्ती नारकी सर्वजघन्य योगसे साताको बांधता है, जितना मात्र अधःप्रवृत्तसंक्रमसे असंक्रमका उत्कृष्ट अवहारकाल है उससे एक समय कम काल साता रहित होगा, इसलिये उस प्रथम समयवर्ती असातके उस समय जो अधःस्थिति उदयप्राप्त होगी उसके प्रथम समयवर्ती नारकीके जघन्य एकान्तसात होता है । जघन्य अनेकान्तसात किसके होता है ? जो जघन्य सूक्ष्म सत्कर्मके साथ त्रसोंमें उत्पन्न हुआ है, वहां प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थको आदि करके सर्वचिर काल असाताको बांधता है उस अन्तिम समयवर्ती असातबन्धकके जघन्य अनेकान्तसात होता है । वह भी उस अन्तिम समय रूप असातबन्धको आदि करके सर्वलघु कालमें इकतीस सागरोपम आयुस्थितियुक्त देवगतिको प्राप्त होगा । वहां सबसे महान् और सबसे अधिक सातवेदककाल होंगे । जघन्य एकान्तअसात किसके होता है ? जिसके जघन्य अनेकान्तसात होता है उसीके जघन्य एकान्त-असात कहना चाहिये । विशेष इतना है कि जघन्य असातके साथ त्रसोंमें उत्पन्न हुआ है और वहां उत्कृष्ट असातबन्धककाल तक उत्कृष्ट बन्ध करके अन्तिम समयवर्ती असातबन्धक हुआ है उसके जघन्य एकान्तअसात होता है । जघन्य अनेकान्तअसात किसके होता है ? वह इसाके होता है— सूक्ष्म योग्य जघन्य असातकर्मके साथ आकर, त्रसोंमें उत्पन्न होकर व उत्कृष्ट सातबन्धक-काल तक बन्ध करके जो अन्तिम समयवर्ती सातबन्धक हुआ है उसके जघन्य अनेकान्तअसात होता है । वह सर्वलघु कालमें नारक भवको प्राप्त करेगा, वहां पत्योपमपृथक्त्व काल अथवा चिरतर काल तक साता रहित होगा, इसलिये उक्त प्रकारके जीवके उस प्रथम सातबन्धक कालके

१ ताप्रती 'मेयंतंसादं' इति पाठः । २ ताप्रती 'समऊणकालं' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'अंधा-विदिय-' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'जहण्णिया-' इति पाठः । ५ ताप्रती 'विरयरयं' इति पाठः ।

सादबंधगद्वाए चरिमसमए जहण्णयमणेयंतअसादं । एवं अभवसिद्धियपाओग्गे सामित्तं गदं ।

भवसिद्धियपाओग्गे एयंतसादमुक्कस्सयं कस्स ? जो सत्तमादो पुढवीदो सव्वलहुं मणुसगइमागदो, सव्वलहुं खवणाए अब्भुद्धिदो, चरिमसमयभवसिद्धियो वि संतो सादवेदगो होहिदि, तस्स चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स उक्कस्सयमेयंतसादं । उक्कस्सयमेयंतमसादं कस्स ? एरिसयस्सेव चरिमभवमणुस्सस्स चरिमे असादबंधे च चरिमसमयअसादबंधयस्स । सो च पुण चरिममयभवसिद्धियट्ठाणे असादवेदओ होदि । उक्कस्सयमणेयंतं सादं कस्स ? चरिमसमयभवसिद्धियस्स सादवेदयस्स । उक्कस्सयमणेयंतं असादं कस्स ? गुणिटकम्मंसियस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स असादवेदयस्स । जहण्णयाणि<sup>१</sup> सामित्ताणि जहा अभवसिद्धियस्स तारिसाणि चैव । एवं सामित्तं गदं ।

पदेसगस्स<sup>२</sup> पमाणाणुगमो—अभवसिद्धियस्स उक्कस्सं पि एयंतसादं एयंतअसादं वा समयपवद्धस्स असंखेज्जपल्लिदोवमवग्गमूलभागो । भवसिद्धियस्स उक्कस्सयमेयंतसादं एयंतअसादं<sup>३</sup> च समयपवद्धा अंतोमुहुत्तमेत्ता, जवमज्झसमयपवद्धा च अवहारकालमेत्ता । एवं पमाणपरूवणा गदा ।

अन्तिम समयमें जघन्य अनेकान्तअसात होता है । इस प्रकार अभव्यसिद्धिक प्रायोग्यके आश्रयसे स्वामित्वका कथन समाप्त हुआ ।

भव्यसिद्धिकप्रायोग्यके आश्रयसे उत्कृष्ट एकान्तसात किसके होता है ? जो सातवीं पृथिवीसे सर्वलघु कालमें मनुष्यगतिमें आकर और सर्वलघु कालमें क्षणामें उद्यत होकर अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक भी होता हुआ सातवेदक होगा उस अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके उत्कृष्ट एकान्तसात होता है । उत्कृष्ट एकान्तअसात किसके होता है ? वह ऐसे ही अन्तिम भववाले ( चरमशरीरी ) मनुष्यके अन्तिम असातबन्धमें अन्तिम समयवर्ती असातबन्धक होनेपर होता है । वह भी अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक स्थानमें असातवेदक होता है । उत्कृष्ट अनेकान्तसात किसके होता है ? वह सातवेदक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके होता है । उत्कृष्ट अनेकान्तअसात किसके होता है ? वह गुणितकर्मांशिक अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक असातवेदकके होता है । जघन्य स्वामित्व जैसे अभव्यसिद्धिकके कहे गये हैं वैसे ही भव्यसिद्धिकके भी हैं । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

प्रदेशाग्रके प्रमाणानुगमकी प्ररूपणा की जाती है—अभव्यसिद्धिकका उत्कृष्ट एकान्तसात और एकान्तअसात समयप्रवद्धके असंख्यात पल्योपम वर्गमूल प्रमाण है । भव्यसिद्धिकके उत्कृष्ट एकान्तसात और एकान्तअसात समयप्रवद्ध अन्तमुहूर्त मात्र हैं । यवमध्यसमयप्रवद्ध अवहारकाल मात्र हैं । प्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई ।

१ ताप्रती 'जहण्णयावि ( णि )' इति पाठः ।

२ ताप्रती 'पदेसस्स' इति पाठः ।

३ ताप्रती 'एयंतं असादं' इति पाठः ।

एत्तो अभवसिद्धियपाओग्गे अप्पावहुअं कायव्वं । तं जहा— सव्वत्थोवमुक्कस्सय-  
मेयंतं सादं । एयंतं असादं असंखेज्जगुणं । अणेयंतं असादं असंखे० गुणं ।

णिरयगईए तिरिक्खेसु तिरिक्खिणीसु मणुस्सेसु मणुस्सिणीसु देवेषु देवीसु च  
एइंदिय-वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिएसु उक्कस्सअप्पावहुअस्स ओघभंगो ।

सव्वत्थोवं जहणयमेयंतसादं । एयंतअसादमसंखेज्जगुणं । अणेयंतसादं असंखे०  
गुणं । अणेयंतअसादं संखे० गुणं । सव्वासु गदीसु सव्वेषु एइंदिएसु ओघभंगो ।  
एवमभवसिद्धियपाओग्गे अप्पावहुअं समत्तं ।

भवसिद्धियपाओग्गे उक्कस्सए अप्पावहुअं । तं जहा— सव्वत्थोवमुक्कस्सयं  
एयंतसादं । एयंतअसादं संखेज्जगुणं । अणेयंतअसादं असंखे० गुणं । अणेयंतसादं  
विसेसाहियं ।

णिरयगईए उक्कस्सयमेयंतसादं थोवं । एयंतअसादं संखेज्जगुणं । अणेयंतसादम-  
संखे० गुणं । अणेयंतअसादं संखे० गुणं । मणुसगइंवज्जासु सव्वासु गदीसु एइंदिएसु  
च णिरयगइभंगो । मणुस्सेसु मणुस्सिणीसु ओघभंगो । जहा अभवसिद्धियपाओग्गे  
जहणयं तथा<sup>१</sup> भवसिद्धियपाओग्गे वि जहणयं कायव्वं ।

यहां अभव्यसिद्धिकप्रायोग्यके आश्रयसे अल्पवहुत्व करते हैं । यथा— उत्कृष्ट एकान्त-  
सात सबसे स्तोक है । एकान्तअसात उससे असंख्यातगुणा है । अनेकान्तअसात असंख्यात-  
गुणा है ।

नरकगतिमें, तिर्यचोंमें, तिर्यचनियोंमें, मनुष्योंमें, मनुष्यनियोंमें, देवोंमें, देवियोंमें,  
तथा एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय जीवोंमें उत्कृष्ट अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा  
ओघके समान है ।

जघन्य एकान्तसात सबसे स्तोक है । एकान्तअसात उससे असंख्यातगुणा है ।  
अनेकान्तसात असंख्यातगुणा है । अनेकान्तअसात संख्यातगुणा है ।

सब गतियों और सब एकेन्द्रियोंमें जघन्य अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा ओघके समान है ।  
इस प्रकार अभव्यसिद्धिक प्रायोग्यके आश्रित अल्पवहुत्व समाप्त हुआ ।

भव्यसिद्धिकप्रायोग्यके आश्रयसे अल्पवहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है—  
उत्कृष्ट एकान्तसात सबसे स्तोक है । एकान्तअसात संख्यातगुणा है । अनेकान्तअसात  
असंख्यातगुणा है । अनेकान्तसात विशेष अधिक है ।

नरकगतिमें उत्कृष्ट एकान्तसात सबसे स्तोक है । एकान्तअसात संख्यातगुणा है ।  
अनेकान्तसात असंख्यातगुणा है । अनेकान्तअसात संख्यातगुणा है । मनुष्यगतिको छोड़कर  
शेष सब गतियोंमें और एकेन्द्रियोंमें नरकगतिके समान प्ररूपणा है । मनुष्यों और मनुष्यनियोंमें  
ओघके समान प्ररूपणा है । जघन्य अल्पवहुत्व जैसे अभव्यसिद्धिकप्रायोग्यके विषयमें किया  
गया है वैसे ही भव्यसिद्धिक प्रायोग्यके विषयमें भी करना चाहिये ।

१ ताप्रतौ 'सव्वेषु इंदिएसु' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'मणुसगईए' इति पाठः ।

३ अप्रतौ 'तम्हा' इति पाठः ।

एत्तो अट्टहि पदेहि अप्पावहुअं कायव्वं । तं जहा— सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं जं सादत्ताए वेदिज्जदि तं थोवं । जं सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । विसेसो पुण संखे० भागो । जमसादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं विससाहियं । जं सादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं । जं सादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादात्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । जमसादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादात्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं ।

अविपच्चिदासु सव्वासु गदीसु एइंदिएसु च ओघमंगो । अध विपच्चिदे<sup>२</sup> कथं भवदि ? णिरयगदीए समुट्टिदं जं णिरयगदीए चैव विपच्चदि<sup>३</sup> एदं विपच्चिदं<sup>४</sup> णाम । एदेण अट्टपदेण विअंचिदस्स अप्पावहुअं वुच्चदे । तं जहा— णिरयगईए ताव जं

यहां आठ पदोंके द्वारा अल्पबहुत्व करते हैं । वह इस प्रकार है— ( १ ) सातस्वरूपसे बांधा गया जो असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होकर सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोत्र है । ( २ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण उसका संख्यातवां भाग है । ( ३ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ४ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । ( ५ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । ( ६ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । ( ७ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होकर सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ८ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है ।

अविपच्चित् अर्थात् विपाक रहित सब गतियों और एकेन्द्रियोंमें प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा आघके समान है ।

शंका— विपच्चित्तमें अल्पबहुत्व किस प्रकार है ?

समाधान— नरकगतिमें उत्पन्न हुआ जो नरकगतिमें ही विपाकको प्राप्त होता है उसका नाम विपच्चित्त है । इस अर्थपदके अनुसार विपच्चित्तका अल्पबहुत्व कहते हैं । वह इस प्रकार है—

( १ ) नरकगतिमें जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ

१ अ-काप्रत्योः 'अधियंचिदासु', ताप्रतौ 'अधियंचिदासु ( अविपच्चिदासु )' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'विअंचिदे', ताप्रतौ 'वियं ( पच्चि ) चिदे' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'विपंचदि' इति पाठः । ४ प्रतिपु 'विपंचिदं' इति पाठः ।



सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं सव्वत्थीवं । जममादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखे० गुणं० । जं सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं असंछुद्धमपडिसंछुद्धमसादत्ताए वेदिज्जदि तं संखे० गुणं । जं सादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखे० गुणं । जं असादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखे० गुणं । जमसादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धमसादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखे० गुणं । एवं णिरयगईए परूवणा गदा ।

एत्तो मणुसगदीए विपच्चिदेणं अप्पावहुअसाहणत्थं एसां परूवणा करिदे । तं जहा— मणुमगईए असादवेदयद्धा<sup>१</sup> थोवा । सादबंधगद्धा संखेज्जगुणा । असादबंधगद्धा संखेज्जगुणा । सादवेदगद्धा<sup>२</sup> संखेज्जगुणा । जहा मणुमगईए तथा णिरयगईए वज्जाणं<sup>३</sup> सव्वेसिं तसाणं । एइंदिएसु सादबंधगद्धा सादवेदगद्धा च दो वि तुल्लाओ थोवाओ । असादवेदगद्धा असादबंधगद्धा च दो वि तुल्लाओ असंखेज्जगुणाओ ।

सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह सबसे स्तोक है । ( २ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ३ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । ( ४ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ५ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ६ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । ( ७ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ८ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । इस प्रकार नरकगतिमें प्रकृत प्ररूपणा समाप्त हुई ।

यहां मनुष्यगतिमें विपच्चित स्वरूपसे अल्पवहुत्वको सिद्ध करनेके लिये यह प्ररूपणा की जाती है । यथा— मनुष्यगतिमें असातवेदककाल स्तोक है । सातबंधककाल संख्यातगुणा है । असातबन्धककाल संख्यातगुणा है । सातवेदककाल संख्यातगुणा है । जिस प्रकार मनुष्यगतिमें यह क्रम है उसी प्रकार नरकगतिको छोड़कर शेष सब त्रसोंके भी यही क्रम समझना चाहिये । एकेन्द्रियोंमें सातबन्धककाल और सातवेदककाल दोनों ही तुल्य व स्तोक हैं । असातवेदककाल और असातबन्धककाल दोनों ही तुल्य व उनसे असंख्यातगुणे हैं ।

१ अ-काप्रत्योः 'सादत्ताए', ताप्रतौ '[ अ- ] सादत्ताए' इति पाठः । २ ताप्रतौ '[ अ ] सादत्ताए', मप्रतौ 'सादत्ताए' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योर्नोपलभ्यते वाक्यमेतत् । ४ अप्रतौ 'अंचिदेण', का-ताप्रत्योः 'विअंचिदेण' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'अप्पावहुअं साहणत्थमेसा' इति पाठः । ६ अप्रतौ 'असादबंधगद्धा' इति पाठः । ७ अप्रतौ 'सादबंधगद्धा' इति पाठः । ८ ताप्रतौ 'णिरयगइवज्जाणं' इति पाठः ।

एदेण अहपदेण मणुसगईए ताव अप्पावहुअं । तं जहा— सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए जं वेदिज्जदि तं थोवं । जमसादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । असादत्ताए जं वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । सादत्ताए जं वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । सादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं संछुद्धं पडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं ।

जहा मणुस्सेसु तहा मणुसिणीसु पंचिदियतिरिक्खिसेसु तिरिक्खिणीसु देवेसु देवीसु च कायव्वं । एइंदिएसु विपच्चिदेणं— जं सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं थोवं । जं सादत्ताए वद्धं अमंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । असादत्ताए वद्धं अमंछुद्धं अपडिसंछुद्धं जं सादत्ताए वेदिज्जदि [ तं ] तत्तियं चैव । जमसादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिसंछुद्धं असादत्ताए

इस अर्थपदके अनुसार मनुष्यगतिमें अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— (१) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोत्र है । (२) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होकर असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (३) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होकर सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (४) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (५) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । (६) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (७) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (८) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है ।

जिस प्रकार मनुष्योंमें अल्पवहुत्व किया गया है उसी प्रकार मनुष्यनियों, पंचेन्द्रिय तिर्यंचों, तिर्यंचनियों, देवों और देवियोंमें भी करना चाहिये । एकेन्द्रियोंमें विपश्चितस्वरूपसे उक्त अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा की जाती है— (१) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोत्र है । (२) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । (३) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह उतना ही है । (४) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त

१ ताप्रतौ 'जं' इत्येतत्पदं नास्ति । २ प्रतिपु 'विअंचिदेण' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'जा' इति पाठः ।

वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए वद्धं संखुद्धं पडिसंखुद्धं सादत्ताए वेदिञ्जदि तमसंखेज्जगुणं । जं सादत्ताए वद्धं संखुद्धं पडिसंखुद्धं असादत्ताए वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं संखुद्धं पडिसंखुद्धं सादत्ताए वेदिञ्जदि तं तत्तियं चैव । जमसादत्ताए वद्धं संखुद्धं पडिसंखुद्धं असादत्ताए वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं ।

वेइंदिएसु विपच्चिदेण<sup>१</sup> । तं जहा— जं सादत्ताए वद्धं संखुद्धं पडिसंखुद्धं असादत्ताए वेदिञ्जदि तं थोवं । जमसादत्ताए वद्धं संखुद्धं पडिसंखुद्धं असादत्ताए वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए वद्धं संखुद्धं पडिसंखुद्धं सादत्ताए वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं संखुद्धं पडिसंखुद्धं सादत्ताए वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए वद्धं असंखुद्धं अपडिसंखुद्धं असादत्ताए वेदिञ्जदि तमसंखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं असंखुद्धं अपडिसंखुद्धं असादत्ताए वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं । जं सादत्ताए वद्धं असंखुद्धं अपडिसंखुद्धं सादत्ताए वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं असंखुद्धं अपडिसंखुद्धं सादत्ताए वेदिञ्जदि तं संखेज्जगुणं । जहा वीइंदिएसु तथा तीइंदिएसु चउरिंदिएसु च । एवं<sup>२</sup> सादासादे त्ति समत्तमणियोगद्दारं ।

होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ५ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । ( ६ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ७ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह उतना मात्र ही है । ( ८ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है ।

द्वीन्द्रियोंमें विपचितस्वरूपसे अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा इस प्रकार है— ( १ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह स्तोत्र है । ( २ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ३ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ४ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त व प्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ५ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । ( ६ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ असातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ७ ) जो सातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होकर सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ( ८ ) जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त व अप्रतिसंक्षिप्त होता हुआ सातस्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । जिस प्रकार द्वीन्द्रियोंमें यह प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार त्रीन्द्रियों और चतुरिन्द्रियोंमें भी समझना चाहिये । इस प्रकार सातासात यह अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

१ प्रतिषु 'विअच्चिदेण' इति पाठः । २ का-ताप्रत्योः 'तीइंदिय-चउरिंदिएसु एवं' इति पाठः ।

## दीह-रहस्साणियोगद्वारं

संभवमरणविवर्जियमहिवांदिय संभवं पयत्तेणं ।

दीह-रहस्साणियोगं वोच्छामि जहाणुपुञ्जीए ॥१॥

दीह-रहस्से त्ति अणियोगद्वारं भण्णमाणे तत्थ दीहं चउच्चिहं पयडिदीहं ठिदिदीहं अणुभागदीहं पदेसदीहं चेदि । तत्थ पयडिदीहं दुविहं मूलपयडिदीहं उत्तरपयडिदीहं चेदि । तत्थ मूलपयडिदीहं दुविहं पयडिद्वाणदीहं एगेगपयडिद्वाणदीहं चेदि । तत्थ पयडिद्वाणं पडुच्च अत्थि दीहं । तं जहा— अड्डसु पयडीसु वज्झमाणियासु पयडिदीहं, तदूणासु वज्झमाणियासु णोपयडिदीहं । संतं पडुच्च अड्डसु पयडीसु संतासु पयडिदीहं, तदूणासु णोपयडिदीहं । उदयं पडुच्च अड्डसु पयडीसु उदिण्णासु पयडिदीहं, तदूणासु णोपयडिदीहं । एगेगपयडिं पडुच्च णत्थि पयडिदीहं ।

उत्तरपयडीसु पंचणाणावरणीय-पचंतराइयाणं णत्थि पयडिदीहं । दंसणा-वरणीयस्स णव पयडीयो वंधमाणस्स अत्थि पयडिदीहं, तदूणं वंधमाणस्स णत्थि पयडिदीहं । एवं संतोदयमस्सिदूण वि वत्तव्वं । वेयणीयस्स वंधोदयमस्सिदूण णत्थि पयडिदीहं । संतं पडुच्च अत्थि, अजोगिचरिमसमए एयपयडिसंतं पेक्खिदूण तस्सेव

जन्म और मरणसे रहित ऐसे सम्भव जिनेन्द्रकी वन्दना करके प्रयत्नपूर्वक आनुपूर्विके अनुसार दीर्घ-ह्रस्वानुयोगद्वारको प्ररूपणा करता हूँ ॥ १ ॥

दीर्घ-ह्रस्वानुयोगद्वारका कथन करनेमें वहाँ दीर्घ चार प्रकारका है—प्रकृतिदीर्घ, स्थितिदीर्घ, अनुभागदीर्घ और प्रदेशदीर्घ । उनमें प्रकृतिदीर्घके दो भेद हैं—मूलप्रकृतिदीर्घ और उत्तर-प्रकृतिदीर्घ । इनमें मूलप्रकृतिदीर्घ दो प्रकारका है—प्रकृतिस्थानदीर्घ और एक-एकप्रकृतिस्थान-दीर्घ । उनमें प्रकृतिस्थानकी अपेक्षा दीर्घ सम्भव है । वह इस प्रकारसे—आठ प्रकृतियोंका बन्ध होनेपर प्रकृतिदीर्घ और उनसे कमका बन्ध होनेपर नोप्रकृतिदीर्घ होता है । सत्त्वकी अपेक्षा आठ प्रकृतियोंके सत्त्वके होनेपर प्रकृतिदीर्घ और उनसे कमका सत्त्व होनेपर नोप्रकृति-दीर्घ होता है । उदयकी अपेक्षा आठ प्रकृतियोंके उदीर्ण होनेपर प्रकृतिदीर्घ और उनसे कमके उदीर्ण होनेपर नोप्रकृतिदीर्घ होता है । एक एक प्रकृतिकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ सम्भव नहीं है ।

उत्तर प्रकृतियोंमें पांच ज्ञानावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंमें प्रकृतिदीर्घ सम्भव नहीं है । दर्शनावरणकी नौ प्रकृतियोंको बांधनेवालेके प्रकृतिदीर्घ है, उनसे कम बांधनेवालेके प्रकृतिदीर्घ नहीं है । इसी प्रकारसे इनके सत्त्व और उदयका आश्रय करके भी कथन करना चाहिये । वेदनीयके बन्ध और उदयका आश्रय करके प्रकृतिदीर्घ नहीं है । सत्त्वकी अपेक्षा उसकी सम्भावना है, क्योंकि, अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें एक प्रकृतिके सत्त्वकी अपेक्षा

दुचरिमादिसमएसु दोपयडिसंतस्स दीहत्तुवलंभादो । मोहणीयस्स संतं पडुच्च अट्ठावीस-  
पयडीयो पयडिदीहं, तदूणं णोपयडिदीहं । वंधं पडुच्च वावीस पयडीयो वंधमाणस्स  
पयडिदीहं, तदूणं वंधमाणस्स णोपयडिदीहं । उदयं पडुच्च दस पयडीयो पयडिदीहं,  
तदूणं णोपयडिदीहं ।

आउअस्स वंधोदयं पडुच्च णत्थि पयडिदीहं । संतं पडुच्च अत्थि, परभवियाउए वट्ठे  
दोष्णं पयडीणं संतदंसणादो । णामस्स एकत्तीसपयडीओ वंधोदयं पडुच्च पयडिदीहं,  
तदूणं णोपयडिदीहं । संतं पडुच्च तिणउदिपयडीयो पयडिदीहं, तदूणं णोपयडिदीहं ।  
गोदस्स वंधोदयं पडुच्च णत्थि पयडिदीहं । संतं पडुच्च अत्थि, अजोगिचरिमसमए  
पयडिसंतं पेक्खिदूणं दुचरिमादिसमयसंतस्स दीहत्तुवलंभादो । एवं पयडिदीहं समत्तं ।

ठिदिदीहं दुविहं मूलपयडिद्विदिदीहं उत्तरपयडिद्विदिदीहं चेदि । तत्थ मूलपयडि-  
द्विदिदीहं बुच्चदे । तं जहा— णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं तीसंसागरो-  
वमकोडाकोडीयो वंधमाणस्स द्विदिदीहं, तदूणं वंधमाणस्स णोद्विदिदीहं । मोहणीयस्स  
सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीयो वंधमाणस्स द्विदिदीहं, तदूणं वंधमाणस्स णोद्विदिदीहं ।  
आउअस्स तेत्तीसंसागरोवमाणि वंधमाणस्स द्विदिदीहं, तदूणं वंधमाणस्स णोद्विदिदीहं ।

उसीके द्विचरम-त्रिचरम आदि समयोंमें वेदनीयकी दो प्रकृतियोंके सत्त्वकी दीर्घता पायी जाती  
है । मोहनीयके सत्त्वकी अपेक्षा अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावालेके प्रकृतिदीर्घ हैं, उनसे कमकी  
सत्तावालेके नोप्रकृतिदीर्घ है । बन्धकी अपेक्षा वाईस प्रकृतियोंको बांधनेवालेके प्रकृतिदीर्घ  
है, उनसे कमको बांधनेवालेके नोप्रकृतिदीर्घ है । उदयकी अपेक्षा दस प्रकृतियोंके उदयवालेके  
प्रकृतिदीर्घ हैं, उनसे कम उदयवालेके नोप्रकृतिदीर्घ है ।

आयु कर्मके बन्ध और उदयकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ नहीं है । किन्तु सत्त्वकी अपेक्षा है,  
क्योंकि, परभाविक आयुका बन्ध होनेपर दो आयु प्रकृतियोंका सत्त्व देखा जाता है । नामकर्मकी  
इकतीस प्रकृतियोंके बन्ध और उदयकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ है, उनसे कमका बन्ध व उदय होनेपर  
नोप्रकृतिदीर्घ है । सत्त्वकी अपेक्षा तेरानवै प्रकृतियोंकी सत्तावालेके प्रकृतिदीर्घ है, उनसे कमकी  
सत्तावालेके नोप्रकृतिदीर्घ है । गोत्रके बन्ध और उदयकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ नहीं है । किन्तु  
सत्त्वकी अपेक्षा उसके प्रकृतिदीर्घ है, क्योंकि, अयोगकेवलीके अन्तिम समय सम्बन्धी प्रकृति-  
सत्त्वकी अपेक्षा करके द्विचरम आदि समय सम्बन्धी सत्त्वके दीर्घता पायी जाती है । इस  
प्रकार प्रकृतिदीर्घ समाप्त हुआ ।

स्थितिदीर्घ दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिस्थितिदीर्घ और उत्तरप्रकृतिस्थितिदीर्घ । उनमें मूल-  
प्रकृतिस्थितिदीर्घकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तराय;  
इनकी तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिको बांधनेवाले स्थितिदीर्घ है, उससे कम स्थितिको  
बांधनेवालेके नोस्थितिदीर्घ है । मोहनीयकी सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम स्थितिको बांधनेवालेके  
स्थितिदीर्घ है, उससे कम बांधनेवालेके नोस्थितिदीर्घ है । आयुकी तेतीस सागरोपम स्थितिको  
बांधनेवालेके स्थितिदीर्घ है, उससे कम स्थितिको बांधनेवालेके नोस्थितिदीर्घ है । नाम व गोत्रकी

१ अप्रतौ 'आउअस्स वंधोदयं पडुच्च' इति पाठः ।

णामा-गोदाणं वीसंसागरोवमकोडाकोडीयो बंधमाणस्स द्विदिदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोद्विदिदीहं । एवमुत्तरपयडीणं पि जाणिदूणं द्विदिदीहपरूवणा कायव्वा ।

अप्पप्पणो उक्कस्साणुभागद्धाणाणि बंधमाणस्स अणुभागदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोअणुभागदीहं । सव्वासिं पयडीणं सग-सगपाओग्गउक्कस्सपदेसे' बंधमाणस्स पदेस-दीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोपदेसदीहं । एवं दीहं ति समत्तं ।

रहस्से पयदं— तं चउव्विहं पयडिरहस्सं द्विदिरहस्सं अणुभागरहस्सं पदेसरहस्सं चेदि । तत्थ पयडिरहस्सं दुविहं मूलपयडिरहस्सं उत्तरपयडिरहस्सं चेदि । मूलपयडिरहस्सं दुविहं पयडिद्धाणरहस्सं एगेगपयडिरहस्सं चेदि । पयडिद्धाणे अत्थि रहस्सं । तं जहा— एगेगपयडिं बंधमाणस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि बंधमाणस्स णोपयडिरहस्सं । संतं पडुच्च चत्तारिसंतकम्मियस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि णोपयडिरहस्सं । एगेगपयडिरहस्सं णत्थि ।

उत्तरपयडीसु पयदं— पंचणाणावरण-पंचंतराइयाणं णत्थि पयडिरहस्सं । दंसणावरणीए चत्तारि पयडीयो बंधमाणस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि बंधमाणस्स णोपयडिरहस्सं । मोहणीए एयं बंधमाणस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि णोपयडिरहस्सं । आउअस्स वंधं पडुच्च पयडिरहस्सं णत्थि, दोण्णमाउआणमकमेण बंधाभावादो । संतं पडुच्च अत्थि पयडिरहस्सं, अवद्धपरभवियाउअम्मि एकस्स चैव आउअस्स उवलंभादो ।

वीस कोडाकोडि सागरोपम स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिदीर्घ है, उससे कम बांधनेवालेके नो-स्थितिदीर्घ है । इसी प्रकार उत्तर प्रकृतियोंके भी स्थितिदीर्घकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये ।

अपने अपने उत्कृष्ट अनुभागस्थानोंको बांधनेवालेके अनुभागदीर्घ है, उनसे कम बांधने-वालेके नोअनुभागदीर्घ है । सब प्रकृतियोंके अपने अपने योग्य प्रदेशोंको बांधनेवालेके प्रदेशदीर्घ है, उससे कम बांधनेवालेके नोप्रदेशदीर्घ है । इस प्रकार दीर्घका कथन समाप्त हुआ ।

ह्रस्वका प्रकरण है— वह प्रकृतिह्रस्व, स्थितिह्रस्व, अनुभागह्रस्व और प्रदेशह्रस्वके भेदसे चार प्रकारका है । उनमें प्रकृतिह्रस्व दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिह्रस्व और उत्तरप्रकृतिह्रस्व । मूल-प्रकृतिह्रस्व दो प्रकारका है— प्रकृतिस्थानह्रस्व और एक-एकप्रकृतिह्रस्व । प्रकृतिस्थानमें ह्रस्व है । यथा— एक एक प्रकृतिको बांधनेवालेके प्रकृतिह्रस्व है, उससे अधिक बांधनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व है । सत्त्वकी अपेक्षा चार कर्मांकी सत्तावालेके प्रकृतिह्रस्व है, उनसे अधिक प्रकृतियोंकी सत्तावालेके नोप्रकृतिह्रस्व है । एक-एकप्रकृतिह्रस्व नहीं है ।

उत्तर प्रकृतियोंका प्रकरण है— पांच ज्ञानावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंके प्रकृति-ह्रस्व नहीं है । दर्शनावरणकी चार प्रकृतियोंको बांधनेवालेके प्रकृतिह्रस्व है, उनसे अधिक बांधनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व है । मोहनीयकी एक प्रकृतिको बांधनेवालेके प्रकृतिह्रस्व है, अधिक बांधनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व है । आयुके बन्धकी अपेक्षा प्रकृतिह्रस्व नहीं है, क्योंकि, आयुकी दो प्रकृतियोंका युगपत् बन्ध सम्भव नहीं है । सत्त्वकी अपेक्षा प्रकृतिह्रस्व सम्भव है, क्योंकि,

१ ताप्रतौ 'पदेसं' इति पाठः । २ अ-काप्रत्यो 'पयं' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'बद्ध-' इति पाठः ।

णामस्स जसकित्ति बंधमाणस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि णोपयडिरहस्सं । गोद-वेयणीयाणं बंधं पडुच्च णत्थि पयडिरहस्सं, उच्च-णीचागोदाणं सादासादवेदणीयाणं च अक्कमेण बंधाभावादो । एवं पयडिरहस्सं गदं ।

ट्टिदिरहस्सं दुविहं मूलपयडिडिदिरहस्सं उत्तरपयडिडिदिरहस्सं चेदि । तत्थ मूलपयडिडिदिरहस्से च पयदं— णाणावरणीय-दंसणावरणीय-मोहणीय-आउअ-अंत-राइयाणं अंतोमुहुत्तट्टिदिं बंधमाणस्स ट्टिदिरहस्सं, तदुवरि बंधमाणस्स णोट्टिदिरहस्सं । वेदणीयस्स वारसमुहुत्तं ट्टिदिं बंधमाणस्स ट्टिदिरहस्सं, तदुवरि णोट्टिदिरहस्सं । णामा-गोदाणमहुत्तं ट्टिदिं बंधमाणस्स ट्टिदिरहस्सं, तदुवरि णोट्टिदिरहस्सं । संतं<sup>१</sup> पडुच्च सव्वासिं पयडीणमेयट्टिदिसंतकम्मस्स ट्टिदिरहस्सं<sup>२</sup>, तदुवरि णोट्टिदिरहस्सं ।

उत्तरपयडीसु पयदं— बंधं पडुच्च ट्टिदिरहस्से भण्णमाणे जहा जीवट्टाणचूलियाए उत्तरपयडीणं जहण्णट्टिदिपरूवणा कदा तहा कायव्वा । संपहि संतं पडुच्च वुच्चदे । तं जहा— पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मा-

परभविक आयुके बन्धसे रहित जीवके एक ही आयुका सत्त्व पाया जाता है । नामकर्मकी यशक्रीतिको बांधनेवालेके प्रकृतिह्रस्व है, उससे अधिक बांधनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व है । गोत्र और वेदनीय कर्मोंके बन्धकी अपेक्षा प्रकृतिह्रस्व नहीं है, क्योंकि, उच्च व नीच गोत्रोंका तथा साता व असाता वेदनीयोंका युगपत् बन्ध सम्भव नहीं है । इस प्रकार प्रकृतिह्रस्व समाप्त हुआ ।

स्थितिह्रस्व दो प्रकारका है— मूलप्रकृतिस्थितिह्रस्व और उत्तरप्रकृतिस्थितिह्रस्व । इनमें मूलप्रकृतिस्थितिह्रस्वका प्रकरण है— ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, आयु और अन्तरायकी अन्तर्मुहूर्त स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिह्रस्व है; इससे अधिक स्थितिको बांधनेवालेके नोस्थितिह्रस्व है । वेदनीयकी वारह मुहूर्त मात्र स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक स्थितिको बांधनेवालेके नोस्थितिह्रस्व है । नाम और गोत्रकी आठ मुहूर्त मात्र स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक बांधनेवालेके नोस्थितिह्रस्व है । सत्त्वकी अपेक्षा सब प्रकृतियोंके एक स्थितिसत्कर्म सहितक स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक सत्कर्मवालेके नोस्थितिह्रस्व है ।

उत्तर प्रकृतियोंका प्रकरण है— बन्धकी अपेक्षा स्थितिह्रस्वका कथन करनेपर जैसे जीवस्थानकी चूलिकामें उत्तर प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका कथन किया गया है वैसे ही यहां उसका कथन करना चाहिये ।

अब सत्त्वकी अपेक्षा स्थितिह्रस्वका कथन करते हैं । यथा— पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, तेरह कषाय,

१ ताप्रतौ 'रहस्सेह च' इति पाठः । २ प्रतिषु 'तं' इति पाठः ।

३ प्रतिषु 'संतकम्मं सेसट्टिदिरहस्सं' इति पाठः ।

मिच्छत्त-तेरसकसाय-इत्थि-णवुंसयवेद-चत्तारिआउअ - सव्वणामपयडि-णीवुच्चागोद-पंचं-तराइयाणमेया द्विदी द्विदिरहस्सं, तदुवरि णोद्विदिरहस्सं । क्रोधसंजलणाए अंतोमुत्तुण-वेमासा द्विदिरहस्सं, तदुवरि णोद्विदिरहस्सं । माणसंजलणाए अंतोमुत्तुणमासो द्विदि-रहस्सं । मायासंजलणाए पक्खो देसुणो द्विदिरहस्सं । पुरिसवेदस्स अट्टासा देसुणा द्विदिरहस्सं । तदुवरि णोद्विदिरहस्सं । छण्णोकसायाणं संखेज्जाणि वस्साणि द्विदिरहस्सं, तदुवरि णोद्विदिरहस्सं । एवं द्विदिरहस्से त्ति समत्तं ।

अणुभागरहस्से पयदं । तं जहा — सव्वासिं पयडीणं अप्पणो जहण्णाणुभागट्ठाणं वंधमाणस्स अणुभागरहस्सं, तदुवरि वंधमाणस्स णोअणुभागरहस्सं ।

पदेसरहस्से पयदं । तं जहा — सव्वासिं पयडीणं सग-सगजहण्णपदेसे वंधमाणस्स पदेसरहस्सं । संतं पडुच्च खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण गुणसेडिणिज्जरं काऊण सव्वजहण्णीकयपदेसस्स पदेसरहस्सं, तदुवरि णोपदेसरहस्सं । एवं दोह-रहस्से त्ति समत्तमणियोगद्वारं ।

श्रीवेद, नपुंसकवेद, चार आयु, सब नामप्रकृतियां, नीच व उच्च गोत्र तथा पांच अन्तराय; इनकी एक स्थिति स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक नोस्थितिह्रस्व है । संज्वलन क्रोधकी अन्तर्मुहूर्त कम दो मास स्थिति स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक नोस्थितिह्रस्व है । संज्वलन मानकी अन्तर्मुहूर्त कम एक मास स्थिति स्थितिह्रस्व है । संज्वलन मायाकी कुछ कम एक पक्ष स्थिति स्थितिह्रस्व है । पुरुषवेदकी कुछ कम आठ वर्ष स्थिति स्थितिह्रस्व है । उससे अधिक स्थिति नोस्थितिह्रस्व है । छह नोकपाथोंकी संख्यात वर्ष स्थिति स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक स्थिति नोस्थितिह्रस्व है । इस प्रकार स्थितिह्रस्व समाप्त हुआ ।

अनुभागह्रस्वका प्रकरण है । यथा— सब प्रकृतियोंके अपने अपने जघन्य अनुभाग-स्थानको बांधनेवालेके अनुभागह्रस्व है, उससे अधिक अनुभागस्थानको बांधनेवालेके नोअनुभागह्रस्व है ।

प्रदेशह्रस्व अधिकारप्राप्त है । यथा— सब प्रकृतियोंके अपने अपने जघन्य प्रदेशोंको बांधनेवालेके प्रदेशह्रस्व है । सत्त्वकी अपेक्षा क्षपितकर्माशिक स्वरूपसे आकर गुणश्रेणि-निर्जराको करके जिसने प्रदेशको सबसे जघन्य कर लिया है उसके प्रदेशह्रस्व है, उससे अधिकके नोप्रदेशह्रस्व है । इस प्रकार दीर्घ-ह्रस्व यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१ प्रतिपु 'तं' इति पाठः ।





## भवधारणीयाणियोगद्वारं

तिहुवणसुरिंदवंदियमहिवंदिय तिहुवणाहिवं सुमदिं ।

भवधारणीयममलं अणियोगं वण्णहस्सामो ॥१॥

भवसंधारणदाएँ ति अणियोगद्वारे अत्थि भवो तिविहो । तं जहा— ओघभवो आदेसभवो भवग्गहणभवो चेदि । तत्थ ओघभवो णाम अट्टकम्मणि अट्टकम्मजणिद-जीवपरिणामो वा । आदेसभवो णाम चत्तारि गइणामाणि तेहिं जणिदजीवपरिणामो वा । सो आदेसभवो चउन्विहो णिरयभवो तिरिक्खभवो मणुसभवो देवभवो चेदि । भवग्गहणभवो णाम गलिदभुज्जमाणाउअस्स उदिण्णअपुव्वाउकम्मस्स पढमसमए उप्पण्ण-जीवपरिणामो वंजणसण्णिदो पुव्वसरीरपरिच्चाएण उत्तरसरीरगहणं वा भवग्गहणभवो णाम । तत्थ भवग्गहणभवेण पयदं— कधममुत्तस्स जीवस्स मुत्तेण सरीरेण सह वंधो ? ण एस दोसो, मुत्तट्टकम्मजणिदसरीरेण अणाइणाँ संवद्धस्स जीवस्स संसारावस्थाए सव्वकालं तत्तो अपुघभूदस्स तस्सबंधेणं मुत्तभावसुवगयस्स सरीरेण सह

तीन लोकके देवों व इन्द्रों वन्दित ऐसे तीन लोकके स्वामी सुमति जिनेन्द्रकी वन्दना करके निर्मल भवधारणीय नामक अनुयोगद्वारका वर्णन करते हैं ॥१॥

‘भवसंधारणता’ इस अनुयोगद्वारमें भव तीन प्रकारका है । यथा— ओघभव, आदेशभव और भवग्रहणभव । इनमें आठ कर्मों अथवा आठ कर्मजनित जीवके परिणामका नाम ओघभव है । चार गतिनामकर्मों और उनसे उत्पन्न जीवपरिणामको आदेशभव कहते हैं । वह आदेश-भव चार प्रकारका है— नरकभव, तिर्यंचभव, मनुष्यभव और देवभव । भुज्यमान आयुको निर्जीर्ण करके जिसके अपूर्व आयु कर्म उदयको प्राप्त हुआ है उसके प्रथम समयमें उत्पन्न ‘व्यंजन’ संज्ञावाले जीवपरिणामको, अथवा पूर्व शरीरके परित्यागपूर्वक उत्तर शरीरके ग्रहण करनेको भवग्रहणभव कहा जाता है । उनमें यहां भवग्रहणभव प्रकरणप्राप्त है—

शंका— अमूर्त जीवका मूर्त शरीरके साथ कैसे बन्ध होता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मूर्त आठ कर्मजनित अनादि शरीरसे संबद्ध जीव संसार अवस्थामें सदा काल उससे अपृथक् रहता है । अतएव उसके सम्बन्धसे मूर्तभावको प्राप्त हुए जीवके शरीरके साथ सम्बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

१ अ-काप्रत्योः ‘सुमदिं’ इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः ‘-भवधारणीय-’, ताप्रती ‘भववा ( घा ) रणीय-’ इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः ‘भवसंधारणदाएँ’, ताप्रती ‘भवसंवा ( घा ) रणदाएँ-’ इति पाठः ।

४ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः ‘अणाइणा अणाइणा’, ताप्रती ‘अणाइणा [ अणाइणा ]’ इति पाठः ।

५ ताप्रती ‘जीवस्स’ इत्येतत्पदं नोपलभ्यते । ६ प्रतिषु ‘तस्स बंधेण’ इति पाठः ।

संबंधस्स विरोहाभावादो । कदमेण धारिज्जदि<sup>१</sup> ? कम्मेण धारिज्जदि । कुदो ? अण्णस्सा-संभवादो । तत्थ णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-मोहणीय-णामा-गोद-अंतराइएहि णो धारिज्जदि<sup>२</sup>, तेसिमण्णत्थ वावारुवलंभादो । केण पुण धारिज्जदि ? आउएणेक्केण चैव धारिज्जदि, अण्णहा आउअकम्मस्स वज्जियकज्जस्स अभावप्पसंगादो । कथमण्णतो<sup>३</sup> उप्पण्णकज्जस्स अण्णं धारयं ? ण एस दोसो, वट्ठीदो<sup>४</sup> समुप्पण्णपईवस्स तेल्लेण<sup>५</sup> धारिज्जमाणस्स उवलंभादो । इहभविण्ण आउएण धरेदि भवं, ण परभविण्णे त्ति भावत्थो । जेण पदेसग्गेण भवं धारेदि तस्स पदेसग्गस्स पदमीमांसा सामित्तमप्पावहुगं च जहा वेयणाए परूविदं तहा परूवेयव्वं । एवं भवधारणीए त्ति समत्तमणियोगहारं ।

शंका— किसके द्वारा वह धारण किया जाता है ?

समाधान— कर्मके द्वारा धारण किया जाता है, क्योंकि, अन्यकी सम्भावना नहीं है ।

उसमें ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, नाम, गोत्र और अन्तरायके द्वारा तो वह धारण नहीं किया जाता है; क्योंकि, इनका व्यापार अन्य कार्योंमें पाया जाता है ।

शंका— तो फिर वह किसके द्वारा धारण किया जाता है ?

समाधान— वह केवल एक आयु कर्मके द्वारा धारण किया जाता है । कारण कि इसके बिना आयु कर्मका अन्य कार्य न रहनेसे उसके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है ।

शंका—अन्यके निमित्तसे उत्पन्न कार्यका अन्य धारक कैसे हो सकता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वत्तीसे उत्पन्न प्रदीप तेलके द्वारा धारण किया जानेवाला देखा जाता है ।

भावार्थ यह है कि इस भव सम्बन्धी आयु कर्मके द्वारा भव धारण किया जाता है, पर-भव सम्बन्धी आयु कर्मके द्वारा नहीं धारण किया जाता । जिस प्रदेशाग्रके द्वारा भवको धारण करता है उस प्रदेशाग्र सम्बन्धी पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा जैसे वेदना अनुयोगद्वारमें की गयी है वैसे करना चाहिये । इस प्रकार भवधारणीय यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१ अ-काप्रत्योः 'कदमेण वारिज्जदि', ताप्रतौ 'कदमेण वा (घा) रिज्जदि' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'वारिज्जदि', ताप्रतौ वा (घा) रिज्जदि' इति पाठः ।

३ 'अ-काप्रत्योः 'कथमण्णतो', ताप्रतौ 'कथमण्णतो ( मण्णदो )' इति पाठः । ४ ताप्रतौ वट्ठी ( ट्ठी ) दो' इति पाठः । ५ अ-काप्रत्योः तुल्लेण', ताप्रतौ 'तु ( ते ) ल्लेण' इति पाठः ।



## पोग्गल-अत्ताणियोगद्वारं

पउमदलगव्वभगउरं देवं पउमप्पहं णमंसित्ता ।

पोग्गलअत्तणिओअं समासदो वण्णइसामो ॥ १ ॥

पोग्गल-अत्ते त्ति अणियोगद्वारे पोग्गलो णिक्खिद्विदव्वो । तं जहा— णामपोग्गलो द्ढवणपोग्गलो दव्वपोग्गलो भावपोग्गलो चेदि चउव्विहो पोग्गलो । णाम-द्ढवणा-पोग्गला सुगमा । दव्वपोग्गलो आगम-णोआगमदव्वपोग्गलभेदेण दुविहो । आगमपोग्गलो सुगमो । णोआगमपोग्गलो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तं चेदि । जाणुग-सरीर-भवियं गदं । तव्वदिरित्तपोग्गलो थप्पो । भावपोग्गलो दुविहो आगम-णोआगम-भावपोग्गलभेएण । आगमो सुगमो । णोआगमभावपोग्गलो रूव-रस-गंध-फासादिभेएण अपोयविहो । तत्थ णोआगमतव्वदिरित्तदव्वपोग्गले पयदं ।

णोगमणयस्स वत्तव्वएण सव्वदव्वं पोग्गलो । आत्तं णाम गृहीतम् । आत्ताः गृहीताः आत्मसात्कृताः पुद्गलाः पुद्गलात्ताः । ते च पुद्गलाः पड्मिः प्रकारैरात्मसात् क्रियन्ते । तं जहा— गहणदो परिणामदो उवभोगदो आहारदो ममत्तीदो परिग्गहादो

पद्मपत्रके गर्भके समान गौर वर्णवाले पद्मप्रभ जिनेन्द्रको नमस्कार करके पुद्गलात्त अनुयोगद्वारका संक्षेपसे वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

‘पुद्गलात्त’ इस अनुयोगद्वारमें पुद्गलका निक्षेप किया जाता है । यथा— नामपुद्गल, स्थापनापुद्गल, द्रव्यपुद्गल और भावपुद्गलके भेदसे पुद्गल चार प्रकारका है । इनमें नाम-पुद्गल और स्थापनापुद्गल सुगम हैं । द्रव्यपुद्गल आगमद्रव्यपुद्गल और नोआगमद्रव्य-पुद्गलके भेदसे दो प्रकारका है । आगमद्रव्यपुद्गल सुगम है । नोआगमद्रव्यपुद्गल तीन प्रकारका है— ज्ञायकशरीर, भावी और तद्व्यतिरिक्त । ज्ञायकशरीर और भावी अवगत हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यपुद्गलको अभी छोड़ते हैं । आगम और नोआगम भावपुद्गलके भेदसे भावपुद्गल दो प्रकारका है । उनमें आगमभावपुद्गल सुगम है । नोआगमभावपुद्गल रूप, रस, गन्ध और स्पर्श आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है । उनमें यहां तद्व्यतिरिक्त नोआगम-द्रव्यपुद्गल प्रकृत है ।

नैगम नयके विषय स्वरूपसे सब द्रव्य पुद्गल हैं । आत्त शब्दका अर्थ गृहीत है । अतएव ‘आत्ताः पुद्गलाः पुद्गलात्ताः’ इस विग्रहके अनुसार यहां पुद्गलात्त पदसे आत्मसात् किये गये पुद्गलोंका ग्रहण है । वे पुद्गल छह प्रकारसे आत्मसात् किये जाते हैं । यथा— ग्रहणसे, परिणामसे, उपभोगसे, आहारसे, ममत्वसे और परिग्रहसे । इनकी विभाषा इस प्रकार है—

१ अ-काप्रत्योः ‘दव्वपोग्गला’ इति पाठः ।

चैदि । विहासा । तं जहा—हत्थेण वा पादेण वा जे गहिदा दंडोदिपोग्गला ते ग्रहणदो अत्ता पोग्गला । मिच्छत्तादिपरिणामेहि जे अप्पणो कदा ते परिणामदो अत्ता पोग्गला । गंध-तंबोलादिया जे उवमोगे अप्पणो कदा ते उवमोगदो अत्ता पोग्गला । असण-पाणादिविहाणेण जे अप्पणो कदा ते आहारदो अत्ता पोग्गला । जे अणुराएण पडिग्गहिया ते ममत्तीदो अत्ता पोग्गला । जे सायत्तो ते परिग्गहादो अत्ता पोग्गला ।

अथवा, पोग्गलाणमत्ता रूव-रस-गंध-फासादिलक्खणं सरूवं पोग्गलअत्ता णाम । तेसिं च अणंतभागवड्ढि-असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढि-अणंतगुणवड्ढि त्ति रूवादीणं छन्विहाओ वड्ढीओ होंति । तासिं परुवणा जहां भावविहाणे कदा तहा कायच्चा । सट्ठाणस्स वि असंखेज्जलोगमेत्ताणि ट्ठाणाणि होंति । तेसिं पि एवं चैव परुवणा कायच्चा । एवं पोग्गलात्ते त्ति समत्तमणियोगद्वारं ।

जो दण्ड आदि पुद्गल हाथ अथवा पैरसे ग्रहण किये गये हैं वे ग्रहणसे आत्त पुद्गल कहलाते हैं । मिथ्यात्व आदि परिणामोंके द्वारा जो पुद्गल अपने किये गये हैं वे परिणामसे आत्त पुद्गल कहे जाते हैं । जो गन्ध और ताम्बूल आदि पुद्गल उपभोग स्वरूपसे अपने किये गये हैं उन्हें उपभोगसे आत्त पुद्गल समझना चाहिये । भोजन-पान आदिके विधानसे जो पुद्गल अपने किये गये हैं उन्हें आहारसे आत्त पुद्गल कहते हैं । जो पुद्गल अनुरागसे गृहीत होते हैं वे ममत्वसे आत्त पुद्गल हैं । जो आत्माधीन पुद्गल हैं उनका नाम परिग्रहसे आत्त पुद्गल हैं ।

अथवा, 'अत्त' का अर्थ आत्मा अर्थात् स्वरूप है । अतएव 'पोग्गलाणं-अत्ता पोग्गल-अत्ता' इस विग्रहके अनुसार पुद्गलात्त (पुद्गलात्मा) पदसे पुद्गलोंका रूप, रस, गन्ध व स्पर्श आदि रूप लक्षण विवक्षित है । उन रूपादिकोंके अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्तगुणवृद्धि ये छह वृद्धियां होती हैं । उनकी प्ररूपणा जैसे भावविधानमें की गयी है वैसे करना चाहिये । स्वस्थानके भी असंख्यात लोक मात्र स्थान होते हैं । उनकी भी इसी प्रकारसे प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार पुद्गलात्त यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१ ताप्रतौ 'पोग्गलत्ते' इति पाठः ।



## निधत्तमनिधत्ताणियोगद्वारं

णामयूण सुपासजिणं तियसेसरवंदियं सयलणाणि ।  
वोच्छं समासदो हं निधत्तमनिधत्तमणियोगं ॥ १ ॥

निधत्तमनिधत्ते त्ति अणियोगद्वारे अत्थि पयडिणिधत्तं द्विदिणिधत्तं अणुभाग-  
निधत्तं पदेसणिधत्तं चेदि । तत्थ अट्टपदं— जं पदेसग्गं निधत्तीकयं उदए दादुं णो  
सकं, अणपयडिं संकामिदुं पि णो सकं, ओकड्ढिदुसुकड्ढिदुं च सकं; एवंविहस्स पदे-  
सग्गस्स निधत्तमिदि सण्णो । इममण्णं साहणं । उवसामयस्स वा खवयस्स वा सव्व-  
कम्माणि अणियट्ठिणां पवडिस्स अणिधत्ताणि, तेषु निधत्तलक्खणाणं सव्वेसिं  
विणासादो । अणंताणुवंधिणो विसंजोएंतस्स अणियट्ठिकरणमिह अणंताणुवंधिचदुक्क-  
मणिधत्तं, सेसाणि कम्माणि निधत्ताणि अणिधत्ताणि च । दंसणंमोहणीयउवसामयस्स  
अणियट्ठिकरणमिह दंसणमोहखवगस्स अणियट्ठिकरणे च दंसणमोहणीयं चैव अणिधत्तं,  
सेसाणि कम्माणि निधत्ताणि अणिधत्ताणि च । एदेण अट्टपदेण चउवीसअणियोगद्वारेहि  
निधत्तस्स अणिधत्तस्स च मूलत्तरपयडीओ अस्सिदूण परूवणा कायव्वा । एवं निधत्त-  
मनिधत्ते त्ति समत्तमणियोगद्वारं ।

त्रिदशेश्वर अर्थात् इन्द्रोसे वन्दित और पूर्णज्ञानी ऐसे सुपार्थ जिनको नमस्कार करके  
मैं संक्षेपमें निधत्तमनिधत्त अनुयोगद्वारका कथन करता हूँ ॥१॥

निधत्तमनिधत्त अनुयोगद्वारमें प्रकृतिनिधत्त, स्थितिनिधत्त, अनुभागनिधत्त और प्रदेश-  
निधत्त हैं । उनमें अर्थपद— जो प्रदेशाग्र निधत्तीकृत है अर्थात् उदयमें देनेके लिये शक्य  
नहीं है, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त करनेके लिये भी शक्य नहीं है, किन्तु अपकर्षण व उत्कर्षण  
करनेके लिये शक्य है; ऐसे प्रदेशाग्रकी निधत्त संज्ञा है । यह अन्य साधन है । अनिवृत्तिकरण  
गुणस्थानमें प्रविष्ट हुए उपशामक अथवा क्षपक जीवके सब कर्म अनिधत्त हैं, क्योंकि, उनमें  
सब निधत्तलक्षणोंका अभाव है । अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करनेवालेके अनिवृत्तिकरणमें  
अनन्तानुबन्धिचतुष्क अनिधत्त और शेष कर्म निधत्त व अनिधत्त भी हैं । दर्शनमोहउपशामकके  
अनिवृत्तिकरणमें और दर्शनमोहक्षपकके अनिवृत्तिकरणमें केवल दर्शनमोहनीय ही अनिधत्त  
हैं, शेष कर्म निधत्त व अनिधत्त भी हैं । इस अर्थपदके अनुसार मूल और उत्तर प्रकृतियोंका  
आश्रय करके निधत्त और अनिधत्तकी प्ररूपणा चौवीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा करना चाहिये ।  
इस प्रकार निधत्तमनिधत्त अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१ देसोवसमणतुल्ला होइ निहत्ती निकाइया नवरं । संकमणं पि निहत्तीए नत्थि सेसाण विवरस्स ॥ क.  
प्र. ५, ७२. २ ताप्रतौ 'इमं सण्णं साहणं' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'खंघयस्स', ताप्रतौ 'खंघ (खव)  
यस्स' इति पाठः । ४ अप्रतौ 'अणिवणत्ताणि', काप्रतौ 'अणिवणत्ताणि' इति पाठः । ५ अप्रतौ 'चदुक्क-  
मणिवण्णसेसाणि', काप्रतौ 'चदुक्कमणिवण्णसेसाणि' इति पाठः । ६ अप्रतौ 'निधत्ताणि अणिधत्ताणि अणिदत्ताणि  
च दंसण-', काप्रतौ 'निधत्ताणि अणिधत्ताणि दंसण-', ताप्रतौ, 'निधत्ताणि [अणिधत्ताणि] अणिधत्ताणि च दंसण'  
इति पाठः । ७ अप्रतौ 'अणिवणत्तं', ताप्रतौ 'अणिध [ ण ] सं' इति पाठः ।

## णिकाचिदमणिकाचिदाणियोगद्वारं

हंसमिव धवलममलं जम्मण-जर-मरणवज्जियं चंदं ।

वोच्छामि भावपणओ णिकाचिदणिकाचिदणियोगं ॥ १ ॥

णिकाचिदमणिकाचिदमिदि अणियोगद्वारे अत्थि पयडिणिकाचिदं ठिदिणिकाचिदं अणुभागणिकाचिदं पदेसणिकाचिदं चेदि । तत्थ अट्टपदं— जं पदेसग्गं ओकड्डिदुं णो सक्कं, उक्कड्डिदुं णो सक्कं, अण्णपयडिं सकामिदुं णो सक्कं, उदए दादुं णो सक्कं, तं पदेसग्गं णिकाचिदं णाम । अणियट्टिकरणं पविट्टस्स सव्वकम्माणि अणिकाचिदाणि, हेट्ठा णिकाचिदाणि अणिकाचिदाणि च । एदेण अट्टपदेण णिकाचिदाणिकाचिदाणं चउवीसअणियोगद्वारेहि परूवणा कायव्वा । उवसंत-णिधत्त-णिकाचिदाणं सण्णियासो । तं जहा— अप्पसत्थउवसामणाए जमुवसंतं पदेसग्गं ण तं णिधत्तं ण तं णिकाचिदं वा । जं णिधत्तं ण तं उवसंतं णिकाचिदं वा । जं णिकाचिदं ण तं उवसंतं णिधत्तं वा ।

एदेसिमप्पावहुअं । तं जहा— जिस्से वा तिस्से वा एकिस्से पयडीए अधापवत्त-संक्रमो थोवो । उवसंतपदेसग्गमसंखेज्जगुणं । णिधत्तमसंखेज्जगुणं । णिकाचिदमसंखेज्जगुणं<sup>१</sup> । एवं णिकाचिदमणिकाचिदं ति समत्तमणियोगद्वारं ।

हंसके समान धवल, निर्मल तथा जन्म जरा और मरणसे रहित ऐसे चन्द्रप्रभ जिनको भावपूर्ण प्रणाम करके मैं निकाचित-अनिकाचित अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करता हूँ ॥१॥

निकाचितमनिकाचित अनुयोगद्वारमें प्रकृतिनिकाचित, स्थितिनिकाचित, अनुभाग-निकाचित और प्रदेशनिकाचित हैं । उनमें अर्थपद— जो प्रदेशाग्र अपकर्षण करनेके लिये शक्य नहीं है, उत्कर्षणके लिये शक्य नहीं है, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त करनेके लिये शक्य नहीं है, तथा उद्यममें देनेके लिये भी शक्य नहीं है; उस प्रदेशाग्रको निकाचित कहते हैं । अनिवृत्ति-करणमें प्रविष्ट हुए जीवके सब कर्म अनिकाचित हैं । उसके नीचे निकाचित भी हैं और अनिकाचित भी हैं । इस अर्थपदके अनुसार निकाचित और अनिकाचितकी चौबीस अनुयोग-द्वारोंके द्वारा प्ररूपणा करना चाहिये ।

उपशान्त, निधत्त और निकाचितका संनिकर्ष इस प्रकार है— अग्रशस्त उपशामना द्वारा जो प्रदेशाग्र उपशमको प्राप्त है वह न निधत्त है और न वह निकाचित भी है । जो प्रदेशाग्रनिधत्त है वह उपशान्त और निकाचित नहीं है । जो प्रदेशाग्र निकाचित है वह उपशान्त और निधत्त नहीं है ।

इनका अल्पबहुत्व इस प्रकार है— जिस किसी भी एक प्रकृतिका अधःप्रवृत्तसंक्रम स्तोक है । उससे उपशान्त प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । उससे निधत्त प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । उससे निकाचित प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । इस प्रकार निकाचितमनिकाचित अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१ ताप्रतौ 'पदेसग्गं तं णिधत्तं णिकाचिदं' इति पाठः । २ अप्रतौ जं णिधत्तं णं तं, काप्रतौ 'जं णिधत्तं ण तं, ताप्रतौ 'जं णिध [ ण ] तं ण तं' इति पाठः । ३ गुणसेट्ठिपएसग्गं थोवं पत्तेगसो असंखगुणं । उवसामणाइ-तिसु वि संक्रमणेहप्पवत्ते य ॥ क. प्र. ५, ७३.

## कम्मट्टिदिअणियोगद्वारं

णमियूण पुप्फयंतं सुरहियधवलिद्धपुप्फअंचियच्चलणं ।

कम्मट्टिदिअणियोगं वोच्छामि समासदो पयत्तेणं ॥ १ ॥

कम्मट्टिदि ति अणियोगद्वारमिहँ भणणमाणे वे उवदेसा होंति— जहण्णुक्कस्स-  
ट्टिदीणं पमाणपरूवणा कम्मट्टिदिपरूवणे ति णागहत्थिखमासमणा भणंति । अज्जमंखु-  
खमासमणा पुण कम्मट्टिदिसंचिदसंतकम्मपरूवणा कम्मट्टिदिपरूवणे ति भणंति । एवं  
दोहि उवएसेहि कम्मट्टिदिपरूवणा कायव्वा । एवं कम्मट्टिदि ति समत्तमणियोगद्वारं ।

सुगन्धित, धवल और समृद्ध पुष्पों द्वारा जिनके चरणोंकी पूजा की गयी है उन पुष्प-  
दन्त जिनेन्द्रको नमस्कार करके मैं प्रयत्नपूर्वक संक्षेपमें कर्मस्थिति अनुयोगद्वारका कथन  
करता हूँ ॥ १ ॥

कर्मस्थिति अनुयोगद्वारके निरूपण करनेमें दो उपदेश हैं— जघन्य और उत्कृष्ट स्थितियों-  
के प्रमाणकी प्ररूपणा कर्मस्थितिप्ररूपणा है, ऐसा नागहस्ती क्षमाश्रमण कहते हैं । परन्तु आर्यमंशु  
क्षमाश्रमण कहते हैं कि कर्मस्थितिसंचित सत्कर्मकी प्ररूपणाका नाम कर्मस्थितिप्ररूपणा है । इस  
प्रकार दो उपदेशोंके द्वारा कर्मस्थितिकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार कर्मस्थिति अनुयोग-  
द्वार समाप्त हुआ ।

१ अ-काप्रत्योः 'अचियच्चलणं', ता-मप्रत्योः 'अंचियच्चलणं' इति पाठः । २ अतोऽग्रे प्रतिष्वन्न 'अहं'  
इत्येतदधिकं पदं समुपलभ्यते । ३ प्रतिपु 'अणियोगद्वारेहि' इति पाठः ।



## पच्छिमक्खंधाणियोगद्वारं

सीयलजिणमहिवंदिय तिहुवणजणसीयलं पयत्तेण ।

वोच्छं समासदो हं जहागमं पच्छिमक्खंधं ॥ १ ॥

पच्छिमभवक्खंधे त्ति अणियोगद्वारे ओघभवो ओदसभवो भवग्गहणभवो चेदि तिविहो भवो । तत्थ भवग्गहणभवेण पयदं । जो चरिमो भवो तम्मिह भवे, तस्स जीवस्स सच्चक्कम्मणं वंधमग्गणा उदयमग्गणा उदीरणमग्गणा संकममग्गणा संतक्कम्ममग्गणा चेदि एदाओ पंच मग्गणाओ पच्छिमक्खंधाणियोगद्वारे कीरंति । पयडि-ट्टिदि-अणुभाग-पदेसग्गमस्सिदूण एदासु पंचसु परूवणासु कदासु तदो पच्छिमे भवग्गहणे सिज्झमाणस्स इमा अण्णा परूवणा कायच्चा । तं जहा—आउअस्स अंतोसुहुत्तसेसे तदो आवज्जिदकरणं करेदि । आवज्जिदकरणे कदे तदो केवलिसमुद्घादं करेदि । पढमसमए दंडं करेदि<sup>१</sup> । तत्थ ट्टिदीए असंखेज्जभागे हणदि । अप्पसत्थाणं कम्मणं अणुभागस्स अणंतभागे हणदि । तदो विदियसमए क्वाडं करेदि । तत्थ सेसियाए ट्टिदीए असंखेज्जभागे हणदि, सेसाणुभागस्स च अणंते भागे हणदि । तदो तदियसमए मंथं<sup>२</sup> करेदि । तत्थ वि ट्टिदि-अणुभागे तहेवै हणदि । तदो चउत्थसमए लोगं पूरेदि<sup>३</sup> । लोगं पूरमाणे वि

तीन लोकके जीवोंको शीतल करनेवाले ऐसे शीतल जिनेन्द्रकी वन्दना करके मैं संक्षेपसे आगमके अनुसार पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करता हूँ ॥ १ ॥

‘पश्चिमभवस्कन्ध’ अनुयोगद्वारमें भव तीन प्रकारका है— ओघ भव, आदेश भव और भवग्रहण भव । इनमें भवग्रहण भव प्रकरणप्राप्त है । जो अन्तिम भव है उस अन्तिम भवमें उस जीवके सब कर्मोंकी बन्धमार्गणा, उदयमार्गणा, उदीरणमार्गणा, संक्रममार्गणा और सत्कर्म-मार्गणा ये पांच मार्गणायें पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वारमें की जाती हैं । प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशाग्रका आश्रय करके इन पांच मार्गणाओंकी प्ररूपणा कर चुकनेपर तत्पश्चात् पश्चिम भवग्रहणमें सिद्धिको प्राप्त होनेवाले जीवकी यह अन्य प्ररूपणा करना चाहिये । यथा—आयुके अन्तमुहूर्त मात्र शेष रह जानेपर तब आवर्जितकरणको करता है । आवर्जितकरणके कर चुकनेपर फिर केवलिसमुद्घातको करता है । प्रथम समयमें वह दण्डसमुद्घातको करता है । उसमें स्थितिके असंख्यात बहुभागको घातता है । अप्रशस्त कर्मोंके अनुभागके अनन्त बहुभागको घातता है । तत्पश्चात् द्वितीय समयमें वह कपाटसमुद्घातको करता है । उसमें शेष स्थितिके असंख्यात बहुभागको घातता है और शेष अनुभागके अनन्त बहुभागको घातता है । पश्चात् तृतीय समयमें मंथसमुद्घातको करता है । उसमें भी स्थिति और अनुभागका उसी प्रकारसे घात करता है । तत्पश्चात् चतुर्थ समयमें लोकको पूर्ण करता है अर्थात् लोकपूरणसमुद्घातको करता है । लोक-

१ अ-काप्रत्योः ‘पच्छिमक्खंधं’, ताप्रतौ ‘पच्छिमक्खंधं ( धं )’ इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः ‘पच्छिमभव-क्खंधेत्ति’, ताप्रतौ ‘पच्छिमभवक्खंधे ( धे ) त्ति’ इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु ‘करंति’ इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः ‘मद्धं’ इति पाठः । ५ प्रतिषु ‘तत्थेव’ इति पाठः । ६ क. पा. सु. पृ. ९००, २-११ ।



ट्टिदि-अणुभागे तहेव हणदि । ठिदिसंतकम्ममंतोमुहुत्तं ठवेदि संखेज्जगुणमाउआदो । एदेसु चदुसु समएसु अप्पसत्थकम्माणमणुभागस्स अणुसमयमोवट्टणा, एयसमइयो च ट्टिदिखंडयस्स घादो । एत्तो सेसाए ट्टिदीए संखेज्जभागे हणदि । सेसस्स अणुभागस्स अप्पसत्थस्स अणंते भागे हणदि । एत्तो पाए ट्टिदिखंडयस्स अणुभागखंडयस्स च अंतोमुहुत्तमुक्कीरणद्दा<sup>१</sup> । एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण वचिजोगं णिरुंभदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण मणजोगं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण उस्सास-णिसासं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण कायजोगं णिरुंभदि<sup>२</sup> । अंतोमुहुत्तं कायजोगं णिरुंभमाणो इमाणि करणाणि करेदि— पढमसमए अपुव्वफहयाइं करेदि पुव्वफहयाणं-हेट्टदो । आदिवग्गणाविभागपडिच्छेदाणं असंखे० भागमोवट्टेदि । जीवपदेसाण-मसंखे० भागमोवट्टेदि । एवमंतोमुहुत्तमपुव्वफहयाणि करेदि । असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए जीवपदेसाणं च असंखे० गुणाए सेडीए । अपुव्वफहयाणि पमाणदो सेडीए असंखेज्जदि-भागो सेडिग्गमूलस्स वि असंखेज्जदिभागो<sup>३</sup> । एवमपुव्वफहयाणि समत्ताणि ।

पूरणसमुद्धात करते समय भी स्थिति और अनुभागको उसी प्रकारसे घातता है । स्थितिसत्कर्म-को अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थापित करता है जो आयुसे संख्यातगुणा होता है । इन चार समयोंमें अप्रशस्त कर्मोंके अनुभागकी प्रतिसमय अपवर्तना और एक समयवाले स्थितिकाण्डकका घात होता है । यहां उतरते समय शेष स्थितिके संख्यात बहुभागका घात करता है । शेष अप्रशस्त अनुभागके अनन्त बहुभागका घात करता है । यहां स्थितिकाण्डक और अनुभागकाण्डकका अन्तर्मुहूर्तवाला उत्कीरणकाल प्रवृत्त होता है । यहां अन्तर्मुहूर्त जाकर वचनयोगका निरोध करता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्तमें मनयोगका निरोध करता है । यहांसे अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्तमें उच्छ्वास-निःश्वासका निरोध करता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर काययोगका निरोध करता है । अन्तर्मुहूर्तमें काययोगका निरोध करता हुआ इन करणोंको करता है— प्रथम समयमें पूर्वस्पर्धकोंके नीचे अपूर्वस्पर्धकोंको करता है । आदिम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपवर्तन करता है । जीवप्रदेशोंके असंख्यातवें भागका अपवर्तन करता है । इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त काल अपूर्वस्पर्धकोंको करता है । इन अपूर्व स्पर्धकोंको असंख्यातगुणहीन श्रेणिके क्रमसं तथा जीवप्रदेशोंके असंख्यातगुणी श्रेणिके क्रमसे करता है । अपूर्वस्पर्धकोंका प्रमाण श्रेणिके असंख्यातवें भाग और श्रेणिवर्गमूलके भी असंख्यातवें भाग मात्र है । इस प्रकार अपूर्वस्पर्धकोंका कथन समाप्त हुआ ।

१ क. पा. सु. पृ. ९०२, १३-१९. २ षट्खंडागम पु. ६, पृ. ४१४; पु. १० पृ. ३२१. एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण वादरकायजोगेण वादरमणजोगं णिरुंभइ । तदो अंतोमुहुत्तेण वादरकायजोगेण वादरवचिजोगं णिरुंभइ । तदो अंतोमुहुत्तेण वादरकायजोगेण वादरउस्सासणिसासं णिरुंभइ । तदो अंतोमुहुत्तेण वादरकायजोगेण तमेव वादरकायजोगं णिरुंभइ । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण सुहुममणजोगं णिरुंभइ । तदो अंतोमुहुत्तेण सुहुमकायजोगेण सुहुमवचिजोगं णिरुंभइ । तदो अंतोमुहुत्तेण सुहुमकायजोगेण सुहुमउस्सासं णिरुंभइ । क. पा. सु. पृ. ९०४, २०-२६, ३ ताप्रतौ 'करेदि, अपुव्वफहयाणं हेट्टदो आदि-' इति पाठः । ४ क. पा. सु. पृ. ९०४, २७-३४.

एत्तो अंतोमुहुत्तं किट्टीयो करेदि । अपुव्वफहयाणमादिवग्गणाए अविभागपडि-  
च्छेदाणमसंखे० भागमोवड्ढेदि । जीवपदेसाणमसंखे० भागमोवड्ढेदि । एत्तो अंतोमुहुत्तं  
किट्टीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए, जीवपदेसाणं च असंखे० गुणाए सेडीए  
ओवड्ढेदि । किट्टीदो किट्टिगुणगारो<sup>१</sup> पलिदो० असंखे० भागो । किट्टीओ<sup>२</sup> सेडीए असंखे०  
भागो, अपुव्वफहयाणं च असंखे० भागो । किट्टिकरणे णिट्ठिदे तदो से काले अपुव्व-  
फहयाणि पुव्वफहयाणि<sup>३</sup> च णासेदि । अंतोमुहुत्तं किट्टिगदजोगो होदि । सुहुमकिरिय-  
मप्पडिवादिज्ञाणं ज्ञायदि । किट्टीणं चरिमसमए असंखे० भागे णासेदि<sup>४</sup> । जोगग्ग्हि  
णिरुद्धग्ग्हि आउअसमाणि कम्मणि करेदि । तदो अंतोमुहुत्तं सेलेसिं पडिवज्जदि,  
समुच्छिण्णकिरियमणियट्ठिज्ञाणं ज्ञायदि । सेलेसिअद्दाए ज्जीणाए सव्वकम्मविप्पमुक्को  
एयसमएण सिद्धिं गच्छदि त्तिं । एवं पच्छिमखंडे<sup>५</sup>त्तिं समत्तमणियोगद्वारं ।

यहांसे लेकर अन्तर्मुहूर्त काल कृष्टियोंको करता है । अपूर्वस्पर्धकोंकी आदिम वर्गणाके  
अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपवर्तन करता है । जीवप्रदेशोंके अविभागप्रति-  
च्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपवर्तन करता है । यहांसे अन्तर्मुहूर्त काल असंख्यातगुणहीन  
श्रेणिके क्रमसे कृष्टियोंको करता है, जीवप्रदेशोंका असंख्यातगुणित श्रेणिके क्रमसे अपवर्तन करता  
है । कृष्टिसे कृष्टिका गुणकार पत्स्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । कृष्टियां श्रेणिके असंख्यातवें  
भाग तथा अपूर्वस्पर्धकोंके भी असंख्यातवें भाग मात्र होती हैं । कृष्टिकरणके समाप्त होनेपर  
तत्पश्चात् अनन्तर समयमें अपूर्वस्पर्धकों और पूर्वस्पर्धकोंको भी नष्ट करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त  
काल कृष्टिगतयोग होता है और सूक्ष्मक्रिया-अप्रतिपातिध्यानको ध्याता है । कृष्टियोंके अन्तिम  
समयमें असंख्यात बहुभागको नष्ट करता है । योगका निरोध हो जानेपर कर्मोंको आयुके समान  
करता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें शैलेश्यभावको प्राप्त करता है और समुच्छिन्नक्रिया-अनिवृत्ति  
ध्यानको ध्याता है । शैलेश्यकालके क्षीण होनेपर सब कर्मोंसे मुक्त होकर एक समयमें सिद्धिको  
प्राप्त होता है । इस प्रकार 'पश्चिमस्कन्ध' यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१ कसायपाहुडसुत्ते तु 'किट्टीदो किट्टिगुणगारो' इत्येतस्य स्थाने 'किट्टीगुणगारो' इति पाठः । २ प्रतिषु  
'किट्टीए' इति पाठः । ३ अप्रती 'अपुव्वफहयाणि अपुव्वफहयाणि' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'णासेडि'  
इति पाठः । ५ क. पा. सु. घ. ९०५, ३६-५२. ६-प्रतिपु 'खंडे' इति पाठः ।



## अप्पाबहुआणियोगद्वारं

णमिऊण वड्ढमाणं अणंतणाणाणुवट्टमाणंमिसिं ।

वोच्छामि अप्पबहुअं अणियोगं बुद्धिसारेण ॥ १ ॥

अप्पाबहुअणियोगद्वारे णागहत्थिभडारओ संतकम्ममग्गणं करेदि । एसो च उवदेसो पवाइज्जदि । संतकम्मं चउव्विहं पयडिसंतकम्मं ठिदिसंतकम्मं अणुभागसंतकम्मं पदेससंतकम्मं चेदि । तत्थ पयडिसंतकम्मं दुविहं मूलपयडिसंतकम्मं उत्तरपयडिसंतकम्मं चेदि । तत्थ मूलपयडीहि सामित्तं णेदूण उत्तरपयडीहि सामित्तं कायव्वं । तं जहा— पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं संतकम्मस्स को सामी ? सव्वो छदुमत्थो । एवं णिहा-पयलाणं । णवरि चरिमसमयछदुमत्थस्स णत्थि संतकम्मं<sup>२</sup> ।<sup>३</sup>थीणगिद्धितिय-संतकम्मस्स को सामी ? सव्वो छदुमत्थो । णवरि खवगस्स अणियट्ठिकरणमंतोमुहुत्तं पविट्ठस्स संतकम्मं वोच्छिण्णं ति कट्टु उवरिमेसु छदुमत्थेसु णत्थि संतकम्मं<sup>४</sup> ।

सादासादाणं संतकम्मं कस्स ? संसारिणो सव्वस्स । णवरि जस्स उदओ णत्थि

अनन्तज्ञानसे अनुवर्तमान वर्धमान ऋषिको नमस्कार करके बुद्धिके अनुसार अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करता हूं ॥ १ ॥

नागहस्ती भट्टारक अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारमें सत्कर्मकी मार्गणा करते हैं । और यह उपदेश प्रवाहस्वरूपसे आया हुआ परंपरागत है । सत्कर्म चार प्रकारका है—प्रकृतिसत्कर्म, स्थितिसत्कर्म, अनुभागसत्कर्म और प्रदेशसत्कर्म । इनमें प्रकृतिसत्कर्म दो प्रकारका है—मूलप्रकृतिसत्कर्म और उत्तरप्रकृतिसत्कर्म । इनमें मूल प्रकृतियोंके साथ स्वामित्वको ले जाकर फिर उत्तर प्रकृतियोंके साथ स्वामित्वकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय प्रकृतियोंके सत्कर्मका स्वामी कौन है ? इनके सत्कर्मके स्वामी सब छद्मस्थ जीव हैं । इसी प्रकार निद्रा और प्रचलाके सत्कर्मके सम्बन्धमें जानना चाहिये । विशेष इतना है कि अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके उनका सत्कर्म नहीं रहता । स्यानगृद्धि आदि तीन दर्शनावरण प्रकृतियोंके सत्कर्मका स्वामी कौन है ? उसके स्वामी सब छद्मस्थ हैं । विशेष इतना है कि अनिवृत्तिकरणमें प्रविष्ट हुए क्षपकके अन्तर्मुहूर्त जाकर इनके सत्कर्मकी व्युच्छित्ति हो जाती है, अतएव इसके आगे छद्मस्थोंके उनका सत्कर्म नहीं रहता ।

साता और असाता वेदनीयका सत्कर्म किसके होता है ? उनका सत्कर्म सब संसारी जीवोंके रहता है । विशेष इतना है कि उक्त दो प्रकृतियोंमेंसे जिसका उदय नहीं है उसका

१ ताप्रतौ 'णाणेण वट्टमाण' इति पाठः । २ छउमत्थंता चउदस दुचरमसमयमि अत्थि दो निहा । क. प्र. ७, ३. ३ ताप्रतौ स्यानगृद्धित्रयसम्बद्धोऽयं सन्दर्भत्सुटितोऽस्ति । ४ खवगानियट्ठिअद्धा संखिज्जा होति अट्ट वि कसाया । निरय-तिरियत्तेरसमां निहा-निहातिगेणुवरिं ॥ क. प्र. ७, ६.

तस्स चरिमसमयभवसिद्धयम्मि णत्थि संतं । मोहणीयसंतकम्मस्स सामित्तं जहा कसायपाहुडे कदं तथा कायव्वं ।

णिरयाउअसंतकम्मं कस्स ? णेरइयस्स वा मणुस-तिरिक्खस्स वा । मणुस-तिरिक्खाउआणं<sup>१</sup> संतकम्मं कस्स ? अण्णदरस्स देवस्स णेरइयस्स तिरिक्खस्स मणुसस्स वा । देवाउअसंतकम्मं कस्स ? देवस्स मणुसस्स तिरिक्खस्स वा<sup>२</sup> ।

णिरयगइ-तिरिक्खगइ-तप्पाओग्गाणं च जादि-आणुपुव्विणामाणं आदाबुज्जोव-धावर-सुहुम-साहारणसरीरणामाणं च संतकम्मस्स सामिओ<sup>३</sup> को होदि ? अण्णदरो जाव णिरय-तिरिक्खणामाणं चरिमसमयसंछोहओ त्ति । देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्विय-सरीर-आहारसरीर-तप्पाओग्गाअंगोवंग-बंधण-संघादाणं च संतकम्मं कस्स ? अण्णदरस्स अणुव्वेह्लिदमंतकम्मियस्स जाव दुचरिमसमयभवमिद्धियो<sup>४</sup> त्ति । मणुमगइ-मणुसगइ-पाओग्गाणुपुव्वि-तप्पाओग्गाजादिणामाणं संतकम्मं कस्स ? अण्णदरस्स अणुव्वेह्लिदसंत-कम्मियस्स जाव चरिमसमयभवसिद्धयो त्ति । णवरि मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जाव [दु]चरिमसमयभवसिद्धियो त्ति । ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं तप्पाओग्ग-

सत्कर्म अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकके नहीं रहता । मोहनीयके सत्कर्मके स्वामित्वका कथन जैसे कपायप्राभृतमें किया गया है वैसे ही यहां भी करना चाहिये ।

नारकायुका सत्कर्म किसके होता है ? उसका सत्कर्म नारकी, मनुष्य और तिर्यंचके होता है । मनुष्यायु और तिर्यंगायुका सत्कर्म किसके होता है ? उनका सत्कर्म अन्यतर देव, नारकी, तिर्यंच और मनुष्यके होता है । देवायुका सत्कर्म किसके होता है ? उसका सत्कर्म देव, मनुष्य और तिर्यंचके हाता है ।

नरकगति, तिर्यंचगति और तत्प्रायोग्य जाति एवं आनुपूर्वी नामकर्मोंका तथा आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीर नामकर्मोंके सत्कर्मका स्वामी कौन होता है ? उसका स्वामी नरकगति और तिर्यंचगति नामकर्मोंके अन्तिम समयवर्ती संक्रामक तक अन्यतर जीव होता है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर व आहारकशरीर तथा उनके योग्य आंगोपांग, बंधन और संघात नामकर्मोंका सत्कर्म किसके होता है ? उनका सत्कर्म सत्कर्मकी उद्वेलना न करनेवाले द्विचरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तक अन्यतर जीवके रहता है । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और तत्प्रायोग्य जाति नामकर्मका सत्कर्म किसके होता है ? उनका सत्कर्म सत्कर्मकी उद्वेलना न करनेवाले अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तक अन्यतर जीवके रहता है । विशेष इतना है कि मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका सत्कर्म द्विचरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तक रहता है । औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर तथा तत्प्रायोग्य

१ मणुयगइ-जाइ-तस-त्रायरं च पजत्त-सुभग-आएज्जं । जसकित्ती तित्थयरं वेयणि-उच्चं च मणुयाणं ॥ भव-चरिमस्समयम्मि उ तम्मग्गिहसमयम्मि सेसाउ । आहारग-तित्थयरा भजा दुसु नत्थि तित्थरं ॥ क. प्र. ७, ८-९. २ ताप्रती [ णिरयगइ ] तिरिक्ख [ गइ ]-मणुस्साउआणं इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'संतकम्मस्स' इति पाठः । ४ बद्धाणि ताव आऊणि वेइयाइं ति जा कसिणं ॥ क. प्र. ७, ३. ५ प्रतिषु 'सामित्तओ' इति पाठः । ६ अ-काप्रत्योः 'सिद्धया' इति पाठः ।

अंगोवंग-बंधण-संधादाणं च छसंठाण-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-उव-घाद-परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ - अपज्जत्त - पत्तेयसरीर-थिराथिर - सुहासुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोदाणं संतकम्भं कस्स ? चरिमसमय-भवसिद्धियं मोत्तूण संसारत्थस्स सव्वस्सं । तस-वादर-पज्जत्त-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-उच्चागोदाणं संतकम्भं कस्स ? अण्णदरस्स संसारावत्थस्स । तित्थयरणामाए संतकम्भं कस्स ? सम्माइड्डिस्स मिच्छाइड्डिस्स वा जाव चरिमसमयभवसिद्धियादो त्ति । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो अंतरं, णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं, सण्णियासो च सामित्तादो साहेदूण भाणियव्वो ।

एत्तो अप्पाबहुअं दुविहं सत्थाण-परत्थाणप्पावहुअमेएण । तत्थ परत्थाणप्पावहु-अम्मि पयदं— सव्वत्थोवा आहारसरीरसंतकम्मिया । सम्मत्तसंतकम्मिया असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स संतकम्मिया विसेसाहिया । मणुस्साउअस्स संतक० असंखे० गुणा । णिरयाउअस्स संतक० असंखे० गुणा । देवाउअस्स संतक० असंखे० गुणा । देवगइ-णामाए संतक० असंखे० गुणा । णिरयगइणामाए संतक० विसेसा० । वेउन्वियसरीर-णामाए संतक० विसेसा० । उच्चागोदस्स संतक० अणंतगुणा । मणुसगइणामाए संतक०

आंगोपांग, बन्धन और संघातका, छह संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण और नीचगोत्र; इनका सत्कर्म किसके होता है ? इनका सत्कर्म अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिकको छोड़कर सब संसारी जीवोंके रहता है । त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्रका सत्कर्म किसके होता है ? इनका सत्कर्म अन्यतर संसारी प्राणीके होता है । तीर्थंकर नाम-कर्मका सत्कर्म किसके होता है ? उसका सत्कर्म अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तक सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टिके भी होता है । इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल, अन्तर और संनिकर्षका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये ।

यहां अल्पबहुत्व दो प्रकारका है— स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व । उनमें परस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है— आहारशरीरसत्कर्मिक जीव सबसे स्तोक हैं । सम्यक्त्व-प्रकृतिसत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । मनुष्यायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नारकायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवगति नामकर्मके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नरकगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । वैश्रवणशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । उच्चगोत्रके सत्कर्मिक अनन्तगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । तिर्यगायुके

विसे० । तिरिक्खाउअस्स संतक० विसे० । अणंताणुवंधिचउक्कसंतक० विसे० । मिच्छत्त-  
संतक० विसे० । अड्ढकसायसंतक० विसे० । तिरिक्खगइ-णिदाणिदा-पयलापयला-थीण-  
गिद्धीणं च संतक० तुल्ला विसेसाहिया । णवुंसयवेदस्स संतक० विसे० । इत्थिवेयस्स  
संतक० विसे० । छण्णोकसायाणं संतक० विसे० । पुरिसवेस्स संतक० विसे० । कोह-  
संजलणाए संतक० विसे० । माण० विसे० । माया० विसे० । लोभ० विसे० । णिदा-  
पयलाणं संतक० विसे० । पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं संतक० तुल्ला  
विसेसाहिया । ओरालिय-तेजा-कम्मइय-अजसकित्ति-णीचागोदाणं संतक० विसे० ।  
असादस्स संतक० विसे० । सादस्स संतक० विसे० । जसकित्तीए संतकम्मिया विसे-  
साहिया । एवं ओघमप्पावहुअदंडओ समत्तो ।

णिरयगईए सञ्चत्थोवा मणुस्साउअस्स संतकम्मिया । आहारसरीरणामाए संत-  
कम्मिया असंखेज्जगुणा । सम्मत्तस्स संतक० असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स संतक०  
विसेसा० । तिरिक्खाउअस्स संतक० असंखे० गुणा । अणंताणुवंधीणं संतक० संखे०  
गुणा । मिच्छत्तस्स संतक० विसे० । सेसाणं कम्माणं सञ्चेसिं संतकम्मिया तुल्ला  
विसेसा० । एवं णिरयगइदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगदीए आहारसंतकम्मिया थोवा । सम्मत्तसंतक० असंखे० गुणा ।

सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्कके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । मिथ्यात्वके  
सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । आठ कपायोंके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । तिर्यचगति,  
निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्थानगृद्धिके सत्कर्मिक तुल्य व विशेष अधिक हैं । नपुंसकवेदके  
सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । स्त्रीवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । छह नोकपायोंके सत्कर्मिक  
विशेष अधिक हैं । पुरुषवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । संज्वलन क्रोधके सत्कर्मिक विशेष  
अधिक हैं । संज्वलन मानके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । संज्वलन मायाके सत्कर्मिक विशेष  
अधिक हैं । संज्वलन लोभके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । निद्रा और प्रचलाके सत्कर्मिक विशेष  
अधिक हैं । पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायके सत्कर्मिक तुल्य व विशेष  
अधिक हैं । औदारिक, तैजस व कामंण शरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्रके सत्कर्मिक तुल्य व  
विशेष अधिक हैं । असातावेदनीयके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । सातावेदनीयके सत्कर्मिक  
विशेष अधिक हैं । यशकीर्तिके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । इस प्रकार ओघअल्पबहुत्व  
दण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें मनुष्यायुके सत्कर्मिक सबसे स्तोक हैं । आहारकशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक  
असंख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके सत्कर्मिक  
विशेष अधिक हैं । तिर्यगायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्टयके सत्कर्मिक  
संख्यातगुणे हैं । मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । शेष सब कर्मोंके सत्कर्मिक तुल्य  
व विशेष अधिक हैं । इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यचगतिमें आहारसत्कर्मिक स्तोक हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे

सम्मामिच्छत्तसंतक० विसेसा० । मणुस्साउअस्स संतक० असंखे० गुणा । गिरयाउअस्स संतक० असंखे० गुणा । देवाउअस्स संतक० असंखे० गुणा । देवगदीए संतक० असंखे० गुणा । गिरियगदीए संतक० विसे० । वेउव्वियसरीरसंतक० विसे० । उच्चागोदसंतक० अणंतगुणा । मणुसगइसंतक० विसे० । अणंताणुवंधीणं संतक० विसे० । मिच्छत्तस्स संतक० विसे० । सेसाणं कम्माणं संतकम्मिया तुल्ला विसेसाहिया । एवं तिरिक्खगइ-दंडओ समत्तो ।

तिरिक्खजोणिणीसु सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए संतकम्मिया । सम्मत्तसंतक० असं० गुणा । सम्मामिच्छत्तसंत० विसे० । मणुस्साउअस्स संत० असं० गुणा । गिरयाउसंतक० असं० गुणा । देवाउ० संत० असंखे० गुणा । अणंताणुवं० संत० सं० गुणा । सेसाणं कम्माणं संतकम्मिया तुल्ला विसे० । एवं तिरिक्खजोणिणीसु दंडओ समत्तो ।

मणुसगदीए सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए संतक० । गिरयाउअस्स संतक० संखे० गुणा । देवाउअस्स संतक० संखे० गुणा । सम्मत्तस्स संतक० असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स संतक० विसे० । देवगइणामाए संतक० असंखे० गुणा । गिरियगइणामाए संतक० विसे० । वेउव्वियसरीरणामाए संतक० विसे० । तिरिक्खाउअस्स संतक० असंखे० गुणा । अणंताणुवंधिसंतक० संखे० गुणा । मिच्छत्तसंतक० विसे० । सेस-  
हैं । सम्यग्मिध्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । मनुष्यायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नारकायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवगतिके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नरकगतिके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । उच्चगोत्रके सत्कर्मिक अनन्तगुणे हैं । मनुष्यगतिके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्टयके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । मिध्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । शेष कर्मोंके सत्कर्मिक तुल्य व विशेष अधिक हैं । इस प्रकार तिर्यंगाति-दण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यच योनिमतियोंमें आहारशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक सबसे स्तोक हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिध्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । मनुष्यायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नारकायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्टयके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । शेष कर्मोंके सत्कर्मिक तुल्य व विशेष अधिक हैं । इस प्रकार तिर्यचयोनिमतियोंमें प्रकृत दण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें आहारशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक सबसे स्तोक हैं । नारकायुके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । देवायुके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिध्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । देवगति नामकर्मके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नरकगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । तिर्यगायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्टयके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । मिध्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । शेष

मोघं । णवरि जसकित्तीए सह मणुस्साउअ-मणुस्सगईओ वत्तच्चाओ । एवं मणुसगइ-दंडओ समत्तो ।

मणुसिणीसु सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए संतकम्मिया । सम्मत्तस्स संतक० संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छत्तस्स संतक० विसे० । णिरयाउअस्स संतक० असंखे० गुणा । देवाउअस्स संतक० संखे० गुणा । तिरिक्खाउअस्स संतक० संखे० गुणा अणंताणुवंधीणं संतक० संखे० गुणा । मिच्छत्तसंतक० विसे० । सेसं मणुसगइभंगो । णवरि छण्णोकसाएहि सह पुरिसवेदो भाणियव्वो । एवं मणुसिणीसु दंडओ समत्तो ।

जहा णिरयगदीए तहा देवगदीए । असण्णीसु सव्वत्थोवा आहारसरीरणामाए संतकम्मिया । सम्मत्तस्स संतक० असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तसंतक० विसे० । मणुस्साउअस्स संतक० असंखे० गुणा । णिरयाउअस्ससंतक० असंखे० गुणा । देवाउअस्स संतक० असंखे० गुणा । देवगइणामाए संतक० संखे० गुणा । णिरयगइणामाए संतक० विसे० । वेउव्वियसरीरणामाए संतक० विसे० । उच्चागोदसंतक० विसे० । मणुसगइणामाए संतक० विसेसा० । सेसाणं पयडीणं संतकम्मिया तुल्ला विसेसाहिया । एवं असण्णिणदंडओ समत्तो ।

भुज्जगारो पदणिक्खेवो वड्ढी च णत्थि । पयडिट्ठाणसंतकम्मं मोहणीयस्स जहा

कथन ओघके समान है । विशेष इतना है कि यशकीर्तिके साथ मनुष्यायु और मनुष्यगतिको भी कहना चाहिये । इस प्रकार मनुष्यगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यनियोंमें आहारकशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक सबसे स्तोक हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । नारकायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । तिर्यागायुके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । अनन्तानुबन्धचतुष्टयके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । शेष कर्मोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । विशेष इतना है कि छह नोकषायोंके साथ पुरुषवेदको कहना चाहिये । इस प्रकार मनुष्यनियोंमें दण्डक समाप्त हुआ ।

जैसे नरकगतिमें प्ररूपणा की गई है वैसे ही देवगतिमें भी जानना चाहिये । असंज्ञी जीवोंमें आहारशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक सबसे स्तोक हैं । सम्यक्त्वके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । मनुष्यायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नारकायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवगति नामकर्मके सत्कर्मिक संख्यातगुणे हैं । नरकगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । उच्चगोत्रके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । मनुष्यगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । शेष प्रकृतियोंके सत्कर्मिक तुल्य व विशेष अधिक हैं । इस प्रकार असंज्ञिदण्डक समाप्त हुआ ।

भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि नहीं है । मोहनीयका प्रकृतिस्थानसत्कर्म जैसे कपायप्राभृतमें



कसायपाहुडे कदं तथा कायव्वं । सेसाणं<sup>१</sup> कम्माणं पयडिड्डाणमग्गणा सुगमा । एवं पयडिसंतकम्ममग्गणां समत्ता ।

एत्तो ङ्घिसंतकम्मं दुविहं मूलपयडिड्ढिसंतकम्मं उत्तरपयडिड्ढिसंतकम्मं चेदि । तत्थ मूलपयडिड्ढिसंतकम्मं सुगमं । उत्तरपयडिड्ढिसंतकम्मं अद्वाच्छेदो । तं जहा—मदिआवरणस्स उक्कस्सङ्घिसंतकम्मं तीसं सागरोवमकोडाकोडीयो पडिबुण्णाओ<sup>२</sup>, जाओ ङ्घिदीयो वि एत्तियाओ चैव । जहा मदिआवरणस्स उक्कस्सङ्घिसंतकम्मस्स अद्वाच्छेदो कदो तथा सेसचटुणाणावरण-चटुदंसणावरण-पंचंतराइयाणं कायव्वो । पंचणं दंसणावरणीयाणं जङ्घिसंतकम्मं तीसं सागरोवमकोडाकोडीयो पडिबुण्णाओ<sup>३</sup>, जाओ ङ्घिदीओ समऊणाओ । सादस्स जङ्घिसंतकम्मं जाओ ङ्घिदीओ च तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ आवलियूणाओ । जङ्घिसंतकम्मं<sup>४</sup> जाओ ङ्घिदीओ च असादस्स तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ पडिबुण्णाओ ।

मिच्छत्तस्स जङ्घिसंतकम्मं जाओ ङ्घिदीओ च सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ पडिबुण्णाओ । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ अंतोमुहुत्तूणाओ । सोलसणं कसायाणं चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ पडिबुण्णाओ । णवणं णोकसायाणं

क्रिया गया है वैसे करना चाहिये । शेष कर्मोंकी प्रकृतिस्थानमार्गणा सुगम है । इस प्रकार प्रकृतिसत्कर्ममार्गणा समाप्त हुई ।

यहां स्थितिसत्कर्म दो प्रकारका है—मूलप्रकृतिस्थितिसत्कर्म और उत्तरप्रकृतिस्थितिसत्कर्म । इनमें मूलप्रकृतिस्थितिसत्कर्म सुगम है । उत्तरप्रकृतिस्थितिसत्कर्ममें अद्वाच्छेदका कथन इस प्रकार है—मतिज्ञानावरणका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म सम्पूर्ण तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण तथा जस्थितियां भी इतनी मात्र ही हैं । जैसे मतिज्ञानावरणके उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्मका अद्वाच्छेद किया है वैसे ही शेष चार ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंका भी करना चाहिये । निद्रादिक पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका जस्थितिसत्कर्म परिपूर्ण तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम तथा जस्थितियां एक समय कम तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र हैं । सातावेदनीयका जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियां आवलीसे हीन तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण हैं । असातावेदनीयका जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियां परिपूर्ण तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण है ।

मिथ्यात्वका जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियां परिपूर्ण सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र हैं । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतियोंका जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियां अन्तर्मुहूर्त कम सत्तर कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण हैं । सोलह कपायोंका जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियां परिपूर्ण चाळीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण हैं । नौ नोकपायोंका जस्थितिसत्कर्म और

१ अ-काप्रत्योः 'विसेसाणं', ताप्रतौ '[ वि ] सेसाणं' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'पयडिसंकम ( संत ) मग्गणा' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'पडिबुण्णाओ' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'पडिबुण्णाओ' इति पाठः । ५ प्रतिषु 'जङ्घिदीओ' इति पाठः ।

जं द्विदिसंतकम्मं जाओ द्विदीओ च चत्तालीसं सागरोवमकोडाकोडीओ आवलियूणाओ ।

देव-णिरयाउआणं जं द्विदिसंतकम्मं तेत्तीसं सागरोवमाणि पुव्वकोडीए तिभाएण-  
ब्भहियाण, जाओ द्विदीओ तेत्तीसं सागरोवमाणि पडिवुण्णाणि । मणुम-तिरिक्खाउआणं  
जं द्विदिसंतकम्मं तिण्णिणपलिदोवमाणि पुव्वकोडीए तिभाएणब्भहियाणि, जाओ द्विदीओ  
तिण्णिणपलिदोवमाणि पडिवुण्णाणि ।

णिरयगइ - तिरिक्खगइ - पंचिंदियजादि - ओरालिय-वेउव्विय - तेजा-कम्मइयसरीर-  
तप्पाओग्गअंगोवंग - वंधण-संघाद - असंपत्तसेवट्टसंघडण - हुंडसंठाण-वण्ण-गंध-रस-फास-  
णिरयाणुपुव्वि - अगुरुगलहुग - उवघाद-परघाद-आदावुज्जोव-उस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-  
तस-थावर-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर<sup>१</sup> - अथिर - असुभ-दुभग - दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-  
णिमिणणामाणं जं द्विदिसंतकम्मं जाओ द्विदीओ च वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ  
पडिवुण्णाओ । णवरि णिरयगइ-तिरिक्खगइणामाणं तप्पाओग्गजादि-आणुपुव्विणामाणं  
च एइंदिय-ओरालिय-तप्पाओग्गअंगोवंग-बंधण-संघादणामाणं असंपत्तसेवट्टसंघडण-  
आदाव-थावरणामाणं च उक्कस्सयं जं द्विदिसंतकम्मं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ पडि-  
वुण्णाओ, जाओ द्विदीओ समळणाओ । मणुमगइ-जादि-पंचसंठाण-पंचसंघडण-थिर-  
सुह-सुहग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं जं द्विदिसंतकम्मं जाओ द्विदीओ च वीसं सागरो-  
वमकोडाकोडीओ आवलियूणाओ । मणुस्साणुपुव्वि-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं जं द्विदि-

जस्थितियां आवलीसे हीन चालीस कोडाकोडि सागरोपम प्रमाणं हैं ।

देवायु और नारकायुका जस्थितिसत्कर्म पूर्वकोटिके तृतीय भागसे अधिक तीस सागरोपम  
तथा जस्थितियां परिपूर्ण तेत्तीस सागरोपम मात्र हैं । मनुष्यायु और तिर्यगायुका जस्थितिसत्कर्म  
पूर्वकोटिके त्रिभागसे अधिक तीन पल्योपम तथा जस्थितियां परिपूर्ण तीन पल्योपम प्रमाण हैं ।

नरकगति, तिर्यगगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर  
तथा तत्प्रायोग्य आंगोपांग, बन्धन व संघात, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, हुण्डसंस्थान, वर्ण,  
गन्ध, रस, स्पर्श, नारकानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, अभ्रशस्त  
विहायोगति, त्रस, स्थावर, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय,  
अयशकीर्ति और निर्माण; इत्त नामकर्मोका जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियां परिपूर्ण वीस  
कोडाकोडि सागरोपम मात्र हैं । विशेषता इतनी है कि नरकगति व तिर्यगगति नामकर्मो, तत्प्रायोग्य  
जाति एवं आनुपूर्वी नामकर्मो, तथा एकेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर एवं तत्प्रायोग्य अंगोपांग,  
बन्धन और संघात नामकर्मोका, तथा असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, आतप और स्थावर नामकर्मोका  
उत्कृष्ट जस्थितिसत्कर्म परिपूर्ण वीस कोडाकोडि सागरोपम तथा जस्थितियां एक समय कम वीस  
कोडाकोडि सागरोपम मात्र हैं । मनुष्यगति, तत्प्रायोग्य जाति, पांच संस्थान, पांच संहनन; स्थिर,  
शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिका जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियां आवलीसे हीन वीस  
कोडाकोडि सागरोपम मात्र हैं । मनुष्यानुपूर्वी, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीरका जस्थिति-

१ अ-काप्रत्योः 'पुव्वकोडीओ' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'वादर-पत्तेयसरीर' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'जाओ द्विदीओ जं द्विदिसंतकम्मं च' इति पाठः ।

संतकम्मं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ<sup>१</sup> आवलिऊणाओ, जाओ द्विदीओ वीसं सागरो-  
वमकोडाकोडीओ समयाहियाए आवलियाए ऊणाओ । जहा मणुसगइणामाए तहा  
पसत्थविहायगइणामाए । आहारणामाए अंतोकोडाकोडीओ<sup>२</sup>, जाओ द्विदीओ सम-  
ऊणाओ । एवं तित्थयरस्स वि ।

उच्चागोदस्स जाओ द्विदीओ जंङ्घिदिसंतकम्मं च वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ  
आवलिऊणाओ । णीचागोदस्स वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ पडिवुण्णाओ । एवमुक्कस्स-  
द्विदिसंतकम्मं समत्तं ।

जहण्णाद्विदिसंतकम्मपमाणाणुगमो । तं जहा— पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-  
सादासाद-सम्मत्त-लोहंसंजलण-दोवेद-आउचउक्क-मणुसगइ-जादि-तस-वादर-पज्जत्त-जस-  
फित्ति-सुभग-आदेज्ज-तित्थयर-पंचंतराइय-उच्चागोदाणं जहण्णाद्विदिसंतकम्मं एयसमय-  
द्विदियं एया द्विदी । पंचदंसणावरण-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-वारसकसायाणं जहण्णयं  
द्विदिसंतकम्मं दुसमयकालद्विदियं एया द्विदी । मायासंजलणाए जं द्विदिसंतकम्मं अद्ध-  
मासो दोहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणो, जाओ द्विदीओ अंतोमुहुत्तूणअद्धमासमेत्ताओ ।  
साणसंजलणाए जं द्विदिसंतकम्मं मासो<sup>३</sup> दोहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणओ,<sup>४</sup> जाओ

सत्कर्म आवलीसे हीन वीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम तथा जस्थितियां एक समय अधिक आवलीसे  
हीन वीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण हैं । प्रशस्त विहायोगति नामकर्मका अद्धाच्छेद मनुष्यगति  
नामकर्मके समान है । आहारशरीर नामकर्मका जस्थितिसत्कर्म अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम  
और जस्थितियां एक समय कम अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपम मात्र हैं । इसी प्रकार तीर्थंकर  
प्रकृतिकी भी प्ररूपणा है ।

उच्चगोत्रकी जस्थितियां और जस्थितिसत्कर्म आवलीसे हीन वीस कोड़ाकोड़िसागरोपम  
मात्र हैं । नीचगोत्रका जस्थितिसत्कर्म और जस्थितियां परिपूर्ण वीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम  
मात्र हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थितिसत्कर्मप्रमाणानुगमकी प्ररूपणा करते हैं । यथा— पांच ज्ञानावरण, चार  
दर्शनावरण, सांता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, संज्वलन लोभ, दो वेद, चार आयुक्र्म,  
मनुष्यगति, तत्प्रायोग्य जाति, त्रस, वादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, तीर्थंकर, पांच  
अन्तराय और उच्चगोत्र; इनका जघन्य स्थितिसत्कर्म एक समय स्थिति रूप एक स्थिति मात्र है ।  
पांच दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और वारह कपायोंका जघन्य स्थितिसत्कर्म दो  
समय काल स्थितिवाली एक स्थिति रूप है । संज्वलन मायाका जघन्य स्थितिसत्कर्म एक समय  
कम दो आवलियोंसे हीन आधा मास तथा जस्थितियां अन्तर्मुहूर्त कम आधा मास प्रमाण हैं ।  
संज्वलन मानका जघन्य स्थितिसत्कर्म एक समय कम दो आवलियोंसे हीन एक मास तथा

१ ताप्रतावतोऽग्नेऽग्निम 'कोडाकोडीओ' पर्यन्तः पाठस्त्वुदितोऽस्ति । २ ताप्रतावतोऽग्ने 'जाओ द्विदीओ' ।  
जहा मणुसगइणामाए तहा पसत्थविहायगइणामाए अंतोकोडाकोडीओ' इत्यधिकः पाठः समुपलभ्यते । ३ अ-  
काप्रत्योः 'दोहि', ताप्रतौ 'दोहि (लोह)' इति पाठः । ४ अप्रतौ 'दो मासा' इति पाठः । ५ अ-ताप्रत्योः  
'ऊणाओ' इति पाठः ।

ट्टिदीओ अंतोमुहुत्तूणमासमेत्ताओ' । कोधसंजलणाए जं ट्टिदिसंतकम्मं दो मासा दोहि आवलियाहि समऊणाहि ऊणा, जाओ ट्टिदीओ अंतोमुहुत्तूणदोमाममेत्ताओ । पुरिस-वेदस्स जं ट्टिदिसंतकम्मं अट्टवस्साणि दोहि आवलियाहि सम [ऊणाहि] ऊणाणि, जाओ ट्टिदीओ अट्टवस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि । छण्णोकसायाणं जाओ ट्टिदीओ जंट्टिदीओ च संखेजाणि वस्साणि ।

णिरयगइ-तिरिक्खगइ-देवगइ-तप्पाओग्गजादि - आणुपुच्चि - मणुसगइ- पाओग्गाणु-पुच्चि-पंचसरीर-त्तदंगोवंग-बंधण-संघाद-छसंठाण- छसंघडण-वण्ण-गंध- रस-फास-अगुरुग-लहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ - थावर- सुहुम-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर - सुहासुह -दूभग - दुस्सर-अणादेज्ज-अजसक्कित्ति- णिमिण - णीचा-गोदाणं जहण्णयं ट्टिदिसंतकम्मं दुसमयकालट्टिदियं एकस्से ट्टिदीए । एवं पमाणाणु-गमो समत्तो ।

सामित्तं । तं जहा— पंचण्णं णाणावरणीयाणं उक्कस्सट्टिदिसंतकम्मं कस्स ? णियमा उक्कस्सियं ट्टिदिं बंधमाणस्स । एवं दंसणावरणचउक्कस्स । पंचण्णं दंसणा-वरणीयाणं उक्कस्सियं ट्टिदिसंतकम्मं कस्स ? जो उक्कस्सियं ट्टिदिं बंधदि जो च समऊणं वेदयदि । सादस्स उक्कस्सट्टिदिसंतकम्मं कस्स ? असादउक्कस्सट्टिदिसंतकम्मं

जस्थितियां अन्तर्मुहूर्त कम एक मास मात्र हैं । संज्वलन क्रोधका जघन्य स्थितिसत्कर्म एक समय कम दो आवलियोंसे हीन दो मास तथा जस्थितियां अन्तर्मुहूर्त कम दो मास मात्र हैं । पुरुषवेदका जघन्य स्थितिसत्कर्म एक समय कम दो आवलियोंसे हीन आठ वर्ष और जस्थितियां अन्तर्मुहूर्त कम आठ वर्ष मात्र हैं । छह नोकपायोंकी जस्थितियां और जघन्य स्थितिसत्कर्म संख्यात वर्ष मात्र है ।

नरकगति, तिर्यंगति, देवगति तथा तत्प्रायोग्य जाति व आनुपूर्वी नामकर्म, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, पांच शरीर, तीन आंगोपांग, पांच बन्धन, पांच संघात, छह संस्थान, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, दो विहायोगतियां, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भंग, दुःस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण और नीचगोत्र; इनका जघन्य स्थितिसत्कर्म दो समय काल स्थितिवाली एक स्थिति रूप है । इस प्रकार प्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

स्वामित्व अधिकार प्राप्त है । यथा— पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह नियमसे उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवालेके होता है । इसी प्रकार चार दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म जानना चाहिये । निद्रा आदि पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? जो जीव इनकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधता है और जो एक समय कम उसका वेदन करता है । सातावेदनीयका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह असातावेदनीयके उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्मका संक्रम करनेवाले सातावेदक

संक्रामंतस्स सादावेदयस्स । असादस्स उक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? असादवेदयस्स तस्सेव उक्कस्सियं<sup>१</sup>ट्ठिदिं वंधमाणस्स ।

मिच्छत्त-सोलसकसायाणं उक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? पयडिवेदयस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं वंधमाणस्स । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं उक्कस्सियं ट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? उक्कस्सियाए सम्मत्तट्ठिदीए सह पढमसमयसम्माइट्ठिस्स । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-तिण्णिवेदाणमुक्कस्सियं ट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? अप्पिदपयडिं वंधंतो वेदयंतस्स कसायाण-मुक्कस्सट्ठिदिं णोकसायाणं संक्रामंतस्स ।

णिरय-देवाउआणं उक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? पुच्चकोडीए तिभागस्स पढमसमए उक्कस्सट्ठिदिं वंधमाणस्स । जाओ ट्ठिदीओ उक्कस्सियाओ कस्स ? उक्कस्सियं ट्ठिदिं वंधिदूण जाव पढमसमयतब्भवत्थो त्ति ताव । एवं मणुस्स-तिरिक्खाउआणं ।

णिरयगइणामाए उक्कस्सियं ट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? उक्कस्सियं ट्ठिदिं वंधमाणयस्स<sup>२</sup> । उक्कस्सियाओ जाओ ट्ठिदीओ<sup>३</sup> कस्स ? तस्स चैव वा, उक्कस्सियं ट्ठिदिं वंधिदूणववण्ण-पढमसमए णेरइयस्स वा । तिरिक्खगइणामाए उक्कस्सियं ट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? देवस्स णेरइयस्स वा उक्कस्सियं ट्ठिदिं वंधमाणयस्स । जाओ ट्ठिदीओ उक्कस्सियाओ<sup>४</sup> कस्स ?

जीवके होता है । असातावेदनीयका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह उसकी ही उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले असातावेदक जीवके होता है ।

मिथ्यात्व और सोलह कषायोंका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह विवक्षित प्रकृतिका वेदन करते हुए उसकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले जीवके होता है । सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थितिके साथ प्रथम समयवर्ती सम्यग्दृष्टिके होता है । हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और तीन वेद; इनका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह विवक्षित प्रकृतिको बांधकर वेदन करते हुए कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिको नोकषायोंमें संक्रान्त करनेवालेके होता है ।

नारकायु और देवायुका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह पूर्वकोटिके तृतीय भागके प्रथम समयमें उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवालेके होता है । उनकी उत्कृष्ट जस्थितियां किसके होती हैं ? वे उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर जब प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ होता है तब होती हैं । इसी प्रकार मनुष्यायु और तिर्यगायुकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

नरकगति नामकर्मका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह उसकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवालेके होता है । उसकी उत्कृष्ट जस्थितियां किसके होती हैं ? उसके ही होती हैं, अथवा उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें नारकी जीवके होती हैं । तिर्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? उसकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले देव अथवा नारकीके उसका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म होता है । उसकी उत्कृष्ट जस्थितियां

१ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्सियं' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'कस्स वंधमाणयस्स' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्यो-  
नोपलभ्यते पदमिदम् । ४ ताप्रतौ 'उक्कस्सियाओ ट्ठिदीओ जाओ' इति पाठः ।

तस्स चेव वा देवस्स उक्कस्सियं द्विदिं वंधिदूण एइंदिएसु उववण्णस्स पढमसमय-  
तब्भवत्थस्स वा, देव-णेरइयपच्छायदपंचिंदियतरिक्खस्स वा । मणुसगइणामाए उक्कस्सियं  
द्विदिसंतकम्मं कस्स ? मणुसगइं वंधमाणस्स उक्कस्सद्विदिं<sup>१</sup> संकामयस्स मणुस्सस्स ।  
उक्कस्सियाओ जाओ द्विदीओ कस्स ? एरिसस्स चेव मणुस्सस्स<sup>२</sup> । देवगइणामाए उक्कस्सियं<sup>३</sup>  
द्विदिसंतकम्मं कस्स ? देवगइं वंधमाणस्स उक्कस्सद्विदिसंकामगस्स । जाओ द्विदीओ  
एरिसस्सेव ।

एवं जादिणामाणं । वेउव्वियसरीरणामाए गिरयगइभंगो । णवरि समउणं ण  
होदि । ओरालियसरीरणामाए तप्पाओग्गबंधण-संघादाणं च तिरिक्खगइभंगो ।  
ओरालियसरीरअंगोवंग-असंपत्तसेवट्टसंघडणाणं उक्कस्सियं द्विदिसंतकम्मं कस्स ? णेरइयस्स  
सणक्कुमार-माहिंददेवस्स वा उक्कस्सियं द्विदि वंधमाणस्स । एदेसिं दोण्णं कम्माणं  
जाओ द्विदीओ उक्कस्सियाओ कस्स ? एदेसिं चेव देव-णेरइयाणं तप्पच्छायदस्स पढम-  
समयतिरिक्खस्स वा । पंचसंठाण-पंचसंघडणाणं उक्कस्सियं द्विदिसंतकम्मं कस्स ? एदासिं  
पयडीणं वंधमाणस्स उक्कस्सियंद्विदिसंकमे वट्टमाणस्स । जाओ द्विदीओ उक्कस्सियाओ कस्स ?  
एदस्स चेव । णवरि अप्पिदपयडीए वेदओ कायव्वो । हुंडसंठाणस्स उक्कस्सद्विदिसंतकम्मं

किसके होती हैं ? वे उसके ही होती हैं, उत्कृष्ट स्थितिको बांधकर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए प्रथम  
समयवर्ती तद्भवस्थ देवके होती हैं, अथवा देव-नारकियोंमेंसे पीछे आये हुए पंचेन्द्रिय तिर्यचके  
होती हैं । मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह मनुष्यगतिको  
बांधते हुए उसकी उत्कृष्ट स्थितिको संक्रान्त करनेवाले मनुष्यके होता है । उसकी उत्कृष्ट  
जस्थितियां किसके होती हैं ? वे ऐसे ही मनुष्यके होती हैं । देवगति नामकर्मका उत्कृष्ट स्थिति-  
सत्कर्म किसके होता है ? देवगतिको बांधते हुए उसकी उत्कृष्ट स्थितिका संक्रम करनेवालेके  
उसका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म होता है । ऐसे ही जीवके उसकी उत्कृष्ट जस्थितियां होती हैं ।

इसी प्रकारसे जाति नामकर्मोंकी प्ररूपणा करना चाहिये । वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी  
प्ररूपणा नरकगतिके समान है । विशेष इतना है कि यहां एक समय कम नहीं है । औदारिक-  
शरीर और तत्प्रायोग्य बन्धन व संघात नामकर्मोंकी प्ररूपणा तिर्यगतिके समान है । औदारिक-  
शरीरांगोपांग और असंप्राप्तास्पटिकासंहननका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह  
उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले नारकी अथवा सनत्कुमार व माहेन्द्र कल्पवासी देवके होता है ।  
इन दोनों कर्मोंकी उत्कृष्ट जस्थितियां किसके होती हैं ? वे इन्हीं देव-नारकियोंके अथवा उनमेंसे  
पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती तिर्यचके होती हैं । पांच संस्थान और पांच संहनन नामकर्मोंका  
उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह इन प्रकृतियोंको बांधते हुए उत्कृष्ट स्थितिसंक्रममें  
वर्तमान जीवके होता है । उनकी उत्कृष्ट जस्थितियां किसके होती हैं ? वे इसी जीवके होती  
हैं । विशेष इतना है कि विवक्षित प्रकृतिका वेदक करना चाहिये । हुण्डकसंस्थानका उत्कृष्ट

१ ताप्रतौ 'उक्कस्सियं द्विदिं' इति पाठः । २ अ-काप्रतौ: 'मणुस्स' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'उक्कस्सियं'  
इति पाठः ।

कस्स ? गेरइयंतिरिक्ख-मणुसस्स उत्तरविउव्विददेवस्स वा ।

सञ्चारिं धुवबंधिपयडीणं णाणावरणभंगो । तिण्णमाणुपुव्विणामाणं उक्कस्सयं  
ट्टिदिसंतकम्मं कस्स ? आणुपुव्विणामाए अप्पिदाए बंधमाणस्स उक्कस्सट्टिदिसं कामयस्स ।  
जाओ ट्टिदीओ उक्कस्सियाओ कस्स ? एदस्स चैव । णवरि तिरिक्खाणुपुव्विणामाए  
उक्कस्सियं ट्टिदिं बंधमाणस्स । णिरयाणुपुव्विणामाए उक्कस्सयं ट्टिदिसंतकम्मं कस्स ?  
उक्कस्सयं ट्टिदिं बंधमाणस्स । जाओ ट्टिदीओ कस्स ? एदस्स चैव विग्गहगदीए  
वट्टमाणस्स थढमसमयणेरइयस्स वा । उस्सास-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणमुक्कस्सयं  
ट्टिदिसंतकम्मं जाओ ट्टिदीओ च कस्स ? जस्स वा तस्स वा तसकाइयस्स उक्कस्सट्टिदिं  
बंधमाणस्स ।

उज्जोवणामाए उक्कस्सयं जं ट्टिदिसंतकम्मं जाओ ट्टिदीओ च कस्स ? देवस्स  
उज्जोवणामाए वेदयस्स उक्कस्सट्टिदिं बंधमाणस्स । आदाव-थावरणामाए उक्कस्सयं  
जं ट्टिदिसंतकम्मं कस्स ? सोहम्मदेवस्स ईसाणदेवस्स वा उक्कस्सयं ट्टिदिं बंधमाणस्स ।  
जाओ ट्टिदीओ उक्कस्सियाओ कस्स ? एरिसस्सेव । णवरि थावरणामाए देवपच्छायद-  
पढमसमयएइंदियस्स सोहम्मीसाणदेवस्स वा । एदेण वीजपदेण सेसपयडीणं पि सामित्तं

स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और उत्तर शरीरकी विक्रियायुक्त देवके होता है ।

सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । तीन आनुपूर्वी नामकर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह विविक्षित आनुपूर्वी नामकर्मको बांधनेवाले उत्कृष्ट स्थिति संक्रामकके होता है । इनकी उत्कृष्ट जस्थितियां किसके होती हैं ? वे इसीके होती हैं । विशेष इतना है कि तिर्यगानुपूर्वी नामकर्मकी उत्कृष्ट जस्थितियां उसकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले जीवके होती हैं । नारकानुपूर्वी नामकर्मका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह उसकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवालेके होता है । उसकी जस्थितियां किसके होती हैं ? वे विग्रहगतिमें वर्तमान इसीके अथवा प्रथम समयवर्ती नारकी जीवके होती हैं । उच्छ्वास, त्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीर नामकर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म और जस्थितियां किसके होती हैं ? वे इनकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले जिस किसी भी त्रसकायिक जीवके होती हैं ।

उद्योत नामकर्मका उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्म और जस्थितियां किसके होती हैं ? वे उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले उद्योत नामकर्मके वेदक देवके होती हैं । आतप और स्थावर नामकर्मका उत्कृष्ट जस्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह इनकी उत्कृष्ट स्थितिको बांधनेवाले सौधमें और ऐशान कल्पवासी देवके होता है । इनकी उत्कृष्ट-जस्थितियां किसके होती हैं ? वे ऐसे ही जीवके होती हैं । विशेष इतना है कि स्थावर नामकर्मकी जस्थितियां देवोंमेंसे पीछे आये हुए प्रथम समयवर्ती एकेन्द्रिय जीवके अथवा सौधर्म-ऐशान कल्पवासी देवके होती हैं । इस वीज-

१ ताप्रतौ 'उक्कस्सट्टिदिसंतकम्मं गेरइय' इति पाठः । २ काप्रतौ 'उक्कस्सियं ट्टिदिसंतकम्मं' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्सयं ट्टिदिं बंधयस्स' इति पाठः ।

वत्तञ्चं । एवमुक्कस्सट्ठिदिसंतकम्मसामित्तं समत्तं ।

जहण्णट्ठिदिसंतकम्मसामित्तं कस्सामो । तं जहा— पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं जहण्णयं ट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? चरिमसमयछदुमत्थस्स । णिद्दा-पयलाणं जह० कस्स ? दुचरिमसमयछदुमत्थस्स । थीणगिद्वितियस्स जह० कस्स ? अणियट्ठि-करणे वट्टमाणस्स थीणगिद्वितियं संछुहिय समऊणावलियमइक्कंतस्स ।

सादासादाणं जहण्णट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? चरिमसमयभवसिद्वियस्स अप्पिद-पयडिवेदयस्स । मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-वारसकसायाणं जह० कस्स ? अप्पिदकम्मेषु संछुद्धेषु समऊणावलियमइक्कंतस्स । सम्मत्त-लोहसंजलणाणं जहण्णट्ठिदिसंतकम्मं कस्स ? खवयस्स सम्मत्त-लोहसंजलणाणं चरिमसमयवेदस्स । तिण्णिसंजलण-पुरिसवेदाणं जह० कस्स ? खवयस्स संछुद्धासु पयडीसु समऊणदोऔवलियं गदस्स । इत्थि-णवुंसय-वेदाणं जह० कस्स ? खवयस्स चरिमसमयवेदयस्स ।

मणुस-तिरिक्खाउआणं जह० कस्स ? जस्स णत्थि तदाउअवंधो<sup>१</sup> तस्स चरिम-

पदसे शेष प्रकृतियोंके भी स्वामित्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति-सत्कर्मका स्वामित्व समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थितिसत्कर्मके स्वामित्वका कथन करते हैं । यथा— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ जीवके होता है । निद्रा और प्रचलाका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह द्विचरम समयवर्ती छद्मस्थ जीवके होता है । स्नानगृद्धि आदि तीनका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह अनिवृत्तिकरणमें वर्तमान जीवके होता है जिसने कि स्नानगृद्धिचक्रिका निक्षेप करके एक समय कम आवली कालको विताया है ।

साता और असाता वेदनीयका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह विवक्षित प्रकृतिका वेदन करनेवाले अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक जीवके होता है । मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और वारह कृपायोंका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? विवक्षित कर्मोंके निक्षिप्त हो जानेपर जिसने एक समय कम आवली कालको विता दिया है उसके उनका जघन्य स्थितिसत्कर्म होता है । सम्यक्त्व प्रकृति और संज्वलन लोभका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह ऐसे क्षपक जीवके होता है जो सम्यक्त्व और संज्वलन लोभका अन्तिम समयवर्ती वेदक होता है । शेष तीन संज्वलन और पुरुषवेदका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह उस क्षपक जीवके होता है जो इन प्रकृतियोंके निक्षिप्त हो जानेपर एक समय कम दो आवलियोंको विता चुका है । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह उस क्षपक जीवके होता है जो इनका अन्तिम समयवर्ती वेदक है ।

मनुष्यायु और त्रियगायुका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? जिसके उन आयुओंका वन्ध नहीं हो रहा है उस अन्तिम समयवर्ती तद्भवस्थके उक्त दोनों आयु कर्मोंका जघन्य

१ अप्रती 'समऊणादो' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'तदाअवंधो' इति पाठः ।



समयतवभवत्थस्स । देव-णिरयाउआणं जहण्णट्टिदिसंतकम्मं कस्स ? चरिमसमय-  
तवभवत्थस्स ।

णिरयगइ - तिरिक्खगइ - तप्पाओग्गजादि - णिरयगइ - तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चि-  
आदावुज्जीव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणं जह० कस्स ? संछोहणादो समयूणमावलिय  
गदस्स । मणुसगइ-पंचिदियजादि-तस-चादर-पज्जत्त-जसकित्ति- सुभग-आदेज्ज- तित्थयर-  
णामाणं जह० कस्स ? चरिमसमयभवसिद्धियस्स । सेसाणं णामाणं णीचागोदस्स य  
जहण्णट्टिदिसंतकम्मं कस्स ? दुचरिमसमयभवसिद्धियस्स । उच्चागोदस्स चरिमसमय-  
भवसिद्धिया सामी । एवं सामित्तं समत्तं ।

एयजीवेण कालो अंतरं, णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं सण्णियासो च  
सामिच्चादो साहेदूण भाणियव्वो ।

एत्तो अप्पावहुअं । तं जहा— उक्कस्सए पयदं । मणुस्साउअस्स तिरिक्खाउअस्स  
य जाओ ट्टिदीओ ताओ थोवाओ । जं ट्टिदिसंतकम्मं विसेप्पाहियं । देव-णिरयाउआणं  
जाओ ट्टिदीओ संखेज्जगुणाओ । जं ट्टिदिसंतकम्मं विसेप्पाहियं । आहारसरीरणामाए  
जाओ ट्टिदीओ ताओ संखे० गुणाओ । जं ट्टिदिसंतकम्मं विसेप्पाहियं । देवगइणामाए  
जाओ ट्टिदीओ ताओ संखे० गुणाओ । जं ट्टिदिसं० विसे० । मणुसगइ-उच्चागोद-जसक्कित्तीणं

स्थितिसत्कर्म होता है । देवायु और नारकायुका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह अन्तिम  
समयवर्ती तद्भवस्थ देव और नारकीके होता है ।

नरकगति, तिर्यग्गति, तत्प्रायोग्य जाति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी,  
आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीरका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ?  
इनका निक्षेप करनेके पश्चात् जिसने एक समय कम आवली कालको विता दिया है उसके उनका  
जघन्य स्थितिसत्कर्म होता है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस, चादर, पर्याप्त, यशकीर्ति, सुभग,  
आदेय और तीर्थकर इन नामकर्मोंका जघन्य स्थितिसत्कर्म किसके होता है ? वह अन्तिम  
समयवर्ती भव्यसिद्धिक जीवके होता है । शेष नामकर्मोंका और नीचगोत्रका जघन्य स्थिति-  
सत्कर्म किसके होता है ? वह द्विचरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक जीवके होता है । उच्चगोत्रके  
जघन्य स्थितिसत्कर्मके स्वामी अन्तिम समयवर्ती भव्यसिद्धिक जीव होते हैं । इस प्रकार स्वामित्व  
समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा काल और अन्तर तथा नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल,  
अन्तर और संनिकर्षका कथन स्वामित्वसे सिद्ध करके करना चाहिये ।

वहां अल्पबहुत्व । यथा— उत्कृष्ट अल्पबहुत्वका प्रकरण है । मनुष्यायु और तिर्यगायुकी  
जस्थितियां स्तोक हैं । उनका जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । देवायु और नारकायु-  
की जस्थितियां संख्यातगुणो हैं । जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । आहारशरीर नामकर्मकी  
जस्थितियां संख्यातगुणो हैं । जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । देवगति नामकर्मकी  
जस्थितियां संख्यातगुणो हैं । जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । मनुष्यगति, उच्चगोत्र और

जाओ ङ्खिदीओ जं' ङ्खिदिसंतकम्मं च तत्तियं चैव । गिरयगइ-तिरिक्खगइ-ओरा-  
लियसरीरणं जाओ ङ्खिदीओ ताओ विसेसाहियाओ । एदेसिं चैव कम्माणं जं ङ्खिदि-  
संतकम्मं तेजा-कम्मइय-अजसगित्ति-णीचागोदाणं जाओ ङ्खिदीओ जं ङ्खिदिसंतकम्मं च  
विसे० । सादस्स जाओ ङ्खिदीओ जं ङ्खिदिसंतकम्मं च दो वि तुल्लाणि विसेसाहियाणि । पंचण्हं  
दंसणावरणीयाणं जाओ ङ्खिदीओ ताओ विसेसाहियाओ । एदेसिं जं ङ्खिदिसंतकम्मं सेसाणं  
तीसियाणं जाओ ङ्खिदीओ जं ङ्खिदिसंतकम्मं च तुल्लं विसेसाहियं । णोकसायाणं  
जाओ ङ्खिदीओ जं ङ्खिदिसंतकम्मं च विसे० । सोलसकसायाणं जाओ ङ्खिदीओ जं ङ्खिदि-  
संतकम्मं च तुल्लं विसे० । सम्मामिच्छत्तस्स जाओ ङ्खिदीओ ताओ विसे० । एदस्स  
चैव जं ङ्खिदिसंतकम्मं सम्मत्तस्स जाओ ङ्खिदीओ जं ङ्खिदिसंतकम्मं विसे० । मिच्छत्तस्स  
जाओ ङ्खिदीओ जं ङ्खिदिसंतकम्मं विसेसाहियं । एवमोघुक्कस्स ङ्खिदिसंतकम्मदंडओ  
समत्तो । एदमणुमाणियगदीसु णेयव्वं ।

जहण्णाए पयदं । तं जहा— पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-सादासाद-सम्मत्त-  
लोहसंजलण-इत्थि-णवुंमयवेद-आउचउक्क-मणुसगइ-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं च  
जहणियाओ जाओ ङ्खिदीओ जं ङ्खिदिसंतकम्मं तुल्लं थोवं । पंचदंसणावरणीय-मिच्छत्त-  
सम्मामिच्छत्त-वारसकसाय-तिण्णिगइ-पंचसरीर-अजसकित्ति-णीचागोदाणं जाओ ङ्खिदीओ

यशकीर्तिकी जस्थितियां और जस्थितिसत्कर्म उतना मात्र ही है । नरकगति, तिर्यग्गति और  
औदारिकशरीरकी जो स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । इन्हीं कर्मोंका जस्थितिसत्कर्म तथा  
तैजसशरीर, कर्मणशरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी जस्थितियां एवं जस्थितिसत्कर्म विशेष  
अधिक है । सातावेदनीयकी जस्थितियां और जस्थितिसत्कर्म दोनों ही तुल्य व विशेष अधिक  
हैं । पांच दर्शनावरणीय प्रकृतियोंकी जो स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । इनका जस्थिति-  
सत्कर्म तथा शेष तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम स्थितिवाले कर्मोंकी जस्थितियां और जस्थितिसत्कर्म  
तुल्य व विशेष अधिक है । नोकपायोंकी जस्थितियां और जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है ।  
सोलह कपायोंकी जस्थितियां और जस्थितिसत्कर्म तुल्य व विशेष अधिक है । सम्यग्मिथ्यात्वकी  
जो स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । इसीका जस्थितिसत्कर्म और सम्यक्त्व प्रकृतिकी  
जस्थितियां व जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । मिथ्यात्वकी जस्थितियां और जस्थितिसत्कर्म विशेष  
अधिक है । इस प्रकार ओष उत्कृष्ट स्थितिसत्कर्मदण्डक समाप्त हुआ । इसी प्रकारसे अनुमानित  
गतियोंमें ले जाना चाहिये ।

अब जघन्य अल्पबहुत्वका प्रकरण है । यथा— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण,  
साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, संबलन लोभ, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, चार आयु, मनुष्यगति,  
यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य जस्थितियां और जस्थितिसत्कर्म तुल्य  
व स्तोक है । पांच दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, वारह कषाय, तीन गति, पांच  
शरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्रकी जस्थितियां उतनी मात्र ही हैं । इनका जस्थितिसत्कर्म

१ का-ताप्रत्योः 'जसकित्तिणं जं' इति पाठः ।

तत्तियाओ चैव । जं द्विदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । मायासंजलणाए जाओ द्विदीओ ताओ असंखे० गुणाओ । जं द्विदिसंत० विसे० । माणसंजलणाए जाओ द्विदीओ ताओ विसे० । जं द्विदिसंत० विसे० । कोधसंजलणाए जाओ द्विदीओ ताओ विसे० । जं द्विदिसंत० विसे० । पुरिसवेदस्स जाओ द्विदीओ ताओ संखे० गुणाओ । जं द्विदिसंत० विसे० । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं जाओ द्विदीओ ताओ संखेज्जगुणाओ । जं द्विदिसंत-कम्मं विसेसाहियं । एवमोघजहण्णद्विदिसंतकम्मदंडओ समत्तो ।

गदीसु वि जहण्णद्विदिसंतकम्मअप्पावहुगं कायव्वं । तं जहा— गिरयगदीए सम्मत्तस्स जहण्णद्विदी थोवा, एगसमयकालएगद्विदितादो । उव्वेछमाणियाणं जहण्ण-द्विदी तत्तिया चैव । जं द्विदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । उवरि अप्पणो जहण्णद्विदिसंतकम्म-पमाणं जाणिदूण अप्पावहुगं कायव्वं । एवं गिरयगइदंडओ समत्तो ।

जहा गिरयगदीए तहा इयरासु वि गदीसु षोयव्वं । भुजगारो पदणिकखेवो वड्ढी च एदाणि तिण्णि अणियोगदाराणि जहा द्विदिसंकमे' णीदाणि तहा षोयव्वानि । एवं द्विदिसंतकम्मं समत्तं ।

अणुभागसंतकम्मे पुव्वं गमणिज्जा आदिफहयपरूवणा कीरदे । तं जहा— केवलणाणा-वरण-केवलदंसणावरण-णिदाणिदा-पयलापयला-थीणगिद्धि-णिदा-पयला - बारसकसायाणं

संख्यातगुणा है । संज्वलन मायाकी जो स्थितियां हैं वे असंख्यातगुणी हैं । जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । संज्वलन मानकी जो स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधकी जो स्थितियां हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । पुरुषवेदकी जो स्थितियां हैं वे संख्यातगुणी हैं । जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । हास्य, रति, अरति, शोक, भय, और जुगुप्साकी जो स्थितियां हैं वे संख्यातगुणी हैं । इनका जस्थितिसत्कर्म विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघ जघन्य स्थितिसत्कर्मदण्डक समाप्त हुआ ।

गतियोंमें भी जघन्य स्थितिसत्कर्मका अल्पवहुत्व करते हैं । यथा— नरकगतिमें सम्यक्त्वकी जघन्य स्थिति स्तोक है, क्योंकि, वह एक समय कालवाली एक स्थिति रूप है । उद्वेलित की जानेवाली प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति उतनी ही है । उनका जस्थितिसत्कर्म संख्यातगुणा है । आगे अपने अपने जघन्य स्थितिसत्कर्मके प्रमाणको जानकर प्रकृत अल्पवहुत्वको करना चाहिये । इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

जिस प्रकार नरकगतिमें अल्पवहुत्व किया गया है उसी प्रकारसे अन्य गतियोंमें भी ले जाना चाहिये । भुजाकार, पदनिक्षेप और वृद्धि इन तीन अनुयोगद्वारोंको जैसे स्थितिसंक्रममें लिया गया है वैसे यहां भी ले जाना चाहिये । इस प्रकार स्थितिसत्कर्म समाप्त हुआ ।

अनुभागसत्कर्ममें सर्वप्रथम जतलाने योग्य आदि स्पर्धकाकी प्ररूपणा की जाती है । यथा— केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला और

१ अप्रती 'द्विदिसंकमेण', ताप्रती 'द्विदिसंतकम्मे' इति पाठः ।

पदेसग्गं जहण्णेण सव्वघादिफहयाणमादिवग्गणाए जुत्तं, उक्कस्सेण अप्पप्पणो उक्कस्साणुभागफहएण संजुत्तं । सम्मत्तस्स आदिफहयं देसघादीणमादिफहएण समाणं, उक्कस्सफहयं देसघादी । सम्मामिच्छत्तस्स आदिफहयं सव्वघादिफहयाणमादिफहएण समाणं, तस्सेव उक्कस्सफहयं दारुसमाणअणंतिमभागे जम्हि सम्मामिच्छत्तं समत्तं । तदो अणंतरउवरिमफहयं मिच्छत्तस्स आदिफहयं होदि, उक्कस्समप्पणो चरिमफहयं । सेसाणं कम्माणमादिफहयं देसघादीणमादिफहएण समाणं, उक्कस्समप्पणो चरिमफहयं ।

एत्तो उवरि घादिसण्णा ङ्गणसण्णा च कायव्वा— उक्कस्साणुभागसंतकम्मस्स घादिसण्णा ङ्गणसण्णा च सुग्गमा, पुव्वं परूविदत्तादो । संपहि जहण्णाणुभागसंतकम्मस्स घादि-ङ्गणसण्णाओ वत्तइस्सामो । तं जहा— मदि-सुदावरण-चक्खु-अचक्खुदंसणा-वरण-सम्मत्त-चदुसंजलण-तिण्णिवेद-पंचंतराइयाणं जहण्णाणुभागसंतकम्मं देसघादि-एयद्दणियं । ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरणाणं<sup>१</sup> पि जहण्णाणुभागसंतकम्मं देसघादि-एयद्दणियं । मणपज्जवणाणावरणस्स जहण्णाणुभागसंतकम्मं देसघादि-दुद्दणियं<sup>२</sup> ।

बारह कपाय; इनका प्रदेशाम जघन्यतः सर्वघाति स्पर्धकोकी आदि वर्गणासे युक्त तथा उत्कर्षतः अप्पने अपने उत्कृष्ट अनुभागस्पर्धकसे संयुक्त होता है । सम्यक्त्व प्रकृतिका आदि स्पर्धक देश-घातियोंके आदि स्पर्धकके सदृश तथा उत्कृष्ट स्पर्धक देशघाती होता है । सम्यग्मिध्यात्वका आदि स्पर्धक सर्वघाति स्पर्धकोके आदि स्पर्धकके समान होता है तथा उसीका उत्कृष्ट स्पर्धक दारु समान अनन्तर्वे भागमें अवस्थित है जहां सम्यग्मिध्यात्व समाप्त होता है । उससे आगेका अनन्तर स्पर्धक मिध्यात्वका आदि स्पर्धक होता है और उत्कृष्ट अपना अन्तिम स्पर्धक होता है । शेष कर्मोंका आदि स्पर्धक देशघातियोंके आदि स्पर्धकके समान तथा उत्कृष्ट अपना अन्तिम स्पर्धक होता है ।

आगे यहां घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा की जाती है— उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मकी घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा सुगम है, क्योंकि, उनकी पररूपणा पहिले की जा चुकी है । अब यहां जघन्य अनुभागसत्कर्मकी घाति और स्थान संज्ञाओंका कथन करते हैं । यथा— मतिज्ञानावरण, श्रुत-ज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, सम्यक्त्व, चार संज्वलन, तीन वेद और पांच अन्तरायका जघन्य अनुभागसत्कर्म देशघाति व एकस्थानिक है । अर्वाधज्ञानावरण और अर्वाध-दर्शनावरणका भी जघन्य अनुभागसत्कर्म देशघाति व एकस्थानिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका जघन्य अनुभागसत्कर्म देशघाति व द्विस्थानिक है । शेष सब कर्मोंका जघन्य अनुभागसत्कर्म (?)

१ अ-काप्रत्योः 'सम्मत्तं', ताप्रतौ 'सम्म (म) त्तं': इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'दंसणावरणं' इति पाठः । ३ संकमसममणुभागे नवरि जहन्नं तु देसघाईनं । छन्नोकासायवज्जाण (वज्जं) एगद्दणमि देसहरं ॥ मणनाणे दुद्दणं देसहरं सामिगो य सम्मत्ते । आवरण-विग्घसोलस-किट्टिवेएसु य संगते ॥ क. प्र. ७, २१-२२. X X X नवरमयं विशेषो यदुत देसघातिनीनां हास्यादिषट्कवर्जितानां मति-श्रुतावधिज्ञानावरण-चक्षुरचक्षुरवधिदर्शना-वरण-संज्वलनचतुष्टय-वेदत्रिकान्तरायपंचकरूपाणामष्टादशप्रकृतीनां जघन्यानुभागसत्कर्मस्थानमधिकृत्य एक-स्थानीयम्, घातिसंज्ञामधिकृत्य देशहरं देशघाति वेदितव्यम् । मनःपर्ययज्ञानावरणे पुनर्जघन्यमनुभागसत्कर्म-

सेसाणं सच्चकम्माणं जहण्णाणुभागसंतकम्मं<sup>१</sup> (?) सच्चघादिफद्दएण समाणत्तादो<sup>२</sup> केवल-  
दंसणाणुभागसंतकम्मस्स उक्कस्सस्स उक्कस्साणुभागं<sup>३</sup> चड्ढिदूण जाव ण घादेदि ताव  
उक्कस्साणुभागसंतकम्मओ । सो इदानीं को होज्ज ? एइंदियो वेइंदियो तीइंदियो  
चउरिंदियो च सण्णी असण्णी पज्जत्तओ अपज्जत्तओ<sup>४</sup> सुहुमो चादरो वा होज्ज ।

सच्चेसिं कम्मणं उक्कस्साणुभागसंतकम्मं जहा मदिआवरणस्स बुत्तं तथा वत्तच्चं ।  
सादस्स उक्कस्साणुभागसंतकम्मं कस्स ? चरिमसमयसुहुमसांपराइयस्स खवयमादिं  
कादूण जाव दुचरिमसमयभवसिद्धियादो ति । उच्चागोद-जसकित्तीणं सादभंगो । मणुस-  
गइ - मणुसगइपाओग्गाणुपुच्ची-ओरालियसरीर - ओरालियसरीरअंगोअंग - वज्जरिसहवइर-  
णारायणसरीरसंघडणाणं उक्कस्साणुभागसंतकम्मं कस्स ? देवेण सच्चविसुद्धेण वट्टाणु-  
भागमघादेदूणमण्णदरगदीए<sup>५</sup> वट्टमाणस्स । जाओ पसत्थाओ णामपयडीओ तासि-  
मुक्कस्साणुभागसंतकम्मं कस्स ? खवयस्स परभवियणामाणं चैव वंधमाणणं<sup>६</sup> चरिम-

सर्वघाति स्पर्धकके समान होनेसे केवलदर्शनावरणके उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मका उत्कृष्ट अनुभाग  
चढ़कर जब तक नहीं घातता है तब तक वह उसके उत्कृष्ट अनुभाग सत्कर्मसे संयुक्त होता है ।

शंका— वह इस समय कौन हो सकता है ?

समाधान— वह एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय,  
पर्याप्त, अपर्याप्त, सूक्ष्म और वादर हो सकता है ।

सब कर्मोंका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म, जैसे मतिज्ञानावरणका कहा गया है, वैसे  
कहना चाहिये ।

सातावेदनीयका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्म-  
साम्परायिक क्षपकको आदि करके द्विचरम समयवर्ती भव्यसिद्धिक तक होता है । उच्चगोत्र  
और यशकोर्तिके उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मके स्वामीकी प्ररूपणा सातावेदनीयके समान करना चाहिये ।  
मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर, औदारिकशरीररांगोपांग और वज्रपंभ-  
वज्रनाराचशरीरसंहननका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? जो सर्वविशुद्ध देवके  
द्वारा बांधे गये अनुभागको न घातकर अन्यतर गतिमें वर्तमान है उसके इनका उत्कृष्ट अनुभाग-  
सत्कर्म होता है । जो प्रशस्त नामप्रकृतियां हैं उनका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म किसके होता है ?  
वह परभविक नामकर्मोंकी ही बांधनेवाले क्षपकके अन्तिम समयको आदि करके द्विचरम

त्यानमधिकृत्य द्वित्यानम्, घातिसंज्ञामधिकृत्य देशहरं देशघाति । इहोत्कृष्टानुभागसत्कर्मत्वामिन उत्कृष्टा-  
नुभागसंक्रमत्वामिन एव वेदितव्याः । जघन्यानुभागसत्कर्मत्वामिनः पुनराह— 'सामिगो वेत्वादि' सम्यक्त्व-  
ज्ञानावरणपंचक-दर्शनावरणषट्कान्तरायपंचकरूपप्रकृतिपोडशक - किाट्टरूपसंज्वलनलोभ-वेदत्रयाणां त्व-त्वान्तिम-  
समये वर्तमाना जघन्यानुभागसत्कर्मत्वामिनो वेदितव्याः । मल्लय.

१ प्रतिपु त्वलितोऽत्र प्रतिभाति पाठः, मतिज्ञानावरणस्थोत्कृष्टानुभागसत्कर्मप्ररूपणाया अभावात् ।

२ ताप्रतौ 'समाण (णं) चा (त) दो' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'कम्मस्स उक्कस्साणुभागं', 'ताप्रतौ 'कम्मस्स  
उक्कस्सं, उक्कस्साणुभागं' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'अपज्जत्त' इति पाठः ।

५ ता-मप्रत्योः 'मघादेदूण चरिमगदीए' इति पाठः । ६ अप्रतौ 'वट्टमाणसाणं', का-ताप्रत्योः 'वट्टमाणणं'  
इति पाठः ।

समयमादिं कादूण जाव दुचरिमसमयभवसिद्धयो ति ।

आउअस्स उक्कस्साणुभागसंतकम्मं कस्स ? खवयस्स वद्धंतदुक्कस्साणुभागस्स बंधपढमसमयप्पहुडि जाव तवभवत्थस्स दुचरिमसमयादो<sup>१</sup> ति उक्कस्साणुभागसंतकम्मिओ होज्ज । एवमोघसामित्तं समत्तं ।

गदीसु अप्पसत्थाणं कम्माणं उक्कस्साणुभागसंतकम्मं जहा ओघेण कदं तथा कायव्वं<sup>२</sup> । गिरयगदीए सादस्स उक्कस्साणुभागसंतकम्मं कस्स ? जेण कसाए उवसामेंतेण चरिमसमयसुहुमसांपराइएण जं वद्धं सादाणुभागसंतकम्मं तमघादेदूण जो गिरयगदीए उववणो तस्स उक्कस्सयं सादाणुभागसंतकम्मं<sup>३</sup> । जहा सादस्स तथा जसकित्ति-तित्थयर-णामकम्माणं उवसामएण वद्धाणुभागमघादेदूणं गिरयगदीए उप्पणस्स उक्कस्सं वत्तव्वं । एवं सव्वासु गदीसु पोयव्वं । एवमुक्कस्ससामित्तं समत्तं ।

मदि-सुदावरण-चक्खु-अचक्खुदंसणावरणं जहण्णाणुभागसंतकम्मं कस्स ? चोदसपुव्वियदुचरिमसमयछदुमत्थस्स उक्कस्सलद्धियस्स । ओहिणाणावरण-ओहिदंसणा-वरणं<sup>४</sup> जहण्णाणुभागसंतकम्मं कस्स ? चरिमसमयछदुमत्थस्स परमोहियस्स उक्कस्स-

समयवर्ती भव्यसिद्धिक तकके होता है ।

आयुका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? जिसने उसके उत्कृष्ट अनुभागका बन्ध किया है उसके बन्धके प्रथम समयसे लेकर तद्भवस्थ रहनेके द्विचरम समय तक उसका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म होता है । इस प्रकार ओघ स्वामित्व समाप्त हुआ ।

गतियोंमें अप्रशस्त कर्मोंका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म जैसे ओघ रूपसे किया गया है वैसे करना चाहिये । नरकगतिमें सातावेदनीयका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? कषायोंका उपशम करनेवाले जिस अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके द्वारा जो सातावेदनीयका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म बांधा गया है उसको न घातकर जो नरकगतिमें उत्पन्न हुआ है उसके साता-वेदनीयका उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म होता है । सातावेदनीयके समान यशकीर्ति और तीर्थकर नामकर्मोंके उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्मके स्वामी उपशामकके द्वारा बांधे गये अनुभागको न घातकर नरकगतिमें उत्पन्न हुए जीवको कहना चाहिये । इसी प्रकार सब गतियोंमें ले जाना चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व समाप्त हुआ ।

मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरणका जघन्य अनु-भागसत्कर्म किसके होता है ? वह चौदह पूर्वोंके धारक उत्कृष्टश्रुतार्थलब्धि युक्त द्विचरम समयवर्ती छद्मस्थके होता है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह परमावधिके धारक उत्कृष्ट लब्धि-युक्त अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके होता है ।

१ तोप्रतौ 'कस्स ? खवयस्स परभवियवद्ध' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'समयदो' इति पाठः ।

३ अ-काप्रत्योः 'कदा तथा कायव्वा' इति पाठः ।

४ अ-काप्रत्योः 'उक्कस्सयसादाणं संतकम्मं' इति पाठः । ५ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु-मघादेमाणं

इति पाठः । ६ अ-काप्रत्योः 'दंसणावरण' इति पाठः ।

लद्धियस्स । मणपज्जवणाणावरणस्स जहण्णाणुभागसंतकम्मं कस्स ? चरिममयछदु-  
मत्थस्स विउलमइस्स उक्कस्सलद्धियस्से । केवलणाणावरण-केवलदंसणावरण-पंचंतराहयाणं  
जहण्णाणुभागसंतकम्मं कस्स ? जस्स वा तस्स वा चरिमसमयछदुमत्थस्स । एवं णिहा-  
पयलाणं । णवरि दुचरिमसमयछदुमत्थस्स सव्वस्से ।

णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिदीणं जहण्णाणुभागसंतकम्मं कस्स ? सुहुमसंत-  
कम्मणेण हदसमुत्पत्तिण वट्टमाणस्से । अण्णदरो एइंदियो वेइंदियो तेइंदियो चउरिंदियो  
असणी सणी सुहुमो वादरो पज्जत्तो अपज्जत्तो वा जहण्णाणुभागसंतकम्मो होज्ज ।  
सादासादाणं जहण्णाणुभागसंतकम्मं कस्स ? चरिमसमयभवसिद्धियस्स जहण्णए  
उदयट्ठाणे वट्टमाणस्स ।

सम्मत्तस्स जह० संतकम्मं कस्स ? चरिमसमयअक्खीणदंसणमोहणीयस्स ।  
सम्मामिच्छत्तस्स जह० संत० कस्स ? चरिमाणुभागखंडए वट्टमाणस्स । मिच्छत्तस्स  
जह० संत० कस्स ? सुहुमेइंदियस्स हदसमुत्पत्तियकम्मणेण कयजहण्णाणुभागस्से ।

मनःपर्ययज्ञानावरणका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह उत्कृष्ट लब्धि युक्त विपुल-  
मतिमनःपर्ययज्ञानके धारक अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके होता है । केवलज्ञानावरण, केवल-  
दर्शनावरण और पांच अन्तरायका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह जिस किसी  
भी अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके होता है । इसी प्रकार निद्रा और प्रचलाका भी जघन्य  
अनुभागसत्कर्म कहना चाहिये । विशेष इतना है कि वह द्विचरम समयवर्ती सब छद्मस्थके  
होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्थानगृद्धिका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ?  
हतसमुत्पत्तिक सत्कर्मस्वरूपसे जो सूक्ष्म एकेन्द्रिय वर्तमान है उसके उनका जघन्य अनुभाग-  
सत्कर्म होता है । अन्यतर एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय,  
सूक्ष्म, वादर, पर्याप्त और अपर्याप्त जीव उनके जघन्य अनुभागसत्कर्मसे संयुक्त होता है । साता  
व असाता वेदनीयका जघन्य सत्कर्म किसके होता है ? वह जघन्य उदयस्थानमें वर्तमान अन्तिम  
समयवर्ती भव्य जीवके होता है ।

सम्यक्त्व प्रकृतिका जघन्य सत्कर्म किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती अक्षीण-  
दर्शनमाहक होता है । सम्याग्मथ्यात्वका जघन्य सत्कर्म किसके होता है ? वह उसके अन्तिम  
अनुभागकाण्डकमें वर्तमान जीवके होता है । मिथ्यात्वका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता  
है ? जिसने हतसमुत्पत्तिककर्म स्वरूपसे उसके अनुभागको जघन्य कर लिया है ऐसे सूक्ष्म  
एकेन्द्रिय जीवके उसका जघन्य अनुभागसत्कर्म होता है ?

२ मह-सुय-चक्खु-अचक्खुण सुयसमत्तस्स जेड्डलद्धिस्स । परमोहिस्स ओहिदुगं मननाणं विउलनाणस्स ॥  
क. प्र. ७, २३. २ अ-काप्रत्याः 'सव्वेसिं', ताप्रतौ 'सव्वेसिं', मप्रतौ 'सव्वुक्कस्स' इति पाठः । ३ ताप्रतौ  
'वट्टमाणस्स' इति पाठः । ४ प्रतिषु 'अण्णदुक्कस्सो' इति पाठः । ५ काप्रतौ 'जहण्णसंतकम्मं', ताप्रतौ  
'जहण्णद्धिदि (अणुभाग) संतकम्मं' इति पाठः । ६ ताप्रतौ 'जहणीकदाणुभागस्स' इति पाठः ।

अणंताणुबंधीणं जह० संत० कस्स ? विसंजोएदूण संजोएमाणस्सं जहणवंधे वट्टमाणस्स । अट्टण्णं कसायाणं जह० संत० कस्स ? सुहुमस्स हदसमुप्पत्तियकम्म्येण जहण्णीकदाणुभागस्स । हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं जह० संत० कस्स ? चरिमअणुभागखंडए वट्टमाणस्स । णवुंसयवेद० जह० संत० कस्स ? चरिमसमय-णवुंसयवेदखवयस्स । इत्थिवेदस्स जहण्णुकस्सदो पुण चरिमसमयइत्थिवेदोदयस्स । पुरिसवेदस्स जह० संत० कस्स ? पुरिसवेदोदयखवयस्स अवगदवेदो होदूण चरिम-समयपवद्धं चरिमसमयसंकामयस्स ।

कोहसंजलणाए जहण्णाणुभागसंतकम्मं कस्स ? कोधेण उवट्ठिदस्स खवयस्स चरिमसमयपवद्धं चरिमसमयसंकामयस्सं । माणसंजलणाणं जहण्णाणुभागसंतकम्मं णत्थि । मायासंजलणाए जह० संत० कस्स ? मायाए उवट्ठिदस्स खवयस्स चरिमसमयपवद्धस्स । लोहसंजलणाए जह० संत० कस्स ? तिच्चयरहदसमुप्पत्तियचरिमसमयसंकामयस्स । एवं जहण्णसामित्तं समत्तं ।

अनन्तानुबन्धी कपायोंका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह उनका विसंयोजन करके पुनः संयोजन करते हुए जघन्य बन्धमें वर्तमान जीवके होता है । आठ कपायोंका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह हतसमुत्पत्तिकर्म स्वरूपसे अनुभागको जघन्य कर लेनेवाले सूक्ष्म जीवके होता है । हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साका जघन्य अनुभाग सत्कर्म किसके होता है ? वह उनके अन्तिम अनुभागकाण्डकमें वर्तमान जीवके होता है । नपुंसकवेदका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह अन्तिम समयवर्ती नपुंसकवेदके क्षपकके होता है । स्त्रीवेदका जघन्य व उत्कृष्ट अनुभागसत्कर्म अन्तिम समयवर्ती स्त्रीवेदवेदकके होता है । पुरुषवेदका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? जो अपगतवेदी होकर अन्तिम समयप्रवद्धका अन्तिम समयवर्ती संक्रामक है ऐसे पुरुषवेदोदययुक्त क्षपकके उसका जघन्य अनुभागसत्कर्म होता है ।

संज्वलन क्रोधका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह क्रोधसे उपस्थित क्षपकके होता है जो कि उसके अन्तिम समयप्रवद्धका अन्तिम समयवर्ती संक्रामक है । संज्वलन मानका जघन्य अनुभागसत्कर्म नहीं होता । संज्वलनमायाका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह मायासे उपस्थित हुए उसके अन्तिम समयप्रवद्धके क्षपकके होता है । संज्वलन लोभका जघन्य अनुभागसत्कर्म किसके होता है ? वह तीव्रतर हतसमुत्पत्तिक अन्तिम समयवर्ती संक्रामकके होता है । इस प्रकार जघन्य स्वामित्व समाप्त हुआ ।

१ ताप्रतौ 'विसंजोएदूणसंजोएमाणस्स' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'चरिमसमयअणुभाग' इति पाठः । ३ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-काप्रत्योः 'इत्थिवेदस्स जहण्णुकस्सजहण्णचरिमसमयो इत्थि', ताप्रतौ 'इत्थिवेदस्स जह० कस्स ? जहण्णचरिमसमय इत्थि-' इति पाठः ।

४ का-ताप्रत्योः 'समयवद्ध' इति पाठः । ५ काप्रतौ 'समयबंधचरिमसमयसंकामयस्स', ताप्रतौ 'समयपवद्धस्स च संकामयस्स' इति पाठः ।



णिरयगईए षोरइएसु सच्चतिच्चाणुभागं सादं । उच्चागोद-जसक्कित्तीओ अणंत-  
गुणाओ' । कम्मइय० अणंतगुणो । तेजइय० अणंतगुणो । वेउच्चिय० अणंतगुणो ।  
मिच्छत्त० अणंतगुणो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं अणंतगुणो' । सम्मामिच्छत्ते' ।  
अणंतगुणो । दाणंतराइय० अणंतगुणो । लाहंतराइय० अणंतगुणो । भोगंतराइय०  
अणंतगुणो । परिभोगंतराइय० अणंतगुणो । अचक्खुदंसणावरण० अणंतगुणो । चक्खुदंस०  
अणंतगुणो । वीरियंतराइय० अणंतगुणो । सम्मत्त० अणंतगुणो ।

तिरिक्खगदीए तच्चतिच्चाणुभागं उच्चागोद-जसक्कित्तीणं । कम्मइय० अणंतगुणं ।  
तेजइय० अणंतगुणं । वेउच्चिय० अणंतगुणं । मिच्छत्त० अणंतगुणं । केवलणाण-केवल-  
दंसणावरणाणं अणंतगुणं । अण्णदरो अणंताणुवंधि० अणंतगुणो । अण्णदरो संजलण०  
अणंतगुणो । अण्णदरो पच्चक्खाण० अणंतगुणं । अण्ण० अपच्चक्खाण० अणंतगुणं ।  
मदिआवरण० अणंतगुणं । सुदावरण० अणंतगुणं । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं  
अणंतगुणं । मणपञ्जवणाणावरण० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । णिद्दाणिद्दा०  
अणंतगुणं । पयलापयला० अणंतगुणं । णिद्दा० अणंतगुणं । पयला' अणंतगुणं । रदि०  
अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । ओरालिय० अणंतगुणं । तिरिक्खाउ० अणंतगुणं ।

नरकगतिमें नारकियोंमें सातावेदनीय सबसे तीव्र अनुभागवाली प्रकृति है । उससे  
उच्चगोत्र और यशकीर्ति अनन्तगुणी हैं । कर्मणशरीर अनन्तगुणा है । तैजसशरीर अनन्तगुणा  
है । वैक्रियिकशरीर अनन्तगुणा है । मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण और अवधि-  
दर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । दानान्तराय अनन्तगुणा है ।  
लाभान्तराय अनन्तगुणा है । भोगान्तराय अनन्तगुणा है । परिभोगान्तराय अनन्तगुणा है ।  
अचक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । वीर्यान्तराय अनन्तगुणा  
है । सम्यक्त्व अनन्तगुणा है ।

तिर्यग्गतिमें उच्चगोत्र और यशकीर्ति सबसे तीव्र अनुभागवाली प्रकृतिर्या हैं । कर्मण-  
शरीर अनन्तगुणा है । तैजसशरीर अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर अनन्तगुणा है । मिथ्यात्व  
अनन्तगुणा है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें  
अन्यतर अनन्तगुणा है । अन्यतर संज्वलन अनन्तगुणा है । अन्यतर प्रत्याख्यानावरण  
अनन्तगुणा है । अन्यतर अप्रत्याख्यानावरण अनन्तगुणा है । मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा है ।  
श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं ।  
मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा है । स्थानगृद्धि अनन्तगुणा है । निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है ।  
प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है । निद्रा अनन्तगुणी है । प्रचला अनन्तगुणी है । रति अनन्तगुणी है ।  
हास्य अनन्तगुणा है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यगायु अनन्तगुणा है । असातावेदनीय

१ प्रतिषु 'अणंतगुणहीणाओ' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'मिच्छत्त० ओहिणाण० ओहिदंसणावरण०  
अणंतगुणा' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'सम्मामिच्छत्ताणं' इति पाठः । ४ अ-ताप्रत्योः 'पयला०' इत्येतस्य स्थाने  
'सुद०', काप्रतौ 'सुदणाण०' इति पाठः ।

असाद० अणंतगुणं । णवुंसय० अणंतगुणं । इत्थि० अणंतगुणं । पुरिस० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । दुगुंछा० अणंतगुणं । णीचागोद० अजसकित्ति० अणंतगुणं । तिरिक्खगइ० अणंतगुणं । चक्खु० अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणं । दाणंतराइय० अणंतगुणं । लाहंतराइय० अणंतगुणं । भोगंतराइय० अणंतगुणं । परिभोगंतराइय० अणंतगुणं । अचक्खु<sup>१</sup>० अणंतगुणं । वीरियंतराइय० अणंतगुणं । सम्मत्तं अणंतगुणं ।

मणुस्सेसु सन्वतिव्वाणुभागमुच्चागोद-जसकित्तीणं । कम्मइय० अणंतगुणं । तेजइय० अणंतगुणं । आहार० अणंतगुणं । वेउव्विय० अणंतगुणं । मिच्छत्त० अणंतगुणं । केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं अणंतगुणं । कसायाणमोघभंगो । तदो मदिआवरण० अणंतगुणं । सुदावरण० अणंतगुणं । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणमणंतगुणं<sup>२</sup> । मणपञ्जव० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । णिद्दाणिद्दा अणंतगुणं । पयलापयला० अणंतगुणं । णिद्दा० अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । साद० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । मणुसगइ० अणंतगुणं । ओरालिय० अणंतगुणं । मणुसाउ० अणंतगुणं । असाद० अणंतगुणं । णवुंस० अणंतगुणं । इत्थि० अणंतगुणं । पुरिस० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । दुगुंछा

अनन्तगुणा है । नपुंसकवेद अनन्तगुणा है । स्त्रीवेद अनन्तगुणा है । पुरुषवेद अनन्तगुणा है । अरति अनन्तगुणी है । शोक अनन्तगुणा है । भय अनन्तगुणा है । जुगुप्सा अनन्तगुणी है । नीचगोत्र और अयशकीर्ति अनन्तगुणे हैं । तिर्यग्गति अनन्तगुणी है । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । सम्यग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । दानान्तराय अनन्तगुणा है । लाभान्तराय अनन्तगुणा है । भोगान्तराय अनन्तगुणा है । परिभोगान्तराय अनन्तगुणा है । अचक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है । सम्यक्त्व अनन्तगुणा है ।

मनुष्योंमें उच्चगोत्र और यशकीर्तिका अनुभाग सबसे तीव्र है । कर्मणका अनन्तगुणा है । तैजसशरीरका अनन्तगुणा है । आहारशरीरका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरका अनन्तगुणा है । मिथ्यात्वका अनन्तगुणा है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणका अनन्तगुणा है । कपायोंका अल्पबहुत्व ओषके समान है । उनसे आगे मतिज्ञानावरणका अनुभाग अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरणका अनुभाग अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणका अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । स्त्यानगृद्धिका अनन्तगुणा है । निद्रानिद्राका अनन्तगुणा है । प्रचलाप्रचलाका अनन्तगुणा है । निद्राका अनन्तगुणा है । प्रचलाका अनन्तगुणा है । सातावेदनीयका अनन्तगुणा है । रतिका अनन्तगुणा है । हास्यका अनन्तगुणा है । मनुष्यगतिका अनन्तगुणा है । औदारिकशरीरका अनन्तगुणा है । मनुष्यायुका अनन्तगुणा है । असातावेदनीयका अनन्तगुणा है । नपुंसकवेदका अनन्तगुणा है । स्त्रीवेदका अनन्तगुणा है । पुरुषवेदका अनन्तगुणा है । अरतिका अनन्तगुणा है । शोकका अनन्तगुणा है ।

१ प्रतिषु 'चक्खु' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'सुदावरण-ओहिदंसणावरणाणं अणंतगुणं' इति पाठः ।

अणंतगुणं । गीचागोद-अजसकितीणं अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणं । चदुण्ण-  
मंतराइयाणमोघभंगो । अचक्खु० अणंतगुणं । चक्खु० अणंतगुणं । वीरियंतराइय०  
अणंतगुणं । सम्मत्त० अणंतगुणं ।

देवगईए सच्चतिव्वाणुभागं सादं । उच्चागोद-जसकितीओ अणंतगुणाओ ।  
मिच्छत्त० अणंतगुणं । केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं अणंतगुणं । अण्णदरो अणंताणु-  
घंधि० अणंतगुणं । सेसाणं कसायाणमोघभंगो । तदो मदिआवरण० अणंतगुणं ।  
सुदआवरण० अणंतगुणं । मणपज्जव० अणंतगुणं । णिहा० अणंतगुणं । पयला अणंतगुणं ।  
देवगइ अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । तेजा०  
अणंतगुणं । वेउच्चिय० अणंतगुणं । देवाल० अणंतगुणं । असाद० अणंतगुणं । इत्थि०  
अणंतगुणं । पुरिस० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । भय०  
अणंतगुणं । दुगुंछा० अणंतगुणं । अजसकित्ति० अणंतगुणं । ओहिणाण-ओहिदंसणा-  
वरणाणं अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणं । चदुण्हमंतराइयाणमोघभंगो । अचक्खु०  
अणंतगुणं । वीरियंतराइय० अणंतगुणं । सम्मत्त० अणंतगुणं ।

भवणवासिएसु सच्चतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं । केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं अणंत-  
गुणं । कसायाणमोघभंगो । मदिआवरण० अणंतगुणं । सुदआव० अणंतगुणं । मणपज्जव०

भयका अनन्तगुणा है । जुगुप्साका अनन्तगुणा है । नीचगोत्र और अयशकीर्तिका अनन्तगुणा  
है । सम्यग्मिथ्यात्वका अनन्तगुणा है । चार अन्तराय प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व ओघके समान  
है । अचक्षुदर्शनावरणका अनन्तगुणा है । चक्षुदर्शनावरणका अनन्तगुणा है । वीर्यान्तरायका  
अनन्तगुणा है । सम्यक्त्वका अनन्तगुणा है ।

देवगतिमें सबसे तीव्र अनुभागवाला सातावेदनीय है । उससे उच्चगोत्र और यशकीर्ति  
अनन्तगुणे हैं । मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण अनन्तगुणे  
हैं । अन्यतर अनन्तानुबन्धी अनन्तगुणी है । शेष कपायोंका अल्पबहुत्व ओघके समान है । आगे  
मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा  
है । निद्रा अनन्तगुणी-है । प्रचला अनन्तगुणी है । देवगति अनन्तगुणी है । रति अनन्तगुणी है ।  
हास्य अनन्तगुणा है । कर्मणशरीर अनन्तगुणा है । तैजसशरीर अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर  
अनन्तगुणा है । देवायु अनन्तगुणी है । असातावेदनीय अनन्तगुणा है । स्त्रीवेद अनन्तगुणा है ।  
पुरुषवेद अनन्तगुणा है । अरति अनन्तगुणी है । शोक अनन्तगुणा है । भय अनन्तगुणा है ।  
जगुप्सा अनन्तगुणी है । अयशकीर्ति अनन्तगुणी है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरण  
अनन्तगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । चार अन्तराय प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व  
ओघके समान है । अचक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है । सम्यक्त्व  
अनन्तगुणा है ।

भवनवासी देवोंमें मिथ्यात्व सबसे तीव्र अनुभागवाला है । केवलज्ञानावरण और केवल-  
दर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । कपायोंका अल्पबहुत्व ओघके समान है । मतिज्ञानावरण अनन्त-

१ प्रतिपु 'अणंतगुगहीणाओ' इति पाठः ।

अणंतगुणं । णिद्दा० अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । उच्चा-  
गोद० जसकित्ति० अणंतगुणं । देवगइ० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । हस्स० अणंत-  
गुणं । उवरि देवोघभंगो ।

एइंदिएसु सव्वतिव्वाणुभागं मिच्छत्तं । केवलणाणावरण-केवलदंसणावरणाणं<sup>१</sup>  
अणंतगुणं । कसायाणसोघभंगो । तदो मदिआवरण० अणंतगुणं । चक्खु० अणंतगुणं ।  
सुदआवरण अणंतगुणं । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं अणंतगुणं । मणपज्जव० अणंत-  
गुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । णिद्दाणिद्दा० अणंतगुणं । पयलापयला० अणंतगुणं ।  
णिद्दा० अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । असाद० अणंतगुणं । णवुंसय० अणंतगुणं ।  
अरदि० अणंतगुणं । सोम० अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । दगुंछा० अणंतगुणं । णीचा-  
गोद० अणंतगुणं । अजसकित्ति० अणंतगुणं । तिरिक्खगइ० अणंतगुणं । साद०  
अणंतगुणं । जसकित्ति० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । कम्मइय०  
अणंतगुणं । तेजइय० अणंतगुणं । वेउव्विय० अणंतगुणं । ओरालिय० अणंतगुणं ।  
तिरिक्खाउ० अणंतगुणं । चट्ठणमंतराइयाणसोघो । अचक्खु० अणंतगुणं । विरि-  
यंतराइय० अणंतगुणं । एवं विगलिंदिएसु वि । णवरि पसत्थकम्मंसा उवरि कायव्वा ।  
एवमुक्कस्सदंडओ समत्तो ।

गुणा है । श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा है । निद्रा अनन्तगुणी  
है । प्रचला अनन्तगुणी है । स्त्यानगृद्धि अनन्तगुणी है । उच्चगोत्र और यशकीर्ति अनन्तगुणे  
हैं । देवगति अनन्तगुणी है । रति अनन्तगुणी है । हास्य अनन्तगुणा है । आगेकी प्ररूपणा  
देव ओघके समान है ।

एकेन्द्रिय जीवोंमें मिथ्यात्व सबसे तीव्र अनुभागवाला है । केवलज्ञानावरण और केवल-  
दर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । कपायोंका अल्पबहुत्व ओघके समान है । आगे मतिज्ञानावरण अनन्त-  
गुणा है । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण  
और अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा है । स्त्यानगृद्धि अनन्त-  
गुणी है । निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है । प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है । निद्रा अनन्तगुणी है । प्रचला  
अनन्तगुणी है । असातावेदनीय अनन्तगुणा है । नपुंसकवेद अनन्तगुणा है । अरति अनन्तगुणी  
है । शोक अनन्तगुणा है । भय अनन्तगुणा है । जुगुप्सा अनन्तगुणी है । नीचगोत्र अनन्त-  
गुणा है । अयशकीर्ति अनन्तगुणी है । तिर्यग्गति अनन्तगुणी है । सातावेदनीय अनन्तगुणा है ।  
यशकीर्ति अनन्तगुणी । रति अनन्तगुणी है । हास्य अनन्तगुणा है । कर्मणशरीर अनन्तगुणा  
है । तैजसशरीर अनन्तगुणा है । वैक्रियकशरीर अनन्तगुणा है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा  
है । तिर्यगायु अनन्तगुणी है । चार अन्तराय प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व ओघके समान है । अचक्षु-  
दर्शनावरण अनन्तगुणा है । वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है । इसी प्रकार विकलेन्द्रिय जीवोंमें  
भी उपर्युक्त अल्पबहुत्व जानना चाहिये । विशेष इतना है कि प्रशस्त कर्माशोंको आगे करना  
चाहिये । इस प्रकार उत्कृष्ट दण्डक समाप्त हुआ ।

१ ताप्रती 'केवलणाणावरणाणं' इति पाठः ।

जहण्णए पयदं— सच्चमंदाणुभागं लोहसंजलण० । माया अणंतगुणा । माणे  
अणंतगुणो । कोधो अणंतगुणो । वीरियंतराइय० अणंतगुणो । सम्मत्त० अणंतगुणं ।  
चक्खु० अणंतगुणं । सुदआवरण० अणंतगुणं । [ मदि० अणंतगुणं । ] अचक्खु०  
अणंतगुणं । ओहिणाण-ओहिदंसणाव० अणंतगुणं । परिभोगंतराइय० अणंतगुणं ।  
भोगंतराइय० अणंतगुणं । लाहंतराइय० अणंतगुणं । दाणंतराइय० अणंतगुणं । पुरिस०  
अणंतगुणं । इत्थि० अणंतगुणं । णवुंस० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । हस्स०  
अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । दुगुंछ० अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । सोग० अणंत-  
गुणं । केवल्लणाण-केवल्लदंसणाव० अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । णिहा० अणंतगुणं ।  
पयलापय० अणंतगुणं । णिहाणिहा० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । अण्णदरो  
पच्चक्खानाणकसाओ अणंतगुणो । अण्णदरो अपच्च० कसाओ अणंतगुणं । अण्ण० अणंताण-  
वंधि० अणंतगुणं । संजलण० अणंतगुणं । मिच्छित्त० अणंतगुणं । ओरालिय० अणंत-  
गुणं । वेउच्चिय० अणंतगुणं । तिरिक्ख्खाउ० अणंतगुणं । मणुस्साउ० अणंतगुणं । आहार०  
अणंतगुणं । तैजा० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । तिरिक्खगइ० अणंतगुणं । णिरयगइ०  
अणंतगुणं । मणुसगइ० अणंतगुणं । देवगइ० अणंतगुणं । अजसक्कित्ति० अणंतगुणं ।  
असाद० अणंतगुणं । उच्चागोद० अणंतगुणं । जसक्कित्ति० अणंतगुणं । साद० अणंत-

अत्र जघन्य अनुभागसत्कर्मदण्डक प्रकृत है— सवसे मंद अनुभागवाला संव्वलन लोभ है ।  
संव्वलन माया अनन्तगुणी है । संव्वलन मान अनन्तगुणा है । संव्वलन क्रोध अनन्तगुणा है ।  
वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है । सम्यक्त्व अनन्तगुणा है । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञाना-  
वरण अनन्तगुणा है । [मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा है ।] अचक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । अवधि-  
ज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । परिभोगान्तराय अनन्तगुणा है । भोगान्तराय  
अनन्तगुणा है । लाभान्तराय अनन्तगुणा है । दानान्तराय अनन्तगुणा है । पुरुषवेद अनन्तगुणा  
है । स्त्रीवेद अनन्तगुणा है । नपुंसकवेद अनन्तगुणा है । रति अनन्तगुणी है । हास्य अनन्तगुणा  
है । अरति अनन्तगुणी है । जुगुप्सा अनन्तगुणी है । भय अनन्तगुणा है । शोक अनन्तगुणा  
है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । प्रचला अनन्तगुणी है । निद्रा अनन्त-  
गुणी है । प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है । निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है । स्त्यानगृद्धि अनन्तगुणी  
है । अन्यतर प्रत्याख्यानावरण कषाय अनन्तगुणी है । अन्यतर अप्रत्याख्यानावरण कषाय अनन्त-  
गुणी है । अन्यतर अनन्तानुवन्धी कषाय अनन्तगुणी है । संव्वलनचतुष्कमें अन्यतर अनन्त-  
गुणा है । मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर अनन्त-  
गुणा है । तिर्यगायु अनन्तगुणी है । मनुष्यायु अनन्तगुणी है । आहारकशरीर अनन्तगुणा है ।  
तैजसशरीर अनन्तगुणा है । कर्मणशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यगति अनन्तगुणी है । नरक-  
गति अनन्तगुणी है । मनुष्यगति अनन्तगुणी है । देवगति अनन्तगुणी है । अयशकीर्ति अनन्त-  
गुणी है । असातावेदनीय अनन्तगुणा है । उच्चगोत्र अनन्तगुणा है । यशकीर्ति अनन्तगुणी है ।

१ अप्रतौ 'सोग अणंतगुणं अरदि अणंतगुणं केवल', ताप्रतौ 'सोग० [अरदि०] केवल' इति पाठः ।

गुणं । णिरयाउ० अणंतगुणं । देवाउ० अणंतगुणं । एत्थ ओघजहण्णदंडओ समत्तो ।

णिरयगईए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं । चक्खु० अणंतगुणं । अचक्खु० अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । दुगुंछा० अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । सौग० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । अवगदवेदो (१) एवं तिव्वयरसव्वमंदाणुभागं णेयव्वं जाव दाणंतराइयं [ति] । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं अणंतगुणं । मणपञ्जव० अणंतगुणं । सुदावरण० अणंतगुणं । मदिआ० अणंतगुणं । अण्णदरो पच्चक्खाणकसाओ अणंतगुणो । अण्णदरो अपच्चक्खाणकसाओ अणंतगुणो । केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । णिद्दा अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणं । अण्णदरो अणंताणुवंधि-कसाओ अणंतगुणौ । अण्णदरो संजलणाणं णत्थि । मणुसगईए णिरयगइभंगो । वेउव्विय० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । णिरयगइ० अणंतगुणं । णीचागोद० अणंतगुणं । अजसक्कित्तीए अणंतगुणं । असाद० अणंतगुणं । साद० अणंतगुणं । णिरयाउ० अणंतगुणं । एवं दोच्चाए । णवरि वीरियंतराइयस्स परिभोगंतराइयस्स च मज्जे सम्मत्तं कायव्वं । एवं णिरयगइदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगईए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं । चक्खु० अणंतगुणं । अचक्खु० अणंतगुणं ।

सातावेदनीय अनन्तगुणा है । नारकायु अनन्तगुणी है । देवायु अनन्तगुणी है । यहां ओघ जघन्य दण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें सबसे मंद अनुभागवाली सम्यक्त्व प्रकृति है । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । अचक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । हास्य अनन्तगुणा है । रति अनन्तगुणी है । जुगुप्सा अनन्तगुणी है । भय अनन्तगुणा है । शोक अनन्तगुणा है । अरति अनन्तगुणी है । अपगत-वेद (?) इस प्रकार तीव्रतर सर्वमन्दानुभाग दानान्तराय तक ले जाना चाहिये । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणका अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । मतिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । अन्यतर प्रत्याख्यानावरण कषाय अनन्तगुणी है । अन्यतर अप्रत्याख्यानावरण कषाय अनन्तगुणी है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणका अनन्तगुणा है । प्रचलाका अनन्तगुणा है । निद्राका अनन्तगुणा है । सम्यग्मिथ्यात्वका अनन्तगुणा है । अन्यतर अनन्तानुबन्धी कषायका अनन्तगुणा है । अन्यतर संञ्चलन कषायोंके नहीं हैं । मनुष्यगतिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है । वैक्रियिकशरीरका अनन्तगुणा है । कर्मणशरीरका अनन्तगुणा है । नरकगतिका अनन्तगुणा है । नीचगोत्रका अनन्तगुणा है । अयशकीर्तिका अनन्तगुणा है । असातावेदनीयका अनन्तगुणा है । सातावेदनीयका अनन्तगुणा है । नारकायुका अनन्तगुणा है । इसी प्रकार दूसरी पृथिवीमें जानना चाहिये । विशेष इतना है कि वीर्यान्तराय और परिभोगान्तरायके मध्यमें सम्यक्त्वको करना चाहिये । इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

तिरिक्खगतिमें सम्यक्त्व प्रकृति सबसे मंद अनुभागवाली है । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा

१ काप्रतौ 'अण०', ताप्रतौ 'अण्णदरा' इति पाठः ।

ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । दुगुंछा  
 अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । पुरिस० अणंत-  
 गुणं । इत्थि० अणंतगुणं । णवुंस० अणंतगुणं । अण्णदरसंजलण० अणंतगुणं ।  
 वीरियंतराइय० अणंतगुणं । एवं षोदक्खं जाव दाणंतराइयं' ति अणंतगुणकमेण ।  
 मणपज्जव० अणंतगुणं । सुदावरण० अणंतगुणं । मदिआ० अणंतगुणं । अण्णदरो अपच्च-  
 क्खणाणकसाओ अणंतगुणो । अण्णदरो पच्चक्खणाणां केवलणाण-केवलदंसणावरणाणं  
 अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । णिद्दा० अणंतगुणं । पयलापयला० अणंतगुणं । णिद्दा-  
 णिद्दा० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणं । अण्णदरो  
 अणंताणुवंधिकसाओ अणंतगुणो । मिच्छत्त० अणंतगुणं । ओरालिय० अणंतगुणं ।  
 वेउव्विय० अणंतगुणं । तिरिक्खणउ० अणंतगुणं । तेजा० अणंतगुणं । कम्मइय०  
 अणंतगुणं । तिरिक्खणइ० अणंतगुणं । णीचागोद० अणंतगुणं । अजसकित्ति० अणंत-  
 गुणं । असाद० अणंतगुणं । जसकित्ति० अणंतगुणं । साद० अणंतगुणं । उच्चागोद०  
 अणंतगुणं । एवं तिरिक्खणइ० चउण्णमंतराइयाणमोघो ( ? ) ।

मणुसेसु ओघभंगो । देवगईए सव्वमंदाणुभागं सम्मत्तं । चक्खु० अणंतगुणं ।

है । अचक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । अवाधज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणे  
 हैं । हास्य अनन्तगुणी है । रति अनन्तगुणी है । जुगुप्सा अनन्तगुणी है । भय अनन्तगुणा है ।  
 शोक अनन्तगुणा है । अरति अनन्तगुणी है । पुरुषवेद अनन्तगुणा है । स्त्रीवेद अनन्तगुणा  
 है । नपुंसकवेद अनन्तगुणा है । अन्यतर संज्वलन कषाय अनन्तगुणी है । वीर्यान्तराय अनन्त-  
 गुणा है । इस प्रकार अनन्तगुणितक्रमसे दानान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञाना-  
 वरण अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है । मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अन्यतर  
 अप्रत्याख्यानावरण कषाय अनन्तगुणी है । अन्यतर प्रत्याख्यानावरण कषाय, केवलज्ञानावरण  
 और केवलदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । प्रचला अनन्तगुणी है । निद्रा अनन्तगुणी है ।  
 प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है । निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है । स्थानगृद्धि अनन्तगुणी है । सम्य-  
 ग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । अन्यतर अनन्तानुबन्धी कषाय अनन्तगुणी है । मिथ्यात्व अनन्त-  
 गुणा है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यगायु अनन्तगुणी  
 है । तैजसशरीर अनन्तगुणा है । कामैणशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यग्गति अनन्तगुणी है । नीचगोत्र  
 अनन्तगुणा है । अयश्कीर्ति अनन्तगुणी है । असातावेदनीय अनन्तगुणा है । यश्कीर्ति  
 अनन्तगुणी है । सातावेदनीय अनन्तगुणी है । उच्चगोत्र अनन्तगुणा है । इस प्रकार तिर्यग्गति-  
 दण्ड समाप्त हुआ । चार अन्तराय प्रकृतिर्याका अल्पबहुत्व ओघके समान है ।

मनुष्योंमें उक्त अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा ओघके समान है । देवगतिमें सबसे मन्द अनु-  
 भागवाली सम्यक्त्व प्रकृति है । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है ।

सुदणाणावरण० अणंतगुणं । मदिआ० अणंतगुणं । अचक्खु० अणंतगुणं । ओहिणाण-  
ओहिदंसणावरणाणं अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । दुगुंछा०  
अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । पुरिस० अणंत-  
गुणं । इत्थि० अणंतगुणं । अण्णदरसंजलण० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । एवं  
पोदच्चं अणंतगुणकमेण जाव दाणंतराइयं ति । मणपज्जवणाणावरण० अणंतगुणं ।  
अण्णदरो अपच्चक्खाणकसाओ अणंतगुणो । अण्ण० पच्चक्खा० अणंतगुणो । केवलणाण-  
केवलदंसणावरणाणं अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । णिदा अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त०  
अणंतगुणं । अण्णदरो अणंताणुबंधिकसाओ अणंतगुणो । मिच्छत्त० अणंतगुणं । ओरा-  
लिय० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । देवगइ० अणंतगुणं । अजसक्कित्ति० अणंत-  
गुणं । असाद० अणंतगुणं । उच्चागोद० अणंतगुणं । जसक्कित्ति० अणंतगुणं । साद०  
अणंतगुणं । देवाउ० अणंतगुणं ।

एइंदिएसु सच्चमंदाणुभागं... हस्स० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । दुगुंछ० अणंत-  
गुणं । भय० अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । णउंस० अणंतगुणं ।  
अण्णदरसंजलण० अणंतगुणं । वीरियंतराइय० अणंतगुणं । अणंताणुबंधि० अणंतगुणं । भोगं-  
तराइये० अणंतगुणं । लाहंतराइय० अणंतगुणं । दाणंतराइय० अणंतगुणं । मणपज्जव-

मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अचक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण और  
अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । हास्य अनन्तगुणा है । रति अनन्तगुणी है । जुगुप्सा  
अनन्तगुणी है । भय अनन्तगुणा है । शोक अनन्तगुणा है । अरति अनन्तगुणी है । पुरुषवेद  
अनन्तगुणा है । स्त्रीवेद अनन्तगुणा है । अन्यतर संज्वलन कषाय अनन्तगुणी है । कामंशरीर  
अनन्तगुणा है । इस प्रकार अनन्तगुणितक्रमसे दानान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञाना-  
वरण अनन्तगुणा है । अन्यतर अप्रत्याख्यानावरण कषाय अनन्तगुणा है । अन्यतर प्रत्या-  
ख्यानावरण कषाय अनन्तगुणा है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं ।  
प्रचला अनन्तगुणी है । निद्रा अनन्तगुणी है । सम्यग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । अन्यतर  
अनन्तानुबन्धी कषाय अनन्तगुणी है । मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा  
है । कामंशरीर अनन्तगुणा है । देवगति अनन्तगुणी है । अयशकीर्ति अनन्तगुणी है ।  
असातावेदनीय अनन्तगुणा है । उच्चगोत्र अनन्तगुणा है । यशकीर्ति अनन्तगुणी है । सातावेदनीय  
अनन्तगुणा है । देवायु अनन्तगुणी है ।

एकेन्द्रियोंमें सबसे मंद अनुभागवाली ..... प्रकृति है । हास्य अनन्तगुणा  
है । रति अनन्तगुणी है । जुगुप्सा अनन्तगुणा है । भय अनन्तगुणा है । शोक अनन्तगुणा  
है । अरति अनन्तगुणी है । नपुंसकवेद अनन्तगुणा है । अन्यतर संज्वलन कषाय अनन्त-  
गुणी है । वीर्यान्तराय अनन्तगुणा है । अन्यतर अनन्तानुबन्धी कषाय अनन्तगुणी है ।  
भोगान्तराय अनन्तगुणा है । लाभान्तराय अनन्तगुणा है । दानान्तराय अनन्तगुणा है ।

१ ताप्रतौ 'अणंताणुबंधी० सोग० ( १ ) भोगंतराइय०' इति पाठः ।



णाणा० अणंतगुणं । ओहिणाणा० ओहिदंसणावरण० अणंतगुणं । सुदणाणाव० अणंतगुणं । चक्खु० अणंतगुणं । मदिआव० अणंतगुणं । अण्णदरअपच्चक्खाणकसाओ अणंतगुणो । अण्ण० पच्चक्खो० अणंतगुणो । अण्ण० अणंताणुदंधि० अणंतगुणं । केवलणाण-केवल-दंसणावरणाणं दुव्व तुल्लाणि अणंतगुणाणि । मिच्छत्तमणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । णिद्दा० अणंतगुणं । पयलापयला अणंतगुणं । णिद्दाणिद्दा० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । ओरालि० अणंतगुणं । वेउव्विय० अणंतगुणं । तिरिक्खाउ० अणंतगुणं । आहार० अणंतगुणं । तेजा० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । तिरिक्खगई० अणंत-गुणं । णीचागोद० अणंतगुणं । अजसकित्ति० अणंतगुणं । असाद० अणंतगुणं । जसकित्ति० अणंतगुणं । साद० अणंतगुणं । एवमणुभागउदीरणो समत्ता ।

पदेसउदीरणाए उक्कस्सओ<sup>१</sup> मूलपयडिदंडओ । तं जहा— उक्कस्सेण जं पदेसग्ग-मुदीरिज्जदि तमाउअम्मि थोवं । वेयणीए असंखेज्जगुणं । मोहणीए असंखेज्जगुणं । णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइएसु तुल्लमसंखेज्जगुणं । णाम-गोदेसु तुल्लमसंखेज्जगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

णिरयगईए मणुसगई<sup>५</sup> ( ? ) संकामिज्जदि तं थोवं । णामा-गोदेसु असंखेज्जगुणं ।

मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा हे । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा हे । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा हे । मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा हे । अन्यतर अप्रत्याख्यानावरण कपाय अनन्तगुणी है । अन्यतर प्रत्याख्यानावरण कपाय अनन्त-गुणी है । अन्यतर अनन्तानुबन्धी कपाय अनन्तगुणी है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण ये दोनों तुल्य व अनन्तगुणे हैं । मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । प्रचला अनन्तगुणी है । निद्रा अनन्त-गुणी है । प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है । निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है । स्त्यानगृद्धि अनन्तगुणी है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यगायु अनन्तगुणी है । आहारशरीर अनन्तगुणा है । तैजसशरीर अनन्तगुणा है । कर्मणशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यग्गति अनन्तगुणी है । नीचगोत्र अनन्तगुणा है । अयशकीर्ति अनन्तगुणी है । असाता-वेदनीय अनन्तगुणी है । यशकीर्ति अनन्तगुणी है । सातावेदनीय अनन्तगुणी है । इस प्रकार अनुभागउदीरणा समाप्त हुई ।

प्रदेशउदीरणामें उत्कृष्ट मूलप्रकृतिदण्डक इस प्रकार है— उत्कर्षसे जो प्रदेशाप्र उदीर्ण होता है वह आयु कर्ममें सबसे स्तोक है । वेदनीयमें असंख्यातगुणा है । मोहनीयमें असंख्यात-गुणा है । ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय इन प्रकृतियोंमें वह तुल्य व असंख्यातगुणा है । नाम और गोत्रमें तुल्य व असंख्यातगुणा है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें जो प्रदेशाप्र आयुमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । नाम और गोत्रमें

१ ताप्रतौ 'अण्णदरो पच्चक्खाणकसाओ० अण्ण० अपच्चक्खाणक०' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'एवं मंदाणु-भागउदीरणा' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'उक्कस्सए' इति पाठः । ४ ताप्रतौ नास्तीदं वाक्यम् । ५ अ-काप्रत्योः 'णिरयगई देवगई' इति पाठः ।

गाणावरण-दंसणावरण-अंतराइएसु विसेमाहियं । मोहणीए विसे० । वेदणीए विसे०<sup>१</sup> ।  
एवं सव्वासु गदीसु । णवरि मणुसगदीए मूलोघभंगो ।

जहण्णए पयदं— आउअम्मि जं तं थोवं । णामा-गोदेसु देव-णेरइयाणं असंखेज्जगुणं ।  
गाणावरण-दंसणावरण-अंतराइएसु विसेसाहियं । मोहणीए विसे० । एवं सव्वासु गदीसु ।  
एवं गाणावरण-दंसणावरण-पंचंतराइयं ति ( ? ) मणपज्जव० विसेसाहियं । सुद०  
विसे० । मदि० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्चागोदे विसे० ।  
सादासादे विसे० । एवं देवगइदंडओ समत्तो ।

मणुमगदीए जं पेदसग्गं वेदिज्जदि मिच्छत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते असंखे०  
गुणं । सम्मत्ते असंखे० गुणं । अण्णदरअणंताणुवंधिकसाए असंखे० गुणं । केवल-  
णाणावरणे<sup>२</sup> असंखे० गुणं । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । पयलापयला० विसे० ।  
णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसणाव० विसे० । अण्णदरअपच्च-  
क्ख्खाणकसाए विसे० । पच्चक्ख्खाण० विसे० । ओहिणाणाव० अणंतगुणं<sup>३</sup> । ओहिदंस०  
विसे० । मणुसाउअम्मि असंखे० गुणं । ओरालिय० असंखे० गुणं । तेज० विसे० ।

असंख्यातगुणा है । ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायमें विशेष अधिक है । मोहनीयमें विशेष अधिक है । वेदनीयमें विशेष अधिक है । इस प्रकार सब गतियोंमें जानना चाहिये । विशेष इतना है कि उसकी प्ररूपणा मनुष्यगतिमें मूल ओघके समान है ।

जघन्य मूलप्रकृतिदण्डक अधिकारप्राप्त है— जो प्रदेशाग्र [ वेदा जाता है ] वह आयुमें स्तोक है । उससे नाम और गोत्र कर्मोंमें देवों व नारकियोंके असंख्यातगुणा है । ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तरायमें विशेष अधिक है । मोहनीयमें विशेष अधिक है । इसी प्रकार सब गतियोंमें जानना चाहिये । इस प्रकार ज्ञानावरण, दर्शनावरण और पांच अन्तराय तक (?) मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । साता और असाता वेदनीयमें विशेष अधिक है । इस प्रकार देवगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें जो प्रदेशाग्र वेदा जाता है वह मिथ्यात्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वमें असंख्यातगुणा है । अन्यतर अनन्नानुबन्धी कपायमें असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्यान्-गृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अन्यतर अप्रत्याख्यानावरण कपायमें विशेष अधिक है । अन्यतर प्रत्याख्यानावरण कपायमें विशेष अधिक है । अवधि-ज्ञानावरणमें अनन्तगुणा है । अर्वाधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है ।

१ ताप्रतौ 'मोहणीए० वेयणीए० विसेसाहियं' इति पाठः । २ का-ताप्रत्योः 'केवलदंसण०' इति पाठः । ३ काप्रतौ 'असंखे० गुणा' इति पाठः ।

कम्मइय० विसे० । वेउन्विय० विसे० । मणुसगई० संखे० गुणं । जसक्कित्ति-अजस-  
क्कित्तीसु दुगुंछा० संखे० गुणं । भय० विसे० । हस्स० विसे० । सोगे विसे० । रदि-  
अरदि० विसे० । अण्णदरवेद० विसे० । दाणंतराइए विसे० । एवं विसेसाहियकमेण  
णेद्व्वं [जाव] वीरियंतराइयं ति । मणपज्जव० विसे० । सुदणा० विसे० । मदि०  
विसे० । अचक्खु० विसे० । अण्णदरसंजलणकसाए विसे० । [ उच्च ] णीचागोदेसु०  
विसे० । सादासादे० विसे० । आहार० असंखे० । एवं मणुसगइदंडओ समत्तो ।

एइंदिएसु जं पदेसगं वेदिज्जदि मिच्छत्ते तं थोवं । अण्णदरअणंताणुवंधिकसाए  
असंखे० गुणं । केवलणाणाव० असंखेज्जगुणं । पयला० विसेसाहियं । णिद्दा० विसेसाहियं ।  
पयलापयला० विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलदंसण०  
विसे० । अण्णदरअपच्चक्खाणकसाए विसे० । अण्ण० पच्चक्खा० विसे० । तिरिक्खाउअम्मि  
अणंतगुणं । ओरालिय० संखेज्जगुणं । तेज० विसेसाहियं । कम्मइय० विसे० । वेउन्विय०  
विसे० । तिरिक्खिगई० संखेज्जगुणं । जसक्कित्ति-अजसक्कित्तीसु विसे० । दुगुंछाए० संखे०  
गुणं । भए० विसे० । हस्स-सोगे० विसे० । णिद्दा० विसे० । रदि-अरदासु० विसे० ।

कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरमें विशेष अधिक है । मनुष्यगतिमें  
संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिमें [ संख्यातगुणा ] है । जुगुप्सामें संख्यात-  
गुणा है । भयमें विशेष अधिक है । हास्यमें विशेष अधिक है । शोकमें विशेष अधिक  
है । रति और अरतिमें विशेष अधिक है । अन्यतर वेदमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें  
विशेष अधिक है । इस प्रकार वीर्यान्तराय तक विशेष अधिक क्रमसे ले जाना चाहिये । आगे  
मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें  
विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अन्यतर संज्वलन कपायमें विशेष  
अधिक है । ऊंच और नीच गोत्रोंमें विशेष अधिक है । साता और असाता वेदनीयमें विशेष  
अधिक है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । इस प्रकार मनुष्यगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

एकेन्द्रिय जीवोंमें जो प्रदेशाग्र वेदा जाता है वह मिथ्यात्वमें स्तोक है । अन्यतर अनन्तानु-  
वन्धी कषायमें असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है । प्रचलामें विशेष  
अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष  
अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अन्यतर  
अप्रत्याख्यानावरण कषायमें विशेष अधिक है । अन्यतर प्रत्याख्यानावरण कषायमें विशेष  
अधिक है । तिर्यगायुमें अनन्तगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें  
विशेष अधिक है । कार्मणशरीरमें विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरमें विशेष अधिक है ।  
तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें  
संख्यागुणा है । भयमें विशेष अधिक है । हास्य और शोकमें विशेष अधिक है । निद्रामें

१ काप्रतौ 'जसगिक्किअजसक्कित्तसु० दुगुंछा०', ताप्रतौ 'जसक्कित्ति० अजसक्कित्तीसु, दुगुंछा०' इति पाठः ।

२ अ-काप्रत्योः 'जं' इत्येतत्पदं नास्ति ।

णवुंस० विसे० । दाणंतराइए विसे० । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं  
ति । मणपज्जव० विसे० । ओहिणा० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहि-  
दंस० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । अण्णदरसंजलणकसाए  
विसे० । णीचागोदे० विसे० । सादासादे० विसे० । एवमेइंदियदंडओ समत्तो ।  
एवमुदओ समत्तो ।

जा विपरिणामेणोपक्रमेण मग्गणां सा चेव मोक्खाणिओगद्वारे कायव्वा । उत्तर-  
पयडिसंकमे आहार० संक्रामया थोवा । सम्मत्ते० असंखे० गुणा । मिच्छत्ते० असंखे०  
गुणा । सम्मामिच्छत्ते० विसेमा० । देवगदीए० असंखे० गुणा । णिरयगदीए०  
विसे० । वेडव्विय० विसे० । णीचागोदस्स० अणंतगुणं । असाद० संखे० गुणं ।  
सादस्स० संखे० गुणं । उच्चागोदस्स० विसे० । मणुसगदीए० विसे० ।  
अणंताणुवंधिचउक्कस्स० विसे० । जसक्कित्तीए विसे० । अट्टकसायाणं० विसे० थीण-  
गिद्धितियस्स० तिरिक्खगदीए० विसे० । लोहसंजलणाए विसे० । णवुंस० विसे० ।  
इत्थि० विसे० । छण्णोकसायाणं विसे० । पुरिसवेद० विसे० । कोहसंजलण० विसे० ।

विशेष अधिक है । रति और अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है ।  
दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेष अधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना  
चाहिये । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है ।  
श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें  
विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक  
है । अन्यतर संज्वलन कपायमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । साता और  
असाता वेदनीयमें विशेष अधिक है । इस प्रकार एकेन्द्रियदण्डक समाप्त हुआ । इस प्रकार  
उदय समाप्त हुआ ।

जो विपरिणामोपक्रमसे मार्गणा है वह मोक्ष अनुयोगद्वारमें की जावेगी । उत्तर  
प्रकृतिसंक्रममें आहारशरीरके संक्रामक स्तोक हैं । सम्यक्त्व प्रकृतिके संक्रामक असंख्यातगुणे  
हैं । मिथ्यात्वके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके संक्रामक विशेष अधिक हैं ।  
देवगतिके संक्रमक असंख्यातगुणे हैं । नरकगतिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । वैक्रियिक-  
शरीरके संक्रामक विशेष अधिक हैं । नीचगोत्रके संक्रामक अनन्तगुणे हैं । असातावेदनीयके  
संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सातावेदनीयके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । उच्चगोत्रके संक्रामक  
विशेष अधिक हैं । मनुष्यगतिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्कके संक्रामक  
विशेष अधिक हैं । यशकीर्तिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । आठ कपायोंके संक्रामक विशेष  
अधिक हैं । स्थानगृद्धिन्निके संक्रामक.....(?) । तिर्यगगतिके संक्रामक विशेष अधिक  
हैं । संज्वलन लोभके संक्रामक विशेष अधिक हैं । नपुंसकवेदके संक्रामक विशेष अधिक हैं ।  
श्रीवेदके संक्रामक विशेष अधिक हैं । छह नोकपायोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । पुरुषवेदके

१ ताप्रती 'विपरिणामोपक्रमेण' इति पाठः । २ अ-का-ताप्रतिपु 'गम्मणा', मप्रतौ 'कम्मणा' इति पाठः ।

माण० विसे० । माया० विसे० । पंचणाणावरण-छदंसणावरण-पंचंतराइय-ओरालिय-तेजा-कम्मइय-अजसक्तीणं विसेसाहियं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

मोहणीयस्स पयडिट्ठाणसंकमेण णवण्हं संकमया थोवा । छण्णं संकामया विसेसाहिया । चोदसण्णं संखेज्जगुणं । पंचण्हं संखे० गुणं । अट्ठण्हं विसेसाहियं । अट्ठारसण्हं विसे० । उणवीसण्णं<sup>१</sup> विसेसाहियं । चदुण्हं संखे० गुणं । सत्तण्हं विसे० । बीसण्हं विसे० । एक्किस्से संखे० गुणं । दोण्हं विसे० । दसण्हं विसे० । एकारसण्हं विसे० । वारसण्हं विसे० । तिण्हं संखे० गुणं । तेरसण्हं संखेज्जगुणं । छव्वीसण्हं असंखे० गुणं । एकवीसण्हं असंखे० गुणं । तेवीसण्हं असंखे० गुणं । सत्तवीसण्हं असंखे० गुणं । पणुवीसण्हं अतणंगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

उक्कस्मट्ठिदिसंकमो सुगमो । जहण्णट्ठिदिसंकमे पयदं— पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-सम्मत्त-लोहसंजलण-आउचउक्क-पंचंतराइयाणं जाओ ट्ठिदीओ संकामिज्जादि ताओ थोवाओ । णिदा-पयलाणं तत्तिओ चैव । जट्ठिदी<sup>२</sup> असंखेज्जं० । णिदा-पयलाणं जट्ठिदी

संक्रामक विशेष अधिक हैं । संज्वलन क्रोधके संक्रामक विशेष अधिक हैं । संज्वलन मानके संक्रामक विशेष अधिक हैं । संज्वलन मायाके संक्रामक विशेष अधिक हैं । पांच ज्ञानावरण, छह दर्शनावरण, पांच अन्तराय, औदारिकशरीर, तैजसशरीर, कर्मणशरीर और अयशकीर्तिके संक्रामक विशेष अधिक हैं । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

प्रकृतिस्थानसंक्रमकी अपेक्षा मोहनीयकी नौ प्रकृतियोंके संक्रामक स्तोक हैं । उसकी छह प्रकृतियोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । चौदह प्रकृतियोंके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । पांच प्रकृतियोंके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । आठ प्रकृतियोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । अठारह प्रकृतियोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । उन्नीस प्रकृतियोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । चार प्रकृतियोंके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । सात प्रकृतियोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । बीस प्रकृतियोंके संक्रामक विशेष अधिक हैं । एकके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । दोके संक्रामक विशेष अधिक हैं । दसके संक्रामक विशेष अधिक हैं । ग्यारहके संक्रामक विशेष अधिक हैं । बारहके संक्रामक विशेष अधिक हैं । तीनके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । तेरहके संक्रामक संख्यातगुणे हैं । छव्वीसके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । इक्कीसके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । तेईसके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । सत्ताईसके संक्रामक असंख्यातगुणे हैं । पच्चीसके संक्रामक अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

उत्कृष्ट स्थितिसंक्रम सुगम है । जघन्य स्थितिसंक्रम अधिकार प्राप्त है— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, सम्यक्त्व, संज्वलन लोभ, चार आयु कर्म और पांच अन्तराय; इनकी जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे स्तोक हैं । निद्रा और प्रचलाकी उतनी मात्र ही हैं । उनकी जस्थिति

१ अ-काप्रत्योः 'ऊणवीसयं' इति पाठः । २ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'जट्ठिदी' इति पाठः । अग्नेऽप्ययमेव पाठक्रमः । ३ ताप्रती 'संखेज्ज' इति पाठः ।

संखेज्जगुणं । देवगइ-वेउच्चिय-आहार-णीचागोद-अजसकित्तीणं जाओ द्विदीओ ताओ संखे० गुणाओ । ओरालिय-तेजा-कम्मइय-उच्चागोद-जसकित्ति-मणुसगदीणं जाओ द्विदीओ ताओ विसेसाहियाओ' । सव्वासिं जड्विदीओ विसे० । सादासादाणं जह० विसे० । जड्विदी० विसे० । मायासंजलणाए जह० संखे० गुणं । जड्विदि० विसे० । माणसंजलणाए जह० विसे० । जड्विदि० विसे० । कोहसंजलणाए जह० वि० । जड्विदि० विसे० । पुरिस० जह० संखे० गुणं । जड्विदि विसे० । इत्थि-णवुंसयवेदाणं जह० असंखे० गुणं । थीणगिद्वितियस्स जह० असंखे० गुणं । जड्विदि० विसे० । णिरयगइ-तिरिक्ख-गइणामाणं जह० असं० गुणं । जड्विदि० विसे० । अट्टण्हं कसायाणं जह० असं० गु० । जड्विदि० विसे० । सम्मामिच्छत्तस्स जह० संखे० । जड्विदि० विसे० । मिच्छत्त० जह० असंखे० । जड्विदि० विसे० । अणंताणुदंधिचउक्कस्स जह० असंखे० गुणं । जड्विदि० विसे० । एवमाघदंडओ समत्तो ।

जहण्णेण सञ्चमंदाणुभागं लोहसंजलणं । मायासंज० अणंतगुणं । माणसंज० अणंतगुणं । कोहसंज० अणंतगुणं । सम्मत्त० अणंतगुणं । पुरिस० अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त० अणंतगुणं । मणपज्जव० अणंतगुणं । दाणंतराइय० अणंतगुणं ।

असंख्यातगुणो है । निद्रा और प्रचलाकी जस्थिति संख्यातगुणी है । देवगति, वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, नीचगोत्र और अयशकीर्ति; इनकी जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे संख्यातगुणो हैं । औदारिकशरीर, तैजसशरीर, कर्मणशरीर, उच्चगोत्र, यशकीर्ति और मनुष्यगतिकी जो स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे विशेष अधिक हैं । इन सबकी जस्थितियां विशेष अधिक हैं । साता ओर असाता वेदनोयकी जो जघन्य स्थितियां संक्रान्त होती हैं वे विशेष अधिक हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । संज्वलन मायाकी उक्त जघन्य स्थितियां संख्यातगुणी हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । संज्वलन मानकी वे जघन्य स्थितियां विशेष अधिक हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधकी वे जघन्य स्थितियां विशेष अधिक हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । पुरुषवेदकी वे जघन्य स्थितियां संख्यातगुणी हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । स्त्रीवेद और नपुंसकवेदको वे जघन्य स्थितियां असंख्यातगुणी हैं । स्त्यानगृद्धित्रयकी वे जघन्य स्थितियां असंख्यातगुणी हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । नरकगति और तिर्यग्गति नामकर्मोंकी वे जघन्य स्थितियां असंख्यातगुणी हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । आठ कपायोंकी वे जघन्य स्थितियां असंख्यातगुणी हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । सम्यग्मिथ्यात्वकी वे जघन्य स्थितियां संख्यातगुणी हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । मिथ्यात्वकी वे जघन्य स्थितियां असंख्यातगुणी हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धिचतुष्ककी वे जघन्य स्थितियां असंख्यातगुणी हैं । जस्थिति विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

जघन्यकी अपेक्षा सबसे मंद अनुभागवाला संज्वलन लोभ है । संज्वलन माया अनन्तगुणी है । संज्वलन मान अनन्तगुणा है । संज्वलन क्रोध अनन्तगुणा है । सम्यक्त्व अनन्तगुणा है । पुरुषवेद अनन्तगुणा है । सम्यग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा है ।

ओहिणाण० अणंतगुणं । ओहिदंस० अणंतगुणं । लाहंतराइयाणं अणंतगुणं । सुद०  
 अचक्खु० भोगंतराइयाणं अणंतगुणं । चक्खु० अणंतगुणं । मदिआवरण-परिभोगं-  
 तराइयाणं अणंतगुणं । केवलणाण-केवलदंसणावरण-वीरियंतराइयाणं अणंतगुणं ।  
 पयला० अणंतगुणं । णिहा० अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं ।  
 दुगुंल्ल० अणंतगुणं । भय० अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । अरदीए० अणंतगुणं ।  
 इत्थि० अणंतगुणं । णवुंस० अणंतगुणं । अणंताणुवंधिमाणे० अणंतगुणं । कोहे० विसेसा-  
 हियं । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । वेउच्चिय० अणंतगुणं । तिरिक्खाउअम्मि०  
 अणंतगुणं । मणुसाउ० अणंतगुणं । णिरयगइ० अणंतगुणं । मणुसगइ० अणंतगुणं ।  
 देवगइ० अणंतगुणं । उच्चागोद० अणंतगुणं । णिरयाउ० अणंतगुणं । देवाउ० अणंत-  
 गुणं । ओरालिय० अणंतगुणं । तेजइय० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । तिरिक्ख-  
 गइ० अणंतगुणं । णीचागोद०अजसक्कित्तीओ अणंतगुणं । पयलापयला०  
 अणंतगुणं । णिहाणिहा० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं । अपच्चक्खाणमाणे०  
 अणंतगुणं । कोहे० विसेसाहियं । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे०  
 अणंतगुणं । कोहे० विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । असाद० अणंतगुणं ।

दानान्तराय अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणा  
 है । लाभान्तराय अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण, अचक्षुदर्शनावरण और भोगान्तराय अनन्तगुणे  
 हैं । चक्षुदर्शनावरण अनन्तगुणा है । मतिज्ञानावरण और परिभोगान्तराय अन्तगुणे है ।  
 केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण और वीर्यान्तराय अनन्तगुणे हैं । प्रचला अनन्तगुणी है ।  
 निद्रा अनन्तगुणी है । हास्य अनन्तगुणा है । रति अनन्तगुणी है । जुगुप्सा अनन्तगुणी है ।  
 भय अनन्तगुणा है । शोक अनन्तगुणा । अरति अनन्तगुणी है । स्त्रीवेद अनन्तगुणा है ।  
 नपुंसकवेद अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी मान अनन्तगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोध विशेष  
 अधिक है । अनन्तानुबन्धी माया विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभ विशेष अधिक है ।  
 वैक्रियिकशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यगायु अनन्तगुणी है । मनुष्यायु अनन्तगुणी है । नरकगति  
 अनन्तगुणी है । मनुष्यगति अनन्तगुणी है । देवगति अनन्तगुणी है । उच्चगोत्र अनन्तगुणा है ।  
 नारकायु अनन्तगुणी । देवायु अनन्तगुणी है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा है । तैजसशरीर  
 अनन्तगुणा है । कर्मणशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यंगति अनन्तगुणी है । नीचगोत्र और  
 अयशकीर्ति अनन्तगुणे हैं । प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है । निद्रानिद्रा अनन्तगुणी है ।  
 स्थानगृद्धि अनन्तगुणी है । अप्रत्याख्यानावरण मान अनन्तगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोध  
 विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण माया विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभ  
 विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मान अनन्तगुणा है । प्रत्याख्यानावरण क्रोध विशेष  
 अधिक है । प्रत्याख्यानावरण माया विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभ विशेष अधिक

१ ताप्रतौ 'माणसंजलणं० कोहसंजलणं० सम्मत्त० पुरिस० सम्मामिच्छत्त० मणपज्जव० दाणंतराइय०  
 ओहिणाण० ओहिदंसण० लाहंतराइयाणं अणंतगुणं ।' इति पाठः ।

मिच्छत्ते० अणंतगुणं । जस० अणंतगुणं । साद० अणंतगुणं । आहार० अणंतगुणं ।  
एवमोघदंडओ समत्तो ।

जहणणट्टिदिसंक्रमे उक्कस्से वा जं पदेसग्गं सम्मत्ते<sup>१</sup> संकामिज्जदि तं थोवं ।  
केवलणाणावरणे असंखेज्जगुणं । केवलदंसणावरणे विसेसाहियं । पयला० असंखे०  
गुणा । णिहा० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए  
विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० ।  
लोहे विसे० । मिच्छत्ते विसे० । सम्मामिच्छत्ते विसे० । पयलापयला० संखे० गुणं ।  
णिहाणिहा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । आहार० अणंतगुणं । जसक्कित्ति० असंखे०  
गुणं । वेउन्विय० संखे० गुणं । ओरालिय० विसे० । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० ।  
देवगइ० संखे० गुणं । मणुसगइ० विसे० । साद० संखे० गुणं । लोभसंजलण०  
संखे० गुणं । दाणंतराइय० विसे० । एवं विसेसाहियं ताव णेद्वं जाव विरियंतराइयं  
ति । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० ।

है । असातावेदनीय अनन्तगुणा है । मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । यशकीर्ति अनन्तगुणी है ।  
है । सातावेदनीय अनन्तगुणा है । आहारशरीर अनन्तगुणा है । इस प्रकार ओघदण्डक  
समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थितिसंक्रम अथवा उत्कृष्ट स्थितिसंक्रममें जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्व प्रकृतिमें संक्रान्त  
कराया जाता है वह स्तोक है । केवलज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणमें  
विशेष अधिक है । प्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्याना-  
वरण मानमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्याना-  
वरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्याना-  
वरण मानमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्याना-  
वरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है ।  
मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें  
संख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्थानगृद्धिमें विशेष अधिक है ।  
आहारशरीरमें अनन्तगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें  
संख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है । तैजसशरीरमें विशेष  
अधिक है । कामेणशरीरमें विशेष अधिक है । देवगतिमें संख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें  
विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । संज्वलन लोभमें संख्यातगुणा है ।  
दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार वीर्यान्तराय तक विशेष अधिक क्रमसे ले जाना  
चाहिये । आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक  
है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शना-

१ अ-काप्रत्योः 'सम्मत्तं' इति पाठः । २ अप्रतावतः प्राक् 'अपच्चक्खाणमाणे विसे०, कोहे विसे०, मायाए  
विसे०, लोहे विसे०' इत्यधिकः पाठोऽस्ति, ताप्रतावपि सः [ ] कोष्ठकान्तर्गतोऽस्ति ।



ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्चागोद० संखेज्जगुणं ।  
णिरयगइ० असंखे० गुणं । जसक्कित्ति० असंखे० गुणं । असादे० संखे० गुणं । णाचा-  
गोदे० विसे० । तिरिक्खगदीए० असंखे० गुणं । हस्से० संखे० गुणं । रदीए० विसेसा-  
हियं । इत्थि संखे० । सोगे० विसे० । अरदि० विसे० । णवुंम० विसे० । दुगुंछ०  
विसे० । भय० विसे० । पुरिस० संखे० गुणं । कोह० संखे० गुणं । लोह० संखे०  
गुणं । माण० विसे० । माय० विसेसाहियं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

णिरयगदीए जं पदेसग्गं संक्रामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते० असंखे०  
गुणं । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे०  
विसे० । पच्चक्खाणमाणे० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० ।  
केवलणाणा० विसे० । पयला० विसे० । णिद्दा० विसे० । पयलापयला० विसे० ।  
णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलदंस० विसे० । मिच्छत्ते० असंखे०  
गुणं । अणंताणुवंधिमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे०  
विसे० । णिरयगदीए० अणंतगुणं । वेउव्विय० असंखे० गुणं । देवगइ० संखे० गुणं ।

वरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष  
अधिक है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यात-  
गुणा है । अमानावेदनीयमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । तिर्यंगतिमें  
असंख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा  
है । शोकमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है ।  
जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । क्रोधमें  
संख्यातगुणा है । लोभमें संख्यातगुणा है । मानमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक  
है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्व प्रकृतिमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें  
उससे असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण  
क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्याना-  
वरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण  
क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें  
विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें  
विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यान-  
गृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा  
है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है ।  
अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें  
अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें संख्यातगुणा है । आहार-

आहार० असंखे० गुणं । ओरालिय० संखे गुणं । तेज० विसेसाहियं । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखेज्जगुणं । तिरिकखगईं विसे० । मणुसगईं विसे० । हस्से० संखे० गुणं । रदि० विसे० । साद० संखे० गुणं । इत्थि० संखे० गुणं । सोग० विसे० । अरदि० विसे० । णवुंस० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । पुरिस० विसे० । माणसंजलण० विसे० । कोह० विसे० । मायाए० विसे० । लोह० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असाद० संखे० गुणं । उच्चागोद० विसे० । णीचागोद० विसे० । एवं णिरयगइदंडओ समत्तो ।

एवं देवगदीए वि०<sup>१</sup> । तिरिकखगदीए विसेसो—<sup>२</sup> उक्कस्सेण जं पदेसगं संक्रामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते० संखे० गुणं । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० ।

शरीरमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कामणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीतिमें संख्यातगुणा है । तिर्यंगतिमें विशेष अधिक है । मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । शोकमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार वीर्यान्तराय तक विशेषाधिक-क्रमसे ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अधि-दर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

इसी प्रकार प्रकृत प्ररूपणा देवगतिमें भी करना चाहिये । तिर्यंगतिमें विशेषता है—उत्कर्षसे जो प्रदेशाप्र सम्यक्त्वमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें संख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष

१ काप्रती 'वि' इति पाठः । २ अ-ताप्रत्योः 'वि०' इति पाठः ।  
छ, से. ७१

णिद्दा० विसे० । पयलापयला० विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । धीणगिद्धि० विसे० ।  
 केवलदंसणा० विसे० । मिच्छत्ते० असंखे० गुणं । अणंताणुबंधिमाणे० असंखे० गुणं ।  
 कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । णिरयगईए० अणंतगुणं । आहार०  
 असंखे० गुणं । जसगित्ति० असंखे० गुणं । वेउच्चिय० संखे० गुणं । ओरालिय०  
 विसे० । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । देवगइ०  
 विसे० । तिरिक्खगइ० विसे० । मणुसगइ० विसे० । हस्स० संखे० गुणं । रदि०  
 विसे० । साद० संखे० गुणं । णवुंसयवेद० संखे० गुणं । सोगे० विसे० । अरदि०  
 विसे० । णवुंस० (?) विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । पुरिस० विसे० । माण-  
 संजलण० विसे० । कोह० विसे० । माया० विसे० । लोह० विसे० । दाणंतराइय०  
 विसे० । लाहंतराइय० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण णेदच्चं जाव विरियंतराइयं ति ।  
 मणपज्ज० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण०  
 विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । साद० संखे० गुणं । उच्चागोदे०  
 विसे० । णीचागोद० विसे० । एवं तिरिक्खगइदंडओ समत्तो । मणुसेसु ओष-

अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । आहारशरीरमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । देवगतिमें विशेष अधिक है । तिर्यगतिमें विशेष अधिक है । मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । साताचेदनीयमें संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है । शोकमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अंधविदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । इस प्रकार तिर्यगतिदण्डक समाप्त हुआ । मनुष्योंमें

दंडओ समत्तो (१) ।

एइंदिएसु उक्खसेण जं पदेसग्गं संकामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते० असंखे० गुणं । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे' विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे०<sup>२</sup> । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिदा० विसे० । पयलापयला० विसे० । णिदाणिदा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलदंस० विसे० । णिरयगइ० अणंतगुणं । आहार० असंखे० । जसकित्ति० असंखे० गुणं । वेउन्विय० संखे० गुणं । ओरालिय० विसे० । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । देवगइ० विसे० । तिरिक्खगइ० विसे० । मणुसगइ० विसे० । हस्स-भये<sup>३</sup>० संखे० गुणं । रदि० विसे० । साद० संखे० गुणं । इत्थि० संखे० गुणं । सोगे० विसे० । अरदि० विसे० । णवुंस० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । माणसंजलण० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । दाणंतराइयं विसे० । एवं विसेसाहिय-कमेण पेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद०

ओवदण्हकके समान प्ररूपणा है ।

एकेन्द्रिय जीवोंमें उत्कर्षसे जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्व प्रकृतिमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कामर्णशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । देवगतिमें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें विशेष अधिक है । मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है । हास्य और भयमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । शोकमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार वीर्यान्तराय तक विशेष अधिक क्रमसे ले जाना चाहिये । आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधि-

१ ताप्रती 'संजलणमाणे (पच्चक्खाणमाणे) इति पाठः । २ अतोऽग्रे अ-काप्रत्योः 'संजलणमाणे० विसे० कोहे० विसे० मायाए० विसे० लोहे० विसे०' इत्येतावनाधिकः पाठोऽस्ति । ३ काप्रती 'हस्से० भय०', ताप्रती 'हस्से [भय०]' इति पाठः ।

विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० ।  
असाद० संखे० गुणं । उच्चागोदे० विसे० । णीचागोदे विसे० । एवमेइंदियदंडओ समत्तो ।

जहण्णेण जं पदेसग्गं सम्मत्ते संकामिज्जदि तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते० असंखे०  
गुणं । मिच्छत्ते० असंखे० गुणं । अणंताणुवंधिमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० ।  
मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिदाणिदा० विसे० ।  
थीणगिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए०  
विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० ।  
[ लोहे० विसे० ] । पयला० विसे० । णिदा० विसे० । केवलदंसण० विसे० । णिरयगइ०  
अणंतगुणं । देवगइ० असंखे० गुणं । वेउच्चिय० संखे० गुणं । आहार० असंखे०  
गुणं । मणुसगइ० संखे० गुणं । उच्चागोद० संखे० गुणं । तिरिक्खगइ० असंखे०  
गुणं । णवुंस० असंखे० गुणं । णीचागोद० संखे० गुणं । इत्थि० असंखे० गुणं ।  
ओरालिय० असंखे० गुणं । कोहसंजल० असंखे० । माण० विसे० । पुरिस० विसे० ।  
माय० विसे० । जसकित्ति० असंखे० गुणं । तैज० संखे० गुणं । कम्मइय० विसे० ।

ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष  
अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है ।  
चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें विशेष  
अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । इस प्रकार एकेन्द्रियदण्डक समाप्त हुआ ।

जघन्य रूपसे जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्व प्रकृतिमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्य-  
ग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें  
असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष  
अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है ।  
निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें  
असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें  
विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें  
विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष  
अधिक है । [ प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । ] प्रचलामें विशेष अधिक है ।  
निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा  
है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारशरीरमें असंख्यात-  
गुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । तिर्यग्गतिमें असंख्यात-  
गुणा है । नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा  
है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन मानमें  
विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । यशकीर्तिमें  
असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है ।

अजसकित्ति० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । साद० संखे० गुणं । सोगे० असंखे० । अरदि० विसे० । दुगुंछा० विसे० । भय० विसे० । लोहसंजल० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखेज्जगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

णिरयगदीए जं पदेसग्गं संकामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते० असंखे० गुणं । मिच्छत्ते० असंखे० गुणं । अणंताणुदंधिमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिदाणिहा० विसे० । धीणगिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिहा विसे० । केवलदंसण० विसे० । आहार० असंखे० गुणं । देवगइ० असंखे० गुणं । मणुसगइ० संखे० गुणं । वेउच्चिय० संखे० गुणं । णिरयगइ० संखे० गुणं ।

अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । साता-वेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें असंख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्वमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्यगभिध्यात्वमें असंख्यातगुणा है । भिध्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुवन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुवन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानुवन्धी लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निदानिद्रामें विशेष अधिक है । स्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । आहार-शरीरमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । नरकगतिमें संख्यातगुणा है । चङ्गोत्रमें संख्यातगुणा है ।

१ ताप्रती 'अणंतगुणा' इति पाठः ।

उच्चागोद० संखे० गुणं । तिरिक्खगइ० असंखे० गुणं । इत्थि संखे० गुणं ।  
 णवुंस० संखे० गुणं । णीचागोद० संखे० गुणं । जसक्कित्ति० असंखे० गुणं । ओरा-  
 लिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसक्कित्ति संखे० गुणं ।  
 पुरिस० संखे० गुणं । हस्स संखे० गुणं । रदि० विसे० । अरदि० संखे० गुणं । सोगे०  
 संखे० गुणं । दुगुंछा० विसे० । भय० विसे० । माणसंजलण विसे० । कोहसंजलण०  
 विसे० । मायाए० विसे० । [ लोहे० विसे० । ] दाणंतराइए० विसे० । एवं विसेसाहिय-  
 कमेण णेद्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद०  
 विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंस० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० ।  
 असादे० संखे० गुणं । एवं णिरयगइदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खेसु जं पदेसग्गं संकामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते० असंखे०  
 गुणं । 'मिच्छत्ते० असंखे० गुणं । अणंताणुवंधिमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० ।  
 मायाए० विसे० । लोहे० विसेसा० । पयलापयला असंखे० गुणं । णिहाणिहा० विसे० ।  
 थीणगिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए  
 विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे०

तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है ।  
 नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा  
 है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कामर्णशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यात-  
 गुणा है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है ।  
 अरतिमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें  
 विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है ।  
 संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । [ संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । ] दानान्तरायमें  
 विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । आगे  
 मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञाना-  
 वरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष  
 अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है ।  
 असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यंचोंमें जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्वमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्यग्मिध्यात्वमें  
 असंख्यातगुणा है । मिध्यात्वमें असंख्यागुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है ।  
 अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानु-  
 बन्धी लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक  
 है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्याना-  
 वरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण  
 लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें

१ ताप्रतौ'नास्तीदं वाक्यम् इति पाठः ।

विसे० । केवलणाणावरण० विसे० । पयला० विसे० । केवलदंसण० विसे० । गिरयगइ० असंखे० गुणं<sup>१</sup> । देवगइ० असंखे० गुणं । वेउव्विय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसगइ० संखे० गुणं । उच्चागोद० संखे० गुणं । ओरालियं० असंखे० गुणं । तिरिक्खगई० संखे० गुणं । इत्थि० संखे० गुणं । णवुंस० संखे० गुणं । णीचागोद० संखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । तेज० संखे० गुणं । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । पुरिस० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे० संखे गुणं । सोगे० संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछा० विसे० । भय० विसे० । माणसंजलण० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । दाणंतराइए० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण पेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मण-पज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखे० गुणं । एवं तिरिक्ख-गइदंडओ समत्तो ।

मणुसगदीए जं पदेसग्गं संकामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते० असंखे० गुणं । मिच्छत्ते० असंखे० गुणं । अणंताणुवंधिमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० ।

विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । तिर्यंगतिमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है । कामणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सतावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । आसातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार तिर्यंगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्वमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है ।

१ ताप्रती 'अणंतगुणा' इति पाठः । २ ताप्रती 'उच्चागोद० संखे० । पुरिस० संखे० । ओरालि०' इति पाठः।



मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिदाणिदा० विसे० ।  
 धीणगिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए०  
 विसे० । लोहे० विसे० । पंचक्खाणमाणे० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० ।  
 लोहे० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिदा० विसे० । केवलदंसण०  
 विसे० । णिरयगइ० अणंतगुणं । देवगइ० असंखे० गुणं । वेउच्चिय० संखे० गुणं ।  
 आहार० असंखे० गुणं । तिरिक्खगइ० असंखे० गुणं । णवुंस० असंखे० गुणं ।  
 उच्चागोद० संखे० गुणं । इत्थि० असंखे० गुणं । मणुमगइ० असंखे० गुणं । ओरालि०  
 असंखे० गुणं । कोहसंजलण० असंखे० गुणं । माण० विसे० । पुरिस० विसे० । माया०  
 विसे० । उच्चागोद० असंखे० गुणं । जसक्कित्ति० असंखे० गुणं । तेज० संखे०  
 गुणं । कम्म० विसे० । अजसक्कित्ति० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि०  
 विसे० । सादे० असंखे० गुणं । सोगे० संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछा०  
 विसे० । भय० विसे० । लोहसंजलण० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । एवं  
 विसेसाहियक्रमेण णेद्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाण०

अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानु  
 बन्धी लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष  
 अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अपत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है ।  
 अपत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अपत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है ।  
 अपत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है ।  
 प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है ।  
 प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें  
 विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है ।  
 नरकगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है ।  
 आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । तिर्यगतिमें असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें असंख्यात-  
 गुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा  
 है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन मानमें  
 विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है ।  
 उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है । यशक्रीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तेजसशरीरमें संख्यातगुणा  
 है । कामेणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशक्रीर्तिमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा  
 है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें असंख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है ।  
 अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन  
 लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे  
 वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अर्वाधज्ञानावरणमें

१ ताप्रतावतः प्राक् 'पयलापयला० असंखे० गुणा' लोहे विसे०' इत्येतावानयं पाठः पुनर्मुद्रितोऽस्ति  
 कोष्ठकस्थः ।

विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंमण० विसे० । अचक्खु० विसे० ।  
 चक्खु० विसे० । असाद० संखेज्जगुणं । एवं मणुसगइदंडओ समत्तो ।  
 देवगदीए जं पदेसग्गं संकामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते० असंखे०  
 गुणं । मिच्छत्ते असंखे० गुणं । अणंताणुवंधिमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० ।  
 मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिदाणिदा०  
 विसे० । धीणगिद्धि० विसे० । अपक्खखाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० ।  
 मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पक्खखाणमाणे० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए०  
 विसे० । लोहे० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिदा० विसे० ।  
 केवलदंसण० विसे० । आहार० अणंतगुणं । णिरयगइ० असंखे० गुणं । तिरिक्खगइ०  
 असंखे० गुणं । णवुंस० संखे० गुणं । उच्चागोद० संखे० गुणं । इत्थि० असंखे० गुणं ।  
 देवगइ० असंखे० गुणं । वेउच्चिय० संखे० गुणं । मणुसगइ० असंखे० गुणं । ओरा-  
 लिय० असंखे० गुणं । उच्चागोद० असंखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । तेज०  
 संखे० गुणं । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । पुरिस० संखे० गुणं ।

विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है ।  
 अर्वाधदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शना-  
 वरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार मनुष्यगतिदण्डक  
 समाप्त हुआ ।

देवगतिमें जो प्रदेशाप्र सम्यक्त्वमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्यग्मिध्यात्वमें  
 असंख्यातगुणा है । मिध्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है ।  
 अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानु-  
 बन्धी लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक  
 है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्या-  
 ख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है ।  
 अत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है ।  
 प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है ।  
 प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें  
 विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । आहारक-  
 शरीरमें अनन्तगुणा है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । तिर्यगतिमें असंख्यातगुणा है ।  
 नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है ।  
 देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा  
 है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें  
 असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयश-  
 कीर्तिमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें

हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । साद० संखे० गुणं । सोगे० संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । कोहे० विसे० । माणे० विसे० । लोहे० विसे० । मायाए० विसे० । दाणंतराइए० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण षोदच्चं जाव विरियंतराइयं ति । मणपञ्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असाद० संखे० गुणं । एवं देवगइदंडओ समत्तो ।

[ एइंदिएसु ] जं पदेसग्गं संकामिज्जदि सम्मत्ते तं थोवं । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणं । अणंताणुवंधिमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिद्दा०<sup>२</sup> विसे० । पयलापयला० विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलदंसणा० विसे० । णिरयगई० अणंत-

विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । [ संज्वलन ] क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिक-क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधि-ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार देवगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

[ एकेन्द्रिय जीवोंमें ] जो प्रदेशाग्र सम्यक्त्वमें संक्रान्त होता है वह स्तोक है । सम्य-गिमथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी क्रोधमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मायामें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी लोभमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण क्रोधमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मायामें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानर्गुद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें

१ ताप्रतौ 'लोहे विसे० । केवलणाणे विसे० । पयला० विसे० । अपच्च-' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'लोहे विसे० । केवलणाण० विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे०, कोहे विसे०, माया० विसे०, लोहे० विसे० । णिद्दा०' इति पाठः ।

गुणं । देवगई० असंखे० गुणं । वैउच्चिय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसगई० असंखे० गुणं । उच्चागोदे० संखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । ओरालिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्म० विसे० । तिरिक्खगई० संखे० गुणं । अजसकित्ति० संखे० गुणं । णीचागोद० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे० संखे० गुणं । सोग० संखे० गुणं । अरदि० विसे० । णवुंस० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसेसा० । माणसंलग्ग० विसे० । कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे विसे० । दाणंतराइए० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंस० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखे० गुणं । णीचागोदे० विसेसाहियं । एवमेइंदियदंडओ समत्तो । एवं पदेससंकमो समत्तो ।

लेस्सा त्ति अणियोगद्वारे तत्थं इमाणि अट्ठ पदाणि । तं जहा— लेस्साणिवखेवे १ लेस्साणयपरूवणा २ लेस्साणिरूवणा ३ सेस्सासंकमणिव्वत्ती ४ लेस्सावणसमोदारो ५ लेस्सावणचउरंसे ६ लेस्साट्ठाणपरूवणा ७ लेस्सासरीरसमोदारो चेदि ८ । एवं लेस्साणिवखेवेत्ति समत्तमणियोगद्वारं ।

असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है । स्वगोत्रमें संख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेष अधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अविधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अविधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षु-दर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । इस प्रकार एकेन्द्रियदण्डक समाप्त हुआ । इस प्रकार प्रदेशसंक्रम समाप्त हुआ ।

लेइया अनुयोगद्वारमें वहां ये आठ पद हैं । वे ये हैं— १ लेइयानिक्षेप, २ लेइयानय-परूवणा, ३ लेइयानिरूपणा, ४ लेइयासंकमणनिर्वृत्ति, ५ लेइयावर्णसमवतार, ६ लेइया-वर्णचतुरंश, ७ लेइयास्थानपरूवणा और ८ लेइयाशरीरसमवतार । इस प्रकार लेइयानिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

१ ताप्रती 'तस्व' इति पाठः । २ ताप्रती 'लेस्साअंतरविहाणे' इति पाठः ।

लेस्सापरिणामे त्ति अणिओगदारे दस वित्थरपदाणि । तं जहा— लेस्सापरिणामे १ लेस्सापच्चयविहाणे २ लेस्सापदविहाणे ३ लेस्सासामित्तविहाणे ४ लेस्साकालविहाणे ५ लेस्साअंतरविहाणे ६ लेस्सातिच्च-मंददाए ७ लेस्साट्टाणपरूवणा ८ लेस्साट्टाणाणं अप्पावहुअं ९ लेस्सागइसमोदारो १० । एवं लेस्सापरिणामे त्ति सम्मत्तमणिओगदारं ।

लेस्साकम्ममे त्ति अणिओगदारे पंचविधियपदाणि । तं जहा— लेस्सासंकमे १ लेस्साट्टाणसंकमे २ लेस्साट्टाणप्पावहुए ३ लेस्साअट्टासमोदारो ४ लेस्साअट्टासंकमे ५ । किण्हलेस्सादो संकिलेसंतो अण्णलेस्सं ण संकमदि, विसुज्झंतो सट्टाणे छट्टाणपदिदाणि ओसरदि, णील्लेस्सं वा संकमदि<sup>३</sup>, ठाणे अणंतगुणहीणे पददि । णीलादो संकिलेस्संतो सट्टाणे छट्टाणपदिदाणि ओसरदि, किण्णलेस्सं संकमदि<sup>४</sup> ठाणे अणंतगुणे; तदो विसुज्झंतो सट्टाणे छट्टाणपदिदाणि ओसरइ, काउं वा संकमदि ट्टाणे अणंतगुणहीणे । काउलेस्सादो<sup>५</sup> संकिलेसंतो सट्टाणे छट्टाणपदिदाणि ओसरइ, णील्लेस्सं वा संकमदि<sup>६</sup> ट्टाणे अणंतगुणे; विसुज्झंतो सट्टाणे ओसरदि छट्टाणपदिदाणि, तेउं वा संकमदि ट्टाणे अणंतगुणहीणे । तेउलेस्सादो संकिलेसंतो<sup>७</sup> सट्टाणे छट्टाणपदिदाणि ओसरदि, काउं वा संकमदि ट्टाणे

लेइयापरिणाम अनुयोगद्वारमें दस विस्तारपद हैं । वे ये हैं— १ लेइयापरिणाम, २ लेइया-प्रत्ययविधान, ३ लेइयापदविधान, ४ लेइयास्वामित्वविधान, ५ लेइयाकालविधान, ६ लेइयाअन्तर-विधान, ७ लेइयातीव्र-मंदता, ८ लेइयास्थानपरूपणा, ९ लेइयास्थानोंका अल्पबहुत्व और १० लेइयागतिसमवतार । इस प्रकार लेइयापरिणाम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

लेइयाकर्म अनुयोगद्वारमें पंचविधिक पद हैं । वे ये हैं— १ लेइयासंक्रम, २ लेइयास्थान-संक्रम, ३ लेइयास्थानअल्पबहुत्व, ४ लेइयाट्टासमवतार और ५ लेइयाट्टासंक्रम । कृष्णलेइयासे संक्लेशको प्राप्त हुआ जीव अन्य लेइयामें संक्रमण नहीं करता, उससे विशुद्धिको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें पड़ता है अथवा नीललेइयामें संक्रमण करता है— अर्थात् अनन्तगुणे हीन नीललेइया रूप परस्थानमें जाता है । नीललेइयासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे गिरता है अथवा अनन्तगुणे परस्थानमें कृष्णलेइयामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ स्वस्थानमें छह स्थानोंमें गिरता है, अथवा अनन्तगुणी हीन परस्थान-भूत कापोतलेइयामें संक्रमण करता है । कापोतलेइयासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे पड़ता है, अथवा अनन्तगुणे परस्थानमें नीललेइयामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ स्वस्थानमें छह स्थानोंमें गिरता है, अथवा अनन्तगुणी हीन परस्थान-भूत तेजलेइयामें संक्रमण करता है ।

तेजलेइयासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे गिरता है, अथवा अनन्त-गुणे परस्थानमें कापोतलेइयामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ स्वस्थानमें

१ ताप्रतौ 'लेस्सावण्णचउरंसे' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'संकमेदि' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'उक्कसादो', काप्रतौ 'उस्सासादो', ताप्रतौ 'उस्सादो (काउलेस्सादो)' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'अइसरइ' इति पाठः । ५ अ-काप्रत्योः 'संकामदि' इति पाठः । ६ अ-काप्रत्योः 'तेउसंकमसंकिलेसंतो', ताप्रतौ तेउसंकम (लेस्सादो) संकिलेसंतो' इति पाठः । ७ ताप्रतौ 'काउलेस्सं वा' इति पाठः ।

अणंतगुणे; विसुज्झंतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि अहिसरदि, पम्माए वा संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणे । पम्मादो संकिलिस्संतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरइ, तेउं वा संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणहीणे; विसुज्झंतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरदि, सुकं वा संकमइ ट्ठाणे अणंतगुणे । सुक्कादो संकिलिस्संतो सट्ठाणे छट्ठाणपदिदाणि ओसरइ, पम्मं वा संकमदि ट्ठाणे अणंतगुणहीणे; विसुज्झंतो ण कहिं पि संकमदि ।

किण्ह-णीलाओ अप्पिदाओ कट्ठु णीलाए ट्ठाणं जहण्णयं थोवं, पडिग्गहट्ठाणं<sup>१</sup> णीलाए जहण्णयमणंतगुणं । किण्हाए जहण्णयमणंतगुणं । किण्हाए जहण्णयं ट्ठाणं संकमट्ठाणं च अणंतगुणं । णीलाए जहण्णयं संकमट्ठाणमणंतगुणं । किण्हाए जहण्णयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । णीलाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । किण्हाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । णीलाए उक्कस्सयं संकमट्ठाणं उक्कस्सयं संकिलेसट्ठाणं च अणंतगुणं । किण्हाए उक्कस्सयं पडिग्गहट्ठाणमणंतगुणं । किण्हाए उक्कं ट्ठाणमणंतगुणं<sup>३</sup> ।

लेस्सट्ठाणाणि छट्ठाणपदिदाणि असंखेज्जा लोगा । तत्थ कारुए ट्ठाणाणि थोवाणि । णीलाए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । किण्हाए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । तेरुए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । पम्माए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । सुक्काए ट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि । एवमेसो समत्तो दंडओ ।

छह स्थानोंमें ऊपर जाता है, अथवा अनन्तगुणे पद्मलेश्याके परस्थानमें संक्रमण करता है । पद्मलेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे गिरता है, अथवा अनन्तगुणी हीन परस्थानभूत तेजलेश्यामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ स्वस्थानमें छह स्थानोंमें ऊपर जाता है, अथवा अनन्तगुणी परस्थानभूत शुक्ललेश्यामें संक्रमण करता है । शुक्ललेश्यासे संक्लेशको प्राप्त होकर स्वस्थानमें छह स्थानोंमें नीचे गिरता है, अथवा अनन्तगुणी हीन परस्थानभूत पद्मलेश्यामें संक्रमण करता है । उससे विशुद्धिको प्राप्त होता हुआ कहींपर भी संक्रमण नहीं करता है ।

कृष्ण और नील लेश्याओंकी विवक्षा करके नीलका जघन्य स्थान स्तोक है । नीलका जघन्य प्रतिग्रहस्थान उससे अनन्तगुणा है । कृष्णका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका जघन्य स्थान और संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । नीलका जघन्य संक्रमस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका जघन्य प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । नीलका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । नीलका उत्कृष्ट संक्रमस्थान और उत्कृष्ट संक्लेशस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका उत्कृष्ट प्रतिग्रहस्थान अनन्तगुणा है । कृष्णका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है ।

छह स्थान पतित लेश्यास्थानोंका प्रमाण असंख्यात लोक है । उनमें कापोतलेश्याके स्थान स्तोक हैं । नीललेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । कृष्णलेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । तेजलेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । पद्मलेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । शुक्ललेश्याके स्थान असंख्यातगुणे हैं । इस प्रकार यह दण्डक समाप्त हुआ ।

१ ताप्रतौ 'छट्ठाणपदिदाणि' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'पओग्गहट्ठाणं', ताप्रतौ 'पओ ( डि ) गहट्ठाणं' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'किण्हाए उक्कं मणंतगुणं, किण्हाए अणंतगुणं' इति पाठः ।

तिव्व-मंददाए दंडओ— सच्चत्थोवं काऊए जहण्णयं द्वाणमणंतगुणं (१) । णीलाए जहण्णयं द्वाणमणंतगुणं । किण्हाए जहण्णयं द्वाणमणंतगुणं । तेऊए जहण्णयं द्वाणमणंतगुणं । पम्माए जहण्णयं द्वाणमणंतगुणं । सुक्काए जहण्णयं द्वाणमणंतगुणं । काऊए उक्कस्सयं द्वाणमणंतगुणं । णीलाए उक्कस्सयं द्वाणमणंतगुणं । किण्हाए उक्क० द्वाणमणंत० । तेऊए उक्कस्सयं द्वाणमणंतगुणं । पम्माए उक्कस्सयं द्वाणमणंतगुणं । सुक्काए उक्कस्सयं द्वाणमणंतगुणं । एवं तिव्व-मंददाए दंडओ समत्तो । लेस्साकम्भे' त्ति समत्तमणिओगद्वारं ।

सादमसादे त्ति अणिओगद्वारे सच्चत्थोवमेयंतसादं<sup>१</sup> । एयंतअसादं संखेज्जगुणं । अणेयंतसादं असंखेज्जगुणं । अणेयंतअसादं विसेसाहियं । एसो ताव एको पयारो ।

इमो विदिओ दंडओ । तं जहा— जं सादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिच्छुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । जं सादत्ताये वद्धं असंछुद्धं असादत्ताये<sup>२</sup> वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । जमसादत्ताये वद्धं असंछुद्धं सादत्ताये<sup>३</sup> वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं । जमसादत्ताए वद्धं असंछुद्धं अपडिच्छुद्धं असादत्ताये वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । जं

तीव्र-मंदताका दण्डक— कपोतलेश्याका जघन्य स्थान सवमें स्तोक है । नीललेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । कृष्णलेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । तेजलेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । पद्मलेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । शुक्ललेश्याका जघन्य स्थान अनन्तगुणा है । कपोतलेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । नीललेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । कृष्णलेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । तेजलेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । पद्मलेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । शुक्ललेश्याका उत्कृष्ट स्थान अनन्तगुणा है । इस प्रकार तीव्र-मंदताका दण्डक समाप्त हुआ । लेश्याकर्म अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

सात-असात अनुयोगद्वारमें एकान्तसात सवमें स्तोक है । एकान्तअसात संख्यातगुणा है । अनेकान्तसात असंख्यातगुणा है । अनेकान्तअसात विशेष अधिक है । यह एक पहला प्रकार है ।

यह दूसरा दण्डक है जो इस प्रकार है— जो सात स्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त और अप्रतिक्षित होता हुआ सात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । जो सात स्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त [ और अप्रतिक्षिप्त ] होता हुआ असात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । जो असात स्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त [ और अप्रतिक्षित ] होता हुआ सात स्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । जो असातस्वरूपसे बांधा जाकर असंक्षिप्त और अप्रतिक्षिप्त होता हुआ असात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । जो सात स्वरूपसे

१ प्रतिषु 'लेस्साकम्भे' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः '-मेयंतसादं वा' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'असंछुद्धं [ अपडिच्छुद्धं- ] असादत्ताए' इति पाठः । ४ ताप्रतौ '-छुद्धं [ अपडिच्छुद्धं- ] सादत्ताये' इति पाठः ।

सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तमसंखेज्जगुणं । जं सादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । [ जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिछुद्धं सादत्ताए वेदिज्जदि तं संखेज्जगुणं ] । जमसादत्ताए बद्धं संछुद्धं पडिछुद्धं असादत्ताए वेदिज्जदि तं विसेसाहियं । एवं सादासादे त्ति समत्तमणियोगहारं ।

दीहे रहस्से<sup>१</sup>त्ति अणियोगद्वारे इमा मग्गणा । तं जहा— पयडिदीहं ट्टिदिदीहं अणुभागदीहं पदेसदीहं त्ति चउच्चिहं दीहं । एवं रहस्सं पि चउच्चिहं । एदेसिमट्टुण्हं पि अप्पाबहुअपरूवणाए कदाए दीहे<sup>२</sup> रहस्से त्ति अणियोगहारं समत्तं होइ ।

भवधारणे त्ति अणियोगद्वारे इमा मग्गणा । तं जहा— कदरेण कम्मणे भवो धारिज्जदि ? आउएण कम्मणे धारिज्जदि । एत्थ अप्पाबहुअपरूवणा कायच्चा । एवं भवधारणे त्ति समत्तमणियोगहारं ।

पोग्गलअत्ते त्ति अणियोगद्वारे इमा गाहा मग्गिदच्चा— ममत्ति<sup>३</sup>

आहारे परिभोयं परिग्गहगय तथा च परिणामा ।

आदेशपमाणत्ता ( ? ) पुण अट्टविहा पोग्गला अत्ता ॥ १ ॥

अत्ता मत्तुत्ति परिभोग परिग्गहणे तथा च परिणामे ।

आहारे गहणे पुण चउच्चिहा पोग्गला अत्ता ॥ २ ॥

बांधा जाकर संक्षिप्त और प्रतिक्षिप्त होकर सात स्वरूपसे वेदा जाता है वह असंख्यातगुणा है । जो सात स्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त और प्रतिक्षिप्त होता हुआ असात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । [ जो असात स्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त और प्रतिक्षिप्त होता हुआ सात स्वरूपसे वेदा जाता है वह संख्यातगुणा है । ] जो असात स्वरूपसे बांधा जाकर संक्षिप्त और प्रतिक्षिप्त होता हुआ असात स्वरूपसे वेदा जाता है वह विशेष अधिक है । इस प्रकार सातासात अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

दीर्घ-ह्रस्व अनुयोगद्वारमें यह मार्गणा है । यथा— प्रकृतिदीर्घ, स्थितिदीर्घ, अनुभागदीर्घ और प्रदेशदीर्घ इस प्रकार दीर्घ चार प्रकारका है । इसी प्रकारसे ह्रस्व भी चार प्रकारका है । इन आठोंके अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करनेपर दीर्घ-ह्रस्व अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

भवधारण अनुयोगद्वारमें यह मार्गणा है । यथा— किस कर्मके द्वारा भव धारण किया जाता है ? आयु कर्मके द्वारा धारण किया जाता है । यहां अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार भवधारण अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

पुद्गलात्त अनुयोगद्वारमें इस गाथाकी मार्गणा करना चाहिये— ममत्ति०

आहार, परिभोग, परिग्रहण तथा परिणामस्वरूपसे पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं । परन्तु आदेशप्रमाणकी अपेक्षा ( ? ) आठ प्रकारके पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं ॥ १ ॥

ममत्व, परिभोग, परिग्रहण तथा परिणाम रूपसे चार प्रकारके पुद्गल ग्रहण होते हैं । तथा आहार और ग्रहणमें चार प्रकारके पुद्गल ग्रहण किये जाते हैं ॥ २ ॥

१ ताप्रतौ 'दीहरहस्से' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'अप्पाबहुअं परूवणाए कदाए दीए', ताप्रतौ 'अप्पाबहुअं परूवणाए कदा । एवं दीहे' इति पाठः । ३ ताप्रतौ 'मार्गिदच्चा ममत्ति० ।' इति पाठः ।



एत्थ एदेसिमप्पावहुअं कायव्वं । एवं पोगलअत्ते त्ति समत्तमणियोगहारं ।

निधत्तमणिधत्ते त्तिअणिओगहारे इदमट्टपदं । तं जहा— जमोकड्डिज्जदि उक्कड्डि-  
ज्जदि, परपयडिं ण संकामिज्जदि उदये ण दिज्जदि पदेसग्गं<sup>१</sup> तं निधत्तं णाम । तच्चि-  
रीयमणिधत्तं । निधत्तं पुण पयडीए केवडिभायेण अवणिज्जदि ? पलिदोवमस्स-  
असंखेज्जदिभाएण पलिदोवमवग्मूलस्स असंखेज्जदिभाएण । जा उअसामणाये मग्गणा  
सा चेव एत्थ वि कायव्वा । एत्थतणपदाणमप्पावहुअपरुवणा च जाणिदूण कायव्वा ।  
एवं निधत्तमणिधत्ते त्ति समत्तमणिओगहारं ।

णिकाचिदमणिकाचिदं त्ति अणिओगहारे कधमट्टपदं<sup>२</sup> ? जं पदेसग्गं ण वि ओकड्डिज्जदि  
[ ण वि उक्कड्डिज्जदि ]<sup>३</sup> ण वि संकामिज्जदि ण वि उदए दिज्जदि तं णिकाचिदं णाम ।  
तच्चिरीयमणिकाचिदं । तं पयडीए पलिदोवमस्स असंखे० भाग-पडिभागियं । जा  
उवसामणाए मग्गणा सा चेव एदेसु दोसु कायव्वा । जं पदेसग्गं गुणसेडोए दिज्जदि  
तं थोवं । [ जं ] उवसामिज्जदि पगेसग्गं तं असं० गुणं । जं निधत्तिज्जदि तमसंखे० गुणं ।  
जं णिकाचिज्जदि तमसंखे० गुणं । जमधापवत्तसंक्रमेण संकामिज्जदि तमसंखे० गुणं ।

यहां इनका अल्पवहुत्व करना चाहिये । इस प्रकार पुद्गलात्त अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

निधत्त-अनिधत्त अनुयोगद्वारमें यह अर्थपद है । यथा— जो प्रदेशाग्र अपकर्षको प्राप्त कराया जाता है और उत्कर्षको भी प्राप्त कराया जाता है, किन्तु न तो परप्रकृति रूपमें संक्रान्त किया जाता है और न उदयमें दिया जाता है उसका नाम निधत्त है । इससे विपरीत अनिधत्त होता है । निधत्त प्रकृतिके कितनेवें भागसे अपनीत किया जाता है ? वह पत्योपमके असंख्यातवें भाग व पत्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भागसे अपनीत किया जाता है । जो उपशामनामें मार्गणा है वही यहां भी करना चाहिये । यहांके पदोंके अल्पवहुत्वकी प्ररूपणा भी जानकर करना चाहिये । इस प्रकार निधत्त-अनिधत्त अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

निकाचित-अनिकाचित अनुयोगद्वारमें अर्थपद कैसा है ? जो प्रदेशाग्र न अपकृष्ट किया जाता है, न उत्कृष्ट किया जाता है, न संक्रान्त किया जाता है, और न उदयमें भी दिया जाता है उसे निकाचित कहते हैं । इससे विपरीत अनिकाचित है । वह प्रकृतिके पत्यो-पमके असंख्यातवें भाग प्रतिभागवाला है । जो उपशामनामें मार्गणा है उसे ही इन दोनोंमें करना चाहिये । जो प्रदेशाग्र गुणश्रेणि रूपसे दिया जाता है वह स्तोत्र है । जो प्रदेशाग्र उप-शान्त किया जाता है वह असंख्यातगुणा है । जो प्रदेशाग्र निधत्त स्वरूप किया जाता है वह असंख्यातगुणा है । जो निकाचित अवस्थाको प्राप्त कराया जाता है वह असंख्यातगुणा है । जो अधःप्रवृत्तसंक्रमसे संक्रमणको प्राप्त कराया जाता है वह असंख्यातगुणा है ।

१ प्रतिपु 'तमोकड्डिज्जदि' इति पाठः । २ प्रतिपु 'पदेसट्टं' इति पाठः । ३ प्रतिपु 'कधमट्टपदं' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'ओकड्डिज्जदि', ताप्रतौ 'ओकड्डि, [ ण वि उक्कड्डिदि- ]' इति पाठः । अतोऽग्रे अ-काप्रत्योः पञ्चिमस्वखण्डाणियोगद्वारान्तर्गतः 'अंतोमुहुत्त' पर्वन्तोऽयं संदर्भः स्वलिखितः ।

महावाचयाणं खमासमणाणं उवदेसेण सच्चत्थोवाणि कसाउदयट्टाणाणि ।  
ठेदिवंधअज्झवसाणट्टाणाणि असं० गुणाणि । पदेसउदीरयअज्झवसाणट्टाणाणि असंखे०  
गुणाणि । पदेससंक्रमणाअज्झवसाणाणि असंखे० गुणाणि । उवसामयअज्झवसा० असं०  
गुणाणि । णिधत्तमज्झवसाणाणि असं० गुणाणि । णिकाचणज्झवसा० असं० गुणाणि ।  
त्थ अणंतराणंत[र]गुणगारो असं० लोगा । एवं णिकाचिदं त्ति समत्तमणियोगहारं ।

कम्मट्ठिदि त्ति अणियोगहारे एत्थ महावाचया अज्जणंदिणो संतकम्मं करेति' ।  
महावाचया ट्ठिदिसंतकम्मं पयासंति । एवं कम्मट्ठिदि त्ति समत्तमणियोगहारं ।

पच्छिमक्खंधे त्ति अणियोगहारे तत्थ इमा मग्गणा— आउअस्स अंतोमुहुत्ते सेसे<sup>२</sup>  
तदा आवज्जिदकरणं करेदि । आवज्जिदकरणे कदे तदो केवलिसमुग्घादं करेदि—  
पढमसमए दंडं करेदि । ठिदीए असंखेजे भागे हणदि । अप्पसत्थकम्मं सच्चं अणंतभागे  
अणुभागखंडएण हणदि । तदो विदियसमए कवाडं करेदि । तत्थ सेसियाए  
ट्ठिदीए असंखेजे भागे हणदि । सेसस्स चं अणुभागस्स अणंतभागे हणदि । तदो  
तदियसमए मंथं करेदि । तत्थ वि सेसियाए ट्ठिदीए असंखेजे भागे हणदि । सेसस्स  
च अणुभागस्स अणंतभागे हणदि । तदो चउत्थसमए लोगं पूरेदि' । लोगे पुण्णे एगां

महावाचक क्षमाश्रमणके उपदेशके अनुसार कषायउदयस्थान सबसे स्तोक हैं । स्थिति-  
बन्धाध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । प्रदेशउदीरक अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं ।  
प्रदेशसंक्रम अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । उपशामक अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे  
हैं । निधत्त अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे हैं । निकाचन अध्यवसानस्थान असंख्यातगुणे  
हैं । यहां अनन्तर-अनन्तर गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है । इस प्रकार निकाचित  
अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

कर्मस्थिति अनुयोगद्वारमें यहां महावाचक आर्यनन्दी सत्कर्मकी परूपणा करते हैं और  
महावाचक [ नागहस्ती ] स्थितिसत्कर्मको प्रकाशित करते हैं । इस प्रकार कर्मस्थिति अनुयोग-  
द्वार समाप्त हुआ ।

पश्चिमस्कन्ध इस अनुयोगद्वारमें वहां यह मार्गणा है— आयुके अन्तर्मुहूर्त मात्र शेष  
रहनेपर तब आवर्जित करणको करता है । आवर्जित करणके कर चुकनेपर फिर केवलिसमु-  
द्घातको करता है । इसमें प्रथम समयमें दण्डसमुद्घातको करता है । स्थितिके असंख्यात  
बहुभागको नष्ट करता है । सब अप्रशस्त कर्मके अनन्त बहुभागको अनुभागकाण्डक द्वारा  
नष्ट करता है । पश्चात् द्वितीय समयमें कपाटसमुद्घातको करता है । उसमें शेष स्थितिके  
असंख्यात बहुभागको नष्ट करता है । शेष अनुभागके भी अनन्त बहुभागको नष्ट करता है ।  
तत्पश्चात् तृतीय समयमें मंथ समुद्घातको करता है । उसमें भी शेष स्थितिके असंख्यात  
बहुभागको नष्ट करता है । शेष अनुभागके भी अनन्त बहुभागको नष्ट करता है । तदनंतर

१ अ-काप्रत्योः 'करेति करेति', ताप्रतौ 'करेति [ करेति ]' इति पाठः । २ ताप्रतौ ' [आउअस्स-]  
अंतोमुहुत्तसेसे' इति पाठः । ३ प्रतिषु 'सेसं च' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'मंथं' इति पाठः । ५ अ-  
काप्रत्योः 'लोगो चरेदि', ताप्रतौ 'लोगो च ( पू ) रेदि' इति पाठः । ६ प्रतिषु 'एदा' इति पाठः ।

जोगवग्गणा । सेसियाए द्विदीए असंखेजे भागे हणदि, सेसस्स च अणुभागस्स अणंतं भागे हणदि । महावाचयाणमज्जमंखुसमणाणमुवदेसेण लोणे पुण्णे आउअसमं करेदि । महावाचयाणमज्जणंदीणं उवदेसेण अंतोमुहुत्तं इवेदि संखेज्जगुणमाउआदो । एदे चत्तारिसमए अप्पसत्थस्स अणुभागस्स अणुसमओवट्टणा एयसमइयो चरिमखंडयघादो । एत्तो सेसियाये द्विदीए संखेज्जभागो द्विदिखंडयं हणदि । सेसस्स च अणुभागस्स अणंतभागे हणदि । एत्तो पाये अंतोमुहुत्तिया द्विदिखंडयस्स अणुभागखंडयस्स उकीरणद्धा । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण वचिजोगं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण मणजोगं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण उस्सास-णिस्सासं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण कायजोगं णिरुंभदि अंतोमुहुत्तेण । कायजोगं च णिरुंभमाणो<sup>१</sup> इमाणि करणाणि करेदि— पढमसमए अपुव्वफहयाणि करेदि पुव्वफहयाणं हेट्टदो । आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोक्कड्ढदि । जीवपदेसाणमसंखेज्जदिभागमोक्कड्ढदि । अंतोमुहुत्तेण कायजोगपुव्वफहयाणि करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेट्ठीए, जीवपदेसाणमसंखेज्जगुणाए सेट्ठीए । अपुव्वफहयाणि सेट्ठीए असंखेज्जदिभागो, सेट्ठिवग्गमूलस्स वि असंखेज्जदिभागो<sup>२</sup> । पुव्वफहयाणमसंखेज्जदिभागो अपुव्व-

चतुर्थ समयमें लोकपूरणसमुद्घातको करता है । लोकके पूर्ण होनेपर एक योगवर्गणा होती है । यहां शेष स्थितिके असंख्यात बहुभागको और शेष अनुभागके अनन्त बहुभागको नष्ट करता है । महावाचक आर्यमंक्षु श्रमणके उपदेशके अनुसार लोकके पूर्ण होनेपर [ शेष अघाति कर्मको ] आयु कर्मके समान करता है । किन्तु महावाचक आर्यनन्दीके उपदेशके अनुसार आयु कर्मसे संख्यातगुणी अन्तर्मुहूर्त मात्र स्थितिको स्थापित करता है । इन चार समयोंमें अप्रशस्त अनुभागकी प्रतिसमय अपवर्तना और एक समयरूप अन्तिम स्थितिकाण्डकका घात होता है । यहां शेष स्थितिके संख्यात बहुभागको नष्ट करता है । शेष अनुभागके भी अनन्त बहुभागको नष्ट करता है । यहां स्थितिकाण्डक और अनुभागकाण्डकका अन्तर्मुहूर्त मात्र उत्कीरणकाल होता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा वचनयोगका निरोध करता है । यहांसे अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा मनयोगका निरोध करता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा उच्छ्वास-निःश्वासका निरोध करता है । पश्चात् अन्तर्मुहूर्त जाकर काययोगका अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा निरोध करता है । काययोगका निरोध करता हुआ इन करणों को करता है— प्रथम समयमें पूर्वस्पर्धकोंके नीचे अपूर्वस्पर्धकोंको करता है । आदि वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है । जीवप्रदेशोंके संख्यातवें भागका अपकर्षण करता है । अन्तर्मुहूर्तमें काययोगके अपूर्वस्पर्धकोंको असंख्यातगुणहीन श्रेणिसे और जीवप्रदेशोंके असंख्यातगुणी श्रेणिसे करता है । अपूर्वस्पर्धक श्रेणिके असंख्यातवें भाग और श्रेणिवर्गमूलके भी असंख्यातवें भाग होते हैं । अपूर्वस्पर्धक

१ ताप्रतौ 'मणजोगं पि उक्कड्ढिज्जदि णिरुंभदि' इति पाठः ।

२ अ-काप्रत्योः 'णिरुंभमाणे' इति पाठः ।

३ अप्रतौ 'मूलस्स दि असंखे० भागो', का-ताप्रत्योः 'मूलस्स असंखे० भागो' इति पाठः ।

फहयाणि । एवमपुव्वफहयकरणं समत्तं ।

एत्तो अंतोमुहुत्तं किट्ठीओ करेदि । अपुव्वफहयाणमादिवग्गणाए अविभागपडि-  
च्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकड्ढदि<sup>१</sup> । जीवफहयपदेसाणं असंखेज्जदिभागमोकड्ढिज्जदि ।  
अंतोमुहुत्तं किट्ठीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए । जीवपदेसे असंखेज्जगुणाए  
सेडीए ओकड्ढदि । किट्ठीदो किट्ठीए गुणगारो पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । किट्ठीओ  
सेडीए असंखेज्जदिभागो, अपुव्वफहयाणमसंखेज्जदिभागो । किट्ठीकरणे णिड्ढिदे तदो से  
काले अपुव्वफहयाणमसंखेज्जदिभागो णस्सेदि<sup>२</sup> । अंतोमुहुत्तं किट्ठीगंदजोगो सुहुमकिरियं  
अपडिवादिंज्ञाणं ज्ञायदि । किट्ठीणं चरिमसमए असंखेज्जा भागा णस्संति<sup>३</sup> । जोगम्हि  
णिरुद्धम्हि आउअसमाणि कम्माण [करेदि] । तदो अंतोमुहुत्तं सेलेसिं पडिवज्जदि,  
समुच्छिण्णकिरियं अणियड्ढिज्ञाणं ज्ञायदि । सेलेसिं पडिवज्जदि त्ति कम्मविप्पमुक्को  
सिद्धिं गच्छदि । एवं पच्छिमक्खंधे त्ति समत्तमणिओगद्वारं ।

अप्पावहुए त्ति जमणिओगद्वारं एत्थ महावाचयखमासमणा संतकम्ममग्गणं<sup>४</sup>  
करेदि । उत्तरपयडिसंतकम्मेण दंडओ । तं जहा— सव्वत्थोवा आहारसंतकम्मिया<sup>५</sup> ।  
सम्मत्तस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा । सम्मामिच्छत्तस्स संतकम्मिया विसेसाहिया ।

पूर्वस्पर्धकोंके असंख्यातवें भाग होते हैं । इस प्रकार अपूर्वस्पर्धककरण समाप्त हुआ ।

यहां अन्तर्मुहूर्त कृष्टियोंको करता है— अपूर्वस्पर्धकोंकी आदि वर्गणाके अविभाग-  
प्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है । जीवस्पर्धकप्रदेशोंके असंख्यातवें भागका  
अपकर्षण करता है । अन्तर्मुहूर्त काल असंख्यातगुणी हीन श्रेणिसे कृष्टियोंको करता है । जीव-  
प्रदेशोंका असंख्यातगुणित श्रेणिसे अपकर्षण करता है । कृष्टिसे कृष्टिके गुणकारका प्रमाण  
पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । कृष्टियां श्रेणिके असंख्यातवें भाग और अपूर्वस्पर्धकोंके  
असंख्यातवें भाग मात्र होती हैं । कृष्टिकरणके समाप्त होनेपर तदनन्तर कालमें अपूर्वस्पर्धकों [और  
पूर्वस्पर्धकों] के असंख्यातव भाग का नाश करता है । अन्तर्मुहूर्त कृष्टिगतयोग होकर सूक्ष्म-  
क्रियाप्रतिपाती ध्यानको ध्याता है । कृष्टियोंके अन्तिम समयमें असंख्यात बहुभाग नष्ट हो जाता  
है । योगके निरुद्ध हो जानेपर कर्मोंको आयुके वरावर करता है । तत्पश्चात् अन्तर्मुहूर्तमें शैलश्य-  
भावको प्राप्त होता है व समुच्छिन्नक्रियानिर्वृत्ति ध्यानको ध्याता है । शैलश्यभावको प्राप्त हुआ कि  
कर्मोंसे रहित होकर सिद्धिको प्राप्त होता है । इस प्रकार पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

जो अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार है यहां महावाचक क्षमाश्रमण ( नागहस्ती ) सत्कर्ममार्गणाको  
करते हैं । उत्तरप्रकृतिसत्कर्मदण्डककी प्ररूपणा इस प्रकार है— आहारसत्कर्मिक सबसे स्तोक  
हैं । सम्यक्त्वके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । सम्याग्मथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं ।

१ प्रतिषु 'मोवड्ढि' इति पाठः । २ अ-काप्रत्योः 'भागो', ताप्रतौ 'भागो[णस्सदि-]' इति पाठः । ३ प्रतिषु  
'कदं' इति पाठः । ४ अ-काप्रत्योः 'पडिवादि' इति पाठः । ५ अप्रतौ 'णसंति', काप्रतौ 'णसंति' इति पाठः ।  
६ अ-काप्रत्योः 'संतकम्म मग्गणं' इति पाठः । ७ अ-काप्रत्योः 'सव्वत्थोवं आहारं संतकम्मिय' इति पाठः ।

मणुस्साउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा । णिरयाउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा ।  
 देवाउअस्स संतकम्मिया असंखेज्जगुणा । देवगइसंतकम्मिया असंखेज्जगुणा<sup>१</sup> । णिरय-  
 गइसंतकम्मिया विसेसाहिया । वेउच्चिय० अणंतगुणा । उच्चागोद० अणंतगुणा ।  
 मणुसगइ० विसे० । तिरिक्खाउअस्स० विसे० । अणंताणुबंधिउक्क० [विसे०] ।  
 मिच्छत्त० विसे० । अट्टकसायाणं० विसे० । थीणगिद्धितिय० तिरिक्खगइणामाए०  
 विसे० । णवुंसयवेद० विसे० । इत्थि० विसे० । छण्णोक्कसाय० विसे० । पुरिस० विसे० ।  
 कोहसंजल० विसे० । माणसंज० विसे० । मायासंज० विसे० । लोभसंज०  
 विसे० । णिद्दा-पयलाणं विसे० । पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणं तुज्जला  
 विसेसाहिया । ओरालिय-तेजा-कम्मइय-अजसक्कित्ति-णीचगोदाणं विसे० । असादस्स०  
 विसे० । साद० विसे० । जसक्कितीणं (?) विसे० । एवमोघदंडओ समत्तो ।

मोहणीयस्स पयडिड्ढाणसंतकम्मेण सव्वत्थोवा पंचसंतकम्मिया । एकस्से विसे-  
 साहिया । दोण्हं विसेसा० । तिण्हं विसे० । एक्कारसण्हं विसे० । चउण्हं० तेरसण्हं  
 संखेज्जगुणं । वावीसाए संखे० गुणं । तेवीसाए संखे० गुणं । पंचवीसाए असंखे०

मनुष्यायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नारकायुके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवायुके  
 सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । देवगति नामकर्मके सत्कर्मिक असंख्यातगुणे हैं । नरकगति  
 नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । वैक्रियकशरीर नामकर्मके सत्कर्मिक अनन्तगुणे हैं ।  
 उच्चगात्रके सत्कर्मिक अनन्तगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं ।  
 तिर्यगायुके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । अनन्तानुबन्धिचतुष्कके सत्कर्मिक विशेष अधिक  
 हैं । मिथ्यात्वके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । आठ कपायोंके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं ।  
 स्थानगृद्धात्रिक और तिर्यगति नामकर्मके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । नपुंसकवेदके  
 सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । स्रोत्रवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । छह नोकपायोंके सत्कर्मिक  
 विशेष अधिक हैं । पुरुषवेदके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । संज्वलन क्रोधके सत्कर्मिक विशेष  
 अधिक हैं । संज्वलन मानके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । संज्वलन मायाके सत्कर्मिक विशेष  
 अधिक हैं । संज्वलन लोभके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । निद्रा और प्रचलाके सत्कर्मिक  
 विशेष अधिक हैं । पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच अन्तरायके सत्कर्मिक तुल्य  
 व विशेष अधिक हैं । औदारिकशरीर, तैजसशरीर, कामैणशरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्रके  
 सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । असातावेदनीयके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । सातावेदनीयके  
 सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । यशकीर्तिके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । इस प्रकार ओघदण्डक  
 समाप्त हुआ ।

माहनोयके प्रकृतिस्थानसत्कर्मकी अपेक्षा पांच प्रकृतिरूप स्थानके सत्कर्मिक सबमें स्तोक  
 हैं । एकके सत्कर्मिक विशेष अधिक हैं । दोके विशेष अधिक हैं । तीनके विशेष अधिक हैं ।  
 ग्यारहके विशेष अधिक हैं । चारके विशेष अधिक हैं । तेरहके संख्यातगुणे हैं । बाईसके

१ अ-काप्रत्योनोपलभ्यते वाक्यमिदम् । २ अकाप्रत्योः 'पंचसम्मत्तघम्मिया', ताप्रतो 'पंचसम्मत्तघम्मिय  
 ( पंचसंतकम्मिया )' इति पाठः ।

गुणं । एकवीसाए असंखे० गुणं । चउवीसाए अमंखे० गुणं । अट्टवीसाए असंखे० गुणं । छन्वीसाए अणंतगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

उत्तरपयडिदिसंतकम्मणेण जहणणेण पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-सादासाद-सम्मत्त-लोहसंजलण-इत्थि-णवुंसयवेद-आउचउक्क-मणुसगइ-जसकित्ति-उच्चागोद-पंच-तराइयाणं जहण्णाट्टिदी थोवा । जट्टिदी तत्तियौ चैव । जत्तिया [णिहाणिहा-] पयला-पयला-धीणगिद्धि-णिहा-पयला-मिच्छत्त-सम्माभिच्छत्त-चारसकसाय-णिरयगइ-तिरिक्ख-गइ-देवगइ-पंचसरीर-अजसाकित्ति-णीचागोदाणं जहण्णिया ट्टिदी तत्तिया चैव । जट्टिदी संखेज्जगुणा । मायामंज० जह० असंखेज्जगुणा । माणमंजल० विसे० । कोहसंज० विसे० । पुग्गिसवेद० मंखे० गुणा । छण्णोकसायाणं असंखे० गुणा । जट्टिदी विसे० । एवमोघदंडओ चैव ।

उत्तरपयडिअणुभागसंतकम्मणेण जहणणेण सञ्चमंदाणुभागं लोहसंजलणं । माया० अणंतगुणा । माण० अणंतगुणं । कोह० अणंतगुणं । विरियंतराइय० (?) अणंतगुणं । सम्मत्त० अणंतगुणं । चक्खु० अणंतगुणं । सुदाणुभागं अणंतगुणं । मदिणाण० अणंत-गुणं । अचक्खु० अणंतगुणं । ओहिणाण० अणंतगुणं । ओहिदंसण० अणंतगुणं । संख्यातगुणे हं । तंईसके संख्यातगुणे हं । पचीसके असंख्यातगुणे हं । इफीसके असंख्यातगुणे हं । चांथीसके असंख्यातगुणे हं । अट्टाईसके असंख्यातगुणे हं । छन्वीसके अनन्तगुणे हं । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

उत्तरप्रकृतिसंस्थितिसत्कर्मकी अपेक्षा जघन्यसे पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, साता व असाता वेदनीय, सन्यक्त्व, संज्वलन लोभ, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, चार आयु कर्म, मनुष्यगति, यशकीर्ति, उजगोत्र और पांच अन्तराय; इनकी जघन्य स्थिति स्तोक है । ज-स्थिति उतनी मात्र ही है । निदानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, चारह कपाय, नरकगति, तिर्यगगति, देवगति, पांच घरीर, अयशकीर्ति और नीचगोत्र; इनकी जघन्य स्थिति उतनी मात्र ही है । ज-स्थिति संख्यातगुणी है । संज्वलन मायाकी जघन्य स्थिति असंख्यात-गुणी है । संज्वलन मानकी जघन्य स्थिति विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधकी जघन्य स्थिति विशेष अधिक है । पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति संख्यातगुणी है । छह नोकपायांकी जघन्य स्थिति असंख्यातगुणी है । इन सबकी जस्थिति क्रमशः विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघदण्डक ही है ।

उत्तरप्रकृतिसत्कर्मकी अपेक्षा जघन्यतः सबसे मद् अनुभागवाला संज्वलन लोभ है । संज्वलन माया वरुसे अनन्तगुणी है । संज्वलन मान अनन्तगुणा है । संज्वलन क्रोध अनन्तगुणा है । वीर्यान्तराय (?) अनन्तगुणा है । सम्यक्त्व प्रकृति अनन्तगुणी है । चक्षुदर्शना-वरण अनन्तगुणा है । श्रुतज्ञानावरण अनन्तगुणा है । मतिज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अचक्षु-दर्शनावरण अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरण अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरण अनन्तगुणा

१ प्रतिपु 'सम्मत्त-मणुसगइणायाए इत्थि' इति पाठः । २ ताप्रती 'तत्तियाए' इति पाठः । ३ अ-काप्रत्योः 'जत्तिया पयलापयला', ताप्रती 'जत्तिया ( णिहाणिहा ) पयलापयला' इति पाठः । ४ अप्रती 'मंदाणुभाग', काप्रती 'मंदाणुभाग', ताप्रती 'मंदा' इति पाठः ।

परिभोग० अणंतगुणं । [ भोग० अणंतगुणं । ] लाहंतराइय० अणंतगुणं । दाणंत-  
 राइय० अणंतगुणं । वीरियंतराइय० (?) अणंतगुणं । [ पुरिस० अणंतगुणं । ] इत्थि-  
 वेद० अणंतगुणं । णवुंस० अणंतगुणं । मणपञ्ज० अणंतगुणं । सम्मामिच्छत्त० अणंत-  
 गुणं । केवलणाण० केवलदंसणावरण० अणंतगुणं । पयला० अणंतगुणं । णिहा०  
 अणंतगुणं । हस्स० अणंतगुणं । रदि० अणंतगुणं । दुगुंछा० अणंतगुणं । भय०  
 अणंतगुणं । सोग० अणंतगुणं । अरदि० अणंतगुणं । अणंताणुवंधिमाण० अणंतगुणं ।  
 कोह० विसे० । मायाए विसे० । लोह० विसे० । वेउ० अणंतगुणं । तिरिक्खाउ०  
 अणंतगुणं । तिरिक्खाणुपुव्वि० अणंतगुणं । णिरयगइ० अणंतगुणं । मणुसगइ०  
 अणंतगुणं । देवगइ० अणंतगुणं । उच्चागोद० अणंतगुणं । असाद० अणंतगुणं । णिरयाउ०  
 अणंतगुणं । ओरालिय० अणंतगुणं । तेज० अणंतगुणं । कम्मइय० अणंतगुणं । तिरिक्खगइ०  
 अणंतगुणं । णीचागोद० अणंतगुणं । अजसकित्ति० अणंतगुणं । अणादेज्ज० अणंतगुणं ।  
 पयलापयला अणंतगुणं । णिहाणिहा० अणंतगुणं । थीणगिद्धि० अणंतगुणं ।  
 अपच्चक्खाणमाण० अणंतगुणं । कोह० विसे० । माया० विसे० । लोह० विसे० ।  
 मिच्छत्त० अणंतगुणं । जसकित्ति० अणंतगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

है । परिभोगान्तराय अनन्तगुणा है । [ भोगान्तराय अनन्तगुणा है । ] लाभान्तराय अनन्तगुणा  
 है । दानान्तराय अनन्तगुणा है । वीर्यान्तराय (?) अनन्तगुणा है । पुरुषवेद अनन्तगुणा  
 है । स्त्रीवेद अनन्तगुणा है । नपुंसकवेद अनन्तगुणा है । मनःपर्ययज्ञानावरण अनन्तगुणा है ।  
 सम्यग्मिथ्यात्व अनन्तगुणा है । केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण अनन्तगुणे हैं । प्रचला  
 अनन्तगुणी है । निद्रा अनन्तगुणी है । हास्य अनन्तगुणा है । रति अनन्तगुणा है । जुगुप्सा  
 अनन्तगुणी है । भय अनन्तगुणा है । शोक अनन्तगुणा है । अरति अनन्तगुणी है । अनन्तानु-  
 वन्धी मान अनन्तगुणा है । अनन्तानुवन्धी क्रोध विशेष अधिक है । अनन्तानुवन्धी माया  
 विशेष अधिक है । अनन्तानुवन्धी लोभ विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीर अनन्तगुणा है ।  
 तिर्यंगायु अनन्तगुणी है । तिर्यगानुपूर्वी अनन्तगुणी है । नरकगति अनन्तगुणी है । मनुष्यगति  
 अनन्तगुणी है । देवगति अनन्तगुणा है । उच्चगात्र अनन्तगुणा है । असातावेदनीय अनन्तगुणा  
 है । नारकायु अनन्तगुणी है । औदारिकशरीर अनन्तगुणा है । तैजसशरीर अनन्तगुणा है ।  
 कार्मणशरीर अनन्तगुणा है । तिर्यगति अनन्तगुणी है । नीचगोत्र अनन्तगुणा है । अयशकोर्ति  
 अनन्तगुणी है । अनादेय अनन्तगुणा है । प्रचलाप्रचला अनन्तगुणी है । निद्रानिद्रा अनन्तगुणी  
 है । स्थानगृद्धि अनन्तगुणी है । अपत्याख्यानावरण मान अनन्तगुणा है । क्रोध विशेष  
 अधिक है । माया विशेष अधिक है । लोभ विशेष अधिक है । मिथ्यात्व अनन्तगुणा  
 है । यशकोर्ति अनन्तगुणी है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

१-काप्रतौ 'परिभोगंतराइय० अणंतगुणं । लाहंतराय० अणंतगुणं । दाणंतगइय अणंतगुणं । वीरियंतराइय०  
 अणंतगुणं । इत्थिवेद', ताप्रतौ 'परिभोग० लाहंतराइय० विरियंतराइय० इत्थिवेद०' इति पाठः ।

उत्तरपयडिसंतकम्मेण उक्कस्सपदेसग्गेण सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणमाणे उक्कस्सपदे-  
सग्गं । [कोहे] अणंतगुणं । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० ।  
कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । अणंताणुवंधिमाणे० विसे० ।  
कोहे० विसे० । मायाए० विसे० । लोहे० विसे० । सम्मामिच्छत्ते० विसे० । सम्मत्ते०  
विसे० । मिच्छत्ते विसे० । केवलणाणावरणे संखे० गुणं । पयला० विसे० । णिहा०  
विसे० । पयलापयला० विसे० । णिहाणिहा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० ।  
केवलदंसणावरण० विसे० । णिरयाउअम्मि अणंतगुणो । देवाउअम्मि तत्तिया चैव ।  
तिरिक्खाउअम्मि विसे० । मणुस्साउअम्मि विसे० । णिरयगइ० असंखे० गुणा ।  
आहार० असंखे० गुणा । ओरालिय० विसे० । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० ।  
अजसकित्ति० संखे० गुणा । देवगइ० विसे० । मणुसगइ० विसे० । हस्म० संखेज्जगुणं ।  
रदि० विसेसाहियं । इत्थि० संखे० गुणं । सोग० विसे० । अरदि० विसे० । णवुंस०  
विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । एवं विसेसाहियं कमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइं  
ति । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । चक्खु०

उत्तरप्रकृतिसत्कर्म रूप उत्कृष्ट प्रदेशाप्रकी अपेक्षा अप्रत्याख्यानावरण मानमें उत्कृष्ट  
प्रदेशाप्र सत्रसे स्तोक है । क्रोधमें अनन्तगुणा है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष  
अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष  
अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष  
अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । सम्यग्मध्यात्वमें विशेष अधिक  
है । सम्यक्त्वमें विशेष अधिक है । मिध्यात्वमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें संख्यात-  
गुणा है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक  
है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष  
अधिक है । नारकायुमें अनन्तगुणा है । देवायुमें उतना ही है । तिर्यगायुमें विशेष अधिक है ।  
मनुष्यायुमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यात-  
गुणा है । औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है । तेजसशरीरमें विशेष अधिक है । कामणशरीरमें  
विशेष अधिक है । अयश्काकीर्तिमें संख्यातगुणा है । देवगतिमें विशेष अधिक है । मनुष्यगतिमें  
विशेष अधिक है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा  
है । शोकमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है ।  
जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिक विशेषाधिक-  
क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मनःपर्यय-  
ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें

१ ताप्रती नोपलभ्यते वाक्यमिदम् । २ अ-काप्रत्योः 'भय० विसे० एवं विसंसाहिया २ एवं विसेसाहिया-',  
ताप्रती 'भय० विसे०, विसेसाहियो, एवं विसेसाहिय-' इति पाठः ।



विसे० । अचक्खु० विसे० । कोहसंजल० विसे० । माणसंज० विसे० । मायासंज० विसे० ।  
जसक्किं० विसे० । णीचागोद० विसे० । उच्चागोद० विसे० । लोहसंजलण० विसेसा-  
हियं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

णिरयगदीए उक्कस्से सम्मामिच्छत्ते' पदेसग्गं थोवं । अपच्चक्खाणमाणे असंखे०  
गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे  
विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । अणंताणुवंधिमाणे विसे० । कोहे विसे० ।  
मायाए विसे० । लोहे विसे० । सम्मत्ते विसे० । मिच्छत्ते विसे० । केवलणाण०  
विसे० । पयला० विसे० । णिदा० विसे० । पयलापयला० विसे० । णिदाणिदा०  
विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलदंसण० विसे० । अण्णदरे आउए अणंतगुणं ।  
णिरयगइ० असंखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । जसक्किं० संखे० गुणं । वेउच्चिय०  
विसे० । ओरालिय०<sup>३</sup> विसे० । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसक्किं० संखे०  
गुणं । देवगइ० विसे० । तिरिक्खगइ० विसे० । मणुसगइ० विसे० । हस्स० संखेज्ज-  
गुणं । रदि० विसे० । साद० संखे० गुणं । इत्थि० संखेज्जगुणं । सोग० संखे० गुणं ।

विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है ।  
संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । यशकीर्तिमें विशेष  
अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें  
विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें उत्कर्षसे सम्यग्मिध्यात्वमें स्तोक प्रदेशात्प्र है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें  
असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष  
अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें  
विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी मानमें विशेष अधिक है ।  
क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । सम्यक्त्वमें  
विशेष अधिक है । मिध्यात्वमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है ।  
प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है ।  
निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगुद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष  
अधिक है । अन्यतर आयुर्कर्ममें अनन्तगुणा है । नरकगति नामकर्ममें असंख्यातगुणा है ।  
आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें  
विशेष अधिक है । औदारिकशरीरमें विशेष अधिक है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक  
है । कामर्णशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । देवगतिमें विशेष  
अधिक है । तियंगतिमें विशेष अधिक है । मनुष्यगतिमें विशेष अधिक है । हास्यमें  
संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । स्त्रोवेदमें

१ प्रतिषु 'सम्मत्तमिच्छत्ते' इति पाठः । २ ताप्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः । ३ अप्रतौ 'विदिय', का-  
मप्रत्योः 'वादिय०', ताप्रतौ 'वेदिय' इति पाठः ।

अरदिं० विसे० । णवुंसय० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । पुरिस० विसे० ।  
माणसंजल० विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पुणो पुणो विसे-  
साहियं, एवं विसेसाहियकमेण णोदव्वं जाव विरियंतराइं ति । मणपञ्जव० विसे० ।  
ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु०  
विसे० । चक्खु० विसे० । सादे० संखे० गुणं । उच्चागोदे० विसे० । णीचागोदे०  
विसे० । एवं णिरयगईदंडओ समत्तो ।

जहणणेण पदेससंतकम्मेण सम्मत्ते<sup>१</sup> शोवं संतकम्मं । सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणो ।  
अणंताणुवंधिमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० ।  
मिच्छत्ते असंखे० गुणं । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए०  
विसे० । लोहे० विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसेसाहिओ । कोहे विसे० । मायाए विसे० ।  
लोहे० विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणा । णिहाणिहा० विसे० । थीणगिद्धि०  
विसे० । केवलणाण० असंखे० गुणं । पयला० विसे० । णिहा० विसे० । केवलदंसण०

संख्यातगुणे संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । नपुंसक-  
वेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । पुरुष-  
वेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक  
है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । पुनः पुनः  
विशेष अधिक, इस प्रकार विशेष अधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । मनः-  
पर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें  
विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक  
है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । साता-  
वेदनीयमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें विशेष अधिक है ।  
इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

जघन्य प्रदेशसत्कर्मकी अपेक्षा सत्कर्म सम्यक्त्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें  
असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है ।  
मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है ।  
अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष  
अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें  
विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें  
असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवल-  
ज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है ।

१ अप्रती 'रदि०', काप्रती श्रुतितोऽत्र पाठः, ताप्रती '[अ-] रदि०' इति पाठः । २ अप्रती 'एवं  
णिरयाउणिरयगई-', काप्रती 'णिरयाउणिरयगई-', ताप्रती 'णिरयाउ० णिरयगई-' इति पाठः । ३ प्रतिषु  
'सम्मत्त' इति पाठः ।

विसे० । ओहिणाण० असंखे० गुणं' । ओहिदंसण० विसे० । गिरयगइ० असंखे० गुणं । देवगइ० असंखे० गुणं । वेउच्चिय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुमगइ० संखे० गुणं । उच्चागोद० संखे० गुणं । गिरयाउअम्मि असंखे० गुणं । देवाउअम्मि विसेसाहियं । तिरिक्खाउअम्मि विसे० । मणुस्साउअम्मि विसे० । कोहसंजलण० असंखे० गुणं । माणसंजल० विसे० । पुरिस० विसे० । मायासंजल० विसे० । तिरिक्खगइ० असंखे० गुणा । इत्थि० असंखे० गुणा । णवुंस० विसे० । णीचागोद० असंखेज्जगुणं । ओरालिय० असंखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखेज्जगुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे संखे० गुणं । सोगे संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । लोहसंजलणं विसेसाहियं । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्जव० विसेसाहियं । सुद० विसे० । मदि० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे संखेज्जगुणं । एवमोघदंडओ समत्तो ।

गिरयगदीए सव्वत्थोवं सम्मत्ते जहण्णयं पदेसग्गं संतकम्मं । सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणं । अणंताणुवंधिमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे

केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । नारकायुमें असंख्यातगुणा है । देवायुमें विशेष अधिक है । तिर्यगायुमें विशेष अधिक है । मनुष्यायुमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । नीचगोत्रमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कामणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिक क्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार ओघदण्डक समाप्त हुआ ।

नरकगतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्व प्रकृतिमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है ।

१ ताप्रतौ 'अणंतगुणा' इति पाठः ।

विसे० । अचक्खु० असंखे० गुणं । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिहाणिहा० विसे० ।  
 थीणगिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे० असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए  
 विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । [ कोहे विसे० । ] मायाए विसे० ।  
 लोहे विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिहा० विसे० । केवलदंसण०  
 विसे० । आहार० अणंतगुणं । णिरयाउअम्मि असंखे० गुणं । देवगदीए असंखे० गुणं ।  
 मणुसगई० असंखे० गुणं । तिरिक्खगई० संखे० गुणं । णिरयगई० संखे० गुणं ।  
 उच्चागोद० संखे० गुणं । इत्थि० संखे० गुणं । णवुंस० संखे० गुणं । णीचागोद०  
 संखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । ओरालिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० ।  
 कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । पुरिस० संखे० गुणं । हस्स० संखे०  
 गुणं । रदि० विसे० । सादे० संखे० गुणं । सोगे० संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछ०  
 विसे० । भय विसे० । माणसंजलण० विसे० । कोहसंज० विसे० । मायाए विसे० ।  
 लोहसंजलण० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय०  
 विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । विरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० ।

मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें असंख्यातगुणा  
 है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्थानगृद्धिमें विशेष  
 अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें  
 विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है ।  
 [ क्रोधमें विशेष अधिक है । ] मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञाना-  
 वरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवल-  
 दर्शनावरणमें विशेष अधिक है । आहारकशरीरमें अनन्तगुणा है । नारकायुमें असंख्यात-  
 गुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है । तिर्यगतिमें  
 संख्यातगुणा है । नरकगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें  
 संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें  
 असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक  
 है । कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें  
 संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यात-  
 गुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है ।  
 भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक  
 है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें  
 विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । परि-  
 भोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणमें

१ अतोऽग्रे प्रतिपु 'तिरिक्खगई० असंखे० गुणं' इत्येदधिकं वाक्यमुपलभ्यते । २ अप्रती 'असंखे०'  
 इति पाठः ।

ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखेज्जगुणा । एवं णिरयगइदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगदीए सच्चत्थोवं सम्मत्ते जहण्णपदेससंतकम्मं । सम्मामिच्छत्ते असंखेज्जगुणं । अणंताणुवंधिमाणे असंखेज्जगुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । मिच्छत्ते असं० गुणं । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिदाणिदा० संखे० गुणं । धीणगिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे० विसे० । ओहिणाण० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिदा० विसे० । केवलदंसण० विसे० । णिरयगदीए अणंतगुणं । देवगदीए असंखे० गुणं । वेउव्विय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुमगदीए संखेज्जगुणं । उच्चागोद० संखे० गुणं । तिरिक्खाउअम्मि असंखे० गुणं । मणुस्साउअम्मि असंखे० गुणं । देव-णिरयाउअम्मि असंखे० गुणं । ओरालिय० असंखे० गुणं । तिरिक्खगदीए संखे० गुणं । इत्थि० संखे० गुणं । णवुंसय० संखे० गुणं । पुरिस० विसे० । जसक्कित्ति० असंखे० गुणं । तेज० संखे० गुणं । कम्मइय० विसे० । अजसक्कित्ति० संखे० गुणं । हस्स० विसे० । रदि०

विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार नरकगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यग्गतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें संख्यातगुणा है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अपत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । तिर्यगायुमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है । देवायु और नारकायुमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है । तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें विशेष अधिक है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है । कामेणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । हास्यमें विशेष अधिक

विसे० । सादे संखे० गुणं । सोगे संखे० गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । माणसंजल० विसे० । कोहसंज० विसे० । मायासंज० विसे० । लोहसं० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । एवं विसेसाहियकमेण णेदव्वं जाव विरियंतराइयं ति । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुदणा० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । 'अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखेज्जगुणं । एवं तिरिक्खगइदंडओ समत्तो ।

देवगदीए जहणणेण सम्मत्ते पदेससंतकम्मं थोवं । सम्मामिच्छत्ते पदेससंतकम्मं असंखेज्जगुणं । अणंताणुवंधिमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणं । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिद्वाणिद्वा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिद्वा० विसे० । केवलदंसण० विसे० । आहार० अणंतगुणं । देवाउअम्मि असंखे० गुणं । तिरिक्ख-मणुसाउअम्मि

है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । आगे मनःपर्ययज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार तिर्यग्गतिदण्डक समाप्त हुआ ।

देवगतिमें जघन्यसे प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें प्रदेशसत्कर्म असंख्यातगुणा है । अनन्तानुवन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । प्रचला-प्रचलामें असंख्यातगुणा है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्थानगृद्धिमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । आहारकशरीरमें अनन्तगुणा है । देवायुमें असंख्यातगुणा है । तिर्यगायु और

असंखे० गुणं । गिरयगदीए असंखेज्जगुणं । तिरिक्खगदीए असंखे० गुणं । णवुंस० असंखे० गुणं । णीचागोदे० संखे० गुणं । इत्थि० अखेज्जगुणं । देवगईए असंखे० गुणं । वेउन्विय० संखे० गुणं । मणुसगदीए असंखे० गुणं । उच्चागोदे असंखे० गुणं । जसकित्ति० असंखे० गुणं । ओरालिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । अजसकित्ति० संखे० गुणं । पुरिस० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे० संखे० गुणं । सोगे० संखे० गुणं । अरदीए विसे० । दुगुंड० विसे० । भय० विसे० । माणसंजलण० विसे० । कोहसंज० विसे० । मायासंज० विसे० । लोहसं० विसे० । दाणंतराइए विसेसाहियं । एवं विसेसाहियकमेण णेद्वं जाव विरियंतराइयं ति । केवलणाण० विसे० । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे० संखे० गुणं । एवं देवगइदंडओ समत्तो ।

मणुसगदीए सव्वत्थोवं सम्मत्ते पदेससंतं जहण्णयं । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणं । अणंताणुवंधिमाणे असंखेगुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणं । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है । नरकगतिमें असंख्यातगुणा है । तिर्यग्गतिमें असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदमें असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है । देवगतिमें असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कामणशरीरमें विशेष अधिक है । अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । सातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । शोकमें संख्यातगुणा है । अरतिमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है । संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें विशेष अधिक है । इस प्रकार विशेषाधिकक्रमसे वीर्यान्तराय तक ले जाना चाहिये । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मनःपर्यगज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनायमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार देवगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें

मायाए विसे० । लोहे विसे० । पयलापयला० असंखे० गुणं । णिदाणिदा० विसे० । धीणगिद्धि० विसे० । केवलणाणा० असंखे० गुणं । पयला० विसे० । णिदा० विसे० । केवलदंसण० विसे० । ओहिणाण० अणंतगुणं । ओहिदंसण० विसे० । णिरयगइ० असंखे० गुणं । वेउच्चिय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसाउअम्मि असंखे० गुणं । तिरिक्खाउअम्मि असंखे० गुणं । कोह-संजलण० असंखे० गुणं । मायासंज० विसे० । पुरिस० विसे० । माणसंज० विसे० । णिरय-देवाउअम्मि विसे० । तिरिक्खगईए असंखे० गुणं । इत्थि० असंखे० गुणं । णवुंस० विसे० । णीचागोदे० असंखे० गुणं । मणुसगइ० असंखे० गुणं । ओरालिय० असंखे० गुणं । उच्चागोदे असंखे० गुणं । जसक्कित्ति० असंखे० गुणं । तेज० संखे० गुणं । कम्मइय० विसे० । अजसगित्ति० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि० विसे० । सादे संखे० गुणं । सोगे संखे गुणं । अरदि० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । लोहसंजल० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । विरियंतरा-

विशेष अधिक है। मायामें विशेष अधिक है। लोभमें विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलामें असंख्यातगुणा है। निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है। स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है। केवल-ज्ञानावरणमें असंख्यातगुणा है। प्रचलामें विशेष अधिक है। निद्रामें विशेष अधिक है। केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणमें अनन्तगुणा है। अवधिदर्शना-वरणमें विशेष अधिक है। नरकगतिमें असंख्यातगुणा है। वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है। आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है। तिर्यगायुमें असंख्यातगुणा है। संव्वलन क्रोधमें असंख्यातगुणा है। संव्वलन मायामें विशेष अधिक है। पुरुषवेदमें विशेष अधिक है। संव्वलन मानमें विशेष अधिक है। नारकायु और देवायुमें विशेष अधिक है। तिर्यंगतिमें असंख्यातगुणा है। स्त्रीवेदमें असंख्यातगुणा है। नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है। नीचगोत्रमें असंख्यातगुणा है। मनुष्यगतिमें असंख्यातगुणा है। औदारिकशरीरमें असंख्यातगुणा है। उच्चगोत्रमें असंख्यातगुणा है। यशकीर्तिमें असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरमें संख्यातगुणा है। कर्मणशरीरमें विशेष अधिक है। अयशकीर्तिमें संख्यातगुणा है। हास्यमें संख्यातगुणा है। रतिमें विशेष अधिक है। साता-वेदनीयमें संख्यातगुणा है। शोकमें संख्यातगुणा है। अंरतिमें विशेष अधिक है। जुगुप्सामें विशेष अधिक है। भयमें विशेष अधिक है। संव्वलन लोभमें विशेष अधिक है। दानान्तरायमें विशेष अधिक है। लाभान्तरायमें विशेष अधिक है। भोगान्तरायमें विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है। मनःपर्यय-

१ ताप्रतौ 'कोहसंजलण० असंखे० गुणा । माणसं० विसे० । पुरिसं० विसे० । मायासंजलण०' इति पाठः ।



इय० विसे० । मणपञ्जय० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे संखे० गुणं । एवं मणुसगइदंडओ समत्तो ।

एइंदिएसु जहणणेण सव्वत्थोवं सम्मत्ते जहणणपदेससंतकम्मं । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणं । मिच्छत्ते असंखे० गुणं । अणंताणुवंधिमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । अपच्चक्खाणमाणे असंखे० गुणं । कोहे विसे० । मायाए विसे० । लोहे विसे० । पच्चक्खाणमाणे विसे० । कोहे विसे० । मायाए विसेसा० । लोहे विसे० । केवलणाण० विसे० । पयला० विसे० । णिदा० विसे० । पयलापयला० विसे० । णिदाणिदा० विसे० । थीणगिद्धि० विसे० । केवलदंसण० विसे० । णिरयगइ० अणंतगुणं । देवगइ० अणंतगुणं<sup>२</sup> । वेउव्विय० संखे० गुणं । आहार० असंखे० गुणं । मणुसगइ० संखे० गुणं । उच्चागोदे संखे० गुणं । मणुसाउअम्मि असंखे० गुणं । जसक्कित्ति० असंखे० गुणं । ओरालिय० संखे० गुणं । तेज० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगई० संखे० गुणं । अजसक्कित्ति० विसे० । पुरिस० संखे० गुणं । इत्थि० संखे० गुणं । हस्स० संखे० गुणं । रदि विसे० । सोग० संखे० गुणं । सादे<sup>३</sup> विसे० ।

ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । इस प्रकार मनुष्यगतिदण्डक समाप्त हुआ ।

एकेन्द्रियोंमें जघन्यसे जघन्य प्रदेशसत्कर्म सम्यक्त्वमें सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण मानमें असंख्यातगुणा है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण मानमें विशेष अधिक है । क्रोधमें विशेष अधिक है । मायामें विशेष अधिक है । लोभमें विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । प्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रामें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलामें विशेष अधिक है । निद्रानिद्रामें विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिमें विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । नरकगतिमें अनन्तगुणा है । देवगतिमें अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरमें संख्यातगुणा है । आहारकशरीरमें असंख्यातगुणा है । मनुष्यगतिमें संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रमें संख्यातगुणा है । मनुष्यायुमें असंख्यातगुणा है । यशस्कीर्तिमें असंख्यातगुणा है । औदारिकरीरमें संख्यातगुणा है । तैजसशरीरमें विशेष अधिक है । कामणशरीरमें विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिमें संख्यातगुणा है । अयशस्कीर्तिमें विशेष अधिक है । पुरुषवेदमें संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदमें संख्यातगुणा है । हास्यमें संख्यातगुणा है । रतिमें विशेष अधिक है । शोकमें संख्यातगुणा है । सातावेदनीयमें विशेष अधिक है । अरतिमें विशेष

१ ताप्रतौ नास्तीदं वाक्यम् । २ ताप्रतौ 'असंखे० गुणा' इति पाठः । ३ अस्य स्थाने अ-ताप्रत्योः 'पदेस०', काप्रतौ 'पुरिस०' इति पाठः ।

अरदि० विसे० । णवुंस० विसे० । दुगुंछ० विसे० । भय० विसे० । माणसंजल०  
 विसे० । कोह० विसे० । माया० विसे० । लोह० विसे० । दाणंतराइए विसे० ।  
 लाहंत० विसे० । भोगंत० विसे० । परिभोगंत० विसे० । विरियंतरा० विसे० ।  
 मणपञ्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुद० विसे० । मदि० विसे० ।  
 ओहिदंस० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । असादे संखेज्जगुणं ।  
 णीचागोदे जहण्णयं पदेससंतकम्मं विसेसाहियं । एवमेइंदियदंडओ समत्तो ।  
 एवं चउवीसदिमअणियोगहारं समत्तं ।

अधिक है । नपुंसकवेदमें विशेष अधिक है । जुगुप्सामें विशेष अधिक है । भयमें विशेष  
 अधिक है । संज्वलन मानमें विशेष अधिक है । संज्वलन क्रोधमें विशेष अधिक है ।  
 संज्वलन मायामें विशेष अधिक है । संज्वलन लोभमें विशेष अधिक है । दानान्तरायमें  
 विशेष अधिक है । लाभान्तरायमें विशेष अधिक है । भोगान्तरायमें विशेष अधिक  
 है । परिभोगान्तरायमें विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायमें विशेष अधिक है । मनःपर्यय-  
 ज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणमें  
 विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणमें विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणमें विशेष  
 अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणमें विशेष अधिक है ।  
 असातावेदनीयमें संख्यातगुणा है । नीचगोत्रमें जघन्य प्रदशसत्कमं विशेष अधिक है ।  
 इस प्रकार एकेन्द्रियदण्डक समाप्त हुआ ।

इस प्रकार चौबीसवां अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



## धवलाकार-प्रशस्तिः

जस्साएसेण<sup>१</sup> मए सिद्धंतमिदं हि अहिलहुदं<sup>२</sup> ।  
 महु सो एलाइरियो पसियळ वरवीरसेणस्स ॥ १ ॥  
 वंदामि उसहसेणं तिउवणजियवंधवं सिवं संतं ।  
 णाणकिरणावहासियसयल-इयर-तम-पणासियं दिट्ठं ॥ २ ॥  
 अरहंता<sup>३</sup> भगवंतो सिद्धा सिद्धा पसिद्धयारिया ।  
 साहू साहू य महं पसियंतु भडारया सव्वे ॥ ३ ॥  
 अज्जज्जणंदिस्सिस्सेणुज्जुवकम्मस्स चंदसेणस्स ।  
 तह णत्तुवेण पंचत्थुहण्णयंभाणुणा मुणिणा ॥ ४ ॥  
 सिद्धंत-छंद-जोइस-वायरण-पमाणसत्थणिवुणेण ।  
 भट्टारएण टीका लिहिएसा वीरसेणेण ॥ ५ ॥  
 अट्टत्तीसम्हि सासियंविक्कमरायम्हि एसु संगरमो ।  
 पासे<sup>४</sup> सुतेरसीए भावविलगो धवलपक्खे ॥ ६ ॥  
 जगतुंगदेवरज्जे रियम्हि कुंभम्हि राहुणा कोणे ।  
 सूरे तुलाए संते<sup>५</sup> गुरुम्हि कुलविल्लए होते ॥ ७ ॥  
 चावम्हि वरणिवुत्ते सिंघे<sup>६</sup> सुक्कम्मि मेंढिचंदम्मि<sup>७</sup> (?) ।  
 कत्तियमासे एसा टीका हु समाणिआ<sup>८</sup> धवला ॥ ८ ॥  
 वोहणरायणरिंदे णरिंदचूडामणिम्हि भुंजंते ।  
 सिद्धंतगंधमत्थिय गुरुप्पसाएण विगत्ता सा ॥ ९ ॥

## पुस्तकप्रदातृ-प्रशस्तिः

शब्दब्रह्मेति शाब्दैर्गणधरमुनिरित्येव शब्दान्तविद्भिः, साक्षात्सर्वज्ञ एवेत्यवहितमतिभिः सूक्ष्मवस्तु-  
 प्रणीतौ । यो दृष्टो विश्वविद्यानिधिरिति जगति प्राप्तभट्टारकाख्यः, स श्रीमान् वीरसेनो जयति परमतध्वान्त-  
 भित्तन्त्रकारः ॥ १ ॥ श्रीचारित्रसमृद्धि मिक्क विजयश्रीकर्म्मविच्छित्तिपूर्वकज्ञानावरणीयमूलनिर्नाशनं ।  
 भूचक्रं वेसकेरुये संद मुनिवृंदाधीश्वरकुंदकुंदाचार्यर् धृतधैर्यरायैतेयिनेनाचार्यरोळ् वर्यरो ॥ २ ॥  
 जितमदर्विगतमलचतुरंगुलचारणद्धिनिरतणेंगळ्दर । कीर्त्तिने गुणगणधर्यतिपतिगणधरायेंनिसि कुंद-  
 कुंदाचार्यर् ॥ ३ ॥ अवरन्वयदोळ् सिद्धांतविदव्याकरणवेदिगळ् षट्त्तर्कप्रवणद्धि सिद्धिसंस्तुतरवरय्य  
 गृद्धपिच्छाचार्य्यवर्य्यर् ॥ ४ ॥ धैर्यपरणेंगळ्द गांभीर्यगुणोदधिगळ् चित्तशमदमयमतास्यरेने गृद्ध-  
 पिच्छाचार्यरशिष्यर् बलाकपिच्छाचार्यर् ॥ ५ ॥ गुणनंदिपंडितैर्निजगुणनंदिपंडितजनंगळ् मेच्छिसि  
 मैगुणद पेसरेसेये विद्वद्गणतिलकर् सकलमुनींद्रशिष्यर् ॥ ६ ॥ पदार्थदोळ्थशास्त्रदोळ् जिनागमदोळ्  
 हयतंत्रदोळ् महाचरितपुराणसंततिगळोळ् परमागमदोळ् पेरसंमंदोरे सरि पाटि पासटि समानसेनळ्  
 कृतविद्यारारेनुत्तिरे बुधकोटि संदरवनीतलदोळ् ॥ ७ ॥ गुणनंदि पंडितशिष्यर् विहितविदगें सुनुवराशिष्यरोळ्  
 तस्त्रेच्छर् सिद्धांतपरायणरेणिकेगोळ् केयदिं वतैयो विच्छिन्नानगेरंबो महिमेयिनेसेदवांधियेंतंतुदारर्

१ प्रतिपु 'जस्स सेसाएण' इति पाठः । २ प्रतिपु 'अहिलहुंदी' इति पाठः । ३ प्रतिपु 'अरिहंतपदो'  
 इति पाठः । ४ काप्रतौ 'सामिय' इति पाठः । ५ ताप्रतौ 'पा(पो)स' इति पाठः । ६ अ-काप्रत्योः 'संतं' इति  
 पाठः । ७ का-ताप्रत्योः 'सिंघे', मप्रतौ 'सिंघे' इति पाठः । ८ अ-काप्रत्योः 'सुक्कम्मि गेमिचंदम्मि', ताप्रतौ  
 'सुक्कम्मि मिणे चंदम्मि' इति पाठः । ९ प्रतिपु 'समाणिला इति पाठः ।

स्वच्छर् दिनकरकिरणमेनेगले देवेंद्रसिद्धांतर ॥ ८ ॥ अंतु नेगत्तेवत्त वरशिष्यकदंबकदोळ् समस्त-  
सिद्धांतमहापयोनिधियेनिसि तदंबरेगं तपोबला- । क्रांतमनोजरागि मदवर्जितरागि पोगत्तेवत्तराशांत-  
भनेटदे कीर्ति वसुनंदिसुनींद्रदातवृत्तियं ॥ ९ ॥ उदधिगेकलाधरं पुट्टिदनेंबतवर्गं शिष्यरादर् गुण-  
दोळोदवे रविचंद्रसिद्धांतदेवरेंबर्जगद्विशेषकचरितर् ॥ १० ॥ अंतुदयावनीधरकृतोदयनाद् शशाकनिदे  
शाश्वरिकपराधिगतु धरातलमंते दुर्णयध्वांतविघातभागिरे तदुद्धवरिं सले पूर्णचन्द्रसिद्धांतमुनींद्र-  
निगदितांतप्रतिशासनं जैनशासनं ॥११॥ इंदु धरददवेळिंदगळे पुट्टिदुदु देसेदेसेयोळनिप जसदोळ्वं  
ताळिद् दामनंदिसिद्धांतदेवरवरप्रशिष्यरधिगततस्वर ॥१२॥ शांततेवेत्त चित्तजनोळाद् विरोधमिदेत्त  
निसृष्टर् स्वांततेवेत्तकांक्षे परमार्थदोळितु नेराळ्तेवेत्तदानांतनरिन्मरारेने जन्यजिनेंद्र वीरनंदिसिद्धांत-  
मुनींद्ररे सुचरितक्रमदोळ् विपरीतवृत्तरो ॥१३॥ बोधितभव्यरचित्तवर्धमान श्रीधरदेवरेंबरवर्गप्रतनूभवरादरा  
यशःश्रीधरगांदिशिष्यरचरोळ् नेगळ्दूर् मलधारिदेवरुं श्रीधरदेवरुं ॥१४॥ नतनरेंद्रतिरीटतटाचितक्रमर् ।  
अनुवशनागि वर्षनेनगंधुरुहोदरनोदे पूर्विनं । विनोलेवसक्के वंदनभवं जलजासन मीनकेतनमनेकं  
तत्तदेवप्रकरकरांद्रमदोद्धतनपचित्तजन्मनेतले दोरलमनेमेघदरार् मलधारिदेवरं ॥१५॥ श्रुतधरवलिन्ति-  
नेमेयनोर्मेयुं तुरिसुबुदिल्लि निद्धेवरमगुलनिष्कुदिल्लवागिलं- । किरुत्तेरेयेंडुदिल्लि गुर्बुदिल्ल महेंद्रजुं नेरे  
ओण वणिणसल् गुणगणावलियं मलधारिदेवरं ॥१६॥ आ मलधारिदेवमुनिमुख्यर शिष्यरोळग्रण्यरु  
वर्जितकपायक्रोधलोभमानमायारमदवर्जितर्णेंगर्दिंदुमरीचिगळदंभं यशः श्रीचंद्रकीर्तिसुनिनाथरुदात्तचरित्र-  
वृत्तियं ॥ १७ ॥ मलधारिदेवरिंदं वेळगिदुदु जिनेंद्रशासनं मुन्नं निर्मलमागि मत्तभीगळ् वेळगिदुपुदु  
चंद्रकीर्ति भट्टारकरिं ॥१८॥ वेळगुच कीर्तिचंद्रके मृदूक्तिसुधारसप्रसरितमूर्तियोळ् । वेळदमल पोदलदसित-  
लांछनमागिरे चंद्रनंदमं तळेदु जनं मनंगोळे दिगंतरविकासितोज्वलि-शुभचंद्रकीर्तिसुनिनाथरिंदं विबुधाभि-  
वंधरो ॥१९॥ इंतु प्रसरकिरणारातीय चंद्रकीर्तिसुनींद्राशांतर्वर्तितकीर्ति- गळन् मुनिवृद्धवदितरादरा  
शांतचित्तर शिष्यरात्तय दिवाकरणंदि सिद्धांतदेवरिंदं जिनागमवाधिपारगरादरो ॥ २० ॥ इतिदाबु-  
दरिंदिल्लिकैयुदु सिद्धांतवारिधियनलुकदे वंदिरेंदोडांनंतु वणिणसुवेनण दिवाकरणंदि सिद्धांतदेवरखिला-  
गमभक्तर मार्गभं ॥२१॥ 'तिभसुधांनुप्रचुरपरनिकरं व्याख्यानघोषं मरुच्चलितोत्तुङ्गतर्गघोषमेनेमिक्कौदार्य-  
दिंदोषि निर्मलधर्मांमृतदिंदलंकरिसि गंभीरत्वभं ताळ्दी भूवल्यकैटदे पवित्ररागि नेगळ्दूर् सिद्धांतरत्ना-  
करर् ॥२२॥ अवरप्रशिष्यर् । मरेहुमदोर्मे लौकिकद्वार्तेयनाढद् केतवागिलं तेरेयद् भानुवस्तमितमागिरे  
पोगद् मेयनोर्मेयुं तुरिसदकुक्कुटासनके सोलद् गंडविमुक्तवृत्तियं मरेयदघोरदुस्तरतपश्चरितं मलधारि-  
देवर ॥२३॥ अवरप्रशिष्यर् ।

श्रीदेशीगणवाधिवर्द्धनकरश्चन्द्रावदातोल्वणः, स्थेयाद् श्रीमलधारिदेवयमिनः पुत्रः पवित्रो भुवि ।  
सद्धर्मेकशिखामणिजिनपतेर्भयैकचिन्तामणिः, स श्रीमान् शुभचन्द्रदेवमुनिपः सिद्धान्तविद्यानिधिः ॥ १ ॥  
शब्दाधिष्ठितभूतले परिलसत्कर्णससस्तंभके (तर्कालसस्तंभके), साहित्यस्फटिकाश्मभित्तिरुचिरे ज्योतिर्मये  
मण्डले । सद्ब्रह्मत्रयनूत्तरकलशे स्याद्वाद्दहर्भ्ये मुदा, यो देवेन्द्रसुरार्चितैर्दिविषदैस्तन्निर्विरेजुस्तु त्व  
॥ २ ॥ देवेन्द्रसिद्धान्तमुनीन्द्रपाद-पङ्केजमृङ्गः शुभचन्द्रदेवः । यदीयनामापि विनेयचेतोजातं तमो हर्तुंमलं  
समर्थः ॥ ३ ॥ परमजिनेश्वरविरचितवरसिद्धान्ताम्बुराशिपारगरेंदी । धरे वणिणसुगुं गुणगणधरं शुभचन्द्र-  
देवसिद्धान्तिकरं ॥ ४ ॥ श्रीमज्जिनेन्द्रपाद-पद्म-परागतुङ्गः, श्रीजैनशासनसमुद्गतवादिचन्द्रः । सिद्धान्त-  
शास्त्रविहिताङ्कितदिव्यवाणी, धर्मप्रबोधमुकुरः शुभचन्द्रसूरिः ॥ ५ ॥ चित्तोद्भूतमदेभकन्ददलनप्रोत्कण्ठ-  
कण्ठीरवो भस्याम्भोजकुलप्रबोधनकृते विद्वज्जनानन्दकृत् । स्थेयास्कुन्दहिमेन्दुनिर्मलयशोवलीसमालम्बनस्तम्भः  
श्रीशुभचन्द्रदेवमुनिपः सिद्धान्तरत्नाकरः ॥ ६ ॥ कुचलयकुलबन्धुध्वस्तमीहातमिस्रे विकसितमुनितत्त्वे  
सज्जनानन्दधृत्ते । विदितविमलनानासत्कलान्वीतमूर्तिः शुभमतिशुभचन्द्रो राजवद्राजतेऽयम् ॥ ७ ॥  
विग्दन्तिदन्तान्तरवर्तिकीर्तिः रत्नत्रयालंकृतचारुमूर्तिः । जीयाच्चिरं श्रीशुभचन्द्रदेवो भव्याब्जिनी-राजत-

( राजित ) राजहंसः ॥ ८ ॥ श्रीमान् भूपालमौलिस्फुरितमणिगणज्योतिरुद्योतितांग्रिः, भव्याम्भोजात-  
जातप्रमदकरनिधिस्त्यक्तमायामदादिः । दृश्यत्कन्दर्पदर्पप्रबलितगिलितस्तूर्णितश्राय्यर्षदश्रज्जीयाजैनावजभास्वा-  
ननुपमविनयो नूतसिद्धान्तदेवः ॥ ९ ॥ जीयादसावनुपमं शुभचन्द्रदेवो भावोद्भवोद्भवविनाशनमूलमंत्रः ।  
निस्तन्द्रसान्द्रविबुधस्तुतिभूरिपात्रं त्रैलोक्य-गोहमणिदीपसमानकीर्तिः ॥ १० ॥ मूर्तिः शमस्य नियमस्य  
विनूतपात्रं क्षेत्रं श्रुतस्य यशसोऽनघजन्मभूमिः । भूविश्रुतश्रि(श्रु)तवतां सुरभूजकल्पानल्पान्युधा निव-  
सताच्छुभचन्द्रदेवः ॥ ११ ॥

स्वस्ति श्री समस्तगुणगणालंकृतसत्य-शौचाचारचारुचरित्र-नय-विनय-सुशीलसम्पन्नेयुं विबुधप्रसन्नेयुं  
आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदानविनोदेयुं गुणगणाह्लादेयुं जिनस्तपनसमयसमुच्छलितदिव्यगन्धधनधुरगन्धोदक-  
पवित्रगात्रेयुं गोत्रपवित्रेयुं सम्यक्त्वचूडामणियुं मंडलिनाड-श्रीभुजवलरंगपेर्मार्दिदेवरत्नेयरुमपेडवि-देमियक्कं-  
श्रुतपंचमियं नोतुजवणेयनाड-वन्नियकेरेयुनुङ्गचैत्यालयदाचार्यं भुवनविख्यातरुमेनिसिद्धं तम्म गुरुगळ  
श्रीशुभचन्द्रसिद्धान्तदेवगे श्रुतपूजेयं माडियरेयिसि कोट्टधवलेयं पोस्तकं मंगलमहा । श्री ३ ।

श्रीकुपणं प्रसिद्धपुरमापुरदाणेगवंशवाद्धिशो-  
भाकरमूर्जितं निखिलसाक्षरिकास्थविलासदर्पणं ।  
नाकजनाथवंद्यजिनपादपयोरुहभृङ्गनेन्दुभू-  
लोकमिदुवर्णिपुट्टु जिन्नमनं मनुनीतिमार्गनं ॥  
जिनपद-पञ्चाराधकमनुपमविनयाम्बुराशिदानविनोदं ।  
मनुनीतिमार्गनसतीजनदूरं लौकितार्थदानिग जिन्नं ॥  
वारिनिधियोळगे मुत्तं नेरिदवं कोण्डुकोरेदु वरुणं सुददिं ।  
भारतियकोरळोळिक्कदहारमननुकरिसलैसेवरेवो जिन्नं ॥  
श्रीधवलं समाप्तम् ।



## १ अवतरण-गाथासूची

क्रमसंख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रमसंख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
१[७-२]	अगुल्लघु-परुवधादा	१३		२५[१४-९]	ण य कुणइ पक्खवार्यं	४९२	गो.जी. ५१६
२[२४-२]	अत्ता मलुत्ति परिभोग-	५७५		२६[१४-५]	ण य पत्तियइ परं सो	४९१	” ५१२
३[८-१४]	अभावैकान्तपक्षेऽपि	३०	आ. मी. १२	२७[१४-३]	णिहावंचणवहुलो		” ५१०
४[८-१]	असदकरणाट्टुपादान-	१७	सां. का. ९	२८[७-५]	दाणं तराइयं दाणे	१४	
५[८-२०]	आउअभागो थोवो	३५		२९[८-१०]	न सामान्यात्मनोदेति	२८	आ. मी. ५७
६[२४-१]	आहारे परिभोगं	५७५		३०[८-२]	नित्यत्वैकान्तपक्षे पि	१९	” ३७
७[१२-३]	उगुदाल तीस सत्त य	४१०	गो. क. ४१८	३१[१३-२]	पम्मा पउमसवण्णा	४८५	
८[९-४]	उदए संकम-उदए	२७६	” ४४०	३२[८-९]	पयोत्रतो न दध्यत्ति	२७	आ. मी. ६०
९[१२-१]	उव्वेह्लण विज्झादो	४०८	” ४०९	३३[७-१]	पंच य छत्ति य छप्पंच	१३	
१०[९-१]	एक य छक्केक्कारस	८२	जयघ. अ. प. ७५८ (उद्धृत)	३४[९-३]	पंचादि अट्टणिहणा	८२	जयघ. अ. प. ७५९
११[८-१९]	एयक्खेतोगाढं	३५	गो. क. १८५	३५[८-४]	पुण्य-पापक्रिया न स्यात्	२०	आ. मी. ४०
१२[८-१६]	कथंचित्ते सदेवेहं	३१	आ. मी. १४	३६[१२-२]	बंधे अधापमत्तो	४०९	गो. क. ४१६
१३[८-१७]	कम्मं ण होदि एयं	३२		३७[८-११]	भावैकान्ते पदार्थानां	२८	आ. मी. ९
१४[८-१२]	कार्यद्रव्यमनादि स्यात्	२९	आ. मी. १०	३८[१४-६]	मरणं पत्येइ रणे	४९१	गो. जी. ५१३
१५[१३-१]	किणं भमरसवण्णा	८४५		३९[१४-२]	मंदो बुद्धिविहीणो	४९०	” ५०९
१६[८-७]	क्षणिकैकान्तपक्षेऽपि	२६	आ. मी. ४१	४०[८-३]	यदि सत्सर्वथा कार्यं	२०	आ. मी. ३९
१७[१०-६]	खवए य खीणमोहे	२९६	ष. खं. पु. १२, पृ. ७८; क. प्र. ६, ९	४१[८-५]	यद्यत्सर्वथा कार्यं	२१	” ४२
१८[७-३]	गदि-जादी उस्सासो	१३		४२[८-१८]	राग-द्वेषाद्यूष्मा	३४	
१९[८-८]	घट-मौलि-सुवर्णार्थी	२७	आ. मी. ५९	४३[१४-४]	रुसइ णिंदइ अण्णे	४९१	गो. जी. ५११
२०[७-४]	चत्तारि आणुपुब्बी	१४		४४[८-१५]	विरोधान्नोभयैकात्म्यं	३०	आ. मी. १३
२१[१४-१]	चंडो ण मुवइ वेदं	४९०		४५[९-२]	सत्तादि दसुक्करसं	८२	जयघ. अ. प. ७५९
२२[१४-८]	चाईं महो चोक्खो	४९२	गो. जी. ५१५	४६[१०-५]	सम्मत्तुप्पत्तीए	२९६	ष. खं. पु. १२, पृ. ७८; क. प्र. ६, ८
२३[१४-७]	जाणइ कज्जमकळं	४९१	” ५१४	४७[८-१३]	सर्वात्मकं तदेकं स्या-	२९	आ. मी. ११
२४[८-६]	जातिरेव हि भावानां	२६	क. पा. १, पृ. २२७ (उद्धृत)	४८[८-२१]	सव्ववरिवेदणीए	३६	

## २ ग्रन्थोल्लेख

### १ कर्मप्रवाद

१ सा कम्मपवादे सचित्थरेण परूविदा ।

२७५

### २ कषायप्राभृत

१ एसा सव्वंकरणुवसामणा कसायपाहुडे परूविज्जिहिदि ।

२७५

२ मोहणीयस्स जहा कसायपाहुडे वित्थेरण ढाणसमुक्कित्तणा कदा तथा एत्थ वि कायव्वा । ३४७

३ मोहणीयसंतकम्मस्स सामित्तं जहा कसायपाहुडे कदं तथा कायव्वं । ५२३

४ पयडिढाणसंतकम्मं मोहणीयस्स जहा कसायपाहुडे कदं तथा कायव्वं । ५२७

### ३ जीवस्थान-चूलिका

१ वंधं पडुच्च द्विदिरहस्से भण्णमाणे जहा जीवढाणचूलियाए उत्तरपयडीणं जहण्णद्विदिपरुवणा कदा तथा कायव्वा । ५१०

### ४ तत्त्वार्थसूत्र

१ ओहिणाणो [ दाव्वदो ] मुत्तिदव्वाणि चैव जाणदि नामुत्तधम्माधम्म-काला-गास-सिद्धजीवद्वग्घाणि, “रूपिच्चवधेः” इति वचनात् । ८

२ किं च-ण जीवदव्वमत्थि, “रूपिणः पुद्गलाः” इच्चेद्देण लक्खणेण जीवाणं पोगगलेसु अंतवभावादो । ३३

### ५ भावविधान

१ तासिं परुवणा जहा भावविहाणे कदा तथा कायव्वा । ५१५

### ६ महाबन्ध

१ जहा महाबंधे परुविदं तथा परुवणा एत्थ किण्ण कीरदे । ४३

### ७ वेदना

१ जेण पदेसग्गेण भवं धारेदि तस्स पदेसग्गस्स पदमीमांसा सामित्तमप्पा-बहुगं च जहा वेयणाए परुविदं तथा परुवेयव्वं । ५१३

### ८ सत्कर्मप्रकृतिप्राभृत

१ एत्थ एदेसिं चदुण्णमुवक्कमाणं जहा संतकम्मपयडिपाहुडे परुविदं तथा परुवेयव्वं । ४३

### ९ सूत्रविशेष

१ कुदो अधापवत्तभागहारादो विज्झादभागहारस्स संखेज्जगुणहीणत्तं णव्वदे ? एदम्हादो चैव सुत्तादो । ४४९

## ३ ग्रन्थकारोल्लेख

### १ आर्यनन्दी

१ कम्मद्विदि त्ति अणियोगहारे एत्थ महावाचया अज्जणंदिणो संतकम्मं करेति । ५७७

२ महावाचयाणमज्जणंदीणं उव्वेसेण अंतोमुहुत्तं इवेदि संखेज्जगुणमारआदो । ५७८

### २ आयमंक्षु

१ अज्जमंखुसमासमणा पुण कम्मद्विदिसंचिदसंतकम्मपरुवणा कम्मद्विदिपरुवणे त्ति भणंति । ५१८

२ महावाचयाणमज्जमंखुसमणाणमुव्वेसेण लोणे पुण्णे आउअसमं करेदि । ५७८

३ नागहस्ती

- १ एसुवदेसो णागहत्थिखमणाणं । ३२७  
 २ जहण्णुक्कस्सट्ठिदीणं पमाणपरुवणा कम्मट्ठिदि त्ति णागहत्थिखमासमणा भणंति । ५१८  
 ३ अप्पावहुगअणियोगहारे णागहत्थिभडारओ संतकम्ममगणं करेदि । ५२२

४ निक्षेपाचार्य

- १ एसो णिक्खेवाइरियउवएसो । ३०

५ भूतवली भट्टारक

- १ भूतवलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सुत्तेण सूचिदसेसअट्टारसअणियोगहारणं किंचि संखेवेण परुवणं कस्सामो । १

६ महावाचक क्षमाश्रमण

- १ महावाचयाणं खमासमणाणं उवदेसेण सव्वत्थोवाणि कसाउदयट्ठणाणि । ५७७  
 २ महावाचया ट्ठिदिसंतकम्मं पयासंति । ”  
 ३ अप्पावहुए त्ति जमणिओगहारं एत्थ महावाचयखमासमणा संतकम्म-मगणं करेदि । ५७९

४ परम्परागत उपदेश

- १ पवाइज्जतेण उवएसेण हस्स-रदिवेदएहिंतो सादवेदया जीवा विसेसा० । २८८  
 २ पवाइज्जतेण उवदेसेण संखेज्जजीवमेत्तेण विसे० । २८९  
 ३ एयजीवेण अंतरं पवाज्जतेण उवएसेण वत्तइस्सामो । २९३  
 ४ एदं पुणो हेट्ठुणा अप्पावहुअं ण पवाइज्जदि । ३३२  
 ५ एसो च उपदेसो पवाइज्जदि । ५२२

५ उपदेशभेद

- १ उदयावलयमेत्तट्ठिदिविसेसो त्ति जे आइरिया भणंति तेसिमहिप्पाएण उदीरणकालो जहण्णओ एगसमयमेत्तो । जे पुण दोण्णि समए जहण्णेण उदोरेदि त्ति भणंति तेसिमहिप्पाएण वे समया त्ति परुविदं ४५  
 २ खीणकसायम्मि णिहा-पयलाणमुदीरणा णत्थि त्ति भणंताणमभिप्पाएण णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धीहि सह जहण्णसामित्तं वत्तव्वं । ११०  
 ३ कुदो ? एदस्साइरियस्स उवदेसेण खीणकसायम्मिह जहण्णट्ठिदिउदीरणाभावादो । १३७  
 ४ केसिं पि आइरियाणं अहिप्पाएण सव्वासिमाणुपुव्वीणमुक्कस्सकालो तिण्णि समया, तिरिक्खगइपाओगाणुपुव्वीए चत्तारि समया । १९८  
 ५ अधवा, ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं वड्ढीए वि मदिणाणावरणभंगो होदि त्ति केसिं पि आइरियाणसुवदेसो । २६४  
 ६ अण्णोसिसुवदेसेण एदे पुव्वुत्ता अवेदया होदूण असंखेज्जवासाउआ च उत्तरविउव्विदतिरिक्ख-मणुस्सा च अवेदया । २८५



- ७ अण्णेण उवदेसेण असंखे० भागमेत्तेण विसे० । २८९
- ८ अण्णेण उवएसेण सदिआवरणस्स भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि सव्वट्ठे । ३२८
- ९ एदस्सि उवदेसे जाणि कम्माणि ण भणिदाणि तेसिं कम्माणं णत्थि द्दो उवदेसा, पढसेण चेव उवदेसेण ताणि णेयव्वाणि । ३२९
- १० अण्णेण उवएसेण पुण सव्वणामपयडोणं णत्थि अवट्ठिदसंक्रमो । ४६७
- ११ एदेहि दोहि उवदेसेहि भुजगार-पदणिकखेववट्ठिदसंक्रमेणु सामित्तमप्पा-वहुगं कायव्वं । ४६८
- १२ जेसिमाइरियाणं णिग्गमाणुसारी आगमो तेसिमहिप्पाएण अत्थि अव-ट्ठिदसंक्रमो । जेसिं पुण आइरियाणं णिग्गमाणुसारी आगमो ण होदि, क्खित्तु संकामिज्जमाणपयडिपदेसाणुसारी, तेसिमहिप्पाएण सव्वणामपयडोणं णत्थि अवट्ठणं । ४६९
- १३ जेण उवदेसेण अवट्ठणं तेण उवदेसेण तिपलिदोवमियस्स तप्पाओग्ग-उक्कस्सियाए वट्ठोए वट्ठिदूण अवट्ठिदस्स उक्कस्समवट्ठणं । ४६९
- १४ एसो ताव एक्को उवदेसो । अण्णेण उवएसेण अणंताणुवंचीणं जहण्णिया हाणी कस्स ? ४७४
- १५ वारसणं कसायाणं जेण उवएसेण अवट्ठणमत्थि तेण उवएसेण उवदे— ४७५

## ६ पारिभाषिक-शब्द-सूची

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अनादिक नामप्रकृति	४०४	अनेकान्त	२५
अकरणीपशामना	२७५	अनादिसत्कर्म नामकर्म	३७३	अनेकान्तअसात	४९८
अगुणप्रतिपन्न	१७४, २८८	अनादिसत्कर्मिकनामप्रकृति		अनेकान्तसात	"
अगुणीपशामना	२७५		३९९	अन्तर	३७९
अघाति	१७१, ३७४	अनादिसत्कर्मिक प्रकृति	४४१	अपर्याप्त निर्घृत्ति	१८५
अचक्षुदर्शन	९	अनावर्जितक	१८९	अपूर्वस्पर्धक	५२०, ५७८
अचित्तप्रक्रम	१५	अनिकाचित	५७६	अप्रशस्तोपशामना	२७६
अतिस्थापना	३४७, ३७५	अनिघत्त	"	अभिधाननिवन्धन	२
अद्वाक्ष्य	३७०	अनुदीर्णोपशामना	२७५	अर्थनिवन्धन	२
अधर्म द्रव्य	३३	अनुपशान्त	२७६	अल्पतर उदय	३२५
अधःप्रमत्तगुणश्रेणि	२९७	अनुभागदीर्घ	५०९	अल्पतर उदी०५०, १५७, २६०	
अधःप्रवृत्त भागहार	४४८	अनुभागमोक्ष	३३८	अल्पतर संक्रम	३९८
अधःप्रवृत्तसंक्रम	४०९	अनुभागविपरिणामना	२८२	अवक्तव्य उदय	३२५
अधःस्थितिगलन	२८३	अनुभागसत्कर्म	५३८	अवक्तव्य उदीरणा	५१, १५७,
अनन्तजीविय	२७४	अनुभागसंक्रम	३७५	अवग्रह	५
अनन्तानुबन्धिविसंयोजना	२७६	अनुभागहस्त	५११	अवधिलंभ	१७६, २३८
		अनुमानित गति	५३७	अवस्थित उदय	३२५

अवस्थित उदीरणा	५, १, १५७
अवस्थित संक्रम	३९८
अशुभ प्रकृति	१७६
<b>आ</b>	
आकाश द्रव्य	३३
आगमभावलेइया	४८५
आदिवर्गणा	५३२
आदिस्पर्धक	३७४, ५३८
आदेशभव	५१२
आनुपूर्वीसंक्रम	४११
आयुष्कघातक	२८८
आर्यनन्दी	५७७, ५७८
आर्यमंक्षु	५१८, ५७८
अवर्जित करण	२५९, ५१९, ५७७
आवासक	३०३
आहारतःआत्तपुद्गल	५१५
<b>उ</b>	
उत्कीरणद्धा	५२०
उत्तर निर्वर्तना	४८६
उत्तरप्रकृतिविपरिणामनार	२८३
उत्पाद्	१९
उद्दय	२८९
उद्दयगोपुच्छ	२५३
उद्दयमार्गणा	५१९
उदीरणा	४३
उदीरणाउद्दय	३०४
उदीरणामार्गणा	५१९
उद्वेलनकाण्डक	४७८
उद्वेलनभागहार	४४८
उद्वेलनसंक्रम	४१६
उद्वेल्यमान प्रकृति	३८३
उपक्रम	४१, ४२
उपभोगतः आत्त पुद्गल	५१५
उपभोगान्तराय	१४
उपशामसम्यक्त्वगुणश्रेणि	२९७
उपशान्त	२७६
उपशामना	२७५
उपशामकअध्यवसान	५७७

<b>ए</b>	
एकस्थानिका	१७४, ५३९
एकस्थिति	१०१
एकान्तअसात	४९८
एकान्तभवप्रत्ययिक	१७३
एकान्तसात	४९८
<b>ओ</b>	
ओघभव	५१२
<b>क</b>	
करणोपशामना	२७५
कर्मउपक्रम	४१, ४२
कर्मउपशामना	२७५
कर्मनिबन्धन	३
कर्मप्रक्रम	१५
कर्ममोक्ष	३३७
कर्मसंक्रम	३३९
कपायउद्दयस्थान	५२७
कापोतलेइया	४८४, ४८८, ४९१
कालउपक्रम	४१
कालद्रव्य	३३
कालनिबन्धन	२
कालप्रक्रम	१६
कालसंक्रम	३३९, ३४०
कृतकरणीय	२५३
कृतकृत्य	३३८
कृष्टि	५२१, ५७९
कृष्णलेइया	४८४, ४८८, ४९०
क्षपितकर्मांशिक	३०८, ३२१
क्षेत्रउपक्रम	४१
क्षेत्रनिबद्ध	७, १४
क्षेत्रनिबन्धन	२
क्षेत्रप्रक्रम	१५
क्षेत्रसंक्रम	३३९, ३४०
<b>ग</b>	
गुण	१७४
गुणप्रतिपन्न	"
गुणश्रेणि	२९६
गुणश्रेणिनिर्जरा	२९९

गुणश्रेणिशीर्ष	२९८, ३३३
गुणसंक्रम	४०९
गुणितकर्मांशिक	२९७
गुणोपशामना	२७५
ग्रहणतः आत्त पुद्गल	५१५
<b>घ</b>	
घातस्थान	४०७
घातिसंज्ञा	१७१, ३७७, ५३९
घोलमान जघन्य योग	४३५
<b>च</b>	
चक्षुदर्शन	१०
चतुर्दशपूर्वधर	२४४
चतुर्दशपूर्वी	५४१
चतुःस्थानिक	१७४
चारित्र	१२
<b>ज</b>	
जीवगुणहानिस्थानान्तर	३२८
जीवद्रव्य	३३
जीवनिबद्ध	७, १४
जीवविपाकी	१३
तद्द्रव्यतिरिक्त द्रव्यलेइया	४८४
तीसिय	५३७
तेजोलेइया	४८४, ४८८, ४९१
त्रिस्थानिक	१७४
<b>द</b>	
दर्शन	५, ६
दानान्तराय	१४
दारुसमान	३७४, ५३९
दुःख	६
देशकरणोपशामना	२७५
देशघाति	१७१, ३७४, ५३९
देशप्रकृतिविपरिणामना	२८३
देशमोक्ष	३३७
देशविपरिणामना	२८३
दोगुणश्रेणिशीर्ष	२९७
द्रव्य	३३
द्रव्यउपक्रम	४१
द्रव्यउपशामना	२७५
द्रव्यनिबन्धन	२

द्रव्यप्रक्रम	१५	नोकर्मउपशामना	२७५	प्रकृतिसंक्रम	३४०
द्रव्यमोक्ष	३३७	नोकर्मप्रक्रम	१५	प्रकृतिस्थानउपशामना	२८०
द्रव्यलेश्या	४८४	नोकर्ममोक्ष	३३७	प्रकृतिह्रस्व	५०९
द्रव्यसंक्रम	३३९	नोकर्मसंक्रम	३३९	प्रक्रम	१५, १६, ४२
द्रव्यार्थिक नय	४८५	नोप्रकृतिदीर्घ	५८७	प्रतिग्रह	४११, ४१४, ४९५
द्विस्थानिक	१७४, ५३९	नोप्रकृतिह्रस्व	५०९	प्रत्ययनिबन्धन	२
ध		नोप्रदेशदीर्घ	,,	प्रदेशउदीरकअध्यवसान-	
धर्मद्रव्य	३३	नोप्रदेशह्रस्व	५११	स्थान	५७७
ध्रुवउदयप्रकृति	११९	नोस्थितिदीर्घ	५०८	प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर	३७६
ध्रुवउदीरक	१०८	नोस्थितिह्रस्व	५१०	प्रदेशदीर्घ	५०९
ध्रुवउदीरणाप्रकृति	१०९	प		प्रदेशमोक्ष	३३८
ध्रुवबन्धप्रकृति	१४५, ३२८	पद्मलेश्या	४८४, ४८८, ४९२	प्रदेशविपरिणामना	२८३
ध्रुवोदयप्रकृति	१५९, १६२, २३३	पयदकरण	२७६, २७७	प्रदेशसंक्रम	४०८
न		परभविक	३६३	प्रदेशसंक्रमणाध्यव-	
नागहस्ती	३२७, ५१८, ५२२	परभविक नामप्रकृति	३४२	सानस्थान	५७७
नामउपक्रम	४१	परमभविकनामबन्धा-		प्रदेशह्रस्व	५११
नामउपशामना	२७५	ध्यवसान	३८७	प्रयोगशः उदय	२८९
नामनिबन्धन	२	परिग्रहतः आत्त पुद्गल	५१५	प्रशस्तोपशामना	२७५
नामप्रक्रम	१५	परिणाम	१७२	प्रसज्य	२५
नाममोक्ष	३३९	परिणामतःआत्तपुद्गल	५१५	व	
नामलेश्या	४८४	परिणामप्रत्ययिक	१७२, २४२, २६१	बन्धनउपक्रम	४२
नामसंक्रम	३३९	परित्तजीविय	२७४	बन्धमार्गणा	५१९
निकाचनअध्यवसान	५७७	परिवर्तमान	२३४	भ	
निकाचित	५१७, ५७६	परिवर्तमान नामप्रकृति	१४६	भव	५, ५१२, ५१९
निक्षेपाचार्य	४०	पर्याप्त निर्वृत्ति	१८०	भवग्रहणभव	५१२
निक्षेप	३४७	पर्यायार्थिक नय	४८५	भवप्रत्ययिक	१७२, २६१
निधत्त	५१६, ५७६	पर्युदास	२५	भवोपगृहीत	१७२, १७५, ३८०
निधत्तअध्यवसान	५७७	पायदकरण	२७८	भंग	२३
निबन्धन	१	पिण्डप्रकृति	३४७	भावउपक्रम	४१
निपेकगुणहानि-		पुद्गलद्रव्य	३३	भावनिबन्धन	३
स्थानान्तर	३२८	पुद्गलनिबद्ध	७, १३	भावप्रक्रम	१६
नीललेश्या	४८४, ४८८, ४९०	पुद्गलात्त	५१४	भावमोक्ष	२३७
नैगम	२४	पुद्गलात्मा	५१५	भावलेश्या	४८५, ४८८
नोअनुभागदीर्घ	५०९	पूर्वधर	२३८	भावसंक्रम	३३९, ३४०
नोअनुभागह्रस्व	५११	पूर्वस्पर्धक	५२०, ५७८	भुजाकार	५०
नोआगमभावउपशामना	२७५	प्रकृतिदीर्घ	५०७	भुजाकार उदय	३२५
नोआगमभावलेश्या	४८५	प्रकृतिमोक्ष	३३७	भुजाकारउदीरणा	१५७, २६०
नोकर्मउपक्रम	४१	प्रकृतिसत्कर्म	५२२	भुजाकारउपशामक	३७७
				भुजाकारसंक्रम	३९८

भूतबली भट्टारक	१
भोगान्तराय	१४
म	
ममन्तीतः आत्त पुद्गल	५१५
महावाचकक्षमाश्रमण	५७७
मार्गणा	५१०
मिश्रप्रक्रम	१५
मुक्त	३३८
मूलनिर्वर्तना	४८६
मोक्ष	३३७, ३३८
य	
योगयवमध्य	४७३
ल	
लाभान्तराय	१४
लेइया	४८४
लेइयाकर्म	४९०
विध्यातभागहार	४४८
विध्यातसंक्रम	४०९
विनाश	१९
विपश्चिद्	५०३
विपरिणामिता	२८३
विपरिणामोपक्रम	२८२, ५५५
विशेष मनुष्य	९३
विशेषविशेषमनुष्य	"
वीतरागलक्ष्मस्थ	१८२
वीर्यान्तराय	१४
वैक्रियिकषट्क	२७९
व्यञ्जन	५१२

श	
शुक्ललेइया	४८४, ४८८, ४९२
शुभ प्रकृति	१७६
शैलेइय	५२१, ४७९
ष	
पट्पष्ठिपद्	२८२
पट्स्थानपतितत्व	४९३
स	
सचित्तप्रक्रम	१५
सत्कर्ममार्गणा	५१९
सत्कर्मस्थान	४०८
सत्कर्मिक	२७७
समवाय	२४
समुच्छिन्नक्रियानिवृत्ति	५२१
समुच्छिन्नक्रियाप्रतिपाती	५७९
सम्यग्दर्शन	१२
सर्वकरणोपशामना	२७५
सर्वघाति	१७१, ३२४
सर्वमोक्ष	३३७
सर्वविपरिणामना	२८३
सर्वसंक्रम	४०९
संक्रम	४९५
संक्रममा गा	५१९
संक्रमस्थान	४०८
संकलेशक्षय	३७०
संप्राप्तितः उदय	२८९
संयतासंयतगुणश्रेणि	२९७
संयमभवग्रहण	३०५

संयोग	२४
साकारक्षय	२३८, २६४
सादिसान्त नामकर्म	४०४
सामान्य मनुष्य	९३
सुख	६
सुहृद्गृहपंचय	१६४
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती	५२१, ५७९
सेचीयादो उदय	२८९
स्थासंज्ञा	१७१, ३७७, ५३९
स्थापनाउपक्रम	४१
स्थापनाउपशामना	२७५
स्थापनानिवन्धन	२
स्थापनाप्रक्रम	१५
स्थापनामोक्ष	३३७
स्थपनालेइया	४८४
स्थापनासंक्रम	३३९
स्थितिक्षयजनित उदय	२८९
स्थितिदीर्घ	५०८
स्थितिबन्धाध्यवसान	५७७
स्थितिमोक्ष	३३७, ३३८
स्थितिविपरिणामना	२८३
स्थितिसत्कर्म	५२८
स्थितिसंक्रम	३४७
स्थितिह्रस्व	५१०
ह	
हतसमुत्पत्तिक	११८, ५४२
हतसमुत्पत्तिककर्म	१११
हतसमुत्पत्तिकक्रम	४०२, ४०३

पट्टखंडागम सूत्र व ध्वला टीकाके सोलहों भागोंकी सम्मिलित

पारिभाषिक शब्द-सूची

सूचना—मोटे टाइपके अंक भागके और उसके आगेके अंक उसी भागके पृष्ठोंके सूचक हैं ।

अ		अक्षेम १३-२३२, २३६, २४१	अचित्तगुणयोग ६-४३३
अकरणोपशामना १५-२७५		अक्षौहिणी ९-६२	अचित्ततद्व्यतिरिक्तद्रव्यान्तर ५-३
अकर्मभाव ४-३२७		अगति ७-६; ८-८	अचित्तद्रव्यभाव १२-२
अकर्मभूमि ११-८६		अगुणप्रतिपन्न १६-१७४, २८८	अचित्तद्रव्यवेदना १०-७
अकषाय १-३५१		अगुणोपशामना १६-२७५	अचित्तद्रव्यस्पर्शन ४-१४३
अकषायत्व ५-२२३		अगुणलघु ६-५८; ८-१०, १३-३६३, ३६४	अचित्तनोर्कर्मद्रव्यबन्धक ७-४
अकषायी ७-८३,		अग्रहीत ग्रहणद्धा ४-३२७, ३२६	अचित्त प्रकम १६-१५
अकायिक १-३६६		अग्निकायिक १२-२०८	अचित्त मङ्गल १-२८
अकृतयुग्मजगप्रतर ४-१८५		अग्र १४-३६७	अच्युत १३-३१८
अकृत्रिम ४-११, ४७६		अग्रस्थिति १०-११६	अच्युतकल्प ४-१६५, १७०, २०८, २३६, २६२; १३-३१८
अक्ष १३-६, १०, ४१; १४-६		अग्रस्थितिप्राप्त १०-११३, १४२	अजीव १३-८, ४०, २००
अक्षपकानुपशामक ७-५		अग्रस्थितिविशेष १४-३६७	अजीवद्रव्य ३-२
अक्षपरावर्त ७-३६		अग्रहणद्रव्यवर्णा १४-५६,	अजीवभावसम्बन्ध १४-२२, २३, २५
अक्षपाद १३-२८८		६०, ६२, ६३, ५४८	अज्ञान १-३६३, ३६४; ४-४७६; १४-१२
अक्षयराशि ४-३३६		अग्रायणीपूर्व ९-१३४, २१२	अज्ञान मिथ्यात्व ८-२०
अक्षर १३-२४७, २६०, २६२		अग्रायणीय १-११५	अज्ञानिक दृष्टि ९-२०३
अक्षरगता १३-२२१		अग्र्य १३-२८०; २८८	अणिमा ९-७५
अक्षरज्ञान १३-२६४		अघातायुष्क ९-८६	अणुव्रत ४-३७८
अक्षरवृद्धि ६-२२		अघाति १६-१७१, ३७४	अतिचार ८-८२
अक्षरश्रुत ६-२२		अघातिकर्म ७-६२	अतिप्रसंग ४-२३, २०८; ५-२०६, २०६; ६-६०; ७-६६, ७५, ७६; ९-६, ५६, ६३; १२-१४२
अक्षरश्रुतज्ञान १३-३६५		अघोरगुणब्रह्मचारी ९-६४	अतिवृष्टि १३-३३२, ३३६, ३४१
अक्षरसमास ६-२३; १२-४७६		अचक्षुदर्शन १-३८२; ६-३३, ७-१०१, १०३; १३-३५५; १६-६	अतिस्थापना ६-२२५, २२६, २२८; १०-५३, ११०; १६-३४७, ३७५
अक्षरसमासश्रुतज्ञान १३-२६५		अचक्षुदर्शनस्थिति ५-१३७, १३८	
अक्षरसमासावरणीय १३-२६१		अचक्षुदर्शनावरणीय ६-३१, ३३	
अक्षरसंयोग १३-२४७, २४८		अचक्षुदर्शनी ७-६८; ८-३१८; १३-३५४	
अक्षरावरणीय १३-२६७		अचित्तकाल १०-७६	
अक्षिप्र ९-१५२			
अक्षिप्र श्रवग्रह ६-२०			
अक्षिप्र प्रत्यय १३-२३७			
अक्षीण महानस ९-१०१			
अक्षीणावास ९-१०२			

अतिस्थापनावली	६-२५०, ३०६; १०-२८१, ३२०; १२-८५
अतीतकाल विशेषित क्षेत्र	४-१४५
अतीतपर्याप्ति	१-४१७
अतीतप्रस्थ	३-२६
अतीतप्राण	१-४१६
अतीतानागत वर्तमानकाल	
विशिष्ट क्षेत्र	४-१४८,
अतीन्द्रिय	४-१५८
अत्यन्ताभाव	६-४२६
अत्यन्तायोग व्यवच्छेद	११-३१८
अत्यासना	१०-४२
अदत्तादान	१२-२८१
अद्धा	४-३१८
अद्धाकाल	११-७७
अद्धाक्षय	१६-७०
अद्धानिषेकस्थितिप्राप्त	१०-११३
अद्धानास	१०-५०, ५५
अद्देश	९-१७०
अध्यात्म विद्या	१३-३६
अधस्तन राशि	५-२४६, २६२
अधस्तनविकल्प	३-५२, ७४; ४-१८५
अधस्तन विरलन	३-१६५, १७६
अध्वान	८-८, ३१
अधर्म द्रव्य	३-३; १३-४३; १६-३३
अधर्मास्तिद्रव्य	१०-४३६
अधर्मास्तिकायानुभाव	१३-३४६
अधिकार	७-२
अधिकार गोपुच्छा	१०-३४८, ३५७, ३६६
अधिकार स्थिति	१०-३४८
अधिगम	३-३६
अधिराज	१-५७
अधोलोक	४-६, २५६
अधोलोक प्रमाण	४-३२, ४१, ५०

अधोलोक क्षेत्रफल	४-१६
अधःकर्म	१३-३८, ४६, ४७
अधःप्रमत्त गुणश्रेणि	१६-२६७
अधःप्रवृत्त	७-१२
अधःप्रवृत्तकरण	४-३३५, ३५७; ६-२१७, २२२, २४८, २५२; १०-२८०, २८८
अधःप्रवृत्तकरण विशुद्धि	६-२१४
अधःप्रवृत्त भागहार	१६-४४८
अधःप्रवृत्त विशोधि	६-३३६
अधःप्रवृत्त संक्रम	६-१२६, १३०, २८६; १६-४०६
अधःस्थितिगलन	६-१७०; १३-८०; १६-२८३
अध्यात्म विद्या	१३-३६
अध्वान	८-८; ३१
अध्रुव	८-८, १३-२३६
अध्रुव अवग्रह	१-३५७; ६-२१
अध्रुव प्रत्यय	९-१५४
अनक्षरगता	१३-२२१
अनक्षरश्रुत	९-१८८
अनध्यवसाय	७-८६
अनध्यात्म विद्या	१३-३६
अननुगामी	६-४६६; १३-२६२, २६४
अनन्त	३-११, १२, १५; ४-३३८
अनन्तकाल	४-३२८
अनन्तगुण	३-२२, २६
अनन्तगुण विहीन	३-२१, २२, ६१
अनन्तगुणवृद्धि	६-२२, १६६; १०-३५१
अनन्त जीवित	१६-२७४
अनन्त ज्ञान	९-८
अनन्त प्रदेशिक	३-३
अनन्तबल	९-११८
अनन्त भागवृद्धि	६-२२, १६६, १०-३५१
अनन्तध्यपदेश	४-४७८
अनन्तर	१३-६

अनन्तरक्षेत्र	१३-७
अनन्तरक्षेत्र स्पर्श	१३-३, ७, १६
अनन्तरबन्ध	१२-३७०
अनन्तरोपनिधा	६-३७०, ३७१, ३८६, ३८८; १०-११५, ३५२; १२-२१४; १४-४६
अनन्तानन्त	३-१८, १६
अनन्तानुबन्ध	६-४२
अनन्तानुबन्धि विसंयोजन	७-१४; १०-२८८
अनन्तानुबन्धि विसंयोजना	६-२८६; १६-२७६
अनन्तानुबन्धी	४-३३६; ६-४१; ८-६; १३-३६०
अनन्तावधि	९-५१, ५२
अनन्तावधि जिन	९-५१
अनन्तिम भाग	३-६१, ६२
अनर्पित	४-३६३, ३६८; ५-४५, ८६
अनवस्था	४-३२०; ६-३४, ५७ ६४, १४४, १६४, ३०३; ७-६६; ९-२६१, १०-६, ४३, २२८, ४०३; १२-२५७
अनवस्थान	७-६०
अनवस्थाप्य	१३-६२
अनवस्थाप्रसंग	४-१६३
अनवस्थित	१३-२६२, २६४
अनवस्थित भागहार	१०-१४८
अनस्तिकाय	९-१६८
अनाकारोपयोग	४-३६१; ६-२०७; १३-२०७
अनागत (काल)	३-२६
अनागतप्रस्थ	३-२६
अनागमद्रव्य नारक	७-३०
अनात्मभावभूत	५-१८५
अनात्मस्वरूप	५-२२५
अनादि	४-४३६
अनादि अपर्यवसितबन्ध	७-५
अनादिक	८-८

अनादिक नामप्रकृति	१६-४०४
अनादिकशरीरबन्ध	१४-४६
अनादिक सिद्धान्तपद	९-१३८
अनादि पारिणामिक	५-२२५
अनादि मिथ्यादृष्टि	४-३३५, ६-२३१
अनादि वादरसाम्परायिक	७-५
अनादि सत्कर्मनामकर्म	१६-३७३
अनादि सत्कर्मिक नामप्रकृति	१६-३६६
अनादि सत्कर्मिक प्रकृति	१६-४४१
अनादि सपर्यवसित बन्ध	७-५
अनादि सिद्धान्तपद	१-७६
अनादेय	६-६५; ८-६
अनादेय नाम	१३-३६३, ३६६
अनावर्जितक	१६-१८६,
अनावृष्टि	१३-३३२, ३३६
अनाहार	१-१५३; ७-७, ११३
अनाहारक	४-४८७; ८-३६१
अनिकाचित	१६-५७६
अनिघत्त	१६-५७६
अनिन्द्रिय	१-२६४; ७-६८, ६६
अनिर्वृत्त	१-१८४
अनिर्वृत्तिकरण	४-३३५, ३५७; ६-२२१, २२२, २२६, २४८, २५२; ८-४; १०-२८०
अनिर्वृत्तिकरण उपशामक	७-५
अनिर्वृत्तिकरण क्षपक	७-५
अनिर्वृत्तिकरण विशुद्धि	६-२१४
अनिर्वृत्ति क्षपक	६-३३६
अनिर्वृत्तिवादरसाम्पराय	१-१८४
अनिःसरणात्मक	१४-३२८
अनिःसृत	९-१५२
अनिःसृत अवग्रह	६-२०
अनिःसृत प्रत्यय	१३-२३७
अनुकम्पा	७-७
अनुकृष्टि	४-३५५; ६-२१६, ११-३४६
अनुक्त अवग्रह	६-२०

अनुक्त प्रत्यय	९-१५४
अनुगम	३-८; ४-६, ३२२; ९-१४२, १६२
अनुगामी	६-४६६; १३-२६२, २६४
अनुग्रहण	१४-२२८
अनुच्छेद	१४-४३६
अनुत्तर	१३-२८०, २८३, ३१६
अनुत्तर विमान	४-२३६, ३८६
अनुत्तर विमानवासी	९-३३
अनुत्तरौपपादिकदशा	१-१०३
अनुत्तरौपपादिकदशांग	९-२०२
अनुत्पादानुच्छेद	१२-४५८, ४६४
अनुदयोपशम	५-२०७
अनुदिशविमान	४-८१, १३६, २४०, ३८६
अनुदीर्घोपशामना	१६-२७५
अनुपयुक्त	१३-२०४
अनुपयोग	१३-२०४
अनुपशान्त	१६-२७६
अनुप्रेक्षण	१४-६
अनुप्रेक्षणा	९-२६३; १३-२०३
अनुभाग	७-६३; १२-६१; १३-२४३, २४६
अनुभागकाण्डक	६-२२२, १२-३२
अनुभागकाण्डकघात	६-२०६
अनुभागकाण्डकोत्कीरणद्धा	६-२२८
अनुभागघात	६-२३०, २३४
अनुभागदीर्घ	१६-५०६
अनुभागबंध	६-१६८, २००, ८-२
अनुभागबंधस्थान	१२-२०४
अनुभागबंधाध्यवसायस्थान	६-२००; १२-२०४
अनुभागमोक्ष	१६-३३८
अनुभाग विपरिणामिना	१६-२८२

अनुभागवृद्धि	६-२१३
अनुभागवेदक	६-२१३
अनुभागसत्कर्म	१६-५२८
अनुभागसत्कर्मिक	६-२०६
अनुभागसत्त्वस्थान	१२-११२
अनुभागसंक्रम	१२-२३२, १६-३७५
अनुभागह्रस्व	१६-५११
अनुमान	६-१५१
अनुमानित गति	१६-५३७
अनुयोग	६-२४; १२-४८०
अनुयोगद्वार	१३-२, २३६, २६६
अनुयोगद्वार श्रुतज्ञान	१३-२६६
अनुयोगद्वारसमास	१३-२७०
अनुयोगद्वार समासावरणीय	१३-२६१
अनुयोगद्वारावरणीय	१३-२६१
अनुयोगसमास	६-२४, १२-४८०
अनुलोमप्रदेशविन्यास	१०-४४
अनुसमयापवर्तना	१२-३२
अनुसमयापवर्तनाघात	१२-३१
अनुसारी	९-५७, ६०
अनुसंचिताद्धा	४-३७६
अनृषुक	१३-३३०
अनेक क्षेत्र	१३-२६२, २६५
अनेकस्थानसंस्थित	१३-२६६
अनेकान्त	६-११५; ८-१४५ ९-१५६; १६-२५
अनेकान्त असात	१६-४६८
अनेकान्त सात	१६-४६८
अनेषण	१३-५५
अनैकान्तिक	७-७३
अन्तर	५-३; ६-२३१, २३२, २६०; ८-६३; १३-६१; १६-३७६
अन्तरकरण	६-२३१, ३००, ७-८१; ८-५३
अन्तरकाल	४-१७६
अन्तरकृत प्रथम समय	६-३२५, ३५८

अन्तरकृष्टि ६-३६०, ३६१  
 अन्तरघात ६-२३४  
 अन्तरद्विचरमफालि ६-२६१  
 अन्तरद्विसमयकृत ६-३३५, ४१०  
 अन्तर प्रथम समयकृत ६-३०३,  
 ३०४  
 अन्तरस्थिति ६-२३२, २३४  
 अन्तरात्मा १-१२०  
 अन्तरानुगम ५-१७; १३-१३२  
 अन्तराय ६-१४; ८-१०;  
 १३-२६, २०६, ३८६  
 अन्तराय कर्मप्रकृति १३-२०६  
 अन्तरिक्ष ९-७२, ७४  
 अन्तर्मुहूर्त ३-६७, ७०; ४-३२४,  
 ३८०; ५-६; ७-२६७,  
 २८७, २८६  
 अन्धकाकलेश्या ११-१६  
 अन्यथानुपपत्ति ५-२२३  
 अन्ययोगव्यवच्छेद ११-२४५,  
 ३१८  
 अन्योन्यगुणकारशलाका  
 ३-३३४  
 अन्योन्याम्यस्त ४-१५६, १६६,  
 २०२  
 अन्योन्याम्यतराशि १०-७६,  
 १२१  
 अन्योन्याम्यास ३-२०, ११५,  
 १६६  
 अन्वय ७-१५; १०-१०  
 अन्वयमुख ६-६५; १२-६८  
 अपकर्षण ४-३३२; ६-१४८,  
 १७१; १०-५३, ३३०  
 अपकर्षणभागहार ६-२२४, २२७  
 अपक्रमषट्कनियम ४-१७६  
 अपक्रमणोपक्रमण ४-२६५  
 अपगतवेद १-३४२; ७-८०;  
 ८-२६५, २६६  
 अपगतवेदना ५-२२२  
 अपनयन ( राशि ) ३-४८;  
 ४-२००; १०-७८

अपनयनश्रुवराशि ४-२०१  
 अपनेय ३-४६  
 अपर्याप्त १-२६७, ४४४; ३-३३१;  
 ४-६१; ६-६२, ४१६; ८-६  
 अपराजित ४-३८६  
 अपर्याप्त नाम १३-३६३, ३६५  
 अपर्याप्त निवृत्ति १६-१८५  
 अपर्याप्ति १-२५६, २५७  
 अपरिवर्तमान परिणाम १२-२७  
 अपरीत संसार ४-३३५  
 अपवर्तना ४-३८, ४१, ४३,  
 ४७, १०३, २१६, २३०  
 अपवर्त्तनाघात ४-४६३; ७-२२६;  
 १०-२३८, ३३२; १२-२१  
 अपवर्तनोद्धर्तनकरण ६-३६४  
 अपवादसूत्र १०-४०  
 अपश्चिम ५-४४, ७४  
 अपहृत ३-४२  
 अपायविचय १३-७२  
 अपिण्डप्रकृति १३-३६६  
 अपूर्वकृष्टि ६-३८५  
 अपूर्वकरण १-१८०, १८१,  
 १८४; ४-३३५, ३५७; ६-२२०  
 २२१, २४८, २५२; ८-४;  
 १०-२८०, २८०  
 अपूर्वकरण उपशामक ७-५  
 अपूर्वकरणकाल ७-१२  
 अपूर्वकरणक्षपक ४-३३६; ७-५  
 अपूर्वकरणगुणस्थान ४-३५३  
 अपूर्वकरणविशुद्धि ६-२१४  
 अपूर्वस्पर्धक ६-३६५, ४१५;  
 १०-३२२, ३२५; १३-८५;  
 १६-५२०, ५७८  
 अपूर्वस्पर्धकशलाका ६-३६८  
 अपूर्वाद्धा ५-५४  
 अपोहा १३-२४२  
 अप्कायिक १-२७३; ७-७१,  
 ८-१६२  
 अप्रणतिवाक् १-११७

अप्रतिपात अप्रतिपद्यमान स्थान  
 ६-२७६, २७८  
 अप्रतिर्पाति १३-२६२, २६५  
 अप्रतिपाती ९-४१  
 अप्रतिहत १४-३२७  
 अप्रत्यख्यान ६-४३; १३-३६०  
 अप्रत्यख्यानावरणदण्डक  
 ८-२५१, २७४  
 अप्रत्यख्यानावरणीय ६-४४  
 अप्रत्यय ८-८  
 अप्रदेश १४-५४  
 अप्रदेशिक ३-३  
 अप्रदेशिकानन्त ३-१२४  
 अप्रदेशिकासंख्यात ३-१५, १६  
 अप्रधानकाल ११-७६  
 अप्रमत्त ७-१२  
 अप्रमत्तसंयत १-१७८; ८-४  
 अप्रमाद १४-८६  
 अप्रवद्यमानोपदेश १०-२६८  
 अप्रवीचार १-३३६  
 अप्रशस्त तैजसशरीर ४-२८  
 ७-३००  
 अप्रशस्त त्रिहायोगति ६-७६  
 अप्रशस्तोपशामना ६-२५४,  
 १६-२७६  
 अप्रशस्तोपशामनाकरण ६-२६५,  
 ३३६  
 अवद्धप्रलाप १-११७  
 अवद्धायुष्क ६-२०८  
 अवंधक ७-८  
 अभव्य १-३६४; ७-२४२;  
 १०-२२; १४-१३  
 अभव्य समान भव्य ७-१६२,  
 १७१, १७६; १०-२१  
 अभव्यसिद्धिक ७-१०६; ८-३५६  
 अभग ७-४६५  
 अभिजित ४-३१८  
 अभिधान ५-१६४  
 अभिधाननिबन्धन १६-२



अभिधेय	८-१
अभिन्नदशपूर्वा	९-६६
अभिनिबोध	६-१५
अभिज्ञुञ्ज अर्थ	१३-२०६
अभिव्यक्तिजनन	४-३२२
अभीक्ष्ण अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग	
युक्तता	८-७६, ६१
अभेद	४-१४४
अभ्याख्यान	१-११६; १२-२८५
अभ्र	१४-३५
अमूर्त	४-१४४
अमूर्त्तत्व	६-४६०
अमूर्त्त द्रव्यभाव	१२-२
अमृतत्व	९-१०१
अयन	४-३१७, ३६५; १३-२६८, ३००; १४-३६
अयशःकीर्ति	८-२
अयशःकीर्ति नाम	१३-३६३, ३६६
अयोग	१-१६२; ७-१८
अयोगकेवली	१-१६२
अयोगवाह	१३-२४७
अयोगव्यवच्छेद	११-२४५ ३१७
अयोगिकेवली	८-४
अयोगी	१-२८०; ४-३३६, ७८, ७८; १०-३२५
अरति	६-४७; ८-१०; १३-३६१
अरतिवाक्	१-११७
अरहःकर्म	१३-३४६, ३५०
अरहन्तभक्ति	८-७६, ८६
अरिहन्त	१-४२, ४३
अरुण	४-३१६
अरुपी	१४-३२
अरुपी अजीव द्रव्य	३-२, ३,
अरंजन	१३-२०४
अर्चना	८-६२
अर्चि	१३-११५, १४१
अर्चिमालिनी	१३-१४१

अर्थ	४-२००; ५-१६४; १३-२, १४-८
अर्थकर्ता	९-१२७
अर्थक्रिया	९-१४२
अर्थनय	१-८६; ९-१८१
अर्थनिबन्धन	१६-२
अर्थपद	४-१८७; ९-१६६, १०-१८, ३७१; १२-३; १३-३६६
अर्थपरिणाम	६-४६०
अर्थपर्याय	९-१४२, १७२
अर्थसम	९-२५६, २६१, २६८; १३-२०३; १४-८
अर्थाधिकार	९-१४०
अर्थापत्ति	६-६६, ६७; ७-८, ८-२७४; ९-२४३; १२-१७, १३-३५४; ६-१६; ९-१५६; १३-२२०
अर्थादग्रहावरणीय	१३-२१६ २२०
अर्थच्छेद	३-२१; १०-८५
अर्थच्छेदशलाका	३-३३५
अर्थवृत्तीयक्षेत्र	४-३७, १६६
अर्थवृत्तीयद्वीपसमुद्र	४-२१४
अर्थनाराचशरीरसंहनन	६-७४
अर्थनाराचसंहनन	८-१०; १३-३६६, ३७०
अर्थपुद्गलपरिवर्तन	५-११; ६-३
अर्थपुद्गलपरिवर्तनकाल	३-२६, २६७
अर्थमण्डलीक	१-५७
अर्थमास	१३-३०७
अर्थणालुत्र	८-१६२, १६६, २००
अर्पित	४-३६३, ३६८; ५-६३; ८-५
अर्थमन	४-३१८
अर्हत्	१-४४
अल्प	१३-४८
अल्पतर उदय	१६-३२५

अल्पतर उदीरणा	१६-५०, १५७, २६०
अल्पतरकाल	१०-२६१, २६२
अल्पतरसंक्रम	१६-३६८
अल्पवहुत्व (अनुयोग)	१, १५८
अल्पवहुत्व	३-११४, २०८; ४-२५; १०-१६; १३-६१, १७५, ३८१; १४-३२२
अल्पवहुत्वप्ररूपणा	१४-५०
अल्पान्तर	५-११७
अलाम	१३-३३२, ३२४, ३४१
अलेख्य	१-३६०
अलेख्यक	७-१०५, १०६
अलोक	१०-२
अलोकाकाश	४-६, २२
अवक्तव्य उदय	१६-३२५
अवक्तव्य उदीरणा	१६-५१, १५७
अवक्तव्यकृति	९-२७४
अवक्तव्यपरिहानि	१०-२१२
अवक्रमणकाल	१४-४७६
अवगाहनलक्षण	४-८
अवगाह्यमान	४-२३
अवगाहना	४-२५, ३०, ४५; ९-१७; १३-३०१
अवगाहनागुणकार	४-४४, ६८
अवगाहनादंडक	११-५६
अवगाहनाविकल्प	४-१७६; १३-३७१, ३७६, ३७७, ३८३
अवग्रह	१-३४४, ३७६; ६-१६, १८; ९-१४४; १३-२१६, २४२; १६-५
अवग्रहजिन	९-६२
अवग्रहावरणीय	१३-२१६, २१६ १३-२४२
अवदान	१३-२४२
अवधि	१-३५६; ८-२६४; १३-२१०, २६०
अवधिक्षेत्र	४-३८, ७६
अवधिजिन	१२-४०
अवधिज्ञान	१-६३, ३५८; ६-२५, ४८४, ४८६, ४८८; ९-१३

अवधिज्ञानावरणीय	६-२६; १३-२०६, २८६
अवधिज्ञानी	७-८४; ८-२८६
अवधिदर्शन	१-३८२; ६-३३; ७-१०२; १३-३५५
अवधिदर्शनावरणीय	६-३१, ३३; १३-३५४
अवधिदर्शनी	७-६८, १०३; ८-३१६
अवधिलम्भ	१६-१७६, २३८
अवधिविषय	१३-३१५
अवगमन	१३-८६
अवबोध	४-३२२
अवमौदर्य	१३-५६
अवयव	९-१३६
अवयवपद	१-७७
अवर्जितकरण	१५-२५६, १६-५१६, ५७७
अवलम्बना	१३-२४२
अवस्थित	१३-२६२, २६४
अवस्थित उदय	१५-३२५
अवस्थित उदीरणा	१५-१, ५, १५७
अवस्थित गुणकार	९-४५
अवस्थित गुणश्रेणी	६-२७३
अवस्थितगुणश्रेणी निक्षेप	६-२७३
अवस्थित प्रक्षेप	६-२००
अवस्थित भागहार	१०-६६; १२-१०२
अवस्थितवेदक	६-३१७
अवस्थित संक्रम	१६-३६८
अवस्थितोग्रतप	९-८७, ८६
अवसन्नासन	४-२३
अवसर्पिणी	३-१८; ४-३८६; ९-११६
अवहरणीय	१०-८४
अवहार	३-४६, ४७, ४८; १०-८४; १४-१०

अवहारकाल	३-१६४, १६७; ४-१५७, १८५; ५-२४६; ६-३६६; १०-८८
अवहारकालप्रक्षेपशलाका	३-१६५, १६६. १७१
अवहारकालशलाका	३-१६५
अवहारविशेष	३-४६
अवहारशलाका	१०-८८
अवहारार्थ	३-८७
अवहित	७-२४७
अवाङ्	१३-२१०
अवाण	१४-२२६
अवाय	१-३५४; ६-१७, १८; ९-१४४; १३-२१८, २४३
अवायजिन	९-६२.
अवितथ	१३-२८०. २८६
अविभाग प्रतिच्छेद	४-१५; ९-१६६; १० १४१; १२-६२; १४-४३१
अविभागप्रतिच्छेदाग्र	६-३६६
अविरति	७-६
अविरदत्त	१४-१२
अविवाग	१४-१०
अविसंवाद	४-१५८
अविहत	१३-२८०, २८६
अवेदककाल	१०-१४३
अव्यक्तमनस	१३-३३७ ३४२
अव्ययीभाव समास	३-७
अव्यवस्थापत्ति	६-१०६
अशब्दलिङ्गज	१३-२४५
अशरीर	१४-२३८, २३६
अशुद्ध ऋजुसूत्र	९-२४४
अशुद्धनय	७-११०
अशुद्धपर्यायार्थिक	१३-१६६
अशुभ	८-१०; १४-३२८
अशुभनाम	१३-३६३, ३६५
अशुभनामकर्म	६-६४
अशुभ प्रकृति	१५-१७६
अश्वकरणदा	६-३७४
अश्वकर्णकरण	६-२६४

अष्ट महामङ्गल	९-१०६
अष्टरूपधारा (घनधारा)	३-५७
अष्टस्थानिक	८-२०५
अष्टम पृथिवी	४-३०, १६४
अष्टाङ्क	१२-१३१
अष्टाङ्गमहानिमित्त	९-७२
अष्टाविंशतिसत्कर्मिक मिथ्यादृष्टि	४-३४६, ३५६, ३६२, ३६६, ३७०; ३७५, ३७७, ४३६, ४४३, ४६१
असत्यमन	१-२८१
असत्यमोषमनोयोग	१-२८१
असद्भावस्थापनबंध	१४-५, ६
असद्भावस्थापना	१-२०; १३-१०, ४२
असद्भावस्थापना काल	४-३१४
असद्भावस्थापनान्तर	५-२
असद्भावस्थापनाभाव	५-१८४
असद्भावस्थापनावेदना	१०-७
असद्भूतप्ररूपणा	१०-१३१
असद्बचन	१२-२७६
असपत्न	१३-३४५
असातबंधक	११-३१२
असातसमयप्रबद्ध	१३-४८९
असातादण्डक	८-२४६, २७४
असातादा	१०-२४३
असातावेदनीय	६-३५; १३-३५६, ३५७
असाम्परायिक	७-५
असिद्धता	५-१८८; १४-१३
असुर	१३-३१५ ३६१
असंक्षेपादा	६-१६७, १७०
असंख्यात	३-१२१; १३-३०४, ३०८
असंख्यातगुणवृद्धि	११-३५१
असंख्यातगुणश्रेणी	९-३, ६
असंख्यातभागवृद्धि	११-३५१

असंख्यातवर्षायुष्क	७-५५७;
	८-११६; १०-२३७
असंख्यातासंख्यात	३-१२७
असंख्येयगुण	३-२१, ६८
असंख्येयगुणवृद्धि	६-२२, १६६
असंख्येयगुणश्रेणी	७-१४
असंख्येयगुणहीन	३-२१
असंख्येयप्रदेशिक	३-२, ३८
असंख्येयभाग	३-६३, ६८
असंख्येयभागवृद्धि	६-२२, १६६
असंख्येयराशि	४-३३८
असंख्येयवर्षायुष्क	११-८६, ९०
असंख्येयाद्धा ( असंक्षेपाद्धा	
	१०-२२६, २३१
असंग्रहिक	१३-४
असंज्ञिस्थिति	५-१७२
असंज्ञी	७-७, १११; ८-३८७
असंप्राप्तसृष्टिकाशरीर- संहनन	६-७४
असंप्राप्तसृष्टिकासंहनन	८-१०
असंप्राप्तासृष्टिकासंहनन	
	१३-३६६, ३७०
असंयत	१-३७३; ७-६५,
	८-३१२; १४-११
असंयतसम्बन्धदृष्टि	१-१७१,
	४-३५८; ६-४६४, ४६७;
	८-४
असंयम	४-४७७; ५-१८८; ७-८
	१३; ८-२, १६; ९-११७
असंयमप्रत्यय	८-२५
असंयमबहुलता	४-२८,
	१४-३२६,
अस्तिकाय	९-१६८
अस्तिनान्तिप्रवाद	१-११५,
	९-२१३
अस्थिर	६-६३; ८-१०
अस्पृष्ट काल	१३-५
अहमिन्द्रत्व	६-४३६
अहोदिम	९-२७२

अहोरात्र	६-६३
आ	
आकार	१३-२०७
आकाश	४-८, ३१६
आकाशगता	१-११३; ९-२१०
आकाशगामी	९-८०, ८४
आकाश चारण	९-८०; ८४
आकाश द्रव्य	३-३; १३-४३;
	१५-३३
आकाशप्रदेश	४-१७६
आकाशास्तिकायानुभाग	
	१३-३४८
आकाशास्तिद्रव्य	१०-४३३
आक्षेपणी	१-१७५; ९-२७२
आगति	१३-३३८, ३४२, ३४६
आगम	३-१२, १२३; ६-१५१
	१३-७
आगमद्रव्यकाल	४-३१४
आगमद्रव्यक्षेत्र	४-५
आगमद्रव्यनारक	७-३०
आगमद्रव्यप्रकृति	१३-२०३
	२०४
आगमद्रव्यबंध	१४-२८
आगमद्रव्यबंधक	७-४
आगमद्रव्यभाव	५-१८४;
	१२-२
आगमद्रव्यमंगल	१-२१
आगमद्रव्यवर्गणा	१४-५२
आगमद्रव्यवेदना	१०-७
आगमद्रव्य स्पर्शन	४-१४२
आगमद्रव्यान्त	३-१२
आगमद्रव्यान्तर	५-२
आगमद्रव्याल्पबहुत्व	५-२४२
आगमद्रव्यसंख्यात	३-१२३
आगमभावकाल	४-३१६,
	११-७६
आगमभावक्षेत्र	४-७,
	११-२

आगमभावजन्य	११-१२
आगमभाव नारक	७-३०
आगमभावप्रकृति	१३-३६०
आगमभावबंध	७-५; १४-७, ६
आगमभावभाव	५-१८४;
	१२-२
आगमभावलेख्या	१६-४८५
आगमभाववर्गणा	१४-५२
आगमभावस्पर्शन	४-१४४
आगममावान्तर	५-३
आगममावानन्त	३-१२३
आगममावाल्पबहुत्व	५-२४२
आगममावासंख्यात	३-१२५
आगल	६-२३३, ३०८
आचारगृह	१४-२२
आचाराङ्ग	१-६६; ९-१६७
आचार्य	१-४८, ४६; ८-७२, ७३
आज्ञा	१३-७०; १४-२२६, ३२६
आज्ञाकनिष्ठता	४-२५; १४-३२६
आज्ञावान्	१४-२२६
आज्ञाविचय	१३-७१
आतप	६-६०
आतपनाम	१३-३६२, ३६५
आताप	८-६, २००
आत्मप्रवाद	१-११८; ९-२१६
आत्मन्	१३-२८०, २८२, ३३६,
	४४२
आत्मा	१-१४८
आत्माधीन	१३-८८
आदानपद	१-७५; ९-१३५,
	१३६
आदि	१०-१५०, १६०, ४७५
आदि (धन)	३-६१, ६३, ६४;
	१०-१६०
आदिकर्म	१३-३४६, ३५०
आदित्य	४-१५०; १३-११५
आदिवर्गणा	६-३६६; १६-५३२
आदिस्पर्द्धक	१६-३७४, ४३८

आदेश ३-१, १०; ४-१०,  
१४४, ३९२; ५-१, २४३;  
८-६३; १४-२३७  
आदेश उक्त ११-१३  
आदेश जन्य ११-१२  
आदेशकाल जन्य ११-१२  
आदेश निर्देश ४-१४५, ३२२  
आदेश भव ११-५१२  
आदेय ६-६५; ८-११  
आदेयनाम १३-३६३, ३६६  
आदालकरण ६-३६४  
आधार ४-८; १४-५०२  
आधेय ४-८  
आनत १३-३१८  
आनप्राणपर्याप्ति ७-३४  
अनापानपर्याप्ति १-२५५  
आनुपूर्वा ६-५६; ८-६; ९-१३४;  
१३-३७१  
आनुपूर्वा नाम १३ ३६३  
आनुपूर्वा नामकर्म ४-३०  
आनुपूर्वाप्रयोग्य क्षेत्र ४-१६१  
अनुपूर्वाविपाकाप्रयोग्य क्षेत्र  
४-१७७  
आनुपूर्वात्म ६-३०२, ३०७;  
१६-४२१  
आप्त ३-११  
आवाधा ४-३२७; ६-१४६;  
१४७, १४८; १०-१६४;  
११-६२, २०२, २६७  
आवाधा काण्डक ६-१४८, १४६;  
११-६२, २६६  
आवाधारस्थान ११-१६२, २७१  
आमिनिबोधक १३-२०६,  
२१०  
आमिनिबोधकज्ञान १-६३,  
२५६; ६-१६, ४८४, ४८६,  
४८८  
आमिनिबोधकज्ञानावरणीय

६-१५, २१; १३-२०६, २१६  
२४१, २४४  
आमिनिबोधकज्ञानी ७-८४;  
८-२८६; १४-२०  
आम्यन्तर तत्र ८-८६  
आम्यन्तर निवृत्ति १-१३२  
आमर्षीपधि प्राप्त ९-६५  
आमुष्ठा १३-२४३  
आग्लनाम १३-३७०  
आग्लनागकर्म ६-७५  
आयत ४-११, १७२  
आयतचतुरस क्षेत्र ४-१३  
आयतचतुरसलोक संस्थान  
४-१५७  
आयाम ३-१६६, २००, २४५;  
४-१३, १६५ १८१  
आयु ६-१२  
आयु आवास १०-५१  
आयुबंधप्रयोग्यकाल १०-४२१  
आयुष्क १३-२६, ८०६, ३६२  
आयुष्कघातक १६-२८८  
आयुष्कर्मप्रकृति १३-२०६  
आरण्य ४-१६५, १७०, १३६  
आरम्भ १३-४६  
आर्यनन्दी १६-५७७, ५७८  
आर्यमंक्षु १२-२३२; १६-५१८  
५७८  
आलापन बंध १४-३७, ३८,  
३९, ४०  
आलोचना १३-६०  
आवन्ती १३-३३५  
आवर्जित करण १०-३२५,  
३२८, १५-२५६; १६-५१६  
५७७  
आवलिका ३-६५, ६७; ४-४३  
आवलिप्रयत्न १३-३०६  
आवली ४-३१७, ३५०, ३६१;  
५-७; ६-२३३; ३०८;  
१३-२६८, ३०४

आवश्यक ८-८४  
आवश्यक परिहीनता ८-८६,  
८३  
आवारक ६-६  
आवास ४-७८; १४-८६  
आवासक १५-३०३  
आवृतकरण उपशामक ६-३०३  
आवृतकरण संकामक ६-३५८  
आनियमान ६-८  
आशीर्विष ९-८५, ८६  
आशंकासूत्र १०-३२,  
आसादन ५-२४  
आसादना १०-४३  
आगितम्भ ७-७  
आसव ७-६  
आहार १-१५२, २६२; ७-७,  
११२; १४-२२६, ३३६  
आहारआहारशरीरबंध १४-४३  
आहारकर्मणशरीरबंध  
१४-४३  
आहारतैजसकर्मणशरीरबंध  
१४-४४  
आहारतैजसशरीरबंध १४-४३  
आहारद्रव्यवर्णा १४-५४६,  
५४७, ५४६, ५५१, ५५२  
आहारपर्याप्ति १-२५४  
आहारमिश्रकाययोग १-२६३,  
२६४  
आहारवर्णा ४-३२  
आहारशरीर ६-६६; १४-७८,  
२२६  
आहारशरीरआङ्गोपाङ्ग ६-७३  
आहारशरीरबंधन ६-७०  
आहारशरीरसंघात ६-७०  
आहारसमुद्घात ७-३००  
आहारसंज्ञा १-४१४  
आहारक १-२६४; ८-३६०,  
१४-३२६, ३२७  
आहारक ऋद्धि ५-२६८

आहारककाययोग	१-१६२
आहारककाययोगी	८-२२६
आहारककाल	५-१७४
आहारकमिश्रकाययोगी	८-२२६
आहारकशरीर	४-४५
आहारकशरीरद्विक	८-६
आहारकशरीरनाम	१३-३६७
आहारकशरीरबन्धस्पर्श	१३-३०
आहारकशरीरबन्धननाम	१३-३६७
आहारकशरीरसंघातनाम	१३-३८७
आहारकशरीराङ्गोपाङ्ग	१३-३६६
आहारकसमुद्घात	४-२८
आहारतः आत्तपुद्गल	१६-५१५
इ	
इङ्गिनीमरण	१-२४
इच्छा ( राशि )	३-१८७, १६०, १६१
इच्छाराशि	४-५७, ७१, १६६, ३४१
इतरेतराश्रय	९-११५
इन्द्र	४-३१६
इन्द्रक	४-१७४, २३४
इन्द्रायुध	१४-३५
इन्द्रिय	१-१३६, १३७, २३२, २६०; ७-६, ६१
इन्द्रियपर्याप्ति	१-२५५, १४-५२७
इन्द्रियाव्ययम	८-२१
इषुगति	१-२६६
ई	
ईर्ष्यापयकर्म	१३-३८, ४७
ईर्ष्यापयबंध	७५
तन	४-२३५; १३-३१६

ईशित्व	९-७६
ईषत्प्राग्भार	७-३५१
ईषत्प्राग्भार पृथिवी	४-१६२
ईहा	१-३५४; ६-१७; ९-१४४, १४६; १३-२१७, २४२
ईहाजिन	९-६२
ईहावरणीय	१३-२१६, २३१
उ	
उक्त	१३-२३६
उक्त अवग्रह	६-२०
उक्त प्रत्यय	९-१५४
उक्ता	१४-३५
उक्तावग्रह	१-३५७
उग्रतप	९-८७
उग्रोग्रतप	९-८७
उच्चगोत्र	६-७७; ८-११
उच्चारणा	१०-४५
उच्चारणान्तर्य	१०-४४
उच्चगोत्र	१३-३८८, ३८६
उच्छेद	५-३
उच्छ्रेणी	४-८०
उच्छ्र्वास	३-६५, ६६, ६७; ६-६०; ८-१०
उच्छ्र्वासनाम	१३-३६३, ३६४
उत्कीरणकाल	५-१०; १०-३२१
उत्कीरणद्धा	१६-५२०
उत्कीरणाद्धा	१०-२६२
उत्कृष्ट दाह	११-३३६
उत्कृष्ट निक्षेप	६-२२६
उत्कृष्ट पद	१४-३६२
उत्कृष्टपद अल्पबहुत्व	१०-३८५
उत्कृष्टपदमीमांसा	१४-३६७
उत्कृष्ट स्थिति संक्लेश	११-६१
उत्कृष्टपद स्वामित्व	१०-३१
उत्कृष्ट सान्तर वक्रमणकाल	१४-४७६
उत्कर्षण	६-१६८, १७१; ६-२१३; १०-५२

उत्तर	१०-१५०, १६०, ४७५
उत्तर (धन)	३-६१, ६३, ६४
उत्तरकुरु	४-३६५
उत्तरनिर्वर्तना	१६-४८६
उत्तरप्रकृति	६-६
उत्तरप्रकृतिबंध	८-२
उत्तरप्रकृतिविपरिणामना	१५-२८३
उत्तरप्रतिपत्ति	३-६४, ६६; ५-३२
उत्तर प्रत्यय	८-२०
उत्तराध्ययन	१-६७
उत्तरामिमुख केवली	४-५०
उत्तरोत्तरतंत्रकर्ता	९-१३०
उत्तान शैथ्या	४-३७८; ५-४७
उत्पत्तिक्षेत्र	४-१७६
उत्पत्तिक्षेत्र समान क्षेत्रान्तर	४-१७६
उत्पन्नज्ञानदर्शी	१३-३४६
उत्पन्नलय	६-४८४, ४८६, ४८७, ४८८
उत्पाद	४-३३६; १५-१६
उत्पादपूर्व	१-११४; ९-२१२
उत्पादस्थान	६-२८३
उत्पादानुच्छेद ( परिशिष्ट भाग १ )	१-२८; १२-४५७
उत्सर्गसूत्र	१०-४०
उत्सर्पिणी	३-१८; ४-३८६; ९-११६
उत्सेध	४-१३, २०, ५७, १८१
उत्सेधकृति	४-२१
उत्सेधकृतिगुणित	४-५१
उत्सेधगुणकार	४-२१०
उत्सेधयोजन	४-३४
उत्सेधांगुल	४-२४, १६०, १८५; ९-१६
उत्सेधांगुलप्रमाण	४-४०

उदय	६-२०१, २०२, २१३; ७-८२; १५-३८६
उदय-अनुयोगद्वार	९-२३४
उदयगोपुच्छ	१५-२५३
उदयमार्गणा	१६-५१६
उदयस्थान	७-३२
उदयस्थितिप्राप्त	१०-११४
उदयादिअवस्थितगुणश्रेणी	६-२५६
उदयादिगुणश्रेणी	६-३१८, ३२०; १०-३१६; १३-८०
उदयादिनिपेक	४-३२७
उदयावलिप्रविशमान- अनुभाग	६-२५६
उदयावलिवाहिर	६-२३३
उदयावलिवाहिरअनुभाग	६-२५६
उदयावलिवाहिरसर्वह्रस्व- स्थिति	६-२५६
उदयावली	६-२२५, ३०८; १०-२८०
उदीर्णा	१२-३०३
उदीर्णणा	६-२०१, २०२, २१४ ३०२, ३०३; १५-४३
उदीर्णणाउदय	१५-३०४
उदीर्णणामार्गणा	१६-५१६
उद्योत	६-६०; ८-१ २००
उद्योतनाम	१३-३६३, ३६५
उद्धत्तन	४-३८३
उद्धत्तिसमान	६-४४६, ४५१, ४५२, ४८४, ४८५
उद्देश	४-१७
उद्देलनकारणक	१६-४७८
उद्देलनकाल	५-३४; ७-२३३
उद्देलनभागद्वार	१६-४४८
उद्देलनसंक्रम	१६-४१६
उद्देलना	५-३३

उद्देलनाकारणक	५-१०, १५
उद्देल्यमानप्रकृति	१६-३८३
उद्देल्लिम	९-२७२, २७३
उत्तरण	१-२३६
उत्क्रम	१-७२; ९-१३४; १५-४१, ४२
उत्क्रमअनुयोगद्वार	९-२३३
उत्क्रमणकाल	४-७१, १२६; ५-२५०, २५१ २५५; १४-४७६
उत्क्रमणकालगुणकार	४-८५
उत्घात	६-५६; ८-१०
उत्घातनाम	१३-३६३, ३६४
उत्चार	४-२०४, ३३६; ७-६७, ६८
उत्पदेश	५-३२
उत्प्रावण	१३-४६
उत्पधि	१२-२८५
उत्पधिवाक्	१-११७
उत्पनय	९-१८२
उत्पाद	४-२६, १६६, २०५; ७-३००; १३-३४६, ३४७
उत्पादकाल	४-३२२
उत्पादक्षेत्र	४-८५
उत्पादक्षेत्रप्रमाण	४-१६५
उत्पादक्षेत्रायाम	४-७६
उत्पादभवनसम्मुखवृत्तक्षेत्र	
	४-१७२
उत्पादयोग	४-३३२; १०-४२०
उत्पादराशि	४-३१
उत्पादस्पर्शन	४-१६५
उत्पमोगतः आत्तपुद्गल	१६-५१५
उत्पमोगान्तराय	१५-१४
उत्पमालोक	४-१८५
उत्पयुक्त	१३-३१०
उत्पयोग	१-२३६; २-४१३
उत्परिमत्परिमत्त्रैवेक	४-८०

उत्परिमत्निक्षेप	६-२२६
उत्परिमत् राशि	५-२४६, २६२
उत्परिमत्वर्ग	३-२१, २२. ५२
उत्परिमत् विकल्प	३-५४, ७७; ४-१८५
उत्परिमत्विरलन	३-१६५, १७६
उत्परिमत्स्थिति	६-२२५, २३२
उत्पलक्षण	९-१८४
उत्पवास	१३-५५
उत्पशम	१-२११; ५-२००, २०२, २०३; २११, २२०; ७-६, ८१
उत्पशमश्रेणी	४-३५१, ४४७; ५-११, १५१; ६-२०६, ३०५; ७-८१
उत्पशमसम्यक्त्व	७-१०७
उत्पशमसम्यक्त्वगुण	४-४४
उत्पशमसम्यक्त्वगुणश्रेणी	१५-२६७
उत्पशमसम्यक्त्वाद्वा	४-४४, ३३६, ३४१, ३४२, ३७४, ४८३; ५-१५, २५४
उत्पशमसम्यग्दर्शन	-३६५
उत्पशमसम्यग्दृष्टि	१-१७१; ७-१०८; ८-३७२; १०-३१५
उत्पशमक	८-२६५
उत्पशमिकअविपाकप्रत्ययबीज- भावबंध	१४-१४
उत्पशमिकचारित्र	१४-१५
उत्पशमिकसम्यक्त्व	१४-१५
उत्पशान्त	१२-३०३; १५-२७६
उत्पशान्तकषाय	१-१८८, १८६; ७-५, १४, ८-४
उत्पशान्तकषायवीतरागद्वयस्य	१४-१५
उत्पशान्तकषायाद्वा	५-१६
उत्पशान्तकाल	४-३५३
उत्पशान्तक्रोध	१४-१४
उत्पशान्तदोष	१४-१४

उपशान्तमान	१४-१४
उपशान्तमाया	१४-१४
उपशान्तराग	१४-१४
उपशान्तलोभ	१४-१४
उपशामक	४-३५२, ४४६;
५-१२५, २६०; ६-२३३; ७-५	
उपशामकअध्यवसान	१६-५७७
उपशामकाद्धा	५-१५६, १६०
उपशामनवार	१०-२६४
उपशामना	१०-४६; १५-२७५
उपशामनाकरण	१०-१४४
उपसंहार	८-५७; १०-१११, २४४, ३१०
उपादानकारण	७-६६;
९-११५; १०-७	
उपादेय	७-६६
उपादेयछेदना	१४-४३६
उपाध्याय	१-५०
उपार्थपुद्गलपरिवर्तन	४-३३६; ७-१७१, २११
उपासकाध्ययन	१-१०२;
९-२००	
उभय	१३-६०
उभयसारी	९-६०
उभयान्त	३-१६
उभयासंख्यात	३-१२५
उराल	१४-३२२, ३२३
उलुञ्चन	१३-२०४
उश्वास	४-३६१
उष्णनाम	१३-३७०
उष्णनामकर्म	६-७५
उष्णस्पर्श	१३-२४
ऊ	
ऊर्ध्वकपाट	१३-३७६
ऊर्ध्वकपाटच्छेदनकनिष्पन्न	४-१७६
ऊर्ध्वलोक	४-६, २५६
ऊर्ध्वलोकक्षेत्रफल	४-१६

ऊर्ध्वलोकप्रमाण	४-३२, ४१, ५१
ऊर्ध्ववृत्त	४-१७२
ऊहा	१३-२४२
ऋ	
ऋजुक	१३-३३०
ऋजुगति	४-२६, २६, ८०
ऋजुमति	४-२८; ९-६२
ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञाना- वरणीय	१३-३२८, ३२९, ३४०
ऋजुवलय	४-१८०
ऋजुसूत्र	९-१७२, २४४; १३-६, ३६, ४०, १६६
ऋजुसूत्रनय	७-२६
ऋण	१०-१५२
ऋतु	४-३१७, ३६५; १३-२६८, ३००
ऋद्धि	१३-३४६, ३४८; १४-३२५
ए	
एक	१३-२३६
एक-एकभूलप्रकृतिबंध	८-२
एकक्षेत्र	१३-६, १६२, २६५
एकक्षेत्रस्पर्श	१३-३, ६, १६
एकक्षेत्रावगाह	४-३२७
एकत्वविचारअविचार	१३-७६
एकत्वचित्तकअविचार-	
शुक्लध्यान	४-३६१
एक दरद	४-२२६
एकनारकावासविष्कम्भ	४-१८०
एकप्रत्यय	९-१५१
एकप्रादेशिकपुद्गल-	
द्रव्यवर्गणा	१४-५४
एकप्रादेशिकवर्गणा	१४-१२१, १२२
एकबन्धन	१४-४६१
एकविध	९-१५२; १३-२३७
एकविध अवग्रह	६-२०

एकविंशतिप्रकृतिउदयस्थान	७-३२
एकस्थान	११-३१३
एकस्थानदण्डक	८-२७४
एकस्थानिक	८-२४६
एकस्थानिका	१५-१७४;
१६-५३६	
एकस्थिति	१५-१०१
एकान्त	३-१६
एकान्त अलात	१६-४६८
एकान्तभवप्रत्ययिक	१५-१७३
एकान्तसात	१६-४६८
एकान्तमिथ्यात्व	८-२०
एकान्तानुवृद्धि	६-२७३, २७४
एकान्तानुवृद्धिव्यंग	१०-५४,
४२०	
एकान्तग्रह	६-१६
एकसंख्यात	३-१२५
एकेन्द्रिय	१-२४८, २६४;
७-६२; ८-३	
एकेन्द्रियजाति	६-६७
एकेन्द्रियजातिनाम	१३-३६७
एकेन्द्रियलब्धि	१४-२०
एवंभूत	१-६०; ७-२६
एवंभूतनय	९-१८०
एषण	१३-५५
ऐ	
ऐन्द्रध्वज	८-३२
ऐरावत	४-४५
ओ	
ओघ	४-६, १४४, ३२२; ५-१,
२४३; १४-२३७	
ओघ उत्कृष्ट	११-१३
ओघजन्य	११-१२
ओघनिर्देश	३-१, ६; ४-१४५, ३२२
ओघप्ररूपणा	४-२५६
ओघभव	१६-५१२

श्रोज (राशि)	३-३४६
श्रोज	१०-१६
श्रोम	१०-१६
श्रोवेक्षिम	९-२७२, २७३
श्री	
श्रीत्वत्तिकी	९-८२
श्रीदयिक	१-१६१; ७-६, ३००; ९-४२८; १२-२७६
श्रीदयिकभाव	५-१८५, १६४
श्रीदारिक	१४-३२३
श्रीदारिकश्रीदारिक- शरीरवन्ध	१४-४२
श्रीदारिककाययोग	१-२८६, ३१६,
श्रीदारिककाययोगी	८-२०३
श्रीदारिककार्मणशरीर- वन्ध	१४-४२
श्रीदारिककृतज्ञसकार्मण शरीरवन्ध	१४-४३
श्रीदारिककृतज्ञसशरीर वन्ध	१४-४२
श्रीदारिकमिश्रकाययोग	१-२६०, ३१६
श्रीदारिकमिश्रकाययोगी	८-२०५,
श्रीदारिकशरीर	४-२४; ६-६६; ८-१०; १४-७८
श्रीदारिकशरीरश्रंगोपाङ्ग	६-७३
श्रीदारिकशरीरकायत्व	१४-२४२
श्रीदारिकशरीरनाम	१३-३६७
श्रीदारिकशरीरवन्धन	६-७०
श्रीदारिकशरीरवन्धननाम	१३-३६७
श्रीदारिकशरीरवन्धस्पर्श	१३-३०, ३१
श्रीदारिकशरीरसंघात	६-७०
श्रीदारिकशरीरसंघातनाम	१३-३६७

श्रीदारिकशरीरस्थान	१४-४३२, ४३३
श्रीदारिकशरीराङ्गोपाङ्ग	८ १०; १३-३६६
श्रीश्वारिकनोर्कर्मद्रव्यक्षेत्र	४-७
श्रीपशमिक	१-६६१, १७२; ७-३०; १३-२७६
श्रीपशमिकभाव	५-१८५, २०४
श्रं	
श्रंक	१३-११५
श्रंग	९-७२; १३-३३५
श्रंगमल	१४-३६
श्रंगुल	४-५७; १३-३०४, ३७१
श्रंगुलगणना	४-४०
श्रंगुलमथकत्व	१३-३०४
श्रंडर	१४-८६
श्रंशांशिभाव	५-२०८
क	
कटक	१४-४०
कटुकनाम	१३-३७०
कटुकनामकर्म	६-७५
कणभक्ष	१३-२८८
कण्य	१४-३५
कदलीघात	६-१७०; ७-१२४; १०-२२८, २३७, २४०
कदलीघातक्रम	१०-२५०
कथन	४-१४४, ३२२
कन्दक	१३-३४
कपाट	९-२३६; १०-३२१; १३-८४
कपाटगतकेवली	४-४६
कपाटपर्याय	५-६०
कपाटसमुद्घात	४-२८, ४३६; ६-४१३
कपिल	६-४६०; १३-२८८
करण	४-३३५; ५-११
करणकृति	९-३३४
करणगाथा	४-२०३

करणिगच्छ	१०-१५५
करणिगत	१०-१५२
करणिगतराशि	१०-१५२
करणिगुद्धवर्गमूल	१०-१५१
करणोपशामना	१५-२७५
करणा	१३-३६१
कर्कशनाम	१३-३७०
कर्कशनामकर्म	६-७५
कर्कशस्पर्श	१३-२४
कर्य	४-१४
कर्यक्षेत्र	४-१५
कर्यकार	४-७८
कर्ता	१-११६; ९-१०७
कर्म	४-२३; १३-३७, ३२८; १४-४३३
कर्मअनन्तरविधान	१३-३८
कर्मअनुयोगद्वार	९-२३२
कर्मअल्पबहुत्व	१३-३८
कर्मउपक्रम	१५-४१, ४२
कर्मउपशामना	१५-२७५
कर्म-कर्मविधान	१३-३८
कर्मकारक	१३-२७६
कर्मकालविधान	१३-३८
कर्मक्षेत्रउत्कृष्ट	११-१३
कर्मक्षेत्रजघन्य	११-१२
कर्मक्षेत्रविधान	१३-३८
कर्मगतविधान	१३-३८
कर्मजा प्रज्ञा	९-८२
कर्मत्व	६-१२
कर्मद्रव्य	७-८२
कर्मद्रव्यक्षेत्र	४-६
कर्मद्रव्यभाव	१२-२
कर्मद्रव्यविधान	१३-३८
कर्मधारय	१०-२३६
कर्मधारयसमास	३-७
कर्मनयविभाषणता	१३-३८
कर्मनामविधान	१३-३८
कर्मनारक	७-३०
कर्मनिक्षेप	१३-३८



कर्मनिबन्धन	१५-३
कर्मनिर्जरा	७-१४
कर्मपरिमाणविधान	१३-३८
कर्मपुद्गल	४-३३२, ३२५
कर्मपुद्गलपरिवर्तन	४-३२२, ३२५
कर्मप्रकृति	१३-२०४, २०५, ३६२
कर्मप्रक्रम	१५-१५
कर्मप्रत्ययविधान	१३-३८
कर्मप्रवाद	१-१२१; २-२२२
कर्मबन्ध	४-४७६; १४-४६
कर्मबन्धक	७-४, ५
कर्मभागभागविधान	१३-३८
कर्मभावविधान	१३-३८
कर्मभूमि	४-१४, १६६; ६-२४५
कर्मभूमिप्रतिभाग	४-२१४; ११-८६
कर्ममोक्ष	१६-३३७
कर्ममङ्गल	१-२६
कर्मवर्णा	१४-५२
कर्मवेदना	१०-७
कर्मसन्निकर्षविधान	१३-२८
कर्मस्थिति	४-३६०, ४०२, ४०७; ७-१४५
कर्मस्थितिअनुयोग	२-२३६
कर्मस्थितिकाल	४-३२२
कर्मस्पर्श	१३-३, ४, ५
कर्मास्रव	४-४७७
कर्मसंक्रम	१६-३३६
कर्मानुयोग	१३-३७
कर्वाट	७-६, १३-३३५
कर्वाटविनाश	१३-३३२; ३३५, ३४१
कल	१३-३४६, ३४६
कल्प	४-३२०; १२-२०६
-कल्पकाल	३-१३१, ३५६

कल्पवासिदेव	४-२३८
कल्पवृक्ष	८-६२
कल्पव्यवहार	१-६८; २-१६०
कल्प्याकल्प्य	१-६८; २-१६०
कल्याणनामधेय	१-१२१; २-२२३
कलश	१३-२६७
कलह	१२-२८५
कला	६-६३
कलासवर्ण	२-२७६
कलिश्रोज	१० २३; १४-१४७
कलिश्रोजराशि	३-२४६
कलिङ्ग	१३-३३५
कवल	१३-५६
कषाय	१-१४१; ४-३६१; ५-२२३; ६-४०; ७-७, ८; ८-२, १६; १३-३५६
कषायउदयस्थान	१६-५२७
कषायनाम	१३-३७०
कषायनामकर्म	६-७५
कषायप्रत्यय	८-२१, २५
कषायवेदनीय	१३-३५६, ३६०
कषायसमुद्घात	४-२६, १६६; ७-२६६
कषायोपशामना	१०-२६४
काकजघन्य	११-८५
काकलेश्या	११-१६
काण्डक	४-४३५
काण्डकघात	६-२३५
काण्डजुगति	४-७८, २१६
कापिष्ठ	४-२३५
कापोतलेश्या	१-२८६; ७-१०४; ८-३२०, ३३२; १६-४८४
काय	१-१३८; ३०८; ७-६
कायक्लेश	१३-५८
कायप्रयोग	१३-४४
कायवली	२-६६

काययोग	१-२७६, ३०८; ४-३६१; ७-७८; १०-४३८
कायस्थितिकाल	४-२३२
कायोत्सर्ग	४-५०; १३-८८
कारक	७-८
कारण	३-४३, ७२; ७ २४७
कार्मण	१-२६५; १४-३२२, ३२६
कार्मणकाय	१-२६६
कार्मणकाययोग	१-२६५
कार्मणकाययोगी	८-२३२
कार्मणकार्मणशरीरबन्ध	१४-४४१
कार्मणवर्णा	४-३३२
कार्मणशरीर	४-२४, १६५; ६-६६; ८-१०; ९-३५; १३-३०; १४-७८, ३२८, ३२६
कार्मणशरीरबन्धस्पर्श	१३-३०
कार्मणशरीरबन्धन	६-७०
कार्मणशरीरबन्धननाम	१३-३६७
कार्मणशरीरसंघात	६-७०
कार्मणशरीरसंघातनाम	१३-३६७
काल	४-३१८, ३२१; १३-६१, ३०८, ३०६; १४-३६
कालउपक्रम	१५-४१
कालगतसमान	६-४
कालगतउत्कृष्ट	११-१३
कालद्रव्य	३-३; १०-४३६; १३-४३; १५-३३
कालद्रव्यानुभाग	१३-३४६
कालनिबन्धन	१५-२
कालपरिवर्तन	४-३८५
कालपरिवर्तनकाल	४-३३४
कालपरिवर्तनवार	४-३३४
कालभावप्रमाण	३-३६
कालप्रक्रम	१५-१६

कालमञ्जल	१-२६
कालयवमध्य	१०-६८; १२-२१२
कालयुति	१३-३४६
काललब्धि	६-२५०, ९-१२१
कालवर्गीया	१४-५२
कालस्पर्शन	४-१४१
कालसंप्रयुक्त	१३-३३२
कालसंक्रम	१६-३३६, ३४०
कालसंयोग	९-१३७
कालसंसार	४-३३३
कालाणु	४-३१५; १३-११
कालानुगम	४-३१३, ३२२; १३-१०७
कालानुयोग	१-१५८
कालोदकसमुद्र	४-१५०, १६४, १६५
काशी	१३-३३५
काष्ठकर्म	९-२४८; १३-८, ४१, २०२
काष्ठपोतलेप्यकर्मादि	७-३
काष्ठा	४-३१७; ६-७५३
किनर	१३-३६१
किंपुरुष	१३-३६१
कीर	१३-२२३
कीलकशरीरसंहनन	६-७४
कीलितसंहनन	८-१०; १३- ३६६, ३७०
कुट्टिकार	९-२७६
कुडव	१३-५६
कुडु	१४-४०
कुण्डलपर्वत	४-१६३
कुञ्जकशरीरसंस्थान	६-७१
कुञ्जकशरीरसंस्थाननाम	१३-३६८
कुमापा	१३-२२२
कुरु	५-४१
कुरुक	१३-२२२
कुल	१३-६३

कुलविद्या	९-७७
कुलशैल	४-१६३, २१८
कूट	१३-५, ३४; १४-४६५
कूटस्थानादि	७-७३
कृत	१३-३४६ ३५०
कृतकृत्य	६-२४७, २६२; १६-३३८
कृतकृत्यकाल	६-२६३, २६४
कृतकरणीय	५-१४ १५, १६, ६६, १०५, १३६, २३३, ७-१८१; १०-३१५; १५- २५३
कृतकरणीयवेदकसम्यग्दृष्टि	६-४३८, ४४१
कृतयुग्म	४-१८४; ७-२५६; १०-२२; १४-१४७
कृतयुग्मराशि	३-२४८
कृति	४-२३२; ८-२; ९-१३४, २३२, २३७, २७४, ३२६ ३५६
कृतिकर्म	१-६७; ९-६१, ६, १८६
कृतिकर्मसूत्र	९-५४
कृतिवेदनादिक	७-१
कृष्टि	६-३१३; १०-३२४, ३२५; १३-८५; १६-५२१, ५७६
कृष्टि अन्तर	६-३७६
कृष्टिकरणदा	६-३७४, ३८२
कृष्टिवेदकादा	६-३७४, ३८४
कृष्टीकरण	४-३६१
कृष्ण	६-२४७
कृष्णनीलकापोततजपद्म-	
शुक्ललेश्या	१४-११
कृष्णलेश्या	१-३८८; ७-१०४; ८-३२०; १६-४८४, ४८८, ४९०
कृष्णवर्णनाम	१३-३७०
कृष्णवर्णनामकर्म	६-७४

कृष्णादिमिथ्यात्वकाल	४-३२४
केवल	८-२६४
केवलकाल	९-१२०
केवलज्ञान	१-६५, १६१, ३५६, ३६०, ३८५; ४-३६१; ६-२६, ३३, ४८६, ४६२; १०-३१६; १३-२१२, २४५; १४-१७
केवलज्ञानावरणीय	१३-२०६, २१३
केवलज्ञानी	७-८८; ८-२६६; ९-११८
केवलदर्शन	१-३८१; ४-३६१; ६-३३, ३४; १०-३१६; १३-३५५; १४-१७
केवलदर्शनी	७-६८, १०३; ८-३१६; ९-११८
केवललब्धि	९-११३
केवलिमुद्घात	४-२८; ६-४१२; ७-३००
केवली	६-२४६; ७-५; १०-३१६
केशत्व	६-४८६, ४६२, ४६५, ४६६
कोटाकोटी	३-२५५; ४-१५२;
कोटि	१३-३१५
कोटी	४-१४
कोष्ठबुद्धि	९-५३, ५४
कोष्ठा	१३-२४३
क्रमबुद्धि	१०-४५२
क्रमहानि	१०-४५२
क्रिया	१-१८; १३-८३
क्रियाकर्म	१३-३८, ८८
क्रियावाददृष्टि	९-२०३
क्रियाविशाल	१-१२२; ९-२२४
क्रोध	१-३५०; ६-४१; १२-२८३
क्रोधकषाय	१-३४६; ७-८२
क्रोधकषायादा	४-४४४
क्रोधमानमायालोभभाव	१४-११

क्रोधसंज्वलन	१३-३६०
क्रोधाद्धा	४-३६१
क्रोधोपशामनाद्धा	५-१६०
क्षण	४-३१७; १३-२६५, २६६
क्षणलवप्रतिबोधनता	८-७६ ८५
क्षणिकैकान्त	९-२४७
क्षपक	४-३५४, ४४७; ५-१०५, १२४, २६०; ७-५; ८-२६५; ९-१०
क्षपकश्रेणी	४-३३५, ४४७, ५-१२, १०६; १०-२६५ १२-३०
क्षपकश्रेणीप्रायोग्यविशुद्धि	४-३४७
क्षपकदश	५-१५६, १६०
क्षपण	१-२१६
क्षपित	९-१५
क्षपितकर्मांशिक	६-२५७; ९-३४२, ३४५; १०-२२, २१६; १२-११६, ३८४ ४२६
क्षपितघोलमान	१०-३५, २१६ १२-४२६
क्षय	५-१६८, २०२, २११, २२०; ७-६; ९-८७ ६२
क्षयोपशम	७-३२
क्षयोपशमलब्धि	६-२०४
क्षायिक	१-१६१, १७२; ७-३०; ९-४२८
क्षायिकचारित्र	१४-१६
क्षायिकरिभोगलब्धि	१४-१६
क्षायिकभोगलब्धि	१४-१७
क्षायिकलब्धि	७-३०
क्षायिकलामलब्धि	१४-१७
क्षायिकविपाकप्रत्ययिक-	
जीवभावबंध	१४-१५, १६
क्षायिकसम्यक्त्व	१-३६५; ७-१०७; १४-१६

क्षायिकसम्यक्त्वाद्धा	५-२५४
क्षायिकसम्यग्दृष्टि	१-१७१; ४-३५७; ६-४३२, ४४१
क्षायिकसंज्ञा	५-२००
क्षायोपशमिक	१-१६१, १७२; ५-२००, २११, २२०; ७-३०, ६१
क्षायोपशमिकभाव	५-१८५, १६८
क्षिप्र	९-१५२
क्षिप्रप्रत्यय	१३-२३७
क्षीणक्रोध	१४-१६
क्षीणदोष	१४-१६
क्षीणमाया	१४-१६
क्षीणमोह	१४-१६
क्षीणराग	१४-१६
क्षीणलोभ	१४-१६
क्षेत्र	१४-३६
क्षेत्रवर्णां	१४-५२
ख	
खगचर	११-६०, ११५, १३-३६०
खण्ड	७-२४७
खण्डित	३-३६, ४१
खातफल	४-१२, १८१, १८६
खेट	७-६; १३-३३५
खेटविनाश	१३-३३२, ३३५, ३४१
खेलौपधि	९-६६
ग	
गगन	४-८
गच्छ	४-१५३; २०१; १०-५०; १३-६३
गच्छराशि	४-१५४
गच्छसमीकरण	४-१५३
गड्डी	१४-३८
गण	१३-६३
गणधर	९-३, ५८

गणनकृति	९-२७४
गणनानन्त	४-१५, १८
गणनासंख्यात	३-१२४, १२६
गणित	४-३५, २०६
गणी	१४-२२
गति	६-५०; ७-६; १३-३३८, ३४२, ३४६
गति आगति	६-३
गतिनाम	१३-३६३, ३६७
गतिनिवृत्ति	९-२७६
गतिमार्गता	१३-२८०, २८२
गतिसंयुक्त	८-८
गन्ध	६-५५; ८-१०
गन्धनाम	१३ ३६३ ३६४, ३७०
गन्धर्व	१३-३६१
गरुड	१३-३६१
गर्भोपक्रान्त	४-१६३
गर्भोपक्रान्तिक	६-४२८; ७-५५५, ५५६
गलस्थ	१३-३६
गलितशेषगुणश्रेणी	६-२४६, २५३, २५५; १०-२८१
गवेषणा	१३-२४२
गव्यूति	१३-३५५
गव्यूतिप्रयत्न	१३-३०६, ३३८
गान्धार	१३-३३५
गारव	९-४१
गिल्ली	१४-३८
गुण	१-१७४; ४-२००, ९-१३७; १५-१७४
गुणकाल	५-८९
गुणकार	४-७६; ५-२४७, २५७, २६२, २७४
गुणकारशलाका	४-१६६
गुणकारशलकासंकलना	४-२०१
गुणगार	१४-३२१
गुणधरभट्टारक	१२-२३२
गुणनाम	१-१८

गुणपरावृत्ति	४-४०६ ४७०, ४७१
गुणप्रतिपन्न	१५-१७४
गुणप्रत्यय	१३-२६०, २६२
गुणप्रत्ययश्रवधि	६-२६
गुणप्रत्यासक्तिकृत	१४-१७
गुणयोग	१०-४३३
गुणश्रेणि ६ २२२, २२४, २२७; १२-८०; १५-२६६	
गुणश्रेणिनिक्षेप	६-२२८, २३२
गुणश्रेणिनिक्षेपाग्राम	६-२३२
गुणश्रेणिनिर्वरा	१०-२६६; १५-२६६
गुणश्रेणिशीर्ष	६-२३२; १५-२६८, ३३३
गुणश्रेणिश्रीर्षक	१०-२८१ ३२०
गुणसंक्रम ६-२२२, २३६, २४६; १०-२८०, १६-४०६	
गुणस्थानपरिपाटी	५-१३
गुणस्थितिकाल	४-३२२
गुणहानि ६-१५१, १६३, १६५	
गुणहानिअध्वान	१०-७६
गुणाद्धा	५-१५१
गुणान्तरसंक्रमण	४-३३५
गुणान्तरसंक्रान्ति	५-८६, १५४ १७१
गुणित	९-१५
गुणितकर्मांशिक ६-२५६, २५८ १०-२१, २१५; १२-११६, ३८२, ४२६; १५-२६७	
गुणितक्षपितघोलपान	६-२५७
गुणितघालमान	१०-३५, २१५ १२-४२६
गुणोपशामना	१५-२७५
गुरुकनामकर्म	६-७५
गुरुनाम	१३-३७०
गुरुस्पर्श	१३-२४
गुह्यकान्तरित	४-८
गृह	१४-३६

गृहकर्म	९-१५०; ३-६, १०, ४१, २०२, १४-६
गृहछली	९-१०७, १०८
गृहीत	३-५४, ५७
गृहीत अगृहीत	१३-५१
गृहीतकरण	१०-४४१
गृहीतगुणाकार	३-५४, ६१
गृहीतगृहणाद्धा	४-३२८
गृहीतगृहणाद्धाशलाका	४-३२६
गृहीतगृहीत	३-५४, ५६; १०-२२२
गृहीतगृहीतगणित	७-४६८
गोत्र ६-१३; १३-२६, २०६	
गोत्रकर्म	१३-३८८
गोत्रकर्मप्रकृति	१३-२०६
गोधूम	१३-२०५
गोपुच्छद्रव्य	६-२६०
गोपुच्छविशेष	६-१५३; १०-१२२
गोपुच्छा	१०-१०६
गोपुर	१४-३६
गोमूत्रिकागति	४-२६
गोमूत्रकागति	१-३००
गोमूहक्षेत्र	४-३४
गोवरपीठ	१४-४०
गौड	१३-२२२
गौणभाव	४-१४५
गौण्य	९-१३५, १३६
गौण्यपद	१-७४; ९-१३८
गौतम	१०-२३७
गौतम स्थविर	१२-२३१
ग्रन्थ	१४-८
ग्रन्थकर्ता	९-१२७, १२८
ग्रन्थकृति	६-३२१
ग्रन्थसम	९-२६०, २६८; १३-२०३; १४-८
ग्रन्थिम	९-२७२
ग्रह	४-१५१
ग्रहणतः आत्तपुद्गल	१६-५१५

ग्रहणप्रायोग्य	१४-५४३
ग्राम	७-६; १३-३३६
ग्रंथेयक	४-२३६; १३-३१८
ग्लान	१३-६३, २२१
घ	
घट	१३-२०४
घटोत्पादानुभाग	१३-२४६
घन	१३-२२१
घनपल्य	३-८०, ८१
घनफल	४-२०
घनरज्जु	४-१४६
घनलोक ४-१८, १८४ २५६; ७-३७२	
घनलोकप्रमाण	४-५०
घनहस्त	१३-३०६
घनाङ्गुल ३-१३२, १३६; ४-१०, ४३, ४४, ४५, १७८; ५-३१७, ३३५	
घनाङ्गुलगुणकार	४-३३
घनाङ्गुलप्रमाण	४-३३
घनाङ्गुलभागहार	४-६८
घनाघनधारा	३-५३, ५८
घातक्षुद्रभवग्रहण ४-२६२; ७-१२६, १३६; १४-३६२	
घातक्षुद्रभवग्रहणमात्रकाल	७-१८३
घातपरिणाम १२-२२०, २२५	
घातम्यान १२-१३०, २२१, २३१; १६-४०७	
घातायुष्क	९-८८
घातिकर्म	७-६२
घातिस्त्रंजा १५-१७१; १६-३७७, ५३६	
घोरमान	६-२४७
घोरगुण	९-६३
घोरतप	९-६२
घोरपराक्रम	९-६३
घोलमानजघन्ययोग १६-४३५	
घोष १३-२२१, ३३६	

घोषसम	९-२६१, २६६; १३-२०३; १४-८
घ्राणेनिवृत्ति	१-२३५
घ्राणेन्द्रिय	४-३६१; ७-६५
घ्राणेन्द्रियअर्थवग्रह	१३-२२८
घ्राणेन्द्रिय अवाय	१३-२३२
घ्राणेन्द्रिय ईहा	१३-२३२
घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह	१३-२२५
च	
चक्रवर्तित्व	६-४८६, ४६२, ४६५, ४६६
चक्षुदर्शन	६-३३; ७-१०१; १५-१०
चक्षुदर्शनस्थिति	५-१३७, १३६
चक्षुदर्शनावरणीय	६-३१, ३३
चक्षुदर्शनी	७-६८; ८-३१८
चक्षुरिन्द्रिय	१-२६४; ४-३६१; ७-६५
चक्षुरिन्द्रिय अर्थवग्रह	१३-२२७
चक्षुदर्श	१-३७६, ३८२; १३-३५५
चक्षुदर्शनावरणीय	१३-३५४ ३५५
चतुःशरीर	१४-२३८
चतुःशिरसु	१३-८६
चतुःपष्ठिपदिकदण्डक	१२-४४
चतुःसामयिकअनुभागस्थान	१२-२०२
चतुःसामयिकयोगस्थान	१०-४६४
चतुःस्थानबन्धक	११-३१३
चतुःस्थानिक	१५-१७४
चतुःस्थानिकअनुभागबन्धक	६-२१०
चतुःस्थानिकअनुभागवेदक	६-२१३
चतुःस्थानिकअनुभागसत्कर्मिक	६-२०६

चतुरमलबुद्धि	९-५८
चतुरिन्द्रिय	१-२४४, २४८; ७-६५; ८-६
चतुरिन्द्रियजाति	६-६८
चतुरिन्द्रियजातिनाम	१३-३६७
चतुरिन्द्रियलब्धि	१४-२०
चतुर्गति निगोद	१४-२३६
चतुर्थपृथिवी	४-८६
चतुर्थस्थान	११-३१३
चतुर्थस्थान अनुभागबन्ध	११ ३१३
चतुर्थसमुद्रक्षेत्र	४-१६८
चतुर्दशागुणस्थाननिबद्ध	४-१४८
चतुर्थपूर्वधर	१५-२४१
चतुर्दशापूर्वा	९-७०; १६-५४१
चतुर्विंशतिस्तव	१-६६, ९-१८८
चतुष्पद	१३-३६१
चन्द्र	४-१५०, ३१६
चन्द्रप्रज्ञप्ति	१-१०६, ९-२०६
चन्द्रविम्बशलाका	४-१५६
चयन	१३-३४६, ३४७
चयनलब्धि	१-१२४; ९-२२७; १३-२७०
च्यावित	१-२२
च्यावितदेह	९-२६६
च्युत	१-२२
च्युतदेह	९-२६६
चरमफालि	६-२६१
चरमवर्गणा	६-२०१
चारण	९-७८
चारित्र	६-४०; १५-१२
चारित्रमोहक्षरण	७-१४
चारित्रमोहनीय	६-३७; ४०; १३-३५७, ३५६
चारित्रमोहोपशामक	७-१४
चारित्रविनय	८-८०, ८१
चार्वीक	१३-२८८
चालनासूत्र	१०-६

चित्रकर्म	९-२४६; १३-६, ४१, २०२; १४-५
चित्रा	४-२१७
चिन्ता	१३-२४४, ३३२, ३३३, ३४१
चिरन्तन अनुभाग	१२-३६
चुन्द	१४-३८
चूर्ण	९-२७३
चूर्णाचूर्णि	१२-१६२
चूर्णि	१२-१६२
चूर्णिक्षेत्र	८-६; १२-२३२
चूर्णिका	७-५७५; ९-२०६; १०-३६५; ११-१४०; १४-४६६
चैतन्य	१-१४५
चैत्यवृक्ष	९-११०
छ	
छद्मस्थ	१-१८८, १६०; ७-५
छद्मस्थकाल	९-१२०
छद्मस्थवीतराग	१३-४७
छवि	१४-४०१
छद्मद्रव्य प्रक्षिप्त राशि	३-१६, २६, १२६
छिन्न	९-७२, ७३; १२-१६२
छिन्नस्वप्न	९-७४
छिन्नाछिन्न	१२-१६२
छिन्नायुष्ककाल	४-१६३
छेद	१३-६१; १४-४०१
छेदगुणकार	११-१२८
छेदना	१४-४३५, ४३६
छेदभागहार	१०-६६, ७२, २१४; ११-१२५; १२-१०२,
छेदराशि	१०-१५१
छेदोपस्थापक	१-३७२
छेदोपस्थापनशुद्धि संयम	१-३७०
ज	
जगप्रतर	३-१३२, १४२; ४-१८, ५२, १५०, १५१, १५५, १६६, १८०, १८४, १६६, २०२, २०६, २३३; ७-३७२

जगश्रेणी	३-१३५, १४२, १७७;
४ १०, १८, १८४; ७-३७२	
जघन्य	१३-३०१, ३३८;
जघन्यग्रनन्तानन्त	३-११
जघन्यउत्कृष्टपद	१४-३६२
जघन्यकृष्टिग्रन्तर	६-३७६
जघन्यद्रव्यवेदना	१२-६८
जघन्यपद	१४-३६२
जघन्यपदअल्पबहुत्व	१०-१८५
जघन्यपदमीमांसा	१४-३६७
जघन्यपदस्वामित्व	१०-३१
जघन्यपरीतानन्त	३-२१
जघन्यपरीतासंख्य	१०-८५
जघन्य बन्ध	११-३३६
जघन्य योगस्थान	१०-४६३
जघन्य वर्गणा	६-१०१
जघन्य स्थान	१२-६८
जघन्य स्थिति	६-१८०; ११-३५०
जघन्य स्थितिवन्ध	११-३३६
जघन्य स्पर्शक	६-२१३
जघन्यावगाहना	४-२२, ३३
जघन्यावधि	१३-३२५, ३२७
जघन्यावधिक्षेत्र	१३-३०३
जनपद	१३-३३५
जनपदविनाश	१३-३३५, ३४१
जनपदसत्य	१-११८
जन्तु	१-१२०
जम्बूद्वीप	३-१; ४-१५० १३-३०७
जम्बूद्वीपक्षेत्र	४-१६४
जम्बूद्वीपच्छेदनक	४-१५५
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	१-११०; ९-२०६
जम्बूद्वीपशलाका	४-१६६
जयन्त	४-३८६
जया	४-३१६
जलगता	९-७६
जलचर	११-६०, ११५; १३-३६१

जलचारण	९-७६
जल्लौघधिप्राप्त	९-६६
जहत्स्वार्थवृत्ति	९-१६०
जाति	१-१७; ३-२५० ४-१६३; ६-५१
जातिनाम	१३-३६३, ३६७
जातिविद्या	९-७७
जातिस्मरण	३-१५७; ६-४३३
जित	९-२६२, २६८; १३-२०३; १४-८
जिन	६-२४६; ९-२, १०
जिनपूजा	१०-१८६
जिनवृषभ	१३-३७
जिह्वेन्द्रिय	४-३६१; ७-६४
जिह्वेन्द्रिय अर्यावग्रह	१३-२२८
जिह्वेन्द्रिय ईहा	१३-२३१
जिह्वेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह	१३-२२५
ज्योतिष्क	१३-३१४
ज्योतिष्क जीवराशि	४-१५५
ज्योतिष्कसासादनसम्य-	
गृष्टिस्वस्थानक्षेत्र	४-१५०
ज्योतिष्कस्वस्थानक्षेत्र	४-१६०
ज्योतिषी	८-१४६
जीव	१-११६; १३-८, ४०
जीवगुणहानि	१०-१०६
जीवगुणहानिस्थानान्तर	१०-६८; १५-३२८
जीवत्व	१४-१३
जीवद्रव्य	३-२; १३-४३; १५-३३
जीवनिबद्ध	१५-७, १४
जीवपुद्गलबन्ध	१३-३४७
जीवपुद्गलमोक्ष	१३-३४८
जीवपुद्गलयति	१३-३४८
जीवप्रदेशसंज्ञा	१३-४३६
जीवभाव	१४-१३
जीवभावबन्ध	१४-६
जीवमोक्ष	१३-३४८;
जीवयवमध्य	१०-६०; १२-२१२

जीवयुति	१३-३४८
जीवविपाकित्व	६-३६
जीवविपाकी	५-२२२; ६-११४; १२-४६; १५-१३
जीवस्थान	१-७६; ७-२, ३; ८-५ १३-२६६
जीवसमास	१-१३१; ४-३१; ६-२; ८-४
जीवसमुदाहार	१०-२२१, २२३
जीवानुभाग	१३-३४६
जीवित	१३ ३३२, ३३३, ३४१
जुग	१४-३८
जुगुप्सा	६-४८; ८-१०; १३-३६१
जैमिनी	१३-२८८
जवाचरण	६-७०
जातुर्धर्मकथा	९-२००
ज्ञान	१-३५३, ३६३, ३८४; ५-७, ६, ८४, १४२, १८६; १३-६६; १४-३८
ज्ञानकार्य	५-२२४
ज्ञानप्रवाह	१-१४२, १४३. १४६, १४७, ३६४; ९-२१६
ज्ञानविनय	८-८०
ज्ञानावरण	९-१०८
ज्ञानावरणीय	६-६, ६; ८-१७; १३-२६, २५६, २५७
ज्ञानावरणीयकर्मप्रकृति	१३-२६५
ज्ञानावरणीयवेदना	१०-१४
ज्ञानोपयोग	११-३३४
ज्ञायकशरीर	७-४, ३०
झ	
भक्तलरी संस्थान	४-११, २१
ट	
टंक	१४-४६५
ड	
डहरकाल	५-४२, ४४, ४७, ५६

त	
तच्छेद	१४-४३६
तत्	१३-२२१
तत्पुरुषसमाप्त	३-३; १०-१४
तत्त्व	१३-२००, २०५
तत्त्वार्थसूत्र	१३-१०३
तन्त्रवस्थ	१४-३३२
तद्भावसामान्य	४-३; १०-१०, ११
तदुभयप्रत्ययित अजीवभावस्य	१४-२३, २६, २७
तदुभयप्रत्ययित जीवभावस्य	१४-१०, १०, १६
तदुभयवक्तव्यता	१-२२
तद्व्यतिरिक्त	७-४
तद्व्यतिरिक्त अल्पबहुत्व	५-२, १२
तद्व्यतिरिक्तकर्मान्त	३-१६
तद्व्यतिरिक्तकर्मासंख्यान	३-१२, ४
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यलेश्या	१६-१०१
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यवर्णना	१४-५२
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्त	३-१५
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात	३-१२, ४
तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्य	४-३१५
तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यभाव	५-१०१
तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्य- क्षण	४-१४२
तद्व्यतिरिक्तनोकर्मान्त	३-१५
तद्व्यतिरिक्तनोकर्मासंख्यात	३-१२, ४
तद्व्यतिरिक्तस्थान	६-२०३
तन्तुचारण्य	९-७३
तन्निविद्या	९-७७
तन्कर्त	१३-३०, ५४
तन्तु	१३-५४, ६१
तन्मत्र	९-२१

तर्क	१३-३४६, ३४८
तर्कण	१३-२०५
तलवाहृत्य	४-१३
तवती	१०-२०, ४४, २४२, २७४
तारा	४-१५१
तार्किक	६-१६०, १६१
तालप्रमाण	४-४०
तालप्रसन्नसूत्र	६-२३०
तालवृत्तसंस्थान	४-११, २१
तिक्तनाम	१३-३३०
तिक्तनामकर्म	६-७५
तियि	४-३१६
तियक् १३-२२२, ३२३, ३२१	
तियक्क्षेत्र	४-३६
तियक्क्षोक	४-३७, १६६, १०३
तियक्क्षोकप्रमाण	४-४१, १५०
तियंगति	१-२००; ०-६
तियंगतिनाम	१३-३६७
तियंगतिनायायोग्यतुपूर्व	४-१७६; ६-७६; १३-३७१, ३७४
तियंगप्रतर	४-२११; १३-३७१, ३७३
तियंगयोनि	१३-३०५
तियंगवस्थानसंस्थानदेश	४-१६४, २०४
तियंगासु	६-१६; ०-६
तियंगासुक्त	१३-३६२
तियञ्च	४-२२०; ०-१६२; १४-२३६
तियञ्चनाव	१४-११
तीर्थ	०-२२; ९-१०६, ११६
तीर्थकाल	६-१०६, १६२, १६५, १६६
तीर्थकर	१-५०; ५-१६४, ३२३; ६-२४६; ७-५५; ०-११, ७२, ७३; ९-५७, ५८; १०-४३
तीर्थकरनाम	१३-३६३, ३६६

तीर्थकरनामकर्म	६-६७
तीर्थकरनामगोचकर्म	०-७६, ७८
तीर्थकरमन्त्रकर्मिक	०-३३२
तीर्थकरवाच	१०-१३
तीर्थमन्दनाव	५-१०७
तृतीय शुधिवी	४-२२
तृतीय शुधिवी अद्रमननत	४-२२५
तृतीय म्यान	११-३१३
तृतीय मंत्रद्वृष्टिअन्तर	६-३७७
तृतीयान	७-४४
तेज	०-२००
तेजकायिक	०-१६२
तेजवकायिक	७-७१
तेजोलेखा	१-३०२; १६-४०१, ४०२, ४०३
तेजोच	१०-२३; १४-१४७
तेजोमनुष्यराशि	७-२३६
तेजोवराशि	३-२६
तेजम	१४-३२७
तेजवकाय	१-२७३
तेजवकारण्यरीरवन्ध	१४-११
तेजवद्रव्यवर्णना	१४-७०, ५४६
तेजव्यरीर	४-२४; ६६६; ७-३००; ०-१०; १३-३१०
तेजव्यरीरनाम	१३-३६७
तेजव्यरीरवन्धनश	१३-३०
तेजव्यरीरवन्धन	६-७०
तेजव्यरीरवन्धननाम	१३-३६७
तेजव्यरीरलम्ब	१३-३२५
तेजव्यरीरसमुद्रवात	४-२७
तेजव्यरीरसंवात	६-७०
तेजव्यरीरसंवातनाम	१३-३६७
तेरण्य	४-१६५; १४-३६
त्यक्त	१-२६
त्यक्तदेश	९-२६६
त्यक्तेश	१३-३, १६

त्वगिन्द्रिय	१३-२४
त्रस	६-६१; ८-११
त्रसकाय	१-२७४
त्रसकायिक	७-५०२
त्रसनाम	१३-३६३, ३६५
त्रसपर्योत्तस्थिति	५-८४, ८५
त्रसस्थिति	५-६५, ८१
त्रिकच्छेद	३-७८
त्रिकरण	६-२०४
त्रिःकृत्वा	१३-८८
त्रिकोटीपरिणाम	९-१६२, २२८ २४७; १०-४३५
त्रिकोण क्षेत्र	४-१३
त्रिखण्ड धरणीश	१-५८
त्रिरत्न	९-११
त्रिशरीर	१४-२३८
त्रिशक्ल	६-१८६; १०-१-१; १६-५३७
त्रिमयाधिकावली	४-३३२
त्रिस्थानबन्धक	११-३१३
त्रिस्थानिक	१५-१७४
त्रीन्द्रिय	१-२४२, २४८, २६४; ७-६५; ८-६
त्रीन्द्रियजाति	६-६८
त्रीन्द्रियलब्धि	१४-२०
त्रुटित	१२-१६२
त्रुटितानुटित	१२-१६२
त्रैराशिक	३-६५, ६६; १०-६३; १२०
त्रैराशिकक्रम	४-४८
त्र्यंश	४-१७८
द	
दक्षिण प्रतिपत्ति	३-६४, ६८; ५-३२
दण्ड	४-३०; ९-२३६; १०-३२०; १३-८४
दण्डक्षेत्र	४-४८
दण्डगत	७-५६
दण्डगतकेवली	४-४८

दण्डसमुद्घात	४-२८; ६-४१२
दन्तकर्म	९-२५०; १३-६, १०, ४१, २०२; १४-६
दर्शन	१-१४५, १४६, १४७, १४८, १४९, ३८३, ३८४, ३८५; ६-६, ३२, ३३, ३८; ७-७, १००; १३-२०७, २१६, ३५८; १५-५, ६
दर्शनमोहक्षपण	७-१४
दर्शनमोहक्षपणानिष्ठापक	६-२४५
दर्शनमोहक्षपणाप्रस्थापक	६-२४५
दर्शनमोहनीय	४-३३५; ६-३७, ३८; १०-२६४; १३-३५७, ३५८
दर्शनविनय	८-८०
दर्शनविशुद्धता	८-७६
दर्शनावरण	९-१०८
दर्शनावरणकर्म प्रकृति	१३-२०६
दर्शनावरणीय	६-१०; ८-१०; १३-२६, २०८, ३५३
दर्शानोपयोग	११-३३३
दलित	१२-१६२
दलितदलित	१२-१६२
दशपूर्वा	९-६६
दशवैकालिक	१-६७; ९-१६०
दान	१३-३८६
दानान्तराय	६-७८; १३-३८६ १५-१४
दार्ष्टान्त	४-२१
दारुसमान	१६-३७४, ५३६
दारुसमानअनुभाग	१२-११७
दारुसमान	७-६३
दाह	११-३३६
दाहस्थिति	११-३४१
दिवस	३-६७; ४-३१७, ३६५; १३-२६८, ३००

दिवसपृथक्त्व	५-६८, १०३; ६-४२६
दिवसान्त	१३-३०६
दिव्यध्वनि	५-१६४; ९-१२०
दिशा	४-२२६
दिशादाह	१४-३५
दीप्ततप	९-६०
दीप्तशिखा	१०-२६५; १२-४२८
दीर्घ	१३-२४८
दीर्घह्रस्वअनुयोगद्वार	९-२३५
दीर्घान्तर	५-११७
दुरभिगन्ध	६-७५
दुरभिगन्धनाम	१३-३७०
दुर्नय	९-१८३
दुर्भग	६-६५; ८-६
दुर्भगनाम	१३-३६३, ३६६
दुर्भिक्ष	१३-३३२, ३३६, ३४१
दुर्बुद्धि	१३-३३२, ३३६, ३४१
दुस्वर	६-६५; ८-१०
दुस्वरनाम	१३-३६३, ३६६
दुःख	६-३५; १३-३३२, ३३४ ३४१; १५-६
दुःप्रमकाल	९-१२६
दुःप्रमसुप्रम	९-११६
दूरापकृष्टि	३-२५१, २५५
दृश्यमान द्रव्य	६-२६०
दृष्टमार्ग	५-२२, ३८
दृष्टान्त	४-२२
दृष्टिअमृत	९-८६, ६४
दृष्टिप्रवाद	९-२०३
दृष्टिवाद	१-१०६
दृष्टिविष	९-८६, ६४
देय	३-२०
देव	१-२०३; १३-२६१, २६२
देवकुरु	४-३६५
देवगति	१-२०३; ६-६७; ८-६
देवगतिनाम	१३-२६७
देवक्षेत्र	४-३६



देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी	६-७६;
	१३-३७१ ३८२
देवता	४ ३१६
देवपथ	४-८
देवभाव	१४-११
देवर्द्धिदर्शन	६-४३४
देवर्द्धिदर्शननिबन्धन	६-४३३
देवलोक	५-२८४
देवायु	६-४६; ८-६
देवायुष्क	१३-३६२
देश	१३-११
देशकरणोपशामना	१५-२७५
देशघातक	७ ६३
देशघाति	१५-१७१; १६-३७४,
	५ ३६
देशघातिस्पृष्टक	५-१६६; ७-६१
देशघाती	६-२६६; ७-६४;
	१२-५४
देशजिन	६-२४६; ९-१०
देशप्रकृतिविपरिणामना	
	१५-२८३
देशप्रत्यासत्तिकृत	१४-२७
देशमोक्ष	१६-३३७
देशविनाश	१३-३३२, ३३५,
	३४१
देशविपरिणामना	१५-२८३
देशव्रत	५-२७७
देशव्रती	८ २५५, ३११
देशसत्य	१-११८
देशसिद्ध	९-१०२
देशसंयम	५-२०२; ७-१४
देशस्पर्श	१३-३, ५, १७
देशना	६-२०४
देशामर्शक	४-५७
देशावधि	६-२५; ९-१४
देशावरण	७-६३
देशोन लोक	४-५६
देशोपशम	६-२४१
दैत्य	४-१८

दोष	१४-११
द्रव्य	१-८३, ३८६; ३-२,
	५, ६; ४-३३१, ३३७;
	१३-६१, २०४, ३२३;
	१५-३३
द्रव्य उत्कृष्ट	११-१३
द्रव्य उपक्रम	१५-४१
द्रव्य उपशामना	१५-२७५
द्रव्यकर्म	१३-३८ ४३
द्रव्यकाल	४ ३१३
द्रव्यकृति	९-२५०
द्रव्यक्रोध	७-८२
द्रव्य क्षेण	४-३
द्रव्य छेदना	१४-४३५
द्रव्य जघन्य	११-१२, ८५
द्रव्यार्जन	९-६
द्रव्यतः आदेश जघन्य	११-१२
द्रव्यत्व	४-३३६
द्रव्यनिबन्धन	१५-२
द्रव्यपरिवर्तन	४-३२५
द्रव्यप्रकृति	१३-१६८, २०३
द्रव्यप्रक्रम	१५-१५
द्रव्यप्रमाण	३-१०
द्रव्यप्रमाणानुगम	३-१, ८;
	१३-६३
द्रव्यबन्ध	१४-२७
द्रव्यबन्धक	७-३
द्रव्यभावप्रमाण	३-३६
द्रव्यमन	१-२५६
द्रव्यमल	१-३२
द्रव्यमोक्ष	१६-३३७
द्रव्यमंगल	१-२०, ३२
द्रव्ययुति	१३-३४८
द्रव्यलिङ्ग	४-२०८
द्रव्यलिङ्गी	४-४२७, ४२८;
	५-५८, ६३, १४६
द्रव्यलेश्या	१६-४८४
द्रव्यवर्णा	१४-५२

द्रव्यविष्कम्भसूची	५-२६३
द्रव्यवेदना	१०-७
द्रव्यश्रुत	८-६१
द्रव्यसृष्टा	९-३
द्रव्यस्पर्श	१३-३, ११, ३६
द्रव्यस्पर्शन	४ १४१
द्रव्यसंक्रम	१६-३३६
द्रव्यसंयम	६-४६५, ४७३;
	७-६१
द्रव्यसंयोग	९-१ ३७
द्रव्यसंयोगपद	९-१ ३८
द्रव्यान्तर	५-३
द्रव्यानन्त	३-१३
द्रव्यानुयोग	१-१५८; ३-१
द्रव्यार्थता	१३-६३
द्रव्यार्थिक	१-८३; ४-१४१;
	९-१६७, १७०
द्रव्यार्थिकनय	४-३, १४५, १७०;
	३२२, ३३७, ४४४; ७-३,
	१३; ८-३; १०-२२, ४५०;
	१६-४८५
द्रव्यार्थिकप्ररूपणा	४-२५६
द्रव्याल्पबहुत्व	५-२४१
द्रव्यासंख्यात	३-१२३
द्रव्येन्द्रिय	१-२३२
द्वन्द्वसमास	३-७
द्वादशाङ्ग	९-५६ ५८
द्विगुणश्रेणिशीर्ष	१५-२६७
द्विगुणहानि	६-१५३
द्विगुणादिकरण	३-७७, ८१,
	११८
द्विगुसमास	३-७
द्विचरमसमानवृद्धि	९-३४
द्वितीय दण्ड	७-३१३, ३१५
द्वितीय दण्डस्थित	४ ७२
द्वितीय पृथिवी	४-८६
द्वितीय संग्रहकृष्टिअन्तर	६-३७७
द्वितीय स्थान	११-११३
द्वितीय स्थिति	६-२३१, २५३

द्वितीयाक्ष	७-४५
द्विपद	१३-३६१
द्विप्रदेशीय परमाणु पुद्गल	
द्रव्यवर्गणा	१४-५५
द्विप्रदेशीय वर्गणा	१४-१२२
द्विमागा	१४-३२
द्विरूपधारा	३-५२
द्विसमयाधिकावली	४-३३२
द्विस्कन्ध द्विबाहु क्षेत्र	४-१८७, २१८
द्विस्थान दण्डक	८-२७४
द्विस्थान बन्धक	११-३१३
द्विस्थानिक १५-१७४; १६-५३६	
द्विस्थानिक अनुभागबन्धक	६-२१०
द्विस्थानिक अनुभागवेदक	६-२१३
द्विस्थानिक अनुभाग सत्कर्मिक	६-२०६
द्विस्थानी	८-२४५, २७२
द्वीन्द्रिय १-२४१, २४८, २६४; ७-६४; ८-६; १४-३२३	
द्वीन्द्रियकर्मणशरीरबन्ध	१४-४३
द्वीन्द्रियजाति	६-६८
द्वीन्द्रिय जातिनाम	१३-३६७
द्वीन्द्रियतैजसकर्मणशरीरबन्ध	१४-४३
द्वीन्द्रियतैजसशरीरबन्ध	१४-४३
द्वीन्द्रिय-त्रीन्द्रियशरीरबन्ध	१४-४३
द्वीन्द्रियशरीर	१४-७८
द्वीप	१३-३०८
द्वीपसागरप्रज्ञप्ति	१-११०; ९-२६
द्वीपायन	१२-२१
द्वेष	१२-२८३
द्वयर्धगुणहानि	६-१५२
ध	
धन	४-१५६; १०-१५०

धनुष	४-४५, ५७
धरणी	१३-२४३
धरणीतल	४-२३६
धर्म	४-३१६; ८-६२
धर्मकथा	९-२६३; १३-२०३; १४-६
धर्मद्रव्य ३-३; १३-४३; १५-३३	
धर्मास्तद्रव्य	१०-४३६
धर्मास्तिकायानुभाग	१३-३४६
धर्म्यध्यान १३-७०, ७४, ७७	
धर्म्यध्यानफल	१३-८०, ८१
धातकीखण्ड	४-१५०, १६५
धान	१३-२०५
धारणा	१-३५४; ६-१८; ९-१४४; १३-३१६, २३३, २४३
धारणाजिन	९-६२
धारणावरणीय	१३-२१६, २१६ २३३
धुर्य	४-३२६
धूमकेतु	१४-३५
ध्यातृ	१३-६६
ध्यान १३-६४, ७४, ७६, ८६	
ध्यानसन्तान	१३-७६
ध्येय	१३-७०
ध्रुव	८-८
ध्रुवश्रवग्रह	६-२१
ध्रुवउदयप्रकृति	१५-११६
ध्रुवउदीरक	१५-१०८
ध्रुवउदीरणाप्रकृति	१५-१०६
ध्रुवत्व	४-१४१
ध्रुवप्रत्यय	९-१५४
ध्रुवबन्ध	८-११७
ध्रुवबन्धप्रकृति	८-१७; १५-१४५, ३२८
ध्रुवबन्धी	६-८६, ११८; ४-१७
ध्रुवराशि	३-४१; १०-१६८, १७०, १७३
ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा	१४-८३, ११२, ११६

ध्रुवशून्यवर्गणा	१४-६३
ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा	१४-६३
ध्रुवस्थिति	११-३५०
ध्रुवावग्रह	१-३५७
ध्रुवोदय	६-१०३
ध्रुवोदयप्रकृति	१५-१५६, १६२, २३३
न	
नक्षत्र	४-१५१
नगर	७-६; १३-३३४
नगरविनाश	१३-३३४
नन्दा	४-३१६
नन्दावर्त	१३-२६७
नपुंसक १-३४१, ३४२; ४-४६	
नपुंसकवेद	६-४७; ७-७६; ८-१०; १३-३६१
नपुंसकवेदभाव	१४-११
नपुंसकवेदोपशामनाद्वा	५-१६०
नमंसन	८-६२
नय	१-८३; ३-१८; ७-६०; ९-१६२, १६६; १३-३८, १६८, २८७
नयवाद	१३-२८०, २८७
नयविधि	१३-२८०, २८४
नयविभाषणता	१३-२
नयान्तरविधि	१३-२८०, २८४
नरक	१३-३२५; १४-४६५
नरकगति	१-२०१, ३०२; ६-६७; ८-६
नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी	४-१७५ १६१; ६-७६; १३-३७१
नरकगतिमान	१३-३६७
नरकपृथिवी	१४-४६५
नरकप्रस्तर	१४-४६५
नरकायुष्क	१३-३६२
नवग्रहैविक विमान	४ ३८५
नवविधि	९-१०६, ११०
नाग	१३-३६१

नागहस्ती	१२-२३२; १५-३२७; १६-५१८, ५२२
नाथधर्मकथा	१-१०१
नानागुणहानिशलाका	६-१५१; १५२, १६३, १६५
नानात्व	६-३३२, ४०७
नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर- शलाका	१०-११६
नानाश्रेणि	१४-१३४
नाम	६-१३; १३-२६, २०६
नामउपक्रम	१५-४१
नामउपशामना	१५-२७५
नामकर्म	१३-३८, ४०, २६३
नामकर्मप्रकृति	१३-२०६
नामकारक	७-२६
नामकाल	४-३१३
नामकृति	९-२४६
नामक्षेत्र	४-३
नामछेदना	१४-४३६
नामजिन	९-६
नामनिबन्धन	१५-२
नामनिश्चि	१४-३२१
नामपद	१-७७; ९-१३६
नामप्रकृति	१३-१६८
नामप्रक्रम	१५-१५
नामबन्ध	१४-४
नामबन्धक	७-३
नामभाव	५-१८३; १२-१
नाममोक्ष	१६-३३६
नाममंगल	१-१७, १६
नामलेश्या	१६-४८४
नामवर्गणा	१४-५२
नामवेदना	१०-५
नामसत्य	१-११७
नामसम	९-२६०, २६६; १३-२०३; १४-८
नामसंक्रम	१६-३३६
नामस्पर्श	१३-३, ८;
नामस्पर्शन	४-१४१
नामानन्त	३-११

नामानन्तर	५-१,
नामाल्पब्रह्मत्व	५-२४१
नामासंख्यात	३-१२३
नाभेय	१३-३८८
नामोपक्रम	९-१३५
नारक	४-५७; १३-२६२, ३६१, ३६२
नारकगति	१-२०१
नारकभाव	१४-११
नारकायु	६-४८; ८-६
नारकसर्वावास	४-१७६
नारकावास	४-१७७
नाराचशरीरसंहनन	६-७४
नाराचसंहनन	८-१०
नालिका	३-६५
नाली	३-६६; ४-३१८
निःसूत्रिक्षेत्र	४-१२
निःसृत	९-१५३
निःसृत अचग्रह	६-२०
निःसृत प्रत्यय	१३-२३८
निकाचन अथ्यवसान	१६-५७७
निकाचना	१०-४६
निकाचनाकरण	६-२६५, ३४६
निकाचित	६-४२८; १२-३४; १६-५१७, ५७६
निकाचित-अनिकाचित	९-२३५
निकृति	१२-२८५
निकृतिवाक्	१-१२७
निकलेदिम	९-२७३
निक्षेप	१-१०; ३-१७; ४-२, ४१; ६-२२५, २२७, २२८; ७-३, ६०; ९-६, १४०; १३-३, ३८, १६८; १४-५१; १६-३४७
निक्षेपाचार्य	१५-४०
निगोद जीव	३-३५७; ४-४०६; ७-५०६; ८-१६२
निगोदशरीर	४-४७८; १४-८६
निचितकर्म	४-७६

नित्यनिगोद	१०-२४; १४-२३६
नित्यैकान्त	९-२४७
निदर्शन	५-६; १५-३२
निदान	६-५०१; १२-२८४
निद्रा	६-३१, ३२; ८-१०; १३-३५४
निद्रादण्डक	८-२७४
निद्रानिद्रा	६-३१; ८-६; १३-३५३, ३५४
निघत्त	६-४२७; १६-५१६, ५७६
निघत्त अथ्यवसान	१६-५७७
निघत्त-अनिघत्त	९-२३५
निघत्तिकरण	६-२६५, ३४६
निन्ह	१४-३२७
निपुण	१४-३२७
निबन्धन	१५-१
निबन्धन अनुयोगद्वार	९-२३३
निमिष	४-३१७
निरतगति	१-१०१
निरतिचारता	८-८२
निरन्तर	५-५६, २५७; ८-८
निरन्तरअवक्रमणकालनिःशेष	१४-४७८
निरन्तर बन्ध	८-१७
निरन्तरबन्धप्रकृति	८-१७
निरन्तरवेदककाल	१०-१४२, १४३
निरन्तरसमयअवक्रमणकाल	१४-४७४, ४७५
निराधार रूप	१०-१७१
निरिन्द्रिय	१४-४२६
निश्चि	३-५१, ७३; ७-२४७
निरूपक्रमायु	९-८६
निरूपक्रमायुष्क	१०-२३४, २३८
निर्ग्रन्थ	९-३२३, ३२४
निर्जरा	९-३; १३-३५२
निर्जराभाव	५-१८७
निर्जरित-अनिर्जरित	१३-५४
निर्देश	३-१, ८, ६; ४-६, १४४ ३२२; १३-६१

निर्माण	८-१०	१३-१६६; १५-२४	नोआगमभावान्त	३-१६
निर्माणनाम	१३-३६३, ३६६	नैगमनय	१-८४; ८-६;	नोआगमभावाल्लपवहुत्व
निर्लेपन	१४-५००		१३-४, ११	५-२४२
निर्लेपनस्थान	१०-२६७, २६८;	नैयायिक	६-४२०; ९-३२३	नोआगमभावासंख्यात
	१४-५२७	नैसर्गिकप्रथमसम्यक्त्व	६-४३०	३-१२५
निर्दग्गा	६-३८५	नोआनुभागदीर्घ	१६-५०६	नोआगममिश्रद्रव्यभाव
निर्वर्गणाकारणक	६-२१५,	नोआनुभागह्रस्व	१६-५११	५-१८४
	३१६, २१८; ११-३६३	नोआगम	३-१३, १२३	नोआगमसचित्तद्रव्यभाव
निर्वाण	५-३५; १०-२६६	नोआगमअचित्तद्रव्यभाव		५-१८४
निर्वृति	६-४६७; ७-४३६;		५-१८४	नोइन्द्रियअर्थवग्रह
	१४-३६३	नोआगमद्रव्यकाल	४-३१४	१३-२२८
निर्वृतिस्थान	१४-३५८	नोआगमद्रव्यप्रकृति	१३-२०४	नोइन्द्रियअर्थावग्रहावर्णीय
निर्वृत्यन्तर	१३-२६५	नोआगमद्रव्यभाव	५-१८४	१३-२३२
निर्वेदनी	१-१०५; ९-२०२	नोआगमद्रव्यबन्ध	१४-२८	नोइन्द्रिय ईहा
निर्लेपन	१४-५००	नोआगमद्रव्यबन्धक	७-४	१३-२३२
निर्लेपनस्थान	१०-२६७, २६८;	नोआगमद्रव्यवर्गणा	१४-५२	नोइन्द्रिय ईहावर्णीय
	१४-५२७	नोआगमद्रव्यवेदना	१०-७	१३-२३२
निषिद्धिका	१-६८; ९-१६१	नोआगमद्रव्यस्पर्शन	४-१४२	नोइन्द्रियज्ञान
निषेक	६-१४६, १४७, १५०;	नोआगमद्रव्यान्तर	५-२	७-६६
	११-२३७	नोआगमद्रव्यानन्त	३-१३	नोइन्द्रियधारणावर्णीय
निषेकलुभवग्रहण	१४-३६२	नोआगमद्रव्याल्लपवहुत्व	५-२४२	१२-२३३
निषेकगुणहानिस्थानान्तर		नोआगमद्रव्यासंख्यात	३-१२३	नोइन्द्रियावरण
	१६-३२८	नोआगमभव्यद्रव्यभाव	५-१८४	५-२३७
निषेकप्ररूपणा	१४-३२१	नोआगमभावउपशामना		१५-४१
निषेक भागहार	६-१५३	नोआगमभावकाल	४-३१६;	नोकर्मउपशामना
निषेकरचना	१०-४३		१५-२७५	१५-२७५
निषेकस्थिति	६-१६६, १६७	नोआगमभावक्षेत्र	४-७; ११-२	नोकर्मक्षेत्रउत्कृष्ट
निषेकस्थितिप्राप्त	१०-११३	नोआगमभावजघन्य	११-१३	११-१३
निस्सरणात्मक तैजसशरीर	४-२७	नोआगमभावनारक	७-३०	नोकर्मक्षेत्रजघन्य
नीचगोत्र	६-७७; ८-६	नोआगमभावप्रकृति		११-१२
नीचगोत्र	१३-३८८, ३८९		१३-३६०, ३६१	नोकर्मद्रव्य
नीललोश्या	१-३८६; ७-१०४;	नोआगमभावबन्ध	१४-६	४-६
	८-३२०, ३३१; १६-४८४,	नोआगमभावबन्धक	७-५	नोकर्मद्रव्यनारक
	४८८, ४९०	नोआगमभावभाव	५-१८४	७-३०
नीलवर्ण	६-७४	नोआगमभावलोश्या	१६-४८५	नोकर्मपर्याय
नीलवर्णनाम	१३-३७०	नोआगमभाववर्गणा	१४-५२	४-३२७
नैऋत	४-३१८	नोआगमभावस्पर्शन	४-१४४	४-३३२
नैगम	७-२८; ९-१७१, १८१;	नोआगमभावान्तर	५-३	नोकर्मपुद्गल
	१०-२२; १२-३०३;			४-३३२
				नोकर्मपुद्गलपरिवर्तन
				४-३२५
				नोकर्मप्रकृति
				१३-२०५
				नोकर्मप्रक्रम
				१३-१५
				नोकर्मबन्धक
				७-४
				नोकर्ममोक्ष
				१६-३३७
				नोकर्मवेदना
				१०-७
				नोकर्मसंक्रम
				१६-३३६
				नोकर्मस्पर्श
				१३-४. ५
				नोकषाय
				६-४०; ४१; १३-३५६
				नोकषायवेदनीय
				६-४५;
				१३-३५६, ३६१
				नोऋति
				९-२७४

नोगौण्य	०२-१३५
नोगौण्यपद	१-७४
नोजीव	१२-२६६, २६७
नोत्वक्	१३-१६
नोप्रकृतिदीर्घ	१६-५०७
नोप्रकृतिह्रस्व	१६-५०६
नोप्रदेशदीर्घ	१६-५०६
नाप्रदेशह्रस्व	१६-५११
नोमनोविधिष्ट	१०-१६
नोस्थितिदीर्घ	१६-५०८
नोस्थितिह्रस्व	१६-५१०
न्यग्रोधपरिमण्डलशरीर	
संस्थाननाम	१३-३६८
न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान	
	६-७१
न्याढ्य	१३-२८६
न्याय	१३-२८६
न्यास	३-१८
प	
पक्ष	४-३१७, ३६५; १३-२६८, ३००
पक्षधर्मत्व	१३-२४५
पक्षिन्	१३-३६१
पट्टन	१३-३३५
पट्टनविनाश	१३-३३२, ३३५, ३४१
पद	६-२३; १०-२६; १२-३, ४८०; १३-२६०, २६५
पदनिक्षेप	६-१५२
पदलेश्या	१-१६०; ७-१०४; ८-३३३; ३४५; १६-४८४, ४८८, ४६२
पदमीमांसा	९-१४१; १०-२६; १२-३; १४-५०, ३२२
पदश्रुतज्ञान	१३-२६५
पदसमास	६-२३; १२-४८०; १३-२६७
पदसमासावरणीय	१३-२६१
पदानुसारी	९-५६, ६०
पदावरणीय	१३-२६१

पदाहिन	१३-८६
पन्नग	४-२३२
पयदकरण	१५-२७६, २७७
परघात	६-५६; ८-१०
परघातनाम	१३-३६३
परप्रकृतिसंक्रमण	६-१७१
परप्रत्यय	४-२३४
परभविक	१६-३६३
परभविकनामकर्म	६-२६३
	३३०, ३४७
परभविकनामप्रकृति	१६-३४२
परभविकनामबन्धाध्यवसान	
	१६-३८७
परमाणु	४-२३; १३-११, १८, २१५; १४-५४
परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा	
	१४-१२१
परमार्थ	५-७
परमार्थकाल	४-३२०
परमावधि	६-२५; ९-१४, ४१, १३, २६२, ३२२
परम्परापर्याप्ति	१०-४२६
परम्पराबन्ध	१२-३७०, ३७२
परम्परा लब्धि	१३-२८०, २८३
परम्परोपनिधा	६-३७८; १०-२२५; ११-३५२; १२-२१४; १४-४६
परवाद	१३-२८०, २८८
परसमयवक्तव्यता	१-८२
परस्थान ( अल्पबहुत्व )	३-२०८
	९-४२६, ४३८
परस्थानाल्पबहुत्व	५-२८६; १०-४०६
परस्परपरिहारलक्षणविरोध	
	७-४३६; १३-३४५
पराक्रम	९-६३
परिकर्म	१३-१७, २६२, २६३, २६६
परिग्रह	१२-२८२

परिग्रहतः श्रात्तपुद्गल	१६-५१५
परिग्रह संज्ञा	१-४१५
परिचित	९-२५२
परिजित	९-२६८; १३-२०३
परिणाम	१-८०; १५-१७२
परिणामतः श्रात्तपुद्गल	१६-५१५
परिणामप्रत्यय	६-३१७
परिणामप्रत्ययिक	१५-१७२, २४२, २६१
परिणामयोग	१०-५५ ४२०
परित-अपरितवर्गणा	१४-५८
परित्तजीविय	२७४
परित्तापन	१३-४६
परिधि	४-१२, ४३, ४५, २०६, २२२
परिधिविष्कम्भ	४-३४
परिनिवृत्तभाव	१४-१८
परिपाटी	५-२०
परिमोग	६-७८; १३-३६०
परिमोगान्तराय	६-७८; १३-३६८
परिमण्डलाकार	४-१७८
परिवर्तन	१४-६
परिवर्तना	९-२६२; १३-२०३
परिवर्तमान	१५-२३४
परिवर्तमाननामप्रकृति	
	१५-१४६
परिवर्तमानपरिणाम	१२-२७
परिवर्तमानमध्यमपरिणाम	
	१२-२७
परिशातनकृति	९-३२७
परिहाणि ( रूम )	३-१८७
परिहार	१३-६२
परिहारशुद्धिसंयत	१-३७०, ३७१, ३७२; ७-६४, १६७, ८-३०३
परिहारशुद्धिसंयम	७-१६७
परीतानन्त	३-१८
परोक्ष	६-२६; ९-५५, १४३; १३-२१२, २१४

परोदय	८-७
पर्यन्त	४-८६, ३६२
पर्याप्त	१-२५४, २६७; ३-३३१ ६-६२, ४१६; ८-११; १०-२४०
पर्याप्तनाम	१३-२६३
पर्याप्तनिवृत्ति	१४-३५२; १५-१८०
पर्याप्ताद्धा	१०-३७
पर्याप्ति	१-२५७; ४-३६२; १०-२३६
पर्याय	१-८४; ४-३३७; ६-२२; ८-५, ६; १३-६०
पर्यायज्ञान	१३-३६३
पर्यायनय	४-३३७
पर्यायसमास	६-२२
पर्यायसमासज्ञान	१३-२६३
पर्यायसमासावरणीय	१३-१६१
पर्यायार्थिक	१-८४; ९-१७०
पर्यायार्थिक जन	४-१४६
पर्यायार्थिकनय	४-३, १४५, १७० ३२२, ४४४; ७-१३; ८-३, ७८; १०-४५१; १६-४८५
पर्यायार्थिकप्ररूपणा	४-१४६, १७२, १८६ २०७, २५६
पर्यायावरणीय	१३-२६१
पर्युदास	१५-२५
पर्युदासप्रतिषेध	७-४७६, ४८०
पर्व	४-३१७; १३-२६८, ३००
पल्य	४-६, १८५, ३८६
पल्योपम	३-६३; ४-५, ७, ६, ७७, १८५, ३१७, ३४०, ३७६; १३-२६८, ३००
पल्योपमशतपृथक्त्व	४-४३७
पल्यंकासन	४-४६
पश्चात्कृत मिथ्यात्व	४-३४६
पश्चादानुपूर्वी	१-७३; ९-१३५
पशु	१३-३६१
पश्यमान	१४-१४३

पाणिमुक्तागति	१-३००; ४-२६
पाप	१३-३५२
पायदकरण	१५-२७८
पारञ्चिक	१३-६२
पारमार्थिक नोर्कर्मद्रव्यज्ञेय	४-७
पारसिक	१३-२२३
पारिणामिक	१-१६१; ७-६, ३०; १२-२७६
पारिणामिकभाव	५-१८५, १६६, २०७, २३०; ७-१४
पारिणामिकी	९-१८२
पार्ष्व	१३-१
पिठर	१३-२०४
पिशुल	१२-१५८
पिशुलापिशुल	१२-२६०
पिंड	४-१४४, १४; १३-३६६
पिंडप्रकृति	६-४६; ३-३६३, ३६६; १६-३४७
पुच्छण	१४-६,
पुरय	१३-३५२
पुद्गल	१-११६; १४-३६
पुद्गलद्रव्य	३-३; १३-४३; १५-३३
पुद्गलनिबद्ध	१५-७, १३
पुद्गलपरिवर्तन	४-३६४, ३८८, ४०६; ५-५७
पुद्गलपरिवर्तनकाल	४-३२७; ३३४
पुद्गलपरिवर्तनवार	४-३३४
पुद्गलपरिवर्तनसंसार	४-३३३
पुद्गलबन्ध	१३-३४७
पुद्गलमोक्ष	१३-३४८
पुद्गलविपाकित्व	५-२२२; ६-३६
पुद्गलविपाकी	५-२२६; ६-११४; १२-४६
पुद्गलयुति	१३-३४८
पुद्गलात्त	६-२३५; १६-५१४

पुद्गलात्मा	१६-५१५
पुद्गलानुभाग	१३-३४६
पुनरुक्तदोष	१०-२६६; १२-२०६
पुरुष	१-३४१; ६-४६
पुरुषवेद	६-४७; ७-७६; ८-१०; १३-३६१
पुरुषवेददण्डक	८-२७५
पुरुष (पुरिस) वेदभाव	१४-११
पुरुषवेदोपशमनाद्धा	५-१६०
पुलविय	१४-८६
पुष्करद्वीप	४-१६५
पुष्करद्वीपार्ध	४-१५०
पुष्करसमुद्र	४-१६५
पुष्पोत्तरविमान	९-१२०
पुंडरीक	१-६८; ९-१६१
पुंवेद	१-३४१
पूरिम	९-२७२, २७३
पूर्व	४-३१७; ६-२५; १२-४८०; १३-२८०, २८६, ३००
पूर्वकृत	९-२०६
पूर्वकोटी	४-३४७, ३५०, ३५६, ३६६
पूर्वकोटीपृथक्त्व	४-३६८, ३७३, ४००, ४०८; ५-४२ ५२, ७२
पूर्वगत	१-११२
पूर्वधर	१५-२३८
पूर्वफल	३-४६
पूर्वश्रुतज्ञान	१३-३७१
पूर्वसमास	६-२५; १२-४८०
पूर्वसमासश्रुतज्ञान	१३-२७१
पूर्वसमासावरणीय	१३-२६१
पूर्वस्पर्द्धक	१०-३२२, ३२५; १३-८५; १६-५२०, ५७८
पूर्वातिपूर्व	१३-२८०
पूर्वानुपूर्वी	१-७३; ९-१३५; १२-२२१
पूर्वाभिमुखकेवली	४-५०

पूर्वावरणीय	१३-२६१
पृच्छना	९-२६२; १३-२०३
पृच्छाविधि	१३-२८०, २८५,
पृच्छाविधिविशेष	१३-२८०
पृच्छासूत्र	१०-६
पृथिवी	४-४६०
पृथिवीकायिक	३-३३०; ७-७०;
	८-१६२
पृथिवीकायिकनामकर्म	७-७०
पैशुन्य	१-१७
पोतकर्म	९-२४६; १३-६, ४१
	२०२; १४-५
पंकवहुलपृथिवी	४-२३२
पंचच्छेद	३-७८
पंचद्रव्याधारलोक	४-१८५
पंचमक्षिति	१३-३१८
पंचमपृथिवी	४-८६
पंचमुष्टि	९-१२६
पंचविधलन्धि	७-१५
पंचलोकपाल	१३-२०२
पंचसामायिकयोगस्थान	१०-४६५
पंचांश	४-१७८
पंचेन्द्रिय	१-२४६, २४८, २६४;
	७-६६
पंचेन्द्रियजाति	१-२६४; ६-६८
	८-११
पंचेन्द्रियजातिनाम	१३-३६७
पंचेन्द्रियतिर्यग्जातिप्रायोग्यानुपूर्वा	४-१६१
पंचेन्द्रियतिर्यग्च	८-११२
पंचेन्द्रियतिर्यग्चत्रपर्याप्त	८-१२७
पंचेन्द्रियतिर्यग्चपर्याप्त	८-११२
पंचेन्द्रियतिर्यग्चयोनिमती	८-११२
पंचेन्द्रियलन्धि	१४-२०
पंजर	१३-५, ३४
पंचिका	११-३०३

प्रकाशन	४-३२२
प्रकीर्णक	४-१७४, २३४
प्रकीर्णकाध्याय	१३-२७६
प्रकृति	१२-३०३, १३-१६७,
	२०५
प्रकृतिअनुयोगद्वार	९-२३२
प्रकृतिअल्पवहुत्व	१३-१६७
प्रकृतिगोपुच्छा	१०-२४१
प्रकृतिदीर्घ	१६-५०७
प्रकृतिद्रव्यविधान	१३-१६७
प्रकृतिनयविभाषणता	१३-१६७
प्रकृतिनामविधान	१३-१६७
प्रकृतिनिक्षेप	१३-१६७, १६८
प्रकृतिबंध	८-२ ७; ६-१६८,
	२००
प्रकृतिबंधव्युच्छेद	८-५
प्रकृतिमोक्ष	१६-३३७
प्रकृतिविकल्प	४-१७६
प्रकृतिविशेष	१०-५१०, ५११
प्रकृतिशब्द	१३-२००
प्रकृतिस्थानउपशामना	१५-२८०
प्रकृतिस्थानबन्ध	८-२
प्रकृतिसत्कर्म	१६-५२२
प्रकृतिसमुत्कीर्तना	८-७
प्रकृतिसंक्रम	१६-३४०
प्रकृतिस्वरूपगलित	१०-२४६
प्रकृतिह्रस्व	१६-५०६
प्रकृत्यर्थता	१२-४७८
प्रक्षेप	३-४८, ४९, १८७;
	६-१५२; १०-३३७
प्रक्षेपप्रमाण	१०-८८
प्रक्षेपभागहार	१६-७६, १०१
प्रक्षेपराशि	३-४६
प्रक्षेपशलाका	३-१५६
प्रक्षेपसंक्षेप	५-२६४
प्रक्षेपोत्तरक्रम	६-१८२
प्रचय	३-६४
प्रचला	६-३१, ३२; ८-१०;
	१३-३५४

प्रचलाप्रचला	६-३१; ८-६;
	१३-३५४
प्रज्ञा	९-८२, ८३, ८४
प्रज्ञाभावछेदना	१४-४३६
प्रज्ञाश्रवण	९-८१, ८३
प्रतर	९-२३६; १०-३२०;
	१३-८४
प्रतरगत	७-५५
प्रतरगतकेवलिक्षेत्र	४-५६
प्रतरगतकेवली	४-१६
प्रतरपत्य	३-७८
प्रतरसमुद्घात	४-२६, ४३६
प्रतराकार	४-२०४
प्रतरावली	४-३८६
प्रतरांगुल	३-७८, ७९, ८०;
	४-१०, ४३, ४४, १५१,
	१६०, १७२; ५-३१७,
	३३५; ९-२१
प्रतरांगुलभागहार	४-६८
प्रतिक्रमण	१-६७; ८-८३, ८४,
	९-१८८
प्रतिगुणकार	९-४५
प्रतिग्रह	१६-४११, ४१४, ४६५
प्रतिपक्षपद	१-७६; ९-१३६
प्रतिपद्यमानस्थान	६-२७६, २७८
प्रतिपत्ति	६-२४; १२-४८०;
	१३-२६२
प्रतिपत्तिआवरणीय	१३-२६१
प्रतिपत्तिसमास	६-२४; १२-४८०
प्रतिपत्तिसमासश्रुतज्ञान	१३-२६६
प्रतिपत्तिसमासावरणीय	१३-२६१
प्रतिपातस्थान	६-२८३; ७-५६४
प्रतिपाती	१३-८३
प्रतिपातीश्रवधि	६-५०१
प्रतिभाग	४-८२; ५-२७०, २६०
प्रतिराशि	१०-६७
प्रतिष्ठा	१३-२४३
प्रतिसारी	९-५७, ६०

प्रतिसारी बुद्धि	१३-२७१, २७३
प्रतिसेवित	१३-३४६
प्रतिक्षण	१४-६
प्रतीच्छा	१३-२०३
प्रतीच्छना	९-२६२
प्रतीतसत्य	१-११८
प्रत्यक्ष	१-१३५; ४-३३६; ६-२६; ९-५५, १४२; १३-२१२, २१४
प्रत्यक्षचानी	८-५७
प्रत्यभिज्ञान	९-१४२
प्रत्यय	५-१६५
प्रत्ययनिवन्धन	१५-२
प्रत्ययप्ररूपणा	७-१३
प्रत्ययविधि	८-८
प्रत्याख्यान	१-१२१; ६-४३, ४४; ८-८३, ८५; १३-३६०
प्रत्याख्यानदण्डक	८-२७४; ९-२२२
प्रत्याख्यानपूर्व	७-१६७
प्रत्याख्यानावरण	८-६
प्रत्याख्यानावरणीय	६-४४
प्रत्यागाल	६-२३३, ३०८
प्रत्यामुखा	१३-२४३
प्रत्यावली	६-२३३, २३४, ३०८
प्रत्यासत्ति	४-३७७; ८-६
प्रत्यासन्नविपाकानुपूर्वाफल	४-१७५
प्रत्येक अनन्तकाय	१-२७४
प्रत्येकनाम	१३-३६३
प्रत्येकबुद्ध	५-३२३
प्रत्येकशरीर	१-२६८; ३-३३१, ३३३; ६-३२; ८-१०; १३-३६७; १४-२२५
प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गाया	१४-६५
प्रथम त्रिभाग	१४-५०१, ५०२
प्रथक्त्व	३-८६; १३-१३, ७७
प्रथक्त्ववितर्कवीचार	१३-७७, ८०
प्रथक्त्ववितर्कवीचारशुक्लध्यान	४-३६१

प्रथम दण्ड	७-३१३
प्रथम निपेक	६-१७३
प्रथम पृथिवी	४-८८
प्रथम पृथिवीस्वस्थानक्षेत्र	४-१८२
प्रथम सम्यक्.व.द.३,	२०४, २०६ २२३, ४१८; १०-२८५
प्रथम समय उपशमसम्यग्दृष्टि	६-२३५
प्रथम समय तद्भवस्थ	१४-३३२
प्रथम संग्रहकृष्टिअन्तर	६-२७७
प्रथम स्थितिद.	२३२, २३३, ३०८
प्रथमाक्ष	७-४५
प्रथमानुयोग	१-११२; ९-२०८
प्रदेश	१३-११
प्रदेशउदीरकअध्वसानस्थान	१६-५७७
प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर	१६-३७६
प्रदेशघात	६-२३०, २३४
प्रदेशछेदना	१४-३३६
प्रदेशदीर्घ	१६-५०६
प्रदेशप्रमाणानुगम	१४-३२१
प्रदेशबन्ध	६-१६८, २००; ८-२
प्रदेशबन्धस्थान	१०-५०५, ५११
प्रदेशमोक्ष	१६-३३८
प्रदेशविन्यासावास	१०-५१
प्रदेशविपरिणामना	१५-२८३
प्रदेशविरच	१४-३५२
प्रदेशविरचित अल्पबहुत्व	१०-१२०, १३६
प्रदेशसंक्रम	६-२५६, २५८; १६-४०८
प्रदेशसंक्रमयाध्वसानस्थान	१६-५७७
प्रदेशह्रस्व	१६-५११
प्रदेशाग्र	६-२२४, २२५
प्रदेशार्थता	१३-६३
प्रधान द्रव्यकाल	११-७५
प्रधानभाव	४-१४५

प्रपद्यमान उपदेश	३-६२
प्रबन्धन	१४-४८०, ४८५
प्रबन्धनकाल	१४-१४, ४८५
प्रभा	१४-३२७
प्रभापटल	४-८०
प्रमत्तसंयत	१-१७६; ८-४
प्रमत्ताप्रमत्तपरावर्त्तसहस्र	४-३४७
प्रमाण	३-४, १८; ४-३६६; ७-२४७; ९-१३८, १६३
प्रमाण (परिणाम)	३-४०; ४२, ७२
प्रमाण (राशि)	३-१८७, १६४
प्रमाणकाल	११-७७
प्रमाणघनाङ्गुल	४-३५
प्रमाणपद	१-७७; ९-६०, १३६, १६६; १३-२६६
प्रमाणराशि	४-७१; ३४१
प्रमाणलोक	४-१८
प्रमाणवाक्य	४-१४५
प्रमाणाङ्गुल	४-४८, १६०, १८५
प्रमाद	७-११
प्रमेय	७-१६
प्रमेयत्व	४-१४४
प्रमोक्ष	८-३
प्रयोग	१२-२८६; १३-४४
प्रयोगकर्म	१३-३८, ४३, ४४
प्रयोगपरिणत	१४-२३, २४
प्रयोगबन्ध	१४-३७
प्रयोगशः उदय	१५-२८६
प्रयोजन	८-१
प्ररूपणा	१-४११
प्ररोहण	१४-३२८
प्रवचन	८-७२, ७३, ६०; १३-२८०, २८२
प्रवचनप्रभावना	८-७६, ६१
प्रवचनभक्ति	८-७६, ६०
प्रवचनवत्सलता	८-७६, ६०
प्रवचनसन्निकर्ष	१३-२८०, २८४
प्रवचनसन्धास	१३-२८४



प्रवचनाद्धा	१३-२८०; २८४
प्रवचनार्थ	१३-२८०, २८२
प्रवचनी	१३-२८०, २८३
प्रवचनीय	१३-२८०, २८१
प्रवरवाद	१३-२८०, २८७
प्रवाहानादि	७-७३
प्रवेध	४-१६१
प्रवेशन	४-५७
प्रश्नव्याकरण	१-१०४, ९-२०२
प्रशम	७-७
प्रशस्ततैजसशरीर	४-२८; ७ ४००
प्रशस्तविहायोगति	६-७६
प्रशस्तोपशामना	१५-२७५
प्रसज्य	१५-२५
प्रसज्यप्रतिषेध	७-८५, ४७६
प्रस्तार	४-५७
प्राकाम्य	९-७६, ७६
प्राकार	१४-४०
प्राण	१-२५६; २-४१२; ३-६६; १२-२७६
प्राणत	१३-३१८
प्राणातिपात	१२-२७५, २७६
प्राणावाय	१-१२२; ९-२२४
प्राणी	१-११६
प्राण्यसंयम	८-२१
प्राधान्यपद	१-७६; ९-१३६
प्रातार्थग्रहण	९-१५७, १५६
प्राप्ति	९-७५
प्राभृत	६-२५; ९-१३४, १२-४८०
प्राभृतज्ञायक	१३-३
प्राभृतप्राभृत	६-२४; १२-४८०; १३-२६०
प्राभृतप्राभृतश्रुतज्ञान	१३-२७०
प्राभृतप्राभृतसमास	६-२४; १२-४८०; १३-२७०
प्राभृतप्राभृतसमासावरणीय	१३-२६१

प्राभृतप्राभृतावरणीय	१३-२६१
प्राभृतश्रुतज्ञान	१३-२७०
प्राभृतसमास	६-२५; १२-४८०
प्राभृतसमासश्रुतज्ञान	१३-२७०
प्राभृतसमासावरणीय	१३-२६१
प्राभृतावरण	१३-२६१
प्रामाण्य	९-१४२
प्रायश्चित्त	१३-५६
प्रायोग्यलब्धि	६-२०४
प्रायोपगमन	१-२३
प्रावचन	१३-२८०
प्राशुकपरित्यागता	८-८७, ८६
प्रासाद	१४-३६
प्रेम	१२-२८४
प्रेयस	९-१३३
प्लुत	१३-२४८

## फ

फल (राशि)	३-१८७, १६०
फलराशि	४-५७, ७१, ३४७
फलाचारण	९-७६

## व

वद्ध-अवद्ध	१३-५२
वद्धायुष्क	६-२०८
वद्धायुष्कघात	४-३८३
वद्धायुष्कमनुष्य सम्यग्दृष्टि	४-६६
वध्यमान	१२-३०३
वल	४-३१८
वलदेव	१३-२६१
वलदेवत्व	६-४८६, ४६२, ४६५, ४६६
बहु	९-१४६; १३-५०; २३५
बहु-अवग्रह	६-१६
बहुब्रीहिसमास	३-७
बहुविध	९-१५१; १३-२३७
बहुविध-अवग्रह	६-२०
बहुश्रुत	८-७२, ७३, ८६
बहुश्रुतभक्ति	८-७६, ८६

वादर	१-२४६, २६७; २-३३० ३३१; ६-६१; ८-११; १३-४६, ५०
वादरकर्म	१-१५३
वादरकृष्टि	१२-६६
वादरनिगोदद्रव्यवर्गणा	१४-८४
वादरनिगोदप्रतिष्ठित	३-३४८; ४-२५१
वादरयुग्म	१०-२३; १४-१४७
वादरयुग्मराशि	३-२४६
वादरसाम्परायिक	७-५
वादरस्थिति	४-३६०, ४०३
वाहल्य	४-१२, ३५, १७२
वाह्यतप	८-८६
वाह्यनिवृत्ति	१-२३४
वाह्यपंक्ति	४-१५१
वाह्यवर्गणा	१४-२२३, २२४
वाह्येन्द्रिय	७-६८
वीज	१४-३२८
वीजचारण	९-७६
वीजपद	९-५६, ५७, ५६, ६०, १२७
वीजबुद्धि	९-५५
बुद्धभाव	१४-१८
बुद्धि	१३-२४३
बोधितबुद्ध	५-३२३
बौद्ध	६-४६७; ९-३२३
बंध	६-८३, ८५, ४६०; ७-१, ८२; ८-२, ३, ८; १३-७, ३४७; १४-१, २, ३०
बंधक	७-१; ८-२; १४-२
बंधकसत्वाधिकार	७-२४
बंधकारण	७-९
बंधन	७-१; ८-२; १४-१
बंधन उपक्रम	१५-४२
बंधनगुण	१४-४३५
बंधनीय	७-२; ८-२; १४-१, २, ४८, ६६
बंधप्रकृति	१२-४६५

बंधमार्गणा	१६-५१६
बंधविधान	७-२; ८-२; १४-२
बंधविधि	८-८
बंधव्युच्छेद	८-५
बंधसमुत्पत्तिकस्थान	१२-२२४
बंधस्थान	१३-१११, ११२
बंधस्पर्श	१३-३, ४, ७
बंधध्वान	८-८
बंधानुयोगद्वार	९-२३३
बंधावली	४-३३२; ६-१६८, २०२; १०-१११, १६७
ब्रह्म	४-२३५; १३-३१६
ब्रह्मोत्तर	४-२३५
भ	
भक्तप्रत्याख्यान	१-२४
भगवत्	१३-३४६
भजितत्रय	१३-३०६
भज्यमानराशि	३-४७
भद्रा	४-३१६
भय	६-४७; ७-३४, ३५, ३६; ८-१०; १३-३३२, ३३६, ३४१, ३६१
भरत	४-४५; १३-३०७
भव	१०-३५; १४-४२५; १५-७; १६-५१२, ५१६
भवग्रहणं	१३-३३८, ३४२; १४-३६२
भवग्रहणभव	१६-५१२
भवधारणीय	९-२३५
भवन	१४-४६५
भवनवासिउपपादक्षेत्र	४-८०
भवनवासिक्षेत्र	४-७८
भवनवासिजगप्रणधि	४-७८
भवनवासिजगमूल	४-१६४
भवनवासिप्रायोग्यानुपूर्वी	४-२३०
भवनवासी	४-१६२; ८-१४६
भवनविमान	४-१६२
भवपरिवर्तन	४-३२५
भवपरिवर्तनकाल	४-३३४

भवपरिवर्तनवार	४-३३४
भवस्थिति	४-३३३, ३६८
भवस्थितिकाल	४-३२२, ३६६
भवाननुगामी	१३-२६४
भवानुगामी	१३-२६४
भवप्रत्यय	१३-२६०, २६२
भवप्रत्ययग्रविधि	६-२६
भवप्रत्ययिक	१५-१७२, २६१
भविष्यत्	१३-२८०, २८६
भवोपगृहीत	१५-१७२, १७५; १६-३८०
-	
भव्य	१-१५०; ७-४, ७; १३-४, ५, २८०, २८६
भव्यजीव	१४-१३
भव्यत्व	४-४८०; ५-१८८
भव्यद्रव्यस्पर्शन	४-१४२
भव्यनोत्रागमद्रव्य	१-२६
भव्यनोत्रागमद्रव्यकाल	४-३१४
भव्यराशि	४-३३६
भव्यसिद्ध	१-३६२, ३६४
भव्यसिद्धिक	७-१०६; ८-३५८
भव्यस्पर्श	१३-४, ३४
भव्यानन्त	३-१४
भव्यासंख्यात	३-१२४
भाग	७-४६५
भागलब्ध	३-३८, ३६
भागहार	३-३६, ४८; ४-७१
भागहारप्रमाणानुगम	१०-११३
भागाभाग	३-१०१, २०७
भाजित	३-३६, ४१; ७-२४७
भाज्यशेष	३-४७
भानु	४-३१६
भार्ग्य	४-३१८
भामा	१३-२६१
भाव	१-२६; ५-१८६; ९-१३७, १३८; १३-६१
भावउपक्रम	१५-४१
भावकर्म	१३-३६, ४०, ६०

भावकलङ्क	१४-२३४
भावकलङ्कल	१४-२३४
भावकाल	४-३१३
भावक्षेत्र	४-३
भावक्षेत्रागम	४-६
भावजघन्य	११-८१
भावजिन	९-७
भावनिक्षेप	१३-३६
भावनियन्धन	१५-३
भावप्रकृति	१३-१६८, ३६०
भावप्रक्रम	१५-१६
भावपरिवर्तन	४-३२५
भावपरिवर्तनकाल	४-३३४
भावपरिवर्तनवार	४-३३४
भावप्रमाण	३-३२, ३६
भावबंधक	७-३, ५
भावमन	१-२५६
भावमल	१-३२
भावमोक्ष	१५-२३७
भावमङ्गल	१-२६, ३३
भावयुति	१३-३४६
भावलोश्या	१-४३१; १६-४८५, ४८८
भाववर्गणा	१४-५२
भाववेद	५-२२२
भाववेदना	१०-८
भावश्रुत	८-६१
भावसत्य	१-११८
भावसंक्रम	१६-३३६, ३४०
भावसंयम	६-४६५; ७-६१
भावसंयोग	९-१३७, १३८
भावसंसार	४-३३४
भावस्थितिकाल	४-३२२
भावस्पर्श	१३-३, ६, ३४
भावस्पर्शन	४-१४१
भावानन्त	३-१६
भावानुयोग	१-१५८
भावानुवाद	१३-१७२
भाषा	१३-२२१, २२२

भाषागाथा	१०-१४३
भाषाद्रव्य	१३-२१०, २१२
भाषाद्रव्यवर्गणा	१४-६१, ५५०
भाषापर्याप्ति	१-२५५; ७-३४
भावेन्द्रिय	१-२३६
भित्तिकर्म	९-२५०; १४-६, १०, ४१, २०२; १४-६
भिन्नदशपूर्वा	९-६६
भिन्नसुहृत्	३-६६, ६७; १३-३०६
भीमसेन	१३-२६१
भुक्त	१३-३४६, ३५०
भुज	४-१४
भुजगारवन्ध	८-२
भुजाकार(भूयस्कार)	१०-२६१; १५-५०
भुजाकारउदय	१५-३२५
भुजाकारउदीरणा	१५-१५७, २६०
भुजाकारउपशामक	१६-३७७
भुजाकारवन्ध	६-१८१
भुजाकारसंक्रम	१६-३६८
भुष्यमानायु	६-१६३; १०-२३७ २४०
भुवन	५-६३
भूत-४-२३२; १३-२८०, २८६	
भूतपूर्वनय	६-१२६
भूतबलि	१३-३६, ३८१
भूतबलिभट्टारक	१५-१
भूमि	४-८
भैंडकर्म	९-२५०; १३-६, १०, ४१ २०२; १४-६
भेद	४-१४४; १४-३०, १२१, १२६
भेदजनित	१४-१३४
भेदप्ररूपणा	४-२५६
भेदपद	१०-१६
भेदसंवात	१४-१२१
भोक्ता	१-११६

भोग	६-७८; १३-३८६
भोगभूमि	४-२०६; ६-२४५
भोगभूमिप्रतिभाग	४-१६८
भोगभूमिप्रतिभागद्वीप	४-२११
भोगभूमिसंस्थानसंस्थित	४-१८६
भोगान्तराय	६-७८; १३-३८६; १५-१४
भंग	३-२०२, २०३; ४-३३६, ४११; ८-१७१; १०-२२५; १५-२३
भंगप्ररूपणा	४-४७५
भंगविधि	१३-२८०, २८५
भंगविधिविशेष	१३-२८०, २८५

## म

मडंविनाश	१३-३३२, ३३५, ३४१
मति	१३-२४४, ३३२, ३३३, ३४१
मतिअज्ञानी	७-८४; ८-२७६; १४-२०
मतिज्ञान	१-३५४; ७-६६
मत्यज्ञान	१-३५४; ७-६६
मधुरनाम	१३-३७०
मधुरनामकर्म	६-७५
मधुसूत्री	९-१००
मध्यदीपक	९-४४; १०-४८, ४६६; १२-१४
मध्यमगुणकार	४-४१
मध्यमघन	१०-१६०
मध्यमत्रिभाग	१४-५०२
मध्यमप्रतिपत्ति	४-३४०
मध्यमपद	९-६०, १६५; १३-२६६
मध्यलोक	४-६
मनुज	१३-३६१
मनुष्य	१-२०३; १३-२६२-३२७
मनुष्य अपर्याप्त	८-१३०
मनुष्यगति	१-२०२; ६-६७; ८-११

मनुष्यगतिनाम	१३-३६७
मनुष्यपर्याप्त	८-१३०
मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वा	४-१७६; ६-७६; १३-३७७
मनुष्यभाव	१४-११
मनुष्यलोक	१३-३०७
मनुष्यलोकप्रमाण	४-४२
मनुष्यायु	५-४६; ८-११
मनुष्यायुष्क	१३-३६२
मनुष्यनी	८-१३०
मनोवैय्यावृत्त्य	१३-६३
मनोद्रव्यवर्गणा	९-२८, ६७
मनोवली	९-६८
मनोयोग	१-२७६, ३०८; ४-३६१; ७-७७; १०-४३७
मनोद्रव्यवर्गणा	१४-६२, ५५१, ५५२
मन.प्रयोग	१३-४४
मनःप्रवीणार	१-३३६
मनःपर्यय	१-१६४, ३५८, ३६०; १३-२१२
मनःपर्ययज्ञान	६-२८, ४८८, ४६२, ४६५; १३-२१२, ३२८
मनःपर्ययज्ञानावरणीय	६-२६; १३-२१३
मनःपर्ययज्ञानी	७-८४; ८-२६५
मनःपर्याप्ति	१-२५५
ममत्तातःआत्तपुद्गल	१६-५१५
मरण	४-४०६, ४७०, ४७१; १३-३३२, ३३३, ३४१
मस्कारी	१३-२८८
महाकर्मप्रकृतिप्राभृत	७-१, २; ८-६; १०-२०; १३-३६, १६६
महाकल्प	१-६८; ९-१६१
महातप	९-६१
महावन्ध	९-१०५
महापुण्डरीक	१-६८; ९-१६१
महामण्डलीक	१-५८

महामत्स्यक्षेत्र	४-३६
महामत्स्यक्षेत्रस्थान	४-६६
महामह	८-६२
महावाचकक्षमाश्रमण	१६-५७७
महाराज	१-५७
महाराष्ट्र	१३-२२२
महाव्यय	१३-५१
महाव्रत	५-२७७; ९-४१
महाव्रती	८-२५५, २५६
महाशुक्र	४-२३५
महास्कन्धस्थान	१४-४६५
महास्कन्धद्रव्यवर्गणा	१४-११७
महिमा	९-७५
महोरग	१३-३६१
मागध	१३-२२२
मागधप्रस्थ	४-३२०
मादा	१४-३०, ३२
मान १-३५०; ६-४१; १२-२८३;	
	१३-३४६
मानकषाय	१-३४६
मानकषायी	७-८२
मानदण्डक	८-२७५
मानस	१३-३३२, ३४०
मानसिक	१३-३४६, ३५०
मानसंज्वलन	१३-३६०
मानाद्धा	४-३६१
मानी	१-१२०
मानुष	१३-३६१
मानुषक्षेत्र	३-२५५, २५६;
	४-१७०
मानुषक्षेत्रव्यपदेशान्यथानुपत्ति	
	४-१७१
मानुषोत्तरपर्वत	४-१६३
मानुषोत्तरशैल	४-१५०, २१६;
	१३-३४३
मानोपशामनाद्धा	५-१६०
माया	१-३५०; ६-४१;
	१२-२८३
मायाकषाय	१-३४६

मायाकषायी	७-८३
मायागता	१-११३; ९-२१०
मायाद्धा	४-३६१
मायासंज्वलन	१३-३६०
मायी	१-१२०
मायोपशामनाद्धा	५-१६०
मारणान्तिककाल	४-४३
मारणान्तिकक्षेत्रायाम	४-६६
मारणान्तिकराशि	४-८५
मारणान्तिकसमुद्घात	४-२६
	१६६; ७-३००
मार्ग	१३-२८०; २८८
मार्गण	१-१३१
मार्गणा	७-७; १३-२४२;
	१६-५१०
मार्गणास्थान	८-८
मालव	१३-२२२
मालास्वप्न	९-७४
मास ४-३१७, ३६५; १३-२६८,	
	३००
मासपृथक्त्व	५-३२, ६३
मासपृथक्त्वान्तर	५-१७६
माहेन्द्र	४-२३५; १३-३१६
मिथ्याज्ञान	१२-२८६
मिथ्यात्व ४-३३६, ३५८, ४७७;	
	५-६; ६-३६; ७-८; ८-२,
	६, १६; ९-११७; १०-४३;
	१३-३५८; १४-१२
मिथ्यात्वादिकारण	४-२४
मिथ्यात्वादिप्रत्यय	७-२
मिथ्यादर्शन	१२-२८६
मिथ्यादर्शनवाक्	१-११७
मिथ्यादृष्टि १ १६२, २६२, २७४	
	६-४४६, ४५२, ४५४;
	७-१११; ८-४, ३८६;
	९-१८२
मिश्र	७-६
मिश्रक	१३-२२३, २२४
मिश्रग्रहणाद्धा	४-२२६, ३२८

मिश्रद्रव्यस्पर्शन	४-१४३
मिश्रनोर्कर्मद्रव्यबन्धक	७-४
मिश्रप्रक्रम	१५-१५
मिश्रमङ्गल	१-२८
मिश्रवेदना	१०-७
मीमांसक	६-४६०; ६-३२३
मीमांसा	१३-२४२
मुक्त	१६-३३८
मुक्तजीवसमवेत	१०-५
मुक्तमारणान्तिक	४-१७५,
	२३०; ७-३०७, ३१२
मुक्तमारणान्तिकराशि	४-७६,
	३०७, ३१२
मुख ४-१४६; १३-३७१, ३८३	
मुखप्रतराङ्गुल	४-४८
मुखविस्तार	४-१३
मुनिसुव्रत	१३-३७
मुहूर्त ३-६६; ४-३१७, ३६०;	
	१३-२६८, २६६
मुहूर्तपृथक्त्व	५-३२, ४५
मुहूर्तान्त	१३-३०६
मूर्तद्रव्यभाव	१२-२
मूल ४-१४६; १०-१५०	
मूलनिर्वर्तना	१६-४८६
मूलतंत्र	१३-६०
मूलप्रकृति	६-५
मूलप्रकृतिबन्ध	८-२
मूलप्रत्यय	८-२०
मूलप्रायश्चित्त	१३-६२
मूलाग्रसमास ४-३३; १०-१२३,	
	१३४, २४६
मृग	१३-३६१
मृत्तिका	१३-२०५
मृदुक	१३-५०
मृदुकनामकर्म	६-७५
मृदुनाम	१३-३७०
मृदुस्पर्श	१३-२४
मृदंगक्षेत्र	४-५१
मृदंगमुखरुंदप्रमाण	४-५१

मृदंगसंस्थान	४-२२
मृदंगाकार	४-११, १२
मृषावाद	१२-२७६
मेधा	१३-२४२
मेरु	४-१६३
मेरुतल	४-२०४
मेरुपर्वत	४-२१८
मेरुमूल	४-१०५
मेह	१४-३५
मैत्र	४-१८
मैथुन	१२-२८२
मैथुनसंज्ञा	१-४१५
मोक्ष ६-४६०; ९-६; १३-३४६, ३४८; १६-३३७, ३३८	
मोक्षत्रनुयोगद्वार	९-२३४
मोक्षकारण	७-६
मोक्षप्रत्यय	७-२४
मोषमनोयोग	१-२८०; २८१
मोह	१२-२८३; १४-११
मोहनीय	६-११; १३-२६, २०८, ३५७
मोहनीयकर्मप्रकृति	१३-२०६
मंग	१-३३
मंगल १-३२, ३३, ३४; ९-२, १०३	
मंगलदण्डक	९-१०६
मंडलीक	१-५७
मंथ	१०-३२१, ३२८
मंथसमुद्घाते	६-४१३
मंद	१३-५०
मंदरमूल	४-८३
य	
यक्ष	१३-३६१
यतिवृषभभट्टारक	१२-२३२
यथाख्यातसंयत	१-३७३; ८-३०६
यथाख्यातसंयम	१२-५१

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत	
	१-३७१; ७-२४
यथातथानुपूर्वी	१-७३; ९-१३५
यथानुपूर्व	१३-२८०
यथानुमार्ग	१३-२८०, २८६
यथाशक्तितप	८-७६, ८६
यथास्वरूप	१०-१७७, १८६, १६६, २३७, ४७६
यन्त्र	१३-५, ५४
यम	४-३१६
यव	१३-२०५
यवमध्य	१०-५६, २३६; १२-२३१; १४-५०, ४०२, ५००
यवमध्यजीव	१०-६२
यवमध्यप्रमाण	१०-८८
यशःकीर्ति	८-११
यशःकीर्तिनाम	१३-३६३, ३६६
यादृच्छिक प्रसंग	४-१८
युक्तानन्त	३-१८
युग ४-३१७; १३-२६८, ३००	
युग (राशि)	३-२४६
युग्म	१०-१६, २२
युति	१३-३४६, ३४८
योग १-१४०, २६६; ४-४७७; ५-२२६; ७-६, ८; ८-२, २०; १०-४३६, ४३७; १२-३६७	
योगकृष्टि	१०-३२३
योगद्वार	१३-२६०, २६१
योगनिरोध	४-३५६; १३-८४
योगप्रत्यय	८-२१
योगवर्गणा	१०-३४३, ४४६
योगपरावृत्ति	४-४०६
योगयवमध्य	१०-५७, ५६
	२४२; १६-४७३
योगस्थान	६-२०१; १०-७६, ४३६, ४४२
योगान्तरसंक्रान्ति	५-८६

योगावलम्बनाकरण	१०-२६२
योगावास	१०-५१
योगाविभागप्रतिच्छेद	१०-४४०
योगी	१-१२०
योग्य	४-३१६
योजन १३-३०६, ३१४, ३२५	
योजनवृथक्त्व १३-३३८; २३६	
योजनायोग(जुंजगा)	१०-४३३, ४३४
योनिप्राभृत	१३-३४६
र	
रज्जु	३-३३; ४-११, १३, १६५, १६७
रज्जुच्छेदनक	४-१५५
रज्जुप्रतर	४-१५०, १६४
रति ६-४७; ८-१०; १३-३६१	
रतिवाक्	१-११७
रत्नि	४-४५
रस ६-५५; ८-१०; ३-५७	
रसननिवृत्ति	१-२३५
रसनाम १३-३६३, ३६४, ३७०	
रसपरित्याग	१३-५७
रह	१४-३८
राक्षस	४-२३२; १३-३६१
राग	१२-२८३; १४-११
रागद्वेष	९-१३३
राजा	१-५७
राजु	७-३७२
रात्रिभोजन	१२-२८३
राशि	३-२४६
राशिविशेष	३-३४२
रिक्ता	४-३१६
रुचक	१३-३०७
रुचकपर्वत	४-१६३
रुधिरनामकर्म	६-७४
रुधिरवर्णनाम	१३-३७०
रुक्षनाम	१३-३७०
रुक्षनामकर्म	६-७५
रुक्षस्पर्श	१३-२४

रूप	४-२००
रूपगत	१३-३१६, ३२१, ३२३
रूपगतराशि	१०-१५१
रूपगता	१-११३; ९-२१०
रूपप्रक्षेप	४-१५०
रूपप्रवीचार	१-३३६
रूपसत्य	१-११७
रूपाधिकभागहार	१०-६६, ७०
रूपी	१४-३२
रूपीश्रीजीवद्रव्य	३-२
रूपोनभागहार	१०-६६, ७१; १२-१०२
रूपोनावलिका	४-४३
रोग	१३-३३२, ३३६, ३४१
रोहण	४-३१८
रोहिणी	९-६६
रौद्र	४-३१८
रुंद	४-१६

ल

लक्षण	७-६६; ९-७२, ७३
लघिमा	९-७५
लघुनाम	१३-३७०
लघुनामकर्म	६-७५
लघुस्पर्श	१३-२४
लतासमानअनुभाग	१२-११७
लब्धग्रहहार	३-४६
लब्धमत्स्य	११-१५, ५१
लब्ध्यक्षर	१३-२६२, २६३, २६५
लब्धविशेष	३-४६
लब्धान्तर	३-४७
लब्धि	१-२३६; ७-४३६; ८-८६
लब्धिसंपन्नमुनिवर	४-११७
लब्धिसंवेगसम्पन्नता	५-७६, ८६
लयनकर्म	९-२४६; १३-६, ४१, २०२; १४-५
लयसत्तम	४-३५३
लव	३-६५; ४-१५०, १६४; १३-२६८, २६९

लवणसमुद्र	४-१५०, १६४
लवणसमुद्रक्षेत्रफल	४-१६५, १६८
लाढ	१३-२२२ ३४१, ३८६
लाम	१३-३३२, ३३४, ३४१, ३८६
लाभान्तराय	६-७८; १३-३३६; १५-१४
लेपकर्म	१३-६, १०, ४१, २०२
लेप्यकर्म	९-२४६; १४-५
लेश्या	१-१४६, १५०, ३८६ २-४३१; ८-३५६; १६-४८४
लेश्याअनुयोगद्वार	९-२३४
लेश्याकर्म	१६-४६०
लेश्याकर्मअनुयोगद्वार	९-२३४
लेश्याद्धा	५-१५१
लेश्यान्तरसंक्रान्ति	५-१५३
लेश्यापरावृत्ति	४-३७०, ४७१
लेश्यापरिणाम	९-२३४
लोक	३-३३, १३२; ४-६, १०; ११-२; १३-२८८, ३४६, ३४७
लोकनाडी	१३-३१६
लोकनाली	४-२०, ८३, १४८, १६४, १७०, १६१
लोकप्रतर	३-१३३; ४-१०
लोकप्रदेशपरिणाम	३-३
लोकपाल	१३-२०२
लोकपूरण	७-५५; ९-२३६; १०-३२१; १३-८४
लोकपूरणसमुद्घात	४-२६, ४३६; ६-४१३
लोकप्रमाण	४-१४६, १४७
लोकविन्दुसार	१-१२२; ६-२५; ९-२२४
लोकमात्र	१३-३२२, ३२७
लोकाकाश	४-६
लोकायत	९-३२३

लोकालोकविभाग	४-१२
लोकोत्तरसमाचारकाल	११-७६
लोकोत्तरीयवाद	१३-२८०, २८८
लोम	१-३५०; ६-४१; १२-२८३, २८४
लोमकषायी	७-८३
लोमदण्डक	८-२७५
लोमसंज्वलन	१३-३६०
लोमाद्धा	४-३६१
लोमोपशामनाद्धा	५-१६०
लोहाग्नि	१३-५
लौकिकभावश्रुत	९-३२२
लौकिकवाद	१३-२८०, २८८
लौकिकसमाचारकाल	११-७६
लांगलिकगति	४-२६
लांगलिका	१-२००
लांतव	४-२३५; १३-३१६
लिंग	१३-२४५
व	
वक्तव्यता	९-१४०
ववता	१-११६
वचनबली	९-६८
वचनयोग	४-३६१; ७-७८; १०-४३७
वचःप्रयोग	१४-४४
वचस्	१-३०८
वनस्पतिकार्यिक	३-३५७; ७-७२ ८-१६२
वन्दना	१-६७; ८-८३, ८४, ६२; ९-१८८; १०-२८६
वराटक	१३-६ १०, ४१; १४-६
वज्र	१३-११५
वज्रनाराचसंहनन	८-१०
वज्रनाराचशरीरसंहनन	६-७३, १३-३६६
वज्रर्षभनाराचसंहनन	९-१०७
वज्रर्षभनाराचशरीरसंहनन	१३-३६६

वज्रवृषभनाराचसंहनन	८-१०
वज्रवृषभवज्रनाराचशरीरसंहनन	६-७३
वर्ग	४-२०, १४६; १०-१०३, १५०, ४५०, १२-६३
वर्गाण	४-२००
वर्गाणा	६-२०१, ३७०; ८-२; ९-१०५; १०-४४२, ४५०, ४५७; १२-६३; १४-५१
वर्गाणादेश	१४-१३६
वर्गाणाद्रव्यसमुदाहार	१४-४६; ५३-५४
वर्गाणानयविभाषणता	१४-५२
वर्गाणानिक्षेप	१४-५१
वर्गाणाप्ररूपणा	१४-४६
वर्गमूल	३-१३३, १३४; ४-२०२; ५-२६७; १०-१३१
वर्गशलाका	३-२१, ३३५
वर्गस्थान	३-१६
वर्गसंवर्गित	३-३३५
वर्गितसंवर्गितराशि	३-१६
वर्ण	६-५५; ८-१०; ९-२७३
वर्णनाम	१३-३६३, ३६४, ३७०
वर्तमान	१३-३३६, ३४२
वर्तमानप्रस्थ	३-२६
वर्तमान विशिष्टक्षेत्र	४-१४५
वर्धनकुमार	६-२४७
वर्धनकुमार मिथ्यात्वकाल	४-३२४
वर्धमान	९-११६, १२६, १३-२६२, २६३
वर्धमानमट्टारक	१२-२३१
वर्धितराशि	४-१५४
वर्वर	१३-२२२
वर्ष	४-३२०; १३-३०७
वर्षपृथक्त्व	४-३४८; ५-१८, ५३, ५५, २६४; १३-३०७
वर्षपृथक्त्वान्तर	५-१८
वर्षपृथक्त्ववायु	५-३६

वर्षसहस्र	४-४१८
वल्लरिच्छेद	१४-४३६
वशित्व	९-७६
वस्तु	१-१७४; ३-६; ६-२५; ९-१३४; १२-४८०;
वस्तुआवरणीय	१३-२६०
वस्तुश्रुतज्ञान	१३-२७०
वस्तुसमान	६-२५; १२-४८०
वस्तुसमाश्रुतज्ञान	१२-२७०
वस्तुसमासावरणीय	१३-२६०
वाइम	९-२७२
वाक्प्रयोग	९-२१७
वाग्गुति	१-११६; ९-२१६
वागुरा	१३-३४
वाग्योग	१-२७६, ३०८
वाचक	१४-२२
वाचना	९-२५२, २६२; १३-२०३; १४-८
वाचनोपगत	९-२६८; १३-२०३; १४-८
वाच्यवाचकशक्ति	४-२
वातवल्लय	४-५१
वादाल	३-२५५
वानव्यन्तर	८-१४६; १३-३१४
वामनशरीरसंस्थान	९-७२
वामनशरीरसंस्थाननाम	१३-३६८
वायु	४-३१६
वायुकायिक	१-२७३; ७-७१; ८-१६२
वारुण	४-३१८
वासुदेवत्व	६-४८६, ४६२, ४६५, ४६६
विकल्प	३-५२, ७४; ५-१८६ ७-२४७
विकल्पप्रक्षेप	१०-२३७, २४३ २५६
विकल्पप्रत्यक्ष	९-१४३

विकलादेश	९-१६५
विकृतिगोपुच्छा	१०-२४१, २५०
विकृतिस्वरूपगलित	१०-२४६
विक्रिया	१-२६१
विक्रियाप्राप्त	९-७५
विक्षेपणी	१-१०५; ९-२०२
विक्षोभ	४-३१६
विग्रह	४-६४, १७५; ५-१७३; ११-२०
विग्रहगति	१-२६६; ४-२६; ३-४३, ८०, ५-३००; ८-१६०
विग्रहगतिनामकर्म	४-४३४
विगूर्वणादिऋद्धिप्राप्त	४-१७०
विगूर्वमानएकेन्द्रियराशि	४-८२
विजय	४-३१८, २८६
विज्जू	१४-३५
विज्ञप्ति	१३-२४३
वितत	१३-२२१
वितर्क	१३-७७
विद्याधर	९-७७, ७८
विद्यानुवाद	१-१२१; ९-७१, २२३
विद्यावादी	९-१०८, ११३
विद्रावण	१३-४६
विदिशा	४-२२६
विदेह	४-४५
विदेहसंयंतराशि	४-४५
विधिनय	६-६१
विध्यातभागहार	१६-४४८
विध्यातसंक्रम	६-२३६, २८६; १६-४०६
विनय	८-८०; १३-६३
विनयसम्पन्नता	८-७६, ८०
विनाश	४-३३६; १५-१६
विन्यासक्रम	४-७६
विपक्षसत्त्व	१३-२४५
विपच्छिद्	१६-५०३
विपरिणामता	१५-२८३

विपरिणामोपक्रम	१५-२८२; १६-५५५
विपरीतमिथ्यात्व	८-२०
विपाक	१४-१०
विपाकविचय	१३-७२
विपाकविचयत्रयीवभावबन्ध	१४-२३
विपाकविचयत्रयीवभावबन्ध	१४-१०, ११
विपुलगिरि	१२-२३१
विपुलमति	६-२८; ९-६६
विपुलमतिमनःपर्ययज्ञाना- वरणीय	१३-३३८, ३४०
विभंगज्ञान	१-३५८; १३-२६१
विभंगज्ञानी	७-८४; ८-२७६; १४-२०
विमाता	१४-३०
विमान	४-१७०; १४-४६५
विमानतल	४-१६५
विमानप्रस्तर	१४-४६५
विमानशिखर	४-२२७
विमानेन्द्रिय	१४-४६५
विरच	१४-३५२
विरति	८-८२; १४-१२
विरलन	३-१६; ४-२०१; १०-६६, ८२
विरलित	३-४०, ४२; ७-२४७
विरह	४-३६०; ५-३
विलेपन	९-२७३
विविक्त	१३-५८
विविक्तशय्यासन	१३-५८
विविधभाजनविशेष	१३-२०४
विवेक	१३-६०
विलोमप्रदेशविन्यास	१०-४४
विशरीर	१४-२३७
विशिष्ट	१०-१६
विशुद्धता	११-३१४
विशुद्धि	६-१८०, २०४; ११-२०६

विशुद्धिस्थान	११-२०८, २०६
विशुद्धिलब्धि	६-२०४
विशेष	४ १४५; १३-२३४
विशेषमनुष्य	७-५२; १५-६३
विशेषविशेषमनुष्य	७-५२;
	१५-६३
विष	१३-१, ३४
विष्कम्भ	४-११, ४५, १४७
विष्कम्भचतुर्भोग	४-२०६
विष्कम्भवर्गगुणितरज्जु	४-८५
विष्कम्भवर्गदशगुणकरणी	४-२०६
विष्कम्भसूची	३-१३१, १३३, १३८; १०-६४
विष्कम्भसूचीगुणितश्रेणी	४-८०
विष्कम्भार्ध	४-१२
विष्टौर्पाधिप्रात	९-६७
विष्णु	१-११६
विषम	१४-३३
विषय	१३-२१६
विषयिन्	१३-२१६
विस्तार	४-१६५
विस्तारानन्त	३-१६
विस्तारासंख्यात	३-१२५
विस्त्रसापरिणतत्रयगाहना	१४-२५
विस्त्रसापरिणतगति	१४-२५
विस्त्रसापरिणतगन्ध	१४-२५
विस्त्रसापरिणतरस	१४-२५
विस्त्रसापरिणतवर्ण	१४-२५
विस्त्रसापरिणतस्कन्ध	१४-२६
विस्त्रसापरिणतस्कन्धदेश	१४-२६
विस्त्रसापरिणतशब्द	१४-२५
विस्त्रसापरिणतस्पर्श	१४-२५
विस्त्रसापरिणतसंस्थान	१४-२६
विस्त्रसायन्ध	१४-२६
विस्त्रसासुवचय	१४-४३०

विस्त्रसासुवचयप्ररूपणता	१४-२२४
विस्त्रसोपचय	४-२५; ९-१४, ६७; १०-४८; १३-३७१
विसंयोजन	४-३३६; १२-५०
विहायोगति	६-६१; ८-१०
विहायोगतिनाम	१३-३६३, ३६५
विहायोगतिनामकर्म	४-३२
विहारवत्स्थान	४-२६, ३२, १६६; ७-३००
वीचार	१३-७७
वीचारस्थान	६-१८५, १८७, १६७; ११-१११
वीचारस्थानत्व	६-१५०
वीतराग	९-११८
वीतरागलुब्धस्थ	१५-१८२
वीर्यप्रवाद	९-२१३
वीर्यान्तराय	६-७८; १३-३८६ १५-१४
वीर्यानुप्रवाद	१-११५
वृत्त	४-२०६
वृत्ति	१-१३७, १४८; १३-५७
वृत्तिपरिसंख्यान	१३-५७
वृद्धि	४-१६, २८
वृद्धि ( रूप )	३-४६, १८७; १३-३०६
वेत्रासन	४-११, २१
वेत्रासनसंस्थित	४-२०
वेद	१-११६, १४०, १४१; ७-७; १३-२८०
वेदक	१-३६८
वेदकसम्यक्त्व	१-३६५; ७-१०७ ८-२०; १०-२८८
वेदकसम्यग्दृष्टि	१-१७१; ७-१०८; ८-३६४
वेदना	८-२; ९-२३२; १०-१६, १७; ११-२; १२-३०२; १३-३६, २०३, २१२, २६८, २६०, २६३, ३१० ३२५, ३२७



वेदनाकृत्स्नप्राभृत	१-१२५	वैनयिकमिथ्यात्व	८-२०	व्यवहारपलय	१३-३००
वेदनाक्षेत्रविधान	११-२	वैनयिकी	९-८२	व्याख्यान	४-७६, ११४, १६५ ३४१
वेदनाखण्ड	९-१०४	वैयावृत्य	८-८८; १३-६३	व्याख्याप्रज्ञप्ति	१-१०१, ११०, ९-२२०, २०७
वेदनावेदना	१२-३०२	वैयावृत्ययोगयुक्तता	८-७६, ८८	व्याघात	४-४०६
वेदनासमुद्घात	४-२६, ७६, ८७, १८६; ७-२६६	वैरोचन	४-३१८; १३-११५	व्यापक	४-८
	११-१८	वैशेषिक	६-४६०; ९-३२३	व्यास	४-२२१
वेदनीय	६-१०; ८-११; १३-२६ २०८, ३५६	वैश्वदेव	४-३१८	व्युत्सर्ग	८-८३, ८५; १३-६१
वेदनीयकर्मप्रकृति	१३-२०६	वंग	१३-३३५	व्रज	१३-३३६
वेदान्तरसंक्रान्ति	४-३६६, ३७३	व्यञ्जन	९-७२, ७३; १३-२४७; १६-५१२	व्रत	८-८३
वेदित-अवेदित	१३-५३	व्यञ्जननय	१-८६		
वेदिम	९-२७२, २७३	व्यञ्जनपर्याय	४-३३७; ३-१७८; ९-१७२, २४३; १०-११ १५	श	
वेध	४-२०	व्यञ्जनपरिणाम	६-४६०	शककाल	९-१३२
वेलन्धर	४-२३२	व्यञ्जनावग्रह	१-३५५; ६-१६; ९-१५६; १३-२२०	शकट	१४-३८
वैक्रियिक	१-२६१	व्यञ्जनावग्रहावरणीय	१३-२२१	शक्तिस्थिति	१०-१०६, ११०
वैक्रियिककाययोग	१-२६१	व्यतिकर	९-२४०	शक्र	१३-१३१६
वैक्रियिककाययोगी	८-२१५, २२२	व्यतिरेक	७-१५; १२-६८	शत	४-२३५
वैक्रियिकमिश्रकाययोग	१-२६१, २६२	व्यतिरेकनय	६-६२	शतपृथक्त्व	७-१५७
वैक्रियिकशरीर	६-६६	व्यतिरेकपर्यायार्थिकनय	६-६१	शतसहस्र	४-२३५
वैक्रियिकशरीरआङ्गोपाङ्ग	६-७३; ८-६; १३-३६६	व्यतिरेकमुख	६-६५	शतार	४-२३६
		व्यधिकरण	१२-३१३	शब्दनय	१-८७; ७-२६; ९-१७६, १८१; १३-६; ७, ४०, २००
वैक्रियिकशरीरनाम	१३-३६७	व्यन्तरकुमारवर्ग	१३-३१४	शब्दप्रवीचार	१-२३६
वैक्रियिकशरीरबन्धन	६-७०	व्यन्तरदेव	४-१६१	शब्दलिङ्गज	१३-२४५
वैक्रियिकशरीरबन्धननाम	१३-३६७	व्यन्तरदेवराशि	४-१६१	शरीर	१४-४३४, ४३५
वैक्रियिकशरीरबन्धस्पर्श	१३-३०	व्यन्तरदेवसासादनसम्यग्दृष्टि-		शरीरआङ्गोपाङ्ग	६-५४; १३-३६३, ३६४
वैक्रियिकशरीरसंघात	६-७०	स्वस्थानक्षेत्र	४-१६१	शरीरनाम	१३-३६३, ३६७
वैक्रियिकशरीरसंघातनाम	१३-३६७	व्यन्तरावास	४-१६१, २३१	शरीरनामकर्म	६-५२
		व्यभिचार	४-४६, ३२०; ५-१८८, २०८; ६-४६३, ४६५; ८-३०८; ९-१०७; १०-५१०; १२-२१; १३-७	शरीरनिवृत्तिस्थान	१४-५१६
वैक्रियिकशरीराङ्गोपाङ्ग	८-६	व्यवस्थापद	१०-१८; १२-३	शरीरपर्याप्ति	१-२५१; ७-३४; १४-५२७
वैक्रियिकषट्क	१५-२७६	व्यवसाय	१३-२४३	शरीरबन्ध	१४-३७, ४१, ४४
वैक्रियिकसमुद्घात	४-२६, १६६; ७-२६६	व्यवहार	१-८४; ७-२६; १३-४, ३६, १६६	शरीरबन्धन	६-५३
वैजयन्त	४-३१६, ३८६	व्यवहारकाल	४-३१७	शरीरबन्धनगुणछेदना	१४-४३६
वैदिकभावंश्रुतग्रन्थ	९-३२२	व्यवहारनय	७-१३, ६७; ९-१७१	शरीरबन्धननाम	१३-३६३, ३६४
वैनयिक	९-१८६			शरीरविसोपचयप्ररूपणा	१४-२२४
वैनयिकदृष्टि	९-२०६				

शरीरसंघात	६-५३	शून्य	१४-१३६	षट्खण्ड	९-१३३
शरीरसंघातनाम	१३-३६३, ३६४	शैलकर्म	९-२४६; १३-६, १०, ४१, २०२; १४-५	षट्षष्टिपद्	१५-२८२
शरीरसंस्थान	६-५३	शैलेश्य	६-४१७; ९-३४५; १०-३२६; १६-४७६. ५२१	षट्स्थान	६-२००; १२-१२०, १२१; १४-४३४
शरीरसंस्थाननाम	१३-३६३, ३६४	शोक	६-४७; ८-१०; १३-३६१	षट्स्थानपतितत्व	१६-४६३
शरीरसंहनननाम	१३-३६३, ३६४	शंख	१३-२६७	षड्वृद्धि	६-२२, १६६
शरीरी १-१२०; १४-४५, २२४		शंखक्षेत्र	४-३५	षडंश	४-१७८
शरीरीशरीरप्ररूपणा	१४-२२४	श्यामा	१४-५०३	षणमास	५-२१
शलाका ३-३१; ४-४३५, ४८४; ६-१५२		श्यामामध्य	१४-५०३	षण्योक्तषायोपशामनाद्वा	५-१६०
शलाकाराशि	३-३३५, ३३६	श्लक्ष्ण	१३-५०२	षष्ठवृद्धि	४-१६०
शलाकासंकलना	४-२००	श्वेत	४-३१८	पष्ठोपवास	९-१२४
शशिपरिवार	४-१५२	श्रद्धान	१३-६३		स
शाटिका ( साडिया )	१४-४१	श्रीवत्स	१३-२६७	सकल	१३-३४५
शालभक्षिका	४-१६५	श्रुत	९-३२२; १६-२८५	सकलजिन	९-१०
शाश्वतानन्त	३-१५	श्रुतग्रजानी	७-८४; ८-२७६ १४-२०	सकलप्रक्षेप	१०-२५६
शाश्वतासंख्यात	३-१२४	श्रुतकेवली	८-५७; ९-१३०	सकलप्रक्षेपभागहार	१०-२५५
शिविका	१४-३६	श्रुतज्ञान	१-६३, ३५७, ३५८, ३५९; ६-१८, ४८४, ४८६; ९-१६०; १३-२१०, २४५	सकलप्रत्यक्ष	९-१४२
शीत	६-७५	श्रुतज्ञानावरणीय	६-२१, २५; १३-२०६, २४५	सकलश्रुतज्ञान	१२-२६७
शीतिनाम	१३-३७०	श्रुतज्ञानी	७-८४; ८-२८६	सकलश्रुतधारक	९-१३०
शीतस्पर्श	१३-२४	श्रेणिचारण	९-८०	सकलादेश	९-१६५
शील	८-८२	श्रेणिभागहार	१०-६६	सच्चित्तकाल	११-७६
शीलव्रतेषु निरतिचारता	८-७६, ८२	श्रेणी	३-३३, १४२; ४-७६, ८० ५-१६६; १३-३७१, ३७५, ३७७	सच्चित्तगुणयोग	१०-४३३
शुक	४-२६५; १३-३१६	श्रेणीविद्ध	४-१७४, २३४	सच्चित्तद्रव्यस्पर्शन	४-१४३
शुक्ल	६-७४; १३-५०	श्रोत्र	१-२४७	सच्चित्तद्रव्यभाव	१२-२
शुक्लत्व	१३-७७	श्रोत्रेन्द्रिय	४-३६१; ७-६६ १३-२२१	सच्चित्तद्रव्यवेदना	१०-७
शुक्लध्यान	१३-७५, ७७	श्रोत्रेन्द्रियअर्थविग्रह	१३-२२७	सच्चित्तनोक्तर्मद्रव्यबन्धक	७-४
शुक्ललेश्या	१-३६०; ७-१०४; ८-३४६; १६-४८४, ४८८, ४६२	श्रोत्रेन्द्रियईहा	१३-२३१	सच्चित्तप्रक्रम	१५-१५
शुक्लवर्णनाम	१३-३७०		प	सच्चित्तमंगल	१-२८
शुद्ध	१३-२८०, २८६	षट्कापक्रमनियम	४-२१८, २२६	सच्चित्तान्तर	५-३
शुद्धऋजुसत्र	९-२४४			सत्	१३-६१
शुद्धनय	७-६७			सत्कर्म	१३-३५८
शुभ	६-६४; ८-१०			सत्कर्ममार्गणा	१६-५१६
शुभनाम	१३-३६२, ३६५			सत्कर्मस्थान	१२-२२०, २२५, २३१; १६-४०८
शुभप्रकृति	१५-१७६			सत्कर्मिक	१५-२७७
				सत्ता	१-१२०; १३-१६
				सत्प्ररूपणा	१३-६१

सत्यप्रवाद	१-११६; ९-२१६
सत्यभामा	१३-२६१
सत्यमनः	१-२८१
सत्यमनोयोग	१-२८०, २८१
सत्यमोषमनोयोग	१-२८०, २८१
सत्त्व	४-१४४; ६-२०१; ७-८२
सत्त्वप्रकृति	१२-४६५
सत्त्वस्थान	१२-२१६
सदनुयोग	१-१५८
सदुपशम	५-२०७; ७-६१
सदेवासुरमानुष	१३-३४६
सद्भावक्रियानिष्पन्न	१३-४३
सद्भावस्थानबन्ध	१४-५, ६
सद्भावस्थापना	१-२०; १३-१०, ४२; ४-३१४; १४-५
सद्भावस्थापनाकाल	४-३१४
सद्भावस्थानान्तर	५-२
सद्भावस्थापनाभाव	५-१८३
सद्भावस्थापनावेदना	१०-७
सनरकुमार	१३-३१६
सन्निकर्ष	१३-२८४
सन्निपातफल	१३-२५४
सपक्षसत्त्व	१३-२४५
सप्तभङ्गी	९-२१६
सप्तम-पृथिवी	४-६०
सप्तम पृथिवीनारक	४-१६३
सप्तविधपरिवर्तन	६-३
सप्रतिपक्ष	१३-२६२, २६५
सम	१४-३३
समकरण	३-१०७; १०-७७, १३५
समचतुरस्र	४-८३
समचतुरस्रसंस्थान	६-७१ ९-१०७
समचतुरशरीरसंस्थाननाम	१३-३६८
समता	८-८३, ८४
समपरिमण्डलसंस्थित	४-१७२
समभागहार	१०-२१४; ११-१२७

समभिरूढ	१-८६; ७-२६
समभिरूढनय	९-१७६
समय	४-३१७, ३१८; १३-२६८
समयकाल	१३-३२२
समयप्रवद्ध	६-१४६, १४८, २५६; १०-१६४, २०१
सनयप्रवद्धार्थता	१२-४७८
समयसत्य	१-११८
समयोग	१०-४५१
समवदानकर्म	१३-३८, ४५
समवशरण	९-११३, १२८
समवाय	१-१०१; १५-२४
समवायद्रव्य	१-१८
समवायाङ्ग	९-१६६
समाचारकाल	११-७६
समाधि	८-८८
समानजातीय	४-१३३
समानवृद्धि	९-३४
समास	३-६; १३-२६०, २६२
समास ( जोड़ )	३-२०३
समीकरण	४-१७८; १०-७७
समीकृत	४-५१
समुच्छिन्नक्रियानिवृत्ति	१६-५२१
समुच्छिन्नक्रियानिवृत्तिध्यान	१०-३२६
समुच्छिन्नक्रियानिवृत्तिशुद्धि	ध्यान ६-४१७
समुच्छिन्नक्रियाप्रतिपाति	१३-८७ १६-५७६
समुदाहार	११-३०८
समुद्घात	४-२६
समुद्घातकेवलिजीवप्रदेश	४-४५
समुद्र	१३-३०८
समुद्राभ्यन्तरप्रथमपंक्ति	४-१५१
समोद्दियार	१३-३४
सम्पूर्ण	१३-३४५
सम्प्रदायविरोधाशंका	४-१५८
सम्बन्ध	८-१, २
सम्भवयोग	१०-४३३, ४३४

सम्पूर्णिक्रम	५-४१; ६-४२८
सम्यक्त्व	१-५१, ३६५; ४-३५८ ५-६; ६-३६, ४८४, ४८६, ४८८; ७-७; ९-६, ११७ १३-३५८
सम्यक्त्वकाण्डक	१०-२६६, २६४
सम्यक्त्वलब्धि	१४-२१
सम्यग्दर्शन	१-१५१; ७-७; १५-१२
सम्यग्दर्शनवाक्	१-११७
सम्यग्दृष्टि	६-४५१; ७-१०७; ८-३६३; ९-६, १८२; १३-२८०, २८७
सम्यग्मिथ्यात्व	४-३५८; ५-७; ६-३६, ४८५, ४८६
सम्यग्मिथ्यात्वलब्धि	१४-२१
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१-१६६; ४-३५८; ६-४५०, ४६३, ४६७; ७-११०; ८-४, ३८३
सयोग	१-१६१, १६२
सयोगकेवली	१-१६१; ७-१४; ८-४
सयोगिकाल	४ ३५७
सयोगिकेवलिन	१३-४४, ४७
सयोगी	४-३३६
सरागसंयम	१२-५१
सराव	१३-२०४
सर्व	१३-३१६
सर्वकरणोपशामना	१५-२७५
सर्वघातक	७-६६
सर्वघाति	५-१६६; २०२ १२-५३; १५-१७१, ३२४
सर्वघातित्व	५-१५८
सर्वघातिसद्भक्ति	५-१६६, २३७; ७-६१, ११०
सर्वजीव	१३-३४६, ३५१
सर्वज्ञ	९-११३
सर्वतोभद्र	८-६२
सर्वदुःखअन्तकृतभाव	१४-१८

सर्वपरस्थान ३-११४, २०८  
 सर्वपरस्थानाल्पवहुत्व ५-२८६  
 सर्वभाव १३-३४६  
 सर्वमोक्ष १६-३३७  
 सर्वलोक १३-३४६  
 सर्वलोकप्रमाण ४-४२  
 सर्वविपरिणामना १५-२८३  
 सर्वविशुद्ध ६-२१४  
 सर्वविशुद्धमिथ्यादृष्टि ६-३७  
 सर्वसिद्ध ९-१०२  
 सर्वसंक्रम ६-१३०, २४६;  
 १६-४०६  
 सर्वस्पर्श १३-३, ५, ७, २१  
 सर्वह्रस्वरिथिति ६-२५६  
 सर्वाकाश ४-१८  
 सर्वाद्धा ४-३६३  
 सर्वानन्त ३-१६  
 सर्वार्थसिद्धि ४-२४०, ३८७;  
 ९-३६  
 सर्वार्थसिद्धिविमान ४-८१  
 सर्वावधि ६-२५; ९-१४, ४७;  
 १३-२६२  
 सर्वावधिजिन ९-१०२  
 सर्वावयव १३-७  
 सर्वावरण ७-६३  
 सर्वासंख्यात ३-१२५  
 सर्वोपशम ६-२४१  
 सर्वौषधिप्राप्त ९-६७  
 सहकारिकारण ७-६६  
 सहस्र ४-२३६; १३-३१६  
 सहान्वस्थान १२-३००;  
 १३-२१३, ३४५  
 सहान्वस्थानलक्षणविरोध  
 ४-२५६, ४१२; ७-४३६  
 साकारउपयोग १३-२०७  
 साकारोपयुक्त ६-२०७  
 साकारक्षय १५-२३८, २६४  
 सागर ३-१३२; ४-१०, १८५

सागरोपम ४-१०, १८३, ३१७,  
 ३६०, ३८०, ३८७; ५-६;  
 १३-२६८, ३०१  
 सागरोपमपृथक्त्व ५-१०  
 सागरोपमशतपृथक्त्व ४-४००,  
 ४४१, ४८५; ५-७२  
 सात १३-३५७  
 सातबन्धक ११-३१२  
 साताद्धा १०-२४३  
 साताभ्यधिक १३-५१  
 सातावेदनीय १३-३५६, ३५७  
 सातासात ९-२३५  
 सातासातबन्धपरानृत्ति ५-१३०,  
 १४२  
 सादिक ८-८  
 सादिविस्तृतबन्ध १४-३४  
 सादिशरीरबन्ध १४-४५  
 सादिसान्तनामकर्म १६-४०४  
 सादृश्यसामान्य ४-३; १०-१०;  
 ११; १३-१६६  
 साधन ४-३६६  
 साधारण ८-६  
 साधारणजीव १४-२२७, ४८७  
 साधारणनाम १३-३६३, ३६५  
 साधारणभाव ५-१६६  
 साधारणलक्षण १४-२२६  
 साधारणशरीर १-२६६; ३-३३३;  
 ६-६३; १३-३८७; १४-२२५  
 साधिकमास १३-३०६  
 साधु १-५१; ८-८७, ३६४  
 साधुसमाधि ८-७६, ८८  
 साध्य ४-३६६  
 सान १३-२४२  
 सानत्कुमार ४-२३५  
 सान्तर ५-२५७; ८-७  
 सान्तरक्षेत्र १३-७  
 सान्तरनिरन्तर ८-८  
 सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गाणां १४-६४  
 सान्तरबन्धप्रकृति ८-१७  
 सान्तरवक्रमणकाल १४-४४७

सान्तरवक्रमणकालविशेष  
 १४-४७७  
 सान्तरसमयोपक्रमणकाल  
 १४-४७४  
 सान्तरसमयोपक्रमणकालविशेष  
 १४-४७५  
 सान्तरवक्रमणजन्यकाल  
 १४-४७६  
 सान्तरवक्रमणवार ४-३४०  
 सान्निपातिकभाव ५-१६३  
 सामान्य १३-१६६, २३४  
 सामान्य मनुष्य ७-५२; १५-६३  
 सामायिक १-६६; ९-१८८  
 सामायिकछेदोपस्थापन-  
 शुद्धिसंयत ८-२६८  
 सामायिकछेदोपस्थापना-  
 शुद्धिसंयत ७-६१  
 सामायिकभावश्रुत  
 सामायिकशुद्धिसंयत १-३७३  
 सामायिकशुद्धिसंयम १-३६६  
 ३७०  
 साम्परायिक ४-३६१  
 साम्परायिकबन्धन ७-५  
 सारभट ४-३१८  
 सावित्र ४-३१६  
 सासादन १-३६३  
 सासादनगुण ५-७; ६-४८५  
 सासादनकाल ४-३५१  
 सासादनपश्चादागत-  
 मिथ्यादृष्टि ५-१०  
 सासादनमारणान्तिक-  
 क्षेत्रायाम ४-१६२  
 सासादनसम्यक्त्व ६-४८७  
 सासादनसम्यक्त्वपृष्ठायत  
 ४-३२५  
 सासादनसम्यग्दृष्टि १-१६६;  
 ६-४४६, ४५८, ४५९,  
 ४६६, ४७१; ७-१०६;  
 ८-४, ३८०

सासंयमसम्यक्त्व	५-१६
सांख्य	६-४६०; ९-३२३
सांशयिकमिथ्यात्व	८-२०
सिद्ध	१-४६; ४-३३६, ४७७; ९-१०२, १४-१३
सिद्धगति	७-६
सिद्धभाव	१४-१७
सिद्धसेन	४-३१६
सिद्धय मत्स्य	११-५२; १२-३६०
सिद्धयत्वकाल	५-१०४
सिद्धयमानभव्य	७-१७३
सिद्धायतन	९-१०२
सिद्धार्थ	४-३१६
सिद्धिगति	१-२०३
सिद्धिविनिश्चय	१३-३५६
सिंहल	१३-२२२
सुख	६-३५; १३-२०८, ३३२, ३३४, ३४१, १४-३२८ १५-६
सुखदुःखपञ्चक	१५-१६४
सुगन्धर्व	४-३१६
सुचक्रधर	१-५८
सूच्यंगुल	३-१३२, १३५; ४-१० २०३, २१२; ९-२१
सुनयवाक्य	९-१८३
सुपर्ण	१३-३६१
सुभग	६-६५; ८-११
सुभगनाम	१३-३६३, ३६६
सुभिक्ष	१३-३३२, ३३६
सुर	१३-३६१
सुरभिगन्ध	६-७५
सुरभिगन्धनाम	१३-३७०
सुप्रमसुधमा	९-११६
सुषिर	१३-२२१
सुस्वर	६-६५; ८-१०
सुस्वरनाम	१३-३६३, ३६६
सूक्त	१-२५०, २६७; ३-३३१ ६-६२; ८-६

सूक्तमंत्रियाप्रतिपाति	३-८३;
	१६-५२१, ५७६
सूक्तमंत्रियाप्रतिपातिध्यान	६-४१६; १०-३२५
सूक्तमकर्म	१-२५३
सूक्तमत्व	१०-४३
सूक्तमनाम	१३-३६३, ३६५
सूक्तमनिगोदजीव	१३-३०१
सूक्तमनिगोदवर्गणा	१४-११३
सूक्तमप्ररूपणा	१२-१७४
सूक्तमसाम्पराय	१-३७३
सूक्तमसाम्परायकृष्टि	६-३६६
सूक्तमसाम्परायकादिक	७-५
सूक्तमसाम्परायसंयत	८-३०८
सूक्तमसाम्परायशुद्धिसंयत	१-१८६ ३७१; ७-६४
सूक्तमसाम्परायिक	७-५; ८-४
सूक्तमाद्वा	५-११६
सूचीक्षेत्रफल	४-१६
सूत्र	१-११०; ८-५७; ९-२०७, २५६; १४-८
सूत्रकृत	१-६६
सूत्रकृतांग	९-१६७
सूत्रकंठग्रन्थ	१३-२८६
सूत्रपुस्तक	१३-३८२
सूत्रसम	९-२५६, २६१, २६८; १३-२०३; १४-८
सूरसेन	१३-३३५
सूर्यक्षेत्र	४-१३
सूर्य	४-१५०, ३१६
सूर्यप्रज्ञप्ति	१-११०; ९-२०६
सेचिकस्वरूप	५-२६७
सेचीयादो उदय	१५-२८८
सेन	१३-२६१
सोपक्रमायु	९-८६
सोपक्रमायुष्क	१०-२३३, २३८
सोम	१३-११५, १४१
सोमरुचि	१३-११५, १४१

सौद्धोदञ्ज	१३-२८८
सौधर्म	४-२३५
सौधर्मइन्द्र	९-११३, १२६
सौधर्मविमान	४-२२६, २३५
सौधर्मादि	४-१६२
संयम	१६-४६५
संक्रमण	५-१७१; ६-१६८
संक्रममार्गणा	१६-५१६
संक्रमस्थान	१२-२३१; १६-४०८
संकर	९-२४०
संकरअनुयोगद्वार	९-२३४
संकलन	४-१४४, १६६; १०-१२३
संकलनसूत्र	३-६१, ६३
संकलनसंकलना	१०-२००
संकलना	४-१५६; १३-२५६
संकुट	१-१२०
संक्लेश	६-१८०; ११-२०६, ३०६
संक्लेशक्षय	१६-३७०
संक्लेशस्थान	११-२०८
संक्लेशावास	१०-५१
संख्या	३-७
संख्यात	३-२६७; १३-३०४, ३०८
संख्यातगुणवृद्धि	११-३५१
संख्यातभागवृद्धि	११-३५१
संख्यातयोजन	१३-३१४
संख्यातवर्षायुष्क	८-११६; १०-२३७
संख्यातीतसहस्र	१३-३१५
संख्येयगुणवृद्धि	६६-२२, १६६
संख्येयभागवृद्धि	६-२२, १६६
संख्येयवराशि	४-३३८
संख्येयवर्षायुष्क	११-८६
संग्रह	१-८४
संग्रहकृष्टि	६-३७५
संग्रहनय	६-६६, १०१, १०४; ९-१७०; १३-४, ५, ३६, १६६
संघवैयावृत्य	१३-६३

संघात	६-२३; १२-४८०; १३-२६०; १४-१२१
संघातज्ञ	१४-१३४
संघातनकृति	६-३२६
संघातनपरिशातन	६-३२७
संघातसमास	६-२३; १२-४८०
संघातसमासश्रुताज्ञान	१३-२६६
संघातसमासावरणीय	१३-२६१
संघातावरणीय	१३-२६१
संघातिम	९-२७२, २७३
संचय	५-२४४-२७३
संचयकाल	५-२७७
संचयकालप्रतिभाग	५-२८४
संचयकालमाहात्म्य	५-२५३
संचयराशि	५-३०७
संचयानुगम	१०-१११
संचलन	६-४४; ८-१०; १३-३६०
संज्ञ	१-१५२
संज्ञा	१३-२४४, ३३२, ३३३, ३४१
संची	१-१५२; २५६; ७-७, १११; ८-३८६
संदन	१४-३६, ३८
संदिष्टि	३-८७, १६७
संनिकर्ष	१२-३७५
संनिवेश	१३-३३६
संपातपक्ष	१३-२५४
संप्राप्तिः उदय	१५-२८६
संबंध	१४-२७
संभव	१४-६७
संभिन्नश्रोता	५-५६, ६१, ६२
संयत	७-६१; ८-२६८
संयतराशि	४-४६
संयतासंयत	१-१७३; ७-६४; ८-४, ३१०
संयतासंयतउत्सेध	४-१६६
संयतासंयतगुणश्रेणि	१५-२६७
संयतासंयतस्वस्थानक्षेत्र	४-१६६

संयम	१-१४४, १७६, ३७४; ४-३४३; ५-६; ६-४८८, ४६२, ४६५; ७-७, १४, ६१; ६-११७; १४-१२
संयमकांडक	१०-२६४
संयमगुणश्रेणि	१०-२७८
संयमभवग्रहण	१५-३०५
संयमासंयम	४-३४३, ३५०; ५-६; ६-४८५, ४८६, ४८८
संयमासंयमकांडक	१०-२६४
संयोग	४-१४४; ६-१३७; १३-२५०; १४-२७; १५-२४
संयोगद्रव्य	१-१८
संयोगाक्षर	१३-२५४, २५६
संयोजनासत्य	१-११८
संयत्सर	४-३१७, ३६५; १३-२६८, ३००
संयत्सर	७-६; १३-२५२
संयत्सर्ग	४-१७; १०-१५३, १५५
संयत्सहा	१३-३३६
संयत्संग	७-७; ८-८६
संयत्सनी	१-१०५; ६-२०२
संयत्सत्य	१-११८
संयत्सपवन्ध	१४-३७, ४१
संयत्ससार	१३-४४
संयत्ससारस्थ	१३-४४
संयत्स्थान	८-१०
संयत्स्थानश्रद्धा	१३-२६५
संयत्स्थाननामकर्म	४-१७६
संयत्स्थानविचय	१३-७२
संयत्स्थानविपाकी	४-१७६
संयत्सहनन	६-५४
संयत्सकन्ध	१३-११; १४-८६
संयत्सतव	८-८३, ८४; ६-२६३, १३-२०३; १४-६
संयत्सस्त्युक्तसंक्रम	१३-५३
संयत्सस्त्युक्तसंक्रमण	५-२१०; ६-३११ ३१२, ३१६; १०-३८६
संयत्सस्त्युति	६-२६३; १३-२०३;

स्वूपतल	४-१६२
स्तोक	३-६५
स्त्यानष्टि	६-३१, ३२; ८-६; १३-३५४
स्त्री	१-३४०; ६-४६
स्त्रीवेद	१-३४०, ३४१; ६-४७; ७-७६; ८-१०; १३-३६१
स्त्रीवेदभाव	११-११
स्त्रीवेदस्थिति	५-६६, ६८
स्त्रीवेदोपशामनाद्धा	५-१६०
स्थलगतता	१-११३; ९-२०६
स्थलचर	११-६०, ११५; १३-३६१
स्थान	५-१-६; ९-२१७; १०-४३४; १२-१११; १३-३३६
स्थानांग	१-१००; ९-१६८
स्थानान्तर	१२-११४
स्थापनबंध	१४-४
स्थापनवर्गणा	१४-५२
स्थापना	४-३, ३१४; ७-३; १३-२०१; १४-४३५
स्थापनाउपक्रम	१५-४१
स्थापनाउपशामना	१५-२७५
स्थापनाकर्म	१३-४१, २०१, २४३
स्थापनाकाल	४-३१३
स्थापनाकृति	९-२४८
स्थापनाक्षर	१३-२६५
स्थापनाक्षेत्र	४-३
स्थापनाजिन	९-६
स्थापनानन्त	३-११
स्थापनानारक	७-२६
स्थापनानिवन्धन	१५-२
स्थापनाप्रकृति	१३-२०१
स्थापनाप्रक्रम	१५-१५
स्थापनावन्ध	१४-६
स्थापनावन्धक	७-३

स्थापनाभात्र	५-१८३; १२-१
स्थापनामोक्ष	१६-३३७
स्थापनामङ्गल	१-१६
स्थापनालेख्या	१६-४८४
स्थापनाल्पवहुत्व	५-२४१
स्थापनावेदना	१०-७
स्थापनाशब्द	१४-६
स्थापनासत्य	१-११८
स्थापनासंक्रम	१६-३३६
स्थापनासंख्यात	३-१२३
स्थापनास्पर्श	१३-८
स्थापनास्पर्शन	४-१४१
स्थावर	६-६१; ८-६
स्थावरस्थिति	५-८५
स्थिति	९-२५२, २६८; १३-२०३ १४-७
स्थितश्रुतज्ञान	१४-६
स्थित	४-३३६; ६-१४६; १३-३४६, ३५८
स्थितिकाण्डक	६-२२२, २२४; १३-८०
स्थितिकाण्डकघात	६-२०६; १०-२६२, ३१८
स्थितिकाण्डकचरमफालि	६-२२८, २२६
स्थितिक्षयननितउदय	१५-२८६
स्थितिघात	६-२३०, २३४
स्थितिदीर्घ	१६-५०८
स्थितिवंध	६-१६६, २८०; ८-२
स्थितिवंधस्थान	६-१६६; ११-१४२ १६२, २०५, २२५
स्थितिवन्धाध्यवसायस्थान	६-११६
स्थितिवन्धाध्यवसान	११-३१०; १६-५७७
स्थितिवन्धापसरण	६-२३०; २३४
स्थितिमोक्ष	१६-३३७; ३३८
स्थितिविपरिणामना	१५-२८३

स्थितिसत्कर्म	१६-५२८
स्थितिसंक्रम	६-२५६, २५८; १६-३४७
स्थितिहस्त	१६-५१०
स्थिर	६-६३, ८-१०, १३-२३६
स्थिरनाम	१३-२६३, २६५
स्थूलप्ररूपणा	१२-१७४
स्निग्धनाम	१३-३७०
स्निग्धनामकर्म	९-७५
स्निग्धस्पर्श	१३-२४
स्पर्दक	७-६१, १०-४८२, १२-६५
स्पर्दकान्तर	१२-११८
स्पर्श	६-५५, ८-१०, १३-१, ४, ५, ७, ८, ३५
स्पर्शानुयोगद्वार	९-२३३, १३-२
स्पर्शान्तरविधान	१३-२
स्पर्शाल्पवहुत्व	१३-२
स्पर्शकालविधान	१३-२
स्पर्शक्षेत्रविधान	१३-२
स्पर्शगतिविधान	१३-२
स्पर्शद्रव्यविधान	१३-२
स्पर्शन	१-२३७
स्पर्शनयविभाषणता	१३-२, ३
स्पर्शानुगम	१३-१००
स्पर्शनाम	१३-३६३, ३६४, ३७०
स्पर्शनामविधान	१३-२
स्पर्शनिक्षेप	१३-२
स्पर्शनेन्द्रिय	४-३६१
स्पर्शनेन्द्रियअर्थ्याग्रह	१३-२२८
स्पर्शनेन्द्रियईहा	१३-२३१, २३२
स्पर्शनेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह	१३-२२५
स्पर्शपरिणामविधान	१३-२
स्पर्शप्रत्ययविधान	१३-२
स्पर्शप्रवीचार	१-३३८
स्पर्शभागाभागविधान	१३-२

स्पर्शभावविधान	१३-२
स्पर्शसन्निकर्षविधान	१३-२
स्पर्शस्पर्श	१३-३, ६, ८, २४
स्पर्शस्पर्शविधान	१३-२
स्पर्शस्वामित्वविधान	१३-२
स्पर्शानुगम	१-१५८; ४-१४४
स्पर्शानुयोग	१३-१, १६
सृष्ट्यसृष्ट	१३-५२
स्फटिक	१३-३१५
स्मृति	९-१४२; १३-२४४, ३३२, ३३३, ३४१
स्याद्वाद	९-१६७
स्वकर्म	१३-३१६
स्वकप्रत्यय	४-२३४
स्वक्षेत्र	१३-३१६
स्वप्न	९-७२, ७४
स्वप्रत्यय	८-८
स्वयंप्रभववर्त	४-२२१
स्वयंप्रभववर्तपरभाग	४-२१४
स्वयंप्रभववर्तपरभागक्षेत्र	४-१६८
स्वयंप्रभववर्तपरिमभाग	४-२०६
स्वयंभू	१-१२०
स्वयंभूरमणक्षेत्रफल	४-१६८
स्वयंभूरमणसमुद्र	४-१५१, १६४
स्वयंभूरमणसमुद्रविष्कम्भ	४-१६८
स्वर	९-७२; १३-२४७
स्वसमयवक्तव्यता	१-८२
स्वसवेदन	९-११४
स्वस्तिक	१३-२६७
स्वस्थान	४-२६, ६२, १२१
स्वस्थानअल्पवहुत्व	३-११४, २०८; ५-२८६; ९-४२६
स्वस्थानक्षेत्रमेलापनविधान	४-१६७
स्वस्थानजघन्यस्थिति	११-३१६
स्वस्थानस्वस्थान	४-२६, १६६; ७-३००
स्वस्थानस्वस्थानराशि	४-३१
स्वातिशरीरसंस्थान	६-७१

स्वाध्याय	१३-६४	हतहतसमुत्पत्तिक	१२-६०, ६१	हिरण्यगर्भ	१३-२८६
स्वामित्व	८-८; १०-१६	हर	१३-२८६	हिंसा	१४-८, ९, ९०
स्वास्थ्य	६-४६१	हरि	१३-२८६	हुण्डकशरीरसंस्थान	६-७२
स्वोदय	८-७	हरिद्रवर्णनाम	१३-३७०	हुण्डकशरीरसंस्थाननाम	
हतसमुत्पत्तिक	१०-२६२, ३१८; १५-११८; १६-५४२	हस्त	४-१६		१३-३६८
हतसमुत्पत्तिकक्रम	१६-४०२, ४०३	हानि	४-१६	हुताशन	४-३१६
हतसमुत्पत्तिकर्म	१२-२८, २९; १५-१११	हायमान	१३-२६२, २६३	हेतु	१३-२८७
हतसमुत्पत्तिकस्थान	१२-२१६, २२०	हायमानश्रवधि	६-५०१	हेतुवाद	४-१५८; १३-२८०, २८७
		हार	३-४७	हेतुहेतुमन्त्राव	५-३२२
		हारान्तर	३-४७	हेमपापाण	४-४७८
		हारिद्रवर्णनामकर्म	६-७४	ह्रस्व	१३-२४८
		हास्य	६-४७; ८-१०; १३-३६१		